

# THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

#### **FAIR USE DECLARATION**

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

॥ श्री अईद्भ्यो नमः॥

# जैन-रत्नसार

संमहीता— स्वार्गिय रङ्ग विजय खरतरगच्छीय ज० यु० प्र० वृ० भ० श्री पूज्य जी श्री जिन रक्षसूरिजी महाराज के शिष्य जैनगुरु प० प्र० यति सूर्यपछ ।

प्रकाशक— स्वर्गीय श्री पूज्य जी श्री जिन रब्नसूरिजी महाराज के शिष्य मोतीलाल ।

> गुद्रक— मुराना पिन्टिङ्ग वक्स, ४०२, अपर चितपुर रोड, कळकत्ता।

विक्रम संवत् १६६८

वीर संवत् २४६६

ईस्वी सन् १६४१

प्रथम संस्करण १००० ]

[ मूल्य ७)

### पुस्तक मिलने का पता—

१—३१ सी, वांसतछा गली, वड़ावाजार, कलकत्ता। २—सुरामा प्रिन्टिङ्ग वक्सी, ४०२, अपर चितपुर रोड, वड़ावाजार, कलकत्ता।

नोट--पुस्तक छपने के पश्चात जिनके रुपये आये हैं छाचार उनके नाम माहक श्रेणी में नहीं दिये गये हैं।

### प्रस्तावना

**~>**0<%>0**>** 

यों तो प्रत्येक प्राणी का दैनिक काम है कि वह अपने पश्च मौतिक शरीर को कायम रखने के लिये भीजन किया करता है, पर मनुष्य जाति का तो परम कर्तव्य है कि वह शरीर निर्वाहक भोजन के साथताथ आत्मा के समुन्नायक ज्ञान रूप भोजन का भी सम्पादन किया करें। जिस तरह भोजन
जी प्राप्ति से शरीर वलवान कार्यक्षम रहता है, उसी तरह आत्मा को खुराक पहुंचाने में वह समुन्नत -नागरूक-अपने आपको पहचानने में समर्थ होता है। फलतः मनुष्य जन्म सार्थक मृत्यवान् होता है,
अगर ऐसा नहीं हुआ तो पशुओं की तरह जीवन गुजारते हुए अपने सुदुर्लभ मौके को खो कर मनुष्य
आखिर पश्चात्ताप के गहरें गर्त में गिर जाते हैं। किसी ने सच कहा है:--

आहार निद्रा भय मैथुनव्त, सामान्य मेतत्पश्चभिर्नराणाम् । हार्निह तेपा मधिकं विशेषम्, ज्ञानेन हीनाः पश्चभिः समानाः ॥

अर्थान भोजन, निद्रा भय, मैथून इत्यादि नैसर्गिक (रोजाना) कामों को जैसे मनुष्य किया करते हैं, वैसे ही पशु भी। इन सब कामों में मनुष्यों और पशुओं में कुछ फर्क नहीं है, फर्क केवल होता है, ज्ञान में ; ज्ञान मनुष्यों को होता है, पशुओं को नहीं। अगर मनुष्यों को ज्ञान न हो सका तो पशु तुल्य ही है।

पर मच पृद्धा जाय तो ज्ञान हीन मनुष्य पशुओं से भी समता के लायक नहीं है। एक गाय को लीजिये वह अमृतोपम दृध बिना किसी स्वार्थ के मनुष्यों को दिया करती है; उसके वच्चे विल ) रोनी के काम कर देते हैं; उन्हें हमलोग गाड़ी में जोत कर सवारी करते हैं—सामिष्रयां होते हैं। भत्या वतलाह्ये, उनका फ्या स्वार्थ है ? पर ज्ञान हीन मनुष्य अपने स्वार्थ माधन के लिये एक दूसने का गला घोंटने में भी नहीं हिचकते। "ऋनुकाल में ही भार्या से सहवास करना चाहिये" मनुष्यां के लिये ऐसी नम नम शास्त्रों की आज्ञा जहां पुस्तकों की टोकिरियों में पड़ी सड़की है, वहां पशु जाति ठीक उसी भागि उनका पालन किया करती है, जिस तरह कि शास्त्रों ने मानव ज्ञानि के लिये आज्ञा दी है। फिर दनलाट्ये मनुष्यों की पशुओं ने समता केंसी ?

अन्तु सतुत्यों का कर्नव्य है कि वे ज्ञानवान् वर्ने—विवेकवान् वर्ने नाकि स्वधर्म को निभा सकें। अगर रवधर्म का पाटन नहीं किया जाता है नो कोई कारण नहीं है कि कल्याण की प्राप्ति की जा सके। "धर्म एवं हनों हन्ति, धर्मों रक्षति रक्षितः"

थर्म अगर हत (नष्ट) होना है—पालित नहीं होता है तो वह मनुष्यके लिये लाभप्रद नहीं है और धर्म अगर मुस्सिन होता है तो वही उन्ने बचाना है। भियने उद्दिश्यके संगर मागरहनेतित धर्मः जिसके बटौलत संगर-मागर से उद्दार होगा है, या धर्म है। और इस धर्म का पालन करना मनुष्यों का एकान्त कन्तव्य है। यापि धर्मिक जगर का उद्देश्य एकमा है, पर रचि वैचित्र्य से उद्देश्य की प्राप्ति के लिये साथम प्रशास - व्यासनायम अतेक हैं—शिक्षित्त है, यही कारण है कि धर्म भी अनेक नामों से अभिहित हुआ है की एक धर्म है। दिख्य, इसारी मुक्लिय इत्यादि। इन धर्मों में इसारा जैन धर्म एक ग्यास महन्त्रपूर्ण क्ष्मार स्थान है। यह निधित तक्ष्य है कि को इस धर्म का सई। पर निधित तक्ष्य है कि को इस धर्म का सई। पर निधित तक्ष्य है कि को इस धर्म का सई। पर निधित तक्ष्य है

गर्व बहसि रे खर्व ! मुधा संसार बारिधे ! गोस्पडी इस त्यामस्मि संतरिष्यामि सीस्या॥

अर्थान् अरं श्रुद्र संसार समुद्र ! तू अपनी दुस्तरता के लिये दृशा घमण्ड करता है. मैं तुम्मे नोस्पद् ( गायका चरण चिह्न ) बनाकर खेलने हुए पार कर जाङंगा ।

पर यह तभी हो सकता है. जब धर्म पालन की सबी लगन होगी—सबा प्रेम होगा। धार्मिक विपर्यों की कोरी जानकारी कामयाव नहीं हो सकती—मोक्ष साधिका नहीं हो सकती। कोई किसी रास्ते का नक्सा जानकर गन्तव्य स्थान पर नहीं जा सकता, उसके लिये चलने की आवश्यकता होगी। अतएव किया की महत्ता महसूस करनी चाहिये। किसी ने सच कहा है:—

"शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्ला, यस्तु क्रियादान् पुरुषः स विद्वान्।"

अर्थान् शास्त्रों की पढ़ कर भी लोग मूखे होते हैं जो कियावान होते हैं, वेही विद्वान हैं। अतएव मनुष्यों का कर्त्तन्य है कि वे प्रेम सड़ाव से धार्मिक अनुष्ठान किया करें।

अस्तु, जेनधर्म यद्यपि अनिष्टि है--अनन्त है, फिर भी इसे सुचार हप में दुनिया की आंखों के मामने लाने के लिये वर्त्तमानकाल में समय समय पर श्री अध्यमदेव स्वामी से लेकर भगवान श्री महाबीर स्वामी तक चोवीस तीर्थं दूर हो चुके हैं। इसीलिये जैन साहित्य में ये तीर्थं दूर भगवान जेनधर्म के प्रवत्तक—जेनधर्म के संचालक कहे जाते हैं। कहना न होगा कि उनके उसी उपकार भार से मुककर आज जेन जगन उन महापुरुषों में से एक एक के प्रति "अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाश्चन शलाकया। चशुरुन्मीलिन येन तन्मी श्री गुरुषे नमः॥" इस प्रकार श्रद्धाञ्चलि अर्षित करता है। अस्तु भगवान महावीर के निर्वाण के ६०६ वर्ष बाद जेनधर्म का दो भागों में विभाजन हो गया। स्वेताम्बर और दिनम्बर।

द्वेतास्त्रर जैनधर्म मे भी दो तिभाग है, स्वेतास्त्रर स्थानकवासी और स्वेतास्त्रर तेरापंथी। स्थानकवासी सम्प्रदाय मे भी कितने उपविभाग है, उसी तरह तेरापथियों में भी दो उपविभाग है, भीपमपंथी और पीरपथी। पर इन विभाग-उपविभागों मे बहुत कम अन्तर है, वस्तुतः मन्तन्य एकसा ही है।

टिगम्बर र्जनयम में भी इसके बाद फिर दो विभाग हुए. बीसापंथी और तेरापंथी। बीसापंथी प्राचीन है. नेरापंथी अर्थाचीन. क्योंकि टोडरमल्ड्जी के लमाने में तेरापंथी धर्म चल पड़ा। बाद में और भी उपिमाग हुए हैं।

रात रुपी शत्रु के विजेता. अच्छे झान याले, प्रधान प्रातिहार्य आदियों से युक्त, शंकाओं को दूर करने बाट अस्टिन्सों का हमलोग हमेशा ध्यान करते हैं।

शरीरघारी होने हुए भी—शारीरिक, याचिनक, मानसिक, सभी क्रियाओं को करते हुए भी आत्मा के शान, चारित्र आदि गुणों का—आध्यात्मिक शक्तियों का पूरा-पूरा विकास कर चुके हों, वे ही अरिएन्त है।

आयन्तिक मुख साधनान सिद्धः, जिसने चरम मुख की प्राप्ति कर ली है, वह सिद्ध है। जैन शास्त्रों में उन निद्धों का लक्षण इस प्रकार कहा गया है :—

> "दुद्रह कम्मा वर णप्पमुक्के अर्णत णाणाइ सिरी चडक्के। समग्ग होगग्ग प्रथ्पसिद्धे काण्डु णिच्चंपि समत्त सिद्धे॥"

अयांन हुन्द अन्दर्भ रूप आवरण से रिह्त अनन्तज्ञानादि । चतुष्टय से समन्त्रित समस्त लोक के अब भाग में अवस्थित समस्त सिद्धों का हमलोग हमेशा ध्यान करते हैं। अरिहन्त की तरह सर्व शिक्तान , पर शरीर लागी हों, वे सिद्ध हैं। यद्यपि अष्ट कभों के विनाश से अरिहन्त की अपेक्षा सिद्ध श्रेष्ट हैं, फिर भी ब्यावहारिक हिन्द से—परोक्ष स्वस्त्य वाले सिद्धों की सत्ता को वतलाने की हैसियत ने- जैनधर्म के प्रचारक होने के विचार से अरिहन्त ही पहिले नमस्कार के योग्य हैं। ये दोनों सब के पृष्य ही है, वृक्त नहीं।

आचारं प्राहयति, आचारयति शिष्यम्, आचिनोत्यर्थान्, बुद्धिम्, आचारान् चैति आचार्यः। अर्थान् जो आचारं। की शिक्षा दे या मीक्ष साधन का चुनाव करे अथवा निर्वाण साधिका बुद्धि का मम्पारन परे अथवा न्वयं धर्म पालन करने के लिये आचारों का चयन करे. वह आचार्य है। लक्षण इस प्रजार है:---

"पंचिद्रिअ" संबरणो तह णव विह वंभचेर गुन्ति घरो । चडिवह फसाय मुक्को इय अट्टारस गुणेहि संजुत्तो ॥ पंच महत्वय जुत्तो पंच विहायार पालण समत्यो । पंच ममिओ विगुत्तो छत्तीस गुणो गुरु मङक्॥' 'उपेत्याधीयतेऽस्मात् स उपाध्यायः, जिसके पास आकर यति (साधु) छोग पढ़ा करें—शिक्षा प्राप्त कर सकें, वे उपाध्याय है।

> "सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं णमो णमो वाबग क्वंजराणं। गणस्स संधारण सायराणं सञ्चप्पणा विजय मच्छराणं॥"

अर्थात् सूत्रों की व्याख्या करने में तत्पर, गण के भार को वहन करने में समुद्र समान हों, प्रमाद तथा ईर्ष्या से मुक्त और वाचकों में मत्त गजेन्द्र की तरह अप्रतिहत प्रतिभा वाले उपाध्यायों को नमस्कार।

जिनमे साधुजन व्यवहृत सत्ताईस गुणों के साथ-साथ २५ गुण और, जोकि उपाध्याय पद के छिये जरूरी हैं, सूत्रों एवं अथों का सचा ज्ञान अध्यापन की क्षमता, बोछने की सुमधुर शैछी इत्यादि विशेषताएं हों। गच्छ संचाछन की योग्यता हो। वे उपाध्याय हैं। ये साधुओं की अपेक्षा अधिक सम्माननीय है।

साध्नोति पर कार्य मथवा मोक्ष कार्य मिति साधुः। जो विना किसी स्वार्थ के दुनिया के मंगल विधायक हों या मोक्ष कृति के साधक हों वे साधु हैं।

> "खतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते मुत्ते पसंते गुण योग जुत्ते। गयप्पमाए इय मोहमाये, फाएह णिच्च मुणि राय पाये॥"

अर्थात् क्षान्त, दान्त, पंच समितियों और तीन गुप्तियों के धारण करनेवाले, प्रशान्त, योग युक्त, प्रमाद रहित और मोह माया से असम्बद्ध मुनिराज के चरणों का नित्य ध्यान करते हैं।

जिनमे निज्ञी विशेष सत्ताईस गुणों के साथ-साथ आचार्य एवं उपाध्याय के विशेष गुणो को छोड़कर और अशेष गुण समान हों, वे साधु हैं।

वपर्युक्त आचार्य, व्याध्याय मौर साधु ये तीनों पूज्य और पूजक भी है अर्थात् अपने से नीचे के पुरुषों के पूज्य और अपने से ऊपर के महात्माओं के पूजक हैं। जैसे आचार्य। वपाध्याय से लेकर श्रावक पर्यन्त के पूज्य है और अरिहन्त एव सिद्ध के पूजक है। वपाध्याय, साधुओं और श्रावकों के पूज्य है पर आचार्य, अरिहन्त और सिद्ध के पूजक है। साधु, श्रावकों के पूज्य है पर आचार्य से लेकर सिद्ध पर्यन्त के पूजक है। फलतः आचार्य, वपाध्याय और साधु गुरु तस्त माने जाते है। अरिहन्त और सिद्ध के विकार पूज्य है अतएव देव तस्त माने जाते है। हमारे जैनधर्म मे 'आवश्यक' वैसी ही महस्त्रपूर्ण वस्तु है जैसे शरीर मे प्राण सरिता मे पानी, चन्द्रमा में रोशनी है। आवश्यक क्रिया जगत मे वही स्थान रखती है जो वैदिक संसार में संध्या, मुस्लिम समाज मे नमाज, ईसाइयों में प्रार्थना और पारसियों मे स्नोरह अवस्ता रखती है।

शका होगी, वह आवश्यक किया क्या है ? दुनिया के क्षण-प्रतिक्षण नाशमान उपकरण में—
दु.सान्त उपभोगों में न उठम कर सम्यक्तु चेतना, चारित्र आदि गुणों को व्यक्त करने के छिये जिनकी
दृष्टि-विन्दु केवल आत्मा की ओर मुकी है, उनके छिये जो अवश्य करने लायक किया है, वही आवश्यक
किया है। अवश्य कर्त्तव्य, निग्रह, विशोधि, वर्ग, न्याय, अध्ययन, इत्यादि आवश्यक के पर्यायवाची
श्वह है। जैन समाज मे टेंबसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक और साम्वत्सिक रूप मे आवश्यक
किया की जाती है। आचार्य, उपाय्याय, साधु, प्रात: सार्य यह किया अवश्य करेंगे अन्यथा साधु ही नहीं
मममें जा मकते। आवकों के छिये उच्छाधीन है। जो आवक वारहव्रती, धर्मशील होते हैं वे तो नित्यप्रित
करेंगे ही और जो व्यवस्थित रूप में नित्यप्रित नहीं कर पाते, वे भी पाक्षिक, चातुर्मासिक, या साम्वत्सिक
नो करेंगे ही। यही कारण है कि श्वेताम्बर जैन समाज मे वच्चे-वच्चे 'आवश्यक' जानते हैं। दिगम्बर

जैन समाज में आवश्यक इस तरह समाहत नहीं है। इसका कारण यह है कि आचार्यों की शृङ्खला ट्रट जाने से व्यवस्था भङ्ग सी हो गई है।

आम तौर पर 'आवश्यक' के छैं विभाग हैं; सामाधिक, चतुर्विशति स्तव, वन्दन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान।

पहला विभाग सामायिक है। सब प्राणियों के साथ सम भाव से पेश आना अर्थान् आत्मतुल्य व्यवहार करना सामायिक का लक्षण है। समता, सम्यक्षु, शान्ति, सुविहित आदि सामायिक के लक्षण है। सामायिक के तीन भेद है; सम्यक्ष् सामायिक, श्रुत सामायिक और चारित्र सामायिक। सम भाव का पालन वस्तुतः सम्यक्षु, श्रुत और चारित्र के द्वारा ही हो सकता है। अतएव ये मेदयुक्त युक्ती है। चारित्र के भी दो मेद हैं; देश चारित्र सामायिक और सर्व चारित्र सामायिक। 'देश' आवर्कों के लिये और 'सर्व' साधुओं के लिये उपयुक्त होता है।

जैनधर्म के प्रवर्त्तक चौलीस तीर्धङ्कर हुए हैं, वे वस्तुतः सर्वगुण सम्पन्न, जैनधर्म की—जैन समाज की चोटी के चूड़ामणि एवं आदर्श है अतएव इन महात्माओं की स्तुति करना ही 'आवश्यक क्रिया' का दूसरा विभाग वनाया गया है। इसके दो मेद होते हैं। एक द्रव्यस्तव, दूसरा भावस्तव। जल, चंदन, पुष्पादि वस्तुओं द्वारा तीर्थङ्करों की जो पूजा की जाती है, वह द्रव्यस्तव है और यह गृहस्थों के लिये उपयुक्त माना जाता है। तीर्थंकरों के सच्चे गुणों का कीर्त्त न करने का नाम भावस्तव है। यह साधुओं के लिये उपयुक्त है।

मन, वचन और शरीर के जिस व्यापार के जिसे पूज्यों के प्रति आवर प्रकट किया जाता है, वह वन्दत है। द्रव्य और भाव रूप दोनों चारिजों से सुसम्पन्त आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्त क, स्थविर, गणि. गणावच्छेदक आदि वन्दनीय है।

शुभ योग से अगर कोई गिरकर अशुभ योग के मैदान पर चला आया है और वहां से फिर शुभ योग के डबतम शिखर पर जाने की चेंच्टा करता है अथवा अशुभ योग का परित्याग करके क्रमशः शुभ योग पर जाने का प्रयक्ष करता है उसी का नाम 'प्रतिक्रमण' है।

निवृत्ति, निन्दा, परिहरण, वारण, नहीं, शोधि इत्यादि प्रतिक्रमणके पर्याय वाचक शब्द हैं। प्रतिक्रमण का अर्थ वस्तुतः परावर्त्तन अर्थात् पीछे की ओर छौटना है। आत्म शक्तियों के सम्पादनार्थ प्रतिक्रमण इच्ट है अतएव उपर्यु क सुप्रशस्त प्रतिक्रमण' कहा जाता है।

इस प्रतिक्रमण के पांच भेद हैं ; दैवसिक, रात्रिक, पाश्चिक, चातुर्मासिक और साम्बत्सरिक । भूव, वर्ष्य मान और भविष्य इन काछक्रत भेदों से प्रतिक्रमण के तीन भेद हैं। भूतकाल के संचित दोधों के लिये परचाताप करना, वर्ष्य मानकाल में दोपों को पास न फटकने देना और भविष्य में होने वाल दोधों को न होने देना, ये तीन कालक्षत प्रतिक्रमण हैं।

सम्यक् को प्राप्त करने के लिये मिध्यात्व का परित्यान, विराग प्राप्त करने के लिये अविराग का त्याग, क्षमा आदि गुणों की प्राप्ति के लिये कपाय का परिहार और आत्म स्वरूप के लाभ के लिये सांसारिक व्यापार से निवृत्त होना ये चार प्रतिक्रमण के लक्ष्य है। अर्थान् इन्हीं चारों का क्रमशः प्रतिक्रमण करना चाहिये।

हेय और उपादेय भेद से प्रतिक्रमण दो तरह का है; इन्य प्रतिक्रमण और भाव प्रतिक्रमण। इन्य प्रतिक्रमण वह है जो दोषों का प्रतिक्रमण करके फिर से उन्हीं दोषों को किया जाता है। यह बनावटी प्रतिक्रमण है। अतएव त्याज्य है। अगर कोई एक दफे अपराध करके उसकी साफी सांगता है तो वह क्षम्य है, पर यदि वह वार वार वही अपराध करता है तो वह क्षम्य नहीं हो सकता। दूसरा भाव प्रतिक्रमण है, जो निश्छल निष्कपट है अतएव वही प्राह्य है।

धर्म के लिये एकाग्र चित्त से शरीर की ममता का परित्याग करने का नाम कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग को सफल बनाने के लिये घोटक आदि उन्नीस दोषों का बहिष्कार करना निहायत जरूरी है। कायोत्सर्ग से शरीर का निकम्मापन, बुद्धि कामान्य, मेधा शक्ति की जड़ता चली जाती है। विचार शक्ति मे तरकी, मुख दुःख में तितिक्षा भावना और ध्यान मे इड़ता एवं अतिचार के चिन्तन मे असलियत आती है। कायोत्सर्ग में श्वासोश्वास का काल जतना माना गया है, जितना कि श्लोक के एक चरण के ड्यारण में लगता है।

प्रत्याख्यान आवश्यक किया का छुट्टा विभाग है। प्रत्याख्यान का अर्थ त्याग होता है, द्रव्य और भाव इन दोनों का त्याग ही प्रत्याख्यान से सम्बन्ध रखता है। अनाज, कपढ़े, रपये वगेरह सांसारिक पदार्थ द्रव्य है, अज्ञान, असंयम प्रभृति त्याग करने योग्य भाव हैं। अज्ञानाहि भावों को छोड़ कर ही जो द्रव्य त्याग किया जाता है और वह भाव त्याग के छिये ही किया जाता है, वही सचा प्रत्याख्यान है। शुद्ध प्रत्याख्यान सम्पादन करने के छिये अद्धान ज्ञान, वन्द्रन, अनुपाछन, अनुभाषण और भाव छे शुद्धियों की निहायत जरूरी है। प्रत्याख्यान करने से अनेक गुणों की प्राप्त होती है, अत्यख्यान का दूसरा नाम गुण धारण भी है। प्रत्याख्यान से संवर होता है, संवर से तृष्णा नारा, तृष्णा के नाश से विद्यक्षण समता, समता से क्रमशः मोक्ष मिल जाता है।

यहां एक वात और ध्यान पर लाने की हैं कि जहां प्राचीन—परस्परा प्रतिक्रमण शब्द का व्यवहार केवल चौथे आवश्यक के लिये करती थी, वहां अर्चाचीन परस्परा छहों आवश्यकों के लिये व्यवहार करती है और यह व्यवहार खुव वद्ध मूल हो गया है।

यह उपर्यु क आवश्यक किया साधु और श्रावक दोनों को करते का शास्त्रीय अधिकार है, क्योंकि

रिखा है:--

'समणेण सावएण च आवस्सकायव्य वं हवइ जम्हा। बंते अहोणिसस्स च तम्हा आवस्स चं णाम।।"

अर्थात् सार्यकालीन और प्रातःकालीन 'आवश्यक' अमण और आवक दोनों का अवश्य कर्त्त ह्य है। इसी आवश्यक क्रिया का वर्णन प्रस्तुत प्रन्थ में नौ विभागों में किया गया है। (१) सूत्र विभाग। (२) विधि विभाग। (३) पूजा विभाग। (४) स्तवन विभाग। (७) स्तुति विभाग। (५) रासतथा सङ्भाय विभाग और (६) स्तोत्र विभाग।

इसके अलावे परिशिष्ट है। परिशिष्ट में स्याद्वाद, सप्तभंगी, सप्तनय, चार निक्षेप, भूतिवाद, मूर्ति पूजा. ईश्वर कर्ज्य त्व, जैनवर्म. आत्मिनिन्दा. वारहमासी पर्व. वारहमासी पर्व में तीर्यकरोंक तथा दादा जी के जीवन चरित्र संक्षेप से है। इसके अलावा ८४ रहीं के नाम उनके वर्ण और फल संक्षेप से मुहुर्तादि विषय भी है दिये गये हैं। जो कि प्रत्येक आदमी के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

चर्चाप उपर्युक्त 'आवस्यक किया को प्रतिपाद्य विषय वना कर रस्रसागर (उपाध्याय श्री जयचन्द्र जी संगृहीन) रस्र समुद्रय (महोमहापाध्याय श्री रामलालजी गणि संगृहीत) अभयरत्रसार (श्री शहुर टानजी शुभकरणजी नाहटा संगृहीत) पश्च प्रतिक्रमण (पं० श्री सुन्वलालजी संगृहीत) प्रतिक्रमण सुत्र मचित्र (पं० श्री काशीनाथ जी संत्रहीत) इत्यादि बहुत से बन्य निकल कुके हैं. फिर भी प्रस्तुत प्रत्य मे किसी न किसी रूप में खास विशेषताएं हैं और वे काम की हैं। जहां कई पुस्तकों में प्राचीन हिन्दी का उपयोग हुआ है, फलतः पाठकों को कुछ असुविधा होती थी, इस पुस्तक में सामयिक हिन्दी का सिनेवेश हुआ है। जगह-जगह पर आवश्यक टिप्पणिओं एवं कथाओं का उल्लेख भी किया गया है जो कि बड़ा ही उपयोगी तथा मनोर क सिद्ध होगा। किस सन् सम्बत् में १ किसके द्वारा असुकवस्तु क्यों वनायी गयी १ इत्यादि वातों का भी स्पष्टी करण यथा स्थान किया गया है, जो कि पाठकों के लिये रिचकर प्रतीत होगा। अतिचारों में स्वपुरूष सन्तोष पर पुरूष गमन विरमण व्रत स्त्रियों के लिये विशेषतथा लिखा गया है, जो किसी ने आज तक अपने प्रनथ में नहीं लिखा था। और पोसह सज्माय अर्थ सहित लिखी गयी है जो अद्यावधि किसी भी पुस्तक में उपलब्ध नहीं है। पूजा विमाग में शासनपित तथा रंग विजय खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० छू० महारक श्री पूज्यजी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज की बनाई हुई पंचकल्याणंक पूजा भी दी गयी है। इसी तरह और भी कई वातें लिखी गई है, जो अपना खास महत्त्व रखती हैं। परिशिष्ट में जैन सिद्धान्तों का बहुत कुछ वर्णन किया गया है जिससे अनायास सैद्धान्तिक वातों का परिचय प्राप्त होगा।

एक वान मैं और वता देना चाहता हूं कि इस पुस्तक में कई स्तोत्र तथा अन्य चीजें दी गई है, जिनमें अशुद्धियां जान पड़ती है, मैंने संशोधन करके हू-बहू उसी रूप में लिख दिये है, जिस रूप में कि वे प्राचीन लिपी में है। इसी तरह और जगहों पर भी परम्परा की रक्षा के लिये कुछ त्रुटियों पर दिष्टिपात नहीं किया है; सुविज्ञ पाठक इसके औचित्य-अनौचित्य का विवेचन स्वयं कर छें। इसके अलावे यद्यपि मेंने त्रुटियों का संशोधन करने की बहुत चेष्टा की है, फिर भी दृष्टि दोष से अथवा सुद्रण दोषसे अशुद्धियां रह गई होंगी, आशा है, सहस्य स्वयं सुधार कर पढ़ेंगे।

यह पुस्तक बहुत पहले ही पाठकों के करकमलों में उपस्थित हुई होती, पर खेद है कि कई विष्न वाधाओं के हारा, सिरता के पथ पर शिला खण्डों की तरह टांग अड़ा देने के फलस्वरूप आशातीत विलम्ब हो गया। एक तो मुँमुनू में आवकों की पारस्परिक तनातनी—साम्प्रदायिक तनातनी को मिटाने का काम शिर पर आ पड़ा। बाद में शारीर अस्वस्थ रहने लगा। इधर यूरोपीय विकराल रणचण्डी को हुमुक्षा शान्त करने में ज्यस्त कल-कारखानों के कारण कागजों की मंहगी भी सामने नम्न मृत्य करने लगी। फलतः देर होना अवश्यंभावी हो गया। खैर, हर्ष है कि आज भी यह पुस्तक पाठकचृन्द की सेवा में "पत्रं पुष्पम्" की मेट लेकर उपस्थित हो रही है। आशा है, सज्जनबृन्द क्षीर नीर विवेक न्याय मेरी गलतियों व शुटियों की ओर ध्यान न देकर उपयुक्त विषयोंके नाते पुस्तक को अपना कर मुभे कृतकृत्य करने की अनुकम्पा दिखायेंगे।

अन्त में 'श्री संघ' को धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता, जिसने पुस्तक प्रकाशन के पहिले ही निःसंकोच आर्थिक सहायता देकर—अपनी उन्नत उदारता का परिचय दे सुसे प्रोत्साहन दिया है। ताय ही साथ पं० बबुआजी मा, पं० गणेशदत्तजी चौधरी तथा मेरे गुरुमाई मोतीलाल को भी धन्यवाद है, इन होगों ने इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष सहयोग दिया है। इत्यल मनल्प जल्पनेन विजेपु।

सं० १६६= ज्ञान पश्चमी ।

विनीत :— जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमहरू,

कलकत्ता।



हमें खेद है कि ब्लाक तैयार हो जाने पर भी कागज नहीं मिलने के कारण चित्र नहीं छापे गये।

—प्रकाशक ।

# विषय-सूची सूत्र विभाग

विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका	<b>पृष्ठ सं</b> ख्या
णमोक्षार मंत्र	१	सुगुरु वंदन सूत्र	3
स्थापनाचार्यजी के १३ वोल	२	थालोउ' सूत्र	3
खमासमण सूत्र	२	आस्रोयणा (आजुणा०)	3
सुगुरु सुखसाता	२	अठारह पापस्थानक आलोयणा	१०
अव्युद्धिओमि सूत्र	२	ज्ञानोपकरणों की आलोयणा	१०
मुंहपत्ति के पत्रीस बोल	२	पोसह संध्या अतिचार	१०
अंग पडिलेहण के पच्चीस वोल	ą	पोसह रात्रि अतिचार	११
करेमि भंते सूत्र	Ę	आवक प्रतिक्रमण सूत्र (वंदिन्तु)	??
इरियावहियं सूत्र	ş	आयरिय उवज्माए सूत्र	१४
तस्स उत्तरी सुत्र	ş	चैत्य नमन स्तोत्र	१४
अणत्य ऊससिएणं सूत्र	8	श्री तीर्थमाला स्तवन	१५
लोगस्स सूत्र	8	तीर्थ वन्दना	१६
जयउ सामिय सूत्र	४	वीर स्तुति	? `` ? 'o
जंकिचि सूत्र	Ł	वीर स्तुति	१७
णमुत्थुणं सूत्र	Ł	सामायिक पारण सूत्र	१८
जावंत चेंड्आइ' सूत्र	¥	श्री अभयदेव सूरिकृत जय तिहुअण	१८
जावंत केविसाह् सूत्र	Ę	जय महायश सूत्र	२ <b>२</b>
परमेष्ठी नमस्कार	Ę	श्रुत देवता स्तुति	٠. ۲۶
उवसमा हरं स्तोत्र	Ę	भुवन देवता स्तुति	र् <b>र</b>
जयविय राय सूत्र अस्हित चेड्याणं सूत्र	Ę	क्षेत्र देवता स्तुति	र् <b>र</b>
अस्ति चड्याण सूत्र आचार्य आदि को बंदन	৩	इच्छामो अणुसिट्टयं सूत्र	ર્રે
सन्वस्तिषि सूत्र	v	बद्धेमान स्तुति	२२
इन्छामिठामि सूत्र	৩	वरकनक सूत्र	र३
पुरुतरवरदी बर्डे सूत्र	৬	भट्टाइन्जेसु सूत्र	्` <b>२</b> ३
निहार्ग चुडाणं सूत्र	٧	श्री स्थम्भण पार्श्वनाथ चैत्यवन्दन	78
वेपावनगराणं सूत्र	٥	र्थभणय पास सृत्र	ર્ષ્ટ
<b>w</b> ,	3	चडकसाय सृत्र	22

विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका पृष्ठ स	ाल्या
पञ्च परमेष्ठी मंगल स्तुति	२४	णिव्विगङ्य पचक्खाण	ξĘ
श्री मानदेव सूरिकृत लघु शान्ति स्तव	। २४	चडव्विहार उपवास पचक्खाण	ŧŧ
वृह्त् अतिचार	२६	तिविहार उपवास पच्चक्खाण	ĘĘ
साधु प्रतिक्रमण सूत्र	३८	दत्तिअ पच्चक्खाण	ĘĘ
श्रमण पक्खी सूत्र	४१	दत्तिञ पन्चक्खाण	Ęu
तपगच्छीय विशेष सूत्र	ī	पाणहार पच्चक्लाण	ę́ω
पंचिदिय सृत	<b>ક</b> ષ્ઠ	दिवस चरिम चडिवहार पञ्चक्खाण	Ęu
सामायिक पारण सूत्र	48	दिवस चरिम तिविहार पचक्खाण	ξo
जगचिंतामणि सूत्र	48	दिविस चरिम दुविहार पच्चक्खाण	ŧζ
जयवियराय सूत्र	44	भव चरिम पच्चक्खाण	şç
कलाण कंदं	<b>\$</b> \$	गंहि सहिअ, मुट्टि सहिय, अंगुद्र सहिअ	
अतिचार	ફર્ફ	आदि अभिग्रह पच्चक्खाण	ξς
वीर स्तुति	¥Ę	धारणा पच्चक्खाण	ξÇ
भरहेसर सज्काय	५७	पच्चक्खाणों की आगार संख्या	Ş
मण्णह जिणाणं सज्भाय	५८	तपागच्छीय पच्चक्खाण सूत्र	33
संथारा पोरिसी	ķc	णमुकार सहिअ मुट्टि सहिअ पच्चक्खाण	ईह
स्नातस्या की स्तुति	ξo	पोरिसी साढ पोरिसी प <del>च्चक</del> ्खाण	<sup>8</sup> ह
संतिकर स्तवन	<del>န</del> ်ဝ	पुरिमहु अबहु पञ्चक्खाण	ξ£
खरतरगच्छीय पचक्खाण सूत्र	६१	एकासण वियासण तथा एगळठाणका प <b>श्</b> रहाण	3\$ 1
णमुकार सहिञ पन्नक्लाण	६१	आयम्बिळ पञ्चक्खाण	190
णमुकार सहिअ पचक्लाण	६२	तिविहार उपवास पच्चक्खाण	ଓଡ
पोरिसो पचक्खाण	६२	चडव्बिहार उपवास पच्चक्खाण	ЮO
पोरिसी साढ पोरिसी पचक्लाण	६्२	रात्री पच्चक्खाण	υģ
पुरिमद्दू पचक्खाण	६ै२	पाणहार पच्चक्खाण	৬१
अवद्रु पचम्खाण	६३	चर्डव्विहार पच्चक्खाण	<b>9</b> و،
एकासण पचक्खाण	<del>६</del> ३	तिविहार पच्चक्खाण	υę
एकासण पचक्खाण	६३	दुविहार पचक्लाण	ખર
एगलठाण पचक्खाण	ŧ8	देसावगासिय पच्चक्खाण	હશ્
ग्गलठाण पश्यक्वाण	Ę́8	पच्चक्खाण के आगारों का अर्थ	ωŞ
आयम्बिल प्रम्याण	<b></b> \$8	सार्थ पोसह सज्माय सूत्र	υķ
आयम्बिल पचक्खाण	६५	देसावगासिक पञ्चक्खाण	52
णिव्यिगज्य पश्चभ्याण	र्द्ध	देसावगासिक पारण गाथा	53

### विधि विभाग

विषयानुक्रमणिका	ष्ट्रह संख्या	विषयानुक्रमणिका पू	ष्ठ संख्या
प्रातःकाल सामायिक लेने की विधि	<b>5</b> ₹	पक्खी प्रतिक्रमण की विधि	388
सामायिक पारने की विधि	<i>⊏</i> 8	चडमासी प्रतिक्रमण की विधि	१२०
सामायिक सम्बन्धी विशेष बातें	ሪያ	साम्बत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि	१२१
मन के दश दोष	54	जिन दर्शन विधि	१२१
वचन के दश दोष	<b>5</b> 4	जिनराज पूजन विधि	१२२
काय के बारह दोष	૮૪	केशर शुद्धि मन्त्र	१२३
संध्याकालीन सामायिक लेने की विधि	म ८६	जल पूजा	१२४
राई प्रतिक्रमण की विधि	८७	चन्दन पूजा	१२५
देवसिक प्रतिक्रमण की विधि	60	पुष्प पूजा	१२६
पक्खी प्रतिक्रमण विधि	ξ3	धूप पूजा	१२७
चौमासी प्रतिक्रमण की विधि	33	दीप पूजा	१२७
साम्बत्सरिक प्रतिक्रमण विधि	٤٩	अक्षत पूजा	१२७
भाठ प्रहर पौषध विधि	१०१	नैवेद्य पूजा	१२८
पोसह पञ्चक्खाण	१०३	फल पूजा	१२८
पडिलेहण विधि	१०३	श्री जिन मंदिर सम्बन्धी चौरासी आशा	तनाए १२६
देव वन्दन विधि	१०४	गुरु महाराज की तेतीस आशातनाएं	848
पच्चक्खाण पारते की विधि	१०५	गुरु वन्दन त्रिधि	१३३
संध्या पडिलेहण विधि	१०६	सर्व तपस्या ग्रहण करने की विधि	१३४
चौबीस थंडिला पडिलेहण पाठ	१०७	पखवासा तप की विधि	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
रात्री संथारा विधि	१०१	दश पच्चक्खाण की तप विधि	` <b>१३</b> ६
पोसह पारने की विधि	११०	बीसस्थानक तप विधि	१ <b>३</b> ६
दिन सम्बन्धी चडपहरी पौषध विधि	११०	वीसस्थानक माला और काउसग्ग प्रमाण	र १३८
चडपहरी पौषध पन्चक्खाण	११०	प्रथम पद	. १२८ १३६
रात्रि सम्बन्धी चडपहरी पौषध विधि	१११	द्वितीय पद्	3 <b>5</b> ?
रात्री चउपहरी पौषध पच्चक्खाण देसावगासिक हेनेकी विधि	११२	नृतीय पद्	१४०
रेसावगासिक पारने की विधि	११२	चतुर्थ पद	१४१
	११३	पब्चम पद्	१४२
तपगच्छीय विशेष विधियां सामायिक छेने की विधि		षष्टम पद	१४२
सामायिक पारने की विधि	११३	सप्तम पद	१४२
राई प्रतिक्रमण की विधि	११४	अष्टम पद्	१४३
देवसिक प्रतिक्रमण की विधि	११३	नवस पद	१४४
and the state of t	११€	दशम पद	886

पंचम दिवस विधि

विषयानुक्रमणिका पृष्ठ संख्या विषयानुक्रमणिका प्रव्ह संख्या १५० पष्टम दिवस विधि एकादश पद १७१ १५२ ! सप्तम दिवस विधि द्वादश पद १७३ त्रयोदश पद १५३ ं अप्रम दिवस विधि १७२ चतुर्दश पद १५३ नवम दिवस विधि १७२ नवपद जयति (बन्द्रना) १५३ पञ्चदश पद ् अरिहन्त पढ़ चेंत्य वन्दन १७३ १५३ ं पोडश पद १५४ अरिहन्त पद स्पवन १७३ सप्तदश पद अरिहन्त पद धुई १७४ १५४ अष्टादश पद श्री सिद्ध पद की 🗆 जयति १७४ १५ई एकोनविशतितम पद सिद्ध पद चेत्यवन्दन १७४ १५६ विंशतितम पद े सिद्ध पद् स्तवन 265 १५८ रोहिणी तप की विधि सिद्ध पद् शुई १७१ छम्मासी तप विधि 348 आचार्य पद की ३६ जयति १७इ बारहमासी तप विधि ३४१ आचार्य पद चैलवन्द्रन १७७ अट्राइस ऌव्धी तप विधि १६० आचार्य पद् स्तवन १७उ १है० चतुर्दश पूर्व तप विधि आचाय पद धुई 253 १६० तिलक तपस्या विधि टपाध्याय पद की २५ जयति १७८ १६१ सोलिये तप विधि चपाध्याय पर् चैत्यवन्द्रन 328 रुपधान तप प्रवेश विधि १६१ उपाध्याय पद स्तवन 308 लपधास सप विधि १६२ उपाध्याय पद धृई 308 उपधान तप उत्क्षेप विधि १दे४ साधु पद की २७ जयति १८० रुपधान वाचन विधि १६४ साधु पद् चैत्यवन्द्रन १८० तप सम्पूण क्रिया निक्षेप विधि १ई५ १८१ साधु पद स्तवन पहिपुण्णा विगय पारणा विधि १६५ १८१ साधु पद् थूई १६६ क्षमा अमण विधि सम्यक्तु दर्शन पद की ६ँ७ जयित १८१ १६७ उपधान तप विवरण गाथा दर्शन पद् चैत्यवन्द्रन १८३ पॅतालीस आगम तप विधि १६८ दर्शन पद स्तवन १८३ ग्यारह गणधर तपस्या विधि १६५ दर्शन पद शुई १८४ गमोकार तप विधि १ई६ ज्ञान पद की ५१ जयित १८४ जयति संयुक्त नव पद ओछी विधि प्रथम दिवस विधि १ई६ ज्ञान पद् चैत्यवन्द्न १८५ द्वितीय दिवस विधि হত ১ ज्ञान पद् स्तवन १८५ तृतीय दिवस विधि १७१ ज्ञान पद शुई १८६ चतुर्थ दिवस विधि चारित्र पद् की ७० जयति १७१ १८६

१७१ | चारित्र पद चैत्यवन्दन

१८८

		<u> </u>	MEZ 133211
विषयानुक्रमणिका '	रुट संख्या	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
चारित्र पद स्तवन	. १८८	सिद्धगिरि स्तुति	२१७
चारित्र पद थुई	१८८	सिद्धगिरि जयति	२१७
तप पद की ५० जयति	१८६	सिद्धाचल चैत्यवन्दन गाथा ४०	२१७
तप पद चैत्यवन्दन	१६०	सिद्धाचल स्तवन गाथा ४०	२१६
तप पद् स्तवन	१९०	शत्रुञ्जय स्तुति	२२२
तप पद थुई	१६०	सिद्धगिरि जयति	<b>२</b> २२
नन्दीश्वर द्वीप तपस्या विधि	१६१	शत्रुष्त्रय चैत्यवन्दन गाथा ५०	<b>२</b> २३
अश पद ओली विधि	१६२	छघु शत्रु•जय रास गाथा ५० (१०८)	२२५
ज्ञान पश्चमी पूजा विधि	१६२	सिद्धगिरि स्तुति	२३१
संस्कृत ज्ञान पूजा १	१६४	सिद्धगिरि जयति	२३२
संस्कृत ज्ञान पूजा २	१६६	सर्वे तपस्या पारण विधि	२३३
दिवाछी पूजन विधि	338	शान्ति पूजा विधि	२३३
शारदा स्तोत्र	२०२	शान्ति पूजा की सामग्री	२५३
चैत्री पूनम पर्व	२०३	नवपद् मण्डल पूजा विधि	२५३
सिद्धाचल चैत्यवन्दन गाथा १०	२०५	नवपद मण्डल पूजन की सामग्री	२ ६४
सिद्धगिरि स्तवन गाथा१०(सुण सुण	सेत्रुंजा०) २०७	विशस्थानक मण्डल पूजन विधि	<b>२</b> ६४
सिद्धगिरि स्तुति	२०८	विशस्थानक की सामग्री	२ <b>७</b> ३
सिद्धगिरि जयति	२०८	ऋषी सण्डल पूजा विधि	- <b>২</b> ৩३
सिद्धाचल चैत्यवन्द्न गाथा २०	२०८	ऋषी मण्डल पूजन सामग्री	२८२
आवूजी स्तवन गाथा २० (यात्रीडा		अष्टा पद मण्डल पूजा विधि	र⊏र
सिद्धगिरि स्तुति	२१२	अष्टापद मण्डल सामग्री	२८७
सिद्धगिरि जयति	<b>२</b> १२	1 a n 0 -	२८८
सिद्धाचल चैत्यवन्दन गाथा ३०	२१३		
सिद्धगिरि स्तवन गाथा ३० (मंगळ		जलयात्रा महोत्सव विधि	<b>ર</b> દર્ફ
-	<del></del>	-	

### पूजा विभाग

विषयानुक्रमणिका	<b>पृष्ठ</b> संख्या	विषयानुक्रमणिका	<b>एष्ठ सं</b> ख्या
स्नात्र पूजा	३०१	पुष्पमाला पहरावण पूजा	३१७
अष्टप्रकारी पूजा ९	३०६	फूछ पूजा	३१८
अर्थ पूजा	३१६	वृह्त् नवपद् पूजा	३१८
वस्त्र पूजा	३१६	सत्रह मेदी पूजा	३३१
नमक उतारण पूजा	३१७	विशस्थानक पूजा	` ३४६

विषयानुक्रमणिका		विषयानुक्रमणिका	<b>ए</b> ष्ठ संख्या
ऋषी मण्डल पूजा	३६८	पञ्चकल्याणक पूजा	४०७
शाशन पति पूजा	३८७	चतुर्दश राजलोक पृजा	४३⊏
पञ्बज्ञान पूजा	४०१	श्री दादा गुरुदेव पूजा	४५१

### आरती विभाग

विषयानुक्रमणिका	<b>पृष्ठ सं</b> ख्या	विषयानुक्रमणिका	<b>पृष्ठ सं</b> ख्या
शान्तिनाथ भगवान की आरती	४६३	मंगल दीपक	જુજ
संध्या आरती	४६३	मंगल दीपक	প্তত
नवपद् आरती	४६३	मंगल दीपक	ৼৢড়৽
विशस्थानक आरती	४६४	गौतम गणधर आरतो	ర్థితం
ऋषी मण्डल आरती	8ई४	सुधर्म गणधर आरती	४७१
शासनपति भारती	४६५	गुरुदेव आरती	४७१
पञ्चज्ञान आरती	४६४	मणिधारी जी की आरती	४७१
पञ्चज्ञान आरती	४६५	कुशल गुरु आरती	४७२
पञ्चज्ञान आरती	୪६६	रब्रसृरिजी की आरती	प्र७२
॰ ८ . । आरती	<b>૪</b> ફૈફૈ	चक्रेश्वरी देवी की आरती	४७२
ि ं , कल्याणक आरती	४६७	चक्रेश्वरी देवी की आरती	१७३
दिवाली की[]आरती	४६८	यक्षराज की आरती	४७३
नन्दीश्वर दीप आरती	४६८	भैरव आरती	४७३
पञ्चतीर्थ आरती	४६६	भैरव आरती	४७३

### चैत्यवन्दन विभाग

विषयानुक्रमणिका	ष्ट्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका	१ष्ठ संख्या
श्री आदिनाथ चैत्यवन्दन	४७४	श्री शीतल जिन चैत्यवन्दन	४७८
श्री अजितनाथ चैत्यवन्दन	४७४	श्री श्रेयांस जिन चैत्यवन्दन	৪७८
श्री सम्भव जिन चैसवन्दन	પ્રેન્સ	श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवन्दन	<i>૪७</i> ૪
श्री अभिनन्दन जिन चैत्यवन्दन	૪७६	श्री विमल जिन चैत्यवन्दन	४७६
श्री सुमति जिन चैत्यवन्दन	૪७६	श्री अनन्त जिन चैत्यवन्दन	<i>૩</i> ઌ૪
श्री पद्मप्रभ जिन चैत्यवन्दन	४७६	श्री धर्म जिन चैसक्दन	४८०
श्री सुपार्श्व जिन चैत्यवन्दन	४७७	श्री शान्ति जिन चैत्यवन्दन	8८0
श्रो चन्द्रप्रभ जिन चैत्यवन्दन		श्री शान्ति जिन चैत्यवन्द्रम	४८०
श्री सुविधि जिन चैत्यवन्दन	<i></i>	श्री शान्ति जिन चैत्यवन्दन	ሄ⊏የ

Annaman parameter	क्त्य संस्था	विषयानुक्रमणिका	्र पहरू संस्था
विषयानुक्रमणिका  श्री कुन्धु जिन चैत्यवन्दन  श्री अर जिन चैत्यवन्दन  श्री महि जिन चैत्यवन्दन  श्री मुह्त जिन चैत्यवन्दन	<b>एच्ड सख्या</b> ४८१ ४८१ ४८२ ४८२	ावष्यानुक्रमाणका श्री सीमन्धर जिन चैत्यवन्दन श्री सीमन्धर जिन चैत्यवन्दन श्री सीमन्धर जिन चैत्यवन्दन नवपद चैत्यवन्दन	<b>पृष्ठ सख्या</b> ४८६ ४८६ ४८६ ४८७
श्री सुनि जिन चैत्यवन्दन श्री निम जिन चैत्यवन्दन श्री निम जिन चैत्यवन्दन श्री पार्श्व जिन चैत्यवन्दन श्री पार्श्व जिन चैत्यवन्दन श्री वीर जिन चैत्यवन्दन श्री वीर जिन चैत्यवन्दन श्री चीर जिन चैत्यवन्दन श्री चहार्विशति जिन चैत्यवन्दन श्री सिद्धाचल चैत्यवन्दन सिद्धाचल चैत्यवन्दन सिद्धाचल चैत्यवन्दन	8C3 8C3 8C3 8C3 8C4 8C8 8C8 8C4 8C4	नवपद चैत्यवन्दन नवपद चैत्यवन्दन परमातम चैत्यवन्दन श्री पर्यु षण चैत्यवन्दन पश्चतीर्थ चैत्यवन्दन ज्ञान पश्चमी का चैत्यवन्दन द्वितया चैत्यवन्दन पश्चमी चैत्यवन्दन पश्चमी चैत्यवन्दन पश्चमी चैत्यवन्दन अष्टमी चैत्यवन्दन एकादशी चैत्यवन्दन चतुर्दशी चैत्यवन्दन	%50 %55 %50 %50 %50 %50 %50 %50 %50 %50

### स्तवन विभाग

	****	1-4-11-4	
विषयानुक्रमणिका	<b>पृष्ठ सं</b> ख्या	विषयानुक्रमणिका	पुष्ठ संख्या
विषयानुक्रमणिका  शृपम स्तवन  शृपमदेव स्तवन  आदिनाथ स्तवन  अजित जिन स्तवन  सम्भव जिन स्तवन  सम्भव जिन स्तवन  सुमति जिन स्तवन  सुमति जिन स्तवन  सुगर्स्व जिन स्तवन  सुगर्स्व जिन स्तवन  चल्रमभ जिन स्तवन  सुविधि जिन स्तवन  ग्रीनल जिन स्तवन	%E       %E <td>विषयानुक्रमणिका विमल जिन स्तवन अनन्त जिन स्तवन धर्म जिन स्तवन शान्ति जिन स्तवन शान्ति जिन स्तवन कुन्थु जिन स्तवन अर जिन स्तवन मिछ जिन स्तवन मिछ जिन स्तवन नेमि जिन स्तवन नेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन</td> <td>प्र<b>च्छ संख्या</b> ४०० ४०० ४०१ ४०३ ४०३ ४०३ ४०४ ४०४</td>	विषयानुक्रमणिका विमल जिन स्तवन अनन्त जिन स्तवन धर्म जिन स्तवन शान्ति जिन स्तवन शान्ति जिन स्तवन कुन्थु जिन स्तवन अर जिन स्तवन मिछ जिन स्तवन मिछ जिन स्तवन नेमि जिन स्तवन नेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन वेमि जिन स्तवन	प्र <b>च्छ संख्या</b> ४०० ४०० ४०१ ४०३ ४०३ ४०३ ४०४ ४०४
बामुरूय जिन स्तवन	338 338	पार्र्व स्तवन पार्र्व जिन स्तवन	488 -488

विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
पार्श्व जिन स्तवन	<b>५</b> १५	पञ्चमी वृद्ध स्तवन	५३१
वीर जिन स्तवन	<b>५</b> १५	पञ्चमी स्तवन	५३३
बीर जिन स्तवन	<b>५</b> १६	अष्टमी स्तवन	५३४
वीर जिन स्तवन ( राग भैरवी )	६१७	दशमी वृद्ध स्तवन (पास जिनेसर०)	५३४
चौबीस जिन स्तवन	५१७	मौन एकादशी का स्तवन	५३६
सीमन्धर जिन स्तवन	५१७	चउदह गुणठाणों का स्तवन	५३७
सीमन्धर जिन स्तवन	५१⊏	अमावस का स्तवन	५४०
सिद्धाचल स्तवन	५१८	निर्वाण कल्याणक स्तवन	488
अष्टापद गिरि स्तवन	५१६	चैत्री पूर्णिमा स्तवन	. 483
पर्युषण स्तवन	488	पखवासा तप चैत्यवन्दन	५४३
शान्ति जिन स्तवन	५२०	पखवासा तप का स्तवन	488
राग	५२०	पखवासा तप स्तुति	५४५
सरस राग	५२१	दश पच्चक्खाण चैत्यवन्दन	५४५
राग मल्हार	५२१	दश पच्चक्खाण स्तवन	५४५
राग किंसोटी	<b>५</b> २१	दश पच्चक्खाण स्तुति	<b>ર્</b> ષ્ટ્રહ
राग अडाणो	६२१	विंशस्थानक चेत्यवत्यवन्दन	<b></b>
राग सोरठ	५२२	विंशस्थानक तप का स्तवन	<b>ধ</b> ४८
राग मल्हार	<b>५</b> २२	विंशस्थानक की स्तुति	388
राग काफी	५२२	रोहिणी चैत्यवन्दन	५५०
राग खम्भायची	<b>५</b> २३	रोहिणी तप का स्तवन	५५०
होली स्तवन	- <b>ধ</b> ৭३	श्री रोहिणी तप की स्तुति	५५३
बसन्त होली	<b>५</b> २३	छम्मासी तप चैत्यवन्दन	<b></b>
बसन्त होली	५२३	ह्रम्मासी तप का स्तवन	५५४
होरी	५२४	छम्मासी तप स्तुति	<b>५</b> ५५
स्तवन होरी	६२४	बारहमासी तप का स्तवन	५६५
स्तवन होरी	<b>५</b> २४	अट्टाइस लब्धी तप स्तवन	<b>५</b> ५६
होरी	<del>१</del> २५	चतुर्देश पूर्व चैत्यवन्दन	५५८
होरी स्तवन	६२६	चतुर्दश पूर्व तप स्तवन	६५८
लावनी (पार्श्व जिन)	<del>१</del> २६	चतुर्दश पूर्व स्तुति	४६०
आदि जिनेसर पारणो	ধৃহ্ড	तिलक तपस्या का स्तवन	५६१
भृषभ जिनेसर पारणी	५२८	सोळिये तप का स्तवन	५६२
नवंपद्जी की छावनी	<b>५</b> २८	उपधान तप स्तवन	५ <b>६३</b> ५६४
पश्चद्श तिथी स्तवन दिवीया स्तवन	<i>५२६</i> , ५३०	र्पेताछीस आगम स्तवन र्पेताछीस आगम का गुणना	४५४ ५६७
द्वितीया स्तवन	, ४३०	नवाळाच आसम का स्थाना	495

विषयानुकमणिका	<b>पृष्ठ सं</b> ख्या	विषयानुक्रमणिका	एष्ठ संख्या
गणधर तपस्या गुणना	४६६	श्लोक	<b>ሂ</b> ፍሪ
नवकार माहात्स्य	५६ैट	जिन कुशल सूरि स्तवन	५८६
नन्दीश्रर द्वीप स्तवन	క్షిఅం	जिन कुशल सुरिजी डत्पत्ति स्तवन	४८६
शासनदेवी स्तवन	<b>ধৃ</b> ত্তগ	जिन कुशल सूरि स्तवन	५६०
आलोयण वृद्ध स्तवन	५७२	दादा साहव की फेरी	५ ३५
आलोयण स्तवन	५७५	श्री जिन कुशल सूरि स्तवन	<i>५</i> ६२
पद्मावति आलोयण	<i>হ</i> ৩ ৩	श्री-जिन कुशल सूरि स्तवन	४६२
पुण्य प्रकाश आलोयण बृद्ध स्तवन	५७६	कुशल गुरु स्तवन	५६२
सहस्र कूट स्तवन	<b>५८</b> ६	कुशल गुरु स्तवन	५६२
जिनदत्तसूरि उत्पत्ति स्तवन	れて長	कुशळ सूरिजी स्तवन	<i>५</i> ८३
जिनदत्त सूरि स्तवन	<del></del> ዿ <u>၎</u> ၑ	मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि स्तवन	६३४
कवित्त	<b>է</b> ⊏º	गुर्वाष्टकम्	५६३
कवित्त	<b>১</b> ८७	जिन रह्मसूरि स्तवन	५६४

### स्तुति विभाग

विषयानुक्रमणिका  एष्ठ संख्या  सिद्धाचळ की धूई  प्रदूष सोमन्धर स्तुति  प्रचमी की स्तुति  प्रचमी स्तुति  सम्यविति  सम्यविति		~		
शत्रुश्वय स्तुति	विषयानुक्रमणिका	१ष्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका	<b>एष्ट सं</b> ख्या
शानु खय स्तुति ६०२ सीमन्धर स्तुति ६०३ द्वितीया की स्तुति ५६६ पश्चमी की स्तुति ५६६ पश्चमी की स्तुति ६०४ पश्चमी की स्तुति ६०४ पश्चमी की स्तुति ६०४ पश्चमी की स्तुति ६०४ पश्चमी स्तुति ६०४ पश्चमी स्तुति ६०४ पश्चमी स्तुति ६०४ पश्चमी स्तुति ६०४ पश्चमी स्तुति ६०४ प्रकादशी स्तुति ६०४ मौन एकादशी स्तुति ६०६ चतुर्दशी स्तुति ६०६ चतुर्दशी स्तुति ६०६ चतुर्दशी स्तुति ६०६ वर्ष्ट्रमी स्तुति ६०६ चतुर्दशी स्तुति ६०६		484	आदि जिन स्तुति	ई०२
सीमन्धर स्तुति ६०३  छितीया की स्तुति ५६६  पश्चमी की स्तुति ५६७  णश्चमी की स्तुति ५६७  णश्चमी स्तुति ५६७  ग्रामु स्तुति ६०४  प्रमाद जिन स्तुति ६०४  सुपार्स्व जिन स्तुति ६०४  सुपार्स्व जिन स्तुति ६०४  सुपार्स्व जिन स्तुति ६०४  सुविध जिन स्तुति ६०६  सुविध जिन स्तुति ६०६  स्रिट्ट अयांस जिन स्तुति ६०६  अयांस जिन स्तुति ६०८  नर्वाप्य स्तुति ६००  वस्तुत्र जिन स्तुति ६०८  नर्वाप्य स्तुति ६००  नर्वप्य स्तुति ६००		६९६	अजित जिन स्तुति	
हितीया की स्तुति पश्चमी की स्तुति अध्यामी स्तुति अध्यामी स्तुति प्रमाद जिन स्तुति स्थ्य प्रमाद जिन स्तुति स्थ्य स्तुद्धि		<i>५</i> ६५	सम्भव जिन स्तुति	
पश्चमी की स्तुति	द्वितीया की स्तुति	<i>\&amp;</i> {	अभिनन्दन जिन स्तुति	
पश्चमी की स्तुति		<b>५</b> ८६	सुमति जिन स्तुति	
अष्टमी स्तुति		४९७	पद्मप्रभु स्तुति	
प्काइशी स्तुति		५९७		
मान एकादशी स्तुति		<i>५६७</i>	चन्द्रप्रभु जिन स्तुति	
चतुरशा स्त्रात		४६८	सुविधि जिन स्तुति	
चतुरशा स्तुति		485		
अमावस्या स्तुति ६०८ निर्वाण स्तुति ६०० पयुषण स्तुति ६०० नत्रपद स्तुति ६०० नत्रपद स्तुति ६०१ मनवपद स्तुति ६०१		३३४	श्रेयांस जिन स्तुति	
पयुषण स्तुति ई०० अनन्त जिन स्तुति ६०६ नवपद स्तुति ६०१ धर्म जिन स्तुति ६०६	=	334		
पथुषण स्त्रुति ई०० अनन्त जिन स्त्रुति ६०६ नवपद स्त्रुति ई०१ धर्म जिन स्त्रुति ६०६		<del>င</del> ်ဝဝ		· ·
नवपद स्तित		<b>န်</b> ဝဝ	अनन्त जिन स्तुति	
गवपद स्तात		६०१		•
	गपपद स्त्रात	६०१	शान्ति जिन स्तुति	ર્ફે૦૬

विषयानुक्रमणिका	१ुष्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
कुन्धु जिन स्तुति	है१०	नेमि जिन स्तुति	- ६१२
अरनाथ जिन स्तुति	• •	पार्म्य जिन स्तुति	६्१३
महि जिन स्तुति	६्११	पार्श्व जिन स्तुति	६१३
मुनि छुत्रत जिन स्तुति	<b>ह</b> ११	महाचीर जिन स्तुति	६१४
नमि जिन स्तुति	<b>ह</b> १२	वीस विरह्मान स्तुति	र्वश्र

### रास तथा सज्भाय विभाग

विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
श्री गौतमस्वामीजी का रास	हश्स्	अंतगढ़दशा सृत्र सङ्काय	६४१
श्री गौतमस्वामीजी का छोटा रास	<b>६</b> ं२०	अणुत्तरोववार्ड सृत्र सज्काय	ई४१
श्री शत्रुख्वय रास	<del>६</del> २१	प्रश्न व्याकरण सृत्र सज्काय	ક્ષ્ટર
सम्मेत शिखरजी का रास	<b>ৰ্</b> হ্ড	विपाक सूत्र सङकाय	ર્દેષ્ટર
इग्वारे अंग की सङ्काय	ફૈરફર્ન	प्रतिक्रमण सङ्माय	ई४३
आचरांग सूत्र सङ्भाय	६३७	कर्म सङकाय	ęsą
सुचगडांग सूत्र सङ्माच	६३७	इलापुत्र की सङ्भाय	<b>६</b> ४५
ठाणांग सूत्र सञ्माय	ês⊏	मेघ कुमार मुनि सङ्भाय	ર્ફેઝફ
समदायांग सूत्र सज्माय	ê३८	प्रसन्नचन्द्र राजा की सङ्भाय	<del></del> ବ୍ୟକ୍
•		<b>ढढण ऋषि सङ्</b> काय	క్రికిం
भगवती सूत्र सङ्माय	६३६	श्रावक करणी सङ्माय	ର୍ଣ୍ଣ୪७
ज्ञाता सूत्र सज्माय	క్రీసిం	ं मन भमरा वैराग्य सङ्काय	ξϗદ
उपासकद्शा सूत्र सङकाय	ৰ্প্ত	. गुरु म्तुति	६्५०

### स्तोत्र विभाग

विषयानुक्रमणिका	<b>पृष्ठ सं</b> ख्या	विषयानुक्रमणिका	वृष्ठ संख्या
बृहन् अजित शान्ति स्मरणम्	हर्	भक्तामर स्तोत्र	६६५
छघु अजित शान्ति स्मरणम्	<b>ફ</b> ફ્રષ્ટ	कल्याणर्मान्दर स्तोत्र	3#\$
णमिडण स्मरणम्	६५६	जिन पश्चर स्तोत्र	ຊື່ບຊີ
तंज्ञ स्मरणम्	र्द्ध्य	श्री क्षमाकल्याणोपाध्याय विरचि त्र	रुषिमण्डल
मचरहियं स्मरणम्	<b>६</b> ५६	स्तोत्र	<del></del> ବ୍ୟି
सित्वमबहरच स्मरणम्	ĘĘo	श्री महिनाथ जिन स्तोत्र	<b>.</b> .ఢీ <b>ဖ</b> ဖ
च्यसत्गहर स्तोत्रम्	<del>ୡ</del> ଞ୍ଚ	बृहत् शान्ति	Ę́v⊂
तिजय पहुत्त स्तोत्र	६६१	गौतमाप्टक (इन्द्रभूति०)	६८१
दोसावहार स्तोत्र	<b>है</b> ६२	भजन	६८१
वृद्ध णमोक्षार स्तोत्र	<del>६</del> ६३	भजन	६८२

### परिशिष्ट

विषयानुक्रमणिका	<b>१६ठ सं</b> ख्या	विषयानुक्रमणिका पृष्ठ	संख्या
स्याद्वाद् सप्तभंगी	१	कार्त्तिक मास पर्वोधिकार	३८
सप्तनय	ą	ज्ञान प <sup>भ्</sup> चमी पर्व	३६
निक्षेप	Ę	कार्त्तिक चौमासी पर्वाधिकार	38
नाम निक्षेप	৩	कार्त्तिक पूर्णमासी पर्वाधिकार	३६
स्थापना निक्षेप	۲ ا	मार्गशीर्प मास पर्वाधिकार	૪૦
द्रन्य निक्षेप	3	मौन एकादशी का गुणना	80
भाव निक्षेप	१०	श्री जिन कल्याणक संग्रह	४३
मूर्तिवाद	११	पोष मास पर्वाधिकार	୪ୡ
मूर्त प्जा	१४	श्री पार्श्वनाथजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र	8€
ईश्वर कर्त्तृत्व और जैनधर्म	१५	माघ मास पर्वाधिकार	જુહ
आत्म तिन्दा	१८	फाल्गुन मास पर्वाधिकार	85
बारहमास पर्वाधिकार		होली अधिकार	8¢
चैत्रमास पर्व	ર૪	श्री जिन कुशल्सूरिजी चरित्र	85
श्री वीर जन्मकल्याणक पर्व	ર્ધ	आवश्यक	ķ٥
वीर चरित्र	२५	चौदह नियम चितारने की विधि	48
वैशाख मास पर्वाधिकार	२७	जैन तिथी मन्तव्य	43 43
भगवान आदिनाथ चरित्र	२७	चंदोवा रखने का स्थान	ų, ka
ज्येष्ठ मास पर्वाधिकार	3€	अमध्य	२२ ५३
शान्तिनाथ चरित्र	35	खाने योग्य पदार्थ	
आपाढ़ मास पर्वाधिकार	३०	मह शान्ति स्तोत्र (जगद्गुरु)	48 8
जिनदत्त सूरिजी चरित्र	३२	८४ रह्मों के नाम तथा उनकी पहचान	ķξ
जिनदत्त सूरिजी के रचित प्रन्थ	३२	मोती की जातियां तथा उनके नाम	५७
भाद्र मास पर्नाधिकार	३३	मिणयों के नाम	५८ <i>५</i> ६
कल्पसूत्र की महत्ता	३४	नवमह सम्बन्धी अन्य उपयोगी वातें तथा ना	म ५६
मणिधारी श्री जिनचन्द्र सृरिजी का च	रित्र ३४	नक्षत्र	48
आश्विन मास पर्वाधिकार	36	राशी तथा अक्षर	34
अकवर प्रतिवोधक श्री जिनचन्द्र सूरि	जीका 🔨	दिन का चौघड़िया	ξο
चरित्र		रात का चौघड़िया आशंसा	ξo
	३६	जासवा	ξo

### बृहत् खरतरगच्छीय रङ्ग विजय सूरि आचार्यों के नाम

१ श्रीमन्महावीर स्वामी जी। २ श्री सुधर्मा स्वामी जी। ३ श्री जम्बु स्वामी जी। ४ श्री प्रभव स्वामी जी। ५ श्री यशोभद्र सूरि जी। ६ श्री संभूत विजय जी। ७ श्री भद्रवाह रवामी जी। ८ श्री स्यूलभद्र स्वामी जी। ६ श्री आर्य महागिरि जी। १० श्री आर्य सुइस्थिस्र्रि जी। ११ श्री आर्य सुस्थित सूरि जी। १२ श्री इन्द्रदिन्न सूरि जी। १३ श्री दिन्न सूरि जी। १४ श्री सिंहगिरि जी। १५ श्री वज स्वामीजी। १६ श्री वज्रसेन सूरिजी। १७ श्री चन्द्रसूरिजी। १८ श्री समतभद्र सूरिजी। १९ श्री देव सूरिजी। २० श्री प्रद्योतन सूरि जी। २१ श्री मानदेव सूरि जी। २२ श्री मानतुङ्ग सूरि जी। २३ श्री वीर सूरि जी। २४ श्री जयदेव सूरि जी। २५ श्री देवानन्द सूरि जी। २६ श्री विक्रम सूरि जी। २७ श्री नरसिंह सूरि जी। २८ श्री समुद्र सूरि जी। २६ श्री मानदेव सूरि जी। ३० श्री विद्युधप्रम सूरि जी। ३१ श्री जयानन्द सुरि जी। ३२ श्री रविप्रम सूरि जी। ३३ श्री यशोमद्र सूरि जी। ३४ श्री विमल्चन्द्र सूरि जी। ३५ श्री देव सूरि जी। ३६ श्री नेमिचन्द्र सुरि जी। ३७ श्री उद्योतन सूरि जी। ३८ श्री वर्द्धमान सूरि जी। ३६ श्री जिनेश्वर सूरि जी। ४० श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ४१ श्री अभयदेव सूरि जी। ४२ श्री जिनवहम सूरि जी। ४३ श्री जिनदत्त सूरि जी। ४४ श्री जिनचन्द्र सूरिजी। ४५ श्री जिनपति सूरिजी। ४६ श्री जिनेश्वर स्रि जी। ४७ श्री जिन प्रवोध स्रि जी। ४८ श्री जिनचन्द्र स्रि जी। ४६ श्री जिन कुशल स्रि जी। ५० श्री जिन पद्म सूरि जी। ५१ श्री जिन छिष्य सूरि जी। ५२ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ५३ श्री जिनोदय सूरि जी। ४४ श्री जिनराज सूरि जी। ४४ श्री जिनभद्र सूरि जी। ४६ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ४७ श्री जिन समुद्र सूरि जी। ४८ श्री जिन हंस सूरि जी। ४६ श्री जिन माणिक्य सूरि जी। ६० श्री जिनचन्द्र सुरि जी। ६१ श्री जिन सिंह सूरि जी। ६२ श्री जिन राज सूरि जी। ६३ श्री जिन रङ्ग सूरि जी। ६४ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ६५ श्री जिन विमल सूरि जी। ६६ श्री जिन ललित स्रिजी। ६७ श्री जिन अक्षय सूरि जी । ६८ श्री जिनचन्द्र सूरि जी । ६६ श्री जिन निन्दिवद्वेन सूरि जी । ७० श्री जिन जयशेखर सूरि जी । ७१ श्री जिन कल्याण सूरि जी। ७२ श्री जिनचन्द्र मूरि जी। ७३ श्री जिन रह सूरि जी।

### खरतरगच्छीय जैन यति साधुओं के दीक्षित नामान्त पद ८४

१ अमृत। २ आकर। ३ आनन्द। ४ इन्द्र। १ उदय। ६ कमल। ७ कल्याण। ८ कल्श। ६ कल्लाल। १० कीर्ति। ११ कुमार। १२ कुशल। १३ कुंजर। १४ गिण। ११ चन्द्र। १६ चारित्र। १७ चित्त। १८ जय। १६ नाग। २० तिलक। २१ दर्शन। २२ दत्त। २३ देव।२४ धर्म।२१ ध्वज। २६ धीर। २० निधि। २८ निधान।२६ निवास।३० नन्दन।३१ निन्द। ३२ पद्म।३३ पति।३४ पाल। ३१ प्रिय। ३६ प्रवोध।३७ प्रमोद।३८ प्रधान। ३६ प्रमा ४० मद्र। ४१ भक्त। ४२ भक्ति। ४३ भूपण। ४४ भण्डार।४१ माणिक्य।४६ मुनि। ४७ मूर्ति।४८ मेका४६ मंडण।१० मन्दिर।११ युक्ति।१२ यय। १३ रत्न। १४ रक्षित।११ राज। १६ र्त्वा।१० दंगा।६० ल्राले।६० सील।६० रहेन।६१ व्यक्तम।६१ विजय।६४ विनय।६४ विनय।६४ विलय।६४ विलय।६४ विलय।६४ विनय।६४ विनय।६४ विनय।६४ विलय।६४ विलय।६६ विशाल।६० सील।६० सीलर।६६ समुद्र। ७० सन्य। ७१ सागर। ७२ सार। ७३ सिपुर। ७४ सिंह। ७४ सुल।८४ हुस।६४ हित निन्द।

### पुस्तक प्रकाशित होने के पूर्व ग्राहक बनने वालों की

### नामावली

संख्या		\	नाम	स्थान
48	श्रीयुत	वाब्	बहादुर सिंह जी सिंघी ( संघवी )	कलकत्ता
ર્ધ	"	,,	कपूरचन्दजी श्रीमाल	हैदराबाद (दक्षिण)
<b>૨</b> ૧	"	"	रायवहादुर सुखराज राय जी श्रीमाल	भागलपुर
२१	,	7,	भंवरलालजी रामपुरिया	वीकानेर
१५	,,	7,	नथमलजी रामपुरिया	बीकानेर
१५	1,	,,	मेघराजजी अमरचन्दजी बोथरा	कलकत्ता
११	٠,,	,7	<b>छिन्नूळाळजी सोहनळाळजी कर्णावट</b>	3,
११	*,	"	<b>उदयचन्दजी हुकुमचन्दजी बोथरा</b>	<b>17</b>
88	,,	,	जेठाभाई जयचन्द	33
११	"	77	सुरपतिसिंहजी दूगड़	<b>2</b> 5
११	1,	7,	रावतमञ्जी भैंसदानजी कोठारी	वीकानेर
११	•		श्री संघ	मुलतान
१०	श्रीयुत्	बाबू	शिखरचन्द रामपुरिया	वीकानेर
3	>>	72	चुघ सिंहजी चोथरा	कलकत्ता
3	, ,,	5)	सूरजमलजी बैद	कलकत्ता
3	21	"	राय कुमारसिंहजी श्रीमाल	भागलपुर(नाथनगर)
, <i>o</i>	' ,,	,	महाराज बहादुर्सिंहजी दूगड	कलकत्ता
v	13	11	प्रसन्नचन्द्जी वोथरा	,7
<b>v</b>	"	>7	राय कुमार्सिंहजी राजकुमारसिंहजी श्रोमाल	**
<b>6</b>	3;	"	वांद्मलजी वीरचन्दजी सेठ्	बीकानेर
<b>'</b> 0	,,	"	छोटेलाल अमोलकचन्द मोहनलालजी	कलकता
હ હ	37	11	निर्मलकुमारसिंहजी नवलखा	अजीम <b>गं</b> ज
ķ	3,	"	लालचन्दजी हनुमानदासजी बोथरा	कछकत्ता
¥	>>	"	सुन्दरछालजी खारड	,
કે	1,	*2	गङ्गारामजी कल्याणमळजी श्रीमाळ	<b>भ्तूं भग</b> ू
ફે	»	"	जेसराजजी करतूरचन्दजी श्रीमाल प्यारेलालजी ताम्बी	»)
ķ	», »	"	सुन्नीलालजी चुन्नीलालजी श्रीमाल	कलकत्ता
ķ	5,	,	नवकुमारसिंहजी जयकुमारसिंहजी दुधेडिया	" अजीमगंज
ধ	"	7)	राजळाळजी रोशनळाळजी कोचर	अजामगज कळकत्ता
Ł	53	",	उत्तमचन्द्रजी छाजेड	
ধ	"	17	छालचन्द्जी मोतीचन्द्जी	3)
ধ	35	33	सेठ जीतमलजी छोडा	9.7 1.7

k ,, , रावतमळजी हरखचन्दजी बोधरा बी k ,, ,, केशवजी नेमचन्द् क	छकत्ता कानेर छकत्ता " "
५ ,, , रावतमळजी हरखचन्दजी बोधरा बी ५ ,, ,, केशवजी नेमचन्द् क	छकत्ता "
५ ", केशवजी नेमचन्द् क	"
५ " " चिम्मनलाल वाडीलाल	
र्थ " "	
५ ,, जगतपतिसिंहजी दूगड	75
४ " " अमरचन्द्जी नाहर	<b>)</b> 1
	ना
	<b>छकत्ता</b>
४ " " मानसिंह मेघराज वहादुर	37
४ ,, " साकरचन्द ख़ुश।छचन्द जवेरी 🛚 🔻	न्बई
४ " " शंकरदानजो शुभकरणजी नाहटा कर	<b>उकत्ता</b>
३ ,, ,, हीरालालजी खारड	,
२ " " नथमळजी पद्मचन्द्जी श्रीमाळ	55
२ " " किशनचन्द्रजी धनराजजी कोचर	,,
२ " " पूरणचन्द्जी सामसुखा	"
२ ., " लक्ष्मीचन्दजी सेठ	**
२ , , कम्लासंहजी कोठारी	33
२ " " मनोहरलालजी मांगीलालजी भनसाली	19
२ " " केशरीचन्द्जी धूपिया	59
२ ", जोरावरमलजी ढूंगरमलजी श्रीमाल	75
२ " " छोटेलालजी बाफणा	57
२ " " कन्हैयालालजी क्षयचन्दजी वडेर	33
	गाजीखान
2	<b>हानेर</b>
२ " मोतीलालजी वाठिया	,,
7 7 Marie 2 - 101-11	क्तरा
२ ,, ,, रतनळाळजी जैन	" तीमगंज
२ " " जालिमसिंहजी दूगह	"
	<b>मगर</b>
	ालपुर कत्ता
5	
	»
a frantisch	)) 7)
3 <del>12361-11</del>	"
2	,, );

संख्या			नाम	स्थानं
२	श्रीयुत्	बाबू	रिसमचन्दजी दूगड	कलकत्ता
२	77	,,	धनपतरायजी छोढ़ा	<b>3.</b>
ঽ	,	79	हीरालालजी डमालालजी सीपाणी	,,
२	75	,	कस्तूरचन्दजी मोघा	39
२	,,	,,	गणेशलालजी नाहटा	93
२	33	,,	नवरतनमलजी सुराणा	"
२	3 <b>9</b>	,,	दिछोपसिंहजी कोठारी	11
२	35	,,	प्रेमचन्द्जी नाहटा	ţ
२	1,	"	ताजबहादुरसिंहजी दूगड	97
२	17	,,	रतनलालजी बोधरा	23
8	9,	"	मोत्तीलालजी श्रीमाल	<b>मृं</b> सणू
१	37	"	पन्नालालजी कल्याणमलजी संघवी	कळकत्ती
8	"	,,	विहारोठालजी बालचन्दजी श्रीमाल	<b>भूं</b> म्हणू
8	"	"	मेघराजनी बोथरा	कलकता
8	"	,5	जतनमळजी नाहटा	"
१	57	"	सरदारमळजी खागा	37
१	1,	"	किशोरीलालजी खारड	"
१	33	"	नौवतरायजी बद्छिया	39
8	**	,	प्रसन्नचन्द्रजी बोथरा	,
8	79	,,	चांदमलजी नवरतनमलजी	זי
8	57	27	धन्नालालजी गङ्गारामजी श्रीमाल	<b>भूं भ</b> णू
8	,	39	काळूरामजी बोथरा	कलकता
१	>3	1)	महादेवलालजी फूलचन्दजी	मू भणू
१	,;	1)	रणजीतमलजी छोगमलजी	डेरा गाजीखान
१	,	"	रूपचन्दनी शम्भू रामजी	7,
१	"	"	पत्नाळाळजी लक्ष्मोचन्द्जी	33
१	,,	33	रिद्धकरणजी वांठिया	बीकानेर
१ १	*>	"	पूनमचन्द्जी सेठिया	21
8	"	"	मूलचन्दजी नाहटा	22
ģ	"	>5	रावतमल्जी रिद्धकरणजी बोथरा	27
<b>રે</b>	,	13	रावतमळजी दूगह प्यारेखाळजी भंसाळी	11
१	"	**	फतेसिंहजी सकले <del>चा</del>	कळकत्ता
8	"	57 72	मोतीचन्द्जी बोथरा	17
१	"	"	कमलापतजी कोठारी	अजीमगंज
१	>>	"	श्रीपतिसहजी दूग्ड	3 <sup>3</sup>
१	32	"	मुन्ताळाळजी वोथरा	जीयागंज
१	>>	"	जयप्रकाशजी जस्मह	) <sup>7</sup>
8	,,	1)	रणजीतसिंह रेवतीपत पटावरी	अजीमगंज
१	"	>>	महरचन्द्जी विजयचन्द्जी वद्खिया	, भागलपुर

संख्य	ī	नाम	स्थान
१	श्रीयुत् वावू	छोटेलालजी भांडिया	कल्कत्ता
8	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	वहादुरसिंहजी कुरालचन्दजी भांडिया	भागलपुर
8	22 27	रिखवदासजी महाराज वहादुरसिंहजी टांक	कलकत्ता
8	1 11	प्रसन्नचन्द्जी चोरिंडया	वाळूचर
8	., ,,	छोगमलजी चोपड़ा	कलकत्ता
१	27 27	जैन श्वेताम्वर तेरापंथी सभा	22
3	27 22	प्यारेलालजी मुकीम	31
8	11 17	क्षेमचन्द्जी चौरडिया	33
१	37 77	फतेसिंह्जी छाजेड़	5,
8	22 22	सीतारामजी वेगवानी	37
१	"	जालिमसिंहजी कमलसिंहजी दृगड	भंडामारा
ş	12 21	चांद्मलजी पन्नालालजी जूनीवाल	कलकना
8	22 22	जवरीलालजी कोचर	,,
१	72 72	मोहनलालजी वद् <b>लिया</b>	,,
१	33 <b>3</b> 3	गुलावचन्द्जी महमवाल	te.
१	" "	गिरधरलालजी भीखाचन्दजी रसिकलालजी	79
१	31 33	फ्तेचन्द्जी कोचर	1)
१	33 33	पीरचन्द्जी निहालचन्द्जी वैंगाणी	,,
१	<b>;</b> ; ;;	माणकचन्द्जी सुक्खाणी	,,
१	27 22	चांद्मलजी भांडिया	11
१	97 17	रणजीतरायजी मुन्नीलालजी काढचूर	27
१	27 23	मोतीछाछजी दुसाज	"
१	23 22	<b>छ</b> ञ्जमीनारायणजी कम्लचन्द्नी श्रीमाल	***
१	3 <sup>3</sup> 33	हीराचन्द्रजी धाधिया	22
१	17 33	अभयकुमार्सिंहजी भाडिया	<b>~</b> "
8	" "	दुळीचन्द्जी वस्त्र	टोंक
१	";	अमीचन्द्जी गोलच्छा	कलकत्ता
8	55 23	हीराळाळजी ळूणिया	,,
१	72 7	हरिचन्द्रजी खारड छ्खीमचन्द्रजी कोचर	**
१ १	3 <sup>5</sup> 39	माणकचन्द्जी जीहरी	" देहली
\$ \$	37 <b>3</b> 9	इन्दरचन्द्जी वोथरा	
₹ 85	ः, ः, धर्मपन्नी	प्रसन्नचन्द्रजी सेठिया	, कटकत्ता
र्श्स	33	लक्ष्मीचन्द्जी कर्णावट	37
¥	,1	पद्मचन्टजी सेठ	,,
8	>>	ढेखरायजी श्रीमाल	नाथनगर भागलपुर
१	•5	भीखम्बन्द्जी सीपानी	मिरजापुर शीकानेर
१ १	>7	सोहनळाळजी सुराना अमरचन्द्जी वोथरा	वाकानर नाथनगर
र १	55	जनर पन्दुजा वायरा महिला-समाज	नायनगर डेरा गाजीखान
ર		श्रीमती छीछम क्रुमारी राक्यान	देहली

॥ श्री अर्हदुभ्यो नमः ॥



### न-रत्नसार

अरिहंताणं सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्मायाणं णमो लोए सञ्वसाहूणं एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सन्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं ।

अप्रा० न्या० अ० ८ पा० १ सू० २०६॥ असंयुक्तस्याद् वर्तमानस्य नस्यणोवा भवति ॥ णरो नरो णई-नई, परन्तु पाइअ-सद्द-महण्णवो प्राकृत कोप में पृ० ४७२ भाग दृस्तरेमें "णमोदार' ण द्वारा ही सिद्ध किया है तथा जैन प्रंथों में भी ण का प्रयोग ही विशेष मिलता अतः नमोकार न टिखकर सूत्रानुसार 'णमोकार' ऐसा टिखा गया है।

### स्थापनाचार्यजी के १३ बोल

१ शुद्ध स्वरूप धारें, २ ज्ञान, ३ दर्शन, ४ चारित्र सहित,५ सदहणा शुद्धि, ६ प्ररूपणा शुद्धि, ७ दर्शन शुद्धि, ८ सहित पांच आचार पालें, ९ पलावें,१०अनुमोदें,११ मनोगुप्ति,१२ वचनगुप्ति,१३कायगुप्ति आदरें।

#### खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिञ्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

#### सुगुरु सुखसाता

इच्छकारि सुहराई सुहदेविस सुख तप शरीर निराबाध सुख, संयम, यात्रा निर्वहते हो जी। स्वामिन ! शाता है ? आहार पानी का लाम देना जी।

### अब्भुद्विओमि सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अन्भुहिओऽहं अन्भितर देवसिअं खामेउं इच्छं खामेमि देवसिअं ।

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे उच्चासणे, समासणे, अंतर भासाए, उविर भासाए, जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुन्मे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

### मुंहपत्ति के पचीस बोल

१ सूत्र अर्थ सच्चा सई हूं, २ सम्यक्त मोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय, ४ मिश्र मोहनीय परिहरूं, ५ कामराग, ६ स्नेह राग, ७ दृष्टिराग परिहरूं.

१ ज्ञान विराधना, २ दर्शन विराधना, ३ चारित्र विराधना परिहरूं, ४ मनो गुप्ति, ५ वचन गुप्ति, ६ काय गुप्ति आदरूं, ७ मनोदंड, ८ वचन दंड, ९ काय दंड परिहरूं †।

अ ये सात बोल मुंहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये।

<sup>🕆</sup> ये नव बोल दाहिने हाथ के पडिलेहण के समय बोलने चाहिये।

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूं, १ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूं, ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूं: ।

### अंग पंडिलेहणा के २५ बोल

Strate the strain of the state from the section of the

Ended the Company of the second of the control of the second of the second of the control of the control of the

कृष्ण छेरया, नील छेरया, कापोत लेरया परिहरूँ, ऋदिगारव, ससगारव, सातागारव परिहरूँ, माया शल्य, निदान शल्य, मिथ्यादर्शन, शल्य परिहरूँ, कोध, मान परिहरूँ, माया, लोभ परिहरूँ, हास्य, रति, अरित परिहरूँ, भय,शोक, दुगंछा परिहरूं, पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेऊ-काय परिहरूँ, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय परिहरूँ, ।

### करेमि मंते सूत्र

करेमि भंते ! सामाइयं । सावञ्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पञ्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

### इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! इरियावहियं पिडक्कमामि । इच्छं । इच्छामि पिडक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा संताणा संकमणे जेमे जीवा विराहिया एगिदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वित्तया, छेसिया संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किळामिया, उद्दिवया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओं वबरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

### तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायन्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घाएणहाए ठामि काउसग्गं ।

<sup>े</sup> ये नय बोल बाएं हाथ के पडिलेहण के समय बोलना चाहिये। १ मन्त्रक पर मुंहपत्ति फेरना, २ मुंह पर, ३ हदय पर. ४ दाहिने कन्ये पर, ४ वाएं कन्ये पर, १ बॉवे नाथ पर, ४ दाहिने नाथ पर, ⊏ वाएं पर पर, ६ दाहिने पैर पर फेरना।

### अणत्थ ऊससिएणं सूत्र

अणत्य ऊससिएणं, णीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त मुन्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिद्वि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज में काउसग्गो।

> जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं ण पारेमि । ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ स्टोगस्स सूत्र<sup>१</sup>

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसममजिअं च वंदे, संभवमभिणं दणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहं च पुप्प दंतं, सीअल सिञ्जंस वासुपुञ्जं च। विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिच वंदामि ॥३॥ कुंयुं अरं च मिल्लं, वन्दे सुणिसुञ्चयं निमिजणं च। वंदामि रिहनेमिं, पासं तह वदमाणं च॥॥॥ एवं मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर मरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय मिह्या, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलामं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइन्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥७॥

जयउ सामिय सूत्र

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उर्जिति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सञ्चउरिमंडण, भरुअच्छिहं मुणिसुव्वय, मुहरिपास । दुह दुरिअ-खंडण अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि तीआणागय-संपद्दअ बंदु जिण सन्त्रेवि ॥१॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढ़म संघयणि उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंतल्रञ्भइ ; नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहरस नवसाहु गम्मइ । संपइ

१ लोगस्स में केवल चौवीस तीर्थद्वरों की स्तुति है।

. This the think is the text of the text o

### जावंत केवि साहू सूत्र

केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे जावंत सन्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥१॥

#### परमेष्टि-नमस्कार

नमोऽईित्सद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ उवसग्गहरं-स्तोत्र\*

उवसग्गहरं-पासं. पासं वंदामि कम्म-धणमुक्कं। विसहर-विस-णिण्णासं. मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर-फुर्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी-दृह-जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिहुउ दूरे मंतो. तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ। णर-तिरिएस्रवि जीवा पावंति ण दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तह सम्मते लखे. चिंतामणि कप्पपाय वन्भहिए। पावंति अविग्धेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्मर-निब्मरेण हिअएण । ता देव दिज्ज बोहिं. भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

<u>,我们我们的时间,我们的时候,却是不是一个人,我们的对象,我们的,我们的,我们们的,我们们们的,我们们们的,我们们们的时候,我们们们的人们的人们的人们们们的人们们们们的</u>

### जय वीयराय सूत्र\*

जय बीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भव-निच्वेओ इंद्रफल-सिन्दी ॥१॥ मग्गा-प्रसारिया

अयह स्तोत्र चतुर्दशपूर्वधारी आचार्य भद्रबाहुजी का बनाया हुआ है जिसका प्रमाण कथाकार महाराय इस प्रकार देते हैं :--

उपसर्गहरस्तोत्रं कृतं श्री भद्रबाहुना ! ज्ञानादित्येनं संघाय शान्तये मङ्गलाय च ॥ अर्थात्:-जपसर्गहरस्तोत्र श्री भद्रबाहु आचार्य जी ने संघ के मङ्गल व शान्ति के लिये वनाया।

<sup>🕆</sup> जय वीयराय, छोग विरुद्धवाओ इन दो गाथाओं से चैद्यवन्दन के अन्त में प्रार्थना करने की परम्परा प्राचीन समय से है, जिसकी सिद्धि श्री हरिभद्रसूरिकृत चतुर्थ पश्चाशक गाथा ३२-३४ से होती है।

大学的,可以不是一个,这个人,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个

परत्थकरणं गुरुजण-पूआ च । लोग-विरुद्धचाओ. तब्बयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ सुह-गुरु-जोगो अरिहंत चेइयाणं सूत्र

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए सन्दाए, मेहाए, घिईए, घारणाए, अणुप्पेहाए, वड्डमाणीए, ठामि काउसग्गं॥ आचार्य आदि को वंदन

१ आचार्यजी मिश्र २ उपाध्यायजी मिश्र ३ जंगम युग प्रधान महारक मिश्रक १ सर्व साधू मिश्र ।

#### सन्वस्सवि सूत्र

सव्यस्तवि देवसिअ दुर्चितिय दुन्भासिअ दुचिद्विय तस्त मिच्छामि इच्छामि ठामि सूत्र दुकडं ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं । जो मे देवसिओ अइयारो कओ. काइओ. वाइओ + माणसिओ उस्प्रत्तो उम्मग्गो अकप्पोअकरणिजो दुःझाओ दुव्वि-चितिओ अणायारो अणिच्छिअच्यो असावग-पाउग्गो नाणेतह दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए : ति॰हं गुत्तीणं चउ॰हं कसायाणं पंच॰हंमणुव्ययाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मरस जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

### पुक्खर-वर-दीवहुं सूत्र

पुक्खर-चर-दीवड्डे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्य सुरगण-नरिंदः महियरस । सीमाधरस्त पप्फोडिअ-मोह-जालरस ॥२॥

४ वर्तमान श्री पृत्यजी का नाम लेकर।

भारको पारको के पाठ में वाग्त वन की सुद्धम आलोचना है।

<sup>्</sup>र प्रमारकारदी में शान की स्त्रति है।

जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स । कल्लाणपुक्खल-विसाल-सुहाबहस्स ॥
को देव-दाणव-नरिंद-गणिचयस्स । धम्मस्स सार मुवलक्म करे पमायं १॥३॥
सिन्धे भो । पयओ णमो जिण मए णंदी सया संजमे ।
देवं नाग सुवन्न किण्णर गणस्सक्सूअ भावचिए ॥
लोगो जत्य पइहिओ जगिमणं नेलुक मचासुरं ।
धम्मो बहुउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं बहुउ ॥४॥
सुअससभगवओ करेमि काउस्सग्गं ।

### सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र\*

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, णमो सयासच्च सिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणिव देवो, जं देवा पंजली णमं संति । तं देव देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि णमोक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा॥३॥ उजिंत

े श्र सिद्धाणं बुद्धाणं की पूर्व गाथामे सिद्धोंकी स्तुति है। दूसरी व तीसरी गाथा में भगवान महाबीर की स्तुति है। चौथी में श्री नेमिनाथजी की स्तुति है। पांचवी में चौवीसों की स्तुति है।

सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र में अन्त की दो गाथार्थे सम्मिलिति करने का प्रमाण निम्नलिखित कथा से पाया जाता है:---

हस्तनागपुर निवासी धनसेठ एक समय गिरनार पर्वत पर संघ समेत यात्रार्थ गया। भगवान नेमिनाथजी की प्रतिमा को उसने वस्त, आमूपण, पुष्प, माछा तथा सुगन्धित द्रव्यों से अध्यप्रकारी पूजा तथा अंगिया रची। उसी समय महाराष्ट्र देश का मछयपुर नगर वासी दिगम्बर मतानुयायी वस्ण नामका सेठ भी संघ सिहत वहां आया। धनसेठ द्वारा इत प्रभु पूजा को देख, उसने द्वेषवश सम्पूर्ण पूजा सामग्री उतार, फिर से प्रभु का प्रक्षालन किया। इससे दोनों में वादाविवाद होने छगा। और दोनों निर्णयार्थ विक्रम राजा के गिरिनगर (गुजरात प्रदेश) में आये। रात्रि में धनसेठ को शासन देवी प्रगट हुई और उसने अन्स की दो गाथायें (डिंज्जत सेल सिहरे, चत्तारि अह दस दो) देकर कहा कि यह मेरे प्रभाव से दुम्हारे संघ में सब छोटे, वहों को याद हो जायेंगी। और यही राजसभा में प्रमाण स्वरूप काम आयेंगी। ऐसा ही हुआ। राजा ने धनसेठ का पक्ष प्रवल जान, खेताम्बर तीर्थ की घोषणा कर दी। तभी से यह दोनों गाथा प्रतिक्रमण में सिम्मिलत कर दी गई। (श्री आत्मप्रवोध पृ० ६५—प्रकाशक श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर।)

स्त्र विभाग ६

सेलिसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तंधममचकविं , अरिंड-नेमिं नमं सामि ॥॥ चत्तारि अह दस दोय, वंदिया जिणवराचउ-व्वीसं। परमह निष्ठि अहा, सिन्हा सिन्धि मम दिसंतु ॥५॥

वेयावचगराणं सूत्र

वेयावचगराणं संतिगराणं सम्मिद्दि समाहिगराणं करेमिकाउसग्मां। अन्नत्थ॰ इत्यादि ॥

सुगुरु वन्दन सूत्र

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जाविण्डजाए निसीहिआए अणुजाणह में मिउगहं। निसीहि, अहोकायं काय संभासं। खमणिङ्जो में किलामो । अप्प किलंताणं बहुसुमेणमे दिवसो बहुक्कतो ? जत्ता में ? जविण ड्जं च में ? खामेमि खमासमणो! देविसओ बहुक्कतो ? जत्ता में ? जविण ड्जं च में ? खामेमि खमासमणोएं देविसआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कमां। आवस्तिआए पिडक्कमामि। खमासमणाणं देविसआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कमामि निदासि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

आलोउं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देविसिअं आलोउं। इच्छं। आलोएमि आलोउपणा<sup>३</sup>

वाजुणा चार पहर दिवस में मैंने जिन जीवों की विराधना की हो। सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पति
१ मिककमण में इस सूत्र से गुख्विल्यका (मूंदपित) चरवले (पंज्नी) के अपर रख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पति
१ मिककमण में इस सूत्र से गुख्विल्यका (मूंदपित) चरवले (पंज्नी) के अपर रख वरे यह पार स्थापना जान वन्दन किया जावा है। विशेष जानने के लिये जावरयकिनधुंकि देवे।

३ यह पार सम्पूर्ण प्रश्च भे है।

३ दस पार सम्पूर्ण प्रष्ट भे है।

३ दस पार सम्पूर्ण प्रश्च में है।

३ दस पार सम्पूर्ण प्रश्च में है। 

काय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चौइन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारक, चार लाख तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य । कुल चौरासी लाख जीवयोनियोंमें से किसी जीव का मैंने हनन किया हो, कराया या करते हुएका अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

# अठारह पापस्थानक आलोयणा<sup>१</sup>

यहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैशुन, पांचवां परिग्रह, छठा कोघ, सातवां मान, आठवां माया, नववां लोभ, दशवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पेशुन्य, पन्द्रहवां रितअरित, सोलहवां पर परिवाद, सत्रहवां माया मृषावाद, अठारहवां मिथ्यात्वशाल्य, इन पापस्थानोंमें से किसी का मैंने सेवन किया, कराया या करते हुए को अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

# ज्ञानोपकरणों की आलोयणा<sup>२</sup>

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव, गुरु, धर्म की आशातना की हो, पन्द्रह कर्मादानों की आसेवना की हो, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भुक्त (भोजन )कथा की हो, और जो कोई परनिन्दादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो सो सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

### पोसह संध्या अतिचार।

ठाणे कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते हरियक्काय संघट्टे बीयकाय संघट्टे थावरकाय संघट्टे छप्पड्या संघट्टे सव्वरसवि देवसिय दुच्चितिय दुन्मासिय दुच्चिट्टिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

१ प्रतिक्रमणमें इस सूत्र द्वारा खड़े होकर अठारह पापस्थानोंकी आलोयणा की जाती है। २ इस पाठ के द्वारा प्रतिक्रमणमें खड़े होकर ज्ञान तथा दर्शन के उपकरणों की आलोयणा की जाती है।

संयारा उवट्टणकी आउट्टणकी परिअट्टणकी पसारणकी छप्पइआ संघट्टण की अचक्खु विसय कायकी, सन्वरसवि राइअ दुन्चितिय दुन्मासिय दुच्चिडिय इन्छाकारेण संदिसह भगवन तस्स मिन्छामि दुक्कडं ।

## श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र १

الهجاما فياميه والمراه والمساع فيد والهيدومي ودعدوه فيا وعيقوم ميدوم وعيد اعدوم وعدديد ودورود وواءاءاءاء

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए असव्व साहूअ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइ आरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तहदंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ वायरो वा, तंणिंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्ग-हम्मि सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।३॥ जं बद्ध मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्येहिं। रागेण व दोसेण व, तंणिंदे तंच गरिहामि ॥ श। आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे (य) अणामोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुल्हिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसियं सन्वं ॥६॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तहा य परहा, उभयहा, चेव तंणिंदे ॥०॥ पंचण्ह मणुव्ययाणं, गुणव्ययाणं च तिण्ह-मइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सञ्जं ॥८॥ पढमे अणु-व्ययम्मि, थूलग पाणाइ वाय विरईओ । आयरि अ मप्पसत्ये, इत्य पमायप्प-संगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्त पाणवुच्छेए । पढम वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥१०॥ बीए अणुव्ययम्मि, परियूलग अलियवयण विरईओ । आयरिअ मप्पसत्ये, इत्य पमाय प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहरस दारे, मासुवएसेअ कूडलेहेअ । बीय वयस्सङ्आरे, पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलग परदव्य हरण विरई्ओ। आयरिअ मप्पसत्ये, इत्य पमाय प्पसंगेणं ॥१३॥ तेना हडप्पओगे, तप्पडिस्त्रे विरुद्ध गमणे अ । कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥११॥ चउत्वे अणुव्वयम्मि,

१ इस वंदित्तु सूत्र से दाहिना घुटना खड़ा करके श्रावक सम्बन्धी वारह बर्तों की आरोपणा की जाती है।

णिच्चं परदार गमण विरईओ । आयरिअ मप्पसत्ये, इत्थ पमाय प्यसंगेणं।।१५॥ अपरिगाहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे । चउत्थ वयस्सइआरे, पिंडक्कमे देसिअं सन्वं॥१६॥ इत्तो अणुन्वए पंचमिम्म, आयरिअ मप्प-सत्थिमा । परिमाण परिच्छेए इत्थ पमाय प्यसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्यू रुप्प सुवण्णेअ कुविअ परिमाणे दुपए चउप्पयम्मि य पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥१८॥ गमणस्स उपरिमाणे दिसासु उड्डं अहेअ तिरिअं च । बुड्डि सइ अंतरदा, पढमिम गुणव्यए णिंदे ॥१९॥ मञ्जम्मिअ मंसिम्मअ, पुष्पेअ फलेअ गंधमल्लेअ। उवसोग परिभोगे, बीयिम गुणव्यए णिंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसिह भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥२१॥ इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवञ्जए कम्मं । वाणिञ्जं चेव य, दंत स्टक्ख रस केस विस विसयं ॥२२॥ एवं खुञ्जंतं पिल्लण कम्मं निल्लल्लणंच दवदाणं। सरदह तलायसीसं. असई पोसंच वञ्जिञ्जा ॥२३॥ सत्यग्गि मुसलजंतग, तण कहे मंत मूल भेसञ्जे । दिग्णे दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सन्वं ॥२४॥ न्हाण् वट्टण-वण्णग्. विलेवणे सद्द रूव रस गंधे। वत्यासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं⊛ ॥२५॥ कंद्रप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइस्ति । दंडिम्म अणहाए तइयम्मि, गुणव्वए णिंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवहाणे तहा सङ्विहुणे । सामाइय वितहकपु, पढमे सिक्खावए णिंदे ॥२७॥ आण-वणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गळक्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए णिंदे ॥२८॥ संथारुचारविही, पमाय तहचेव भोयणाभोए । पोसह विहि विव-रीए तड़ ए सिक्खावए णिंदे ॥२९॥ सिचत्ते णिक्खिवणे, पिहिणे वबए समच्छरे चेव । कालाइ क्कमदाण, चउत्थे सिक्खावए णिदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तंणिदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण करण जुत्तेसु।

<sup>ः-</sup> देसिअं सन्त्रं के स्थान पर राई, पक्खी, चौमासी, सम्वत्सरी, प्रतिक्रमणों में राइअं, पश्चित्रकं, चौमासिअं, सम्बत्सरिअं सञ्जं कहना चाहिये।

संते फासुअ दाणे, तंणिंदे तं च गरिहामि॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविञ मरणेञ, आसंस पओगे । पंचिवहो अइयारो मामञ्झं हुज्जमरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स. पहिकम्मे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स. सन्वस्त वयाङ्गआरस्स ।।३४॥ वंदणवय सिक्खा गारवेसु सन्ना कसाय दंडेसु । गुत्तीसु अ समिई सुअ, जो अइआरो अ तंणिंदे ॥३५॥ सम्मदिहीजीबो, जइवि ह पावं समायरइ किंचि । अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर गुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहिच्य सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ट गयं, मंत-मूल विसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तोतं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अहिवहं कम्मं, राग दोस समञ्जिअं । आलोअंतो अ णिदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ णिदिअ य गुरु सगासे । होइ अइरेग, लहुओ ओहरि अ भरुव्य भारवहो ॥४०॥ आवस्स एण एएण सावओ जइवि बहुरओहोइ । दुक्खाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥आलोअणा बहुविहा,नय संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे. तंणिंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केविल पण्णत्तस्स, अन्मुहिओमि® आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिनकंतो वंदामि जिणे चउव्यीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्डेअअहे अ तिरिअ लोएअ । सच्चाइं तांइ बंदें, इह संतो तत्थ सताइं ॥ २४ ॥ जावंत साह, रवय महाविदेहेअ। सव्वेसिं पणओ. तेसिं हेण तिदंड विख्याणं ॥४५॥ चिख्संचिय पाव, पणासणीइ भव सय सहस्स महणीए । चउवीस जिण विणिग्गय, कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मोअ। सम्मिद्दिडी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिंच ॥४७॥ पडिसिन्दाणं करणे, किचाण मकरणे पडिकामणं। असदहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सच्चजीवे, सच्चे जीवा खमंतु में । मित्ती में सच्चभूएसु, वेरं मञ्झं न केणई ॥१९॥ एवमहं

यहां से सम्पूर्ण खड़े होकर ही पढ़ना चाहिये ।

作人人,我了什么,我们们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们是一个人,我们们们的人,我们们们的一个人,

आलोइअ, णिंदिय गरहिअ दुर्गछिउं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्यीसं ॥५०॥

# आयरिअ उवन्माए स्त्र"।

आयरिक उवज्झाए, तीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सन्ने तिविहेण खामेमि ॥१॥ सन्नस्स समण संघस्स भगवओ अंजिलं करिक सीसे। सन्नं खमावइत्ता, खमामि सन्नस्स अहयंपि ॥२॥ सन्नस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म निहिक्ष निक्षचित्तो। सन्नं खमावइत्ता, खमामि सन्नस्स अहयंपि ॥३॥

### चैत्यनमन स्तोत्र

सद्भक्त्या देवलोके रिव शिशा भवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणि किरणेध्वेस्त सान्द्रान्ध कारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥१॥
वैताद्ध्ये मेरुशृङ्गे रुचक गिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वक्खारे कूट नन्दीश्वरकनकगिरी नैषधे नीलवन्ते। चैत्रे शैले विचित्रे यमक गिरिवरे चकवाले
हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥२॥ श्रीशैले
विन्ध्यशृङ्गे विमलगिरिवरे ह्यंदुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्ण शैले । सह्याद्रौ वैजयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ,
श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥३॥ आघाटे मेदपाटे
क्षिति तट मुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नांटे च घाटे विटिषधनतटे हेमकूटे
विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकट तरकटे चक्र कूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां
प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥१॥ श्रीमाले मालवे वा मलियिनि निषधेमेखले पिच्छले वा नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा। डाहाले
कोशले वा विगलित सिलले जङ्गले वाढ़माले श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं
तत्र चैत्यानि वन्दे ॥५॥ अङ्गे बङ्गे किलङ्गे सुगत जनपदे सत्प्रयागे तिलंगे

<sup>া</sup> प्रतिक्रमण में इस सूत्र द्वारा, खड़े होकर, अंजली जोड़ तथा सिर नवा सकल अमण सहु ( मुनि समुदाय ) से क्षमा याचना की जाती है।

, ARRESTATOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTOR CONTRACTO गाँडे चाँडे मुरण्डे वरतर द्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे । आद्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविड कवलये कान्यकृञ्जे सुराष्ट्रे,श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे॥६॥ चन्द्रायां चन्द्रमुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोञ्जयिन्यां, कोशाम्ब्यां काशलायां कनकपुरवरे देविगर्याच काश्याम् । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे भिद्दले ताम्रलिप्त्यां श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥७॥ स्वर्गे मत्येंऽन्तरिक्षे गिरि शिखर हृदे स्वर्ण दीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जल निधि पुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे। ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्थ्यं,श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे॥८॥श्रीमन्मेरीकुलाद्रौ रचक नगवरे शाल्मलो जम्बुवृक्षे, चोज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकर रचके कौण्डले मानुपाङ्का। इक्षकारे जिनाहो च द्धिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गछोके, ज्योतिलोंके भवन्ति त्रिमुवन वलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥ इत्थं श्रीजैन चैत्य स्तवन-मनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोचत्कल्याणहेतु कलिमल हरणं भक्तिभाज-स्त्रिसन्ध्यम् । तेषां श्रीतीर्थयात्रा फल मतुल मलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारि ॥१०॥

# श्री तीर्थमाला स्तवन

शत्रृंजयऋपमसमोसस्या, भला गुणभरचारे। सीघा साघु अनन्ततीरथते नसुरे॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, सुगते गया रे । नेमीसर गिरनार ती॰ ॥१॥ अष्टापद एक देहरी गिरिसेहरी रे । भरते भराच्या बिम्ब ॥ ती॰ ॥ आवू चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे।

विमलवसङ् वस्तुपाल ॥ ती॰ ॥ २ ॥

समेन शिखर सोहामणो, रलियामणो रे । सीधा तीर्थंकर बीस ॥ नयरी चम्पा निरस्तियें, हिये हरसीयें रे । सीधा श्रीवासुपूच्य ॥ ती॰ ॥३॥ प्रव दिशें पावापुरी, रिन्हें भरी रे । मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे । अरिहंत विम्व अनेक ॥ ती॰ ॥॥॥ वीकानेरज वंदीये. चिर नंदीये रे । अरिहंत देहरा आठ ॥ ती॰ ॥ मोरिमरो मंबेसरो पंचासरो रे । फळोधी श्रंभणपास ॥ ती॰ ॥ ॥५॥

अंतरीक अंजावरो, अमीझरो रे । जीरावलो जगनाथ ॥ ती॰ ॥ तैलोक्यदीपक देहरो जात्रा करो रे । राणपुरे रिसहेस ॥ ती॰ ॥ ॥६॥ श्री नाडुलाई जादवो, गौडी स्तवो रे । श्री वरकाणो पास ॥ ती॰ ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे । रुचक कुंडल चारू चार ॥ ती॰ ॥। शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती॰ ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे । समयसुंदर कहे एम॥ती॰॥८॥॥

## तीर्थ वन्दना\*

सकल तीर्थ वंदूकर जोड़, जिनवर नामे मंगल कोड़। पहले खर्गे लाख बत्तीस, जिणवर चैल नमूं निश दीस ॥१॥ बीजे लाख अद्वाविश कह्या, तीजे बार लाख सरदह्या। चौथे खगें अडलख धार, पांचमे वन्द्रं लाख जो चार ॥२॥ छठे खर्गें सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रसाद । आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वन्दुं शत चार ॥श॥ इग्यार बारमें त्रणसें सार, नवग्रैवेके त्रणसें अढार । पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली ॥॥॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवर भवन तणों अधिकार। लांबा सो जोजन विस्तार, पचास ऊंचा बोहोत्तर धार ॥५॥ एक सो अस्सी बिम्ब परिमाण, सभा सहित एक चैत्ये जाण । सो कोड बावन कोड सम्भाल, लाख चौराणू सहस चौआल॥६॥ सातमें ऊपर साठ विसाल, सवि बिम्ब प्रणम्ं त्रणकाल । सातकोंड ने बहोंत्तर लाख, भुवनपति मां देवल भाख ॥॥॥ एक सो अस्सी बिम्ब परिमाण, इक इक चैत्ये संख्या जाण । तेरसे कोड नन्यासी कोड, साठ लाख वन्दुं कर जोड़ ॥८॥ बत्रीशेंने ओगण साठ, तिर्छी लोक मां चैस नो पाठ। तीन लाख एकाणू हजार, तीनसें वीश ते विम्ब जुहार ॥९॥

时,这样,阿里尔里,阿里里的一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们就是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

इन स्तोत्रों से समस्त तीथों को वन्दन किया जाता है।

अ
गा
विहर
अहीद्रं
पञ्च मह
बाह्य अभ्
नित नित

परसमय तिमिर त
समीरं, बन्दे देवं महावीरम
गण निकामम् । निरन्तरं
संदेह कारि कुनयागम रूडगू
तमुक्तरणोरुनावं, वीरागमं प
छीढ़ छोछाछिमाछा, वर कमर्छा
गारविच्छिक्तिकारं, कुरुकमल करे
वीर
संसार दावानल दाहनीरं, संम
ारसीरं, नमामि बीरं गिरिसारधीरम् ।
ज विलोलकमला विल्यालितानि । संपू

\* हित्रयों को प्रातः काल के प्रविक्रमण में
। व्यंतर ज्योतिष मां वली जेह, शाश्वता जिन वन्दुं हूं तेह । ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥ समेत शिखर वन्दूं जिणवीस, अष्टापद वन्दुं हूं चौवीस । विमला चलने गढ़गिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥११॥ शंखेखर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार। अंतरीक वरकाणो पास, जीरावलोने श्रम्भण पास ॥१२॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिणवर चैत्य नमूं गुणगेह । विहरमान वन्दूं जिनवीस, सिद्ध अनंत नमूं निशदीस ॥१३॥ अद़ीद्वीप मां जे अणगार, अद्वार सहसं सिलांगनाधार । पञ्च महावत समिति सार, पाले पलावे पञ्चाचार ॥१४॥ बाह्य अभ्यन्तर तप उजमाल, ते मुनि वन्दुं गुणमणिमाल । नित नित उठी कीरति करूं, 'जीव' कहे भवसागर तरूं ॥१५॥

परसमय तिमिर तरणिं, भवसागर वारि तरण वर तरणिम् । रागपराग समीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥१॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्त भावारि-गणा निकासम् । निरन्तरं केवल सत्तमावो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥२॥ संदेह कारि कुनयागम रूढगूढ़ संमोह पङ्क हरणामल वारिपूरम्। संसारसागर समुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥ परिमल भरलोभा ळीढ़ छोलालिमाला, वर कमलनिवासे ! हारनी हारहासे ! अविरल भवकारा गारंबिच्छित्तिकारं, कुरुकमल करे में मङ्गलं देविसारम् ॥४॥

संसार दावानल दाहनीरं, संमोह धूलीहरणेसमीरं । माया रसादारण सारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावा वनाम सुर दानव मानवेन, चूला विलोलकमला विलमालितानि । संपूरिताभि नत लोक,समीहितानि । कामं

<sup>\*</sup> स्त्रियों को प्रातः काल के प्रतिक्रमण में संसारदावा की जगह यही स्तुति कहनी

नमामि जिनराज पदानि तानि॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवी, नीर पूराभिरामं। जीवाहिंसा विरल लहरी, सङ्गमागाह देहं। चूलावेलं गुरुगममणी, संकुलं दुरपारं। सारं वीरागम जलनिधि, सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधृली बहुल परिमला, लीढ़ लोलालिमाला।झंङ्कारा रावसारा मल दल कमला, गारभूमि निवासे! छाया संभार सारं! वरकमल करे! तार हाराभिरामे! वाणीसन्दोह देहे! भव विरह वरं देहि मे देवि! सारम्॥॥॥

## सामायिक पारण सूत्र\*

भयवं दसण्णभदो । सुदंसणो थूलभद वहरो य । सफली कय गिहचाया । साहु एवं विहाहुंति ॥१॥ साहूण वंदणेणं । णासइ पावं असं-किया भावा । फासुअ दाणे निज्जर । अभिग्गहो णाण माईणं ॥२॥ छउ-मत्थो मूढ़मणो । कित्तिय मित्तंपि संभरइ जीवो ॥ जं च ण संभरामि अहं । मिच्छामि दुक्कढं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चितिय मसुहं वायाइ भासियं किचि । असुहं काएण कयं । मिच्छामि दुक्कढं तस्स ॥४॥ सामाइय पोसह संठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो । सेसो संसार फलहेउ ॥५॥ सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि करते अविधि आज्ञातना लगी हो, दस मनके, दस वचनके, बारह काया के इन बत्तीस दोषोंमें से जो कोई दोष लगा हो, वे सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं ॥

# श्री अभयदेव सूरिकृत जयतिहुअण

जय तिहुअण वर कप्परक्ख, जय जिण घण्णंतरी । जय तिहुअण-कल्लाण कोस, दुरियक्किर केसरी ॥ तिहुअण जण अवलंषिआण, भुवण त्तय सामिय । कुणसु सुहाइ जिणेस पास, थंमणय पुरिद्वय ॥१॥ तइ समरंत लहंति झत्ति, वर पुत्त कलत्तइ । घण्ण सुवण्ण हिरण्ण पुण्ण, जण मुंजइ

<sup>#</sup> इसकी पहली गाथामें भगवान दशार्णभद्रादि साधुओंको वन्दन है दूसरीमें साधुओंको वन्दन और शुद्ध आहार देनेका फल तीसरी और चौथी गाथामें जो कुछ अनजानपनेसे याद न रहा हो तथा मन, वचन, काय द्वारा अशुभ चिन्तन सामायक में किया हो उसका पश्चात्ताप है।

रञ्जइ ॥ पिक्खइ मुक्ख असंख सुक्ख, तुह पाास पसाइण । इअ तिहुअण वर कप्परुवस्त, सुक्साइ कुण मह जिण ॥२॥ जर जञ्जर परिजुण्ण कण्ण, नट्ठुइसुकुष्टिण। चक्खुक्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिय सूलिण॥ तुह जिण सरण रसायणेण, लहु हुंति पुणण्णव । जय घण्णंतरी पास महवि, तुह रोग हरो भव ॥३॥ विज्जा जोइस मंत तंत सिच्डिउ अपयत्तिण । भुवणऽब्भुअ अडबिह सिन्द्रि, सिन्झिहि तुह णामिण ॥ तुह णामिण अपवित्तओवि, जण होइ पवित्तउ । तं तिहुअण कल्लाण कोस, तुह पास णिरुत्तउ ॥४॥ खुद पउत्तइ मंत तंत, जंताई विसुत्तइ।चर थिर गरल गहुगा खगा, रिउ वगावि-गंजइ ॥ दुत्थिय सत्थ अणत्थ घत्थ, णित्थारइ दय करि । दुरियइ हरउ स पास देउ, दुरियक्करि केसरि ॥५॥ तुह आणा यंभेइ भीम, दृष्पुद्धर सुर-वर ।रक्लस जक्ख फणिंद विंद, चोराणल जलहर ॥ जल थल चारि रउद खुद, पसु जोइणि जोइय । इय तिहुअण अविलंघिआण, जय पास सुसामिय ॥६॥ पत्थिय अत्थ अणत्य तत्य, भत्तिब्भर णिब्भर । रोमं चंचिय चारु काय, किण्णर णर सुर वर ॥ जसु सेविहि कम कमल जुयल, पक्लालिय कलि मलु । सो भुवण त्तय सामि पास, मह मद्दउ रिउ बलु ॥७॥ जय जोइय मण कमल भसल, भय पंजर कुंजर । तिहुअण जण आणंद चंद, भुवण त्तय दिणयर ॥ जय मइ मेइणि वारिवाह, जय जंतु पियामह । थंभणयडिय पासणाह, णाहत्तण कुण मह ॥८॥ बहुविह वण्णु अवण्णु, सुण्णु, विण्णिउ छप्पण्णिहि । मुक्ख धम्म कामत्थ काम, णर णिअ णिअ सत्थिहि ॥ जं झायहि बहुद्रिसणत्थ, बहु णाम पसिन्डउ । सो जोइय मण कमल भसल, सुहुपास पबन्डउ ॥९॥ भय विन्मल रणझणिर दसण, थरहरिय सरीरय । तरिलय णयण विसण्ण सुण्ण, गगगर गिर करुणय ॥ तइ सहसत्ति सरंत हुंति, णर णासिय गुरु दर । मह विज्ञव सज्झसइ पास, भय पंजर कुंजर ॥१०॥ पइं पासि वियसंत णित्त, पत्तंत पवित्तिय। वाह पवाह पबृढ़ रूढ़, दुह दाह सुपुलइय। मण्णइ मण्णु सउण्णु पुष्णु, अप्पाणं सुरणर । इय तिहुअणआणंद चंद, जय पास जिपोसर ॥११॥ तुह कल्लाण महेसु घंट, टंकारव पिल्लिय । बल्लिर मल्ल महल्ल भत्ति, सुर वर गंजुिन्छिय । हल्लुफिलिय पवत्तयंति, भुवणेवि महसव । इय तिहुअण-والداع وشاعوت يابي أواه مؤمر بيرتنومونتهم والتوتيان با

आणंद चंद, जय पास सुहुन्भव॥१२॥ निम्मल केवल किरण णियर, विहुरिय तम पहचर । दंसिय सयल पयत्य सत्य, वित्थरिय पहा भर । कलि कल्लुसिय-जण घूय छोय, छोयणह अगोयर । तिमिरइ णिरुहर पासणाह, भुवणत्तय दिणयर ॥१३॥ तुह समरण जल वरिस सित्त, माणव मइ मेइणि । अवरावर सुहुमत्थ बोह, कंदल दल रेहिणि। जायइ फल भर भरिय हरिय, दुह दाह अणोवम । इय मइ मेइणि वारिवाह, दिस पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाण वल्लि, उल्लूरिय दुहवणु । दाविय सग्ग पवग्ग मग्ग, दुग्गइ गम वारणु । जय जंतुह जणएण तुल्छ, जं जणिय हियाबहु । रम्मु घम्मु सो जयउ पास, जय जंतु पियामहु ॥१५॥ भुवणारण्णनिवास दरिय, पर दिस्सण देवय । जोइणि पूर्यण खित्तवाल, खुदासुर पसुवय । तुहउत्तह सुणह सुहु, अविसंठुलु चिट्ठहि। इह तिहुअण वणसीह पास, पावाइ पणासिह ॥ १६॥ फणिफणफारफुरंत रयण, कर रंजियणहयल । फलिणी-कंदलदल तमाल, णीलुप्पलसामल । कमठासुर उवसग्ग वग्ग, संसग्ग अगं-जिय । जय पचक्ल जिणेस पास, यंभणय पुर हिय ॥१७॥ मह मणु तरलु पमाणु णेय, वायाचि विसंदुलु । णय तणुरिव अविणय सहान्त, आलस-विहलंघलु । तुह माहप्पु पमाणुदेव, कारुण्ण पवित्तउ । इय मइ मा अवहीरि पास, पालिहि विलवंतउ ॥१८॥ कि कि कप्पिड णय कलुणु, कि कि वण जंपिउ । किं वण चिडिउ किंहु देव, दीणयमवलंबिउ । कासु ण क्रिय णिप्तव्ल लब्लि, अम्मेहि दुहँ तिहि। तहवि ण पत्तउ ताणु किपि, पइ पहु परिचत्तिहि ॥१९॥ तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु, तुहु मित्त पियंकरु । तुहु गई तुहु मइ तुहूजि ताणु, तुहु गुरु खेमं करु । हउं दुहभरभारिउ वराउ, राउ णिक्सग्गह । लीणउ तुह कम कमल सरणु, जिण पालहि चंगह ।।२०॥ पइ किवि कय णीरोय लोय, किवि पाविय सुहसय । किवि महमंत महंत केवि, किवि साहिय सिव पय । किवि गंजिय रिउ वग्ग के वि, जस धव-लिय<sup>ं</sup> भूयल । मइ अवहीरहि केण पास, सरणागय वन्छल ॥२१॥ पन्चु-वयार णिरीह णाह, णिप्फण्ण पञ्जोयण । तुह जिणपास परोवयार, करणिक्क परायण । सत्तु मिर्च सम चित्त वित्ति, णय णिदय सम मण । मा अवहीरि

अजुग्गओवि, मइ पास णिरंजण ॥२२॥ हउं बहुविह दुह तत्त गत्तु, तुहु दुह णासण परु । हउ सुयणह करुणिक्क ठाणु, तुहु णिरु करुणायरु । हउं जिण पास असामि सालु, तुहु तिहुअण सामिय । जं अवहीरहि मइ झखंत, इय पास न सोहिय ॥२३॥ जुग्गाऽजुग्ग विभाग णाह्, ण हु जोयहि तुह सम । भुवणुवयार सहाव भाव करुणा रस सत्तम । सम विसमइ किं घणु णियइ, भुवि दाह समंतउ । इय दुहि बंधव पास णाह, मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥ ण्य दीणह दीणयं मुयवि, अण्णुवि किवि जुग्गय । जं जोइवि उवयारु करहि, उवयार समुज्जय । दीणह दीणु णिहीणु जेणु, तइ णाहिण चत्तउ । तो जुग्गउ अहमेव पास, पालहि मइ चंगउ ॥२५॥ अह अण्णुवि जुग्गय विसेसु किवि मण्णहि दीणह । जं पासिबि उवयार करइ, तुहु णाह सम-ग्गह । सुचिय किल कल्लाणु जेण, जिण तुम्ह पसीयह । किं अण्णिण तं चेव देव, मा मइ अवहीरह ॥२६॥ तुह पत्थण ण हु होइ बिहलु, जिण जाणउ किं पुण । हउं दुक्खिय णिरु सत्त चत्त, दुक्कहु उस्सुयमण । तं मण्णउ णिमिसेण, एउ एउ वि जइ लब्भइ। सच्चं जं भुक्खिय वसेण, किं उंबरु पचइ ॥२७॥ तिहुअणसामिय पासणाह, मइअप्पु पयासिउ । किज्जउ जं णिय रूव सरिसु, ण मुणउ बहु जंपिउ । अण्णु ण जिण जिग समोवि, दक्किण दयासउ । जइ अवगण्णसि तुह जि अहह, कह होसु हयासउ ॥२८॥ जइ तुह रूविण किणवि पेय पाइण वेलवियउ तुवि जाणउ जिण पास तुम्हि, हउं अंगी करिंड। इय मह इच्छिउ जं ण होइ, सा तुह ओहावणु । रक्खंतह णिय कित्ति णेय, जुञ्जइ अवहीरणु ॥२९॥⊛ महारिय जत्त देव, इहु ण्हवणमहूसउ । जं अणलियगुणगहण तुम्ह, जण अणिसिन्दउ। एम पसीह सुपास जाह, थंभणयपुर हिय । इय मुणिवरु सिरि अभयदेउ, विण्णवइ अणिदिय ॥३०॥

## जयं महायस सूत्र

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चितिय सुहफलय जय समत्य परमत्य जाणिय जय जय गुरु गरिम गुरु जय दृहत्य सत्ताण ताणय थंभणयद्विय पास जिण भवियह भीम भवत्यु भय अवणं ताणंत गुण तुञ्झतिसंज्झणमोत्य।

श्रुत देवता स्तृति

सुवर्ण शालिनी देवाद, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा ।
श्रुत देवी सदा मह्ममशेषश्रुतसम्पदम् ॥१॥

कमल दल विपुल नयना, कमल मुखी कमल गर्भ सम ग

कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुत देवता सौस्यम् ॥२॥

(भ्रुवणदेवयाए करेमि

भुवन देवता स्तृति

चतुर्वणीय संघाय, देवी भ्रुवनवासिनी ।

निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥१॥

ज्ञानादि गुणयुतानां, रवाध्याय ध्यान संयमरतानाम् विद्धातु सुवनदेवी, शिवं सदा सर्व साधूनाम् ॥२॥

(खत्तदेवयाए करेमि र सेत्र देवता स्तृति

यासां क्षेत्र गताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।

जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्र देवताः ॥१॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते किया ।

सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयानः सुखदायिनी ॥२॥

इच्छामो अणुसद्वियं सूत्र

इच्छामो अणुसद्वियं प्रते

इच्छामो अणुसद्वियं सूत्र

इच्छामो अणुसद्वियं एवे स्वासमणाणं गोयमाईणं ।

वर्द्धमान स्तृति ।

नमोऽस्तु वर्धमानाय, रपर्धमानाय कर्मणा । तज्जयाऽवास परोक्षाय द्वतीर्थिनाम्॥१॥ येषां विकचार विन्दराज्या, ज्यायः कम ।

१ नित्यं स्वाध्यायसंवयमरतानाम् । यद पाठ वपाण्यक्षमें बोला जाता है ।

इस स्तोत्र में वीर प्रसु के गुणवान है । सायङ्गल के विलवकण में कियों अत्र हा संसारदावा पढ़ना चाहिये । इस स्वतिमें चौया स्रोक प्रायः नहीं बोला जाता है ।

वर्ष स्वार संसारदावा पढ़ना चाहिये । इस स्वतिमें चौया स्रोक प्रायः नहीं बोला जाता कमल दल विपुल नयना, कमल मुखी कमल गर्भ सम गौरी। ( भुवणदेवयाए करेमि काउसग्गं )

ज्ञानादि गुणयुतानां, स्वाध्याय ध्यान संयमरतानाम् । विद्धात् भुवनदेवी, शिवं सदा सर्व साधूनाम् ॥२॥ ( खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं )

इच्छामो अणुसहियं णमो तेसं खमासमणाणं गोयमाईणं महासुणिणं

नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा । तज्जयाऽवाप्त परोक्षाय कुतीर्थिनाम्।।१॥ येषां विकचार विन्दराज्या, ज्यायः कम कमलाविल

२ इस स्तोत्र में वीर प्रभु के गुणगान हैं। सायङ्काल के प्रतिक्रमण में खियों को इसकी जगह संसारदावा पढ़ना चाहिये। इस स्तुतिमें चौथा श्लोक प्रायः नहीं वोला जाता है।

श्वाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥

; खाम्भुदोद्गतः । स शुक्रमागिराम् ॥३॥ श्वसितसुरमिविभ्रती या बिभत्ति ।

सुख विभ्रती या सिर्मत्ते ।

सम्मिसु, जावंत केवि साहू,
अहारस सहरस सीलंगधारा
ग्यसा मत्यएण वंदामि ॥१॥

ग गथा है।
नेपर १०० और इनको १ इन्द्रियोंसे
र संज्ञाओं के साथ जोड़ने से २०००
इप फिर इनको न करूं न कराऊं न
ठारह हजार मेद से ब्रह्मचर्य पालन
विधिप्रपा प्रम्थ' के आधार से छाने
विधिप्रपा प्रम्थ' के आधार से छाने
वे के छलावा अन्य भी कई एक सूत्रों
। मेरी सम्मित्से सारे प्रतिक्रमण में
नावस्थक में उन्हीं को वन्दन नमन
नमन करने का विधान है, इसलिये
मान समय में भी खरूतरगच्छ तथा
यहां पर वोलनेके लिये दे दिया है। द्घत्या । सदृशैरतिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कषायतापादित जन्तु निर्वृतिं करोति यो जैन मुखाम्बुदोद्रतः । स शुक्रमा-सोद्भव वृष्टिसन्निमो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥ श्वसितसुरिम-गन्धाऽउंळीढ्मृङ्गीकुरङ्गं, मुख शशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति । विकचकमल मुन्चैः, सारत्वचिन्त्यप्रभावा । सकल सुख विधात्री, प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥॥

### वरकनक सूत्र?

वरकणय संख विद्म, मरगय घणसंणिहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं. सव्वामर पूड्यं वंदे ॥१॥

# अहाइज्जेसु सूत्र

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमीसु, जावंत केवि साहू, रयहरण गुन्छ पडिग्गहघारा, पंचमहव्ययघारा अहारस सहरस सीलंगधारा अक्खयायारचरित्ता, ते सच्चे सिरसा मणसा वयसा मत्यएण वंदामि ॥१॥

कुछ समय से इस सूत्र के न वोलने की परिपाटी 'विधिप्रपा ग्रन्थ' के आधार से उठाने का प्रयत्न किया गया है। किन्तु विधिप्रपा प्रन्थ में इस सूत्र के अछावा अन्य भी कई एक सूत्रों के न वोछने का विधान है। छेकिन वे सव वोछे जाते हैं। मेरी सम्मतिसे सारे प्रतिक्रमण में गुरु, यति, भूनिराजों को श्रावक श्राविकार्ये वन्दनावश्यक में उन्हीं को वन्दन नमन करते हैं। इसमें उत्कट किया कारक के धनियों को वन्दन नमन करने का विधान है, इसिटिये उठा देनेका प्रयन्न किया गया हो तो कोई आश्चर्य नहीं वर्त्तमान समय में भी खरतरगच्छ तथा तपगच्छ में इस सूत्रको चोलने की परिपाटी मौजुद है अतः यहां पर वोलनेके लिये दे दिया है।

१—इस सूत्र में १७० तीर्थङ्कर भगवानों को वन्दन किया गया है।

२---१० यतिवर्म को ५ स्थावर ४ त्रस १ अजीवसे जोड़नेपर १०० और इनको ५ इन्द्रियोंसे जोड़ने पर ५०० इनको आहार, भय, मैथुन, परिग्रह इन चार संज्ञाओं के साथ जोडने से २००० फिर इनको मन, वचन, काय से जोड़ने पर ६००० भेद हुए फिर इनको न करू न कराऊं न अनुमोदूं से जोड़ने पर १८००० मेद होते हैं। इन अठारह हजार मेद से ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले को ही सचा मुनि कहा गया है।

# श्री स्थम्भण पार्खनाथ चैत्यवन्दन

श्री सेढ़ी तटिनी तटे पुर वरे, श्री स्थम्भणे स्वर्गिरौ, श्री पूज्याभयदेव सूरि विश्वघा, धीशैः समारोपितः। संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः, स्कूर्जत् फणा पछ्छवः, पार्खः कल्पतरु समे प्रथयतां, नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥१॥ आधि च्याधि हरो देवो, जीराबह्वी शिरोमणिः पार्खनायो जगन्नायो, नत नायो नृणां श्रिये ॥२॥

### ्रथंभणय पास सूत्र

सिरि थंभणयठिय पास सामिणो, सेस तित्य सामीणं। तित्य समुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सन्त्रेसिं ॥१॥ एसिमहं सरणत्थं, काउसग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुण सुद्वियस्त संघरत, समुण्णइ निमित्तं ॥२॥ श्री स्थम्भन पार्खनाथ जी, आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं । 

### चउक्कसाय सूत्र

चउकसाय पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरणु । सरस पिअंगु वण्णुगय गामिउ, जयउ पासु भुवण त्तय सामिउ ॥१॥ जसु तणु कंति कडप्प सिणिइड, सोहइ फणिमणि किरणालिइड । नं नव जलहर तिङ्क्षय लंकिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंकिउ ॥२॥

# पञ्च परमेष्ठी मङ्गळ स्तुति

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिताः, सिन्दाश्च सिन्दि स्थिता। आचार्या जिन शासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः। सिन्दान्त सुपाठका, मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः। पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥ श्रोमानदेवस्रिकृत छघुशान्ति स्तव

शान्ति शान्ति निशान्तं, शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्ति निमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥१॥ ओमिति निश्चितवचसे,

स्व विभाग १५

नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्ति, जिनाय जयवते, यशस्त्रिने स्वामिने दिमिनाम् ॥२॥ सकळातिशेषकमहा, सम्पत्ति समन्विताय शस्याय । त्रेळोक्य पूजिताय च, नमोनमः शान्तिदेवाय ॥३॥ सर्वामर स्वसम्ह, स्वामिक संपूजिताय निजिताय । भुवन जन पाळनोचत, तमाय सततं नमस्तम्मै ॥४॥ सर्व दुरितौय नाशन कराय, सर्वोऽशिव प्रशमनाय । दुप्ट प्रह भृत पिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥५॥ यस्येति नाम मन्त्र, प्रधान वाक्योपयोग कृत-तोषा । विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगविति ! विजये । सुजये ! परापरेरिजिते ! अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे भविति ॥७॥ सर्वस्यापि च सङ्घर्य, भद्रकच्याण मङ्गळं प्रददे । साधूनां च सद्दाशिव, सुतुष्टि पुष्टि प्रदेजीयाः ॥८॥ मच्यानां कृतिसदे ! निर्वृ त्ति निर्वाण जनि ! सत्वानाम् । अभयप्रदान निरते! नमो-उत्तु स्वस्ति दे तुग्यम् ॥९॥ भक्तानाम् । श्री सम्पत् कीर्तियशो वर्दिन । स्वयं वर्षे । वर्ण्यस्त ॥११॥ सक्तानाम् । श्री सम्पत् कीर्तियशो वर्दिन जयदेवि ! विजयस्व ॥११॥ सिळानाळ विष विषयर, दुप्ट ग्रह राजरोग रण भयतः । राक्षस रिपुगण मारि चौरित स्वापदादिन्यः ॥१२॥अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति जवाहाम् । अोमिति नमो नमो हां हीं हूं कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु स्वहा ॥११॥ मगविति ! गुणवित ! शिवशान्ति । तुष्टि अस्त कुरु कुरु स्वहा ॥११॥ सगविति । गुणवित ! शिवशान्ति । सुप्तिदिशीत , मन्त्रपद्विदिभितः स्तवः शान्ते । सिळ्ळादि भव विनाशी, शान्त्यादिका सक्तानाम् ॥१६॥ यस्येत वा व्या योगम्। स हि शान्त्यादी वा प्रात्त स्वा वात्र स्व स्व सक्ती सक्ता । पद्मा, त्र प्रात्त विचया और अपरातिवा देवचा आचार्त । मानवेत हो वात्र के पद्म कि । पद्मा, त्र या विचया और अपरातिवा देवचा आचार्त । महाराजकी भक्ता थी । इसी कारण स्वोत्रके पद्ने सुनने तथा जळ विक्वके सानित हो गई थी।

क्षयं यान्ति, छिचन्ते विश्वबद्धयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूःयमाने जिनेस्वरे ॥१८॥७

सर्व मङ्गल माङ्गल्यं, सर्व कल्याणकारणम् । प्रघानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

# बृहत् अतिचार

नाणंग्मि दंसणम्मि अ, चरणंग्मि तबम्मि तह य विरयम्मि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रा-चार, तपाचार, वीयीचार । इन पांच आचारों में से कोई अतिचार पक्ली दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचार के आठ अतिचार—"काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निण्हवणे । वंजण अत्यतदुभए, अहिवहो नाणमायारो ॥२॥ ज्ञान नियमित समय में पढ़ा नहीं । अकाल समय में पढ़ा । विनय रहित, बहुमान रहित, योग उपधान रहित पढ़ा । ज्ञान जिससे पढ़ा उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा । देववन्दन, गुरुवन्दन करते हुए तथा प्रतिक्रमण, सञ्ज्ञाय पढ़ने या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा । कानामात्रा न्यूनाधिक कही स्त्र असत्य कहा, अर्थ अशुद्ध किया अथवा स्त्र और अर्थ दोनों असत्य कहे । पढ़ कर भूला, असञ्ज्ञाय के समय में थिवरावली, प्रतिक्रमण, उपदेशमाला आदि सिद्धान्त पढ़ा । अपवित्र स्थान में पढ़ा या बिना साफ किये घृणित (खराब) भूमि पर रखा । ज्ञान के उपकरण पाटी, तख्ती, पाथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात आदिके पैर लगा, थूक लगा अथवा थूकसे अक्षर मिटाया। ज्ञानके

अवक श्राविकमण में सम्मिलित हुए न्यूनाधिक ५०० वर्ष हुए हैं। परम्परानुगत हरएक श्रावक श्राविका, गुरु यित या साधुओं के मुख से ही शान्ति श्रवण किया करते थे। उदयपुर में एक बृद्धावस्था के यित कई बार श्रावक श्राविकाओं को प्रतिक्रमण में सुनाते-सुनाते नंग हो गये अतः उन्होंने प्रतिक्रमण के अन्त में नित्य वोलने का नियम कर दिया। उस समय से अधाविष प्रतिक्रमण में पढ़ी या सुनी जाती है।

उपकरणको मस्तक (शिर) के नीचे रखा या पासमें छिये हुए आहार (भोजन) निहार (पाखाना ) किया, ज्ञान द्रव्य मक्षण करनेवाले की उपेक्षा की, ज्ञान द्रव्य की सार सम्भाल न की, उल्टा नुकसान किया, ज्ञानवन्त के ऊपर द्वेष किया. ईषी की, तथा अवज्ञा आशातना की, किसी को पढ़ने गुणने में विव्व डाला, अपने जानपने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान तथा केवल ज्ञान इन पांच ज्ञानों में श्रद्धा न की । गुंगे, तोतले की हंसी की, ज्ञान में कुतर्क की, ज्ञान के विपरीत प्ररूपणा की । इत्यादि ज्ञानाचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो. वह सब मन, बचन, काया

उपकरणको मस्तक (शिर) के नीचे निहार (पाखाना) किया, इ ज्ञान द्रव्य की सार सम्भाल न ऊपर द्वेष किया, ईषी की, त गुणने में विझ डाला, अपने जा अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान तथ की। गूंगो, तोतले की हंसी प्ररूपणा की। इत्यादि ज्ञानाचार में सक्ष्म या बादर जानते अज कर मिच्छाम दुक्कडं। दर्शनाचार के आठ अतिन्ति हुआ असूढ़ दिहिआ। उववुह प्रमं में निःशंक (विश्वास) न हुआ फल में संदेह किया। चारित्रवार मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना को देख कर चारित्र वाले प्रशंसा न की। धर्म से पतित ह का हित न चाहा। भक्ति न साधारण द्रव्य की हानि होते हु सार सम्माल न की। साधर्मी से मुसकोश बांधे बिना वीतराग कलश आदि से प्रतिमाजी को ट श्वासोश्वास लेते आशातना इ श्वासोश्वास लेते आशातनाओं में हाथ से गिरे हों या उनकी पढ़ि द्र्शनाचार के आठ अतिचार—"निरसंकिय निक्कंखिय, निर्व्वित-गिच्छा अमूढ़ दिहिअ। उवबुह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अह ॥३॥" देवगुरु धर्म में निःशंक (विश्वास) न हुआ, एकान्त निश्चय न किया। धर्म सम्बन्धी फल में संदेह किया । चारित्रवान साधु साध्वी की जुगुप्सा (निन्दा) की । मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना देख कर मूढ़ दृष्टिपना किया । कुचारित्री को देख कर चारित्र वाले पर भी अभाव हुआ। संघ में गुणवान की प्रशंसा न की । धर्म से पतित होते हुएं जीव को स्थिर न किया । साधर्मी का हित न चाहा । भक्ति न की, अपमान किया, देवहच्य, ज्ञानहच्य, साधारण द्रच्य की हानि होते हुए उपेक्षा की । शक्ति होने पर भले प्रकार सार सम्भाल न की । साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्म बन्धन किया । मुखकोशं बांघे बिना वीतराग देव की पूजा की । धूपदानी, खस कूची, कलश आदि से प्रतिमाजी को ठपका लगाया । जिनबिम्ब हाथ से गिरा। खासोखास लेते आशातना हुई। जिन मन्दिर तथा पौषधशाला में थूका तथा मलख्लेख्म (कफ ) किया । हँसी मक्करी की, कुत्हूहल किया जिन मन्दिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाओं में से और गुरु महाराज सम्बन्धी तेतीस आशातनाओं में से कोई आशातना हुई हो । स्थापनाचार्य हाथ से गिरे हों या उनकी पडिलेहन न की हो । गुरु के वचन को मान

न दिया हो। इत्यादि दर्शनाचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन,बचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचार के आठ अतिचार—'पणिहाण जोगजुत्तो पंचिह सम-इहिं, तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अहिवहो होइ नायव्यो।" ईर्या सिमिति, भाषा सिमिति, एषणा सिमिति, आदाण मंडमत्त निक्षेवणा (निक्षेपना) सिमिति और पारिष्ठापनिका सिमिति, मनोग्रिति, वचनगुति और काय गुित ये आठ प्रवचन माता रूप, पांच सिमिति और तीन गुित सामायिक पौषधा-दिक में अच्छी तरह पाळी नहीं। इत्यादि चारित्राचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बाद्र जानते या अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं॥

विशेषतः श्रावक धर्म सम्बन्धी श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत सम्यक्त्व के पांच अतिचार—"संका कंख विगिच्छा॰" शंका श्री अरिहन्त प्रभु के बल अतिराय ज्ञान लक्ष्मी गम्भीर्यादि गुण शाख्वती प्रतिमा चरित्रवान् के चारित्र में तथा जिनेस्वर देव के वचन में सन्देह किया । आकांक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेरा, क्षेत्रपाल, गरुड़, गूंगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रह पूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, बाली, माता मसानी आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे-जुदे देवादिकों का प्रभाव देख कर, शरीर में रोगान्तक आने पर इहलोक तथा परलोक के लिये पूजा मानता की । बौद्ध सांख्यादिक, सन्यासी, भगत, लिंगिये, जोगी, फकीर, पीर, इत्यादि अन्य दर्शनियों के मन्त्र यन्त्रों का चमत्कार देख कर परमार्थ जाने बिना मोहित हुआ । कुशास्त्र पढ़ा, सुना । श्राद्ध (सराघ)वार्षिकश्राद्धक्क, होली, राखड़ी-पूनम ( राखी ) अजाएकम, प्रेतदृज, गौरी तीज, गणेश चौथ, नाग पञ्चमी, स्कंद षष्ठी, झीलणा छठ (झूलना छठ), शील सप्तमी, दुर्गाष्टमी, द्वादशी. रामनामी. एकादशी. विजयादशमी. व्रत वामन

सरते के बाद बारहवी, तेरहवीं, तृमासिक, षट्मासिक, वार्षिक श्राद्धादि करना जैन धर्मानुसार उपयुक्त नहीं है।

धन तेरस, अनन्त चौदस, शिवरात्री, काली चौदस, अमावारया, शर उत्तरायण योग भोगादि किये कराये करते हुए को भला पीपल में पानी डाला, डलवाया, कुबा, तालाव, नदी, द्रह, बावड़ी कुण्ड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान किया तथा दान दिया, दिलाया, न किया। अहानियर, माघ मास, नवरात्रि का स्नान किया। वत किया। अहानियरों के माने हुए व्रतादि किये कराये। व्रत किया। अहानियरों के माने हुए व्रतादि किये कराये। व्राम्प सम्बन्धी फल में सन्देह किया। जिन वीतराग अरिनावान धर्म के आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्ग दातार, इत्यादि जान कर पूजा न की। इहलोक परलोक सम्बन्धी भोगवाञ्जा पूजा की। रोगान्तङ्क कप्ट के आने पर क्षीण वचन बोला। मानी। महात्मा महासती के आहार पानी आदि की निन्दा की। द्री की पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की। प्रीति की। दाक्षिण्यता का अर्थ व धर्म माना। मिध्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्री कित समबन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सुक्ष्म या बादर अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं। हले स्यूल प्रणातिपात-विरमण व्रत के पांच अतिचार—'वह बन्ध ए' द्विपद चतुष्पद आदि जीव को कोधवश ताज़न किया, घाव , जकड़ कर बांधा, अधिक बोझा लादा। निर्लाञ्जन कर्म नासिका र सार सम्माल न की, लेनदेन में किया। दाना, धास, पानी की गर सार सम्माल न की, लेनदेन में कियी के बदले किसी को भूखा ता स सह हुए धान को बिना कम में लिया, पिसवाया, धूप में सुकाया। पानी यत्न से न छाना। लकड़ी, उपले (कण्डे), गोहे, छाणे, गोये आदि बिना देखे बाले। तर्प, विच्छ, कानस्वजूरा, कीड़ी, मकौड़ी, सरोला, मांकड़, जुआ, आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीव को द्याया। दुखी जे अच्छी जगह पर न रखा। चूंटी (कीड़ी) मकौड़ी के अण्डे केये, लीख़ कोड़ी, दीमक, कीड़ी, मकौड़ी, धीमेल, कातरा, चुड़ेल, केये, लीख़ कोड़ी, दीमक, कीड़ी, मकौड़ी, धीमेल, कातरा, चुड़ेल, द्धार प्राप्त के मान्य स्थान के स्था के स्थान क द्वादसी, धन तेरस, अनन्त चौदस, शिवरात्री, काली चौदस, अमावास्या, आदित्यवार उत्तरायण योग भोगादि किये कराये करते हुए की भला माना । पीपल में पानी डाला, डलवाया, कुवा, तालाव, नदी, दह, बावड़ी समुद्र, कुण्ड उत्पर पुण्य निमित्त स्नान किया तथा दान दिया, दिलाया, अनुमोदन किया । प्रहण, शनिश्चर, माघ मास, नवरात्रि का स्नान किया । नवरात्रि व्रत किया। अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये। वितिगिच्छा—धर्म सम्बन्धी फल में सन्देह किया । जिन वीतराग अरि-हन्त भगवान धर्म के आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्ग दातार, इत्यादि गुणयुक्त जान कर पूजा न की । इहलोक परलोक सम्बन्धी भोगवाञ्छा के लिये पूजा की। रोगान्तङ्क कष्ट के आने पर क्षीण वचन बोला। मानता मानी । महात्मा महासती के आहार पानी आदि की निन्दा की । मिथ्यादृष्टी की पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की । प्रीति की । दाक्षिण्यता से उसका अर्थ व धर्म माना। मिश्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्री सम्यक्त्व व्रत समबन्धी जो कोई अतिचार पक्की दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

पहले स्थूल प्राणातिपात-विरमण व्रत के पांच अतिचार—'वह बन्ध छविच्छेए' द्विपद चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांघा, अधिक बोझा लादा । निर्लाञ्छन कर्म नासिका छिदवाई, कर्ण छेदन करवाया, खस्सी किया । दाना, घास, पानी की समय पर सार सम्भाल न की, लेनदेन में किसी के बदले किसी को भूखा रखा, पास खड़ा होकर मरवाया, कैंद करवाया । सड़े हुए घान को बिना शोघे काम में लिया, पिसवाया, धूप में सुकाया । पानी यत्न से न छाना । ईंघन, लकड़ी, उपले (कण्डे), गोहे, छाणे, गोये आदि बिना देखें बाले। उसमें सर्प, बिच्छू, कानखजूरा, कीड़ी, मकौड़ी, सरोला, गिंगाड़ा आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया। दुखी जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चूंटी (कीड़ी ) मकोड़ी के अण्डे नाश किये, लीख़ फोड़ी, दीमक, कीड़ी, मकौड़ी, घीमेल, कातरा,

वैन-प्रकार

वेडका, अलिस्या, ईअल, कृंदा, डांस, मसा, मगतरा, माखी, दि प्रमुख जीव का नाश किया। घोंसले तोड़े, चलते फिरते या काम काज करते निर्दय पना किया। मली प्रकार जीव रक्षा ना छाने पानी से स्नान काम काज किया। चारपाई, खटोला, ही आदि धूप में रखे। डण्डे आदि से झड़काये। जीवाकुल के ) जमीन को लीपी। दलते, कूटते, लीपते वा अन्य कुळ काम ते जयणा न की। अण्टमी चौदश आदि तिथि का नियम तोड़ा। गई। इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण वत सम्बन्धी जो तैचार पक्खी दिवसमें स्क्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो बह वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं। ते स्थूल मुषावाद विरमण वत के पांच अतिचार— 'सहसा-रहस्स-हसात्कार-विना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आलकल्क व्रह्मी सम्बन्धी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसी का मन्त्र प्रकट किया। किसी को दुखी करने के लिये झूटी सलाह दी, किसी को दुखी करने के लिये झूटी सलाह दी, किसी को वह वापिस न दी। कन्या, गो, भूमि सम्बन्धी लेन देन झगड़ते, वादविवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदि की ही, मर्म वचन बोला। इत्यादि दुसरे स्थूल मुषावाद विरमणवत जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सक्ष्म या बादर जानते अजानते वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं। विरमणवत के पांच अतिचार— तेनाहडण्यध्य अद्वादान विरमणवत के पांच अतिचार— तेनाहडण्यध्य अद्वादान विरमणवत के पांच अतिचार— तेनाहडण्यध्य अद्वादान विरमणवत के पांच अतिचार— तेनाहडण्य घर बाहर खेत खला में बिना मालिक के भेजे वस्तु शहण की, आज्ञा बिना अपने काम में ली, चोरी की वस्तु ली, चोर को दी। राज्य विरुद्ध कर्म किया। जकात (चुड़ी) की चोरी की। लेने देने की इस सम्मेल किया। जकात (चुड़ी) की चोरी की। लेने देने की उत्त डुए अधिक सम्मेल किया। जकात (चुड़ी) की चोरी की। लेने हुए अधिक सम्मेल किया। जकात (चुड़ी) की चेरी हुए अधिक विराहण्य चार के अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक पतंगिया, देडका, अलसिया, ईअल, कूंदा, डांस, मसा, मगतरा, मासी, टिड्डी आदि प्रमुख जीव का नाश किया । घोंसले तोड़े, चलते फिरते या अन्य कुछ काम काज करते निर्दय पना किया । भली प्रकार जीव रक्षा न की । बिना छाने पानी से स्नान काम काज किया । चारपाई, खटोला, पीढ़ा, पीढ़ी आदि धूप में रखे। डण्डे आदि से झड़काये। जीवाकुरु ( जीवयुक्त ) जमीन को लीपी । दलते, कूटते, लीपते वा अन्य कुछ काम काज करते जयणा न की। अप्टमी चौद्दा आदि तिथि का नियम तोड़ा। धूनी करवाई । इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण वत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्मया बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत के पांच अतिचार—'सहसा-रहस्स-दारे॰' सहसात्कार-विना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आलकलङ्क दिया । स्वस्त्री सम्बन्धी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसी का मन्त्र भेद मर्म प्रकट किया । किसी को दुखी करने के लिये झूठी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी गवाही दी, अमानत में खयानत की । किसी की धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी । कन्या, गौ, भूमि सम्बन्धी छेन देन में, लड़ते झगड़ते, वादविवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदि की गाली दी, मर्म वचन बोला। इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणवत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

तृतीय स्थृल अद्तादान विरमणवत के पांच अतिचार---'तेनाहडप्प-ओगे॰ घर बाहर खेत खला में बिना मालिक के भेजे बस्त ग्रहण की, अथवा आज्ञा विना अपने काम में ली, चोरी की वस्तु ली, चोर को सहायता दी। राज्य विरुद्ध कर्म किया। अच्छी सजीव निर्जीव, नई पुरानी वस्तु का भेल सम्भेल किया। जकात (चुङ्गी) की चोरी की। लेने देने में तराजू की डण्डी चढ़ाई अथवा देते हुए कमती दिया, छेते हुए अधिक

THE STATE OF THE PROPERTY OF T

लिया। रिंखत (घूस) खाई। विश्वासघात किया, ठगाई की। हिसाब, किताब में किसी को धोखा दिया। माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के साथ ठगाई कर किसी को दिया। अथवा पूझी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इनकार किया। पड़ी हुई चीज़ उठाई। इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमणवत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

चौथे खदारासंतोष परस्त्रीगमन-विरमणवत के पांच अतिचार— 'अप्परिगहिया इत्तर'—पर स्त्री गमन किया। अविवाहिता कुमारी विधवा वेश्यादिक से गमन किया। अनङ्ग कीड़ा की। काम आदि की विशेष जाप्रति की अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी, चौदस आदि पर्व तिथि का नियम तोड़ा। स्त्री के अंगोपांग देखें, तीव्र अभिलाषा की। कुविकल्प चिन्तन किया। पराये नाते जोड़े। अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, खप्त, खप्तान्तर हुआ। कुरवप्त आया। स्त्री, नट, विट, भांड़ वेश्यादिक से हास्य किया। खस्त्री में सन्तोष न किया। इत्यादि चौथे खदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमणवत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

क्ष चौथे पर पुरुष विरमणवतके पांच अतिचार—पर पुरुष गमन अवि-वाहित तथा विधवावस्था में गमन किया हो अनङ्ग क्रीड़ा पर पुरुष पर दृष्टिपात कामादि की विशेष जाप्रिती की अभिलाषा से पर पुरुष से सराग वचन कहा अष्टमी, चौदस आदि पर्व तिथि में नियम तोड़ा पर पुरुष के अंगोंपांग देखे तीव अभिलाषा की खराब विचार चिन्तवन किया पराये नाते जोड़े गुड्डे गुड्डियों का विवाह कराया वा किया अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वप्त, स्वप्तान्तर हुआ कुरुवप्त आया पुरुष, नट, विट,

आविकाओं को निम्नलिखित चौधेन्नन का पढ़ना उपगुक्त है।

भांड़ादिक से हास्य किया स्वपुरुष में सन्तोप न किया। इत्यादि चौथे स्वपुरुष सन्तोष पर पुरुष गमन विरमणवत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

पांचवें स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पांच अतिचार—'धण धणण खित्त वत्थु॰' धन धान्य क्षेत्र वस्तु सोना चांदी वर्त्तन आदि । द्विपद-दास दासी, चतुष्पद, गौ, बैल, घोड़ा आदि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया। लेकर बढ़ाया अथवा अधिक देख कर ममता वरा माता, पिता, पुत्र, स्त्री के नाम किया। इत्यादि परिग्रह परिमाण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्स्वी दिवस में सूक्ष्मया बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

छहे दिक् परिमाण वत के पांच अतिचार—'गमणस्सउ परिमाणे॰' ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिर्यग्दिशि जाने आनेके नियमित प्रमाण उपरान्तसे भूल गया। नियम तोड़ा, प्रमाण उपरान्त सांसारिक कार्यके लिये अन्य देश से वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहां भेजी। नौका, जहाज़ आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में गया। एक दिशा के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा में अधिक गया। इत्यादि छहे दिक् परिमाण वत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

सातवें मोगोपमोग व्रत के मोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्म आश्रित पन्द्रह अतिचार—'सचित्ते पिडविद्धे' -सिचत-खान पान की वस्तु नियमित से अधिक स्वीकार की। सिचित्त से मिली हुई वस्तु खाई। तुच्छ औपिंघ का मक्षण किया। अपक आहार, दुपक आहार किया। कोमल इमली, वूट, भुट्टे, फलियां आदि वस्तु खाई। "सचित्त दव्व विगई वाणह तम्बोल वस्य कुसुमेसु। वाहण सयण विलेबण वम्म दिसि-

ण्हाण भत्तेसु॥१॥ ये चौदह नियम लिये नहीं। लेकर भुलाये । बड़, पीपल, पिळंखण, कठुम्बर, गूळर ये पांच फळ । मदिरा, मांस, शहद, मक्खन ये चार महा विगई। बरफ, ओले, कची मिट्टी, रात्रिभोजन, बहुबीजाफल, अचार, घोलबड़े, द्विदल, बैंगन, तुच्छफल, अजानाफल, चलित रस, अनन्तकाय ये बाइस अमध्य । असूरन कन्द जमीकन्द, कची हल्दी, सतावरी, कचानर, कचूर, अदरक, कुवांरपाठा, थोहर, गिलोय, लहसुन, गाजर, गहा-प्याज़, गौंगलू, कोमल फलफूल, पत्र, थेगी, हरा मोथा, अमृतवेल, मूली, पद बहेड़ा, आलू, कचालू, रतालू, पिंडालू बज्रकन्द, पद्मनी कन्द अनन्तकाय का भक्षण किया । दिवस अस्त होने पर भोजन किया । सूर्योदयसे पहले भोजन किया। तथा कर्मतः पन्द्रह कर्मीदान—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साड़ीकम्मे, भाड़ीकम्मे, फोडीकम्मे ये पांच कर्म । दंत्त वाणिजा, लक्ख वाणिञ्ज, रस वाणिञ्ज, केस वाणिञ्ज, विष वाणिञ्ज ये पांच वाणिञ्ज । जंतिपञ्चणकम्मे, निल्लंङणकम्मे, दविगादाविणया, सरदहतलावसोसिणया, असइपोसणिया ये पांच सामान्य एवं कुल पन्द्रह कमीदान महा आरम्भ किंये कराये, करते को अच्छा समझा । खान, बिल्ली आदि पोसे पाले । महा साबच, पापकारी, कठोर काम किया । इत्यादि सातवें भोगोपमोग विरमण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्लामि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदण्ड के पांच अतिचार—'कंदप्पे कुक्कुइए॰'— कन्दर्प—कामाधीन होकर नट, विट, वेख्या से हास्य खेळ, कीड़ा कुतुहळ किया । स्त्री पुरुष के हाव-भाव रूप-शृङ्गार सम्बन्धी वार्ती की । विषयरस

अंग्रेजी दवा भी अभक्ष्य हैं। (१) काड लीवर पील्स, दरियाकी मञ्जलिक कलेजेकी दवा। (२) स्कान्ट इमलसन बावरील, बैल और भैंसेके बच्चेका मांस। (३) विरोल, गायके मगजका मांस। (४) विफारिन नाइन, मांससे मिली हुई शराव। (४) कारतिक लीकवीड, शराव। (६) सरोवानी टोनिक स्पिरीट, शराव। (७) एक्ष्टेट मोस्ट, शहद और मांस मिला हुआ। (८) एक्षटेट चिकन, सुगींके बच्चेका रस। (६) बेसेनइन, चर्ची। (१०) पेपसिन्ट पाउडर, दो जानवरोंके सूले मांसका बुरादा। (११) काडलीवर ओयल, मल्ललीका तेल।

भेषक कथा की। स्रीकथा, देशकथा, मक्तकथा, राज-कथा विकथा की। पराई भांजगड़ की, किसी की चुगळखोरी की। आ रीड्रप्यान प्याया। खांडा कटारी, कुरहा, कुरहाड़ी, रथ, उसळ, अघि, चक्की आदि वस्तु दाक्षिण्यतावश किसी को मांगी दी। प दिया, अप्टमी, चतुर्दशी के दिन दळने पीसने का नियम तोड़ा। से असम्बद्ध (फजूळ) वाक्य बोळा। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, ते दही, गुड़, छाछ (महा) आदिका भाजन खुळा रखा, उसमें जीवादि हुआ। बासी नक्सन रखा और तपाया। नहाते, घोते, दांतर जीवाकुळित मोरी में पानी डाळा। झूळे में झूळा। जुआ नाटक आदि देखा। होर ढंगर खरीदवाये। कर्कश बचन कहा, कि छी। ताड़ना, तर्जना की। मत्सरता धारण की। श्राप दिया। मेंस मेंढा, सुरगा, कुत्ते आदि छड़वाये या इनकी छड़ाई देखी। ऋदिक ऋदिद देख कर ईष्णी की। सिट्टी, नमक, घान, बिनौछे बिना मसळे। हरी बनस्पति खूंदी शस्त्रादिक बनवाये। रागद्धेष के वश का भछा चाहा। एक का सुरा चाहा, मृत्यु की बांछा की। मैना कवृत्तर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पिंजरे में डाळा। इत्यादि अन्वत्रात सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सुक्ष्म य जानते अजानते छगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मि दुक्कं।

नवमें सामायिकव्रत के पांच अतिचार—'तिबिहे दुप्पणिहाणें सामायिक में संकल्प विकल्प किया। चित्त स्थिर न रखा। सावय बोळा। प्रमार्जन किये वगैर शरीर हिळाया। इथर उधर किया। होने पर भी सामायिक न की। सामायिक में खुळे मुंह बोळा छी। विकथा की। घर सम्बन्धी विचार किया। दीपक या बिजा प्रकाश शरीर पर पड़ा। सचित्त वस्तु का संघट्टन हुआ। बी, आदिका निरन्तर परस्पर संघट्टन हुआ। मुंहपति संघट्टी। सामायिक पारी, बिना पारे उठा। इत्यादि नवमें सामायिकव्रत सम्बन्धी जे पोषक कथा की। स्त्रीकथा, देशकथा, भक्तकथा, राज-कथा ये चार बिकथा की । पराई भांजगड़ की, किसी की चुगलखोरी की । आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया । खांडा कटारी, कुशी, कुल्हाड़ी, रथ, ऊलल, मूसल, अमि, चक्की आदि वस्तु दाक्षिण्यतावश किसी को मांगी दी । पापोपदेश दिया, अप्टमी, चतुर्दशी के दिन दलने पीसने का नियम तोड़ा। मूर्खता से असम्बद्ध (फजूल) वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया । घी, तेल, दृघ, दही, गुड़, छाछ (महा) आदिका भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिका नाश हुआ । बासी नक्खन रखा और तपाया । नहाते, घोते, दांतून करते, जीवाकुलित मोरी में पानी डाला। झूले में झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा । ढोर डंगर खरीदवाये । कर्कश बचन कहा, किचिकची ही । ताड़ना, तर्जना की । मत्सरता धारण की । श्राप दिया । भैंसा, सांढ़, मेंढा, मुरगा, कुत्ते आदि लड़वाये या इनकी लड़ाई देखी। ऋदिमान की ऋद्धि देख कर ईर्ष्या की। सिट्टी, नमक, धान, बिनौले बिना कारण मसले । हरी बनस्पति खूंदी शस्त्रादिक बनवाये । रागद्वेष के वश से एक का भला चाहा। एक का बुरा चाहा, मृत्यु की वांछा की। मैना, तोते, कवूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पिंजरे में डाला। इत्यादि अनर्थदण्ड विरमणवत सम्बन्धी - जो कोई अतिचार पक्ली दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि

नवमें सामायिकवृत के पांच अतिचार---'तिविहे दुप्पणिहाणे॰'--सामायिक में संकल्प विकल्प किया । चित्त स्थिर न रखा । सावद्य वचन बोला । प्रमार्जन किये वगैर शरीर हिलाया । इधर उधर किया । शक्ति होने पर भी सामायिक न की। सामायिक में खुले मुंह बोला। नींद ली । विकथा की । घर सम्बन्धी विचार किया । दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा । सचित्त वस्तु का संघट्टन हुआ । स्त्री, तिर्यञ्च आदिका निरन्तर परस्पर संघट्टन हुआ । मुंहपति संघट्टी । सामायिक अधूरी पारी, बिना पारे उठा । इत्यादि नवमें सामायिकव्रत सम्बन्धी जो कोई

अतिचार पक्की दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, बचन, काया कर मिन्छामि दुक्कडं ।

दशमें देसावगासिकव्रत के पांच अतिचार—'आणवणे पेसवणे ' आणवणप्यओगे पेसवणप्यओगे सद्दाणुवाई रूवाणुवाई बहियापुग्गलक्खेवे । नियमित भूमि में बाहर से वस्तु मंगवाई । अपने पास से अन्यत्र भिजवाई खूंखारा आदि शब्द कर, रूप दिखा या कङ्कर आदि फेंक कर अपना होना मालूम कराया । इत्यादि दशमें देसावगासिकव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्स्वी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

ग्यारहवें पौषधोपवासवत के पांच अतिचार—'संथारुचार विहि॰' अप्पिडिलेहिअ, दुप्पिडिलेहिअ सिज्जासंथारए । अप्पिडिलेहिय दुप्पिडिलेहिय उचार पासवण भूमि । पौषध लेकर सोने की जगह बिना पूजे प्रमाजें सोया, स्थण्डिल आदि की भूमि अच्छी तरह शोधी नहीं । लघुनीति (पेशाब), बड़ी नीति (टट्टी जाना) करने या परठने के समय "अणु-जाणह जरसग्गो" न कहा । परठे बाद तीन बार 'वोसिरे' न कहा । जिन मन्दिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए 'णिसीहि' और बाहर निकलते 'आवस्सिह' तीन बार न कही । वस्त्र आदि उपिष्ठ की पिडिलेहणा न की । पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पितकाय, त्रसकाय का संघट्टन हुआ । संथारा पोरिसी पढ़नी भुलाई । बिना संथारे जमीन पर सोया । पोरिसी में नींद ली, पारना आदि की चिन्ता की । समय पर देव-वन्दन न किया । प्रतिक्रमण न कियां । पौषध देरी से लिया और जल्दी पारा, पर्वतिथीको पोसह न लिया । इत्यादि ग्यारहवें पौषधवत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पत्रखी, दिवस में सक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सव मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

बारहवें अतिथि सम्बिभाग व्रत के पांच अतिचार—'सचित्ते निक्खिन वणे॰' सचित्त वस्तु के संघट्टे वाला अकल्पनीय आहार पानी साधू साध्वी

को दिया। देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कही। देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही। न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कही। न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही। गोचरी के समय इघर उघर हो गया। गोचरी का समय टाछा। बेवक साधु महाराज को प्रार्थना की। आये हुए गुणवान की भक्ति न की। शिक्त के होते हुए स्वामि-वात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्र को पड़ता देख मदद न की। दीनदुखी की मदद न की। दीनदुखी की अनुकम्पान की। इत्यादि बारहवें अतिथि सम्बिभाग व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते छगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

मंछेषणा के पांच अतिचार—'इहलोए परलोए॰' इहलागा संसप्प-ओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इह लोक सम्बन्धी राज ऋदि भोगादि की बांछा की। परलोक में देबदेवेन्द्र चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने पर मरने की बांछा की। इत्यादि संलेषणाव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, बचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

,这时,我可以是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人

तपाचार के बारह भेद—छ बाह्य छ अभ्यन्तर । "अणसणमुणो अरिआ॰"—अनशन शक्ति के होते हुए पर्व तिथि को उपवास आदि तप न किया । उनोदरी-दो चार प्रास कम न खाये । वृत्ति संक्षेप द्रव्य खानेकी बस्तुओं का संक्षेप न किया । रस-विगय त्याग न किया । कायक्छेश-छोच आदि कष्ट न किया ! संछीनता-अंगोपांग का संकोच न किया । पचक्खाण तोड़ा । भोजन करते समय एकासणा आयम्बिल प्रमुख में चौकी, पटड़ा, अखला आदि हिलता ठीक न किया । पचक्खाण करना मुलाया, बैठते नवकार न पढ़ा । उठते पचक्खाण न किया । नीवी, आयम्बिल, उपवास आदि तपमें कच्चा पानी पिया । वमन ( उल्टी ) हुआ । इत्यादि बाह्य तप

सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

अभ्यन्तर तप—"पायिछत्तं विणओ॰" शुद्ध अन्तःकरण पूर्वक गुरु महाराज से आलोचना न ली। गुरु की दी हुई आलोचना सम्पूर्ण न की। देव, गुरु, संघ, साधर्मी का विनय न किया। बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वेयावच न की। वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया। धर्मध्यान, शुक्कध्यान ध्याया नहीं, आर्त्तध्यान, रौद्धध्यान ध्याया। दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त दशबीस लोगस्स का काउसग्ग न किया। इत्यादि अभ्यन्तर तप सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

वीर्याचार के तीन अतिचार—'अणिगृहिय बलविरिओ॰'—पढ़ते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यमें मन, वचन, कायाका, बलवीर्य पराक्रम फोरा(लगाया) नहीं, विधिपूर्वक पञ्चाङ्गखमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वन्दन की विधि भले प्रकार न की। अन्यचित्त निरादर से बैठा देव वन्दन प्रतिक्रमण में जल्दी की। इत्यादि वीर्याचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

"नाणाई अह पइवय, समसंलेहण पण पण्णर कम्मेसु। बारस तव विरिअ तिगं, चउन्त्रीसं सय अइयारा॥"

"पिडिसिद्धाणं करणे॰"—प्रतिषेध-अभस्य, अनन्तकाय, बहुबीजभक्षण, महाआरम्भ परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म, सामायकादि छ आवश्यक विनयादिक अरिहन्त की भक्ति प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमित से उत्सूत्र प्ररूपणा की तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, कोध, मान, माया, छोभ. राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पशुन्य, रित, अरित, 一种人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,他们是是一个人,他们是一个人,他们是是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们也是一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一

परपरिवाद, माया, मृषावाद, मिथ्यात्वराल्य ये अठारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे । दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतरागकी आज्ञासे विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया ।

एवं प्रकारे श्रावक धर्म सम्यक्त्व मूळ बारह व्रत सम्बन्धी एक सो चौबीस अतिचारोंमें से जो कोई अतिचार पक्खीक दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं। अथ साध्रप्रतिक्रमणसूत्र

चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साह्रमंगलं केवलिपण्णत्ती धम्मोमंगळं चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा लोगुत्तमा केवलिपणाचो धम्मोलोगुत्तमा चत्तारिसरणंपवजामि अरिहंत-साहसरणंपवज्जामि सिद्धसरणंपवज्जामि केवलिपणत्तं सरणंपवज्जामि धममंसरणंपवज्जामि 'इच्छामि पडिक्कमिउं। पगाससज्जाए। णिगामसज्जाए। संथाराउवहृणाए । परियहृणाए । आउटण पसारणाए । छप्पइयसंघहृणाए । कुइए । कक्कराईए । छीए । जंभाइए । अमोसे । ससरक्खामोसे । आउल-माउलाए । सोअणवित्तां । इत्थीविप्परियासिआए । दिहीविप्परियासि-आए । मणविप्परिआसियाए । पाणभोअणविप्परिआसिआए । देवसिओ अइयारो कओ । तस्समिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामि । गोअर चरिआए । भिक्तायरिआए । उग्घाड कवाड उग्घाडणाए । साणावन्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए । बलिपाहुडिआए । ठवणापाहुडिआए । सहस्सागारे । अणेसणाए । पाणेसणाए । आणभोयणाए । बीअभोयणाए । हरियमोअणाए । पच्छाकिमाआए । प्रेकिममआए । अदिट्टहडाए । दग-संसहहडाए । रयसंसहहडाए । पारिसाडणिआए । पारिठावणिआए । ओहासणभिक्खाए। जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए। अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं। परिभुत्तं वा । जं न परिठविअं तरस मिन्छामिदुक्कडं । पडिक्कमामि चाउक्कालं सञ्झायस्स अकरणआए । उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पिड-

<sup>#</sup> पक्ली के स्थान पर चौमासी, सम्बत्सरी प्रतिक्रमण में चौमासी और सम्बत्सरी कहना चाहिये।

तत्थ खलु पढमे भंते महच्चए पाणाइवायाओं वंग्मणं सच्चं भंते पाणा-इवायं पच्चक्खामि से सहमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा णेवसयं पाणे अइवाएउजा । णेवण्णेहिं पाणे अइवायाविउजा, पाणे अइवायंतिव । अप्णेण सम्पाजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करं तंपि अण्णं ण समणुः जाणामि तस्स भंत पडिनकमामि णिदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।से पाणाइवाए चउव्विहे पण्णते तंजहा दव्बओ खित्तओं कालओं भावओं । दव्बओंणं पाणाइवाए लमुजीवनिका-एस । खित्तओणं पाणाइवाए सव्यलोए कालओणं पाणाइवाए दियावा राओवा । भावओणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा । जंपिअ मये इमस्स धम्मस्स केविल पण्णत्तरस अहिंसा लख्खणस्य सन्चाहिहियरस विणयमूलस्य खंती-पहाणस्स अहिरण्णसोवणिअस्स उवसमप्पभवस्स णव वंभचेर गुत्तरस अप्पय-माणस्त भिक्खावित्तियस्त कुल्खीसंवलस्त णिरग्गिसरणस्त संपद्धालिअस्त चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिरुरुखणस्स पंचमहव्ययज्ञ-त्तस्त असंणिहि संचयस्त अविसंवाइयस्त संसारपारगामियस्त णिव्वाण गमण पञ्जवसाणफलस्स पुन्ति अण्णाणयाए असवणयाए अवोहिआए अणिमगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग दोस पडिवद्धआए बाल्याए मोहयाए मंद्याए किइयाए तिगारवगरुयाए चउकसाओवगएणं पंचि-दियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अणो सुवा भवग्गहणेसु पाणाइवाओं कओवा कारिओवा कीरंतोवा परेहिं समणुष्ण ओ तं णिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिदामि पहिपुण्णं संवरेमि अणागयं पच्चक्लामि सन्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिरिसओहिं णेव सर्यपाणे अइवाइज्जा णेवण्णेहिं पाणे अइ-वायाविज्जा पाणे अइवायं तेवि अण्णेणसम्पुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसिख्खअं सिद्धसंक्खिअं साहसिक्खअं देवसिक्खअं अप्पसिक्खअं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायरसवेरमणे हिए सुहे खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सन्वेसि पाणाणं सन्वेसि भयाणं

,这一个,你你你的人,我们是我们的人,我们是我们的,我们是不是的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的

सब्वेसि जीवाणं सब्वेसि सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिष्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु चिण्णे परमरिसि देसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ट उपसंपिज्ज-त्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उविडिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओवेर-मणं ॥१॥ अहावरे दोच्चे भंते महव्वए मुसावायाओवेरमणं सव्वं भंते मुसावार्यं पच्चक्खामि से कोहावा छोहावा भयावा हासावा णेवसर्यं मुसंब-इञ्जा णेवण्णेहिं मुसंवायाविञ्जा मुसंवयंतेवि अण्णेण समणुञ्जाणामि जाव-ज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेभि करंतंपि अण्णे ण समणुज्जाणामि तस्स मंते पिडक्कमामि णिदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से मुसाबाए चडिबहे पणात्ते तंजहा दुव्बओ खित्तओ कालओ भावओ द्व्यओणं मुसावाए सच्च द्व्वेस खित्तओणं मुसावाए लोएवा आलोएवा कालओणं मुसावाए दिआवा राओवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपिअमए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तरस अहिंसालक्खणरंस सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसम-प्पमवस्स णव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरूखावित्तियस्स कुरूखीसंब-ल्रस्स णिरग्गिसरणस्स संपरूखालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वि-यारस्स णिव्यित्तिलखणस्स पंचमहव्ययजुत्तस्स असंणिहिसंचियस्स अविसंवा इयरस संसारपारगामियस्स णिव्याणगमण पञ्जवसाणफळस्स पुर्व्विअण्णाणयाए असवणवाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्ध-याए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउकसाओवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अण्णेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिञ्जंतो वा परेहिं सम-णुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पह्चिपुण्णं संबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सन्वं मुसावायं जावजीवाए अणिस्सिओहं णेवसयंमुसंवइज्जा णेवण्णेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेविअण्णे ण समणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसिख्ख्यं सिन्दसिख्ख्यं साहुसिख्ख्यं देवस-

THE PARTY AND THE PARTY AS A STATE OF THE PARTY AS A S

क्लियं अप्पसिक्लियं एवं हबइ भिक्स्युवा भिक्स्युणीवामंजय विग्य पिंडह्य पचन्खाय पावकम्मे दियावा गओवा एगओवा परिसागओवा मुत्तेवा जागर-माणे वा एस खळु मुसावायससेवरमणे हिए मुहे खमे णिरसेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसि पाणाणं सब्बेसि भ्याणं सब्बेसि जीवाणं सब्बेसि सत्ताणं अदुक्तणयाए असीयणयाए अज्रणयाए अतिष्यणयाए अपीडणयाए अपिर-यावणयाण् अणुहवणयाण् महत्ये महागुणे महाणुमाव महापुग्सिण्विच्णे परमरिसिद्सियपसत्ये तं दुक्तवक्तवयाग् कम्मक्तवयाग्मोहक्तवयाग् वोहिलामाग् संसारुचारणाए चिकटू उवसंपञ्जिचाणं विहरामि दोच्चे भंते मह्व्वए उविह-ऑपि सव्याओं मुसावाओवेरमणं ॥२॥ अहावरे तच्चे भंते महव्यए अदि-ण्णादाणाओंबेरमणं सन्त्रं भंते अदिण्णादाणं पच्चक्खामि । से गामे वा नयरे वा रण्णे वा अप्पं वा वहुं वा अणुं वा यृत्रं वा चित्तमत्तं वा अचितमत्तं वा णवसर्यं अदिण्णं गिण्हिःजा णेवण्णेहिं अदिण्णं गिण्हाविःजा अदिण्णं गिण्हं-तेवि अण्णेण समणुङ्जाणामि जावङ्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करं तं पि अण्णंणसमणुङ्जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वासिगमि। से अदिण्णादाणे चउच्चिहे पण्णते तंजहा द्व्वओ खित्तओ कालओ भावओ द्व्यओणं अदिण्णादाणं गहण धारणिङजेमु द्वेमु खित्तओं णं अदिण्णादाणे गामे वा णयरे वा रण्णे वा कालओणं अदिण्णादाणे दिया वा राओ वा भावओणं अदिण्णादाणे रागेणवा दोसेण वा जीपेअ सए इमस्स धम्मन्स केविलपण्णतस्स अहिंसा रुक्खणस्य सन्त्राहिडियस्य विणयमृरुस्य खंतिप्यहाणस्य अहिरण्णसोवण्णि-यस्स उवसमप्पमवस्स णव वंमचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स मिक्खावित्तियस्स कुक्क्बीसंबद्धसः णिरग्गिसरणस्य संपक्काद्धियसः चत्तद्वासस्य गुणगाहियस्य असंणिहिसंचियस्स णिळियारस्स णिळिचिछक्खणस्स पंचमहळ्यज्चसस संसारपारगामियस्स णिञ्बाणगमणपञ्जवसाणफलस्स अविसंवाइयस्स पुञ्चिअण्णाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणिभगमेणं अभिगमेण वा पमा-एणं रागदोसपिडवन्द्रवाए वालयाए मोहयाए मंद्रवाए किङ्कवाए तिगारवगस्याए चंडकसाटोबगएषं पंचेदियवसङेणं पडिपुण्णभारियाएसायासाक्खमणुपालयंतेणं

इहंबाभवेअण्णेसुवा भवग्गहणेसु अदिण्णादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिं समगुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणंअ इयं णिदामिपडिप्पुण्णंसंवरेमिअणागयं पञ्चक्लामिसव्वं अदिण्णादाणं जावज्जीवार अणिस्सिओहं णेवसयं अदिण्णं गिण्हिज्जाणेवण्णेहिं अदिण्णं गिण्हा विज्जा अदिण्हंगिण्हंतेवि अण्णेण समणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसिक्खयं सिद्ध-सक्खियं साहुसिक्खियं देवसिक्खियं अप्पसिक्खियं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खु-णीवा संजय विरय पडिहय पञ्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राओवा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु अदिण्णादाणस्स वेरमणे हिए सुहे समे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सञ्वेसि पाणाणं सव्वेसि भूयाणं सव्वेसि जीवाणं सव्वेसि सत्ताणं अदुक्खणयाए असो-यणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणाए अपरियावणियाए अणुद्दव-णयाए महत्ये महागुणे महागुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्ये तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलामाए संसाररुत्तारणाए त्तिकट्टू उवसंपिजजत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए उविडिओमि सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ॥३॥ अहावरे चउत्थे भंते महच्चए मेहुणाओ वेरमणं सच्चं भंते मेहुणं पञ्चक्खामि से दि्व्यं वा माणुसंवा तिरिक्खजोणियंवा णेवसयं मेहुणं सेविज्जा णेवण्णेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सव्वंतेवि अण्णेणसम्पुञ्जाणामि जावञ्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करं तंपि अण्णं ण समणूङ्जाणामि तस्सभंते पुडिक-मामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ सेमेहुणे चउिचहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूबेसुवा रूबे-सहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्डालोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपिअमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिडियरस विणय-मूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णवबंभचेर-गुत्तरस अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबल्लसः णिरग्गिसरणस्स संपक्तालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्त्रज्ञासस

पंचमहव्ययज्ञत्तस्य असंणिहि स् णिव्वाणगमणपञ्जवसाणफलस्य अणिमगमेणं अभिगमेणं अ बाल्याए मोहयाए मंदयाए वि पंचेदियोवसट्टेणं पिडपुण्णसारि अण्णेसुवा मवग्गहणेसु मेहुणं समणुण्णाओ तं णिदामि गरिह अइयं णिदामि पिडपुण्णंसंवरेमि ज्जीवाए अणिरिसओहं णेवसयंमे सेवंतिव अण्णं ण समणुज्जाणामि सिक्त्यं देवसिक्त्यं अप्पसिक् विरय पिडह्य पञ्चक्ताय पा ओवा सुत्ते वा जागरमाणे व णिरसेसिए आणुगामिए पारगामि जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्ख याए अपीडणयाए अपिरयावणिय भावे महापुरिसाणुचिण्णे परमिरिं मोहक्त्वयाए बोहिलामाए संसारु चउत्थे भंते महव्वए परिग्गहाओ अप्पंचा बहुंवा अणुं वा थूलंवा परिगिष्हिज्जा णेवण्णेहिं परिग्गा जावञ्जीवाए तिविहं तिविहेणं मा करंतिप अण्णं ण समणुज्जाणामि अप्पाणं बोसिरामि । से परिग्गहे कालओ भावओ द्व्वओणं परिग्गहे कालओ भावओ द्व्वओणं परिग्गहे कालओ भावओ द्व्वओणं परिग्गहे कालओ भावओ द्व्वओणं परिग्गहे पंचमहव्वयजुत्तस्स असंणिहि संचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विञ्जण्णाणयाए असवणयाए अणभिगमेणं अभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद्याए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउकसाओवगएणं पंचेदियोवसट्टेणं पिडपुण्णभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अण्णेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणं सेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं समणुष्णाओ तं णिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पिंडपुण्णंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सन्वं मेहणं जाव-ङ्जीवाए अणिरिसओहं णेवसयंमेहुणंसेविङ्जा णेवण्णेहिं मेहुणं सेवाविङ्जा मेहुणं सेवंतेवि अण्णं णसमणुज्जाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहु सिक्खयं देवसिक्खयं अप्पसिक्खयं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पिंडहय पञ्चक्लाय पावकम्मे दिआवा राओवा एगओवा परिसाग-ओवा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुए खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सन्वेसि पाणाणं सन्वेसिंभूयाणं सन्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-याए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्ये महागुणे महाणु-भावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्येतं दुक्लक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ट् उवसंपञ्जित्ताणं विहरामि चुउत्थे मंते महच्चए उचिहुओमि सच्चाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ अहावरे पंचमे भंते महत्वए परिग्गहाओ वेरमणं सब्वे भंते परिग्गहं पन्चक्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुं वा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा णेवसयं परिग्गहं परिगिष्हिज्जा णेवण्णेहिं परिगाहं परिगिष्हंतेवि अण्णे ण समणुज्जाणामि जावञ्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतंपि अण्णं ण समणुञ्जाणामि तरस भंते पडिक्कमामि णिदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से परिग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दृव्यओणं परिग्गहे सिचत्ताचित्तमीसेसु दृव्वेसु खित्तओणं परि ग्गहे छोएवा अछोएवा गामेसुवा णयरेसुवा रण्णेसुवा काँठओणं परिग्गहे दियावा

Sign in the section of the section o

राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिअमए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस अहिंसालक्खणस्स सचाहिडियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णववंभचेरगुत्तस्सअप्पय-माणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गि सरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसरस गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स पंच महव्वय जुत्तस्सअसंणिहिसं च यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाण गमण पञ्जवसाणफलस्स पुर्व्विअण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणिमगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्ड-याए तिगारवगरुयाए चउकसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणु पालयंतेणं इहं वा भवे अण्णेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिओवा गाहाविओवा घिप्पंतोवा परेहिं समणुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिदामि पहिप्पुण्णं संवरेमि अणागयं पञ्चक्खामि सट्यं परिग्गहं जावञ्जीवाए अणिरिसओहं णेवसयं परि-गाहं परिगिण्हिज्जा णेवण्णेहिं परिगाहं परिगिण्हाविज्जा परिगाहंपरिगिण्हतेवि अण्णेण समणुज्जाणामि तंजहा अरिहंत सक्खियं सिद्धसिक्खयं साहु सक्खियं देव सक्तिवयं अप्पसिक्तवयं एवं हवइ मिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पडिहय पन्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा मुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु परिग्गहस्सवेरमणे हिए सुहे खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सन्त्रेसिंपाणाणं सन्त्रेसिं भूयाणं सन्त्रेसिं जीवाणंसन्त्रेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्रवणयाए महत्ये महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमितिदेसियपसत्ये तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए त्तिकडू उवसंपजिताणं विहरामि।पंचमेभंते महव्वए उवडिओमि सच्वाओं परिग्नहाओं वेरमणं ॥५॥ अहावरे छट्टे भंते महव्वए राइभीयणाओ वेरमणं सब्वं भंते राङ्भोयणं पच्चक्खामिसे असणंवा पाणंवा खाङ्मं वासाङ्मं वा णेवसयंराइं भुंजिजा णेवण्णेहिं राइं भुंज्जाविज्जा राइं भुंजनेवि अण्णेण-समणुःजाणामि जावःजीवाए तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं णकरेमि

णकारवेमि करंतपि अण्णं णसमणुज्जाणामि तस्समंते पडिकमामि णिदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरासि॥से राईभोयणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा द्व्वओ खित्तओं कालओं भावओं द्वां औं राईभोयणे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा खित्तओणं राईमोयणे समयखित्ते कालुओणं राईमोयणे दिया वा रिंत वा मावओणं राइमोयणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा अंबिले वा महुरेवा छवणेवा रागेणवा दोसेण वा जंपियमण् इम्मस्स धम्मरस केवछिपण्ण-त्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णवबंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्य कुक्खीसंबलस्य णिरग्गिसरणस्य संपक्खालियस्य चत्त-दोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्षणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंणिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाणगमण-पञ्जवसाणफलस्स पुर्विव अण्णाणथाए असवणयाए अबोहियाए अणिभगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद्याए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउनकसाओवगएणं पंचेंदियवसट्रेणं पहिएण्ण-भारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अण्णे सुवा भवग्गहणेस राईमोयणं भुत्तं वा भुजावियंवा भुज्जंतंवा परेहिं समणुष्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिदामि पडिपुण्णं संबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सन्वं राइ भोयणं जावजीवाए अणिस्सिओहं णेवसयं राइमोयणं भुंजेञ्जा णेवण्णेहिंराईभोयणं भुजाविञ्जा राईमोयणं भुज्जंतेवि अण्णंण समणुज्जाणामि तंजहा अरिहंत सक्खियं सिद्ध सिक्खियं साहु सिक्खियं देव-सिक्त्वयं अप्पत्तिक्वयं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पिंड-हय पञ्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु राइभोयणस्स वेरमणे हिए सुए खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वे-सिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोवणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडण-याए अपरियावणियाए अणुदवणयाए महत्ये महागुणे महाणुभावे महापुरि-साणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्लक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खायाए

बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टू उवसंपज्जिताणं विहरामि महच्चए उविडओमि सच्चाओ राइमोयणाओ वेरमणं ॥६॥

इच्चेइयाइं पंचमहव्वयाइं राइमोयण वेरमणछटाइं अत्तहियहाइं संपिजजत्ताणं विहरामि । अप्पसत्थाय जे जोगा परिणामाय दारुणा पाणाइवायरस वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥१॥ तिव्वरागाय जा भासा तिव्व दोसा तहेवय मुसा-वायरस वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥२॥ उग्गाहं अजाइत्ता अविदिण्णेअ उगाहे अदिण्णादाणस्स वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥३॥ सदा रूवा रसा गंधा फासाणं पविआरणे मेहुणरसवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥४॥ इच्छामुच्छायगेहीये कंखा लोमेअ दारुणे परिग्गहरसवेरमणे एस वुत्ते अइक्कमे ॥५॥ अइमत्तेअ आहारे सूरिक्खत्तंम्मि संकिए राई भोयणसा वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे॥६॥दंसण-णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे पढमं वयमणुरक्ले विरयामो पाणाइ वायाओ ॥७॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे बीयंवयमण्-रक्ले विरियामो अलियवयणाओ ॥८॥ दंसणणाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे तइयं वय मणुरक्खे विरियामो अदिग्णादाणाओ ॥९॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओं समणधम्मे चउत्थं वयमणुरक्खे विरयामो मेहुणाओ ॥१०॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे पंचमं वयमणुरक्खे विरियामो परिग्गहाओ॥११॥ दंसणणाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे छ्डंवयमणुरक्खे विरयामो राईभोयणाओ ॥१२॥ आल्छियविहार समिओ जुत्तो रात्तो ठिओ समणधम्मे पढ़मं वयमणुरक्खे विरियामो पाणाइवायाओ ॥१३॥ आलियविहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे बीयं वयमणु-रक्खे विरियामो अल्यिवयणाओ ॥१४॥ आल्रिय विहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे तइयं वयमणुरक्खे विरियामो अदिग्णादाणाओ ॥१५॥ आलियविहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे चउत्यंवयमणुरक्ले विरियामा मेहूणाओं ॥१६॥ आलिय विहार समिओं जुत्तो गुत्तो ठिओं सम-णधम्मे पंचमं वयमणुरक्खे विरयामा परिग्गहाओ ॥१७॥ आल्रिय विहार-समिओ जुत्तां गुत्तो ठिओ समणधम्मे छहंवयमणुरक्ते विरियामा राई भायणाओ ॥१८॥ आलिय विहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे तिविहेण पडि-TO A THE AMERICAN PROPERTY OF A PROPERTY OF THE PROPERTY OF TH

क्कंतो रक्खामि महव्वए पंच ॥१९॥ सावङ्ज जोगमेगं मिच्छत्तं एगमेव अण्णाणं परिवञ्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२०॥ अणवञ्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेव णाणंतु उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महच्चए पंच ॥२१॥ दोचेव-रागदोसे दुण्णियझाणाइं अदृरुदाइं परिवञ्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२२॥ दुविहं चरित्त धम्मं दुण्णियझाणाइं धम्मसुक्काइं उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच॥२३॥ किण्हा णीलाकाउ तिण्णियलेसाऊ अप्पसत्याओ परिवञ्जंतो गुत्तो रक्तामि महत्व्वए पंच ॥२४॥ तेउपम्हासुक्का तिष्णिय-लेसाओ सुप्पसत्थाओ उवसंपण्णोजुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२५॥ मणसा-मणसच्चविउ वाया सच्चेण करण सच्चेण तिविहेणवि सच्चविओ रक्खामि महव्वए पंच ॥२६॥ चत्तारियदुहसिञ्जा चउरोसण्णातहा कसायाय परिवञ्जंतो गुत्ती रक्लामि महव्वए पंच ॥२७॥ चत्तारियसुहसिङ्जा चडिव्वहंसवंरं समाहि च उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२८॥ पंचिवह कामगुणे पंचेवय अण्हिव महादोसे परिवञ्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२९॥ पंचेिद्य संवरणं तहेवयपंचिवहमेवसञ्झायं उवसंपण्णोजुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२०॥ छञ्जीव णिकाय वहिं छप्पिय भासाओ अप्पसत्याओ परिवञ्जंतो गुत्तो रक्तामि महव्वए पंच ॥३१॥ छिव्वहमिंभतरियं वञ्झंपियछिव्वहं तबोकसमं । उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३२॥ सत्तभयद्वाणाइं सत्तविहं चेवणाणविञ्मंगा । परिवञ्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२३॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गहं सत्तिक्कया महञ्झयणा । उवसंपण्णोजुत्तो रवखामि महव्वए पंच ॥२४॥ अहमयहाणाइं अहयकम्माइं तेसिं वंधिं च । पखिन्जंतो गुत्तो रक्लामि महस्वए पंच ॥३५॥ अहयपवयणमाया दिहाअह विह णिहि अहेहिं। उवसंपण्णो जुत्तो रक्जामि महव्वए पंच ॥३६॥ णव पावणियाणाइं संसार-त्त्याय णव विहाजीवा परिवञ्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच॥३७॥णवर्वमचर गुत्तो दुणव विहंबंभचेर पडिसुद्धं । उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महस्वए पंच ॥३८॥ उव घायं च दसविहं असंवरं तहय संक्लिसं च परिवञ्जंतो गुत्तोरक्खामि महस्वए पंचा।३९॥चित्तासमाहिङ्ठाणा दसचेवदसाउसमणवृम्मं च उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महत्वपु पंच ॥१०॥ आसायणं च सन्वं तिगुणं एक्कारसं विव-The same and a second of the s

ज्जंतो । पडिवज्जंतो गुत्तो रक्लामि महव्वए पंच ॥४१॥ एवं तिदंडिवरओ तिगरण सुद्धो तिसह्र णिसह्रो तिविहेण पडिक्कंतो रक्खामि महस्वए पंच ॥४२॥ इन्चेइयं महव्वय उच्चारणंथिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलं ववसाओ साहणहो पाव णिवारणं णिकायणा भावविसोहि पडागाहरणं णिजूहणा सहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्त्रक्षाणो वउत्तया जुत्तया णाणे परमहो उत्तमहो एस खल्तित्यं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिओ पवयणस्स सारो छज्जीव णिकाय संजमं उवएसिउं तेल्लुक्क सक्कयंठाणं अन्भुवगया णमोत्त्यु ते सिच्धुन्ध मुत्तणीरय णिरसंग मणामूरण गुणरयण सायर मणंतमप्पमेय णमोत्त्यु ते महय महावीर वद्धमाणस्स णमोत्त्थुते अरहओ णमोत्त्युते भगवओ त्तिक्कट्टु । ए सा खलु महव्वए उच्चारणाक्या इच्छामो सुत्तकित्तणं काउ णमोतेसि खमा-समणाणं तेहिं इमं वाइयं छिव्वहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं चउवी-सत्यओ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्चक्खाणं सन्वेहिं पि एयंग्मि छिव्वहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्ये सग्गंथे सिण्णजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावा वा अरंहतेहिं भगवंतेहिं पण्णतावा परूविया तेभावे सदहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावो सदहामो सदहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्लस्स अंतो-चउमासीअस्स अंतो संबच्छारस्स जंबाइयं पढ़ियं परियद्वियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं, तंदुक्खखयाए, कम्मक्खमाए, मोहक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्ता-णाए, त्तिकट्ट् । उवसंपञ्जित्ताणं विहरामि ते अंतोपक्खस्स जंणवाइयं ण पढियं णपरियद्वियं णपुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरि-सक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामी णिंदामी गरिहामी विउद्देमी विसोहेमी अकरणयाए अन्भुद्देमी अहारिहं तवोकम्मं पायच्छितं पडिवज्झामी तस्स मिच्छामि दुक्कडं । णमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगवा-हिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेआलियं, कप्पिया,कप्पियं,चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववइ्यं, रायप्पसेणीयं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, णंदी, अणुयोगदाराइं, देविंद्युओ तंदुल वेआल्यिं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं पुरिस मंडलं मंडलप्पवेसो गणिविज्जा चरण विणिच्छिओ, झाण

संलेहणासुअं मरण विभक्ति आयविसोंही वीयरायसुयं चरण विसोही आउरपचक्खाणं महापचक्खाणं सव्वेहिपि एयंग्मि अंगबाहि-रिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सिण्जजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्तावा परूवियाया तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सदहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोएंहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंबाइयं पढियं परिअद्वियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खखयाए, कम्मक्खयाए,मोहक्खयाए,बोहि-लाभाए, संसारुचारणाए, चिकट्ट उपसंपञ्जिचाणं विहरामि । अंतोपक्खस्स जंणवाइयं णपढ़ियं णपरियद्वियं ण पुन्छियं णाणुपहियं णाणुपाछियं संते बले संते वीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्त आलोएमी पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि व उट्टेमी विसोहेमी अकरणयाए अब्सुट्टेमी आहारिहं तवोकम्मं पाय-च्छितं पडिवज्झामी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ णमो तेसि खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरियं कालियं भगवंतं तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाओक-प्पोववहारो इसिभासियाइं णिसीहं महाणिसीहं जंबुदीव पण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती,दीवसागरपण्णत्ती,खुड्डियाविमाण पविभत्ती,महस्चियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया, वंगचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणो ववाए वरुणोववाए गरुलोववाए घवणोववाए वेसमणोववाए वेलंघरोववाए देविदोववाए उडाणसुए- समुडाणसुए णागपरियावलियाओ, णिरयावलियाओ, कप्पियाओ, कप्पवंडिसयाओ, पुप्फि-याओ,पुष्फचुलियाओ,वण्हीदसाओ,आसीविस भावणाओ,दिद्धीविसभावणाओ, चारणसुमिरभावणाओ, महासुमिरभावणाओ, ते अग्गि णिसग्गाणं, सन्वेहंपि एयंम्मि अंग बाहिरए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ये सगाये सण्णिजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्तावा परुवियावा ते भावे सदहामो पित्तयामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सदहंतेहिं पिचयं तेहिं रोयं तेहिं फासं तेहिं पाछं तेहिं अणुपाछं तेहिं अंतो-पक्तस जंवाइयं पढियं परियद्वियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्ख-खयाए, कम्मवखयाए, मोहक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुतारणाए, त्तिकट्टु उव-संपिजज्ञाणं विहरामि । अंतोपनखरस जंणवाइयं ण पिटयं

णपुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संते बले संते वीरिए संतेपुरिसकार परिक्कमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामी णिंदामी गरिहामी विउट्टेमी विसो-हेमी अकरणयाए अन्भुडेमी अहारिहं तवोकम्मं पायन्छितं पडिवज्झाओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ णमोतेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं दुवाल संगं-गणि पीडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूअगडो, ठाणो, समवाओ, विवाह-पण्नची, णायाधम्मकहाओ, उवासंगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोव वाइअ-दसाओ, पण्हाबागरणं, विवागसुयं, दिहिवाओ, सुदिहि, सुहाओ, सव्वेहिं पि एयंग्मि दुवाल संगे गणिपीडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सण्णिजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दंतेहिं पत्तियं तेहिं रोयं तेहिं फासं तेहिं पाछंतेहिं अणुपाछंतेहिं अंतो पक्लस्स जंबाइयं पढियं परियद्टियं पुच्छियं अणुपेहियं तंदुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ट उवसंपञ्जित्ताणं विहरामि । अंतोपक्खस्स जंणवाइयं णपढियं णपरियद्वियं णपुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संतेबले संते वीरिए संते-पुरिसकारपरिकमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामी णिंदामी गरिहामी विउट्टेमी विसोहेमी अकरणवाए अब्सुट्टेमी अहारिहं तवोकम्मं पायच्छितं पडिवज्जामी तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ णमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं दुवालसंगं गणपीडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति े किट्टंति सम्मं आणाए आराहंति अहं च णाराहेमि तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

सुय देवया भगवइ, णाणावरणीय कम्मसंघायं । तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुय सायरे भत्तीङ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्त ।

स अमग तथा श्रमणी वर्ग पक्ली आदि प्रतिक्रमणमें बोलते हैं।

# तपगच्छीय विशेष सूत्र

### पंचिंदिय सूत्र

पंचिदिय संवरणो तह, णविवह बंभचेरगुत्तिधरो । चउविह कसाय मुक्को, इअ अहारसगुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंचिवहायार पालण समत्यो । पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मञ्झ ॥२॥

#### सामायिक पारण सूत्र?

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होई णियमसंजुत्तो । छिण्णइ असुहं कम्मं, सामाइअ जित्तआ वारा ॥१॥ सामाइअम्मि उ कए समणो, इवसावओ हबइ जम्हा । एएणं कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥ सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में कोई अविधि हुई हो । दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, कुल बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो तो मिन्छामि दुक्कडं ॥

## जग चिंतामणि सूत्र?

जगर्चितामणि जगणाह जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव जगसत्थवाह जगमावविअक्खण । अहावयसंठविअरूब, कम्मद्रविणासण । चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहय सासण ॥१॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिं पढ़मसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत रूब्भइ । णवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स णव साहु गम्मइ ।

१ इस पाठमें सच्चे गुरु की पहचान है।

२ इसकी पहली गाथा में सामायिक द्वारा अधुभ कमी का नाश है और दूसरी गाथा में सामायिक में स्थित श्रावक साधूके तुल्य माना गया है।

३ इस पाठ की पहली गाथा में भगवान की स्तुति है, दूसरी में एक सौ सत्तर जिनेश्वर, केवली और साधुओं की स्तुति है। तीसरी में तीथों को वन्दन है चौथी में चरयों को वन्दन है, पांचवीं में शाश्वत जिन विस्त्रों को वन्दन है।

संपद्द जिणवर बीस मुणि, विहुं कोडिहिं वरणाण । समणह कोडिसहसदुअ, थुणिञ्जइ णिच्च विहाणि ॥२॥

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उजिजत पहु णेमिजिण, जयउ बीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छिहं मुणिसुव्वय । मुहरिपास दुह दुरिअखं-डण, अवर विदेहिं तित्थयरा । चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागय संपड्अ वंदु जिण सच्चे वि ॥३॥

सहस्सा, लक्खा छप्पण्ण अह कोडीओ। तिअलोए चेइए वंदे ॥॥ वासिआइं, पणरस कोडिसयाइं, कोडी बायाल लक्ख अडवण्णा । छत्तीस सहस असिइं, सासय बिंबाइं पणमामि ॥५॥

## जय विराय सूत्र

जय ! वियराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भव णिव्वेओ मग्गाणुसारिया, इहफल सिन्ही ॥१॥ लोग विरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुह गुरु जोगो तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिञ्जइ जइवि णियाण वंघणं वियराय ! तुह समये । तहिव मम हुज्ज सेवा, भने भने तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहि लाभो अ। संपञ्जड मह एअं, तुह णाह ! पणामकरणेणं ॥४॥ सर्वमंगल मांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधरमाणाम् जैनं जयति शासनम् ॥५॥

## कछाणकं**दं**१

क्लाणकंदं पढमं जिणिदं, संति तओ णेमिजिणं मुणिदं। पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ बंदे सिरि वद्धमाणं ॥१॥

अपनी देश स्त्राह देश विस्तर कार्यक्षद्वार क्रम विद्वार प्रदेश के अपने के अपने क्रम क्रम है।

१ इसकी पहली गाथा में पहले, सोलहवें, वाईसवें, तैईसवें, चौबीसमें भगवान की वन्ट्रन द्मरी में तीर्थकरों की स्तुति है, तीसरी में सिद्धान्तों की न्तुनि है, चौथीमें श्रुत देवता की

अपार संसार समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुद्दक्कसारं । सन्वे जिणिदा सुर विंद वंदा, कञ्जाणबञ्जीण विसाल कंदा ॥२॥ णिव्वाणमग्गे वर जाण कप्पं, पणासिया सेस कुवाइद्प्पं । मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, णमामि णिच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥ कुंदिंदु गोक्खीर तुसार वण्णा, सरोजहत्या कमले णिसण्णा । वाएसिरि पुत्थयवग्गहत्या, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥॥॥

## अतिचार

णाणिम दंसणिम अ, चरणिम तविम तह य विरियमि । आयारो, इअ एसो भणिओ ॥१॥ आयरणं पंचहा काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अ णिण्हवणे । वंजणअत्य तदुभए, अडविहो णाणमायारो ॥२॥ णिर्संकिय णिवकंखिय, णिव्वितिगिच्छा अमूढ दिही अ। उववूह थिरीकरणे, वन्छल्ल पमावणे अह ॥३॥ पणिहाण जोग जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अडविहो होइ णायव्यो ॥४॥ बारस विहम्मि वि तवे, सर्ब्भितर बाहिरे कुसलदिहे। अगिलाइ अणाजीवी, णायव्यो सो तवायारो ॥५॥ अणसणमूणो अरिया, वित्तोंसंखेवणं रसचाओ । काय किलेसो संली णया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहे व सज्झाओ। झाणं उस्सग्गो वि अ, अन्भितरओ तवो होइ ॥७॥ अणिगूहिअ बलविरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो । -जुंजइ अ जहाथामं, णायन्वो वीरिआयारो ॥८॥

## वीरस्तुति

विशाल लोचन दलं प्रोचद्दन्ताशु केसरम् । प्रातवीर जिनेन्द्रस्य, मुखपदां पुनातु वः ॥१॥

येषामभिषेक कर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात्सुखं सुरेन्द्राः । तृणमिष गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कलङ्का निर्मुक्तममुक्त पूर्णतं, कुतर्क राहु प्रसनं सदोदयम् । अपूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि मुधैर्नमस्कृतम् ॥३॥

## भरहेसर सज्भाय

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो । सिरिओ अणिआइचो, अइमुचो णागदचो अ ॥१॥ मेअज, यूलिभद्दो, वयररिसी णंदिसेण सिंहगिरि । कयवण्णो अ सुकीसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥ हुछ विहुछ सुदंसण, साल महासाल सालिभदो अ। भदो दसण्णभदो, पसण्णचंदो अ जसभद्दो ॥३॥ जंयु पहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंति सुकुमालो । धण्णो इलाइ पुत्तो, चिलाइ पुत्तो अ बाहुमुणी ॥४॥ अज्जिगिरि अज्जरिक्खिय, अञ्जसुहत्यी उदायगो मणगो। कालय सूरी संबो, पञ्जुण्णो मूलदेवो अ ॥५॥ पभवो विण्हुकुमारो अद्दकुमारो, दृढ़प्पहारी अ। सिज्जंस क्र्रगडु अ, सिञ्जंभव मेहुकुमारो अ ॥६॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जैंसि णामग्गहणे, पाव पर्वधा विलय जैति॥७॥ सुलसा चंदणवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती। ण मयासुंदरी सीया, णंदा भद्दा सुभद्दा य ॥८॥ रावगई रिसि दत्ता, पडमावइ अंजण सिरीदेवी । जिंह सुजिंह मिगावइ, पभावइ चिह्नणादेवी ॥९॥ वंनी सुंदरी रुप्पिणी, रेवइ कुंति शिवा जयंति अ। देवइ दीवइ धारणी, कलावइ पुष्फचूला अ ॥१०॥ पडमावई य गौरी, गंधारी लक्जमणा सुसीमा य ।

जंबुवइ सचमामा, रुप्पिणी कण्हद्व महिसीओ ॥११॥ जक्खा य जक्खिदण्णा, भूआ तह चेव भूअदिण्णा अ। सेणा वेणा रेणा, भयणीयो थूलभइस्स ॥१२॥ इचाइ महासङ्ओ, जयंति अकलंकसील कल्ञिआओ। अज्जिव वञ्जिङ् जासिं, जसपहो तिङ्अणे सयले ॥१३॥

#### मण्णह जिणाणं सज्भाय

मण्णह जिणाण माणं, मिच्छं परिहरह घरह सम्मत्तं । छिव्वह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥१॥ पव्वेसु पोसह वयं, दाणं सीछं तवो अ भावो अ । सज्झाय णमुकारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥ जिणपूआ जिण थुणणं, गुरु थुअ साहम्मिआण वच्छल्छं । ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥३॥ उत्रसम विवेग संवर, भासा सिमई छ जीव करुणा य । घम्मि अ जण संसम्गो, करणदमो चरण परिणामो ॥४॥ संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयिहहणं पभावणा तित्थे। सहुाण किच्चमेअं, णिच्चं सुगुरुवएसेणं ॥५॥

## संथारा पोरिसी

णिसीहि, णिसीहि, णिसीहि, णमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं । अणुजाणह जिहिज्जा ! अणुजाणह परमगुरु ! गुणगण रयणेहिं मंडिय सरीरा । बहु पडिपुण्णा पोरिसि, राइए संथारए ठामि ॥१॥ अणजाणह संथारं, बाहुबहाणेण बामपासेणं । कुक्कुडिपायपसारण, अतरंत पमञ्जए भूमिं ॥२॥ संकोइअ संडासा, उट्यहंते अ कायपडिलेहा । द्व्याई उवओगं, ऊसास णिरूंभणा लोए ॥३॥ जङ्मे हुज्ज पमाओ, इम्मस्स देहिस्सिमाइ स्यणीए ।

म प्रमाने से सिंहिंग विविद्देण वोसिरिअं ॥॥॥
सिद्धा मंगरुं, साहुरूपण्णतो धम्मो मंगरुं ॥५॥
तमा, सिद्धा रुगुत्तमा,
पण्णतो धम्मो रुगुत्तमा ॥६॥
तर्णं पवजामि, सिद्धसरणं पवज्जामि ॥॥॥
सेहुणं द्विणमुच्छं ।
हं पिञ्जं तहा दोसं ॥८॥
हह अरइ समाउतं ।
तं मिच्छत्तसच्छं च ॥९॥
तमा विग्धमूआइं ।
अधारस पावठाणाइं ॥१०॥
हमण्णस्स कस्सइ ।
अध्याणमणु सासइ ॥११॥
ताण दंसण संजुओ ।
तन्त्रे संजोग रुम्लणा ॥१२॥
व्यापपरा ।
व्यं तिविद्देण वोसिरिअं ॥१३॥
तम्मतं मए गहिअं ॥१॥॥
तस्मतं मए गहिअं ॥१॥॥
तस्मतं मए गहिअं ॥१॥॥
तस्मतं मए गहिअं ॥१॥॥
तस्मतं ।
तस्मतं ।
ता, मञ्जवि तेह खमंत ॥१६॥
वाएण भासिअं पावं ।
तस्स मिच्छामि दुक्छं ॥१७॥
तस्स मिच्छामि दुक्छं ॥१७॥ आहार मुबहि देहं, सच्चं तिविहेण वोसिरिअं ॥४॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धो मंगलं, साहु-मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥५॥ चत्तारि छोगुत्तमा, अरिहंता छोगुत्तमा, सिद्धा छोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥६॥ चत्तारि सरणं पवजामि, अरिहंत सरणं पवजामि, सिद्धसरणं पवज्जामि। साहु सरणं पवज्जामि, केविलपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥७॥ पाणाइवायमलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं। कोहं माणं मायं, लोहं पिञ्जं तहा दोसं॥८॥ कलहं अन्मक्लाणं, पेसुण्णं रइ अरइ समाउत्तं। परपरिवायं माया, मोसं मिन्छत्तसल्लं च ॥९॥ वोसिरिसु इमाई, मुक्खमगासंसगग विग्वभूआई। अहारस पावठाणाइं ॥१०॥ दुग्गइ णिबंधणाई, एगोहं णत्थि मे कोइ, णाहमण्णस्स कस्सइ। एवं अदीणमणसो, एगा में सासओ अप्पो, णाण दंसण संजुओ। सेसा में वाहिरा भावा, सन्त्रे संजोग छक्खणा ॥१२॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा।

तम्हां संजोग संबंधं, सच्चं तिविहेण बोसिरिअं ॥१३॥ अरिहंतो मम देवो, जावन्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।

जिणपण्णतं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं॥१४॥ ग्वमिअ खमाविअ मइ खमह, सब्बह जीवणिकाय।

तिब्ह साख आलोयणह, मुज्ज्ञह वइर ण भाव ॥१५॥ सब्बे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।

ते में सब्ब खमाविआ, मञ्झवि तेह खमंत ॥१६॥ जं जं मणेण वर्द्धं, जं जं वाएण भासिअं पार्व । जं जं कायेण कयं, तस्स मिन्छामि हुक्झं ॥१७॥

## स्नातस्या की स्तुति

स्नातस्याप्रतिमस्य मेर्राशिखरे, शच्या विभोः शैशवे, रूपालोकन विस्मया हतरस, भ्रान्त्या भ्रमञ्चश्लुषा। उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया,

वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्री वर्द्धमानो जिनः ॥१॥ हंसा साहत पद्मरेणु कपिदा,क्षीरार्णवाम्मो भृतैः,

कुम्मैरप्सरसां पयोधरमर, प्रस्यद्धिमिः काञ्चनैः । येषां मन्दररत्नशैल शिखरे, जन्मामिषेकः कृतः,

सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरं गणैः, तेषां नतोऽहं कमान् ॥२॥ अर्हद्वस्त्रप्रसूतं गणधरं, रचितं द्वादशाङ्गं विशालं,

चित्रं बहुर्थ युक्तं मुनिगण वृषभैः, धारितं बुद्धि मद्भिः ।
मोक्षाप्रद्वार भूतं व्रतचरण फलं, ज्ञेयभाव प्रदीपं,
भक्त्यानित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमिखले, सर्व लोकेकसारम् ॥३॥
निष्पङ्क व्योमनीलचुतिमलसदृशं, बाल चन्द्राभदंष्ट्रं,
भक्तं घंटा र वेण, प्रसृतमदृजलं पूरयन्तं समन्तात् ।
आरूढ़ो दिव्यनागं विचरित गगने, कामदः कामरूपी,
यक्षः सर्वानुभूति दिशातु मम सदा, सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥॥॥

## संतिकर स्तवन

संतिकरं संति जिणं, जगसरणं जयसिरीइ ह्यायारं।
समरामि भत्त पालगं, णिव्वाणी गरुडकय सेवं ॥१॥
ॐ सणमो विष्पोसिंह, पत्ताणं संतिसामिपायाणं।
झ्रौं स्वाहामंतेणं, सच्वासिबदुरिअ हरणाणं ॥२॥
ॐ संति णमुक्कारों, खेलोसिंह माइल दीवपत्ताणं।
सौं हीं णमो सच्वो, सिंह पत्ताणं च देइ सिर्रि ॥३॥
णाणी तिहुअणसामिणि, सिरिदेवीजक्खराय गणि पिडगा।
गहदिसि पाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते॥॥॥

रक्खंतु मम रोहिणी पण्णत्ती, वज्जसिंखला य सया। वज्जंकुसि चक्केसरि, णरद्त्वा कालि महाकाली ॥५॥ तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुटा। अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसिआउ देवीओ ॥६॥ जक्ला गोमुह महजक्ल, तिमुह जक्लेस तुंबर दुसुमो । मायं विजय अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारा ॥७॥ छम्मुह पयाल किण्णर. गरुडो गंधव्य तह य जिंखदो। कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो॥८॥ देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली। अच्चुअ संता जाला, सुतारया सोअ सिरिवच्छा ॥९॥ चंडा विजयं कुसि प ण, इति णिव्वाणि अच्चुआ घरणी । वइरुट्ट दत्त गंघा, रिअंब पउमावई सिन्दा ॥१०॥ इअ तित्थरक्खणरया अण्णेवि, सुरासुरी य चउहा वि । वंतर जोइणिपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥ एवं सुदिहि सुरगण, सहिओ संघस्स संति जिणचंदो । मञ्झवि करेउ रक्ख़ं, मुणिसंदर सूरि थुअ महिमा॥१२॥ इअ संतिणाह सम्म दिडी, रक्खं सरइ तिर्कालं जो । सन्वोबद बरहिओ, स लहइ सुह संपर्य परमं ॥१३॥ तवगच्छगयण दिणयर, जुगवर सिरि सोम सुंदर गुरूणं। सुपसायलन्द्र गणहर, विज्जासिन्दी भणइ सीसे। ॥१॥।

# खरतरगच्छीय पचक्वाण सूत्र

#### णमुक्कार सहिअ पञ्चक्खाण

उग्गए स्रे णमुकार सहिअं पचक्लाई चउव्यिहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, विगइओ, पचक्लाई, अण्णत्यणाभोगेणं, सह सागारेणं, छेवा छेवेणं, गिहत्य संसिट्टेणं, उक्तिवत्त विवेगेणं, पडुचमिक्खएणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं भोग प्रिभोगं पच्चक्खाई अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, महत्तरा गारेणं, सव्य समाहि वित्तआगारेणं, वोसिरइ ।

### णमुक्कार सहिअ पचक्खाण<sup>१</sup>

उग्गए सूरे णमुकार सहिअं पच्चक्खाई चउच्चिहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, बोसिरइ ।

#### पोरिसी पञ्चकखाण<sup>२</sup>

पोरिसिं पञ्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पञ्छण्णं कालेणं, दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि वित्तिआ गारेणं, वोसिरह ।

## पोरसी साढपोरिसी पच्चक्खाण<sup>३</sup>

पोरिसिं साढपोरिसिं मुहिसहिअं पन्चखाई । उग्गए सूरे चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहु वयणेणं, सव्य समाहि वित्तयागारेणं, विगइओ पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सह सागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्य-संसिडेणं, उक्षित्वत्त विवेगेणं, पडुच्च मिक्खएणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वित्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

### पुरिमहु पच्चक्खाण

सूरे उगाए, पुरिमडूं, पचक्खाई, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, विगइओ पचक्खाई अण्णत्यणाभोगेणं,सहसागारेणं,

१ णसुकारसीका पचक्लाण दो घड़ी का होता है।

२ पोरसी एक पहर (तीन घंटे) की होती है।

३ साढ़ पोरसी डेढ़ पहर ( साढ़े चार घंटे ) की होती है।

४ पुरिमज्द दोपहर ( छः धंदे )का होता है।

लेबालेबेणं, गिहत्थसंसिडेणं, उक्खित्त विवेगेणं,पडुच्च मक्खिएणं, महत्तरागा-रेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाई अणत्थणाभागेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्ति आगारेणं, वोसिरइ ।

#### अवहु पच्चक्खाण<sup>१</sup>

सूरे उगाए अबड्ढं पञ्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणभोगेणं, सहसागारेणं, पञ्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सन्य समाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पञ्चक्खाई अण्णत्यण-भोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्यसंसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुञ्च-मक्खिएणं, महत्तागारेणं, सन्य समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

### एकासण पन्चकखाण

पुरिमहुं पच्चक्लाई उग्गए सूरे चउन्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छण्ण कालेणं दिसा, मोहेणं, साहु वयणेणं, सन्वसमाहि वित्तिआ गारेणं, एकासणं पचक्लाई तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं, आउट्ट णपसारेणं, गुरुअन्भुद्वाणेणं, महत्तरागारेणं, सन्वसमाहि वित्तिआगारेणं, वोसिरइ ॥

#### पुनः

पोरिसिं साडुपोरिसिं वा पच्चक्खाई उग्गए सूरे, चडिव्बहंिप आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण-कालेणं, दिसा मोहेणं साहु वयणेणं, सब्य समाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पचक्खाई, तिविहंिप आहारं, असणं खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरुअव्भुट्टाणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्यसमाहि वत्ति आगारेणं, वोसिरइ।

५ अवड्ड तीन पहर ( नो घंटे ) का होता है।

<sup>&</sup>lt;sup>६</sup> एकासण में एक बार भोजन एक आसन से किया जाता है।

#### एगेळठाण पच्चकेखाण<sup>®</sup>

पुरिमहुं पच्चक्खाई उग्गएस्रे चडिव्बहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं साहु, वयणेणं, सव्व समाहि वित्तआगारेणं, एगलठाणं, पच्चक्खाई अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिहेण, डिक्खित विवेगेणं, पडुच्चमक्खीएणं, महत्तरागारेणं, सव्यसमाहिवित्तयागारेणं, एकासणं, पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागरिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरुअव्भुद्धाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्यसमाहि वित्तआगारेणं, वोसिरइ ।

#### पुनः

पोरिसिं साढ पोरिसिं वा पञ्चक्लाई उग्गए सरे, चडिव्बहंिप आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं पञ्छण्णका- छेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्य समाहिवित्तयागारेणं, एगळठाणं, पञ्चक्खाई अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, छेवाछेवेणं, गिहत्थसंसिहेणं, उिक्खत्तविवेगेणं, पडुच्चमिक्खएणं, महत्तरागारेणं, सव्यसमाहि वित्तयागारेणं, एकासणं, पञ्चक्खाई, तिविहं, पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अन्भुडा- णेणं, महत्तारागारेणं, सव्य समाहिवित्तआगारेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पञ्चक्खाई, अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वित्तआगारेणं, वेसावगारियं भोग परिभोगं पञ्चक्खाई, अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वित्तआगारेणं, वेसिरइ।

#### आयंबिल पच्चक्खाण<sup>5</sup>

पुरिमढुं पन्चक्खाई उग्गए सूरे चउन्चिहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, पन्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं,

७ एगल्डाणे में एक समय भोजन एक स्थान में होता है।

८ उत्कृष्ट आयम्बिल एक अंचल भोजन तीन चिल्लू पानी से होता है। वर्तमान समय में मध्यम आयम्बिल प्रचलित है।

,就是他们的对方,就是不好的对外,他也是这种的最后的的,他们也是这个,他也就是这些的的,他们也是一个一个一个,他们的一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个

साहुवयणेणं, सन्व समाहि वित्तआगारेणं, आयंबिछं पन्चक्खाई अणत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, छेवा छेवेणं, गिहत्य संसिद्धेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडु-न्चमक्खीएणं, महत्तरागारेणं, सन्वसमाहि वित्तयागारेणं, एकासणं, पन्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणा भोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भुद्धाणेणं, महत्तरागारेणं, सन्व समाहि वित्तिआ गारेणं, वोसिरइ।

#### पुनः

पोरिसिं माढपोरिसिं वा पच्चक्खाई उग्गए सूरे, चउिव्वहंिप आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, पच्छण्णका- छेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्य समाहिवत्तिया गारेणं, आयंबिळं पच्चक्खाई, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, छेवा छेवेणं, गिहत्य संसिहेणं, उक्खित्वविवेगेणं, पडुच्चमिक्खएणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वत्तिआगारेणं, एकासणं पच्चक्खाई, तिविहंिप आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरु अञ्भुडाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्यसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरइ।

## णिव्वि गइय पच्चक्खाण\*

पुरिमहुं पच्चखाई उग्गएसूरे चउव्वीहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्य समाहि वित्तयागारेणं, णिव्विगइयं पच्चक्खाई, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसा गारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्य संसिद्धेणं, उिक्खत्तविवेगेणं, पडुच्चमिक्ख-एणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वित्तआगारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भुद्धाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वित्तयागारेणं, वोसिरइ।

<sup>\*</sup> वर्तमान समयमें गुजरात देशकी तरफ जो आयम्बिल किया जाता है। वह आयस्विल नहीं है णिव्यि है। कारण आयम्बिल में दो द्रव्य लेने की आज्ञा है। एक उवाला हुवा अन्न दूसरा गरम जल।

AND THE PARTY AN

#### पुनः

पोरिसिं साढ पोरिसिं वा पच्चक्साई उग्गए सूरे चडिव्वहंपि आहारं, असणं, पाणं, साइमं, साइमं, अण्णत्थणा मोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्यसमाहि विचयागारेणं, णिव्विगइयं, पच्चक्साई । अण्णत्थणा मोगेणं, सहसा गारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्य संसिद्धेणं, उविस्वचिववेगेणं पडुच्चमिक्खएणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि-विचयागारेणं, एकासणं पच्चक्साई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणामोगेणं, सहसा गारेणं, सागरिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अन्भुहाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्यसमाहि विचयागारेणं, वोसिरइ।

#### चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण<sup>१</sup>

सूरे उग्गए, अन्मत्तहं पच्चक्खाई । चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, स्नाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहि वित्तयागारेणं वोसिरइ ।

### तिविहार उपवास पच्चक्खाण<sup>२</sup>

सूरे उग्गए, अन्भत्तहं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं, पुरि-महुं अवहुं वा पच्चक्खाई अणत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महन्तरागारेणं, सव्वसमाहि वित्तयागारेणं, वोसिरइ।

#### दत्तिअ पचक्खाण

पुरिसद्धं पच्चक्खाई उग्गएसूरे चडिन्नहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सळ्यसमाहि विज्ञागारेणं, दित्तिअं पच्चक्खाई अणत्यणा भोगेणं,

१ उत्कुष्ट उपवास को शास्त्र चउत्थ भक्त कहते हैं आर्थात् चार वक्त भोजन का त्याग उपवास के पहुळे दिन तथा पारणे के दिन एकासण करना चाहिये।

२ यह पश्चक्लाण सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक किया जाता है।

सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्य संसिद्धेणं, उक्सित्त विवेगेणं, पडुच्चमिखएणं, महत्तरागारेणं, सञ्च समाहि वित्तिआगारेणं, एकासणं पञ्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अणत्यणामोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं, आउद्दण पसारेणं, गुरुअन्भुद्धाणेणं, महत्तरागारेणं, सञ्बसमाहि वित्ति-आगारेणं, वोसिरइ।

#### पुनः

पोरिसि साढ पोरिसि पच्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, दित्तिअं पच्चक्खाई अणत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित विवेगेणं, पडुच्चमिक्खएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वित्तिआगारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं, आउट्टणपसारेणं गुरु अन्भुद्दाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वित्तिआगारेणं, वोसिरह ।

#### पाणहार पच्चक्खाण\*

पाणहार दिवस चरिमं पञ्चक्खाई, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सञ्चसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

## दिवस चरिम चउव्विहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पञ्चक्लाई चडिव्बहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

## दिवस चरिम तिविहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पन्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणामोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सञ्वसमाहि वत्तिआगारेणं, वासिरइ।

यह तीनों पद्मक्ताण दिनके अन्त भागसे प्रारम्भ हो दूसरे दिन सूर्योदय तक किये जाते हैं।

### दिवस चरिम दुविहार पच्चक्रवाण

दिवस चरिमं पन्चक्लाई, दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अण्ण-त्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सन्वसमाहिवत्तियागारेणं,वोसिरइ।

#### भवचरिम पच्चक्खाण

भव चरिमं पञ्चक्खाई चउन्बिहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सन्बसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।

## गंठिसहिअ मुद्रिसहिअ और अंगुद्रिसहिअ आदि अभिग्रह पच्चक्खाण

गंठि सहिअं मुहि सहिअं अंगुहि सहिअं वा पञ्चक्लाई, अण्णत्यणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वित्तयागारेणं, वोसिरइ। धारणा पञ्चक्तवाण

घारणा प्रमाणं पच्चक्लाई अण्णत्थाणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सञ्चसमाहिवत्तिआगारेणं. बोसिरइ ।

## पच्चक्खाणों की आगार संख्या

दो चेव णमुकारो आगारा छच्च हुंति पोरिसिए।

सत्तेव य पुरिसङ्के, एगासणयम्मि अहे व ॥१॥ सत्ते गहाणसा उ अहेव य, अंबिलम्मि आगारा।

पंचेव अन्मत्तहे. छप्पाणे चरिम चत्तारि॥२॥

पंचेव अन्मत्तहं, छप्पाण चारम चत्तार ॥२! पंच चउरो अभिग्गहे, णिव्वीए अह णव य आगारा ।

अप्पावरणे पंच चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥३॥

१ इस पत्चक्खाण में पांचवा, चोलपट्टागारेणं, चोलपट्ट का आगार तथा 'पारिट्टावणिया गारेणं' यह दो आगार साधुओं के लिये होते हैं।

२ णमुकारसी में हो, पोरिसी में छः पुरिमढ में सात, एगासण में आठ, एगळठाण में सात, आयम्बिळ में आठ, उपवास में पांच, पाणहार में छह, अभिमह में पांच, णिवीमें आठ तथा नी आगार होते हैं। अरुपावरण और अन्त्यसमाधि पच्चक्खाणके पांच, शेप सभी पच्चक्खाणों में चार आगार होते हैं।

## तपागच्छीय पचक्वाण सूत्र

## णमुक्कारसहिअ मुद्रिसहिय पन्चक्खाण

उग्गए सूरे, णमुक्कारसिंहअं मुद्दिसिंहअं पञ्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, मह-चगरागारेणं, सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

## पोरिसी साढपोरिसी पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, णमुक्कारसिहअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं मुहिसिहअं पञ्च-क्लाई। चउन्त्रिहंपि आहारं, असणं, पाणं, लाइमं, साइमं, अण्णत्यणा-भोगेणं, सहसागारेणं, पञ्छण्णकाल्रेणं, दिसामोहेणं, साहुत्रयणेणं, महत्तरागारेणं, सन्त्र समाहित्रत्तियागारेणं, वोसिरइ।

#### पुरिमह अवह पच्चक्खाण

सूरे उगगए, पुरिमहुं, अवहुं, मुहिसहिअं पन्चक्खाई, चउित्रहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सन्व समाहिवत्तिया-गारेणं, वोसिरइ।

## एकासण, वियासण तथा एगलठाण का पच्चक्खाण

उगगए सरे, णमुकारसिइअं, पोरिसिं, साहपोरिसिं, मुिहसिइअं पचक्वाई। चडिव्वहंिप आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणामोरोणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सब्ब समाहिविचयागारेणं, विगइओ पचक्खाई अण्णत्य-णामोरोणं, सहसागारेणं, लेबालेबेणं, गिहत्यसंसिट्ठेणं, उक्खिचविवेरोणं, पहुच्चमिक्खएणं, महत्तरागारेणं, सब्ब समाहिविचयागारेणं। एकासणं, वियासणं, पुगलठाणं वा पचक्खाई तिविहंिप, आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणामोरोणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं गुरु अन्भुद्वाणेणं, पारिद्वाविणयागारेणं, महत्तारागारेणं, सब्ब समाहिविचि- 张张子子,是我们是一个人,我们是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们

यागारेणं, पाणस्सलेवेण वा, अलेवेण वा, अन्छेण वा, बहुलेवेण वा, सिस-त्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ।

#### आयंबिरु पच्चक्खाण

उगाए सूरे, णमुक्कारसिंहअं, पोरिसिं, मुहिसिंहअं पच्चक्लाई। चउिव्वहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहिवित्तयागारेणं। आयंबिलं पच्चक्खाई अण्णत्थणभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिंहेणं, उक्लित्त विवेगेणं, पारिहाविणयागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्य समाहिवित्तयागारेणं,। एकासणं पच्चक्खाई, तिविहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरुअञ्जुहाणेणं, पारिहाविणयागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्यसमाहि वित्तआगारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अलेवेण वा, अलेवेण वा, अलेवेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ।

#### तिविहार उपवास पचक्खाण

सूरे उगाए, अन्मत्तर्हं, पच्चक्खाई, तिबिहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिहावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब्ब समाहिवत्तियागारेणं, पाणहार, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुद्दिसहिअं, पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, सिस्त्यंण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ।

#### चउविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उगाए, अन्मत्तर्हं पच्चक्लाई, चडिव्वहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं पारिडावणियागारेणं, मह-त्तरागारेणं, सब्बसमाहिबत्तियागारेणं, बोसिरइ।

## रात्रि पचच्खाण

#### पाणहार पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाई, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सन्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

## चउव्विहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्लाई, चउ व्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं, वोसिरइ ।

#### तिविहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणामोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, बोसिरइ।

## दुविहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाई, दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अण्णत्थ-णामोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सन्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

## देसावगासिय पच्चक्खाण

देसावगासियं उवभोगं, परिभोगं पच्चक्खाई, अण्णत्यणामोगेणं, सह-सागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, बोसिरइ।

## पच्चक्वाण के आगारों का अर्थ\*

उग्गए सूरे णमुकार सिहयं पचक्खाई चउव्विहंपि आहारं ॥१॥ अर्थ—जिस समय गुरु पचक्खाण कराते हैं तो गुरु "पचक्खाई" यह शब्द कहते हैं तथा उस समय पचक्खाण छेनेवाले का "पचक्खामि" यह शब्द कहना चाहिये।

श्रंथो में दो प्रकार के पबक्खाणों का उल्लेख मिलता है (१) अशुद्ध पश्चक्खाण (२)

सूर्य उदय के उपरान्त दो घड़ी दिन निकल आने तक चारों आहारों का, णमुक्कार गिन कर लाग किया जाता है वे चार प्रकार के आहार ये हैं:—

- (१) असणं—अन्न, चावल, गेहुं, मूंग, चना, जबार आदि सव प्रकार के अनाज । सब अन्नों का आटा। सब तरह की साग, तरकारी। लड्डू, पेड़ा इत्यादि सब एकबान। आलू, मूली आदि सब प्रकार के कंद। दूध, चाय, दही, रोटी, राब, सब प्रकार की पतली और नरम बस्तुएँ। हींग, बेसन, सौंफ तथा सेंधवादिक नमक इत्यादि सब का समावेश "अश्राण" में होता हैं।
- (२) पाणं—जाँ का पानी, जाँ के छिछके का पानी, चावछ का पानी तथा गरम पानी इसादि सब प्रकार का पानी "पाण" में होता है।
- (३) खाइमं—नारियल, खजूर, आम, केला, अंगृर, अनार, ककड़ी, खीरा, अखरोट, वादाम, पिस्ता आदि सब मेंबे तथा सब प्रकार के फल 'खादिम' कहे जाते हैं।

साइमं—पान, सुपारी, इलायची, लौङ्ग, पान का मसाला,दालचीनी, चूरनकी गोली आदि सुखवास चीजें तथा हरड़, वेहेढ़ा, आंवला, तुलसी, कत्या, सुलैठी, तमाल पत्र वायविडंग, अजवायन, कुलिंजन, कवावचीनी, कचूर, नागरमोथा, पोकर मूल, वबूल की छाल, खैर की छाल इत्यादि वस्तुएं 'स्वादिम' कहलाती हैं।

- (१) "अण्णत्यणासागेणं" :—अनासाग टालके किया जो पचक्खाण अर्थात् विस्मृति के कारण कोई भी वस्तु भूल कर मुख में डाली हो, परन्तु ज्ञान होने पर तत्काल उसको थूक देवे तो पच्चक्खाण में दोप नहीं लगता। किन्तु जानने के बाद भी भक्षण करे तो पचक्खाण निश्चय भंग होता है।
- (२) "पच्छण्णकालेणं" :— मेघ, रज, ब्रहण आदि के द्वारा सूर्य ढक जाने से या पर्वत की ओट में आजाने से सूर्य दृष्टिगोचर न हो, तब

भ्रम पूर्वक पन्चक्काण का समय समाप्त हुआ जान कर मोजन आदि कर छे, तो वत भङ्ग नहीं होता है।

शुद्ध पच्चक्खाण उसे कहते हैं जो पच्चक्खाण करने वाले या कराने वाले आगारों का अर्थ सुचारु रूप से जानते हों।

अतः पन्चक्खाण करनेवालों का परम कर्त्तव्य है कि वे शुद्ध पन्चक्खाण करने का प्रयत्न करें तथा पन्चक्खाण करानेवाला जब अंत में "वीसिरे" कहता है तो करनेवाले को अवस्य "वीसिरामि" कहना चाहिये। अन्यथा व्रत नहीं लिया हुआ समझा जाता है।

- (३) दिसामोहेणं—दिशा का भ्रम हो जाने से अर्थात पूर्व दिशा को पश्चिम दिशा जानकर काल समाप्ति से पूर्व ही भोजन कर ले तो व्रत खण्डित नहीं होता।
- (४) सहसागारेणं—अतिशीव्रपने में या अकस्मात् से घी तेल आदि तालते हुए या देखते हुए छींटे मुख में गिर जायें तो वत में दूषण नहीं लगता है।
- (५) साहुवयणेणं—साधु के वचन से "उग्घाडा पोरिसी" शब्द को, जो कि व्याख्यान में पोरिसी पढ़ते समय बोला जाता है, सुनकर अधूरे समय में ही पन्चक्खाण को पार लेने से व्रत भङ्ग नहीं होता।
- (६) सव्यसमाहिवत्तियागारेणं—पञ्चकखाण का समय पूरा होने के पूर्व ही तीन रोगादिके कारण अस्थिर चित्त तथा आर्त्तरीद्र ध्यान होने से, उस रोगके उपशामन (शान्त करने) के हेतु औषधी आदि ग्रहण करने से
- (७) महत्तरागारेणं—विशेष निर्जरा आदि खास कारण से गुरु की आज्ञा पावर निश्चय किये हुए समय से प्रथम ही पञ्चक्खाण पार हेने से

<sup>े</sup> त्यारचान के समय सूत्र समाप्ति तथा चरित्र प्रारम्भ के प्रथम जो साधु, वित गरागत गुनविन्त्रम , गुरवित्त ) पहिल्द्वण करके पश्चनताण कराते हैं उसे "उधाडा पीरिसी"

- (८) सागारीआगारेणं—जिनेन्द्र भगवान की आजा है कि साधू एकान्त स्थान अर्थात जहां कोई गृहस्थ न देखता हो भोजन करे, यदि एकासणादिक पच्चक्रखाण करके भोजन खाने के लिये बैठे हुए साधु महाराज के पास कोई गृहस्थ चला आवे तो मुनि महाराज उस स्थान से स्थानान्तर होवें तो पच्चक्खाण मंग नहीं होता। तथा गृहस्थों के लिये इस बात का उल्लेख है कि वे यदि एकासणादिक पच्चक्खाण लेकर भोजनार्थ बैठे हुए को सम्मुखस्थित पुरुष की नजर लगती होय तो वे यदि स्थानान्तर होते हैं तो वत खण्डित नहीं होता।
- (९) आउट्टणपसारेणं—सर्प के आने से, अग्नि प्रकोप से, मकान के गिर पड़नेसे, अंग सुन्न पड़ जानेसे यदि हाथ पैरोंको फैलाया या सिकोड़ा जाय तो नियम भङ्ग नहीं होता है।
- (१०) गुरुअसुद्वाणेणं—गुरु महाराज या कोई बड़े पुरुष के विनय करने के लिये भोजन करते हुए, एकासणादिक में आसन छोड़कर खड़ा हो जाने से बत टूटता नहीं।
- (११) पारिद्वाविणयागारेणं—अधिक हो जाने के कारण जिस आहार को उस सरस आहार के परठवन'। से अधिक जीव विराधना होती देखकर गुरु आज्ञा से पच्चक्खाणधारी साधू दुसरे समय भी आहार करे तो नियम खण्डित नहीं होता।
- (१२) लेबालेबेणं—भोजन करने के थाल प्रमुखादि भोजन में घृता-दिक बिगय द्रव्य का अंश लगा हुआ देखकर, हाथादि से साफ कर लेने पर भी जिस बर्तन में चिकनाहट का कुछ अंश रह जाय, उसमें यदि आयम्बिलादि व्रतवाला भोजन कर लेबे तो व्रत भङ्ग नहीं होता है।
  - (१३) उक्तिसत्तविवेगेणं—आयम्बिलादि पञ्चक्लाण में न लाने योग्य

<sup>ं</sup> अपनी मूल से अधिक भूछ कर छाया हुआ या गृहस्थ द्वारा भक्तिवशात् अधिक दिया हुआ आहार की गुरु-आज्ञा से वन में लाकर साधु गुद्ध भूमि में परिठावे, अर्थात मिट्टी में सिंहा देवे उसे "परठवना" कहते हैं!

जो विगय द्रव्य है उसका रपर्श भूल में यदि खाने योग्य वस्तुओं से हो जाये तो उनके खाने में दोष नहीं।

- (१४) गिहत्यसंसिट्टेणं—अन्य आहार या घी तेल आदि से लगी हुई कड़ जी आदि को साफ कर लेने पर भी चिकनाहट या गंघ का थोड़ा अंश उसमें लगा रहे। उस कड़ से कदाचित आयम्बिलवाले को खाना परोसा गया हो तो नियम भङ्ग नहीं होता है।
- (१५) पडुच्चमिक्खएणं—भोजन बनाते समय जिन चीजों पर भूल कर घी, तेल आदि की उंगली लग जाय या घी से चुपड़े हुए फुलकों आदि का रपर्श हो जाय, उन वस्तुओंको आयम्बिलादि पच्चक्खाण वाला भक्षण कर ले तो व्रत भेङ्ग नहीं होता।

# सार्थपोसह सज्माय सूत्र

"一个一个人一个人,他们也是不是不是一个一个人,他们一个人,他们是不是不是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们也是一个人,他们也是

जग चूड़ामणि भूओ, उसभी वीरो तिलोय सिरि तिलओ।
एगो लोगाइचो, एगो चक्खू तिहु अणस्म ॥१॥
भगवान ऋषभदेव संसारके चूड़ामणि रत्नके समान हैं और भगवान
महावीर त्रिलोक लक्ष्मी के तिलक समान हैं। एक दुनिया के प्रकाशक
सूर्य के समान हैं तो दूसरे संसार के लोचन (नेत्र) हैं॥१॥

संबन्छर मुसम जिणो, छम्मासे बद्धमाण जिणचंदो । इह विहरिया णिरसणा, जएज्जए ओवमाणेणं ॥ २ ॥

भगवान ऋषभदेव ने एक वर्ष तक और चन्द्रमा के समान उज्ज्वल मुखवाले भगवान वर्द्धमान ने छै महीने तक निराहार रह कर तपस्या की। इसी उदाहरण को सामने रख कर तप में प्रयत्नशील होना चाहिये।।२॥

जइत्ता तिलोय णाहो, विसहइ वहुयाई असरिसंजणस्स । इय जीयंत कराई, एस खमा सन्त्र साहूणं ॥३॥

त्रिलोकीनाय आदीश्वर प्रमु ने हुप्ट मनुष्यों के बहुत से प्राणांतिक उपद्रवों को बर्दास्त किया (पर उनके विरुद्ध कुछ न किया )। यही क्षमा (सिहण्णुता ) सभी साधुओं को होनी चाहिये ॥३॥ 中,我们的时候,我们就是一个我们的,我们就是一个我们的,我们就是一个我们的,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,

ण च इजइ चालेंड, महइ महाबर्डमाण जिणचंदो । उवस्सन्ग सहस्सेहिंबि, मेरु जहा बाय गुंजाहि ॥॥॥ महाबुडिमान जिनोंमेंचन्द्रवन् महाबीर हजारों उपद्रबेंके होते हुए भी बायु के झोकों से मेरु की तरह जरा भी बिचलित न हुए ॥॥॥ भद्दों बिणीय विणओं, पदम गणहरों समत्त सुयणाणी । जाणंतोबि त मत्यं, बिम्हिय हियओ सुणइ सब्यं ॥५॥

कल्याणकारी विनयवन्त और समस्त थ्रुत ज्ञान के जाननेवाले प्रथम गणघर गातम स्वामी उस अर्थ को समझते हुए भी विस्मत (ध्यानपूर्वक) हदयसे सुनते थे ॥५॥

> जं आणबेइ रावा पयइओ, तं सिरंण इच्छंति । इय गुरुजण मुह भणियं, कयंजळी उंडोहं सोयव्यं ॥६॥

राजा की आज्ञा को अनुचर छोग वड़े श्रम से पूर्ण करने की इच्छा करते हैं, ठीक उसी तरह गुरुजनों के मुख से कही हुई वातों को दोनों हाथ जोड़कर मुनना चाहिये ॥६॥

जह सुर गणाण इंद्रों, गहगण तारागणाण जह चंद्रों । जहय पयाण णरिंद्रों, गणस्स वि गुरु तहाणंद्रों ॥६॥

जिस तरह इन्द्र देवताओं को, चन्द्रमा ग्रह ताराओं को, राजा प्रजाओंको सुख प्रदान करते हैं उसी तरह गुरु अपने गच्छमें (शिप्यवर्ग) को आनन्द दिया करते हैं ॥७॥

> वास्तुचि महीपास्त्रं णपया, परिहबइ एस गुरु उबमा ! जंबा पुरस्त्रो काउं, बिहरंति मुणि तहा सोवि ॥८॥

प्रजा जिस तरह बालक राजा का भी तिरस्कार नहीं करती है उसी तरह अवस्था अथवा चारित्र में छोटे होनेपर भी मुनि, साधु, यित, श्रमण, निरग्रन्थ आदि नामवालों को सबके आगे आचार्य पद देनेके बाद मुनि उन्हें अपना गुरु समझ कर साथ विचरते हैं।

पड़िरुवा तेयस्सि, जुगप्यहाणागमा महुखको । गम्भीरो चिड्मेती, उचएसपरो य आयरिखो ॥९॥

जो तीर्थङ्कर गणधरों के प्रतिनिधि स्वरूप मौजूदा जमाने में सबसे बड़े श्रुत ज्ञाता मधुर भाषी गम्भीर विचार वाले बुद्धिमान और उपदेश देने में समर्थ होते हैं वे ही आचार्य हैं ॥९॥

अपरिस्सावी सोमो, संगहशीलो अभिग्गह मईअ। अविकत्थणो अचवलो. पसंत हियओ गुरु होई ॥१०॥

किसी एकके दोष गुणको दूसरेसे न कहनेवाले, बुलंद (देदीप्यमान) चेहरेवाले शिष्यगणोंके लिये वस्त्र, पात्र एवं पुस्तकोंका संग्रह करनेवाले. किसी विषयको समझ लेनेमें समर्थ बुद्धिवाले अपनी प्रशंसा न करनेवाले या मितभाषी, ( कम बोलने वाले ) स्थिर और प्रसन्न हृद्य वाले गुरु होते हैं ॥१०॥

कइयावि जिण वरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं। आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥११॥ किसी समय जिनेन्द्रदेव मोक्ष का मार्ग बताकर चले गये। पर बाद में आजतक उनके प्रवचन उपदेश को आचार्यों ने ही सुरक्षित रखा है। अणुगम्मए भगवई, राय सुयज्जा सहस्स वंदेहिं। तहिव ण करेड् माणं, परियच्छइ तं तहा णूणं ॥१२॥

दिधवाहन राजा की कन्या साध्वी चन्दनवाला हजारों साध्वियों के साथ प्रवित्तका हुई। फिर भी पूज्यपद का मान नहीं रखती थी। पूज्यपदको भी ज्ञान चारित्रादि गुणोंके माहात्म्यका ही फल समझती थी॥१२॥

दिण दिक्लियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ णेच्छइ आसण गहणं, सोविणओ सव्य अजाणं ॥१३॥ केवल एक दिन का दीक्षित साधु आर्या चन्दनवाला के सामने

आया। पर जबतक वह खड़ा रहा, चन्दनवाला अपने आसन पर नहीं बैठी । यही विनय सभी साध्वियों का आदर्श है ॥१४॥

वर ससय दिक्खियाए, अञ्जाए अञ्ज दिक्खिओ साहू॥ अभिगमण वंदण णमं, सणेण विणएण सो पुज्जो ॥१४॥

सौ वर्ष की दीक्षित साध्वी आज के दीक्षित साधु की अगवानी करें, वन्दन करें, नमस्कार करें, विनय के साथ आसन दें और यह समझे कि यह पूज्य हैं ॥११॥

> धम्मो पुरिसप्पभवो पुरिसवरदेसिओ पुरिस जिहो॥ छोएवि पहू पुरिसो किं पुण छोगुत्तमे धम्मे॥१५॥

पतन की ओर जानेवाले को जो बचाता है, वही धर्म्म है। वह धर्म्म पुरुषों द्वारा अर्थात् तीर्थङ्करों एवं गणधरों के दीमाग से ही पैदा हुआ है और उस धर्म के सचमुच पालक रक्षक पुरुष ही हुए हैं। लोक में भी पुरुष ही प्रभुताशाली होते हैं। इसलिये स्त्रियों से पुरुषों का दर्जी ऊंचा है।।१५॥

संवाहणस्स रण्णो तइया, वाणारसीइ णयरीए । कण्णा सहरस महियं, आसी किररूव वंतीणं ॥१६॥ तहविय सा रायसिरी, उछ्छटंती ण ताइया ताहिं । उयरहिएण इक्केण, ताइया अंगवीरेण ॥१७॥

उस जमाने में बनारस में संवाहन नामक राजा के बड़ी सुन्दरी हजार कन्याएं थीं। पर जब दुश्मनोंने लूटने के ख़याल से उस राजा पर चढ़ाई की तो वे कन्यायें राजलक्ष्मी को न बचा सकीं। पर उसके गर्म से प्रादुर्भूत अकेले अंगवीर्य पुत्रने ही राजलक्ष्मीको दुश्मन राजाओंसे बचा लिया। इसलिये पुरुष की प्रधानता न्याय संगत है।

> महिलाणसु बहुयाणवि, अजाओ इह समत्त घर सारो । राय पुरुसेहिं णिजाइ, जणेवि पुरिसो जहिं णित्य ॥१८॥

स्त्रियां कितनी ही चतुर क्यों न हों, अगर उसके घर में पुरुष नहीं, उत्तराधिकारी औछाद नहीं तो राज पुरुष उनके घर से संचित धन छे जाकर राजकोष (खजाने)में जमा कर छेते हैं। स्त्रियों का कुछ वश नहीं चछता। इससे भी पुरुष की प्रधानता सिद्ध होती है ॥१८॥

किं पर जण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्तिवयं सुकयं । इह भरह चक्कवट्टी, पसण्ण चंदो य दिइंता ॥१९॥ दूसरे की दृष्टि में धार्मिक बनने के लिये जो धर्म किया जाता है, वह निर्श्यक है। उससे कुछ होने का नहीं। इसलिये आत्म साक्षित्व से धर्म्म करना चाहिये जो कि वस्तुतः शुभफलदायी होगा। इसके लिये श्री भरतचक्रवर्ची और प्रसन्न चन्द्र ऋषि दृष्टान्त स्वरूप हैं॥१९॥

> वेसोवि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स । किं परियत्तिय वेसं, विसं णमारेइ खज्जं तं ॥२०॥

कुमार्ग में प्रवृत्त साधु का उसके केवल वेष से रजोहरण चोलपट्टा आदि चिन्हों से क्या हो सकता है ? बहुरूपिये को केवल वेषधारण से क्या ? अर्थात् जिस तरह कोई एक बहुरूपिया समरोन्मुख वीर योद्धा की शक्ल लेकर आ सकता है पर युद्ध उपस्थित हो जाय तो वह निकम्मा साबित होगा ठीक उसी भांति उस ढोंगी साधू का वह ढोंग कामयाब न होगा और विष जिस तरह खाये जाने पर खानेवालों को मार डालता है उसी तरह कुमार्गगामी साधु को कुमार्ग का खोटा फल मजा चला ही देता है ॥२०॥

धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं। उम्मग्गेण पड़ंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥२१॥ जिस कुमार्गगामी मनुष्यों को राजा दृष्डादि व्यवस्था से ठीक रास्ते पर लाता है उसी प्रकार वेष धर्म को व्यवस्थित रखता है और यह भी ख़याल होता है कि मैं दीक्षाधारी हूं ॥२१॥

अप्पा जाणाइ अप्पा, जहिंदियो अप्पसिक्खओ घम्मो ।
अप्पा करेंद्र तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥२२॥
आत्मा ही आत्मा के शुभ तथा अशुभ परिणामों को जानता है ।
अतएव अपनी आत्म साक्षिता से जो घम्म किया जाता है, हे आत्मन !
वही उस आत्मा का वास्तविक धम्म सुखदायक सिन्द होता है ॥२२॥
जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ।
सो तिम्म तिम्म समये, सुहासुहं वंधये कम्मं ॥२३॥
जीव जिस जिस समय जो कुछ अच्छा या बुरा काम करता है,

बह ठीक उसी उसी समय शुभ या अशुभ परिणामों से आबन्द हो जाता है ॥२३॥

> धम्मो मएण हुंतो, तो णवि सीउण्ह वाय विज्जड़िओ। संवच्छर मणसीओ, बाहुबळी तह किलिस्संतो॥२४॥

वर्ष भरतक शीतोष्ण सहते हुए, निराहार रहते हुए उतने क्लेश शारीरिक तकलीफ़ों को बर्दास्त करते हुए बाहुबली ने कठिन तपस्या की; पर हृदय में घमण्ड था, नतीजा यह हुआ कि केवल ज्ञान न मिला। इसलिये घमण्ड छोड़ देने पर ही साधुको सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है ॥२४॥

> णियगमइ विगप्पिय, चिंतिएण सच्छंद बुद्धि चरिएण। कत्तो पारत्तिहयं, कीरइ गुरु अणुवए सेणं॥२५॥

गुरु के उपदेश को ग्रहण करने में असमर्थ अथवा उछ्युङ्कलता से अपनी बुद्धिमानी के घमण्ड से (गुरु उपदेश की) अवहेलना करके जो शुभाद्धष्ठान और कियायें परलोक में हितकर होने के ख़्याल से की जाती हैं वे वहां हितकारी सिद्ध नहीं होती। फलतः गुरु के उपदेशों का अवलम्बन करना नितान्त जरूरी है ॥२५॥

यद्धो णिरोवयारी, अविणीयो गन्विओ णिखणामो । साहुजणस्स गरहिओ, जणे वि वयणिज्वयं रुहइ ॥२६॥

गुरुओं के आगे नतमस्तक न होनेवाले अहंकारी अविनीत एवं निरुपकारी मनुष्य की साधुओं से लेकर समाज तक बड़ी निन्दा होती है। अतएव जैन धर्म को स्वीकार करके विनीत बनना निहायत जरूरी है ॥२६॥

थोवेण वि सप्पुरिसा, सणं कुमारुव्व केंद्र बुज्झंति । देहे खण परिहाणि, जं किर देवेहिं से कहियं ॥२७॥

कतिपय सत्पुरुषों को थोड़े निमित्त से ही बोध हो जाता है। जैसे क्षणभर में देह के रूप का नाश देखकर देवों के जरिये चक्रवर्ती सनत्कुमार को ज्ञान हुआ था ॥२७॥

जइता लब सत्तम सुर, विमाण वासी वि परिवडंति सुरा । चितिञ्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं॥२८॥ जिनकी सात लबकी आयु है, वे देवता भी च्यवनकालमें शोचा करते हैं कि धर्म के निवाय अन्य सब बस्तुयें नश्वर (नाश) हैं ॥२८॥ कह तं भण्णइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स हुक्खमिष्ठ हियए । जं च मरणावसाणे, भव संसाराणु वंधि च ॥२९॥ वह सुख सुख नहीं है, जो अन्त में दुःख रूप परिणत हो जाय । अत्त देवत्व में भी सुख नहीं है, क्योंकि आखिर देवत्व से च्युत होकर संसार में चक्कर लगाना पड़ता है ॥२९॥

उबएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंनो ण युज्झई कोई। जह बंभदत्तराया, उदाइणि मारओ चेब ॥३०॥ किसी किसी मनुष्य को हजारों बार उपदेश देने पर भी बोध नहीं होना है। जैसे चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त और उदायि राजा के मारनेवाले पर उपदेश का कुछ भी असर नहीं हुआ ॥३०॥

> गयकण्ण चंचलाए, अपरिच्चताइ राय लच्छीए। जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पडीत अहे ॥३१॥

अपरिचित तथा अपने कर्मरूप मेंस्र के बोझ से नीचे की ओर से जानेवासी हाथी के कर्ण की तरह चन्नस्र राजस्थमी भी जीवों को अधोगित प्रदान करती हैं: फस्ताः राजस्थमी से भी कुछ होने जाने का नहीं ॥३१॥

> बान्तृणिव जीवाणं, मुहुक्कराईंनि पाव चरिवाई। भववं जा सा साना, पच्चाएसा ह इणमा ने ॥३२॥

जीवों को प्राणियों के विशेष खोटे आचरणों में कहना भी दुष्कर हो जाता है। हे भगवन ! जो मेरी खी है, वह किसी समय मेरी बहन थी। अतः कमें की टीला विचित्र है, यह कहना पड़ेगा। हर हालात में पापाचरण में बचना चाहिये॥३३॥

परिवश्तिङ्ग दोसे. णियण सम्मं च पाय विद्याए । तो किर मिसावईए, उपपर्ण केवले णाणं ॥६६॥ निश्चय पृष्ठेय सलीसंति सन वचन को शुट करके अपने दोगीं की

आलोचना करती हुई एवं गुरु चरणों में भक्ति रखती हुई मृगावती साध्वी को आवरण रहित पांचवां ज्ञान (केवलज्ञान) उत्पन्न हुआ। इसल्यि विनय धर्म्म में ही सर्वगुणों का समावेश हो जाता है ॥३३॥

#### देसावगासिक पचक्वाण\*

अहंणं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पञ्चक्खामि । द्व्यओ, खित्तओं, काल्ओ, भावओं । द्व्यओं णं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थ वा अणत्य वा काल्ओंणं जाव घारणा भावओंणं जाव गहेणं न गहेजामि, छलेणं ण छलेजामि, अण्णेण केणवि रोगायंकेण वा एस में परिणामो ण परिवडइ ताव अभिग्गहों, अण्णत्यणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सब्य समाहि वित्तयागारेणं वोसिरइ ।

#### देसावगासिक पारण गाथा

जेमे जाणं तिजिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु। ते सच्चे आलोएमि अन्सुहिओ संघ भावेण॥१॥ मैंने देसावगासिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में किसी प्रकार की अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं। ॥ इति सुत्रविभागः॥



<sup>\*</sup> देसावगासिय जघन्य से तीन सामायिक की होती है और उत्कृष्ट से १५ सामायिक की होती है। दशम देसावगासिक व्रत का पश्चक्ताण करनेवालों को सामायिक अवश्य लेती चाहिये।

# विधि-विभाग

## प्रातःकालीन सामायिक लेने की विधि

सर्व प्रथम शुद्ध वस्त्र पहन कर चरवले (पूंजनी ) से सामायिक स्थल (जगह) को साफ करे फिर पाट, पट्टा या चौकीपर ठवणी रखकर उसके ऊपर स्थापनाचार्यजी की स्थापना करे नहीं तो पुस्तक या माला की स्थापना करे । उस समय दाहिना हाथ सीधा करके बायें हाथ में मुंहपत्ति लेकर मुखके सामने रखतीन 'णमोक्कार' गिनकर स्थापना स्थापे (रखे)। शुद्ध स्वरूप का पाठ बोल कर स्थापनाजी की पडिलेहण करें । तदनन्तर प्रथम तीन खमासमण दे, खड़े खड़े 'इच्छकार॰' तथा 'अन्मुहिओमि॰' सूत्रका 'इच्छं खामेमि राइयं तक पाठ बोले । ( गुरु महाराज की उपस्थिति में उनका आदेश लेकर ) नीचे बैठ मस्तक नवा कर जीमना ( दहना ) हाथ भूमि पर स्थापित करके बायें हाथ में मुखबिख्नका रखकर हिओमि॰ का पाठ बोले । बाद 'खमासमण' देकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् ! सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं । इच्छं कह पचास बोलों र सहित मुंहपत्ति पिंडलेहे । फिर खड़े हो खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्'! सामायिक संदिसाहूं! इच्छं। कहकर फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन'! 'सामायिक ठाऊं' ? इच्छं कह खमासमण दे आधा अंग नवा तीन 'णमोक्कार' गिने । बाद इच्छकारि भगवन पसाय करी सामायिक दंडक 'उच्चरावोजी' कहे अगर गुरु महाराज हों तो उनसे अथवा अपने आप तीन बार 'करेमि भंते॰' का पाठ बोले। तत्पश्चात एक खमासमण देकर खड़े खड़े 'इरियावहियं॰' तस्स उत्तरी॰, 'अणत्य?' बोळकर एक 'लोग़रस' या चार णमोक्कारका काउसग्ग करे। पारकर प्रगट लोगस्स॰४

是一种,这样,这样,这样是一种,这样,我们是是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们 第一个一个人,我们是一个一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我

१—गुरुओं के उपस्थित रहनेपर इक्कीसों प्रकार की स्थपनाओं में से किसी भी प्रकार की स्थापना की जरूरत नहीं। २—यह दोनों वोल पुष्ठ २ में है। ३—यह सम्पूर्ण चीनों पाठ पुष्ठ ३ में है। ४— यह पाठ सम्पूर्ण पुष्ठ ४ में है।

particular sections of the second of the sec

कहे । फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन वेसणं संदि-साहूं' ! इच्छं । फिर 'खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन वेसणं ठाऊं' ! इच्छं । फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन सञ्झाय संदिसाहूं फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संहिसह भगवन सञ्झाय करूं? इच्छं कहकर आठ णमोक्कार गिने।

अगर सदीं हो तो कपड़ा छेनेके लिये एक खमासमण देकर इच्छा-कारेण पांगरणूं संदिसाहूं कहे। तब इच्छं कहे। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ पांगरणूं पडिग्गहूं? कहे। तब इच्छं कहकर बस्न छेवे। सामायिक या पोसहमें कोई सामायिक या पोसह वाला श्रावक वन्दन करे तो 'बन्दामो कहें' और दूसरे श्रावक वन्दन करें तो सज्झाय करेह कहें'।

#### सामायिक पारने की विधि

प्रथम चरवला अथवा प्ंजनी व मुंह्पित ले खड़ा हो एक खमासमण देकर इच्छाकारेण आमायिक पारवा मुंहपित पिडलेहें ? इच्छं कह मुंहपित पिडलेहें फिर खमासमण कहे। बाद इच्छाकारेण सामायिक पार्स ? कहे। गुरु के पुणो वि कायव्वो कहनेके बाद 'यथाशक्ति कहे फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण सामायिक पारेमि ? कहे। जब गुरु 'आयारो णमोत्तव्वो' कहे तब 'तहित्त' कहकर आधा अंग नमा खड़े खड़ेतीन णमोक्कार पढ़े। पिछे घुटने टेककर सिर नमा दाहिना हाथ आसन या चरवले पर रख भयवं दसण्णभहो । आदि पांच गाथा पढ़े। पिछे 'सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि करते कोई अविधि हुई हो। दस मन के, दस वचन के, बारह काया के। कुल बत्तीस दोषों में कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं कहे।

## सामायिक सम्बन्धी विशेष बातें

१—सामायिक छेनेके बाद दीपक या बिजलीका प्रकाश शरीर पर पड़ा हो या प्रमाद किया होतो 'इरियावहियं॰' तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰ कहकर एक

१—यह पाठ पृष्ठ १८ में है। २—यह पाठ पृष्ठ ३ में है।

लोगस्स॰ का काउसग्ग करें' उसको पार कर प्रगट लोगस्स॰ कहनेके बाद सामायिक पारने की विधि प्रारम्भ करें।

#### मन के दुश दोष

२—दुश्मन को देख कर जलना। २ अविवेक पूर्ण बातें सोचना। ३ तत्त्व का विचार न करना। ४ मन में व्याकुल होना। ५ इञ्जत की चाह करना। ६ विनय न करना। ७ भय का विचार करना। ८ व्यापार का चिन्तवन करना। ९ फल में सन्देह करना। १० निदान (न्याणा) पूर्वक फल संकल्प करके धर्मिक्रया करना।

#### वचन के दुश दोष

१ दुर्वचन बोलना । २ हूंकार भरना । ३ पाप कार्य का हुक्म देना । १ बिना काम बोलना । ५ कलह करना । ६ कुशलक्षेम आदि पूछ कर आगत स्वागत करना । ७ गाली देना । ८ बालकको खिलाना । ९ बिकथा ( निन्दा ) करना । १० हंसी दिल्लगी करना ।

## काया के बारह दोष

१ आसन को स्थिर न करना। २ चारों ओर देखते रहना। ३ पाप वाला काम करना। ४ अंगड़ाई लेना। ५ अविनयकरना। ६ मीत आदि के सहारे बैठना। ७ मैल उतारना। ८ खुजलाना। ९ पैर पर पैर चढ़ाना। १० काम वासना से अंगों को खुला रखना। ११ जंतुओं के उपद्रव से डर कर शरीर को ढांपना। १२ ऊंघना। सब मिलाकर बत्तीस दोष हुए।

४—एक ही साथ दो या तीन सामायिक\* करनी हो तो प्रत्येक सामायिक छेते समय सामायिक छेने की जो विधि है सो करनी । सामायिक पूर्ण होने पर एक ही दफे पारने की विधि करनी । छेकिन दूसरी या तीसरी सामायिक छेते समय 'सज्झाय करूं ?' इस वाक्य के

<sup>#</sup> मामायिक करनेवालों को ३२ दोषों में से निरन्तर (रोजाना) क्रम करने की जरुरत है।

स्थान पर 'सामायिक' में हूं ऐसा कहकर तीन णमोक्कार के बदले एक ही णमोक्कार बोलना ।

#### संध्याकाळीन सामायिक छेने की विधि

दिन के अन्तिम पहर में पौषधशाला, उपाश्रय या पौशाल आदि में जाकर या घर में ही एकान्त स्थान में उस स्थान का तथा वस्त्र का पिंडलेहण करे । अगर देरी हो गई हो तो दृष्टि पिंडलेहण करे फिर गुरु या स्थापनाचार्यजीके सामने बैठकर भूमि प्रमार्जन करके बांयीं ओर आसन रख, एक खमासमण दे, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक लेवा मुंहपत्ति पिंडलें हूं कहे । गुरु के 'पिंडलेंहेंह' कहने पर 'इच्छं' कहकर मुँहपित्त पिंडलेहे । बाद खमासमण दे इच्छाकारेण सामायिक संदिसाई ? इच्छं। कहे । फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण॰ सामायिक ठाऊं ? इच्छं । कह कर आधा अंग नमा तीन णमोक्कार गिन 'इच्छकारी भगवन् पसायकरी सामायिक दंडकउच्चरावोजीं कहे। तदुपरान्त तीन बार 'करेमि भंते॰', इरियावहियं॰, तस्सउत्तरी॰, अणत्थ॰ कह, एक लोगस्स॰का काउसग्ग करे। बाद पार के प्रगट लोगस्स॰ तक की सब विधि प्रभातकालीन सामायिक की तरह करे। फिर नीचे बैठकर दो वन्दना देवे। अगर तिविहार उपवास हो तो सिर्फ मुंहपत्ति का पिंडलेहण करे, बन्दना न दे अगर चउव्विहार उपवास हो तो मुंहपत्ति और वन्दना दोनों ही न करें । बाद खमासमण दे 'इच्छाकार भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराओजी' कहे। फिर 'करेह' कहने पर गुरु के मुख से या स्वयं किसी बड़े के मुख से पच्चवखाण करे।

सामायिक की विधिओं में आये हुए भिन्न भिन्न शब्दों के अर्थ—
इच्छाकारेण संदिसह भगवन्—हे भगवन् ! अपनी इच्छा से आदेश दो । इच्छं—आप की आज्ञा प्रमाण है । सामायिक संदिसाहूं— मुक्ते सामायिक करने का आदेश दें । सामायिक ठाऊं—मैं सामायिक छेवा हूं । इच्छाकारी भगवन् पसायकरी—हे भगवन् ! अपनी इच्छा से, कृपा करके । सामायिक दंडक उच्चरावोजी—सामायिक व्रव का पाठ मुख से बोलिये । १--यह पाठ पृष्ठ ३ में हैं । २ — यह पाठ पृष्ठ ४ में है ।

तदुपरान्त खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ सञ्झाय संदिसाहूं ? 'इच्छं' कहे । फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ सज्झाय करूं' 'इच्छं' कह खड़े हो खमासमण दे आठ णमोक्कार गिने । बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ वेसणूं संदिसाहूं' 'इच्छं' कहे । फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ वेसणूं ठाऊं, 'इच्छं' यह सब क्रमशः प्रभात की सामायिक की तरह करे ।

अगर वस्त्र की आवश्यकता पड़े तो उसके लिये एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ पांगरणूं संदिसाहूं ? 'इच्छं' इच्छाकारेण॰ पांगरणूं पडिग्गहूं' 'इच्छं' कह कर वस्त्र लेवे ।

सामायिक पारने की विधि क्रमशः एक है। राईप्रतिक्रमण की विधि

सर्वप्रथम पूर्व विधिवत् सामायिक प्रहण करे । तदनन्तर एक खमा-समण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् चैत्यवन्दन करूं ? कहे । जब गुरु 'करेह' कहे तब 'इच्छं' कहकर 'जयउ सामिय जयउ सामिय' का जयवीराय की दो गाथा तकका सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे । बाद एक खमा-समण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित्त विसोहणत्यं काउसग्ग करूं ? कहे । तब गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर 'कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित्त विसोहणत्यं करेमि काउसग्गं' कहकर 'अणत्य ' पढ़ कर 'चार छोगस्स ' कहे । या १६ णमोक्कार का काउसग्ग करके 'णमो अरिहंताणं' कहे । पारकर प्रगट छोगस्स कहे । (रात्रि में काम भोगादि बुरे स्वप्न

सामायिक की विधिओं में आये हुए भिन्न भिन्न शब्दों के अर्थ—

सज्माय संदिसाहूं — सुमे स्वाध्याय करनेका आदेश दें। सज्माय करूं — मैं स्वाध्याय करता हूं। वेसणूं संदिसाहूं — सुमे आसन पर बेठनेकी आज्ञा दं। वेसणूं ठाऊं — मैं आसन प्रहण करता हूं। सामायिक पारूं मैं — सामायिक पारता हूं। पुणोवि कायव्यो — फिर भी करो। यथाशिक — जैसी मेरी शक्ति होगी। सामाइयं पारेमि — मैंने सामायिक पार छिया। आयारो णमोत्तव्यो — आवारों को नमस्कार करो। तहित्त — आप का कथन सत्य है।

१—१८४ में है। २—प्रप्रसें है।

,是是是一个人,是是是一个人,是是是一个人,是是是一个人,是是是一个人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,是是

आये हों तो चार लोगरस॰ का। अगर प्रतिक्रमण का न हुआ हो तो ध्यान करे या स्वाध्याय करे। पीछे अनुक्रम से एक एक खमासमण पूर्वक 'आचार्य मिश्र' 'उपाध्याय मिश्र' 'वर्त्तमान जंगम युगप्रधान भद्दारक का नाम' तथा 'सर्व साधुओं' को अलग अलग वन्दन करे । पीछे 'इच्छकारी' 'समस्त श्रावकों को वन्दु' कहकर, घुटने टेक सिर नमाकर, दाहिना हाथ पूंजनी या चरवले पर रखकर, बायें हाथ में मुंह के आगे मुंहपत्ति रख 'सव्वरेस वि राइयं॰' पढ़े। (परन्तु इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं । इतना न कहना चाहिये ) । पीछे णमुत्थुणं॰ पढ़ खड़े होकर 'करेमि मंते॰' 'इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे राइयो॰', तस्सउत्तरी॰', अणत्थ॰ कहकर चारित्र विशुद्धि निमित्तं एक छोगरस॰ का या चार णमो-कार का काउसग्ग करे। बाद में उसको पारकर प्रकट लोगस्स॰ कह 'सव्य लोए अरिहंत चेइयाणं॰ तथा अणत्थ॰ कहकर दर्शन विशुद्धि निमित्त एक लोगस्त॰ या चार णमोक्कार॰ का काउसग्ग करे। उसको पार 'पुक्खरवरदी बड्डे॰ सुअरस भगवओ करेमि काउसग्गं वंदण॰, अणत्य॰ कह ज्ञानाचार की विशुद्धि के निमित्त आठ णमोक्कार का काउसग्ग करे अथवा 'आजुणा चार प्रहर रात्रि सम्बन्धी॰ सात लाख आदि आलोयणा पाठ का काउसग्ग में चिन्तवन करे । तदनन्तर काउसग्ग पार के सिद्धाणं बुद्धाणं॰ पढ़े । बाद प्रमार्जन पूर्वक बैठकर तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेह कर भाव से दो वन्दणा देवे । पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् राइयं आलोउं ? कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर इच्छं, आलोएमि जो मे राइयो सूत्र पढ़ कर 'आजुणा चार प्रहर रात्रि में मैंने जो जीव विराधे हों, सात लाख पृथ्वीकाय॰ तथा अद्वारह पापस्थानक॰ पढ़े। तदनन्तर 'ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी पोथी॰', आलोएण सूत्र बोले । तदनन्तर 'सव्बस्सवि राइय॰' कहकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' कहकर रात्रि अतिचार का प्रायश्चित्त मांगे । गुरु के 'पडिक्कमेह' कहने के बाद इच्छं, 'तस्समिच्छामि दुक्कडं॰' कहे। तत्पश्चात् प्रमार्जन पूर्वक आसन के ऊपर दाहिना घुटना ऊंचा करके, -पृष्ठ ७ में है। २—पृष्ठ ४ में है।

३-- पृष्ठ ३ में है।

भगवन् सूत्र भणूं १ कहे । गुरुके 'भणेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कहकर तीन णमोक्कार तथा तीन करेमिमंते । पढ़कर 'इच्छामि पिडक्किमिउं जो में राइओ । 'तथा वंदित्तु । वंदित्तु सूत्रकी ४३ वीं गाथामें 'अन्मुद्धिओमि पद आने पर खड़ा होकर शेष वंदित्तु को सम्पूर्ण करे । पीछे दो बन्दना देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अन्मुद्धिओमि अन्मितर राइयं खामेउं । बोछे । गुरु के 'खामेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर प्रमार्जन पूर्वक घुटने टेक शरीर नमा दाहिने हाथ को चरवले पर रख तथा बायें हाथ से मुंहपत्तिका मुखके आगे रख 'खामेमि राइयं, जं किंचि अपित्रयं । 'सूत्र कहे । गुरुको 'मिच्छामि दुक्कडं' देनेपर दो बन्दना देवे। तदनन्तर 'आयरिअ उवज्झाए । की तीन गाथायें कहकर, करेमिभंते । इच्छामि ठामि । तस्सउत्तरी । अगरवा करे । काउसगा में भगवन् महावीर खामी कृत छम्मासी तप का चितन छह लोगस्स या चौबीस णमोक्कार का काउसगा करे । और जो पच्चक्खाण करना हो तो मनमें धारकर काउसगा परे । फिर प्रगट लोगस्स कहकर उकडू आसनसे बैठकर छट्टे आवश्यककी मुंहपित्त पडिलेहे दो बन्दना हेवे।

पीछे 'सद्भक्त्या देवलोके॰ ' स्तव से सकल तीर्थों को मान पूर्वक नमस्कार करें और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराओजी॰' ऐसा कह, गुरु के मुख से या बृद्ध साधर्मिक के मुख से या स्थापनाजी के सामने पूर्व निश्चयानुसार पच्चक्खाण कर लें। बाद 'इच्छामो अणुसिंडं॰' कहकर बैठ जाय और मस्तक पर अंजली रख 'णमो खमासम-णाणं॰, नमोऽईत्॰' पढ़, पर समय तिमिर तर्राणं॰ की तीन गाथायें कहे। पीछे णमुत्युणं॰ कह खड़े होकर 'अरिहंत चेइयाणं॰ १०' व अणत्य॰ १९ पढ़ एक णमोकार का काउसम्म करें और उसको नमोऽईत्॰ पूर्वक पारकर एक स्तुति ( युई ) कहे। बाद 'लोगस्स॰ सव्यलोए॰ अरिहंत चेइयाणं॰ अणत्य॰' पढ़ एक णमोक्कार॰ का काउसम्म करें और दूसरी स्तुति कहे। फिर

ल—विष्ठ १८ । द—विष्ठ १८ । ६०—विष्ठ ल । ११ — विष्ठ छ । १—विष्ठ ३ । र—विष्ठ ल । ई—विष्ठ १ । १ —विष्ठ छ । १ —विष्ठ छ ।

'पुक्खरवरदी॰' सुअस्स भगवओ करेमि॰ अणत्य॰' पढ़, एक णमोक्कार॰ का काउसग्ग पार तीसरी स्तुति कहे । तदनन्तर 'सिन्दाणं बुद्धाणं॰ वेयावच्चग-राणं॰ अणत्य॰ ' बोल एक णमोक्कार॰का काउसग्ग पार चौथी स्तुति कहे। तत्पश्चात् 'शकस्तव'॰ पढ़ तीन खमासमण पूर्वक आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधुओं को बन्दन करे।

यहीं राई प्रतिक्रमण की समाप्ति हो जाती है अगर विशेष भाव तथा स्थिरता हो तो उत्तर दिशा की तरफ मुख करके तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ चैत्यवन्दन करूं?' 'इच्छं' कह श्री सीमंघर खामीका चैत्यवन्दन पढ़े। तदनन्तर 'जंकिंचि॰, णमुत्थुणं॰', जावंति चेइआइं॰, जावंत केविसाहू॰, नमोऽर्हत्॰' कह श्री सीमंघर खामी के स्तवनों में से कोइ एक स्तवन बोलकर जयवीयराय॰ ', अरिहंत चेइयाणं॰, वंदणवित्तआए॰ तथा अणत्थ॰ कहने के बाद अप्पाणं वोसरामि पर्य्यन्त एक णमोक्कार॰ का ध्यान करके 'नमोऽर्हत्॰' कहकर श्रीसीमंघर खामीकी थुई कहे। इसी तरह तीन खमासमण देकर 'श्री सिद्धाचलजी' का चैत्यवन्दन, स्तवन और थुई। कहे अगर विशेष स्थिरता हो तो अष्टापदजी का चैत्यवन्दन, स्तवन, थुई कहे। तदनन्तर पिडलेहण करे। फिर सामायिक पूर्वोक्त विधि से पारे।

## देवसिक प्रतिक्रमण की विधि।

प्रथम सन्ध्याकालीन सामायिक ग्रहण करे। फिर तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करूं?' कहे। गुरु के 'करेह' कहनेपर'इच्छें'कह,फिर 'जय तिहुअण॰ 'की। ५ या ७गाथा,तक'जयमहायस॰', 'णमुत्थुणं॰, अरिहंत चेइयाणं॰', अणत्थ कह एक णमोक्कारका काउसमा करे। पार के 'नमोऽईत्॰' कह प्रथम थुई ( स्तुति ) कहे। तदनन्तर 'लोगस्स॰', सञ्चलोए॰', 'अरिहंत चेइयाणं॰', अणत्थ॰ कह, एक णमोक्कार

१ – पृष्ठ ७। २ – पृष्ठ ८ । ३ – पृष्ठ है। ७ – पृष्ठ ४ । ८ – पृष्ठ ७ । ६ – पृष्ठ है।

的,这个时间,这个时间,我们是一个时间,我们是不是一个时间,我们们的一个时间,我们们的一个时间,我们们的一个时间,我们的时间,我们的时间,我们的时间,我们的时间,我们的一个时间,这个时间,我们的一个时间,我们的一个时间,

का कोउसग्ग पार, द्वितीय स्तुति कहे। बाद 'पुक्खरवरदी॰ र', सुअस्स भगवओ॰', अणत्य॰ कह, एक णमाक्कारका काउसग्ग पार, तृतीय स्तुति बोले । पीछे 'सिन्दाणं वुद्धाणं॰', 'वेयावच्चगराणं॰', अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार, नमोऽर्हत्॰ कह के चौथी स्तुति कहे। पीछे वैठकर 'णमुत्युणं॰' पढ़े, एक एक खमासमण देकर क्रमशः 'आचार्य मिश्र॰', 'उपाध्याय मिश्र॰ वर्त्तमान गुरु मिश्र तथा सर्व साधुमिश्र॰ को वन्दन करे। वाद 'इच्छकारी समस्त श्रावकोंको बन्दु' कहे। तद्नन्तर घुटने टेक, सिर नमा, दाहिना हाय चरवला या पुंजनी पर रख के 'सव्वस्सवि देवसिय॰' कहे। फिर खड़े होकर 'करेमि भंते॰ रे, इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसियो॰ र, तस्स उत्तरी॰', अणत्य॰' कह आठ णमोक्कारका काउसग्ग करे फिर काउसग्ग पार के प्रगटलोगस्स॰ पढ़, प्रमार्जन पूर्वक बैठ, तीसरे आवश्यककी मुंहपत्ति पडिलेहे दो वन्दना॰ देवे। पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन देवसियं आलोउं इच्छं', गुरु जब 'आलोएह' कहे तब 'आलोएमि जो मे देवसिओ॰, आजुणा चार पहर दिवस सम्बन्धी॰ -,सातलाख॰,अठारह पापस्थान॰,ज्ञानदर्शन चारित्र पाटी पांथी॰ आदि आलोयणा सूत्र कहकर 'सव्यस्सवि देवसिय, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्॰ तक कहे । जब गुरु 'पडिक्कमेह' कहे तब 'इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं' कहे । बाद प्रमार्जन पूर्वक आसन पर बैठ, दाहिना घुटना ऊंचा कर, 'भगवन् सूत्र भणूं ?' कहे। गुरु के भणेह, कहने पर 'इच्छं कह, तीन णमोक्कार तथा तीन करेमि भंते॰ कहकर 'इच्छामि पडिकमिउं जो में देवसिओं वोल 'बंदिनु॰ सूत्र १ पढ़कर दो वन्दना ११ देवे। तव 'अच्मुहिओमि॰' सम्पूर्ण कहे वाद फिर दो वन्दना देवे । पीछे 'आय-रिय उवज्झाए॰ १२, करेमि भंते॰, इच्छामि ठामि॰, तस्सउत्तरी॰, अणत्य॰ ' कह चारित्र विशुद्धी निमित्त 'दो लोगस्स' या आठ णमोक्कार का काउसग्ग पार के प्रगट लोगस्स॰ पढ़, 'सव्यलोए, अरिहंत चेइयाणं॰ अणत्य॰' कह-कर एक लोगसा या चार णमांक्कार का काउसरग करे। उसका

<sup>।</sup>४ रुष्यु— ३ । इ.स्यू—४ । ७ द्रष्यु—१ । इ.स्यू –३ । इ.स्य – । ७ द्रप्य –४ । इ.स्य –७ । इ.स्य –७ । इ.स्य –७

· 一个,我们是一个,我们就是一个,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们的,我们的,我们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们

'पुक्खरवरदी॰', सुअरस भगवओ करेमि॰, अणत्थ॰' पढ़कर एक छोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग करें । बाद 'सिन्हाणं बुन्हाणं , सुअदेवयाए करेमि काउसग्गं, अणत्य॰' कह, एक णमोक्कार का काउसग्ग कर 'श्रुत देवता की स्तुति-सुवर्ण शालिनी देयात॰ २ कहे। अनन्तर 'खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं॰, अणत्य॰ १ पढ़कर एक णमोक्कारका काउसग्ग पारे तथा क्षेत्रदेवता की स्तुति—'यासां क्षेत्रगताः सन्ति॰' कहे । बाद खड़े होकर एक णमोक्कार पढ़े और प्रमार्जन पूर्वक बैठकर छड़े आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहण कर भावसे दो वन्दना देवे। पचक्खाण न किया हो और सूर्यास्त होने-वाला होतोपहले पच्चक्खाणकरले। बाद्'इच्छामो अणुसर्हि॰<sup>४7</sup>पढ़करबैठकेमस्तक पर अंजली रखकर 'णमो खमासमणाणं॰५, नमोऽर्हित्सिद्धा॰' कहे। बाद श्रावक 'नमोऽस्तु वर्धमानायः की तीन इलोक पढ़े और श्राविकाएं 'संसार दावानलः कीं तीन क्लोक पढ़े। फिर 'णमुत्युणं॰' कह, एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण स्तवन भणुं?' कहे। गुरुके 'भणेह" कहने पर आसनपर बेठ के 'नमोऽईत्'॰ " कह एक बड़ा स्तवन (ग्यारह गाथा या इक्कीस गाथा का स्तवन) वोले । पीछे एक एक खमासमण देकर अनुक्रम से 'आचार्य मिश्र, उपाध्याय मिश्र' तथा सर्व साधुओं को वन्दन करे। पीछे दाहिना हाय को चरवले पर रख और मुंहपित्त के साथ बायें हाथ को मुंह के आगे कर 'अङ्घाइञ्जेसु९' का पाठ बोर्छे तत्पश्चात एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय पायन्छित्त विसोहणत्यं काउसग्गं करूं ? गुरु 'करेहं' कहे तब 'इच्छं ! देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्यं करेमि काउसग्गं, अणत्य॰ कहकर चार 'लोगस्स' या १६ णमोक्कार का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ बोले । अनन्तर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन खुद्दोपदव उद्घावण निमित्त काउसम्म करूं ? इच्छं, खुद्दोपदव उद्घावण निमित्तं करेमि काउसग्गं, अणत्य०१०१ कह चार लोगस्स या १६ णमोकारका काउसम्म पार प्रगट छोगस्त॰ कहं ।

१—पृष्ठ ७। द—पृष्ठ २२। ३—पृष्ठ ४१।१०—पृष्ठ २१।१—पृष्ठ २२।६—पृष्ठ २२। ७—पृष्ठ १७। द—पृष्ठ ६।६—पृष्ठ २३।१०—पृष्ठ ४। तदनन्तर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन चैलवन्दन करूं ?' इच्छं कहकर 'श्री सेढ़ी तटिनी तटे॰' आदि श्री स्तंभन पार्श्वनाथ चैत्यवन्दन कह के 'जंकिंचि॰', णमुत्युणं॰, जावंत चेइआइं॰, जावंत केवि-साहू॰, नमोऽर्हत्॰, उवसग्गहरं॰, जयवीयराय॰' दो गाथा सम्पूर्ण तक कह, एक खमासमण दे, 'सिरि थंभणिडय पाससामिणो॰' इत्यादि दो गाथायें पढ़े। पीछे श्री स्थम्भण पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं' कह खड़े होकर 'वंदण वित्तयाए॰', अणत्य॰ कह चार 'लोग्स्स' या १६ णमोक्कार का काउसग्ग पार कर प्रगट लोगस्स॰ कहे।

इसके बाद "श्री खरतर गच्छ शृङ्गार हार जंगम युग प्रधान मद्दारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं" कह अणत्य॰ बोल, एक 'लोगरस' या चार 'णमोक्कार' का काउसग्ग पार प्रगट लोगरस॰ कहे। इसी तरह दादाजी\* श्री जिनकुशल सूरिजीका चार णमोक्कारका काउसग्ग करे तथा पार के प्रगट लोगरस॰ कहे। बाद खमासमण देकर प्रमार्जन पूर्वक आसन पर दाहिना घुटना ऊंचा कर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैसवन्दन करूं ? इच्छं कह कर 'चडकक्साय॰ दे, अईन्तो भगवन्त॰, णमुत्युणं॰ इत्यादि जयवीयराय॰' दो गाथा पर्यन्त पढ़े बाद 'ल्रघुशान्ति॰' कहें। अन्त में पूर्वोक्त विधि से सामायिक पारे।

## अथ पक्खी प्रतिक्रमण विधि

प्रथम पूर्ववत् सामायिकः छेवे। सम्पूर्ण जयतिहुअण विद्यु सूत्र पर्यन्त देवसिक प्रतिक्रमण करे । बाद एक खमासमण देकर 'देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पिक्खिय छेवामुंहपत्ति पिछ छेहं? कहे। बाद गुरु के पिछ छेहेहं कहने पर इच्छं कह, एक खमासमण दे मुंहपत्ति का पिछ छेहण करे तथा दो बन्दना देवे । पीछे जब गुरु कहें 'पुण्यवन्तो भाग्यवन्तो छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण सम्पूर्ण करना

<sup>॰</sup> दिहों में मणिधारी श्री जिनचन्त्र सूरिजी महाराज का काउसला किया जाता है। १—पृष्ठ २४। २—पृष्ठ १। ३—पृष्ठ ७। ४—पृष्ठ ४। १—पृष्ठ ४। ६--पृष्ठ २४। ७—पृष्ठ १।८—पृष्ठ २४।६—पृष्ठ ८६। १० –पृष्ठ १८।

in in interest the second of the second interest in the second interest in the second in the second

एक बार खांसना या दोबार खांसना, मंडलमें सावधान रहना तथा देवसिय की जगह पक्खिय कहना' तब 'तहत्ति' कहे । पीछे खड़े होकर 'इच्छाका-रेण संदिसह भगवन् संबुद्धा खामणेणं अब्मुहिओमि अब्भितर पविखयं लामेउं' ? कहे । गुरु जब 'लामेह' कहे तब घटने टेक, दाहिना हाथ पूंजनी पर रख तथा मुंहपत्ति सहित बायें हाथ को मुख के आगे रख 'इच्छं खामेमि पक्खियं' कहकर यथाविधि पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पणरसण्णं दिवसाणं पणरसण्हं राइणं जंकिंचि अपत्तियं॰१' कहे । गुरु जब 'मिच्छामि दुक्कडं॰' कहे तदनन्तर खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन पिक्खयं आलोउं ? कहे । गुरु के 'आलोएह' कहने पर 'इन्छं आलोएमि जो मे पिक्सओ अइयारो कओ॰२' इत्यादि बोलकर वृहद् अतिचार३ बोले । पीछे सन्वस्सवि पिक्खय दुचितिय दुन्मासिय दुचिहिय॰, इन्छाकारेण संदिसह भगवन् तक कहे । तदनन्तर गुरु कहे 'पविखय' चउत्थेण पडिकामेह' तब 'इच्छं ! मिन्छामि दुक्कड़ं' बोले तथा दो वन्दना १ देवे। तदनन्तर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं. अन्मुहि-ओमि अब्भितर पिक्लयं खामेउं ? बोले । गुरु जब 'खामेह' कहे तब 'इच्छं ! खामेमि पक्खियं जॉकिंचि॰' का पाठ बोले तथा दो बन्दना देवे । तदनन्तर 'भगवन् ! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्लियं पडिक्रमावेह' कहे ! गुरु के 'सम्मं पडिक्कमेह' कहने पर 'इच्छं ! करेमिभंते॰ ५ इच्छामि टामि काउसम्मं॰, जो मे पिक्खयो॰', कह एक खमासमण देकर 'इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् वंदिनुसूत्र\* संदिसाह् ं ? कहे । गुरु के 'संदिसावह'

पंपक्ली प्रतिक्रमण को उपवास किये बिना, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण को बेला किये बिना और साम्बत्सिरिक प्रतिक्रमण को तेला किये बिना नहीं करना चाहिये। ऐसी शास्त्रानुसार रीति है। परन्तु इतना न हो सके तो यथाशक्ति तपश्चर्या करके ही ये तीनो प्रतिक्रमण करना चाहिये।

<sup>\*</sup> पक्सी सूत्र में पश्चमहात्रत और झटे रात्रि भोजन व्रत की आलोबणा है, इसिंख्ये आवकों को पक्सी चौमासी सम्बत्सरी प्रतिक्रमण में नहीं बोलना चाहिये। कारण इस सूत्र की साधु ही बोल सकते हैं।

१--- पूच्ठर । २-- पूच्ठ ७ । ३--- पूच्ठ २६ । ४ -- पूच्ठ ३ ।

कहने पर फिर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदित्तु सूत्र कहूं ? गुरु के 'कहेह' कहनेपर तीन णमोक्कार तीन करेमिभंते. इच्छामिठामि काउसग्गं विदेतु सूत्र बोले । साधु नहीं हो तो श्रावक एक खमासमण देकर 'भगवन् ! सूत्र भणूं ? कह कर इच्छं कहे तथा तीन णमोक्कार गिन कर 'बंदित्तुर' ध्यान में सूत्र बोले या सुने। वाकी के सब श्रावक 'करेमि भंते, इच्छामि ठामि॰३, तस्सउत्तरी॰, अणत्य॰ कहकर काउसग्गमें खड़े हुए या बैठे हुए सुनें । वंदित्तु सूत्र ४३वीं गाथा तक पढे, 'णमो अरिहंताणं' कह काउसग्ग पार खड़े होकर तीन णमोक्कार गिन कर बैठ जाए। बाद तीन णमोक्कार,तीन करेमिभंते॰ पढ़ कर 'इच्छामि ठामि पडिकामिउं जो मे पिक्लयो॰' कह वंदिन सूत्र वाले । तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! मूल गुण, उत्तर गुण विशुद्धि निमित्त काउसग्ग करूं ? गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कह 'करेमि भंते॰, इच्छामि ठामि॰४, तस्सउत्तरी॰, अणत्य॰ कह बारह लोगस्स\* का काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्स॰ कहे । तत्पश्चात् वैठ कर मुंहपत्ति का पिंडलेहण कर दो वन्दना दे और 'इच्छाकारेणसंदिसहभगवन् !पक्खी समाप्ति खामणेणं अन्सुहिओमि अन्भितर पक्लियं लामेंडं ? कहें । गुरु के 'लामेह' कहने पर 'इच्छामि लामेमि पिनवयं जं किंचि॰५' कहे । पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पिनखयं खामणा खामूं ? कहे । गुरु के 'पुण्णवन्तो॰' कहने पर तीन बार एक एक खमासमण दें तीन तीन णमोक्कार कह 'पिक्खयं समाप्ति खामणा खामेह' कहं । पीछे गुरुके 'णित्यारमा पारमा होत्या' कहने पर 'इच्छं'कह इच्छामो अणुसर्टिः कहे। फिर गुरु कहे 'पुण्यवन्तो॰! पिक्सियके निमित्त एक उपवास दं। आर्यविल, तीन णिळि, चार एकासणा,दो हजार सज्झाय कर पक्खीकी पट प्रना तथा 'पक्लिय' के स्थान में 'देवसिय' कहना ऐसा कहने पर 'तर्हात्तं कहे । पाछे दो वन्दना॰ देकर सदेव की भांति देवसिक प्रतिक्रमण

४८ णगोककार।

<sup>-</sup>ष्ट । ६ – ष्ट १६। ३

करें । विशेष इतना है कि श्रुत देवताका काउसगा करके 'कमलदल विपुल नयना॰ ' श्रुत देवी की थुई कहें बाद 'सुवण देवयाए करेमि काउसगां, अणत्य॰ ' कह के एक णमोक्कार का पार के 'नमोऽईत्॰, ज्ञानादिगुण युतानां॰ ' थुई कहें । फिर बाद में क्षेत्रदेवी का काउसगा पार के 'यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य॰ ' थुई कहें । इसके अनन्तर नमोस्तु वर्धमानाय॰ का चैत्यवन्दन कर बड़ा स्तवन अजित शांति पढ़ें और यहां से पूर्विलिखत देवसिक प्रतिक्रमण के अनुसार विधि करें । पीछे यह विशेष है कि गुरु या श्रावक बड़ी शांति बोले तथा शेष श्रावक सुनें । फिर पूर्वोक्त रीति से सामायिक॰ पारे । अन्त में दादाजी का स्तवन कहें ।

#### चौमासी प्रतिक्रमण की विधि

पूर्ववत् सामायिक तथा जयतिहुअण सम्पूर्ण और वंदिन्तु सूत्र पर्य्यन्त देवसिक प्रतिक्रमण करें । बाद एक खमासमण देकर 'देवसियं आलोइयं पिडकंता', इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चौमासी लेवा मुंहपित पिडलेहं ? कहें । बाद गुरु के 'पिडलेहेह' कहने पर, इच्छं कह, एक खमासमण दें मुंहपित्त का पिडलेहण करें तथा दो वन्दना देवे । पीछे जब गुरु कहें 'पुण्यवन्तो, भाग्यवन्तो' छींक की जयणा करना, मधुर खर से प्रतिक्रमण सम्पूर्ण करना, एक बार खांसना दोबार खांसना, मण्डल में सावधान रहना तथा 'पिक्खय की जगह चडमासी कहना' तब 'तहित्त' कहें । पीछे खड़ें होकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् संबुद्धा खामणेणं अच्युहिओमि अब्मितर चडमासियं खामेंडं ? कहे । गुरु के खामेह कहने पर घुटने टेक कर दाहिना हाथ पूंजनी पर रख तथा मुंहपित्त सिहत बायें हाथ को मुख के आगे रखकर 'इच्छं ! खामेमि चौमासियं' कहकर यथा विधि चौमासी प्रतिक्रमण में 'चउण्हं मासाणं अठण्हं पक्खाणं वींसोत्तर सयं राहं दियाणं 'जं किंचि अपित्तयं॰ 'र कहें । गुरु जब 'मिच्छामि दुक्कड़ं' कहें । तदनन्तर खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् ! चौमासियं आलोजं?

१—वष्ठ २२ । २—वष्ठ ३ । ३—वष्ठ २२ । ४—वष्ठ ८४ । १- वष्ठ १८ । ६-वष्ठ २ ।

是,这样,也是是一个,这样,这样,他们也是是一个,他们也是是一个,他们也是一个,他们也是一个,他们也是一个,他们也是一个,他们也是一个,他们也是一个,他们也是一 कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर 'इच्छं! आलोएमि जो मे चउमासिओ अइयारो कओ॰' इत्यादि बोलकर वृहद् अतिचार बोले॰ । पीछे सव्यस्स वि॰ चउमासियं दुर्चितिय दुन्भासिय दुचिहिय॰ इच्छाकारेण संदिसह भग-वन्' तक कहे । तदनन्तर गुरु कहे 'चउमासियं छट्टेणं पडिक्कमेह' तब 'इच्छं ! मिच्छामि दुक्कड़ं' बोले तथा दो बन्दनाः देवे। तदनन्तर 'इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं अन्युद्धिओमि अन्भितर चउमासियं खामेउं ? बोले । गुरु जब खामेह कहे तब 'इच्छं ! खामेमि चउमासियं जं किंचि॰४' का पाठ बोले तथा दो वन्दना देवे । तदनन्तर भगवन् ! देवसियं आलोइय पडिक्कंता चउमा-सियं पडिक्कमावेह' कहे । गुरु के 'सम्मं पडिक्कमेह' कहने पर 'इच्छ' ! करेमि भंते०५' इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे चउमासियो०६', कहकर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन वंदिन्तु सूत्र संदिसाहूं' ? कहें । गुरु के 'संदिसावेह' कहने पर फिर तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वंदिचु सूत्र॰ कह्रं ? बोले । गुरु के 'कहेह' कहने पर तीन णमोक्कार गिने और तीन करेमि भंते॰ इच्छामि ठामि काउसग्गो॰ कहकर सूत्र बोले ।

तीन खमासमण दे 'भगवन ! सूत्र भणूं ? कह 'इच्छं' कहे और तीन णमोकार गिनकर 'वंदित्तु॰ सूत्र पढ़े, रोष सब श्रावक 'करेमि भंते॰, इच्छामि ठामि॰, तस्त उत्तरी॰,अणत्य॰ कह काउसग्ग (ध्यान) में खड़े हुए या बैठे हुए सुनें। 'बंदिनु सूत्र' के पूर्ण हो जाने पर 'णमो अरिहंताणं' कह काउसग्ग पार, खड़े हो तीन णमोक्कार गिन कर बैठ जाय। पीछे तीन णमोक्कार, तीन करेमिभंते॰ बोलकर 'इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे चउमासियो॰ कह प्रगट वंदिच् सूत्र बोले । तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मूलगुण उत्तर गुण विशुद्धि निमित्त काउसगा करूं ? गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कह 'करेमिभंते॰

१—१८९ २६ । २—१८ ७ । ३—१८ ६ । ४—१८ २ । ५—१७८ ३ । ६—१७८ ७ ।

इच्छामि ठामि॰ तस्त उत्तरी॰ अणत्य॰' कह कर बीस लोगस्त या अस्ती णमोक्कारका काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्त॰ कहे। तत्परचात् बैठ कर चउमासी समाप्त मुंहपत्तिका पिछलेहण कर दो वन्दना॰ देवे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!' समाप्ति खामणेणं अब्भुिह ओमि अब्मित चउमासियं खामें १ कहे। गुरु के खामेह कहने पर 'इच्छं खामेमि चउमासियं जं किंचि॰' कहे। फिर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चउमासिय खामणा खामूं १ कहे। गुरु के 'पुण्यवन्तो॰' कहने पर एक एक खमासमण तथा तीन तीन णमोक्कार चार बार बोलकर 'चउमासी समाप्ति खामणा खामेह' कहे। पीछे गुरु के 'पुण्यवन्तो॰! चउमासियके निमित्त दो उपवास, चार, आयंबिल, छ णिन्त्रि, आठ एकासणे, चार हजार सज्झाय करके चउमासिय की पेठ पूरना तथा चउमासिय के स्थानपर देवसिय कहना सब 'तहत्ति' कहें। पीछे दो वन्दना देकर सदैव की भांति देवसिक प्रतिक्रमण करें।

विशेषता इतनी हैं कि श्रुतदेवता का काउसग्ग करके 'कमलदल विप्रल नयना॰' आदि श्रुतदेवी की युइ कहें। फिर 'सुवणदेवयाए करेंमि काउसग्गं, अणत्थ॰' कह कर एक णमोक्कारका काउसग्ग 'नमोऽईत॰' कह पार कर 'ज्ञानादिगुणयुतानां॰' इत्यादि सुवन देवता की थुई कहे। बाद में क्षेत्र देवता का काउसग्ग पार कर 'यस्याः क्षेत्रं समाश्रिय॰' थुई कहे नमोस्त वर्द्धमानाय णमोत्थुणं॰ कह और 'अजित शांति' बोलना। लघु स्तवन के स्थान में 'उवसग्गहरं॰\*' कहे। प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर गुरु से आज्ञा लेकर 'नमोऽईत॰' पढ़ के एक श्रावक वृहत् शांति बोले और शेष सब सुनें। फिर पूर्वोक्त रीति से सामायिक पार कर अन्तमें दादाजी का स्तवन बोले।

#### साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम पूर्ववत् सामायिकः लेवे तथा जयतिहुअणः सम्पूर्ण और

१ – पृष्ठ २२ । २ – पृष्ठ ८४ । ३ – पृष्ठ ८६ । ४ – पृष्ठ १८ ।

के जल्याची। अश्री सेटी के चैत्यवन्दन में।

वंदित्तु पर्य्यन्त देवसिक प्रतिक्रमण करे। बाद एक खमासमण देकर 'देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन सम्बत्सरी गुरु के 'पडिलेहेह' कहने पडिलेहुं ? कहे। बाद खमासमण दे मुंहपत्ति का पृडिलेहण करे तथा दो कहकर जब गुरु कहे 'पुण्यवन्तो भाग्यवन्तो छींक देवे । पीछे की जयणा करना मधु स्वर से प्रतिक्रमण सम्पूर्ण करना एक बार खांसना दो बार खांसना मंडल में सावधान रहना और सम्वत्सरिय 'तहत्ति' कहे । पीछे खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन खामणेणं अन्मुहिओमि अन्भितर सम्बत्सरियं खामेउं ? कहे । गुरु के 'खामेह कहने पर घुटने टेक कर दाहिना हाथ पूंजनी पर रख तथा मुंहपत्ति सहित बायें हाथको मुखके आगे रख 'इच्छं! वामेमि सम्बत्स-रियं' कहकर यथाविधि सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में अधिक मास न तो 'बारसण्हं मासाणं\* चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्णसयसिंहं राइ दियाणं किंचि॰³ 'आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं अब्मुहिओिम अब्भितर सम्बत्सरियं खामेउं ? बोले 1 गुरु जब 'इच्छं! खामेमि सम्बत्सरियं जं किंचि॰' का पाठ बोले देवे। देवसियं किंचि॰ तदनन्तर भगवन् जं तदनन्तर खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! आलोउं ? कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर इच्छें'! आलोएिन जो में सम्बत्सरियो अइयारो कओ॰ इत्यादि बोलकर बृहत् अतिचार॰ बोले । पीछे 'सन्वस्सवि सम्बत्सरियं दुर्चितिय दुन्भासिय दुच्चिडिय॰ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' तक कहे । तदनन्तर गुरु के 'सम्बत्सरियं अडमेण पडिक्कमेह' कहने पर 'इच्छं ! मिच्छामि दुक्कड़ं' बोले तथा दो वन्दना देवे । तदनन्तर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आले।इयं पडिक्कंता सम्वत्सिरयं पडिक्कमावेह' कहे । गुरु के 'सम्मं पडिक्कमेह'

तेरसण्हं मासाणं छन्त्रीसण्हं पक्साणं तिण्णिसयं णन्त्रंराइ देयाणं ।
 १—पृष्ठ २ । २—पृष्ठ २६ ।

कहने पर 'इच्छं ! करेमिमंते॰ १ इच्छामि ठामि काउसगां जो मे सम्वत्स-रियो॰ कह एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदितु सूत्र संदिसाह्रं १ कहे । गुरु के 'संदिसावेह' कहने पर फिर एक खमासमण दे इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सम्बत्सरी सूत्र कहे १ गुरु के 'कहेह' कहने पर तीन णमोक्कार गिनकर वंदितु सूत्र बोछे ।

एक श्रावक तीन खमासमण दे भगवन् ! सूत्र भणूं ? कहकर 'इच्छं' कंहे और तीन णमोक्कार गिनकर 'वंदित्तु' सूत्र' बोले शेष सब श्रावक 'करेमि भंते॰ इच्छामि ठामि॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰' कह काउसग्ग में खड़े हुए या बैठे हुए सुनें। वंदिन् सूत्र के पूर्ण हो जाने पर 'णमो अरिह ताणं' कह काउसग्ग पार, खड़े होकर तीन णमोक्कार गिनकर बैठ जाए। पीछे तीन णमोक्कार तथा तीन करेमि भंते॰ बोलकर 'इच्छामि ठामि पहिक्कमिउं जो में सम्बत्सरियो॰' कह प्रगट वंदित्तु श्रूत्र बोलें । तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन! मूळ गुण उत्तर गुण विशुद्धि॰ निमित्तं काउसग्ग करूं ? गुरु के 'करेहं' कहने पर 'इच्छं' कह 'करेमि भंते॰' इच्छामि ठामि॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰' कहकर चालीस लोगस्स या १६०।१ णमोक्कारका काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्स कहे।तत्पश्चांत् बैठकर सम्बत्सरी मुंहपत्ति का पिडलेहण कर दो वन्दना देवे और इच्छा-कारेण संदिसह भगवन ! समाप्ति खामणेणं अन्भुहिओमि अन्भितर सम्व-त्सिरयं खामेउं ? कहे । गुरु के खामेह कहने पर 'इच्छामि खामेमि सम्ब-त्सरियं जं किंचि॰' कहे । फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सम्बत्सरियं खामणा खामूं ? कहें । गुरु के 'पुण्यवन्तो॰' कहने पर एक एक खमासमण तथा तीन तीन णमोक्कार चार बार बोलकर 'सम्बत्सरि समाप्ति खामणा 'खामेह' कहे । इच्छामो अणुसर्हि॰' बोले । पीछे गुरु के 'पुण्यवन्तो भाग्यवन्तो ! सम्बत्सरिय के निमित्त तीन उपवास, छ आयंबिल नव णिव्यि बारह एकासणें, छ हजार सज्झाय कर सम्वत्सरिय की पेठ पूरजो

१--पुष्ठ ३। २--पुष्ठ ७। ३--पुष्ठ ११।४--सम्वत्सरी।

तथा सम्बत्सरीके स्थान पर देवसी कहना' कहनेपर सब 'यथाशक्ति' कहे। पीछे दो बन्दना देकर सदैव की भांति देवसिक प्रतिक्रमण करे।

विशेषता इतनी है कि श्रुतदेवता का काउसग्ग करके 'कमल दल विपुल नयना॰' आदि श्रुतदेवी की थुइ कहे। फिर 'मुवण देवयाए करेमि काउसग्गं, अणत्य॰' कह के एक णमोक्कार का काउसग्ग पार कर 'ज्ञानादि गुण युतानां इत्यादि भुवन देवता की थुई कहें। बादमें क्षेत्रदेवता का काउसग्ग पार कर 'यस्या क्षेत्र समाश्रित्य॰' थुई कहें और 'बड़ा स्तवन' 'अजित शांति' बोले और पक्खी प्रतिक्रमण की तरह प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर गुरु से आज्ञा लेकर 'नमोऽईत्॰' पढ़ के एक श्रावक 'वृहद् शांति' बोले और शेष सब सुनें। फिर पूर्वोक्त रीति से सामायिक पार कर अन्त में दादाजी का स्तवन बोले।

#### आठ प्रहर पौषध विधि

पोसह के उपगरण छे उपाश्रय ( पौशाल ) में जावे । वहां अगर गुरु महाराज न हों तो सामायिक विधि के अनुसार स्थापनाचार्यजी की स्थापना करके गुरु बन्दन करे । तदनन्तर एक खमासमण दे 'इरियावहियं॰ र' तस्स उत्तरी॰ अणत्थ॰ का पाठ बोल, एक लोगस्स का काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स कहे। बाद एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन !पोसहलेवा मुंहपत्ति पिडलेहं ?' 'इच्छं' ऐसा कहकर मुंहपत्ति की पिडलेहणा करे । तत्पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह संदिसाहं ? इच्छं' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह ठाउं ? इच्छं' ऐसा कह एक खमासमण दे खड़ा हो जावे तथा हाथ जोड़, आधा अंग नमा तीन णमोक्कार गिनकर 'इच्छाकरण संदिसह भगवन् ! पसायकरी पोसह दंडक उच्चरावोजी' कह पोसह का पच्चक्खाण गुरु या चृद्ध श्रावक से या स्वयं ही तीन बार उच्चर ले ।

१—पुष्ठ ६। २—पुष्ठ २२।३—पुष्ठ ३।

#### पोसह का पचक्लाण

करेमि भंते ! पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ सरीर सक्कार पोसहं । सव्वओ बंभचेर पोसहं ? सव्वओ अव्वावार पोसहं । जावदिवसं अहोरत्तंवा पञ्जुवासामी, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, ण करेमि ण कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

किर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छें कह एक खमासमण दे मुंहपत्ति पडिलेहें। तब एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदि-साहूं ? इच्छं कहे । फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सामायिक ठाउं ? इच्छं' कह खमासमण दे खड़े होकर तीन णमोक्कार गिने । फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरि सामायिक उच्चरावोजी' बोलकर करेमिभंते॰ का तीन वार पाठ सुने या बोले तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसण्ं संदिसाहूं ? इच्छं', फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसण् ठाउं १, कहे । पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहूं ? इन्छं' तथा एक खमासमण दे 'इन्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सञ्झाय करूं ? इच्छें' कहकर खमासमण दे ग्दरें ही खड़े आठ णमोक्कार गिने । अगर शीतकाल में बस्त्र की आवश्यकता पड़े तो उसके लिये एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पांगरणूं संदिसाहूं ? इच्छें' कह फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन पांगरण्ं पडिगाहूं ? इच्छं' ऐसा कह वस्त्र ग्रहण करें पीछे एक खमासमण दें संदिसाहं ! इच्छं' और भगवन्! बहुवेछं 'इच्छाकारेण संदिसह एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेलं करूं ? इच्छं' इस प्रकार पौषघ लेकर पूर्वीक्त रीत्यानुसार अगर पहले न किया हो तो राई प्रतिक्रमण पूर्व विधि अनुसार करें । विशेष इतना है कि चार थुई के

१ प्रुप्ठ ३। २— प्रष्ट ८७।

作工作,不是工作工作,不是不是不是不是不是不是不是不是,他们是我们是这样的,他们是我们是这样的,我们也是我们的,我们也是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的, "不是是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个,我们就是我们的,我们就是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一个是一 देव वन्दन के बाद 'णमुत्युणं॰ ' कहे तथा एक खमासमण दे, 'बहुवेलं' का आदेश लेकर पीछे आचार्यजी मिश्र॰ इत्यादि कहे । प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर पडिलेहण की विधि करे।

#### पहिलेहण विधि

एक खमासमण देकर इरियावहियं॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्थ॰ कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहे । पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण संदिसाहूं ? इच्छं' । खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण करूं ? इच्छं' कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे । तदनन्तर एक खमासण दे इच्छाकारेण॰ अंग पडि-लेहण संदिसाहं ? इच्छं' फिर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ अंग पडिलेहण करूं ? इच्छं' कह घोती वगैरह पडिलेहें । फिर एक खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी पिङ्लेहण पिङ्लेहावोजी ? इच्छं' ऐसा कह 'स्थापनाचार्यजी' का 'शुद्ध खरूप धारे' पाठ सहित पिंडलेहणा कर उच्चस्थानपर विराजमान करे। पीछे खमासमण पूर्वक 'इच्छा-कारेण॰ उपिघ मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं' कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे । पीछे एक खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण॰ उपिघ पिडलेहण संदि-साहं १ इच्छं' । एक खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण उपिघ पडिलेहण करूं १ इच्छं' कह वस्र कम्बल आदि पडिलेहे । तदनन्तर पौषधशाला की प्रमा-र्जना कर विधि पूर्वक एकान्त में कूड़ा करकट रख दे। अन्त में खमा-समण दे 'इरियावहियं॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰ कह, एक छोगस्स का कागसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहे । पीछे खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण॰ सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं' कह फिर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ सज्झाय करूं ? इच्छं । कह तीन णमोक्कार गिन. 'उपदेशमाला' की सज्झाय पढ़े या सुने तथा फिर तीन णमोक्कार गिने ।

इसके अनन्तर अगर गुरु महाराज आदि विद्यमान हों तो उनको

विधि पूर्वक बन्दन करे। पीछे पञ्चक्खाण लेकर 'बहुवेलं का आदेश लेवे पीछे देवदर्शन करने के लिये जिन मन्दिर अवश्य जावे।

ेमन्दिर में जाकर इरियावहियं पूर्वक विधि सहित भाव से चैल-बन्दन करके पन्चक्खाण करे । जिनमन्दिर, उपार्श्रय, (पौशाल ) आदि से निकलते समय तीन दुफा 'आवस्सही' कहे तथा प्रवेश करते समय 'णिस्सिही' कहें । पीछे उपाश्रय में जाकर इरियावहियं॰ पिडक्कमे तथा स्वाध्याय या धर्मध्यान करे या व्याख्यान सुने । लघुनीति या बड़ीनीति परठनी हो तो प्रथम 'अणुजाणह जरसग्गहों' कहे पीछे तीन बार 'वोसिरें' बोलकर इरियावहियं॰ कहे । पौन प्रहर\* दिन चढ़नेपर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन उग्घाडा पोरसी करूं ? इच्छं' कहकर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन !' इरिया वहियं तस्सउत्तरी । अणत्य॰ कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहें। फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उग्घाडा पोरसी मंहपत्ति संदिसाहूं ? इच्छं' और एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उग्घाडा पोरसी मुंहपत्ति पडिलेह् ं १ इच्छें । ऐसा कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे । पीछे स्वाध्याय या ध्यान करे । जब काल वेला हो तो उपाश्रय या पौशाल में 'देव वन्दन' करें । जिनमन्दिर या

#### अथ देव वन्दन विधि

प्रथम एक खमासमण देवे। पीछे इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! शक्तस्तव भणूं? इच्छं। कह शक्तस्तव (णमुत्युणं) कहे। अनन्तर एक खमासमण दे 'इरियावहियं॰ तस्सउत्तरी॰ अण्णत्थ॰ कहकर एक लोगस्स॰ का काउसग्ग पार कर प्रगट लोगस्स कहे। पीछे तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन! चैत्यवन्दन करूं? इच्छं।'

सूर्योद्य से सवा दो घण्टे तक ।

क पूजापूज जाता पा कर के तो पांच उपवास के प्रायश्चित्त का भागी होता है, ऐसी शास्त्रोक्ति है।

१—वेब्ध ८।

कह चैत्यवन्दन करे फिर जं किंचि॰ णमुत्युणं॰ कहकर खड़ा हो जाये। अरिहंत चेइयाणं॰२ अणत्थ॰३ कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग 'णमो अरिहंताणं' पूर्वक पार 'नमोऽर्हित्सिदाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः' कहकर प्रथम थुई कहनी चाहिये । पीछे छोगस्स॰ तथा अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार दूसरी थुई कहे । पीछे 'पुक्खर वरदी वङ्गे०' सुअस्स भगवओ॰ अणत्य॰ कह एक णमोक्कार के काउसग्ग को सम्पूर्ण कर तृतीय थुई कहे। फिर 'सिन्दाणं बुद्धाणं०' वेयावच्चगराणं० तथा अणत्य॰' कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग सम्पूर्ण कर चौथी थई कहे फिर नीचे बैठकर णमुत्युणं कहे । फिर खड़े हो 'अरिहंत चेइयाणं क और अणत्य॰ पूर्वक एक णमोक्कार का काउसग्ग पार फिर प्रथम थुई कहे । बाद लोगस्स॰ सञ्चलोए॰ अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउ-सग्ग पार दूसरी थुई कहे पीछे पुक्खरवरदींं सुअस्स भगवओ० अणत्य० पूर्वक एक णमोक्कार का काउसग्ग पार तीसरी युई कहे बाद सिद्धाणं बुद्धाणं॰ वेयावचगराणं॰ अणत्य॰ पूर्वक एक णमोक्कार का काउसग्ग पार 'नमोऽर्हत्॰ कहे चौथी थुई बोलें। बाद नीचे बैठकर ण्मुत्युणं॰ से जयवीयराय॰ पर्ध्यन्त चैत्यवन्दन करे और अन्त में णमुत्युणं॰ कहें।

फिर बैठकर स्वाध्याय या ध्यान करे। अगर जल पीने की इच्छा हुई हो तो पच्चक्खाण पारने की विधि से पच्चक्खाण पार कर जल पीवे।

#### पचक्लाण पारने की विधि

प्रथम एक खमासमण दे 'इरियाबहियं॰ तरसउत्तरी॰ अणत्थ॰ कह कर एक छोगस्स॰ का काउसग्ग पार प्रगट छोगस्स॰ कहे । तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पारने की मुंहपत्ति पिडलेहूं १ इच्छं' कह खमासमण दे मुंहपत्ति का पिडलेहण करे । पिछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पारूं १ यथाइाक्ति' कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पारेमि १

少年午一十年代,年年在北京市中的大学和大学和大学和大学和大学和大学的大学的大学,在大学的大学,在大学的一个年代,年年一十年代,年年一年的一年,1911年,

१— वृष्ठ १। २—वृष्ठ ७।३—वृष्ठ ४।४—वृष्ठ ७।५—वृष्ठ ८।

in a transported for the contract of the contr

तहित्त ।' कह एक णमोक्कार मुद्दी बन्द करके गुणे। पीछे जो पच्चस्वाण किया हो उसका नाम लेकर पच्चक्खाण पारण गाथा पढ़े। पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं तीरियं, किट्टियं, आराहियं जं चण आराहियं तस्सिमच्छामि दुक्कड़ं' बोल एक णमोक्कार गुणे। बाद खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण॰ चैत्यवन्दन करूं? इच्छं।' कह 'जयउ सामिय॰' से 'जयवीयराय॰' तक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन कहे तथा क्षणमात्र खाध्याय कर पानी पीवे। पीछे आसन पर बैठकर दिवस चरिमं का पच्चक्खाण ले बाद इरिया वहियं॰ कहकर (आहार संवरण निमित्त ) चैत्यवन्दन करे।

यदि मलमूत्र की बाधा मिटाने जाना हो तो 'आवरसहि' पूर्वक निर्जीव भूमि में या स्थंडिल के पात्रमें जावे और 'अणुजाणहजरस गो' कह कर मलमूत्र परठे। पीछे प्राशुक जल से शुद्ध होकर तीन बार वोसिरामि कह 'मलमूत्र' वोसिरावे। पीछें 'णिस्सीहि' बोलते हुए "पौषधशालामें आवे और एक खमासमण देकर 'इरियावहियं॰' कहे। अनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् गमणागमणं आलोउं? इच्छं।' कहकर इस प्रकार गमणागमण आलोयणा करे। 'आवरसही करी, प्रासुक देसे जइ, संडासा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी। णिस्सीहि करी पौषधशाला में आवे। 'आवंति जंतीहं जं खंडियं जं विराहियं तस्सिमच्छामि दुक्कड़ं।' ऐसा कह बैठकर स्वाध्याय या ध्यान करे और दिन के चौथे पहर में संध्या पडिलेहण की विधि करे।

#### संध्या पडिलेहण विधि

प्रथम एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहु पिड पुण्णा पोरिसी ? इच्छें' बोल खमासमण दे 'इरियावहियं वित्सउत्तरी विभागत्य के कह एक लोगस्स को का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स कहें। तरपश्चात एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पिडलेहण करूं ? इच्छें' कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पौषधशाला

१—पृष्ठ ४। २—पृष्ठ ६। ३—पृष्ठ ३। ४-पृष्ठ ४।

का प्रमार्जन कर १ इच्छं। 'कह मुंहपित्तका पिडलेहण करे। फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपिडलेहण संदिसाहूं १ इच्छं। 'खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपिडलेहण करूं १ इच्छं। 'ऐसा कह आसन धोती आदि पिडलेहे और पौषधशाला की प्रमार्जना कर कूड़ा-करकट विधि पूर्वक एकान्तमें गेर दे और एक खमासमण दे 'इरियावहियं 'का पाठ कहे। तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पिडलेहण पिडलेहावोजी १ इच्छं' ऐसा कह 'शुद्ध स्वरूप धोरें को बोलते हुए स्थापनाजी की पिडलेहण कर उच्च स्थान पर विराजमान करे।

पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ उपिघ मुंहपत्ति पिडिलेहूं ? इच्छं' कह खमासमण देकर मुंहपत्ति का पिडिलेहण करें । बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं । फिर खमासमण दे 'इच्छा-कारेण॰ सज्झाय करूं ? इच्छं ।' कहकर एक णमोक्कार गुण उपदेशमाला॰ की सज्झाय कहे । पीछे णमोक्कार गिनकर पच्चक्खाण करे । यदि आहार किया हो तो दो वन्दना देकर पच्चक्खाण करे । अन्त में एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण उपिघ शंडिला पिडिलेहण संदिसाहूं ? इच्छं । खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ उपिघ शंडिला पिडिलेहण करूं ? इच्छं ।' खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ उपिघ शंडिला पिडिलेहण करूं ? इच्छं ।' खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ वेसणूं संदिसाहूं ? इच्छं ।' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण वेसणूं संदिसाहूं ? इच्छं ।' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण वेसणूं ठाउं ? इच्छं कहकर बैठे और बख, कम्बल, चरबला आदि का पिडिलेहण । उपवास करने वाला बस्नादि की पिडिलेहण कर कटिसूत्र और घोती॰ फिर पिडिलेहे । पीछे उच्चार प्रथ्रवण के २४ शंडिला पिडिलेहे ।

## चौबीस थंडिला पडिलेहण पाठ

- १ आगाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।
- २ आगाढ़े मञ्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

- ३ आगाढ़े दुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।
- ४ आगाढ़े आसण्णे पासवणे अणहियासे ।

१—पृष्ठ २।२--पृष्ठ ७५।३—पृष्ठ ६।४—स्त्रियां अपने २ वस्त्रों की पहिलेहणा करे।

५ आगाढ़े मज्झे पासवणे अणहियासे ।

६ आगाढ़े दुरे पासवणे अणहियासे ।

७ आगाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

८ आगाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

९ आगाढ़े दुरे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

१० आगाढे आसण्णे पासवणे अहियासे ।

११ आगाढ़े मज्झे पासवणे अहियासे ।

१२ आगाढ़े दूरे पासवणे अहियासे ।

१३ अणागाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१४ अणागाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१५ अणागाढ़े दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१६ अणागाढे आसण्णे पासवणे अणहियासे ।

१७ अणागाढ़े मज्झे पासवणे अणहियासे ।

१८ अणागाढ़े दूरे पासवणे अणहियासे ।

१९ अणागाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२० अणागाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२१ अणागाढ़े दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२२ अणागाढ़े आसण्णे पासवणे अहियासे ।

२३ अणागाढ़े मज्झे पासवणे अहियासे ।

२४ अणागाढ़े दुरे पासवणे अहियासे ।

इनमें से ६ थंडिले राय्या के दोनों तरफ दाहिनी ओर तीन और बायीं ओर तीन पडिलेहे। ६ थंडिले दरवाजे के भीतर दोनों तरफ दाहिनी ओर तीन और बायीं ओर तीन पडिलेहें। ६ थंडिले दरवाजे के बाहर दाहिनी और बायीं तरफ पडिलेहें और अन्तिम ६ जहां उच्चार प्रश्नवण की जगह हो वहां दोनों दाहिनी और बायीं तरफ पडिलेहें।

अब प्रतिक्रमण का समय हो गया हा तो प्रतिक्रमण करे। प्रति-

कमण में 'आजुणा चार प्रहर॰' पाठ के स्थान पर 'पोसह संध्या अतिचार बोले शेष विधि देवसिक के समान करे और खुद्दोपद्दव का काउसम्म किये बाद एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ सज्झाय खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ संदिसाहं इच्छं'। पुनः तीन णमोक्कार गुण करूं ? इच्छं'। ऐसा कह प्रतिक्रमण के बाद पहर रात तक स्वाध्याय या ध्यान करे । यदि लघुरांका करनी हो तो छघुरांका करे और वापस आकर 'मगवन बहु पडिपुण्णा पोरिसी ?' ऐसा कह 'इरियावहियं॰ का पाठ कहे। संथाराका समय होनेपर रात्रि संथारा करे।

#### रात्रि संथारा विधि

एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहु पडिपुण्णा पोरिसी? इच्छं' कह खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰, इरियावहियं॰ तरसउत्तरी॰ अणत्य॰ कह एक लोगस्सका काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहे । तद-नन्तर खमासमण दे 'इच्छाकारेण राई संथारा मुंहपत्ति पडिलेहूं इच्छं' कह मुंहपत्ति की पडिलेहणा करे । बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ संयारा संदिसाहूं ? इच्छं ।' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ राई संथारा ठाउं ? इच्छं कह पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्य-वन्दन करूं ? इच्छं । ऐसा कह चउक्कसाय॰३। णमुत्यूणं४ पूर्वक जयवी-यराय॰ पर्य्यन्त सम्पूर्ण चैत्यवन्दन कर भूमिका प्रमार्जन कर संथारा बिछा, शरीर का प्रमार्जन कर, संघारे पर बैठ राई संघारे का पाठ बोले ।

दो 'घड़ी रात्रि शेष रहते उठे और णमोक्कार मंत्र गिने । तदनन्तर खमासमण दे 'इरियाबहियं•६ तस्सउत्तरी• अणत्य•' कह एक छोगरस का काउसग्ग कर प्रगट छोगरस॰ कहे । पुनः खमासमण दे 'कुसुमिण दुसुमिण॰' का काउसग्ग कर राई प्रतिक्रमण करे। 'सातलाख' की जगह पोसह रात्रि अतिचार॰ का पाठ बोले । इस प्रकार सम्पूर्ण प्रतिक्रमण कर, पडिले-

६—विष्ठ ६०। ४-विन्द्र १। ३—विष्ठ ४१।४—विष्ठ १। ४ - वेस्ट्र १९। ६—विष्ठ ३। ०

हणके समय पूर्वोक्त विधिसे पिडलेहणा कर पौपधशाला का कचरा (कूड़ा) निकाल कर इरियावहियं कहे । दो खमासमण देकर सञ्झाय संदिसाहूं ? सञ्झाय करूं ? आदेश मांगकर, उपदेशमाला की सञ्झाय पढ़ कर पोसह पारे ।

#### पोसह पारने की विधि

खमासमण दंकर इरियावहियं॰ पहें। एक खमासमण दे 'इच्छाका-रेण संदिसह भगवन् पोसह पारूं ? यथाशक्ति।' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पासह पारेमि ? तहित्तं।' कह खमासमण दे दाहिना हाथ नीचे रख तीन णमोक्कार गिन, खमासमण देकर मुंहपित का पडिलेहण करे। पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारूं ? यथाशक्ति।' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह पारेमि।' 'तहित्त।' खमासमण देकर आधा अंग नमाकर तीन णमोक्कार गिनकर भयवंदसण्ण॰ का पाठ बोले। पीछे तीन णमोक्कार गिनकर उठ जाय।

## दिन सम्बन्धी चउपहरी पौषध विधि

आठ पहर पाषध लेने की विधि के समान ही चार पहर पाषध लेने की विधि है। पोसह 'दंडक उच्चरते समय 'चउपहरी पाषध' निम्नलिखित पच्चक्खाण करे।

## चउपहरी पौषध पन्चक्खाण

करेमिमंते पासहं आहार पासहं देसओ सन्वओ सरीर सक्कार पासहं सन्वओ बंगचेर पासहं सन्वओ अन्वावार पासहं सन्वओ चउविहं पासहे जावदिव संपञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं णकरेमि णकारवेमि तस्समंते पडिक्कमामि णिदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

बाद पूर्ववत् सामायिक छेवे। यदि प्रतिक्रमण गुरु के साथ न किया हो तो गुरु के पास आकर पौपध और सामायिक पूर्ववत

१—पृष्ठ ७५। २—पृष्ठ ३। ३—पृष्ठ १८।

सब विधि करे। पीछे आलोयण खामणा आदि निमित्त मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दणा देवे । बाद में 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? इच्छं', आलोएमि जो मे राइओ अइयारो॰र पाठसे राइअं आलोबे। पुनः एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अन्मृद्विओमि अन्मितर राइअं खामेउं ? इच्छं', खामेमि किंचि॰ रे का पाठ बोले आदि विधि पूर्वक गुरु को वन्दन करे। तदनन्तर गुरु से पच्चाक्खाण हो। पीछे दो स्वमासमण देकर बहुवेहं संदिसावे। एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण संदि-साहूं ? इन्छं', पुनः खमासमण दे 'इन्छाकारेण संदिसह भगवन पडिलेहण करूं ? इच्छं', कह मुंहपत्ति की पडिलेहण करें । पश्चात एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपिडलेहण संदिसाहूं ? इच्छं, पुनः एक समासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपिंडलेहण करूं ? इच्छें' कह उपिष मुंहपत्ति पडिलेहे । अनन्तर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदि-सह भगवन् प्रसायकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं' कह सब वस्त्रों की पिंडलेहण करे। बाद दो खमासमण पूर्वक सञ्ज्ञाय संदिसाहं १ और सञ्जाय करूं ? इच्छं कह 'उपदेशमाला १ की सज्झाय कहे या सुने। अन्तमें पिछले पहर पच्चाक्खाण करने के बाद एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपि पडिलेहण संदिसाहूं ? इन्छं' पुनः खमासमण दे 'इन्छाकारेण संदि-सह भगवन् उपिघ पडिलेहण करूं ? ऐसा कहकर पडिलेहण करे परन्तु थंडिला पद न कहे और न थंडिलों का पडिलेहण करें। रोष मब विधि आठ पहर पौषध विधि के समान है।

## रात्रि सम्बन्धी चउपहरी पौषध विधि

दिन के चउपहरी पोसह लेने वाले का अगर रात्रि पोसहका भी भाव हुआ हो तो वह संध्या का पडिलेहण तथा पचक्खाण करने के बाद दो खमासमण देकर पोसह लेवा <u>म</u>ुंहपत्ति पडिलेहे । तदनन्तर दो खमासमण दे

<sup>.</sup>पृष्ठ ६ । २---पृष्ठ ७ । ३-- पृष्ठ २ ।

instruction of the control of the co

पोसह का आदेश मांग कर तीन णमोक्कार गिन कर तीन बार पोसह दंडक उच्चरे। तदनन्तर सामायिक मुंहपत्ति का पिछलेहण कर पूर्वोक्त रात्रि संयारा विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे।

दिन का पौषध न किया हो और रात्रि का ही करना हो तो प्रथम सब उपगरणों की पिडलेहण कर इरियाविह्यं बोले। पीछे चडिव्वहार पन्चक्खाण करके दो खमासमण पूर्वक पोसह मुंहपित्त पिडलेहे। फिर दो खमासमण दे पोसह का आदेश मांग कर तीन णमोक्कार गिन कर तीन बार पोसह दंडक उच्चरे।

#### रात्रि चउपहरी पौषध पच्चक्खाण

करेमि भंते पासहं आहार पासहं देसका सव्वका सरीरसक्कार पासहं सव्वका वंभचेर पासहं सव्वका अव्यावार पासहं सव्वका चडिव्वहे पासहे जावक्रहोरिंच पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाएकाएणं णकरेमि णकारवेमि तस्स भंते पिकक्रमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इसके बाद सामायिक मुंहपत्ति का पिडलेहण कर पूर्वोक्त रात्रि संथारा विधि लिखी है, उसी तरह सब विधि करें। अन्त में पिडलेहण का आदेश मांगने के बाद अगर पिडलेहण न किया हो तो सब उपिष का पिडलेहण करें और सिर्फ दृष्टि पिडलेहें फिर उच्चार प्रश्रवण के चौवीस यंडिलों का भी पिडलेहण करें। शेष विधि पूर्ववत हैं।

는 보고 무섭하다면 보고 보다 보고 보고 되는 사람은 사람은 사람은 사람들이 되는 사람들이 되었다면 보고 되었다면 보고 보고 있다면 보고 있다면 보고 있다면 보고 있다. 그런 사람들이 보고 있다면 보고 있다.

## देसावगासिक छेने की विधि

प्रथम इरियावही॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰ कहे वाद में एक लोगस्स का काउसगा करे फिर लोगस्स॰ कहे। देसावगासिक लेवा मुंहपित पिडलेह्रं मुंहपित पिडलेहण करने के वाद इच्छामि॰ इच्छाकारेण॰ देसा-वगासि संदिसाह्रं इच्छं इच्छामि॰ देसावगासि ठाउं कह तीन णमोक्कार गिने इच्छं इच्छामि॰ इच्छाकारेण संदिसह भगवन पसायकरी देसावगासि

१--पृष्ठ३। २—पृष्ठ४।

क दंडक उच्चरावोजी देसावगासिकः दंडक तीन बार बोले। इसके बाद पूर्वोक्त सामायिक लेने की विधि करे।

## देसांवगासिक पारने की विधि

प्रथम इच्छामि॰ इच्छा॰ देसावगासिक पारवा मुंहपत्ति पडिलेहूं। फिर इच्छामि॰ इच्छा॰ देसावगासिक पारूं पुणोवि कायच्वो इच्छामि॰ देसावगासिक पारेमि 'तहत्ति' सामायिक पारने की विधिके अनुसार देसाव-गासिक पारे। देसावगासिक पारने की गाथा । पढे फिर तीन णमोक्कार गिने।

# तपगच्छीय विशेष विधियां

## सामायिक लेने की विधि

श्रावक श्राविका शुद्ध बस्त्र पहन, चौकी आदि उच्च स्थान पर पुस्तक या मालाको स्थापनकर भूमि प्रमार्जनके बाद आसन बिछा चरवला मंहपत्ति लेकर आसन पर बैठे । बायें हाथ में मुंहपत्ति को मुख के आगे रख दाहिने हाथ को स्थापना के सम्मुख कर एक णमोक्कार पढ कर पंचिदिय॰ सूत्र॰ उच्चरे। (अगर गुरु महाराज स्वयं विराजमान हों तो णमो-क्कार और पंचिदिय सूत्र की आवश्यकता नहीं । ) पीछे एक खमासमण देकर इरियावहियं॰५ तस्स उत्तरी॰, अणत्थ॰ बोल एक लोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग कर, 'णमोअरिहंताणं' कह पार कर प्रगट लोगस्त॰ कहे । पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामा-यिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहं १ इच्छं' कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाह इच्छं' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामा-यिक ठाउं १ इच्छं' कह खड़े हो, दोनों हाथ जोड़ कर एक णमोक्कार पढ़े और 'इच्छकारि भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी'

<sup>-</sup> पृष्ठ ८२ । २—पृष्ठ २ । ३—पृष्ठ ८२ । ४—पृष्ठ ५४ ।५—पृष्ठ ३ ।

कहे । बाद गुरु महाराज अथवा अपने से बड़े से करेमिमंते सुने अन्यथा स्वयं ही उचरे । पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणूं संदिसाहूं? इच्छं' कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणूं ठाउं? इच्छं कहे । पश्चात फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहूं? इच्छं' कह फिर खमासमण दे इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं? इच्छं' कहकर तीन णमोक्कार गुणे । दो घड़ी प्रमाद सेवन न करते हुए धर्मध्यान या खाध्याय करें!

#### सामायिक पारने की विधि

प्रथम खमासमण दे इरियावहियं०, तस्स उत्तरी०, अणत्थ०, बोल एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। तत्पश्चात एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन सामाथिक पारण मुंहपत्ति पिडिलेहुं ? इच्छं कहकर मुंहपत्ति की पिडिलेहणा करे। फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सामाइयं पारेमि ? यथाशक्ति' कहे। बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन सामाइअं पारिअं, तहत्ति' कह, दाहिने हाथको आसनपर या चरवलेपर स्थाप (रख) मस्तक झुकाकर, एक णमोक्कार गिने, 'सामाइय वयजुत्तो०र' सूत्र पढ़े। बाद सामाथिक सम्बन्धी मन, वचन और काया के ३२ दोषों की आलोचना कर, दाहिने हाथ को मुख के सम्मुख रख तीन णमोक्कार पढ़े।

#### राई प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम सामायिक छेवे। पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइअ पायिछत्त विसोहणत्यं काउसग्ग करूं ? इच्छं।' कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइअ पायिच्छत्त विसोहणत्यं करेमि काउसग्गं, अणत्य॰ १ एदकर चार छोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट छोगस्स॰ कहकर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन चैत्यवन्दन

१—पृष्ठ ३ । २—पृष्ठ ५४ । ३—पृष्ठ ४ ।

करूं १ इच्छं' कह जगचिंतामणिश चैत्यवन्दन से जयबीयराय॰ तक पढ़के अर्थात् 'इच्छामि॰, भगवानहं, इच्छामि॰ आचार्यहं, चार खमासमण इन्छामि॰ उपाध्यायहं, इन्छामि॰ सर्वसाधुहं' कहकर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण॰ सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं ।' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण॰ सज्झाय करूं ? इच्छं' कहकर 'भरहेसर की सज्झाय । कहकर एक णमोक्कार कहें । बाद 'इच्छकारि सुहराई॰' का पाठ कह 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राई पडिक्कमणो ठाउं ? इच्छं' कहकर दाहिने हाथ को आसन या चरवले पर रख 'सन्वस्सविराइय दुर्चितिय॰' पाठ कहे । बाद 'णमुत्थुणं॰' कह खड़ा हो, 'करेमि मंते॰ , इच्छामि ठामि॰ ५, तस्स उत्तरी॰ अणत्थ॰ , कह एक 'लोगस्स' का काउसग्ग पार प्रगट 'लोगस्स॰, सन्वलोए अरिहंत॰ अणत्य॰ कह एक 'लोगस्स का कायोत्सर्ग पार के 'पुक्खरवरदीवड्डे॰ सुअरस भगवर्ओ॰, बंदणवत्तियाए॰ अणत्य॰' पढ़कर अतिचार की आठ गायायें॰ अथवा आठ णमोक्कार का कायोत्सर्ग करके 'सिद्धाणं बुद्धाणं ०० कहे । पीछे तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दना॰ देवे । वाद 'इच्छाकारेण राइयं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ' पढ़कर सातलाख॰ १°, अठारह पापस्थान की आलोयणा कर 'सन्वस्सवि राइय॰ कह, बैठकर दाहिने घुटने को खड़ाकर 'एक णमोक्कार, करेमि-भंते॰, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ॰' कहकर वंदिनुः सूत्र पढ़े। पीछे दो वन्दना देकर 'इच्छाकारेण अच्सुहिओमि अन्भितर राइ्यं खामेउं ? इच्छं, खामेमि राइयं॰' पढ़कर दो वन्दना देकर, खड़े खड़े 'आयरिअ उवज्झाए॰, करेमिभंते॰ इच्छामि ठामि॰ तस्त उत्तरी॰ अणत्य॰ कह सोलह णमोक्कार का काउसग्ग पार, प्रगट लोगस्स॰ कहके, छंडे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेह कर दो वन्दना देवे । पीछे बैठकर 'सकल तीर्य॰' करके 'सामायिक चउवीसत्यो वंदन, पडिक्कमण, पञ्चक्खाण काउसग्ग पन्चवखाण किया है जी' कहे बैठकर 'इच्छामो अणुसर्हि॰, णमो

。 1911年 - 1912年 - 19

४- गुन्त ११। द मुन्त दा ६--गुन्त ६। १०--गुन्त ३।१२--गुन्त ४१। ६--गुन्त ४। १५--गुन्त ४१।

समासमणाणं , नमोऽहित । पढ़कर 'विशाललोचन दलं । पढ़ि 'णमुत्युणं , अरिहंत चेइयाणं । अणत्य । कह एक णमोक्कार का काउसगा पार 'कह्वाण कंदं । वे प्रथम युई कहे । बाद लंगरस , सव्वलोए अरिहंत । कह एक णमोक्कार का काउसगा पार दूसरी युई कहे । बाद 'पुक्तर वरदी बहु । सुअरस भगवओ करेमि । कह एक णमोक्कार का काउसगा पार दूसरी युई कहे । बाद 'पुक्तर वरदी बहु । सुअरस भगवओ करेमि । कह एक णमोक्कार का काउसगा पार तीसरी युई कहे और 'सिडाणं बुद्धाणं । वेयावच्चगराणं । अणत्य । कह एक णमोक्कार का 'नमोऽईत । पूर्वक काउसगा पार चतुर्य स्तृति कहे । पीछे वेठकर णसुत्युणं । पढ़कर चार खमासमण पूर्वक 'भगवानहं' इत्यादि को वन्दन करके, दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख 'अड्डाइड्जेसु' । बाद खमासमण देकर बायां घुटना खड़ाकर श्री सीमंधर स्वामी का चेत्यवन्दन, स्तवन, जयवीयराय पर्यन्त करे । पीछे 'अरिहंत चेइयाणं । अणत्य । पढ़, एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग 'नमो- ऽईत । पूर्वक पार श्रीसीमंधर स्वामी की युई कहनेके बाद सामायिक पार की विधि से सामायिक पार ।

## अथ देवसिक प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम सामायिक लेबे। पीछे मुंहपत्ति पिछलेहण कर दो बन्दना देवे। तिविहार उपवास हो तो मुंहपत्ति पिछलेह कर वन्दना न देवे। चउ-विहार उपवास हो तो पिछलेहण या वन्दना कुछ भी न करना। पश्चात् यथाशक्ति पच्चक्खाण करे। पीछे खमासमण देकर इच्छाकारेण॰ चंत्यवन्दन करें। पीछे 'जं किंचि॰' और 'णमुत्युणं॰' कह कर खड़े हो 'अरिहंत चेइयाणं॰', अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसम्म 'नमीऽईत॰' कह पार कर प्रथम थुई कहे। वाद प्रगट लोगस्स॰ कहके 'सञ्चलोए अरिहंत चेइयाणं॰, अणत्य॰ कहकर एक णमोक्कार का काउसम्म करें उसको पार कर दूसरी युई कहे। फिर 'पुक्खर-वर्रां।' कहकर मुअस्स भगवओं करेमि काउसम्म वंदण वित्याए॰ वर्रां।' कहकर मुअस्स भगवओं करेमि काउसम्म वंदण वित्याए॰

<sup>2-</sup> 명명 보는 | 국 - 5차 | 국 - 명단 국 3

अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग पार तीसरी थुई कहे । पीछे सिद्धाणं बुद्धाणं॰, वेयावच्चगराणं, अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग पार 'नमोऽर्हत् सिद्धा॰ पूर्वक चौथी थुई कहे । बाद लमा॰ भगवानहं, इच्छामि लमास॰ आचार्यहं, इच्छामि लमा॰, उपाध्या-यहं, इच्छामि लमा॰ सर्वसाधुहं' इस प्रकार चार खमासमण देने पर 'इच्छकारि सर्व श्रावक वन्दू' कह कर 'इच्छाकारेण देवसिय पडिक्कमणो ठाउं ? इच्छं' कह दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख को मुंहपत्ति सहित मुख के आगे रख सिर झुका 'सव्वस्सवि देवसिय॰' का पाठ पढ़े । बाद खड़ा होकर 'करेमि भंते' इच्छामि ठामि॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰' कह अतिचारकी आठ गाथाओं । का अथवा आठ णमोक्कार का कायोत्सर्ग कर प्रगट लोगस्स॰ कहे। तदनन्तर तृतीय आवश्यक मुंह-पत्ति की पडिलेहण कर दो वन्दना दे खड़े खड़े 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोउं ? इच्छं आलोएमि जो मे देवसिओ॰' कहे सात लाख॰ व अठारह पापस्थान॰ कहे । फिर 'सव्यस्सवि देवसिय॰' पढ नीचे बैठ दाहिना घुटना खड़ा करके 'एक णमोक्कार॰ करेमिभंते॰ इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइयारो॰' इत्यादि पढ़कर 'वंदिन्तु॰' सूत्र पढ़े। वाद दो वन्दना देवे । पीछे इच्छामि अन्भुहिओहं अन्भितर रू सूत्र दाहिना हाथ चरवले पर रख सिर नमा कर पढ़े। बाद दो वन्दना देकर खडे हो 'आयरिय उवज्झाए करेमिमंते॰ इच्छामि ठामि॰ तरस उत्तरी॰ अणत्य॰' कह दो लोगस्स का काउसम्म पार प्रगट लोगस्स॰ कहे। पीछे 'सब्ब-लोए॰ अरिहंत चेइयाणं॰ अणत्थ॰ कह कर एक लोगस्स या चार णमो-क्कार का कायोत्सर्ग करे । पीछे 'पुक्खरवरदी बड्डे॰ सुअस्स भगवओ करेमि काउसम्मं॰ बंद्णवित्याए॰ अणत्य॰' कह एक लोगस्सका काउसम्म करे । पीछे 'सिन्दाणं बुद्धाणं कह सुअदेवयाए करेमि काउसग्गं । अणत्य॰' पड्कर एक णमोक्कार का काउसग्ग 'नमोऽईत्॰' पूर्वक पार सुअदेवयाए०४

१—पृष्ट ५६ । २—पृष्ट ११ । ३—पृष्ठ २ । ४--सुअदेवया भगवई, णाणावरणीअ कस्म-नंघायं । तेसि स्रवेत्र सययं, जेसिसुअसायरं भत्ती ।

की धुई कहें । पीछ 'खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं अणत्य॰' पह एक णमोक्कार का 'नमोऽईत्॰' पूर्वक काउसग्ग पार 'जीसेखित्तसाहु॰' युई कहें । अगर श्राविकाएं हों तो 'यस्याक्षेत्रं समाश्रिख॰' थूई कहे । बाद णमोक्कार गुण बैठकर मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दा वन्दना देवे। वाद 'सामायिक चउवीसत्या वंदन पडिक्कमण काउसग्ग पचक्रहाण किया है जीं 'णमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्॰' कहकर 'नमोऽरत वर्धमानाय॰' पढे अन्यया स्त्रियां संसारदावा॰ की तीन युई पढ़ें। पीछ णमुत्यूणं॰ कहे वाद कमसे कम पांच गाथाका स्तवन पढ़े। फिर 'वरकनक॰' कह 'इच्छामि॰ भगवानहं इत्यादि चार खमासमण पूर्ववत् देवे । फिर दाहिने हाय को चरवले या आसन पर रख सिर झुकाकर अड्डाइञ्जेसु॰ पढ़े । फिर खड़ा होकर 'इच्छाकारेण॰ देवसिअ पायच्छित विसाहणत्यं काउसग्ग करूं इच्छं, देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्यं करेमि काउसग्गं । अणत्य॰ कह चार लोगस्स या सोलह णमोक्कार का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण॰ सञ्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? इच्छं कहे बाद् णमोक्कार पढ़कर सज्झाय कहे । अन्त में एक णमोक्कार पढ़ 'इच्छामि इच्छाकारेण॰ दुक्लक्लओ कम्मक्लओ निमित्त काउसग्ग करूं ? इच्छं, दुक्लक्लय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउसग्गं। अणत्य॰ पढ़, सम्पूर्ण चार लोगस्स या सोलह णमोक्कार का काउसग्ग 'नमे।ऽईत्॰' पूर्वक पार लघुशान्ति पढ़े पीछे प्रगट लोगस्स॰ कहे ।

पीछे सामायिक पारने के लिए खमासमण दे, इरियावहियं तस्स उत्तरी अणत्थ , एक लोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स कहे । वाद वैठकर 'चउक्कसाय णमुत्युणं पूर्वक जय-वीयराय' पर्यन्त चैत्यवन्दन कहे । पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण

<sup>\*</sup> जीसेवित्ते साहू दंसण, णाणेहिं चरणसिहयेहिं । साहंति मुक्खमगां, सा दंवी हरड दुरियाइं ।

१— प्रप्र २२ । २ प्रप्र २३ । ३— प्रप्र २३ । ४— प्रप्र २४ । ४— प्रप्र ४५ ।

सामायिक पारूं ? यथाशक्तिं इत्यादि सामायिक पारने की विधि से सामायिक पारे ।

#### अथ पक्ली प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम वंदिन् सूत्र तक तो दैवसिक प्रतिक्रमण की तरह विधि करनी चाहिये। चैत्यवन्दन में सकलाऽर्हत् और थुइयां स्नातस्या की कहना पीछे 'इन्छामि॰ देवसिअ आलोइय पडिक्कंता इन्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खी लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं, कह मुंहपत्ति पडिलेह कर दो वन्दना देवे । बाद इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्सुहिओहं संबुद्धा सामणेणं अन्भितरं पिक्सअं सामेउं ? इच्छं, सामेमि पिक्सयं, एग पक्लस्स पणरसण्हं दिवसाणं पणरसण्हं राईणं जं किंचि॰३ 'अपत्तिअं' कहे। फिर इच्छाकारेण॰ पिक्खअं आलोउं १ इच्छं, आलोएिम जो मे पिक्खओ अइयारो कओ॰ कह 'इच्छाकारेणे॰ पक्खी अतिचार आलोउं १ इच्छं कहकर वृहद् अतिचार॰ कहे। पीछे 'सव्वरसवित पक्खिय दुर्चिचतिय दुन्भासिय दुन्चिद्दिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, इच्छं तरस मिच्छामि दुक्कड़ं, इच्छकारि भगवन् पसायकरी पक्खिय तप प्रसाद करो जी' कहे। फिर 'पिक्लिय के बदलें एक उपवास, दो आयंबिल, तीन णिव्यि, एकासणें, आठ विआसणें और दो हज़ार सज्झाय कर पइंड पूरना जीं कहे । पीछे दो वन्दना ६ देवे । पश्चात् 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पत्तेय लामणेणं अन्मुहिओमि अन्भितर पिक्लअं लामेउं ? इच्छं, लामेमि पिनलयं एग पक्लस्स पणरसण्हं दिवसाणं पणरसण्हं राईणं जं किंचि अपत्तिअं॰ कहकर दो वन्दनां देवे । तदनन्तर 'पिक्खअं आलोइयं पिड-क्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पिक्खअं पिडक्कमुं १ 'इच्छं, सम्मं पडिक्कमामि कहकर करेमि भंते॰ इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पिक्लओ॰

श्र इस पाठ में देवसिअं, देवसिओ, देवसियाए की जगह पक्खी, चडमासी, सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में पिक्खयं, पिक्खयाओ, पिक्खयाए। चडमासिअं चडमासिओ, चडमासियाए। सम्बत्सरियं, सम्बत्सरियो, सम्बत्सरियाए कहना चाहिये।

४—<u>१८ ५२ १२ २—१४ ६०। ३—१८ २। ४—१८ २६।</u>४—<u>५८ ७० १६</u> १५—१८ ७० १० १<u>० १</u>८ १

是是,是一个人,是是一个人,也是是是他的人,他们们们,他们们们们是是是一个人,他们们们们们们的一个人,他们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们

कहें। पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदिनु सूत्र पढुं ? इच्छं, कह, तीन णमोक्कार गुण वंदिनु सूत्र पढ़कर सुअदेवया॰ की थुई बोल नीचे बैठे। तदनन्तर दाहिना घुटना खड़ा करके एक णमोक्कार करेमि भंते॰, इच्छामि पिडक्किमिउं जो में पिक्खओ॰' कह वंदिनु सूत्र कहें। बाद खड़े होकर करेमि भंते॰, इच्छामि ठामि॰ तस्स उत्तरी॰ अणत्य॰' कह बारह लोगस्स या ४८ णमोक्कार का कायोत्सर्ग करे। उसे पारकर प्रगट लोगस्स॰ पढ़कर, मुंहपत्ति को पिडलेह कर दो वन्दना देवे। पश्चात् इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खीसमाम खामणेणं अच्छिहिओमि अन्भितर पिक्खअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पिक्खअं एग पक्खस्स पणर-सण्हं दिवसाणं पणरसण्हं राईणं जं किंचि अपित्तअं कहे। बाद खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ संदिसह भगवन् पक्खी खामणा खामूं ? कह खमासमण दे दाहिना हाथ चरवले या आसन पर रख सिर झुका एक णमोक्कार पढ़े। इस रीति से चार दफा करे।

पीछे दैवसिक प्रतिक्रमण में बंदिन्तु के बाद की जो विधि शेष है वही कुछ विधि समझ छेना । 'ज्ञानादि गुणयुतानां॰' ३, 'यस्याः क्षेत्रं समा- श्रित्य॰' थुई कहें । स्तवन के स्थान में अजितशान्ति कहे । सज्ज्ञाय के स्थान में उवसग्गहरं॰ और संसारदावानल की चारों थुइ्यां कहे । और बड़ी शान्ति पढ़ें।

## चउमासी प्रतिक्रमण की विधि

चउमासी प्रतिक्रमण में कुल विधि पक्खी प्रतिक्रमण की तरह ही समझनी चाहिये। जहां जहां 'पक्खीं शब्द आया हो, वहां वहां 'चउ-मासी' शब्द कहना। चउमासी प्रतिक्रमण में चउण्हं मासाणं, अठण्हं पक्खाणं, विसोत्तरसय राइं दियाणं जं किंचि॰ कहना। और तप की जगह छट्टेणं कहे और दो उपवास, चार आयंबिल, छ णिळ्यि, आठ एकासणें, सोलह बिआसणें, चार हजार सज्झाय कहें। और बीस लोगस्स या ८०

१---पृष्ठ ३ । २ --पृष्ठ ४ । ३---पृष्ठ २२ । ४-- पृष्ठ १७ ।

णमोक्काः करे ।

साम्बस्सरी
समझना । जहां ज
शब्द कहे । इसमें बारः
सिंह राइंदियाणं जं किंदिः
तीन उपवास, छह आयः
बिआसणें और छह हजार सः
णमोक्कार का काउसग्ग करना ।

जिन दः
सर्व प्रथम स्वच्छ (पिवन्न) वस्त ६
जीकी सीढ़ियों पर पैर रखते ही 'णिस्सीः.
सावय व्यापार का निषेध होता है ) म.
सम्बन्धी ८३ आशातनाओं को टालते हुए
न प्रदक्षिणा दे भगवान के सम्मुख उपस्थिः.
क पर रख 'णमोजिणाणं' कहे तथा पुनः
सम्बन्धी आरम्भ का भी निषेध हो जाय । तः
र खेवे और चावल लेकर तीन ढेरी करें, साथिय
कारका ) चन्द्रमा बनावे तथा मुझे 'मीक्ष प्राप्त हः
चेध आदि मन्त्र सिहत उन ढेरियों पर चढ़ाकर
पीढ़िं कहे यहांसे द्रव्य कियाका भी निषेध हो
भेवे की चारों बकीरों को बारों गतिष्यं समक्ष कर नरकः
कारा पाने के किथे बीन ढेरियां ह्य समस्या हात समया
मीक गुणों को प्राप्त कर अधेवन्द्राकार वो सिह शिखा ६
भावना भावे । इसकिये भगवान के सम्मुख पहले साथः
' (सिह शिखा) वना कर व्यरोक भावना भावे ।

उत्कृष्ट चैत्यवन्दन करनेवाला प्रथम खमासमण देकर 'इरियावहियं॰' तस्स उत्तरी॰ अणत्थ॰ कह एक लोगस्सका काउसग्ग करे पार कर प्रगट लोगस्स॰ कहे ।

मध्यम चैत्यवन्दन में उपर्युक्त कायोत्सर्ग करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें केवल तीन खमासमण देकर बायां घुटना ऊंचा करके दोनों हाथ हृदय पर घर दशों अंगुलियों को मिला जयउसामि॰ से चैत्यवन्दन करे। पीछे जं किंचि॰ णमुत्थुणं॰ जावंति चेइआइं॰ कह एक खमासमण दे तद्नन्तर जावंत केविसाहू॰ उवसग्गहरं॰ जयवीयराय॰ अरिहंत चेइयाणं॰ तथा अणत्य॰ कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पार एक स्तृति बोले। फिर चमर डुलावे तथा एकाग्रचित्त और एकाग्र दृष्टि से प्रमु के अन्तरङ्ग गुणों से अपने गुणों की तुलना कर प्रमु के गुणों का चिन्तवन करे। अन्त में जिनमन्दिर से निकलते समय तीन बार 'आवस्सही' कहे।

# जिनराज पूजन विधि\*

प्रथम कही हुई रीति से मन्दिर का सर्व काम देख मुखशुद्धि कर स्नान करें। पीछे शुद्ध वस्त्र पहन एक पटके वस्त्र का उत्तरासन करें और उसी उत्तरासन की आठ तह कर नासिका का अग्रमाग ढक मुख को बांधे और निम्निलिखित सात प्रकार की शुद्धि करें।

प्रथम शुद्धि—घर, दुकान, व्यापार, धन, स्त्री, पुत्र आदि का चिन्त-वन न करना।

द्वितीय शुद्धि—सत्य वचन बोलना ।

तृतीय शुद्धि—शरीर, हाथ या दृष्टि से भी सावद्य (पाप ) व्यापार न करना और न दूसरे से कह कर कराना ।

चतुर्थ शुद्धि-कटा हुआ, फटा हुआ, मलमूत्रादि में धारण किया

अरिहन्त भगवान् की मूर्ति को चार निक्षेपों सिहत पूजना तथा मानना शास्त्रों में
 लिखा है। निक्षेपे चार होते हैं नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव।

१—पृष्ठ ३ । २—पृष्ठ ४ । ३--पृष्ठ ६ । ४--पृष्ठ ७ ।

हुआ सैकड़ों पेवन्द वाला तथा किसी भी निन्दनीय (काला, नीला) रङ्गका वस्त्र न पहने ।

पांचवीं शुद्धि-अशुचि पुद्रल रहित भूमि तथा पूजाकी सामग्री शुद्ध होनी चाहिये।

छठी शुद्धि—पूजा की सामग्री में लगाया गया धन भी न्यायो-पार्जित होना चाहिये।

सातवीं शुद्धि—(हड्डी) आदि उस जगह में न होनी चाहिये और विधिवत् पूजा करनी चाहिये । सूर्योदय होने के बाद ही पूजन करने का विधान शास्त्रों में है ।

> अंग वसन मन भूमिका, पूजोपगरण हों सार । न्यायद्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार ॥१॥ -

इस प्रकार शुद्धिकर मस्तक पर तिलक\* लगा पूजन की सामग्री को शुद्ध करे। प्रथम जलको जल शुद्धि मन्त्रसे 'ॐ आपो अप्पकाया एकेन्द्रिया जीवा निर्वद्या अर्हतः पूजायां निर्व्यथा सन्तु निष्पापा सन्तु सद्गतयः सन्तु नमोऽस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्ज्यने' इस मन्त्र को तीन बार पढ़ कर जल शुद्ध करे।

# केशर शुद्धि मन्त्र

ॐ आँ हीं कों अर्हतेनमः। इस मन्त्र से केशर शुद्ध करके प्रतिमाजी के नव अंग भेटने चाहिये।

पुष्पों को 'ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया एकेन्द्रिया जीवा

अनेन शासन में आचायों ने छ प्रकार के तिलकों का वर्णन किया है:— अर्थपुण्डूं त्रिपुण्डूं च त्रिकोण धनुपा कृति । बतुंछं चतुरस्त्रं च पड् विधं जैन शासने ॥१॥ अर्थ:—अर्थपुण्डूं (खड़ा तिलक) त्रिपुण्डूं (तीन लक्षीरोंयुक्त अर्थ चन्द्राकार) त्रिकोण (तीन कोनेवाला, त्रिभुजाकार) धनुप (धनुप की तरह) वर्तुंछं (गोल) चतुरस्त्रं (चार कोनों वाला) ये छ प्रकार के तिलक जैन शासन में वर्णित है।

<sup>&#</sup>x27; जिन प्रतिमा की पूजन चार अवस्था मानकर की जाती है—जन्मावस्था, राज्याव-स्था, दीक्षावस्था, केविहित्वावस्था। जन्मावस्था में जल, चन्द्न, पुप्प आदि से पूजन होती है। राज्यावस्था मे अक्षत, तैवेद्य, फल, वस्त्र आदि से पूजन होती है इन पूजाओं को द्रव्य पूजन कहते हैं। दीक्षावस्था तथा केविहित्वावस्था में भाव पूजा ही श्रेष्ठ मानी गई है।

निर्वद्या अर्हतः पूजायां निर्व्यथा सन्तु निष्पापाः सन्तु सद्गतयः सन्तु नमोऽस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्ज्यने' इस मन्त्र से पुष्प शुद्ध करना । धूप को 'ॐ अग्नयो अभिकाया एकेन्द्रिया जीवा निर्वया अर्हतः पूजायां निर्व्यथा सन्तु निष्पापाः सन्तु सद्गतयः सन्तु नमोऽस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्ज्यने' इस मन्त्र को तीन बार बोले तथा धूप शुद्ध करें ।

इस प्रकार अष्ट द्रव्य सहित मूळ गम्भारे में प्रवेश करके प्रभु पूजन को छोड़ शेष सब कामों का निषेध करे। फिर प्रभु को धूप देवे। फिर प्रभु के ऊपर से बासी पुष्प उतार मोर पिच्छी से प्रमार्जन करे। फिर दृध से स्नान करा, खस कूची से धीरे धीरे केशरादि अवशिष्ट द्रव्य उतारे। फिर जळ से स्नान कराते समय ये श्लोक कहे:—

## जल पूजा

विमल केवल भासन भास्करं, जगति जन्तु महोदय कारणम् । जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमन स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ अथवा

गंगा\* नदी पुनि तीर्थ जल से, कनक मये कलशे भरी, निज शुद्ध भांवे विमल भासे, न्हवण जिनवर को करी। भव पाप ताप निवारणी, प्रभु पूजना जग हित करी, करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्चय मन घरी॥ ॐ हीं श्रीं परम परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत् जिनेन्द्राय जलं यजामहे खाहा॥

'हे भगवन आपको स्नान कराने से मेरा कर्मरूपी मैल दूर हो' इस प्रकार चिन्तवन करते हुए पीछे तीन अंगलूहणोंसे प्रभुजी का देह (शरीर)

अप्रमुको गङ्गा, जमुना, गोदावरी, प्रयाग, नर्भदा, सिन्धु आदि वहती हुई निद्योंके जलसे स्नान कराना चाहिये इसके अलावा कुओं का जल भी शुद्ध माना गया है। केशर, कप्रादि सुगन्धित चीजों से मिश्रित जल फास् हो जाता है प्रतिमाजी पर पूजन के समय प्राशुक (फास्) जल ही चढ़ाना उचित है।

पोंछे । अंगलृहणा करके केशर, अम्बर, करतूरी मिश्रित चन्द्रन की कटोरी हाथ में ले इस प्रकार ख्लोक कहे :—

## चन्द्न पूजा

सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं । विनय कुंकुम<sup>ा.</sup> दर्शन चन्दनंः, सहजतत्व विकाश कृतर्चये ॥२॥ अथवा

सरस चन्दन घसिह केशर, भेटी मांही बरास कां, नव अंग जिनवर पूजते, भिव पूरते निज आसकाे ॥ भव पाप ताप निवारणी, प्रभु पूजना जग हित करी । करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्रय मन धरी ॥

A PROPERTY OF A CONTRACTOR CONTRACTOR OF A CONTRACTOR OF A CONTRACTOR AND A CONTRACTOR OF A CONTRACTOR OF A CO

ॐ हीं श्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत् जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे खाहा ॥

"है भगवन आप की चन्दन पूजा करने से जैसे चन्दन शीतल होना है, वैसे ही काम कोधादि ताप से मेरा चित्त शीतल हो।" इस तग्ह शुभ भावना भाते हुए नव अंगों को भेटे तथा प्रत्येक अंग पर दोहा बोले।

अंग्ट पर—जलभरी संपूट पत्र में, युगलिक नर पूजन्त । ऋपभ चरण अंग्टड्रॉ, देव भवजल अन्त ॥१॥

जान (घुटने) पर—जानु वले काउसग्ग रहे, विचरखां देश विदेश । खड़े खड़े केवल लिया, पूज़ं जानु नरेश ॥२॥

पोंचों पर—लोकान्तिक वचने करी, दीया वरसी दान।

करकंडे प्रभु पूजना, पूजूं भिव बहुमान ॥॥
कंघों पर—मान गया दोनुं अंश से, देखी वीर्य अनन्त।

मुजाबले भवजल तरया, पूजूं खंघ महन्त ॥॥
मस्तक पर—सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकान्ते भगवन्त।

विसया तेणे कारण भवी, शिर शिखा पूजन्त ॥॥
ललाट पर—तीर्थङ्कर पद पुण्य से, त्रिभुवन जन सेवन्त।

त्रिभुवन तिलक समी प्रभु, भाल तिलक जयवन्त॥॥
कण्ठ पर—सोल प्रहर प्रभु देशना, कण्ठे विवर वर तूल।

मधुर ध्विन सुर नर सुणे, तिण गले तिलक अमूल॥॥
हृद्य पर—हृद्य कमल उपशम बले, जलाया राग ने रोष।

हीन दहे वन खंडने, हृद्य तिलक सन्तोष॥८॥
नामि पर—रत्नमयी गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम।
नामि कमल नी पूजनां, करतां अविचल धाम॥९॥
तदनन्तर पुष्प हाथ में लेकर ये श्लोक कहे—

#### पुष्प पूजा

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमैः, विशद चेतन भाव समुद्भवैः ।

सुपरिणाम प्रसून घनैनेवैः, परम तत्व मयं हि यजाम्यहम्॥३॥

सुरिम अखंडित कुसुम\* मोगरा, आदि से प्रभु कीजिये ।

पूजा करी शुभ योग तिग, गति पञ्चमी फल लीजिये ॥

ॐ हीं श्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय श्रीमत् जिनेन्द्राय पुप्पं यजा महे खाहा ।

और "हे प्रभु मुझको पुष्प पूजा करने से ज्ञानाचार, दर्शनाचार,

<sup>\*</sup> पुष्प कटे न हों, ख्रिदे न हों, सूचे हुए न हों, सड़े हुए न हों, गले न हों, सूए सुइयों से पिरो कर गजरे न हार बनाये हुए न हों, हाथ से तोड़े हुए न हों, कमर और सूड़ी के नीचे लटकते हुए भी न हों, और शुद्ध सुगन्धित वाला ही पुष्प प्रतिमाजी पर चढ़ाना उचित है।

चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार आदि पञ्चाचार की प्राप्ति हो।" ऐसा चिन्तवन करते हुए पुष्प चढ़ावे। तदनन्तर धूप इस क्लोक से खेवे।

## धूप पूजा

सकल कर्म महेन्धन दाहनं, विमल संवर भावसुधूपनम् । अशुभ पुद्रल संगविवर्जनं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षतः ॥४॥ अथवा

दशांग धूप<sup>†</sup> धुखाय के, भिव धूप पूजा से लिये। फल ऊर्द्धगित सम धूप दे, निज पाप भव भव के लिये॥ ॐ हीं श्रीं परमपरमात्मने॰ धूपं यजामहे स्वाहा। कह जिस तरह धूप का घुंआ उड़ता है उसी तरह भगवन्! मेरे पाप कर्म भी दूर हो जावे।" ऐसी भावना भाते हुए धूप करे। पश्चात दीपक प्रज्वलित करके निम्न इलोक पढ़े।

## दीप पूजा

भविक निर्मल बोध विकाशकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनम् । सुगुण राग विशुद्धि समन्वितं, दधतु भाव विकाश कृते जनाः ॥५॥ अथवा

जिन दीप के परकास के, तम चौर नासे जानिये।
तिम भाव दीपक णाण से, अज्ञान नास बखानिये॥
ॐ हीं श्रीं परम परमात्मने॰ दीपं यजामहे स्वाहा कहे "जिस
तरह ये दीपक प्रकाशमान है उसी तरह मेरा ज्ञान रूपी दीपक भी प्रकाशमान हो।" ऐसी भावना भाते हुए प्रभु के दाहिने तरफ दीपक रखे।
फिर अक्षत\* हाथ में लेकर ये क्लोक पढे—-

### अक्षत पूजा

सकल मङ्गल केलि निकेतनं, परम मङ्गल भाव मयं जिनं। श्रयति भन्यजना इति दर्शयन्, दघतु नाथ पुरोऽक्षत स्वस्तिकम्॥६॥

<sup>ी</sup> कृष्णागर सगमदतगर, अस्वर तुरग लोवान । मेल सुगन्य घन सारघन, करो जिनने धृपदान ॥ अअक्षत (चावल ) टूटे हुए नहीं होने चाहिये ।

#### अथवा

शुभ द्रव्य अक्षत पूजना, स्वस्तिक सार बनाइये। गति चार चूरण भावना, भिव भाव से मन भाइये॥ ॐ हीं श्रीं परमपरमात्मने॰ अक्षतं यजामहे स्वाहा कहे "हे भगवन् मुझे अक्षत पूजा से शुक्क ध्यान की प्राप्ति हो।" ऐसा चिन्तवन करते हुए प्रभु के आगे चढ़ावे।

तदनन्तर नैवेद्य घाल में रख ये मन्त्र पढ़े-

# नैवेद्य पूजा

सकल पुद्रल संग विवर्जनं, सहज चेतन भाव विलासकम् । सरस भोजन नव्य निवेदनात, परम निवृत्ति भावमहं रपृहे ॥॥ अथवा

सरस मोदक आदि से भरी, याली जिनपुर धारिये। निवेंद गुणधारी मने, निज माबना ज निवारिये॥ ॐ हीं श्रीं परमपरमात्मने॰ नैवेद्यं यजामहे स्वाहा। कहते हुए "हे भगवन मुझे मुक्ति पद हासिल हो।" ऐसी भावना भाते हुए नैवेद्य चढ़ावे। तत्पश्चात् सुपारी, बादाम फलादि अथवा वर्त्तमान ऋतु के शुद्ध फल हाथ में ले ये मन्त्र पढ़े—

,这个人,这个人,我们也是一个人,我们是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也会是一个人,

## फल पूजा\*

कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक फल वजहाँकिनम् । विहित मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिन्द्र फलाय महाजनाः ॥८॥ अथवा

फल पूर्ण लेने के लिये, फल पूजना जिन कीजिये। पण इन्द्र दाती कर्म वामी, शाश्वता पद लीजिये॥ ॐ ह्वीं श्रीं परम परमात्मने॰ फलं यजामहे स्वाहा। ऐसा कहते हुए

<sup>\*</sup> फल सड़ा, गला, चलित रसबाला नहीं चढ़ाना चाहिये। सुस्वादु सुन्दर फल ही चढ़ाना चाहिये।

"हे भगवन मेरे आठों कमों का नाश हो और मुझे मुक्ति पद हासिल हो।" ऐसा चिन्तवन करते हुए फल चढ़ावे तथा सात बत्ती की आरती करे।

ऐसा कह पूर्ववत् चैत्यवन्दन करे और तीन बार आवस्सिहि कह कर घर जावे।

## श्री जिनमन्दिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाएं

१ श्री जिनमन्दिर में खांसना ( कफ़ गिराना )। २ जुआ खेळना ( गंजीफा, चौपड़ तारा, शतरंज खेलना ) । ३ कलह क्लेश ( झगड़ा ) करना । ४ धनुष आदि की कला सीखना । ५ कुछा करना । ६ दांत का मैल गिराना । ७ पोन खाना । ८ पान का पीक थूकना । ९ गाली देना । १० टट्टी पेशाब करना । ११ हाथ पैर धोना । १२ फोड़े का ( खुरण्ड<sup>क</sup> ) चमडा उतारना । १३ कंघे से बालों को बाहना । १४ नख कतरना । १५ रुधिर ( खून ) गिराना । १६ मोजन करना ( मिठाई, फल वगैरह खाना )। १७ औषधि ( दवाई ) खाकर पित्त गिराना। १८ वमन या उल्टी करना । १९ दांत गिराना । २० हाथ पैरों में तेल की मालिश करवाना । २१ घोडा हाथी आदि चार पांव वाले जानवरों को बांधना । २२ आंख का मैल (गीड ) गिराना । २३ नख का मैल निकालना । २४ गाल का मैल गिराना । २५ नाक का मैल निकालना । २६ माथे का मैल गिराना। २७ शरीर का मैल गिराना। २८ कान का मैल निकालना तथा निकलवाना । २९ भूत, प्रेत, काचाकलुआ, वशीकरण मन्त्र आदि साधन करना । ३० विवाह, सगाई आदि करने के लिये पञ्चायत इकडी करना । ३१ व्यापार, छेन, देन का हिसाब करना । ३२ मन्दिर की दिवाल में गोवर के कण्डे थापना या गोवर का ढेर करना । काम बांट देना । ३४ भाई प्रमुखों को धन बांटना । ३५ घर का खजाना राजा, चार आदि के भय से मन्दिरजीमें रखना । ३६ पैर पर पेर चढाकर

<sup>&</sup>quot; फोड़े या फुल्सी के सूखे हुए चमड़े को खुरण्ड कहते हैं।

तथा आसन\* बिछा कर बैठना । ३७ चक्की से दाल दलना । ३८ पापड़ आदि सुखाना । ३९ बड़े आदि बनाना तथा हरे साग वगैरह सुखाना । ४० राजा, भाई, लेनदार के भय से दौड़कर मूल गम्भारे में छिप जाना। ४१ पुत्र स्त्री आदि परिवार में से किसी के मर जाने पर शोक करना। ४२ स्त्री कथा, देश कथा, राज्य कथा, भोजन कथा ये चार विकथा करना । ४३ गन्ने (पौण्डे ) को कतरना तथा शस्त्र बनाना या बनवाना । ४४ सर्दी को दूर करने के लिये अग्नि तापना । ४५ घान आदि पकाना । ४६ रुपये रखना । ४७ जेवर रखना । ४८ विधि से णिस्सीहि नहीं कहना । ४९ छतरी, छड़ी(लकड़ी,बेंत) तलघार आदि अस्त्र शस्त्र अन्दर लेजाना। ५० जूता, मोजे (जुरीव) पहने हुए अन्दर जाना । ५१ राजा पर डुलानेके चमर अन्दर ले जाना । ५२ मन को एकाग्र चित्त में नहीं रखना । ५३ हाथ-पैर दबाना तथा दबवाना । ५४ पुष्पोंकी मालाको पहने हुए अन्दर जाना । ५५ हार मुद्रा, कुण्डल पहने हुए अन्दर जाना । ५६ भगवान् के सम्मुख जाने पर दर्शन वन्दन नहीं करना । ५७ एक साड़ी का उत्तरासन न करना । ५८ मुकुट पहने हुए भगवान के सम्मुख जाना । ५९ विवाह शादी में तुर्राआदि पहने हुए अन्दर जाना । ६० फूलों के सेहरा शिर पर रखना । ६१ नारियल आदि फलों का छिलका गिराना । ६२ गेंद खेलना । ६३ पिता या सम्ब-न्धियों से नमस्कार करना। ६४ हंसी दिल्लगी करना। ६५ खोटे वचन कहना । ६६ धन पदार्थों को लेने के लिये हठ करना। ६७ युद्ध, (लड़ाई) करना । ६८ गीले बालों को सुखाना। ६९ पद्मासनसे बैठना। ७० खड़ाऊ आदि पहनना । ७१ पैर पसारना । ७२ सुख के वास्ते सिगरेट, बीड़ी, तम्बाक्र खाना तथा पीना। ६३ शरीर को घोकर गन्दा उठाना। ७४ पेर की धूळी झाड़ना। ७५ मैथुन काम क्रीड़ा करना। ७६ मस्तक या कपड़ोंमें से जयें निकालकर जमीनपर गिराना। ७७ भोजन जीमना। ७८ स्त्री पुरुपी

अ गादीके मान के लिये श्रीपूज्य जी गहाराज आसन विद्याते हैं उसपर वे स्वयं नहीं बैठ सकते बल्कि ओघा रख सकते हैं। गुजरात देश के रहने वाले माधु लोग मन्दिरों में आसन विछा कर बैठते हैं। यह प्रथा शास्त्र से विपरीत तथा उपरोक्त आशातना की सूचक है। 

के गुप्त चिन्हों को ख़ूला रखकर बैठना । ७९ वैद्यक करना । बट्टे तथा ब्याज का काम काना । ८१ विस्तर ( शस्या ) बिछाकर सोना। ८२ पीने के वास्ते घड़े में पानी रखना। ८३ मन्दिर पर पतनाला गिराना। ८४ साबन आदि से स्नान करना ।

ऊपर लिखी हुई चौरासी आशातनाओंमें से कोई भी आशातना जिनमन्दिरमें अथवा जिनमन्दिर के स्थान में नहीं करनी चाहिये।

# गुरु महाराज की तेतीस आशातनाएं

१ गुरु महाराज के आगे बैठना ।

२ गुरु महाराज के आगे खडे रहना ।

३ गुरु महाराज के आगे चलना ।

४ गुरु महाराज के नजदीक में बैठना ।

५ गुरुओं के पीछे खडा रहना ।

६ गुरुओं के आगे होकर चलना।

७ गुरुओं के दोनों ओर पास में बैठना ।

८ गुरुओं के बराबर चलना ।

९ गुरुओं की नकल करते हुए चलना।

,这种,这种,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们也不是一个人,他们也不是一个人,我们也不是一个人,他们也不是一个 मन्दिरों में मूळ गम्भारा समवसरण का रूपक माना गया है। इसमें तीर्थेंद्वर भग-वान की प्रतिमा की विराजमान कर पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपातीत अवस्थाओं को मान कर ही पूजन की जाती है। पिण्डस्थ अवस्था के तीन भेद होते हैं। जन्मावस्था, राज्यावस्था, अस-णावस्था । जन्मावस्था में अंग पूजा की जाती है। अंग पूजा में पश्चामृत, जल, अंगलहण, केरार. पुष्प। राज्यावस्था में अग्रपूजा की जाती है। अग्रपूजा में अक्षत, नेवेदा, फल, अर्घ, वस्त्र, आरती। श्रवणावस्था में केवलज्ञान प्राप्त होने के वाद पदस्य अवस्था होती है। इसमें भाव प्जा होती है। भावपूजा में जिन भगवान् के गुणातुवाद ही करने चाहियें। निरक्षन, निरा-कार, ज्योति स्वरूपः सिद्धावस्था को रूपातीत अवस्था कहते हैं।

यह पूजन विधान आद्धदिनकृत्य और देववन्दन भाष्य मे है। महाकल्प में ऐसी आता है, शक्ति होने हुए साधु यदि जिन मन्दिर में दर्शनार्थ नहीं जावे तो तेंट ( तीन उपचास ) का दण्ड रुगता है। श्रावक यदि शक्ति होते हुए जिन मन्दिर में दर्शनार्थ नहीं जावे तो वेळ ( दो उपवास ) का दण्ड समता है।

१० गुरुओंके साथ थंडिल (शौच स्थानमें) जाना और उनसे आगे आना।

११ गुरुजी के साथ बाहर से आये हुए शिष्य गुरुजी से पहले मार्ग के दोषोंकी आलोचना करे।

१२ रात्रि में गुरुजी पूछें और बुलावें कि कौन सोया और कौन जागता है और आप जागते हो तदिप "में जागता हूं" ऐसा न कहना।

१३ उपाश्रय में श्रावक आवें. उनसे गुरुजी या अपनेसे बड़े पद बालों के बुलाने से पूर्व बातचीत प्रारम्म करे। ( इसमें गुरुजी और उन्च-पद धारियों की आशातना होती है )।

१४ आहार लाकर अपने गुरुजी को आहार बिना दिखलाये ही दूसरे साधुओं को दिखळाना ।

१५ आहारादिका निमन्त्रण गुरुजीको न करके दूसरोंको पहले करना।

१६ गुरुजीके बिना पूछे दूसरे साधुओंको आहारका निमन्त्रण देना।

१७ गुरुओं को बिना पूछे दूसरों को आहार देना ।

१८ सरस और स्वादिष्ट आहार स्वयं खाना, गुरुओं को न देना।

१९ गुरुओं के बचन सुनकर उत्तर न देना।

२० गुरुओं के सम्मुख कोई माननीय पुरुष बातचीत करते हुए बुलावें तो भी कठोर बचनसे उत्तर देना या उनकी अवज्ञा करना ।

२१ गुरुओं ने अपने पास बुलाया हो तो भी आसन पर बैठे ही बैठ उत्तर देना, पास में नहीं आना।

२२ गुरुओं ने पूछा हो तो भी बैठे ही बैठे, क्या आज्ञा है, इस प्रकार बोलना ।

२३ गुरु अथवा बड़ोंके साथ असभ्यतापूर्ण वचनोंसे पुकारना ।

२४ गुरु बोल्टें उसी प्रकार अविनय से उत्तर देना ।

२५ जब गुरु किसी साधु साध्वी अथवा रोगी की सार सम्भाठ के लिये आज्ञा देवें तव गुरुजी को कहे कि आप ही सार सम्भाल कीजिये. ऐसे कट वचन बोल कर अवज्ञा करना।

२६ जब गुरु धर्म कथा कहें तब शून्य चित्त से सुने, कदाचित् ध्यानसे सुनकर उनका मान न करे ( अहा ! गुरुजी आप शास्त्रके परमार्थ क्या बतलाते हैं धन्य हैं ) ऐसा कहना चाहिये किन्तु नहीं कहना ।

२७ गुरु जब धर्म उपदेश देवें तब बोले कि इसका अर्थ आप बराबर नहीं करते हैं अथवा आपको इसका अर्थ करना नहीं आता है।

२८ गुरु जो कथा फरमाते हों उस कथा को बीच में ही भंग करके आप दूसरोंको अथवा सुनने वालों को कथा कहना और समझाना।

२९ गुरु जो कथा कहते हों उस कथा से गुरुओं तथा सब सजनों को आनन्द प्राप्त हो रहा हो और चित्त लीन हो गया हो, ऐसा जानते हुए भी शिष्य बोले कि महाराजजी! गोचरी का समय हो गया है इसलिये कथा छोड़िये, नहीं तो गोचरी मिलनी दुर्लभ हो जायगी।

२० गुरुजीने जो अर्थ बतलाया हो वही अर्थ व्याख्यान बन्द हो जानेके बाद शिष्यवर्गोंके सम्मुख अपनी बुद्धिकी निपुणतादिखानेकेलिये व्याख्यानदेना।

作品,在一个人,在一个人,是一个人,是一个人,是一个人,是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们

३१ गुरुओं के संथारे का या गुरुओं के पांवों से पांव का स्पर्श हो जाय तो शीघ्र क्षमा न मांगना।

२२ गुरुओं के आसन पर खड़ा रहना या सोए रहना । २२ गुरुओं से ऊंचे स्थान या बराबर आसन पर बैठना \*।

## गुरु वृन्द्न विधि

बराबर गृहस्थ के योग्य शुद्ध कपड़े पहन गुरु के पास जावे। दर्शन होते ही 'मत्थएण वंदामि कहना'" बाद में गुरु से कम से कम साढ़े तीन हाथ दूर रहे। प्रथम तीन खमासमण देवे और बाद में खड़े खड़े इच्छकार बोले और अब्सुद्धिओमि 'इच्छं खामेमि देवसियं' तक का पाठ बोले। तदनन्तर नीचे बैठ मस्तक नमा कर जीमना (दिहना) हाथ भूमि पर स्थापन कर बायें हाथ की मुद्धी बांध मुख के पास रख शेष अब्सुद्धिओमि सूत्र पूर्ण करे। पीछे यथाशक्ति पच्चक्खाण करे।

१—पृष्ठु २। २—अगर प्रातःकाल हो तो 'राइबं' कहे।

<sup>\*</sup> उपर्युक्त आशातनाओं में से कोई भी आशातना नहीं करनी चाहिये।

## सर्व तपस्या ग्रहण करने की विधि

प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी शुभ मुहूर्त्तमें अच्छे वस्त्र पहन कर गुरुके पास जावे। गुरुजी को वन्दन करके ज्ञान पूजा\* करे। तदनन्तर गुरु के मुख से (ओठी तप) अथवा जिस तप का भी निश्रय किया हो ग्रहण करे तथा इरियावहियं॰ पिडक्कमे। फिर एक छोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट छोगस्स कहे। फिर नीचे बैठ के तप आराधन करनेके निमित्त मुंहपित्त का पिडिलेहण करे। पीछे दो वन्दना देकर स्थापनाचार्यजी को खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन (ओछी तप) या जो तप निश्चित किया हो सो बोछे "गहणत्यं चेइयं वंदावेह" १ इच्छं कह चैत्यवन्दन करे। णमुत्युणं॰ पूर्वक अरिहंत चेइयाणं॰ सम्पूर्ण पढ़ अणत्य॰ कह एक एक णमोक्कार का चार दफा ध्यान करे तथा थुइयां कहे। फिर नीचे बैठ के प्रगट णमुत्युणं॰ कहे। पीछे खड़े हो "शान्तिनाथ खामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं॰" अणत्थ॰ कह एक छोगस्स का काउसग्ग पार के निम्न थुई कहे।

श्री मते शान्तिनाथाय । नमश्शान्ति विधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । मुकुटाम्यर्चितांघ्रये ॥१॥

पुनः "शान्ति देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं॰" अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार "शान्तिः शान्ति करः श्रीमान, शान्ति दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्ग्रहे गृहे ॥२॥"की थुई बोले ! पश्चात् "श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अणत्थ॰" कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार थुई कहें । "सुवन देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं" अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार थुई कहें । "क्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं" अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार

<sup>\*</sup> चावल, नैवेदा, फल, नारियल और कम से कम १ रू० ज्ञानपूजा पर अवस्य चढ़ावे। चौकी या पट्टे पर साथिया तीन ढेरी और सिद्धशिला के आकार का अर्धचन्द्र बना कर मिठाई और फल चढ़ाके बीच में नारियल और रुपया चढ़ा दे, फिर मुखबिक्का (मुह्पित ) हाथ में ले सुद्ध भावों से जो तपस्या करनी हो इसकी गुरु मुख से विधि करे।

का काउसग्ग पार थुई कहे । "शासन देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं" अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार ।

"या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूह नाशिनी । साभित्रेत समृद्यर्थं, भूयाच्छासन देवता ॥३॥

थुई कहे । अन्त में "समस्त वेयावृत्ति देव आराधनार्थं करेमि काउ-संगां॰" अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार—शुई पढ़े । श्री शक्र प्रमुखा यक्षाः, जिन शासन संस्थिताः।

देवान् देव्यस्तदन्येऽपि, संघं रक्षत्वपायतः ॥श॥

ये थुई कहे । तत्पश्चात् नीचे बैठ णमुत्युणं॰ पूर्वक जयवीयराय॰ तक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे । पीछे खमासमण दे "भगवन् ! (अमुक तप) प्रहणार्थं करेमि काउसग्गं" कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्त॰ कहे। पीछे खमासमण दे तीन णमोक्कार गिने। पुनः एक खमासमण दे "इच्छकार भगवन् ! अमुक तप ग्रहण दंडक उच्चरावो जी" कहे । गुरु के 'उच्चरावेमो' कहने पर जो तप ग्रहण किया हो उसी तप का नाम छे गुरु मुखसे तीन बार निम्नलिखित पाठ सुने-

"अहण्हं संते ! तुम्हाणं समीवे । (अमुक तवं ) उव संपज्जत्ताणं विहरामि (तंजहा )। द्व्वओ खित्तओ कालओ भावओ। द्व्वओणं ( अमुक तवं ) खित्तओणं इत्थ वा अणत्य वा कालओणं जाव परिमाणं, भावओणं जाव गहेणं ण गहिज्जामि छलेणं ण छलिज्जामि, जाव सिण्णवाएणं ण भविज्जामि, जाव अण्णेण वा केणइ रोगायंकेणवा परिणाम वसेण । एसो मे परिणामो ण परिवज्जइ । ताव मे एसतवो रायाभियोगेणं, गणाभियोगेणं, बलाभियोगेणं, देवाभियोगेणं, गुरु णिगाहेणं, वित्तिकंतारेणं, अणत्यणासोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥

पीछे गुरु के "हत्थेणं सुत्थेणं अत्थेणं तदुभएणं सम्मं धारणीयं चिरंपाळणीयं गुरु गुणेहिं भुद्धाहिं णित्थारगापारगा होत्या" कहने पर लमासमण देकर गुरुमुखसे पचाक्लाण करे यदि गुरु न हों तो खयं मुखसे उच्चरे।

## पखवासा तप की विधि

प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी गुरु के पास जाकर शुक्क प्रतिपदा से पूर्णिमा तक निरन्तर १५ उपवास करें। यदि शक्ति न हो तो पहले शुक्क पक्ष की एकम और शुक्क पक्ष की दृज का उपवास करें। इस तरह अनुक्रम से १५ सुदि पक्ष में पखवासा तप की तपस्या पूर्ण करें। श्री सुनि सुव्रत खामी का भाव गर्भित स्तवन सुने। और 'श्री सुनि सुव्रत खामी सर्वज्ञाय नमः।" इस पद की बीस माला फेरें। तदनन्तर तपग्रहण विधि तथा देव वन्दन इत्यादि की विधि पूर्वोक्त रीति अनुसार सम्पूर्ण तपस्या विधि पूर्ण करें क्योंकि विधि पूर्वक करने से ही उत्तम फल होता है।

## दश पचक्लाण की तप विधि

शास्त्रकारों ने जिस तरह अन्यान्य तपस्याओं का फल समझाया है जो श्रावक 'दस पचक्खाण' का तप करना चाहें वे पहिले दिन णमुक्कारसी दूसरे दिन पोरिसी, तीसरे दिन साढ़ पोरिसी, चौथे दिन पुरिमड्ड, पांचवें दिन एकासणा छठे दिन णिच्चि, सातवें दिन एगलठाणा, आठवें दिन दित्त, नवमें दिन आयंबिल, दशवें दिन उपवास । इस तरह दशों पचक्खाण दश दिन में करे, साथ ही स्तवन भी सुने । समाप्त होने पर यथाशक्ति उजमणा करे । इस तपस्या करने वाले को उत्तम गति प्राप्त होती है । महान ऐश्चर्यशाली होता है । अतएव धर्मानुरागी श्रावक और श्राविकाओं के लिये यह तप करना भी अत्यन्त लाभदायक है ।

## बीस स्थानक तप विधि

शुभ दिन शुभ मुहूर्त्त के समय नन्दी स्थापन करके गुरु के पास विधि पूर्वक बीस स्थानक तपकी ओली उच्चरे। एक ओली दो माससे छह मास पर्य्यन्त पूरी करे।यदि छह मास की अविध (समय) में एक ओली न पूरी कर सके तो उसको फिर से शुरू करनी होगी, क्योंकि वह गिनती में नहीं आती। एक ओली के बीस पद होते हैं उन बीसों पदों की बीस दिन में एक एक आराधना करनी होती है। अगर न हो सके तो बीस दिनमें एक एक पदकी आराधना करते हैं । इस तरह बीस बीस दिन में एक एक पद की आराधना करके बीसों ओली की तपस्या पूरी करते हैं।

में तो (तेर सौ क जाती। न हो ते जार्याः हो तो अर्थः प्र करने की साम भी शक्ति न हो व्यापार का त्याग तपस्वी के लि दिक के स्तुक की तपस्या विशेष ख़याल रखना सिक व्रत आदि धार्मिव दो बार प्रतिक्रमण समस्त तपस्यायें करते सम् शास्त्रकारों का कथन है कि तप आराधन के दिन यदि शक्ति हो तो अद्भम (तेला)व्रत करके तप आराधन (आरम्भ) करे।कमशः बीस अद्भम (तेले ) के ब्रत कर लेने पर एक ओली पूरी होती है। इस तरह चार सौ अद्रम ( तेले ) के वत हो जाने पर बीस ओली की आराधना पूरी हो जाती है। यदि तप करने वाले में अहमवत से आराधन करने की शक्ति न हो तो ( वेले ) के व्रत से आरम्भ करे अगर इसकी भी शक्ति न हो तो उपवास द्वारा करे। अगर उपवास से भी करने की शक्ति न हो तो आयंबिल या एकासण द्वारा तप आरम्भ करे । उस समय शक्ति हो तो अष्ट प्रहरी पौषध करे । यदि अष्ट प्रहरी पौषध करने की शक्ति न हो तो दैवसिक पौषध करें। समस्त पदों की आराधना जहां तक बन सके, पौषध पूर्वक करे । यदि सभी पदों के आराधन में पौषध न कर सके तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, साधु, चारित्र, गौतम और तीर्थ इन सात पदों के आराधन के समय अवस्य पौषध करे। इतने पर भी पौषध करने की सामर्थ्य न हो तो देसावगासिक व्रत करे। इसके करने की भी शक्ति न हो तो यथाशक्ति जो व्रत हो सके वही करे और सावद्य

तपस्वी के लिये ये बात विशेष ख़याल रखने की है कि जन्म मरणा-दिक के सूतक की तपस्यायें ओली की संख्या में नहीं ली जातीं। अतः सूतक आदि के समय की तपस्या ओली में न गिने। स्त्रियों के लिये ऋतुकाल की तपस्या भी वर्जनीय है । अतः स्त्रियों को भी इस बात का विशेष खयाल रखना चाहिये। तपस्या करते समय पौषध देसावगा-सिक व्रत आदि धार्मिक किया कोई भी न कर सके तो तपस्या के दिन करे और तीन बार देव वन्दन समस्त तपस्यायें करते समय ब्रह्मचर्य का सेवन करे।

साबद्य व्यापार न करे। असत्य न बोले। सारा दिन तपस्याकी माला फेरने में निकाले। पारणा करनेके दिन देव दर्शन कर गुरु को आहार दे पारणा करे।

अन्तमें अगर सभी प्रकारसे किसी तरहकी भी किया न कर सके तो देवपूजन करवाकर जिनमन्दिरमें गाना बजाना नाटक करें और शुभ भावना भावे और तप के दिन तप पद के गुणभेद प्रमाण संख्या से काउसगा करें और तपस्या के गुणों को स्मरण कर उतने ही खमासमण देकर वन्दना करें। उस पद का गुण याद करके उदात्त ( ऊंचे ) स्वर में मुख से उच्चारण करना तथा प्रसन्न चित्त रहना।

# वीस स्थानक माला और काउसग्ग प्रमाण

१ 'णमो अरिहंताणं' २० माला और १२ लोगरस का काउसग्ग करना। २ 'णमो सिद्धाणं' २० माला और ३१ लोगस्स का काउसग्ग करना। ३ 'णमो पवयणस्स' २० माला और २७ लोगस्स का काउसग्ग करना। ८ 'णमो आयरियाणं' २० माला और ३६ लोगस्स का काउसम्म करना । ५ 'णंमो थेराणं' २० माला और १० लोगस्स का काउसरग करना। ६ 'णमो उवज्झायाणं' २० माला और २५ लोगस्स का काउसग्ग करना। ७ 'णमो लोएसुव्यसाहूणं' २० माला और २७ लोगस्स का काउसग्ग करना। ८ 'णमो णाणस्स' २० माला और ५१ लोगस्स का काउसग्ग करना । ९ 'णमो दंसणस्स' २० माला और ६७ लोगस्स का काउसग्ग करना। १० 'णमो विणयसंपण्णाणं' २० माला और ५२ लोगरसका काउसग्ग करना । ११ 'णमो चारिचस्स' २० माला और ७० लोगस्स का काउसग्ग करना । १२ 'णमो बंभव्वय धारीणं'२० माला १९ लोगस्सका काउस्ग्ग करना । १३ 'णमो किरिआणं' २० माला और २५ लोगस्त का काउसग्ग करना। १४ 'णमो तबस्सीणं' २० मालाऔर १२लोगस्स का काउसग्ग करना। १५ 'णमो गोयमस्त' २० माला और १२ लोगस्त का काउसग्ग करना। १६ 'णमो जिणाणं' २० माला और २० लोगस्स का काउसग्ग करना।

१७ 'णमो चरणस्त' २० माला और १७ लोगस्त का काउसग्ग करना । १८ 'णमो णाणस्य २० माला और ५२ लोगस्य का काउसग्ग करना । १९ 'णमो सुअणाणस्स' २० माला और २० लोगस्स का काउसग्ग करना। २० 'णमो तित्यस्स' २० माला और २२ लोगस्स का काउसग्ग करना । विशेष इतना है की २० माला उसी पद की गिन सकते हैं।

#### प्रथम पद

१ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदुईते नमः। २ पञ्चवर्ण जानुदृष्न पुष्प प्रकर प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदुईते नमः। ३ अति मधुर द्रव्य माधुर्यतोऽपि मधुरतम दिव्यध्वनि प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः । ४ हेम रत्नजटित दण्डस्थितात्युज्वल चमर युगल वीजित व्यजन क्रिया युक्त सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ५ सुवर्णदण्ड रत्नजटित सदा सहचारि सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोमिताय श्रीमदर्हते नमः। ६ तरुण तरिणी तेजसोऽप्यति भास्कर तेजोयुक्त भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः । ७ दुन्दुभि प्रभृत्यनेक आकाशस्थित वादित्र वादनरूप सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमद्र्हते नमः।८ मुक्ताजाल झुम्बनयुक्त छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ९ खपरापाय निवारकातिशय धराय श्रीमदर्हते नमः। १० पश्चत्रिंशद् गुणयुक्त सुरासुर देवेन्द्र नरेन्द्राणां पूच्याय श्रीमदर्हते नसः।११ सर्व भाषानुगामि सकल संशयोच्छेदक वचना-तिरायाय श्रीमदर्हते नमः। १२ लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञानरूप ज्ञाना-तिशयेश्वराय श्रीमदर्हते नमः।

12 m of a mondar of the manual of the contraction o

### हितीय पढ

१ मितज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः । २ श्रुतज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः । ३ अवधिज्ञानावणि कर्म रहिताय नमः । १ मनः पर्यवज्ञानावणि कर्म रहिताय नमः । ५ केवळज्ञानावणि कर्म रहिताय नमः । ६ निद्रादर्श-नावर्णि कर्म रहिताय नमः । ७ निद्रानिद्रादर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः । ८ प्रचला दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः । ९ प्रचला प्रचलादर्शनावर्णि कर्म

रहिताय नमः।१० स्त्यानिंद दर्शनाविंग कर्म रहिताय नमः।११ चक्षुदर्शनाविंग कर्म रहिताय नमः १२ अचक्षुर्दर्शनाविंग कर्म रहिताय नमः।१३
अविं दर्शनाविंग कर्म रहिताय नमः १४ केवलदर्शनाविंग कर्म रहिताय
नमः। १५ शातावेदनी कर्म रहिताय नमः।१६ अशातावेदनी कर्म
रहिताय नमः। १७ दर्शन मोहिनी कर्म रहिताय नमः।१८ चारित्रमोहिनी कर्म रहिताय नमः।१९ नरकायुः कर्म रहिताय नमः।२०
तिर्यगायुः कर्म रहिताय नमः।२१ मनुष्यायुः कर्म रहिताय नमः।२२
देवायुः कर्म रहिताय नमः।२३ शुभनाम कर्म रहिताय नमः।२६ नीचैगोत्र कर्म रहिताय नमः।२७ दानान्तराय कर्म रहिताय नमः।२८
लाभान्तराय कर्म रहिताय नमः।२० दानान्तराय कर्म रहिताय नमः।२८
लाभान्तराय कर्म रहिताय नमः।३० दानान्तराय कर्म रहिताय नमः।३०

## तृतीय पद

१ सर्वतः प्राणातिपात विरताय नमः । २ सर्वतो मृषावाद विरताय नमः । ३ सर्वतोऽद्त्तादान विरताय नमः । ४ सर्वतो मृषावाद विरताय नमः । ५ सर्वतो मृषावाद विरताय नमः । ६ देशतोऽद्त्तादान विरताय नमः । ७ देशतो मृषावाद विरताय नमः । ८ देशतोऽद्त्तादान विरताय नमः । १० देशतो परमाणवत युक्ताय नमः । १० देशतः परिग्रह विरताय नमः । ११ दिशि परिमाणवत युक्ताय नमः । १४ सोगोपभोग परिमाणवत युक्ताय नमः । १५ देशावगासिकवत युक्ताय नमः । १६ पोसहोपवासीवत युक्ताय नमः । १५ देशावगासिकवत युक्ताय नमः । १६ पोसहोपवासीवत युक्ताय नमः । १७ अतिथिसंविभागवत युक्ताय नमः । १८ विधि सूत्रागमाय नमः । १९ वर्णक सूत्रागमाय नमः । २० भय सूत्रागमाय नमः । २१ उत्सर्ग सूत्रागमाय नमः । २२ अपवाद सूत्रागमाय नमः । २३ उभय सूत्रागमाय नमः । २४ उद्यम सूत्रागमाय नमः । २५ सर्वनय समूहात्मक श्री प्रवचनाय नमः । २६ सप्तमङ्गी रचनात्मकायनमः। २७ द्वादशाङ्ग गुणीपीठिकाय नमः ।

# चतुर्थ पद

१ प्रतिरूप गुणधराय श्री आचार्याय नमः। २ तेजस्वी गुणधराय श्री आचार्याय नमः । ३ युग प्रधानागमाय श्री आचार्याय नमः । ४ मधुर वाक्य गुणधराय श्री आचार्याय नमः । ५ गम्भीर गुणधराय श्री आचार्याय नमः । ६ सुबुद्धि गुणधराय श्री आन्वार्याय नमः । ७ उपदेश तत्पराय श्री आचार्याय नमः । ८ अपरिश्रावि गुणधराय श्री आचार्याय नमः । ९ चन्द्रवत्सौम्यत्वगुणधराय श्री आचार्याय नमः । १० विविधाभिग्रहमति-धराय श्री आचार्याय नमः। ११ अविकथक गुणधराय श्री आचार्चाय नमः । १२ अचपळ गुणधराय श्री आचार्याय नमः । १३ संयम शीळगुण-धराय श्री आचार्याय नमः। १९ प्रशान्तहृद्याय श्रीमदाचार्याय नमः। १५ क्षमागुणाय श्रीमदाचार्याय नमः। १६ मार्दवगुणाय श्रीमदाचार्याय नमः । १७ आर्जवगुणाय श्रीमदाचार्याय नमः । १८ निर्छोभतागुणाय श्रीमदाचार्याय नमः । १९ तपोगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः । २० संयमगुण युक्ताय श्रीमदाचायीय नमः। २१ सत्यधर्म युक्ताय श्रीमदाचायीय नमः । २२ शौचगुण युक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः । २३ अकिञ्चन गुण-युक्ताय श्रीमदाचार्यीय नमः । २४ ब्रह्मचर्य गुणयुक्तायश्रीमदाचार्यीय नमः । २५ अनित्य भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । २६ अशरण भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । २७ संसार भावना भाविताय श्रीमदाचा-र्याय नमः। २८ एकत्व भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। २९ अन्यत्व भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३० अशुचि भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । ३१ आश्रव भावना भाविताय श्रीमदाचा-र्याय नमः । ३२ संबर भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । ३३ निर्जर भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । ३४ छोक खभाव भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । ३५ बोधिदुर्लभ भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः । ३६ दुर्लभ धर्मसाधक भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः ।

#### पञ्स पट

१ नमोलाँकिक न्थिकर देशकायलोकोक्तर न्थिवराय नमः। २ देश-स्थिकर देशकाय लेकोक्तर रयिवराय नमः। ३ श्रामस्थिकर देशकाय लेको-त्तर न्थिवराय नमः। ४ हुन्छ स्थिकर देशकाय लोकोक्तर स्थिकाय नमः। ५ लाँकिक हुन्छ न्थिकर देशकाय लोकोक्तर स्थिवराय नमः। ६ लाँकिक गुरु न्थिवर देशकाय लेकोक्तर न्थिवराय नमः। ७ श्री लोकोक्तर श्रीनीय न्थिवराय नमः। ८ लोकोक्तर पर्याय न्थिवराय नमः। ९ लोकोक्तर श्रुन रयिवराय नमः। १० लोकोक्तर यय स्थिवराय नमः।

#### पप्रम पद

१ श्री आचाराङ्गश्रुत पाठकाय ननः । २ श्रीसुअगडाङ्गश्रुत पाठकाय नमः । ३ श्रीसमयायाङ्गश्रुत पाठकाय नमः । ६ श्री ज्ञाता धर्मकथा श्रुत पाठकाय नमः । ७ श्री उपाशकदशाश्रुत पाठकाय नमः । ८ श्री ज्ञाता धर्मकथा श्रुत पाठकाय नमः । ७ श्री उपाशकदशाश्रुत पाठकाय नमः । ८ श्री अन्तगढदशाश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री अञ्चलगढदशाश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री अञ्चलगणश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री विपालश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री उवाइउपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री अञ्चलपाकगणश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री विपालश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री अञ्चलकाय नमः । १० श्री जीवासिगम उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री अञ्चलकाय नमः । १० श्री जीवासिगम उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री अञ्चलकाय नमः । १० श्री पाठकाय नमः । १० श्री विपालश्रुत पाठकाय नमः । १० श्री विपालश्रुत पाठकाय नमः । २० श्री विपालश्रुत पाठकाय नमः । २० श्री व्याद्वश्रुत पाठकाय नमः ।

#### नहार पूर्व

१ पृष्टीखाय रक्षकेत्यः सर्वसाङ्ख्या नमः। १ अध्यक्षय रहकेता सर्व

३ तेजकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नसः ४ वायुकाय रक्षकेथाः सर्व साधुरयो नमः । ५ वनस्पतिकाय रक्षकेथाः सर्व साधुरयो नमः । ६ त्रसकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुन्यो नमः । ७ सर्वतः प्राणातिपात विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । ८ सर्वतः सृषावाद विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । ९ सर्वतोऽदन्तादान विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । १० सर्वतो ब्रह्म सेवितेभ्यः सर्व सायुभ्यो नमः । ११ सर्वतः परिग्रह विरतेभ्यः सर्व सायुभ्यो नमः। १२ सर्वतो रात्रि भोजन विस्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १३ छोभादि कषाय निप्रहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नसः । १४ श्रोत्रेन्द्रिय विषय निप्रहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । १५ चक्कुरिन्द्रिय विषय निग्रहेभ्यः सर्व साध्भ्यो नमः। १६ घाणेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः ।१७ रसनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नर्मः । १८ स्पर्शनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । १९ शीतादि परिषहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । २० क्षमादि गुण धारकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २१ भावविशुद्धेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । २२ मनोयोग गुसेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २३ वचन योग गुतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । २४ काययोग गुतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । २५ मरणान्त उपसर्ग सहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः । २६ अंगोपांग संकुचन संठीनता गुण युक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २७ निर्दोष संयम योग युक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः।

#### अण्टम पद

१ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मितज्ञानाय नमः । २ रसनेन्द्रिय व्यञ्जन-नावग्रह मितज्ञानाय नमः । ३ घाणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मितज्ञानाय नमः । १ श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह मितज्ञानाय नमः । ५ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रह मित-ज्ञानाय नमः । ६ रसनेन्द्रियार्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ७ घाणेन्द्रियार्था-वग्रह मितज्ञानाय नमः । ८ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ९ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । १० मनअर्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मितज्ञानाय नमः । १२ घाणेन्द्रिय ईहा मितज्ञानाय <u>proproses and solutions of the solution</u>

नमः । १३ रसनेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः । १४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मति-ज्ञानायनमः । १५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः । १६ मनोकर ईहा मतिज्ञानाय नमः । १७ स्पर्शनेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । १८ रसने-न्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः। १९ घाणेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः। २० चक्षुरिन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । २१ श्रोत्रेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । २२ मनोऽपाय मतिज्ञानाय नमः । २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति-ज्ञानाय नमः । २४ रसनेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः । २५ घ्राणेन्द्रिय-धारणा मतिज्ञानाय नमः। २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः। २७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः। २८ मनोधारणा मतिज्ञानायनमः। २९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः । ३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः । ३१ संज्ञिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३२ असंज्ञिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३३ सम्यक्श्रुत ज्ञानाय नमः । ३४ मिथ्याश्रुत ज्ञानाय नमः । ३५ सादिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३६ अनादिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३७ सपर्य्य वसतिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३८ अप-र्य्यवसतिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३९ गमिकश्रुत ज्ञानाय नमः । ४० अगमिक-श्रुत ज्ञानाय नमः । ४१ अङ्ग प्रविष्टश्रुत ज्ञानाय नमः । ४२ अनङ्ग प्रविष्ट श्रुत ज्ञानाय नमः । ४३ अणुगामि अवधि ज्ञानाय नमः । ४४ अनणुगामि अविध ज्ञानाय नमः। ४५ वर्डमान अविध ज्ञानाय नमः। ४६ हीयमान अविध ज्ञानाय नमः । ४७ प्रतिपाति अविध ज्ञानाय नमः । ४८ अप्रति-पाति अवधि ज्ञानाय नमः। ४९ ऋजुमति अवधि ज्ञानाय नमः। ५० विपुलमति अवधि ज्ञानाय नमः । ५१ लोकालोक प्रकाशकाय श्री केवल ज्ञानाय नमः। नवम पद

१ जीवाजीवादि तत्वार्थ श्रष्टान रूप सम्यग् दर्शन गुणाय नमः।
२ सुविहित सुनि बहुमानादर रूप सम्यग् दर्शन श्रष्टान रूप सम्यग्दर्शन
गुणाय नमः। ३ कुलिङ्गी पासच्छेदी असह्य वन सम्यग् श्रद्धान रूप सम्यग्
दर्शन गुणाय नमः। ४ अन्य तीथीं सङ्ग वर्जन सम्यग् श्रद्धान रूप दर्शन
गुणाय नमः। ५ श्री जिनागम सुश्रुषालिङ्ग सम्यग् दर्शन गुणाय नमः।

६ बुभुक्षित द्विजाहारेच्छा न्याय धर्मिष्टता लिङ्ग सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ७ देवगुरु वैयावृत्ति कर्णोद्यमन लिङ्ग सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ८ श्री अर्हद् भक्ति प्रेमादि विनय करण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ९ श्री सिन्ध-विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। १० श्री जिन प्रतिमा विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ११ श्री सिन्दान्त भक्ति प्रेमादिकरण सम्यग्-दर्शन गुणाय नमः। १२ श्रीक्षान्त्यादि धर्मभक्ति प्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १३ श्री साधुभक्ति बहुमानादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १४ श्री आचार्य भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १५ श्री उपाध्याय भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दरीन गुणाय नमः। १६ श्रीप्रवचन भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १७ श्री दर्शन भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। १८ श्री जिन जिनागम रुचि एकान्त वादादि असत्य इत्यवधारण मनःशुद्धि सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १९ श्रीजिनभक्तृया यन्न सिध्यति तन्नान्यैः सिध्यतीति वचन-शुद्धि सम्यन्दर्शन गुणाय नमः। २० श्रीजिनेश्वर भाषितमेव सत्यं नान्यदिति निःशङ्कावधारण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २१ सन्देह छेदन भेदन व्यथा सहन जिन देव नमन रूप काम शुद्धि सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। २२ स्वप्नेऽपि परदर्शनामिलाव रूप निःशङ्क सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। २३ धर्मज शुभ फले कष्ट भवत्येवेत्यादि अवधारण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। २४ अन्य दर्शन गत मान पूजादि चमत्कारं पश्यन्निप प्रसंशाऽकरण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २५ बहुतर कार्योपनयनेऽपि मिथ्यात्वि संगति वर्जन रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। २६ वर्तमान समयार्थ ज्ञापक सम्यग्प्रभावकदर्शन गुणाय नमः। २७ अवितथ उपदेश भव्य जन रञ्जक सम्यग्प्रभावकदर्शन गुणाय नमः। २८ शुद्ध स्याद्वाद तर्क युक्तिबलैः परमत खण्डन सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २९ गणितानुयोग विशारद बलैः शुभ निमित्त भाषक सम्यगदर्शन गुणाय नमः । २० इच्छा-रोध परिणति करी विविध दुर्द्धर तप करण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। श्रीसंघ पीडा

नमः । ३२ प्रबल कार्योत्पन्ने अञ्जन चूर्णीद योगबलै शासनोन्नति करण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ३३ प्रबल धर्मकारणोपनये अतुल कवित्व शक्तिबलैः नवं नव रस गर्भित काच्येन भूपति मनोरञ्जन रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ३४ गुरु वन्दन प्रत्याख्यानादि क्रिया कौशल रूप भूषणे स्तथा अत्यादरभावैविविध किया करण रूप भूषणेश्र भूषित सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ३५ अपार संसार समुद्रोत्तारण तीर्थरूप निपुण गीतार्थ सेवनरूप भूषणाभूपित सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ३६ श्री गुरुदेव संघादि भक्ति करणरूप भूषण भूषित सम्यग्दर्शन गुणाय नसः । ३७ नर देवादि भिरनेक प्रकारैश्चालितोऽपि स्थिरता रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३८ तीर्थ रथयात्रा संघवस्तिदान दीनोद्धारण परोपकरणादिभिः सकल जनातु-भूषण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। प्रभावना मोद कारापण रूप ३९ सर्वाणि सुखादीनि औदयिक भावस्य कर्मणः फलमिति श्रद्धातो दुःख-दायकेष्वपि अप्रतिकूल चिन्तनरूप सम्यगुपराम दर्शन गुणाय नमः। ४० सकल दुःख कारण रूपात् पौद्रलिक भावात् विरतो भूत्वा शिवसुखेच्छा-लक्षण सम्यग्संवेग दर्शन गुणाय नमः । ४१ अतुल पुण्यजं देवेन्द्रादि सुखं कारागार सम मितिबोधन लक्षण सम्यक् निवेद दर्शन गुणाय नमः। ४२ पापोद्यात् रोग शोकादिभिःपीडितानां मिथ्यात्वोदयानाम् कुश्रन्दत् कुमार्ग गमनादिकं दृष्ट्वा तदुःख निवारण चिन्तालक्षण सम्यगनुकम्पा दर्शन गुणाय नमः । १३ राग द्वेषाज्ञानत्रयं परिहृत्य जिनेश्वरो योऽभूत तस्य वाक्य मन्यथा न भवतीति दृढ़ रंग लक्षण सम्यगास्तिक्य दर्शन गुणाय नमः। ४४ अन्यतीर्थोय चैत्यमन्यतीर्थोयैर्गृहीतं वा चैत्यं तस्य वन्दना करणरूप सम्यक् यतना दर्शन गुणाय नमः । ४५ पर तीथोंयंतैर्गृ हीतं वा चैत्यस्य नमना करण रूप दर्शन गुणाय नमः। ४६ परतीर्थकैः सह प्रथमालापवर्जन रूप दर्शन गुणाय नमः । ४७ परतीर्थकैः सह पुनः पुनः संलाप वर्जन रूप दर्शन गुणाय नमः । ४८ परतोर्थकाना श्रद्धया अञ्चलादि दानकरण रूप द्रीन गुणाय नमः । ४९ पुनः पुनः पूर्वोक्त विधि पूर्वक सम्भाषण संलापाच करण रूप दर्शन गुणाय नमः । ५० द्रव्य क्षेत्रकालादि विषमतया उपायान्तरै

रात्मत्राणासमर्थरचेत्तर्हि अपवाद सेवनां जिनाज्ञां ज्ञात्वा राज्ञः अन्यस्यवा मिथ्यात्वि नो नगराधिपस्य अनिवार्याज्ञा करणरूप आगार दर्शन गुणाय नमः। ५१ गणैनिर्भर्त्स्य स्वधर्म प्रतिकूलकारित करणरूपागार दर्शन गुणाय नमः। ५२ बलवता चौरादिभिर्वानिगृह्यमाणःसन् आत्मरक्षणं कृत्वा आत्मशुद्धये प्रायश्चित्तं करिष्यामीति कृत्वा अशुद्ध किया करणरूपागारदर्शन गुणाय नमः । ५३ मिथ्यादृष्टि धर्मद्वेषि क्षुद्रदेवता प्रभावाद्भिभूतः पूर्वोक्त प्रकारं स्मृत्वा अशुद्ध किया करण रूपागार दर्शन गुणाय नमः । ५४ मात्, पित्, कलाचार्य, ज्ञाति बृद्धादिनामाज्ञाभंगे महान् दोष इति समृत्वा तदाज्ञा करणरूप गुरु निग्रहागार सेवन रूप दर्शन गुणाय नमः । ५५ पापोदयेन देशान्तरे मक्ष्याहाराभावेन मिथ्यात्वीनां ग्रामे उपायान्तरै शरीर यात्राया अनिवीहेन वा अभक्ष्य भक्षण कुमार्ग क्रिया करणरूप वृत्तिकान्तारागार सेवन रूपदर्शनगुणाय नमः। ५६ मूले पुष्टे वृक्षोऽपिसफलः पुष्टोऽपि भवति मूले नष्टे वृक्षो नश्यति तथाव्रतरूप वृक्ष मूळंसम्यक्त्व भावना भावित दर्शन गुणाय नमः ५७ नगरस्य गोपुरमिव धर्मनगरस्य सम्यक्तवं गोपुरं यदि दर्शनशुच्चिरस्तितर्हिद्वारमुद्राहितमस्ति तदभावेऽप्यहितमस्ति अतः सर्व धर्मस्य द्वारं सम्यक्त्विमिति भावना भावित दुर्शन गुणाय नमः । ५८ यथा मूळे पुष्टे प्रासादः पुष्टो भवति तथा सम्यक्त्व दृढ़े धर्मप्रासादो दृढो भवतीति प्रवर्तन रूपे भावना दर्शन गुणाय नमः । ५९ सम्यक्तवगुण रत्ननिधानं तेन विना आत्मनः सहजागुणाः स्थिरतां न भजन्तीति भावना दर्शन गुणाय नमः। ६० यथा कल्पवृक्षलता कार्मघेनु चिन्ता मण्याद्यनेकरत्नानामाधारः पृथ्वी तथा सम्यक्त्वं सर्व गुणानामाधारः इति भावना दर्शन गुणाय नमः । ६१ दिघ दुग्ध घृतादि रसानां भाजन मिव श्रुतशील समसंवेग रूपाध्यात्म रस भाजनं सम्यक्त्वमिति भावना दर्शन गुणाय नमः । ६२ चेतना लक्षणो जीवपदार्थः सन्त्रैकालिकः इति स्वरूपोपयोगरूप सम्यग् स्थान दर्शन गुणाय नमः । ६३ आत्मा द्रव्यास्तिकाय नयेन नित्योऽनुभव वासना युक्तोऽमल अखण्ड निज गुण युक्तो आत्मारामोऽस्तीति उपयोग रूपदर्शन गुणाय नमः। ६४ सर्वे जीवाः कुम्भकारवत् कर्मकर्तार इति श्रद्धारूप दर्शन गुणाय नमः।

**妆书书等书子不作在作的,好好手作下午爷的手,我们看着我们的时候,我们看到我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们们的一个,我们们的一个,我们们** 

६५ आत्मा स्वकृत कर्मणां तस्य फलं स्वयं मोक्ता निश्चये नास्तीति श्रद्धा रूप दर्शन गुणाय नमः । ६६ मोक्षपदं अचलमनन्त सुखनिवासं आधि व्याधि रहित परम सुखमस्तिति श्रद्धा रूप दर्शन गुणाय नमः । ६७ मोक्षपदंसम्यग्ज्ञान दर्शन चारित्रैरेव लम्यते नान्योपायैरिति श्रद्धा रूप दर्शन गुणाय नमः ।

#### द्शम पद

१ तीर्थङ्कर अनाशातनारूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः । २ तीर्थङ्कर भक्ति प्रवणरूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः । ३ तीर्थङ्कर बहुमान करण्रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः । ४ तीर्थङ्कर श्रुतरूप विनयगुणसम्पन्नाय नमः । ५ सिन्ध अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ६ सिन्ध भक्तिः निपुण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ७ सिद्ध बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ८ सिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ९ सुविहित चन्द्रादि कूळानाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १० सुविहित चन्द्रादि कूल ।बहु भक्ति प्रहवण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ११ सुविहित कूळ बहुमान करण निपुण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १२ सुविहित कूल संस्तुति करण तत्पर रूप गुण सम्पन्नाय नमः। १३ कौटिकादि सुविहित गण भक्ति बहुमान रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १४ कौटिकादि सुविहित गण भक्ति करण निपुण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १५ सुविहित कौटिकादि गण संस्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १६ सुविहित गणाना-शातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १७ श्रीसंघ अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १८ श्रीसंघ भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । १९ श्रीसंघ बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । २० श्रीसंघ स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नार्य नमः । २१ श्री आगर्मोक्त किया अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २२ किया बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः।

,这一个人,我们是一个人,我们们的人,我们们们的人,我们们们们的人,我们们们们们们们的人,我们们们们们们的人,我们们们们的人,我们们们们们的人,我们们们们们们的

२३ आगमोक्त शुद्ध किया बहुमान करण रूप विनय गुण नमः । २४ शुद्धागमोक्त क्रिया स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २५ श्री जिनोक्त धर्म अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । २६ श्री जिनोक्त धर्म भक्ति करण निपुणरूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः २७ श्री जिनोक्त धर्म बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । २८ श्री जिनोक्त धर्म करण निपुण रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः । २९ ज्ञानगुण अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३० ज्ञानगुण भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३१ ज्ञानगुण बहुमान करण रूप विनयं गुण सम्पन्नाय नमः। ३२ ज्ञानगुण स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३३ ज्ञानिजन अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३४ ज्ञानिजन भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३५ ज्ञानि जन बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३६ ज्ञानि जन स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३७ श्रीमदाचार्य अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३८ श्रीमदाचार्य भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ३९ श्रीमदाचार्य बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । २० श्रीमदाचार्य स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४१ स्थविर मुनि अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४२ स्थविर मुनि भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४३ स्थविर मुनि बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४४ स्थविर मुनि स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४५ श्रीमदुपा-ध्याय अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४६ श्रीमदुपाध्याय भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४७ श्रीमदुपाध्याय बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः । ४८ श्रीमदुपाध्याय संस्तुति करण रूप विनिय गुण सम्पन्नाय नमः । ४९ श्रीगणावच्छेदक अनाशातना करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ५० श्रीगणावच्छेदक भक्तिकरण रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः । ५१ श्रीगणाबच्छेदक बहुमान करण रूप विनय

गुण सम्पन्नाय नमः। ५२ श्रीगणावच्छेदक स्तुति करण रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः।

#### एकाद्श पद

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमणत्रत धराय नमः । २ सर्वतः मृषाबाद विरमणत्रत घराय नमः । ३ सर्त्रतः अदन्तादान विरमणत्रत घराय नमः । ४ सर्वतः मैथुन विरमणवत धराय नमः । ५ सर्वतः परिग्रह विरमणवत धराय नमः । ६ सम्यग्क्षमा गुणधराय नमः । ७ सम्यग्मार्दव गुणधराय नमः । ८ सम्यगार्ज्जवगुण धराय नमः। ९ सम्यग्मुक्ति गुणधराय नमः। १० सम्यग्तेषो गुणवराय नमः। ११ सम्यग्संयम गुणवराय नमः। १२ सम्य-ग्वोधि दर्शन गुणधराय नमः । १३ सम्यग्सत्य गुणधराय नमः । १४ सम्य-ग्सौम्य गुणधराय नमः । १५ सम्यग्किचन गुणधराय नमः । १६ सम्यग्व-ह्मचर्य गुणधराय नमः। १७ विगत प्राणातिपाताश्रवाय गुणव्रते नमः। १८ विगत मृपावादाश्रवाय गुणत्रते नमः । १९ विगत अदत्तादानाश्रवाय गुणव्रते नमः । २० विगत मैथुनाश्रवाय गुणव्रते नमः । २१ विगत परिग्रहाश्रवाय गुणव्रते नमः। २२ श्रोत्रेन्द्रिय<sup>े</sup> विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २३ घ्राणेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्रगुणव्रते नमः । २४ चक्षुरिन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २५ रसनेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः । २६ स्पर्शनेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २७ विजित क्रोधाय चारित्र गुणव्रते नमः। २८ विजित मान दोषाय चारित्र गुणव्रते नमः । २९ विजित माया दोषाय चारित्र गुणव्रते नमः [ ३० विजित लोभ दोषाय चारित्र गुणत्रते नमः | ३१ मनोदण्ड रहिताय चारित्र गुणव्रते नमः । ३२ वचनदण्ड रहिताय चारित्र गुणव्रते नमः । ३३ कायादण्ड रहिताय चारित्र गुणव्रते नमः । ३४ वसति शुद्ध ब्रह्मब्रतयुक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः । ३५ स्त्रीमिः सह वार्ता वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणवते नमः। ३६ स्त्री सेवितासन वर्जनवहावत युक्ताय चारित्र गुणत्रते नमः । ३७ स्त्री रूपावलोकन ब्रह्मत्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः ।

३८ कुड्यन्तरित स्त्री पुरुष संयुक्त वसतिशयन वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणवते नमः । ३९ पूर्वक्रीडित क्रीडास्मरण वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणवते नमः । ४० अनिमन्त्रिताहारवर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः । ४१ सहसाहार वर्जन व्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। ४२ विभूषणादिना शारीरशोभा वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। **४३ आचार्य वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४४ उपाध्याय** वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः। ४५ तपस्वि वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४६ शिष्य वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणायनमः । ४७ ग्लान वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४८ साधु वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४९ साध्वी वैयावृत्ति-करण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५० संघ वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नयः । ५१ कुल वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५२ गण वैयावृत्ति करण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५३ सम्यक् चारित्र ज्ञान गुणाय नमः । ५४ सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५५ सम्यग्दर्शन चारित्र गुणाय नमः । ५६ अनसन तप चारित्र गुणाय नमः । ५७ सम्यगूनोद्रर तप चारित्र गुणाय नमः। ५८ सम्यग्वृत्ति संक्षेप तपश्चारित्र गुणाय नमः। ५९ सम्यग्सत्याग तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६० सम्यक् कायक्लेश तपश्चारित्र गुणाय नमः ६१ सम्यक् संलीनता तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६२ प्रायश्चि-त्ताभ्यन्तर तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६३ विनयाभ्यन्तर् तपश्चारित्र गुणाय नमः। ६४ वैयावृत्ति तपश्चारित्र गुणाय नमः। ६५ सद्भाव तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६६ ध्यानतप चारित्रकायोत्सर्गतप चारित्र गुणाय नमः । ६७ कोधजय चारित्र गुणाय नमः । ६८ मानजय चारित्र गुणाय नमः । ६९ मायाजय चारित्र गुणाय नमः। ७० लोभजय चारित्र गुणाय नमः।

#### द्वादश पद

१ मनसा औदारिक विषय अकारण रूप व्रह्मचर्य घराय नमः। २ मनसा औदारिक विषय अनुमोदन रूप व्रह्मचर्य घराय नमः। ३ मनसा ,这些老品的人,这是这么这么,这么是这么,这么是这么,这么是这么,我们是这么,我们是这么,我们是这么,我们是这么,我们是这么,我们是这么,我们是这么,我们是这一

औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ४ वचसा औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ५ वचसा औदारिक विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ६ वचसा औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ७ कायेन औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ७ कायेन औदारिक विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ८ कायेन औदारिक विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ९ कायेन औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १० मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ११ मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ११ मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १२ मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १२ कायेन विक्रय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १५ वचसा वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १५ कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १७ कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १० कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १० कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १० कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । १८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः ।

## त्रयोदश पद

१ अशुद्ध कायिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २ अधिकरणिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ३ पारितापनिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ३ पारितापनिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ५ आरम्भिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ६ पारिप्रहि किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ६ पारिप्रहि किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ८ मिध्यादर्शन प्रत्यिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ८ अपच्चक्खाणी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः।
१० दृष्टिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ सर्शन किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ सामन्तोपनिपातिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ सामन्तोपनिपातिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ स्वहित्तिकी नमः। ११ नैशिस्रिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ स्वहित्तिकी नमः। ११ नैशिस्रिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ स्वहित्तिकी

क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १६ आणवणीकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः । १७ विदारिण की क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः ! १८ अनाभोगप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १९ अन-वकांक्षप्रत्यिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः । २० आज्ञापन प्रत्य-यिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः । २१ प्रायोगिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २२ सामुदायि की किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २३ प्रेमकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः । २४ द्वेषकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवतेनमः।२५ इरियावहिकी किया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः।

# चतुर्दश पद

१ अनशन तपोयुक्ताय नमः । २ उनोदर तपोयुक्ताय नमः । ३ वृत्तिसंक्षेप तपोयुक्ताय नमः । १ रसत्याग तपोयुक्ताय नमः । ५ काय-क्लेश तपोयुक्ताय नमः । ६ संंलीनता तपोयुक्ताय नमः । ७ प्रायश्चित्त तपोयुक्ताय नमः । ८ विनयरूप तपोयुक्ताय नमः । ९ वैयावृत्तिरूप तपो-युक्ताय नमः । १० स्वाध्यायकरणरूप तपोयुक्ताय नमः। ११ ध्यान रूपतपो-युक्ताय नमः । १२ कायोत्सर्गरूप तपोयुक्ताय नमः ।

#### पञ्चदश पद

१ श्री इन्द्रभृति खामी गणधराय नमः। २ श्री अग्निभृति स्वामी गणधराय नमः । ३ श्री वायुभूति स्वामी गणधराय नमः । ४ श्री व्यक्त स्वामी गणधराय नमः । ५ श्री सुधर्मा स्वामी गणधराय नमः । ६ श्री मण्डित स्वामी गणधराय नमः। ७ श्री मौर्यपुत्र स्वामी गणधराय नमः। ८ श्री अकस्पित स्वामी गणधराय नमः । ९ श्री अचल भ्राता स्वामी गण-धराय नमः । १० श्री मेतार्यरवामी गणधराय नमः ११ श्री प्रभास स्वामी गणधराय नमः । १२ चतुर्विशति तीर्थङ्कराणांद्विपञ्चाशद्धिक चतुर्दशशत (१४५२) गणधरेम्यो नमः।

#### षोडश पद

१ श्री सीमन्धर जिनेश्वराय नमः। २ श्री युगन्धर जिनेश्वराय नमः।

३ श्री बाहु जिनेश्वराय नमः । ४ श्री सुबाहु जिनेश्वराय नमः । ५ श्री सुजात जिनेश्वराय नमः । ६ श्री स्वयंप्रभु जिनेश्वराय नमः । ७ श्री ऋष्मानन जिनेश्वराय नमः । ८ श्री अनन्तवीर्य जिनेश्वराय नमः । ९ श्री सूर्प्रभु जिनेश्वराय नमः । १० श्री विशाल जिनेश्वराय नमः । ११ श्री वज्रधर जिनेश्वराय नमः । १२ श्री चन्द्रानन जिनेश्वराय नमः । १३ श्री चन्द्राबाहु जिनेश्वराय नमः । १६ श्री मुजङ्ग जिनेश्वराय नमः । १५ श्री ईश्वर जिनेश्वराय नमः । १६ श्री नेमिप्रभु जिनेश्वराय नमः । १७ श्री वीरसेन जिनेश्वराय नमः । १० श्री सहामद्र जिनेश्वराय नमः । १९ श्री देव-सेन जिनेश्वराय नमः । २० श्री अजितवीर्य जिनेश्वराय नमः ।

#### सप्तदश पद

是一个,我们是不是一个,我们是一个,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们的,我们的,我们的,我们

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमण रूप चारित्र धराय नमः। २ सर्वतः मृषावाद विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ३ सर्वतः अद्गादान विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ३ सर्वतः भैयुन विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ५ सर्वतः परिप्रह विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ६ सर्वतः रात्रि भोजन विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ७ ह्र्यासमिति सम्पन्न रूप चारित्र धराय नमः। ८ भाषा समिति रूप चारित्र धराय नमः। ९ एषणा समिति रूप चारित्र धराय नमः। ९ एषणा समिति रूप चारित्र धराय नमः। १ परिहावणिआ समिति रूप निक्षेप चारित्र धराय नमः। १२ मनोगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १३ वचनगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १४ कायगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १४ कायगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १४ मनोदण्ड विरताय चारित्र धराय नमः। १७ कायदण्ड विरताय चारित्र धराय नमः।

#### अष्टाद्दा पद

१ श्री आचारांग स्त्राय नमः। २ श्री सुअगड़ांग स्त्राय नमः। ३ श्री ठाणांग स्त्राय नमः। ४ श्री समवायांग स्त्राय नमः। ५ श्री भग-वती स्त्राय नमः। ६ श्री ज्ञाताधर्म स्त्राय नमः। ७ श्री उपाज्ञक द्शा सूत्राय नमः । ८ श्री अंतगड दशा सूत्राय नमः । ९ श्री अनुत्तरोववाई सूत्राय नमः । १० श्री प्रश्न व्याकरण सूत्राय नमः । ११ श्री विपाक सूत्राय नमः । १२ श्री उववाई सूत्राय नमः । १३ श्री रायपसेणी सूत्राय नमः । १४ श्री जीवामिगम सूत्राय नमः । १५ श्री पण्णवणा सूत्राय नमः । १६ श्री जंबुहीव पण्णेत्ती सूत्राय नमः । १७ श्री चंदुपण्णेत्ती सूत्राय नमः । १८ श्री सूरपण्णत्ती सूत्राय नमः । १९ श्री निरयावली सूत्राय नमः । २० श्री पुष्फावली सूत्राय नमः। २१ श्री पुष्फचूलिया सूत्राय नमः। २२ श्री कप्पिआ सूत्राय नमः । २३ श्री वन्हिद्शा सूत्राय नमः । २४ श्री चउसरण स्त्रार्य नमः । २५ श्री संथारापइण्णा स्त्राय नमः । २६ श्री भत्तपइण्णा सूत्राय नमः । २७ श्री चन्द्राविज्ञपङ्ण्णा सूत्राय नमः । २८ श्री मरणवि-भत्ति पङ्ण्णा सूत्राय नमः । २९ श्री गणि विज्ञापङ्ण्णा सूत्राय नमः । ३० श्री तंदुलवेयालिय पङ्ग्णा सूत्राय नमः । ३१ श्री देवेन्द्रस्तव पङ्ग्णा सूत्राय नमः । ३२ श्री आउरपचक्लाण पद्मण्णा सूत्राय नमः । ३३ श्री महापच-क्लाण पइण्णा सूत्राय नमः। ३४ श्री दश त्रैकालिक मूल सूत्राय नमः। ३५ श्री उत्तराध्यन मूल सूत्राय नमः। ३६ श्री आवश्यक मूल सूत्राय नमः । ३७ श्री पिंडनिर्युक्ति मूल सूत्राय नमः । ३८ श्री व्यवहारछेद स्त्राय नमः । ३९ श्रीनिशीयछेद स्त्राय नमः । ४० श्रीमहानिशीयछेद स्त्राय नमः । ४१ श्री दशाश्रुतस्कन्धछेद स्त्राय नमः । ४२ श्री जीतक-ल्पछेद सूत्राय नमः। ४३ श्री पंचकल्पछेद सूत्राय नमः। ४४ श्री नंदी-चूलिआ स्त्राय नमः। ४५ श्री अनुयोगद्वार चूलिआ स्त्राय नमः। ४६ श्रीस्यादिस्तरूपकायस्याद्वाद सूत्राय नमः । ४७ श्रीस्याद्नास्तिभङ्ग प्ररूपका-यस्याद्वाद सूत्राय नमः। ४८ श्री स्यादस्तिनास्तिभङ्गः प्ररूपकायस्याद्वादः सूत्राय नमः । ४९ श्री स्याद् वक्तव्य भङ्गः प्ररूपकाय सूत्राय नमः । ५० श्री स्यादस्ति अवक्तव्य भङ्ग प्ररूपकाय सूत्राय नमः । ५१ श्री स्यादनास्ति भङ्ग प्रस्काय सूत्राय नमः । ५२ श्री स्यादस्ति अञ्यक्त भङ्ग प्ररूपकाय स्त्राय नमः।

सुसंगति रूप वृद्धानुगत तीर्थ गुणाय नमः। २० सर्वगुण मूळ रत्नत्रयी तत्वत्रयी शुद्धता प्रापक रूप विनय तीर्थ गुणाय नमः। २१ धर्माचार्यस्य बहुमान कर्चा स्वल्पोपकारमपि अविस्मर्ता परगुण योजनोपकार करण सदा परिहतोपदेशक करण कारण रूप परिहतकारि तीर्थ गुणाय नमः। २२ अल्प बहुश्रुत तप क्रियादि योग्यता ज्ञापक, यथानुकूल धर्मप्रापक, सर्व स्वकार्य साक्षिरूप छन्च लक्ष तीर्थ गुणाय नमः।

इसादि विधि संयुक्त बीसों ओलियें उत्सव, महोत्सव, प्रभावना, उजमणा पूर्वक सम्पूर्ण करे। यदि जिन शासनकी उन्नितके वास्ते इतनी शक्ति न होय तो कमसे कम एक ओलीका उत्सव तो अवश्य ही धूम-धामके साथ करे।

ये विधियें प्राचीन प्रन्थोंसे संक्षेपमें लिखी गई हैं इसलिये अगर गुरुका संयोग हो तो विस्तारसे बीसों पदोंकी जुदी जुदी विधि गुरुसे समझ के करें। अगर गुरुका संयोग न हो तो इसी विधिके अनुसार भावसे सम्पूर्ण तप करें। तथा बीसस्थानक तपका स्तवन भी उसी दिन पढ़ें अथवा सुने और मन्दिरमें बीसस्थानककी पूजा करावे तथा यथाशक्ति बीस बीस ज्ञानोपकरण बनवावे। देवपदका देवमें, ज्ञानपदका ज्ञानमें और गुरु पदका गुरुके ही लिये खर्च करें। समस्त तीथोंकी यात्रा करें, साधमींबत्सल करें। इत्यादि विधि संयुक्त भावसे जो भव्य जीव 'बीसस्थानक तप'\* की आराधना करते हैं वह तीर्थङ्कर नाम कर्मका उपार्जन कर तीसरे भवमें अनन्त सुखोंको प्राप्त करते हैं।

### रोहिणी तपकी विधि

शुभ दिनमें गुरुके पास रोहिणी तप ग्रहण करें। रोहिणी नक्षत्रके

<sup>ं</sup> इस तपश्चर्यां के करनेसे तीर्थङ्कर गोत्रका वंध होता है। श्रेणिक, रावण, कृष्ण आदि जीवोंने इसी तपके प्रभावने आगामी चीवीसीमें तीर्थङ्कर गोत्रका वंध किया है। अतः तीर्थङ्कर होंगे।

<sup>ा</sup> रोहिणी तपके प्रभावसे रोहिणी रानीने अपने जीवनमें कभी भी दुःखका अनुभव नहीं किया। यह तप स्त्रियोंको ही करना चाहिये।

दिन उपवास करे और वारहवें श्रीवासुप्त्यजीकी पूजन करे आगे अप्ट मङ्गर्लीकर्का रचना करें और अप्टह्न्य चढ़ावे। देववन्द्रनादिक धार्मिक क्रियायें करके गुरुके मुखसे धर्मीपदेश श्रवण (सुना) करे। गुरुका संयोग न हो सकने पर "रोहिणी तप" स्तवन को भावसे पढ़े या किसी अन्यसे सुने और "श्रीवासुप्त्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः" इस पदकी २० माला फेरे। इस प्रकार विधि पूर्वक सात वर्ष सात महीनेमें इस तपकी आगधना करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी, पुत्रादिकके अभावका शोक सन्ताप दूर होगा और सुख सीभाग्यकी वृद्धि होगी।

### छम्मासी तप विधि

जिस प्रकार शासन नायक भगवान महावीर ग्वामीने छम्मासी तपकी उत्हृष्ट तपस्याकी उसी प्रकार वर्तमानसमयमें उतना वलपराकम न होनेसे इस तपका होना कठिन है तो भी एक सौ अरसी उपवासोंके करनेसे जीव जयन्य छम्मामी तपके फलोंको प्राप्त कर सकता है। तपम्याके दिन देव वन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करें और छम्मासी तपके स्तवनको भावसे मनन पूर्वक पट्टे अथवा मुने। साथ ही साथ "श्री महावीर खामी नाथाय नमः" इस मन्त्रकी वीस माला फेरें और जहां बीर प्रभुके नामका तीर्थ हो क्षित्रयकुण्ड,पावापुर आदि वहां यात्रा करनेके लिये जावे. शुद्ध भावना भावे, यथाशिक तपका उथापन करें। इस तपस्याके प्रभावसे जीव लघुकमीं हो अनन्त सुखोंको प्राप्त करना है।

#### वारहमामी नप विधि

प्रथम तीर्यहर श्री ऋषभदेव न्यामी ने उत्कृष्ट बाग्हमानी तप की त्राम्य जर्ग अतः भव्य जीवीं को भी यह तपस्या अवस्य आदरणीय है। इस तपस्यामें तप्तकी क्रमशः स्वद्रन्छानुसार तीन भी साट (३६०) उपवास जरे। जिस दिन वत हीय उस दिन देव बन्दनादिक प्रतिक्रमण प्राप्तिक नियावें कर, बाग्हमानी तप का स्वयम साथ प्रवेक पट्टे अथवा प्राप्त जरे,। पर्श सुप्रभदेव स्वामी नायाय नमः इस सन्वर्ज, ३०

माला (जाप) फेरें। तपस्या का विधिपूर्वक यथाशक्ति उद्यापन कर सिद्धाचलजी की यात्रा करें। इस तपस्या के फलस्वरूप तपस्वी को कप्ट नहीं होता, आनन्द भोगता है। रोग शोक भय आदि दौभींग्य की प्राप्ती नहीं होती संसार में यश फैलता है और मोक्ष सुखकी प्राप्ति होती है। अद्राइस लिध तप विधि

शुभ दिन, शुभ घड़ी और शुभ मुहूर्त में गुरु के पास से विनयपूर्वक अहाइस छिट्ट तप ग्रहण करें। इस तपस्या में अहाइस उपवास करने होते हैं। जिस दिन जिस छिट्ट का उपवास हो उस दिन उसी नाम का जाप करें तथा स्तवन पढ़े या श्रवण करें। यथाशक्ति देव बन्दनादिक प्रतिक्रमण करें धार्मिक कियायें भी करें और उद्यापन करें। इस तपस्या से शुद्धि निर्मछ होती है तथा आनन्द होता है ऐसा शास्त्रकारों का कथन है।

# चतुर्द्ञा पूर्व तप विधि

THE THE PART OF THE WASHINGTON THE W

उत्तम दिन देखकर तपस्या ग्रहण करे । इसमें चौदह उपवास करने होते हैं । जिस दिन जिस पूर्व का उपवास हो उसी पूर्व के नामसे २० माला फेरे और स्तवन पढ़े या श्रवण करे । स्तवन में १४ पूर्व के नाम तथा विधि दी गई है उसी प्रकार गुरु से समझ कर भन्यात्मा तप आराधन करे इस तपस्या से ज्ञानावरणादि कमों का क्षय होकर उत्तम ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

#### तिलक तपस्या विधि

शुभ दिन, शुभमुहूर्त में गुरु के पास से तिलक तपस्या प्रहण करके कुल तीस उपवास कमशः करें । प्रथम ऋषभदेव स्वामी के लह उपवास करें । इन उपवासों में "श्री ऋषभदेव स्वामी सर्वज्ञाय नमः" इस पद का दो हजार जाप करें । तत्पश्चात् श्री महावीर स्वामी के दो उपवास करें । इन दो उपवास के समय "श्री महावीर सर्वज्ञाय नमः" इस पद की वीस माला फेरे और यथाशक्ति धर्म ध्यान करें । इनके पीले कमशः वाइस तीर्थक्करों के वाइस उपवास करें । जिस दिन जिस तीर्थक्कर का उपवास

हो, उस दिन उसी पंद की बीस माला फेरे और शेष विधि स्तवन के . अनुसार गुरु से समझ कर सम्पूर्ण करे । इस तपरया से चरम शरीरी तथा अनन्तानन्त सुखों की प्राप्ति होती है।

#### सोलिये तप विधि

क्रोध, मान, माया, लोभ, क्रमशः इन चारों कषायों के अनन्तानु-बन्धी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी और संज्वलन इनके द्वारा एक एक के चार २ भेद होनेसे १६ भेद होते हैं चूंकि ये ही हमारे मोक्षरूपी सुखमें विशेष कर बाधक हैं अतः इनको निवारण करने के लिये तपरवी को १६ तप की तपस्या करनी होती है। पहले दिन एकासणा, दूसरे दिन णिच्चि तीसरे दिन आयंबिल और चौथे दिन उपवास. इस तरह अनुक्रम से चार बार बत करके १६ दिन की तपस्या सम्पूर्ण करे । तपश्चर्या के दिन १६ तप का स्तवन श्रद्धापूर्वक पढ़े अथवा श्रवण करे । तप पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करे । इस तपस्या से निश्चय ऋदि को भोगता हुआ सिद्धि (मोक्ष ) को प्राप्त करता है।

#### उपधान तप प्रवेश विधि

जब बहुत से श्रावक और श्राविकाएं उपधान तप करने वाली हों तो संघ के नाम से अच्छा चन्द्रमा देखना । अगर एक श्रावक या एक श्राविका उपधान तप करे तो अपने नामसे अच्छा चन्द्रमा देख कर उप-धानवाही संध्याको गुरु महाराजके पास आ इरियावही॰ कह कर खमासमण दे अमुक 'उपधान तवे पवेसह' कहे।गुरुके'पवेसामोकहनेके बाद णमुकारसी करना, अंगपडिलेहण संदिसाऊं' कहने पर 'तहत्ति' कहे। पीछे चड-व्यिहार करे या पानी पीवे अथवा भोजन करे इसकी कोई बात नहीं। अगर किसी कारण से संध्या को खमासमण न दी हो तब प्रतिक्रमण के समयसे पूर्व तथा पीछली रातमें खमासमण देना।प्रतिक्रमणके समय प्रतिक्रमण करना । णमुकारसी का पचक्रवाण करना । पीछे सूर्य के उदय होने पर गुरु महाराजं अथवा वाचनाचार्य के पास जाना । वहां प्रथम दो उपधानों

में (णमोक्कार के और इित्यावहीं के) प्रारम्भ में अवस्य 'नंदीं की स्थापना करनी और इन्हीं का उत्क्षेप भी नंदी में ही करना । शेष उपधानों में नंदी का नियम नहीं हैं । उसके बाद सुबहमें पहले उत्क्षेप करें उसके बाद पोसह सामायिक लेबे पीछे दो बन्दना देकर पच्चक्खाण करें फिर मुंहपत्ति पूर्वक सुख तपकी दो बन्दना देवे ।

### उपधाप तप विधि

पंच मंगल श्रुत णमोक्कार उपधान करनेवाला, १२ उपवास, २४ आयंविल, ३५ णिब्चि, ४८ एकासणें करके १२ उपवासका नियम पूर्ण करे। पीछे 'णमा अरिहंताणं' से लेकर 'णमोलाए सन्य साहणं' तक पांच अध्ययनों की वाचना एक दिनमें लेके। उसके वाद 'एसा पंच 'णमोक्कारं। दे लेकर 'पढ़में हवइ मंगलं' तक तीन अध्ययनों की दूसरे दिन वाचना लेके। फिर इस 'णमोक्कार' के आठों अध्ययनों की एक ही वाचना एक दिनमें लेके। ६ आयंविल तथा तेला करे। तेलेके पारने में आयंविल करे, फिर तेला तथा आयंविल करे। इस प्रकार तीन तेले और ६ आयंविल करे और आठों अध्यनों की एक ही दिनमें वाचना लेके। इस तरह ८ आयंविल तथा तीन तेले मिलाने से तेरह उपवास हुए। यदि पंच मंगल 'णमोक्कार २० का पहला उपवान अविधि से किया हो तो २० पोसह तथा १२ उपवास करे। और विधिसे किया हो तो १६ पोसह १२ उपवास १ एकासण करे। यह वीसड़ नामका पहला तप है।

अव दूसरा तप 'इरियावहीं' के उपधानमें आठ अध्ययन तथा ३ अन्त की चृिलका इसमें भी पहले की तरह १२ उपवास आयंविलादि करे। पीछे 'इच्लाकारेण संदिसह॰' से लेकर 'जमे जीवा विराहिया' तक एक वाचना लेनी चाहिये और 'एगिदिया॰' से लेकर 'ठामि काउसग्गं॰' तक दूसरी वाचना हुई और एक ही वाचना लेनी हो तो पहलेकी तरह ८ आयंविल तथा ३ तेले करके लेवे 'इरियावही॰' श्रुतस्कन्ध का वीसड़ नामका तप अविधि से

किया होतो, २० पोसह, १२ उपवास करे। विधि से किया होतो तो १६ पोसह और १२ उपवास १ एकासण करे।

अब तीसरा उपवास भावअरिहंत का तप १९ उपवास का नियम पूर्ण करके ३ वाचना छेवे पहले १ तेला करें पीछे 'णमुत्युणं॰' से लेकर 'गंघ हत्थीणं' तक पहली वाचना। िकर १६ आयंबिल करें 'लोगुत्तमाणं॰' से लेकर 'धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं' तक दूसरी वाचना लेवे। पीछे १६ आयंबिल करके 'अप्पिडिहयवरणाण॰' से लेकर 'सन्त्रे तिविहेण वंदामि' तक तीसरी वाचना लेवे। यह तीसरा उपधान 'णमुत्युणं पतिसड़ नामका है यदि विधि से किया हो तो ३५ पोसह १९ उपवास और अविधि से किया हो तो ३९ पोसह २३ उपवास करे।

अब चौथे स्थापना अरिहंत श्रुतस्कन्ध का उपधान अध्ययन तीन, जिसमें १ उपबास ३ आयंबिल 'अरिहंत चेइयाणं॰' से लेकर 'वंदणवित-याए, अणत्य उससिएणं॰, से अप्पाणं वोसिरामि तक पहली वाचना, यह स्थापना अरिहंत का चौथा उपधान चउकड़ नामका, जिसमें १ पोसह २ उपवास १ एकासण करे।

नाम अरिहंत चउवीसत्थे का पहले तेला करे पीछे 'लोगस्स उज्जो-अगरे॰' से 'चउवीसंपि केवली तक पहली वाचना लेवे, फिर १२ आयंबिल करके 'उसममजिअंचवंदे॰' से पासंतहबद्धमाणं च' तक दूसरी वाचना, फिर १३ आयंबिलकर 'एवंमए अभित्युआ॰'से 'सिद्धासिद्धिमम दिसंतु' तक तीसरी वाचना लेवे। ये नाम अरिहंत चउवीसत्थेका अहावीसड़ नामका तप विधिसे किया हो तो २८ पोसह २८ उपवास । या १५ उपवास १५ एकासण करे अविधिसे किया हो ३२ पोसह १७ उपवास १ एकासणकरे।

स्त्रार्थ श्रुत स्कन्ध पहले १ उपवास पीछे ५ आयंबिल 'पुक्खरवरदी-वड्ढे॰, से लेकर 'सुअस्स भगवओ कर्रीम काउसग्गं' तक एक वाचना, यह छहा उपधान स्त्रार्थक नामका छक्कड़,६ पोसह ३ उपवास १ एकासण करे। अब सिद्धार्थक श्रुत स्कन्ध सातवां उपधान पोसहसहित १ चडिवहार  $oldsymbol{x}$ 

उपवास करे, पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं॰' से 'तारेइ नरं व नारिं वा' तक एक वाचना लेनी चाहिये। यह सातवां उपधान माला का तप है।

### अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः

प्रथम इित्यावही पिडक में कह मुंहपत्ति पिडिलेहे, दो वन्दना देवे पीछे खमासमण देकर उपधान वहन करनेवाला कहे—'पहले उपधान में पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध उक्खेबहे' गुरु कहे—'उक्खेबामो।' पहले 'पंच मंगल उपधान महाश्रुत स्कन्ध उक्खेबावणियं नंदी पवेसा विणयं काउसग्गं करावेह' गुरु कहे 'करावेमो।' पहले उपधान पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध उक्खेबावणियं नंदी पवेसा विणयं करेमि काउसग्गं,अणस्थ काउसग्ग में लोगस्स 'चंदेसुनिम्मलयरा' तक चिन्तवन करे। पार कर प्रकट लोगस्स कहें पीछे खमासमण देकर पहले उपधान पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध उक्खेबा विणयं चेइयाइं वंदावेह, गुरु कहें 'वंदावेमो।' वासक्षेपं करावेह, गुरु कहें 'करेमो' पीछे वासक्षेप पूर्वक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे। ऐसे सब उपधानों उत्क्षेप जानना चाहिये।इतनाविशेष है कि उपधानोंका पहले दो उत्क्षेप नंदी में ही करना चाहिये।इतनाविशेष है कि उपधानोंका पहले दो उत्क्षेप नंदी में ही करना चाहिये। शेष उपधानों के विषय में जब नंदी होय तब ता नंदी में करे और जो नंदी नहीं थापे तो प्रातः प्रवेश करने के दिन उत्क्षेप करना चाहिये,लेकिनजोजो उपधान वहन करे उस उसका नामोच्चारण करना चाहिये।

#### उपधान वाचन विधि

संध्या को प्रथम चडिव्वहार का पच्चक्खाण कर इरियावही॰ कह, मुंहपत्तिका पडिलेहणकर, दो वन्दना देवे । "पहले उपधान पंचमंगल महा श्रुत स्कन्ध का प्रथम बाचन प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं, अणत्थ॰" कहकर चारणमोक्कारकाकाउसग्गपार प्रगट लोगस्स॰ कहे । फिर दो खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह पहिले उपधान पंचमंगल श्रुतस्कन्ध प्रथम बाचन प्रतिग्रहणार्थ चेड्याइं वंदावेह' । गुरु के 'वंदावेमो' कहने पर 'वासक्षेप करावेह' कहे। करावेमो कहनेपर पीछे गुरु वासक्षेप करे। तदनन्तर चैलवन्दन 作者,在 只有不足法不见,不是 有在不足的不足,在在上面上,在在这种,他们也是一个人,这一个人,他们是一个一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们就是一个人 करे । पीछे उपघान वाही खमासमण देकर दोनों हाथों में मुंहपत्ति ले, मुख को ढांप आघा अंग नमाकर तीन बार पांचों अध्ययनों की वाचना लेवे । हरएक महाश्रुत स्कन्धके समाप्त होनेपर मिच्छामि दुक्कडं कहे । तप सम्पूर्ण किया निक्षेप विधि

जिस दिन तपस्या सम्पूर्ण हो उस अन्तिम दिन की संध्या को चउ-व्यिहार करके अथवा प्रातःकाल इरियावही॰ कह, मुंहपत्ति की पडिलेहणा कर दो बन्दना देवे।पीछे 'इच्छाकारेण तुब्भेअम्हं अमुक उपधान तप णिक्खेवह' कहें । गुरु के णिक्खेवामो कहने पर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदि-सह भगवन् अमुक तप निक्खेवणत्यं काउसग्गं करावेह कहे । गुरु के 'करावेमो' कहने पर इच्छामि॰ अमुक तप 'णिक्खेवणत्यं करेमि काउसग्गं अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार कर खमासमण देवे । पीछे अमुक उपधान तप णिक्खेवणत्यं चेइयाइं वंदावेह कहे । गुरु के वंदावेमो कहने पर चैत्यवन्दन करे ।

### पिंद्रपुणा विगय पारण विधि

प्रभात समय गुरु के पास आकर अगर अलग प्रतिक्रमण किया हो तो मंहपत्ति की पडिलेहण कर दो बन्दना देवे। अगर गुरु के साथ प्रतिक्रमण किया हो तो भी दो वन्दना देवे । गुरु के 'पवेयणं पवेह' कहने. पर 'पडपुण्णो विगय पारणयंकरेहत्ति' कहे । फिर स्वइच्छानुसार पञ्चक्खाण करें। पीछे गुरु के सामने 'उपधान में अभक्ति या आशातना करी हो तो उसके लिये मिच्छामि दुक्कडं' कहे।

#### क्षमा श्रमण विधि ।

उपधान बहन करने वाला व्यक्ति प्रभात समय में गुरु के पास आकर गुरु की आज्ञा से 'इरियावही' पडिक्समे कह आगमन आलोचना करके पोसह सामायिक लेकर दो खमासमण पूर्वक पडिलेहण और अंग पडिलेहण करे। पीछे मु हपत्ति पडिलेहण करके पहले खमासमण से 'ओही पडिलेहण संदिस्सावेमिं'। दूसरी खमासमण देकर 'ओही पडिलेहण' करूं।

पीछे मुंहपत्ति पिडिलेहण करके गुरु को वन्दन करे। पीछे गुरु कहें पिवेयणं पवेह, तब उपधान वहन करनेवाला कहें इच्छा॰ अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धं वा तवं करावेह। गुरु कहें—उपवासे आयंबिलेनिरुद्धेति एकासणे, ऐसा कहे। पीछे १० खमासमण अनुक्रम से कहे—बहुवेलं संदिरसावेमि १ बहुवेलंकरेमि २ वइसणं संदिरसावेमि ३ वइसणं ठाएमि ४ सज्झायं संदिरसाएमि ५ सज्झायं करेमि ६ पांगरणो, संदिरसाउं ७ पांगरणो पिडिग्गाहूं ८ कहासणो संदिरसाउं ९ कहासणो पिडिग्गाहूं १०। इसके बाद मुंहपत्ति पिडिलेहण करके दो वन्दन देवे, गुरु कहे सुख तप, तब उपधान वत करने वाला कहे आपके प्रसाद से सुख है।

अब तीसरे पहर पिंडलेहण करने के बाद स्थापना के आगे गुरुके हुकुम से इरियावही पिंडक्कमें कह पहले खमासमण से पिंडलेहण करूं दूसरे खमासमण से पोसहसाला प्रमार्जू ऐसा कह कर मुंहपित्त पिंडलेहण करे। ऐसे दो खमासमण पूर्वक अंगपिंडलेहण और मुंहपित्त पिंडलेहण करे। यहांपर अंग शब्दसे 'करिपट्ट' (कणदोरा, करधनी) जानना। ऐसा गीतार्थोंने कहा है। पीछे बसति प्रमार्जन कर वहां पर उसी दिन यदि भोजन किया हो तब तो पहरने का बस्त्र पिंडलेहण करे। बाकी बस्त्र पिंडलेहण नहीं करे। और यदि उस दिन उपवास हो तो एक भी बस्त्र पिंडलेहण नहीं करे। और यदि उस दिन उपवास हो तो एक भी बस्त्र पिंडलेहण करने की जरूरत नहीं है। पीछे गुरु के पास आकर 'इरियावही' पिंडक्कमें कह पिंडलेहणा करे अंग पिंडलेहण गुरु के सामने करे। पीछे 'सज्झाय संदिस्सावेमि' सज्झाय करेमि आठ णमोक्कार का ध्यान करे। पीछे मुंहपित्त पिंडलेहण करके र बन्दना देवे। तिविहार अथवा चउ-विवहार का पञ्चक्खाण कर १० खमासमण अनुक्रम से इस प्रकार दे—

ओही पडिलेहण संदिस्साउं १ ओही पडिलेहण करूं २ सज्झाय संदिरसाउं ३ सज्झाय करूं ४ वेसणू संदिरसाउं ५ वेसणू ठाउं ६ कहासणो संदिरसाउं ७ कहासणो पडिग्गहूं ८ पांगरणो संदिरसाउं ९ पांगरणो पडिग्गहूं १०। पीछे मुंहपत्ति पडिलेहण करके दो वन्दना दे सुख साता पूछे पीछे सर्वोपकरण पिडलेहण करे टट्टी पेशाबके स्थान आदिकी पिडलेहण करे, और जिस दिन मोजन करे उस दिन पौन प्रहर पिडलेहण के बखत थाली कटोरादिक सर्व उपमोग के पात्रादिक पिडलेहण करे। उपवास के दिन पिडलेहण नहीं करे। तीसरे पहर की विधि तथा पक्खी प्रतिक्रमणमें असिज्झाई काउसग्ग न करे तो आगामी पक्खी तक सर्व सिद्धान्त की असिज्झाई हो। इरियावही का पाठ भी पढ़ना नहीं भूले। इसिलये असिज्झाई में भी असिज्झाई का काउसग्ग करना चाहिये युग प्रधान श्रीजिनचन्द्र सूरिजी महाराज ने महोपाध्याय श्रीसागरचन्द्र गणि से पूछा तब ऐसा ही जबाव मिला योगारम्म की यह विधि है। यहां चउमासी के योगारम्म में वर्ष और महीने की शुद्धि का मुद्र्त नहीं देखना चाहिये दिन शुद्ध देखना। मृदुधुवचरिक्षप्रे, बारे भौमं शिन बिना। आद्यादनं तपोनंद्या, लोचनादि शुमं शुभम ॥१॥

### उपधान\* तप विवरण गाथा।

श्री मुह्पत्ति पण्णासं, अहारस आसणिम्म पिडलेह ।
दंडे पत्ते सोलस, कप्पे पणवीस गोयमा ॥१॥
पणवीस चोलपट्टे, गुरु कंबल तहय चेवसंथारे ।
कहासणे अहारस, जपे दंडेअ पंचेव ॥२॥इति प्रतिलेखणा।
पण उववासा याम, अह्रयं कुणह अह्रमं अंते ।
णमोक्कार उवहाणं, इत्तियमित्तं इरियाए ॥१॥
सक्कत्थयंमि तहएगं, अह्रमं अंबिलाणवत्तीसं ।
अरिहंत चेइयत्थए, चडत्थ माया मितयगं च ॥२॥
चडवीसत्थए मह मेगं, पणवीस हुंति आयामा ।
णाणत्थयंमि चडत्थं, आयामा पंच उवहाणं ॥३॥
चडवीसं उववासा, एगासी अंबिलाण सव्वंगं ।
पंचोत्तरं च पोसह, सय मुवहाणे मुजाणेसु ॥१॥

<sup>\*</sup> इस तपस्याका प्रचार विशेष गुजरात देशमें है।

बारस बारस एगो, पणवीस अहाइ पाण पण्णरस । अहय उववासा, सन्वंगं सहु चउसही ॥५॥ णवकार सहिय पोरिसी, पुरमहु अवहु एग दुभत्तेहिं । एगहाणय णिन्विगई, विलेहिं अत्यं विलेणं च ॥६॥ पण याला चउबीसं, सोलस चउचउहि अहहि कम्मेणं। चउइ दुहिय एगेणय, आयरणाहोइ उववासे ॥७॥

### पैंतालीस आगम तप विधि

गुरु के पास शुभ दिन पैतालीस आगम तप ग्रहण करे और दृज, पञ्चमी, अष्टमी, ग्यारस तथा चौद्स आदि ज्ञान तिथिके दिन अनुक्रमसे उपवास और एकासण करे। जिस दिन जिस आगम का जाप करना हो उस दिन उस आगम का जाप करे और पढ़े। सिद्धान्त लिखावे, शास्त्र छपवावे, पढ़नेवालों की यथाशक्ति सहायता करे और ज्ञान की वृद्धि करे। पैतालीस आगमका स्तवनपढ़े अन्यथा किसी दृसरे से श्रवण करे। इस प्रकार ४५ दिन पूर्ण होने पर पैतालीस आगम की पूजा करावे। मन्दिर अथवा उपाश्रय में ज्ञानोपकरण चढ़ावे। इस तपस्या के फलस्वरूप जड़ता तथा मूर्खता का नाश हो सुधुद्धि और शुद्ध आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

४५ आगमों का जाप भी ४५ आगमों के स्तवन के साथ दिया गया है।

#### ग्यारह गणधर तपस्या विधि

शुभ दिन शुभ मुहूर्त्तमें गुरुके मुखसे ११ गणधर तप ग्रहण करे। ग्यारह दिन उपवास या एकासणा करे। जिस दिन जिस गणधर महाराज का तप हो उस दिन उन्हींके नामकी २० माला का जाप करे। स्तवन के साथ ही ग्यारह गणधरों के जाप दिये गये हैं। चूंकि ये भगवान महावीर स्वामी के प्रमुख शिष्य थे, जाति के ब्राह्मण थे, और द्वादशाङ्गी वाणी के रचिता थे। अतः माङ्गलिक होने पर भव्यात्माओं के लिये ये तप भी

आदरणीय है। इसलिये भव्य जीव गणधर तप की आराधना करें तथा गौतम रास पढ़ें अथवा सुनें। तप के पूर्ण होनेपर गणधरों की पूजा करावे, गुरु महाराजों की भक्ति करे और दान देवे, यथाशक्ति साधर्मी वत्तल करे । इससे अन्तमें पुण्य उपार्जन हो अनन्त (मोक्ष)अक्षय सुख की प्राप्ति होती है।

### णमोक्कार तप विधि

श्रम दिन गुरु के पास णमोक्कार तप ग्रहण करे। जिस पद के जितने अक्षर हों उतने ही उपवास करे, उसी पदकी २० मालाका जाप करे। णमो अरिहंताणं ७ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे। णमो सिन्द्राणं ५ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे। णमो आयरियाणं ७ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे। णमो उवज्झायाणं ७ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे। णमो लोए सव्वसाहूणं ९ उपवास तथा इसी पदकी २० माला काजाप करे। एसो पंच णमोक्कारो ८ उपवास तथा इसी पदकी २० मालाका जाप करे। सव्वपावप्पणासणो ८ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे। मंगलाणं च सव्वेसि ८ उपवास तथा इसी पदकी २० माला का जाप करें। पढमं हवइ मंगलं ९ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।

इस प्रकार ६८ उपवास करे और प्रतिदिन णमोक्कार तप का स्तवन पढ़े । तप पूर्ण होनेपर यथाशक्ति उद्यापन करे । चौदह पूरब का सार इस णमोक्कार तप के करनेवालेको अनेक सम्पदायें प्राप्त होती हैं और अन्तमें शाश्वत मोक्ष पद की प्राप्ति होती है।

# जयित संयुक्त नवपद ओली विधि

चैत्र सुदी ७ से अथवा आसीज सुदी ७ से ओली शुरू करें । कदा-चित अगर तिथि घटी हो तो छह से, अगर वढ़ी हो तो अप्टमी से शुरू करें। नी दिन वरावर आयंविल करें। भूमि को शुद्ध करके चौकी अथवा पट्टे के ऊपर सिद्ध चकजी की स्थापना करे

प्रभात समयमें राई प्रतिक्रमण करके, बस्तों की पिडलेहण करे फिर मिन्दरजी में अथवा जहां सिन्ध चक्रजीकी स्थापना की हो वहां आकर पांच णमुत्थुणं को बन्दना करे। पीछे नव मिन्दरों के दर्शन कर नव चैत्यवन्दन करे, अगर नव मिन्दरों का योग न हो तो एक ही मिन्दर में एक बार चैत्यवन्दन करना चाहिये। हमेशा दिनमें तीन बार पूजा करे, प्रातःकाल बासक्षेप से पूजा करे। दोपहर के समय स्नात्र पूजा कर अप्ट प्रकारी पूजा करे और शाम को घूप, दीप से पूजा करे। दोपहर के समय गुरु के पास आकर राई आलोवे। अन्मुहिओमि के पाठ सहित आयंबिल का पन्चक्खाण लेवे। प्रथम अरिहन्त पद का वर्ण खेत (सफेद) है अतएव चावल और गरम पानी से आयंबिल करे। पीछे अरिहन्त के बारह गुणों को विचार कर नमस्कार करे। प्रत्येक गुणोंके पूर्व में इन्छामि से समासमण देना चाहिये।

इस प्रकार नमस्कार करके अणत्य॰ कहकर १२ लोगस्स का काउ-सग्ग कर प्रगट लोगस्स॰ कहें । पीछे स्वस्थान पर जाकर चैत्यवन्दन करें । पच्चक्खाण पार आयंबिल करें । पीछे चैत्यवन्दन कर पाणहार पच्चक्खाण करें । 'ॐ हीं णमो अरिहंताणं' इस पद की २० माला फेरें । श्रीपाल चित्र पढ़े अथवा सुने । पौन पहर दिन बाकी रहने से तीसरी बार णमुत्थुणं से देव वन्दन करें । फिर सामायिक ग्रहण कर दिन रहते प्रतिक-मण करें तथा मन्दिरजी में धूप पूजा कर आरती करें । सोने के पूर्व इरियावही॰ रे पिडक्कम कर चैत्यवन्दन करें । राई संथारा गाथा॰ पढ़े अथवा सुने । जहां तक निद्रा न आवे वहां तक नवपद के गुणों का स्मरण करें । मन, वचन, काया से ब्रह्मचर्य का पालन करें ।

### द्वितीय दिवस विधि

इसी तरह दूसरे दिन भी प्रभातिक किया करे। सिन्द पद का लाल वर्ण है अतएव गेहुंका आयंबिल करें 'ॐ ही णमो सिन्दाणं' इस पदकी २०

१—प्रष्ठ २। २—प्रष्ठ ४।३—प्रष्ठ ३।४—प्रष्ठ ५८।

माला फेरे । सिन्धपदके आठ गुण हैं अतएव ८ नमस्कार खमासमण सहित करे और अणत्य॰ कहे आठ लोगस्स का काउसग्ग करे । शेप विधि पूर्वोक्त करे ।

### तृतीय दिवस विधि

पूर्वोक्त विधि से प्रभातिक कृत्य करें। आचार्य पद का पीला वर्ण है अतएव चने का आयंबिल करें। 'ॐ हीं णमो आयरियाणं' की २० माला फेरें। आचार्य पदके गुणों का स्वमासमण सहित छत्तीस नमस्कार करें।

इस प्रकार करके अणत्य॰ पूर्वक ३६ छोगस्स का काउसग्ग करे पीछे पार कर एक छोगस्स॰ कह पूर्वोक्त शेष विधि सम्पूर्ण करें।

# चतुर्थ दिवस विधि

'ॐ हीं णमो उवज्झायाणं' की २० माला फेरे । मूंग का आयंविल करे । उपाध्याय पद के गुणों को खमासमण सहित २५ नमस्कार करे ।

इस रीति से पचीस नमस्कार कर, अणत्य॰ सहित पचीस लोगस्स, का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहें । पूर्वोक्त शेष सम्पूर्ण विधि प्रथम दिन की तरह करें।

### पञ्चम दिवस विधि

'ॐ ही णमो लोए सन्त्रसाहुणं' इस पद की २० माला फेरे । साधु पद का रंग काला होने से उड़द का आयंबिल करे । साधु पद के सत्ता-इस गुणों को खमासमण पूर्वक नमस्कार करे ।

सत्ताइस लोगस्स का काउसग्ग करे । शेष सम्पूर्ण विधि पूर्ववत् करे इन पञ्च परमेप्टी के सब गुणों का जोड़ १०८ होता है अतएव माला में भी दाने १०८ होते हैं ।

### षष्टम दिवस विधि

'ॐ हीं णमों दंमणसां की २० माला फेरें। दर्शन पद का वर्ण सफेद होने से चावल का आयंबिल करें। सम्यक्त के ६७ गुणों की खमासमण पूर्वक नमस्कार करें। ,我是我们的人,我们是是是我们的人,我们们的人,我们们是我们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人

पीछे ६७ लोगस्स का काउसग्ग करना। शेष विधि पूर्ववत जानना।

### सप्तमं दिवस विधि

'ॐ हीं णमो णाणस्सं' इस पद की २० माला फेरे। ज्ञान पद का उज्वल वर्ण है अतः चावल का आयंबिल करे। ज्ञान पद के गुणों को खमासमण पूर्वक ५१ नमस्कार करे।

इस प्रकार ५१ नमस्कार करके ।पीछे अणत्य॰ पूर्वक ५१ छोगस्सका काउसम्ग पार प्रगट छोगस्स॰ कहे । शेष विधि पूर्वोक्त है ।

### अष्टम दिवस विधि

'ॐ हीं णमी चारित्तस्स' इस पद की २० माला फेरे । चारित्र पद का उज्बल वर्ण है अतएव चावल का आयंबिल करे । चारित्र पद के गुणों को खमासमण पूर्वक ७० नमस्कार करे ।

इस प्रकार ७० नमस्कार करके । अणत्थ० सहित ७० लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे । शेष विधि पूर्ववत् है ।

### नवम दिवस विधि

'ॐ हीं णमो तबस्स' इस पद की २० माला फेरे। चाबल का आयंबिल करे। तप पद के गुणों को खमासमण पूर्वक ५० नमस्कार करे। प्रत्येक गुण के पूर्व में खमासमण देवे।

इस विधि से ५० नमस्कार करके अणत्य॰ पूर्वक पचास लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहे । शेष विधि पूर्वोक्त समझना । अन्त में नवमें दिन अधिक भक्तिभाव पूर्वक विधि अनुसार नवपद मण्डल पूजा करावे ( नवपद मण्डल पूजा विधि आगे दी गई है । )

१० वें दिन तप का उद्यापन करें । मन्दिर के खाते में और ज्ञान के खाते में तथा गुरु को यथाशक्ति दान करें । साधर्मीवत्सल करें ।

# नवपद जयति (वन्दना)

# नव पद जयित, चैत्यवन्दन, स्तवन थूई अरिहन्त पद की १२ जयित

॥१॥ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥ २॥ पुष्प ष्ट्रिप्ट प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥ ३॥ दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥ ४॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥ ४॥ स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥६॥ भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥६॥ भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।॥ दुन्दुमि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।॥ ज्ञानातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।॥॥ ज्ञानातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥१॥ ज्ञानातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥१॥ वचनातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।।।।। प्रातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।।।।। प्रातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।।।।।। प्रातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः॥।।।।।।

### अरिहन्त पद चैत्यवन्दन

जय जय श्री अरिहन्त भानु, भिव कमल विकाशी । लोकालोक अरूपि रूप, सम वस्तु प्रकाशी ॥१॥ समुद्धात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशी । शुक्क चरम शुचि पाद से, भयो वरन अविनाशी ॥२॥ अन्तरङ्गरिपु गण हणिए, हुए अप्पा अरिहन्त । तसु पद पंकज में रहत, हीर धरम नित सन्त ॥३॥

#### अरिहन्त पद स्तवन

श्री तेरम गुण बसि के कन्त, कर्म कुभंजे श्री अरिहन्त मन मानले। अष्ट समय में समयें तीन, सर्व आहार थी होवे हीन मन मानले ॥१॥ बादर का ये मन बच भोग, तनु तनु से फुन दढ़ तनु योग मन मानले। सक्ष्म काय ते मन बच रोक, निज वीर्ये ताकुं कर फोक मन मानले॥२॥

तीर्थदूर भगवान को केवल ज्ञान होनेके वाद विहारकाल में उपरोक्त अतिशय होते हैं।

arakan beranda beranda beranda beranda beranda bakar bak

संज्ञी मात्र के मन व्यापार, बे इन्द्रिने वाक्य प्रचार मन मानले। आदि समय रह्यो पण कसु जीव, सूक्ष्म लह्यो तिण जोग अतीवमनमान ले ॥३॥ एषां योग थी समयें एक, हीना संख गुणों कर छेक मन मानले। समया संखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध मन मानले॥॥॥ वेद समें ना हारता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनशय मन मानले। तेरमें गुण में गुण समें देव, आपो सा जग कूं नित मेव मन मान ले॥।॥

# अरिहन्त पद शुई

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोका लोक खरूपो जी। केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनन्त गुणे करि पूरो जी॥ तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थङ्कर न्रो जी। वारे गुणांकरी एहवां अरिहन्त, आराधो गुण भूरो जी॥१॥

### श्री सिद्ध पद की ८ जयति

॥१॥ अनन्त ज्ञान संयुक्ताय श्रीसिद्धाय नमः॥२॥अनन्त दर्शन संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥३॥ अन्याबाध गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥१॥ अनन्त चारित्र गुण संयुक्ताय श्री निद्धाय नमः ॥५॥ अक्षय स्थिति गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥६॥ अरूपी निरंजन गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥०॥ अगुरु लघु गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥८॥ अनन्तवीर्य गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥।

### सिद्ध पद् चैत्यवन्दन

श्री शैलंसी पूर्व प्रान्त, तनुहिनत भागी। पुट्य पञ्जोग असंग से, ऊरध गत जागी ॥१॥ समय एक में लोक प्रान्त, गये निगुण निरागी। चतन भूपं आत्म रूप, सुदिसा लहि सागी॥२॥ केवल दंसण णाणथी ए रूपातीत खभाव, सिन्ध भये तसु हीर धर्म, बन्दे धरि शुभ भाव॥३॥

<sup>\*</sup> सिद्ध भगवान् में यह आठ गुण मोक्ष में जाने के वाद पैदा हो जाते हैं।

### सिद्ध पद स्तवन

यारे महंला ऊपर मेह झरोखे बीजली ॥ ( ए चाल )

अप्ट बरस नग मास हीना कोडी पूर्व में, म्हारा लाल ही ना कोडी पूर्व में । उत्कृष्टो करे बास संयोगी धाम मे ॥ म्हारा लाल संयोगीधाममें अजागीके अन्त तजे भवभव्यता म्हारा लाल तजे भव भव्यता। शैलेशी लहे कर्म दले गुणश्रेणिता म्हारा लाल दले गुण श्रेणिता ॥१॥ हस्वाक्षर पञ्च काल रहे ते योग में म्हारा लाल रहे तेयोगमें। तेरस प्रकृति नो अन्त करीने अन्तमें (म्हारालाल करीने अन्तमें) ॥ गमण करे नगर ज स्तें अक्रिय होयने ( म्हारालाल अक्रिय होयने ) पुच्च पयोग असंग खभाव अर्वधने म्हारालाल स्वभावअर्बधने ॥२॥ इषु गुण नव परमाण योजन लक्षे कही म्हारालाल योजन लक्षे कही । वर्तुल विसदा भाष निरा लंबन सही म्हारालाल निरालंबन सही ॥ मध्ये योजन अन्य घनाकृति अन्त में म्हारालाला घनाकृति अन्त में। मक्षी पक्ष थी हीणभणी सिद्धान्त में म्हारालाला भणीसिद्धान्त में ॥३॥ तनु पन्भारा नाम शिला से योजने म्हारालाल शिला से योजने। लघु अंगुल बचीस प्रमाण अवगाहना म्हारालाल प्रमाण अवगाहना। वृद्धि धन शत पञ्च गुणासे हीनता, म्हारा लाल गुणासे हीनता मिलिया एकमें अन्त अवाधा नाल ही म्हारा लाल अवाधा नाल ही ॥॥ अप्ट प्राण धरि रम्य सिरीही जो सही म्हारालाल सिरीही जो सही, वीजो पद श्री सिन्द घरो मन गेह में म्हारालाल घरो मन गेह में । कुशल भये जग जीव मिलांगा ते हमें म्हारारालाल मिलंगा ते हमें ॥५॥

# सिद्ध पट शुई

अप्ट करम कूं दमन करीनें, गमन कियो शिववासीजी। अव्याचाय सादि अनादि, चिदानन्द चिद्राशीजी ॥१॥ परमातम पद पूर्ण विलाशी. अघ धन दाघ विनाशीजी । अनन्त चतुष्टय शिव पद्ध्यावो, केवल ज्ञानी भाषीजी ॥२॥

大大人,是一个人,我们就是一个人,我们就是一个人

# आचार्य पद की ३६ जयति

१ प्रतिरूप गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। २ मूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ३ युगप्रधान गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ४ मधुर वाक्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ५ गांभीर्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ६ घेर्यगुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ७ उपदेश गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ८ अपरि श्रावी गुण संयु-क्ताय श्री आचार्याय नमः । ९ सौम्य प्रकृति गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १० शीलगुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ११ अविग्रह गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। १२ अविकथक गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १३ अचपल गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १४ प्रशान्त बद्दन गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १५ क्षमागुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १६ ऋजुगुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १७ मृदु गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १८ सर्व संग सुक्ति गुण संयु-क्ताय श्री आचार्यीय नमः १९ द्वादश विधि तप गुण संयक्ताय श्री आचा-र्याय नमः । २० सप्तद्श विधि संयम गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २१ सत्यवत गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। २२ शीच्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २३ अकिंचन गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २४ ब्रह्मचर्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २५ अनित्यभावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । २६ असरण भावना भावकाय श्री आचा-र्वीय नमः । २७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्री आचार्यीय नमः । २८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । २९ अन्यत्व भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३० अशुचि भावना भावकाय श्री आचा-र्याय नमः । ३१ आश्रव भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३२ संवर भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३३ निज्जेरा भावना भावकाय श्री आचार्वीय नमः । ३४ लोक स्वरूप भावना भावकाय श्री आचार्यीय नमः ।

३५ वोधि दुर्लभ भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३६ धर्म दुर्लभ भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः ।

# आचार्य पद् चैत्यवन्द्न

जिन पद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुणधारी। प्रबल सबल घन मोह की, जिणतें चमुहारी ॥१॥ ऋञ्चादिक जिन राज गीत, नय तय विस्तारी। भव कुपें पापें पड़त. जग जन निस्तारी ॥२॥ पंचा चारी जीव के. आचारज पद सार । तिन कूं वन्दे हीर धर्म, अप्टोत्तर सी बार ॥३॥ आचार्य पद् स्तवन

खंति खड़ग थी जेणें, हण्यो क्रोध सुभट सम देणें हो (गणपति गुणपेखी ) मान महागिरि वयरें।अति शोभन मद्दव वयरें हो ( गणपित गण-पेखी ) ॥१॥ दंभ रूप विपवेली वर अञ्जव कीले ठेली हो ( गणपित गुणपेखी ) । मूर्छी बेल थी भरियो, लोह सागर मुत्तें तरियो हो ( गणपित गुण पेखी ) ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दम शम जन्त्रे कीनो हो ( गणपति गुणपेखी )। मोह महा मह ताड़चो, पुण वैराग सुगरं पाडचो हो ॥ ( गणपति गुणपेखी ) ॥३॥ दोप गयंद वश कीनो, धरि उपशम अंकुश लीनो हो ( गणपित गुणपेखी ) अंत रंग रिपु भेद्या. सुर वर पिण जिणिणपेध्या हो ( गणपति गुणपेखी ) ॥४॥ रसकृति गुण थौ ठीनो । मृत्रें अरथें आगम पीनो हो ( गणपित गुणपेखी )। आचारज पट एहवी. धरि जीव कुशलता सेवा हो ( गणपति गुणपेखी ) ॥५॥

# आचार्य पद थुई

पंचाचार कूं पाले उजवाले. द्वांप रहित गुणधारी जी । गुण छत्तीमें आगम धारी, द्वादश अंग विचारी जी ॥

- आबार्य महाराज में यह उन्मीत हैं। गुण अवन्योप होने ही पाहियें।

प्रबल सबल घनमोह हरण कूं, अनिल समो गुणवाणी जी। क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुणध्यानी जी ॥१॥ उपाध्याय पद की २५ जयति

१ आचारांग सूत्र पठनगुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । २ सुयग-ड़ांग सूत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः । ३ श्री ठाणांग सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्यायं नमः। ४ श्री समवायांग सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ५ श्री मगवती सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । ६ श्री ज्ञाता सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ७ श्री उपाशक दशा सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ८ श्री ्अंत गड दशा सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । ९ श्री अणु-त्तरोववाई सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १० श्री प्रश्न-'व्याकरण सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ११ श्री विपाक सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १२ उत्पाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १३ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १४ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १५ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १६ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १७ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १८ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । १९ कर्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । २० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । २१ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । २२ अविध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । २३ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २४ कियाविशाल पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः । २५ लोक बिन्दुसार पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः ।

अपाध्याय महाराज २५ गुणोंकरके सिहत होते हैं, वर्तमानमें ११ अङ्ग १२ उपाङ्ग ६ छेद ग्रंथ १० पद्मणा ६ मूलसूत्र इन ४५ खागमोंके जानकार होने चाहिय।

### उपाध्याय पद चैत्यवन्दन

धन धन श्री उवझाय राय, सठतां घन मंजन । जिनवर दिसत दुवाल संग, कर कृत जग रंजन ॥१॥ गुण वण भंजण मण गयंद, सुय शृणि किय गंजण ।

कुणा लंघ लोय लोयणें, जत्थय सुय मंजण ॥२॥ महाप्राण में जिन लह्योए, आगम सें पद तुर्य । तिन पें अहि निशि हीर धर्म. बन्दे पाठक वर्य ॥३॥

#### उपाध्याय पद स्तवन

सांविष्ठिया अलगा रहोनें (ए चाल) हुयने हुयने हुयने दूरी हुयने। चेतन भाखें सठनें (दृरी हुयने) तूं मुझ पास क्यूं आवे (दृरी हुयने) तुझ ने कुण बतलावे (दृरी हुयने)। तो संगे निज पंचेन्द्रीनो, रचना चरम मुलाणो। णाणावरणी खय उपशम सें भावेन्द्री मंडाणो (दृरी हुयने)॥१॥ द्रव्येतें परजासे कीना, जाति नामव्यपदेशें, एवंतो गो तुरग गजा-दिक, क्षणकमें उपदेशें (दृरी हुयने)॥२॥ इत्यादिक बहु मुझ कूं शंका, तेरे संगे लागी। नील वर्ण की समता सेती, मैं भयो तोसूं रागी (दृरी हुयने)॥३॥ उपकहियें हिणयो भिव यानो, अधियां लाभत आय। आधीनां मन पीड़ाना में, मायो येन विलायें (दूरीहुयने)॥४॥ आधिक्ये स्मिरये वर आगम सूत्र सें ते उवझाय। तत्सेवा ते हिण सठतां कूं चेतन कुशलता पाय (दृरी हुयने)॥५॥

都不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不不,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的一个一个

### उपाध्याय पद शुई

अंग इग्यारे चउ दे पूरब, गुण पचवीसनाधारीजी । सूत्र अरथधर पाठक कहिये जोग समाधि विचारीजी ॥ तपगुण सूरा, आगम पूरा, नयनिक्षेप तारीजी ॥ मुनि गुणधारी गुण विस्तारी, पाठक पूजो अविकारी जी ॥१॥

# साधु पद की २७ जयति

।।१।।प्राणातिपात विरमणवत युक्ताय श्रीसाधवे नमः।।२।।मृषावाद विर-मणवत युक्ताय श्री साधवेनमः ॥३॥ अद्तादान विरमणवत युक्ताय श्री साधवे नमः ॥४॥ मैथुन विरमणवत युक्ताय श्री साधवेनमः ॥५॥ परिग्रह विरमण वत युक्ताय श्रीसाधवे नमः॥६॥ रात्रि भोजन विरमण वत युक्ताय श्री साघवेनमः ॥७॥ पृथ्वी काय रक्ष काय श्री साघवेनमः ॥८॥ अप्पकाय रक्ष-काय श्री साधवेनमः ॥९॥ तेऊकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१०॥ वाउ-काय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥११॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१२॥ त्रसकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१३॥ एकेन्द्रिय जीव रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१४॥ बेर्डान्द्रय जीव रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१५॥ तेडन्द्री जीव रक्षकाय श्री साधवे नमः ॥१६॥ चौरिन्द्री जीव रक्षकाय श्री साधवे नमः ॥१७॥ पञ्चेन्द्री जीव रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१८॥ लोभ निग्रह काय श्री साधवेनमः ॥१९॥ क्षमा गुण युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२०॥ शुभ-भावना भावकाय श्री साधवेनमः ॥२१॥ प्रति लेखनादि क्रिया शुद्ध कारकाय श्री साधवे नमः ॥२२॥ संयम योग युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२३॥ मनो गुप्ति युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२४॥ वचन गुप्ति युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२५॥ कायगुप्ति युक्ताय श्री साधवे नमः ॥२६॥ शीतादि द्वाविंशति परीसह सहम तत्पराय श्री साधवे नमः ॥२७॥ मरणान्त उपसर्ग सहन तत्पराय श्री साधवेनमः ॥

### साधु पद् चैत्यवन्दन

दंसण णाण चरित्त करी, वर शिव पद गामी । धर्म शुक्ल सुचि चक्रसे आदिम खय कामी ॥१॥ गुण पमत्त अपमत्त पं, भये अंतरजामी । मानस इन्द्रिय दमन भूत, सम दम अभिरामी ॥२॥ चारित्र घन गुण गण भरखो ए पंचम पद सुनिराज।तत्पद पंकज नमत है हीर धर्म के काज ॥३॥

<sup>#</sup> साधुओं में वे सत्ताइस गुण अवश्य होने चाहिये।

### साधु पद स्तवन

मालन मालन मत कहो ( ए चाल ) निकषाया जग जन कहे । धारे चउगित वसन सेरोसहो ( मुनिन्दजी ) राग हीन भय तू करे । (साहिबा) शिव रमणी से हेतु हो । ( मुनिन्दजी ) ॥१॥ सर्व प्रमाद तजी रहे ( साहिबा ) छट्टे पूरंब कोड़ हो ( मुनिन्दजी ) शत सो गम आगम करे ( साहिबा ) पामें कर्म निकन्द हो ( मुनिन्दजी ) ॥२॥ प्रचला निद्रा में रही ( साहिबा ) । बारम गुणनो वास हो ( मुनिन्दजी ) ॥ स्थित रस धात प्रमुख करे । ( साहिबा ) जो गुण संख्यातीत हो ( मुनिन्दजी )॥३॥ तोपिण तिण जगमें लही । ( साहिबा ) त्रिक धन गुण नीख्यात हो ( मुनिन्दजी )॥३॥ रयण त्रयसें शिव पथें ( साहिबा ) साधन परवर जीव हो । मुनिन्दजी ) ॥४॥ जगतीव हो ( मुनिन्दजी )॥४॥

# श्री साधु पद थुई

सुमित गुपित कर संयम पाले, दोष बयालीस टाले जी। षट्काया गोकुल रखवाले, नव विध ब्रह्म व्रत पाले जी॥ पच महाव्रत सूधा पाले, धर्म शुल्क उजवाले जी। क्षपक श्रेणी करि कर्म खपावे, दमपंद गुण उपजावे जी॥१॥

# सम्यक्त्व दुर्शन पद की ६७ जयति

१ परमार्थ संस्तव रूप श्री सद्दर्शनाय नमः । २ परमार्थ ज्ञातृ सेवन रूप सद्दर्शनाय नमः । ३ व्यापन्न दर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः । १ क्षुश्रुषा रूप सद्दर्शनाय नमः । ६ धर्म राग रूप सद्दर्शनाय नमः । ७ वैयावृत्ति रूप सद्दर्शनाय नमः । ८ अर्हद् विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । ९ सिद्ध विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । १० चैत्य विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । ११ श्रुत विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । ११ श्रुत विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । १२ धर्म विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । १३ साधुवर्ग

也是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人

विनय रूप सदर्शनाय नमः। १४ आचार्य विनय रूप सदर्शनाय नमः। १५ उपाध्याय विनय रूप सदर्शनाय नमः। १६ प्रवचन विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । १७ दर्शन विनय रूप सद्दर्शनाय नमः । १८ संसारे जिन सारमिति चिन्तन रूप सद्दर्शनाय नमः। १९ संसारे जिन मति सार चिन्तन रूप सद्दर्शनाय नमः । २० संसारे जिन मत स्थित साध्वादिसार मिति चिन्तवन रूप सद्दर्शनाय नमः । २१ शंका दृषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २२ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २३ विचिकित्सा रूपदूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २४ क्रद्धष्टि प्रशंसा दृषण रहिताय सद्दर्शनायनमः। २५ तत्परिचय दृषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः । २६ प्रवचन प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः । २७ धर्म कथा प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः । २८ वादी प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः । २९ नैमित्तिक प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः । ३० तपस्वी प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः । ३१ प्रज्ञप्तादि विद्या मृत्यभावक रूप सद्दरीनाय नमः। ३२ चूर्ण जनादि सिन्द प्रभावक रूप सद्दरीनाय नमः । ३३ कवि प्रभावक रूप सद्दरीनाय नमः । ३४ जिनशासने कौशलता भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः । ३५ प्रभावना भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः । ३६ तीर्थ सेवा भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः । ३७ धैर्यता भूषण रूप सहरीनाय नमः । ३८ जिन शासने भक्ति भूषण रूप सहरीनाय नमः । ३९ उपराम गुणरूप सद्दरीनाय नमः। ४० संवेग गुण रूप श्री सद्दरीनाय नमः । ४१ निवेंद् गुण रूप श्री सद्दर्शनाय नमः । ४२ अनुकम्पा गुण रूप श्री सद्दर्शनाय नमः । ४३ आस्तिक गुण रूप सद्दर्शनाय नमः । ४४ पर तीर्थकादि वन्दन वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः । ४५ पर तीर्थकादि नम-स्कार वर्जन रूप श्री सद्दरीनाय नमः । ४६ पर तीर्थकादि आलाप वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः । ४७ पर तीर्थकादि संलाप वर्जन रूप सद्दरीनाय नमः । ४८ पर तीर्थकादि असनादिक दान वर्जन रूप श्री सदर्शनाय नमः। ४९ पर तीर्थकादि गंध पुष्पादि प्रेषण वर्जन रूप श्री सदर्शनाय नमः । ५० राजाभियोगाकार युक्त श्री सदर्शनाय नमः । ५१ गणाभियोगाकार युक्त श्री

सहर्शनाय नमः । ५२ बळाभियोगाकार युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ५२ सुराभियोगाकार युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ५४ कांतार वृत्याकार युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ५५ गुरु निग्रहाकार युक्त श्रीसहर्शनाय नमः ५६ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य मूळमिति चिंतन रूप श्री सहर्शनाय नमः । ५७ चारित्र धर्म पुरस्य द्वारमिति चिंतन रूप श्री सहर्शनाय नमः । ५८ चारित्र धर्मस्य-प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप श्री सहर्शनाय नमः । ५९ चारित्रधर्मस्याधार चिंतन रूप श्री सहर्शनाय नमः । ६० चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चिंतन रूप श्री सहर्शनाय नमः । ६१ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभूमिति चिंतन रूप श्री सहर्शनाय नमः । ६१ अस्ति जीवेति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६२ सत्य जीव नित्येति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६४ सत्य जीव कर्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६५ सत्य जीव कर्माणि वेद्यतीति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६६ जीव स्यास्ति निर्व्वाणमिति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६६ जीव स्यास्ति निर्व्वाणमिति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपयेति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपयेति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः । ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपयेति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सहर्शनाय नमः ।

### दर्शन पद चैत्यवन्दन

हुय पुग्गल परियद्ध अड्ड परिमत संसार । गंठि भेद तब करि लहे। सब गुण आधार ॥१॥ क्षायक वेदक शशि असंख उपशम पणवार । विना जेण चारित्र णाण, नहिं हुए शिव दातार ॥२॥ श्री सुदेव गुरु धर्म नीए । रुचि लंछन अभिराम । दरशन कूं गणि हीर धर्म अहनिश करत प्रणाम॥॥॥

#### दर्शन पद स्तवन

रामचन्द्र के बाग आवो मोह रह्योरि ( ए चाल ) देवें श्री जिनराज । गुरुते साधु भण्योरी । धर्म जिनेश्वर प्रोक्तः। लंछण बोधि तणोरी ॥१॥ बोध लाभ के काज । सप्तम नरक भलो री । तेण बिना सुरलोक । तासे अधिक बुरोरी ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोध ही छांह लहेरी । उपशम

ई० भेदों करके सहित जीव सम्यक्त्वी होता है।

क्षायक वेद ईश्वर तीन कहेरी ॥३॥ भव सायर हे अपार, कुण अस्ताघ़ कह्योरी । जसु लामें ते होय गोस पद मात्र खरोरी ॥४॥ यद् भावें अप्रमाण, णाण चारित्त भलोरी, बोध धर्म में जीव, लामे कुशल कला री ॥५॥

# दर्शन पद थुई

जिन पण्णत्त तत्व सुधा सरधे, समिकत गुण उजवाले जी।
भेद छेद करि आतम निरखी, पशु, टाली सुर पावे जी।।
प्रत्याख्याने सम तुल भाख्यो, गणधर अरिहंत सूरा जी।
ए दरशण पद नित नित बंदो, भव सागर को तीरा जी॥१॥

# ज्ञान पद की ५१ जयति

१ स्पर्शनेन्द्रि व्यंजनावग्रह मितज्ञानाय नमः । २ रसनेन्द्री व्यंजनावग्रह मितज्ञानाय नमः । ३ घाणेन्द्री व्यंजनावग्रह मितज्ञानाय नमः । १ स्पर्शनेन्द्री अर्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ५ स्पर्शनेन्द्री अर्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ७ घाणेन्द्री अर्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ७ घाणेन्द्री अर्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । ८ चक्षुरिन्द्री अर्थावग्रह मितज्ञानाय नमः । १ स्पर्शनेन्द्री ईहा मितज्ञानाय नमः । ११ स्पर्शनेन्द्री ईहा मितज्ञानाय नमः । ११ स्पर्शनेन्द्री ईहा मितज्ञानाय नमः । १४ चक्षुरिन्द्री ईहा मितज्ञानाय मनः । १४ चक्षुरिन्द्री ईहा मितज्ञानाय मनः । १६ मनेकरी ईहा मितज्ञानाय नमः । १९ प्रोत्रेन्द्री अपाय मितज्ञानाय नमः । १८ रसनेन्द्री अपाय मितज्ञानाय नमः । १८ रसनेन्द्री अपाय मितज्ञानाय नमः । १० रप्शनेन्द्री अपाय मितज्ञानाय नमः । २० चक्षुरिन्द्री अपाय मितज्ञानाय नमः । २१ प्राणेन्द्री अपाय मितज्ञानाय नमः । २१ प्राणेन्द्री धारणा मितज्ञानाय नमः । २४ प्राणेन्द्री धारणा मितज्ञानाय नमः । २७

श्रोत्रेन्द्रिय धारणा मितज्ञानाय नमः । २८ मनोधारणा मितज्ञानाय नमः । २९ संज्ञी श्रुत ज्ञानाय नमः । ३२ संज्ञी श्रुत ज्ञानाय नमः । ३२ संज्ञी श्रुत ज्ञानाय नमः । ३३ सम्यक् श्रुत ज्ञानाय नमः । ३४ असंज्ञी श्रुत ज्ञानाय नमः । ३५ सम्यक् श्रुत ज्ञानाय नमः । ३४ असम्यक् श्रुत ज्ञानाय नमः । ३५ सादि श्रुत ज्ञानाय नमः । ३५ सपर्यवसित श्रुत ज्ञानाय नमः । ३० अगमिक श्रुत ज्ञानाय नमः । ३० अगमिक श्रुत ज्ञानाय नमः । ४१ अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः । ४२ अगुगामि अवधि ज्ञानाय नमः । ४२ अगुगामि अवधि ज्ञानाय नमः । ४६ हीयमान अवधि ज्ञानाय नमः । ४० प्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः । ४८ अश्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः । ४८ अश्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः । ५० प्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः । ४८ अश्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः । ५० विपुलमित मनः पर्यव ज्ञानाय नमः । ५१ लोकालोक प्रकार्यक् श्री केवल ज्ञानाय नमः ।

### ज्ञान पद् चैत्यवन्द्न

क्षिप्रादिक रस राम बन्हि, तिम आदम णाण । भाव मिलाप सें जिन जिनत, सुय बीस प्रमाण ॥१॥ भव गुण पञ्जव ओहि दोय, जगलोचन णाण । लोकालोक स्वरूप जाण, इक केवल भाण ॥२॥ णाणा वरणी नास थिये, चेतन णाण प्रकाश । ससम पद में हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥३॥

#### ज्ञान पद स्तवन

म्हारे अति उछरंगे (ए चाल ) जिनवर भाषित आगम भणिया तत्त्व यथा स्थिति गमियाजी ॥ (म्हारे जगजन तारू) ते उत्तम वर णाण कहाये. भविजन अह निश्चि चाहें जी (म्हारे जगजन तारू)॥१॥ भक्षा भक्ष कुपंथ सुपंथा। पेयापेय अग्रन्था जी (म्हारे जगजन तारू) देव

,这里,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们

१—मितज्ञान के २८ भेद होने हैं। २—श्रुतज्ञानके १४। ३—अवधिज्ञानके अमेरियाने भेद हैं यहाँ मुख्य छः भेद दिये गये हैं मनपर्यव के २ भेद हैं। ४— केवलज्ञान का १ भेद हैं सकतो मिलाने से ४१ भेद होते हैं।

कुदेव अहित हित धारी । जाणे जेण विचारी जी (म्हारे जगजन तारू) ॥२॥ श्रुत मित दोय छे इन्द्रिय सारूं तेण परीक्ष विचारूं जी (म्हारे जगजन तारू) ओही मण केवल हे वारू । जीव प्रत्यक्ष सुधारूं जी (म्हारे जगजन तारू) ॥३॥ अयिव जस्सवलें जग जाणें लोकादिक अनुमानें जी (म्हारे जगजन तारू) त्रिभुवन पूजें जासु पसायें । धारी शुभ अध्य वसायें जी (म्हारे जगजन तारू) ॥॥॥ णाणा वरणी उपराम क्षय थी, चेतन णाणकुं विलसे जी (म्हारे जगजन तारू) सप्तम पद में भविजन हरखें । निश दिन कुशलता निरखें जी (म्हारे जगजन तारू) ॥५॥

# ज्ञान पद शुई

मित श्रुति इन्द्रिय जन्नित किह्ये । लिह्ये गुण गम्भीरा जी । आतम धारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारी जी ॥ अविध मन पर्यव केवल बिल प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी ॥ ए पञ्च ज्ञान कूं वन्दो पूजो भविजन नें मुखकारो जी ॥१॥

### श्री चारित्र पद की ७० जयति

१ प्राणातिपात विरमण रूप चारित्राय नमः । २ मृषावाद विरमण रूप चारित्राय नमः । ३ अद्त्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः । १ मैथुन विरमण रूप चारित्राय नमः । ५ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय नमः । ६ क्षमा धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । ७ आर्यव धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । ८ मृदुता धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । ९ मृद्धता धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । ११ संयम धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । ११ संयम धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । १२ सत्य धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । १३ शौच धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । १४ अकिंचन धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । १५ वम्म धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः । १६ पृथ्वी रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । १७ उद्ग्र् रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । १८ तोउ रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । १९ वाउ रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । १० वनस्पति रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । १० वनस्पति रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । २० वनस्पति रक्षा संयम् चारित्रेभ्यो नमः । २० वनस्पति रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । २० वनस्पति संयम चारित्रेभ्यो नमः ।

संयम चारित्रेभ्यो नमः। २३ चतुरिन्द्रिय रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २४ पञ्चेन्द्रिय रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २५ अजीव रक्षा संयम चारित्रे-भ्यो नमः । २६ प्रेक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः । २७ उपेक्षा संयम चारित्रे-भ्यो नमः । २८ अतिरिक्त वस्त्र भक्तादि परठण त्याग रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः । २९ प्रमार्जन त्रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः । ३० मनः संयम चारित्रे-भ्यो नमः । ३१ वाक् संयम चारित्रेभ्यो नमः । ३२ काया संयम चारित्रेभ्यो नमः । ३३ आचार्य वेयावृत्य रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः । ३४ उपाध्याय वेयावृत्य रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः । ३५ तपस्वी वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ३६ लघु शिष्यादि वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ३७ ग्लान साधु वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ३८ साधु वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ३९ श्रमणोपासक वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ४० संघ वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ४१ कुळ वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः । ४२ गण वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ४३ पशु पण्डकादि रहित वशति वसण ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः । ४४ स्त्री हास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रे-भ्यो नमः । ४५ स्त्री आसन वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः । ४६ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः । ४७ कुड्यन्तर सहित स्त्री हाव भाव सन्तन वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः । ४८ पूर्व स्त्री संमोग चिंतन वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेग्यो नमः । ४९ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः । ५० अति आहार करण वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ५१ अंग विभूषण वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ५२ अणराण तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः । ५३ ऊणोद्दरी तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः । ५४ वित्ति संखेव तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः । रूप चारित्रेभ्यो नमः । ५६ काय क्लेश तपो रूप ५७ संंहेखणा तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः । ५८ प्रायश्चित्त तपो चारित्रेभ्यो नमः । ५९ विनय तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः ।

FARE EDIOTE ESTERIOR ESTABLISTE ESTABLISTE ESTABLISTE ESTABLISTE ESTABLISTE ESTABLISTE ESTABLISTE ESTABLISTE E

६२ ध्यान तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः । ६३ उपसर्ग तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः । ६४ अनन्तज्ञान संयुक्त चारित्रेभ्यो नमः । ६५ अनन्त दर्शन संयुक्त चारित्रेभ्यो नमः । ६६ अनन्त चारित्र संयुक्त चारित्रेभ्यो नमः । ६७ कोध निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः । ६८ मान निग्रह कारण चारित्रेभ्यो नमः । ६९ माया निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः । ७० लोभ निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ।

### चारित्र पदु चैत्यवन्दन

जस्स पसायें साहु पाय, जुग जुग सिमतें दे। नमन करें धुभ भाव लाय, फुण नरपित बृन्दे॥१॥ जंपे धरि अरिहंत राय, करि कर्म निकृन्दें सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुक्ख अमन्दें॥२॥ इखु कृति मान कषाय थीये, रहित लेत शुच्चिंत।जीव चरित कूं हीर धर्म, नमन करत नितसंत॥३॥

### चारित्र पद स्तवन

निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदा भास निरसंग ( सुज्ञानी सांभलो ) मूर्चिहीन चेतन करे, रूपी पुद्गल रंग ॥ ( सुज्ञानी सांभलो ॥ १॥ स्यर्डक कारण वर्गणा, कार्ये कारण भाव ( सुज्ञानी सांभलो ) कृत्वा जोग सुधा मता । ल्रन्था संख स्वभाव ( सुज्ञानी सांभलो ) ॥ २॥ पर्याप्ता लघु जोग में । वृष्डि लहे जुगमान ( सुज्ञानी सांभलो ) ॥ मध्ये वसु समयें लहे । अंते द्वौ तेजाण ( सुज्ञानी सांभलो ) ॥ ३॥ सहकारी मानस मुखा । कारण रम्य बलेण ( सुज्ञानी सांभलो ) प्राप्ता हासु प्रकारता सप्त प्रभृत कातेन ॥ ( सुज्ञानी सांभलो ) ॥ १॥ तद्रो धन रूपी भलो । चेतन संयम धाम ( सुज्ञानी सांभलो ) कर धन मिल पद धर्म में कुशल भवतु अमिराम ॥ ( सुज्ञानी सांभलो ) ॥ १॥।

# चारित्र पद थुई

करम अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावें जी ॥ बारे भावना सूधी भावे, सागर पार उतारें जी ॥

चारित्रधारी पुरुषों में ये ७० गुण अवश्य होने चाहिये।

षट् खंड राज को दूर तंजीने, चक्री संयम धारें जी ॥ एहवो चारित्रपद नित बंदो, आतम हित गुण कारेंजी ॥

### तप पद की ५० जयति

१ यावत्कश्रित तपसे नमः । २ इत्वर तप भेद तपसे नमः । ३ बाह्य जणोद्दी तपभेद तपसे नमः । ४ अभ्यन्तर जणोद्दी तपभेद तपसे नमः । ५ द्रव्य तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः । ६ क्षेत्र तप तपभेद तपसे नमः। ७ काल तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः। ८ भाव तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः। ९ काय क्लेश तपभेद तपसे नमः । १० रस त्याग तपमेद तपसे नमः। ११ इन्द्रिय कषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः। १२ स्त्री पशु पण्डकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता तपसे नमः । १३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः । कमण प्रायश्चित्त तपसे नमः । १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नमः । विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः। १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः। १८ तप प्रायश्चित्त तपसे नमः। १९ भेद प्रायश्चित्त तपसे नमः। २० मूळ प्रायश्चित्त तपसे नमः । २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त तपसे नमः । पारंचिय प्रायश्चित्त तपसे नमः । २३ त्याग विनय रूप तपसे नमः । २४ दर्शन विनय रूप तपसे नमः। २५ चारित्र विनय रूप तपसे नमः। २६ गुर्वोदिक मन बिनय रूप तपसे नमः। २७ वचन विनय रूप तपसे नमः। २८ काय विनय रूप तपसे नमः । २९ उपचारक विनय रूप तपसे नमः । २० आचार्य वेयावच तपसे नमः । ३१ उपाध्याय वेयावच तपसे नमः । ३२ साधु वेयावच तपसे नमः । ३३ तपस्वी वेयावच तपसे नमः । ३४ छप् शिष्यादि वेयावच तपसे नमः । ३५ गिळाण साधु वेयावच तपसे नमः । ३६ श्रमणोपासक वेयावच तपसे नमः। ३७ संघ वेयावच तपसे नमः। २८ कुछ वेयावच तपसे नमः । ३९ गण वेयावच तपसे नमः । ४० वायणा तपसे नमः। ४१ प्रच्छना तपसे नमः। ४२ परावर्त्तना तपसे नमः। ४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः । ४४ धर्मकथा तपसे नमः ।

**化聚物 化氯化氯化物 化二氯化物 化二氯化物** 

तपसे नमः । ४६ रौद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः । ४७ धर्मध्यान चिंतन तपसे नमः । ४८ शुक्छ ध्यान चिंतन तपसे नमः । ४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः । ५० अभ्यन्तर उपसर्ग तपसे नमः ।\*

## तप पद चैत्यवन्दन

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण । विहि अंतेरिप बाह्य, मध्य द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु कर मित आमो सही, आदिक लिब्ध निदान। भेदें समता युत क्षिणें, हग्धन कर्म विमान ॥२॥ नवमों श्री तपपद भलोए, इन्छा रोध स्वरूप । वंदन सें नित हीर धर्म, दूरभवतु भव कूप ॥३॥

#### तप पद् स्तवन

बारस भेद भण्या जिन राजे। बाह्य मध्य तणा जग काजे रे॥ ॥ शिवपदनी श्रेणी॥ तिण भव सिन्धि तणा वर ज्ञाता। जिणवर पिण तप ना कर्ची रे॥शिव॰॥१॥ शमता सिहते जिनते भारी। भली कर्म चमूं पिण हारी रे॥ शिवपदनी श्रेणी ॥ जीव कनक से कर्म कचोरा। दहे तप पावक का जोरा रे॥ शिवपदनी श्रेणी ॥श॥ तप तरु वरना कुसुम ते ऋषि। देव नर नी फलते सिन्धि रे॥ शिवपदनी श्रेणी॥ पाप सकल है तम नी राशी। तप भानू से जाये नाशी रे॥ शिवपदनी श्रेणी॥ श॥ जस्स पसायें लिहये बारू। लब्धा सगली जर्ग हित कारू रे॥ शिवपदनी श्रेणी॥ अति दुक्कर फुण साध्यत हीना। काम तातें वारू कीना रे॥ शिवपदनी श्रेणी॥ शा इच्छा रोधन रूपी कहिये। तप पद ही चेतन बहिये रे॥ शिवपदनी श्रेणी॥ शा। इच्छा रोधन रूपी कहिये। तप पद ही चेतन बहिये रे॥ शिवपदनी श्रेणी॥ शा।

# तप पद थुई

इच्छा रोधन तपतें भाख्यो, आगम तेह नो साखी जी। द्रव्य भाव से द्वादश दाखी, जोग समाधि राखी जी॥ चेतन निज गुण परिणत पेखी, ते हित तप गुण दाखी जी। छिच्य सकल नो कारण देखी, ईश्वर से मुख भाखी जी॥१॥

अत्रेश्विर्धों में ये १० गुण अवश्य होने चाहियें।

### नन्दीइवर द्वीप तपस्या विधि

शुभ घड़ी शुभ मुहूर्त्त में गुरु के पास जा कर तप ग्रहण करे। नन्दीक्वर द्वीप के चारों दिशाओं में कुळ ५२ चैत्याळय हैं ५२ अमावस्थामें ५२ उपवास करे। जिस दिन जिस महाराज के नाम का उपवास हो उसी नाम की २० माळा फेरे प्रतिक्रमण, देववन्दन दोनो वक्त करे। और ५२ फेरी देवे।

१ श्री ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः

२ श्री चन्द्राननजी सर्वज्ञाय नमः

३ श्री वारिषेण जी सर्वज्ञाय नमः

४ श्री वर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः

इन चारों नामों को तीन दफा उल्टा और सीधा गिने। एक और जाप करेअनुक्रम से १३ उपवास करने से एक ओली सम्पूर्ण होती है। चार ओली करने से ये तप सम्पूर्ण होता है।

तप सम्पूर्ण होने पर शक्ति के अनुसार तप का उद्यापन करे। नन्दीव्यर द्वीप की पूजा करावे, मंगल गावे। ज्ञान पूजा गुरु पूजा करे साधर्मी
वत्सल करे। अगर शक्ति हो तो एक २ दिशा में १३-१३ पहाड़ों की
रचना करके इस प्रकार चारों दिशाओं में ५२ पहाड़ों की रचना करे।
प्रत्येक दिशा के मध्य में अंजन गिरि, चारों तरफ चार खेत पर्वत, चारों
तरफ चार दिधमुख पर्वत, और चारों तरफ चार रितकर पर्वत इस तरह
एक दिशा में १३ पर्वत हुए। चारों दिशाओं में इसी तरह स्थापना करे।
इल्ल ५२ हुए। उनपर बावन विम्यों की स्थापना करे। इनकी पूजा में
५२ स्थापना, ५२ नारियल, ५२ अंगल्ह्हणें याने सभी वस्तुएं ५२-५२
होनी चाहिये कम से एक एक काव्य पढ़ कर जल चन्द्रनादि अप्ट द्रव्य
से अंग पूजन आदि करे। इससे अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है ऐसी
शास्त्रों की आज्ञा है।

नोट—नन्द्रीश्वर द्वीप के ऊपर बावन जिनालय है और उनमें शान्यती चौमुखी प्रतिमाएं वेराजमान है।

### अष्टापद ओली विधि

चैत्र सुदी ८ से पूर्णमासी तक अष्टापद्जी की ओळी करने की भी परम्परा प्रचिछत है। इसमें प्रतिक्रमण देववन्दन देवपूजा इत्यादिक सब विधि 'नवपद्जी की ओळी' की तरह ही करते हैं। विशेषता इतनी ही है कि 'श्री अष्टापद तीर्थाय नमः' की २० माला गिने। अरिहन्त पद के बारह गुणों को नमस्कार करे। बारह लोगस्स का कायोत्सर्ग करे। आयं-बिल अथवा एकासणे का पच्चक्खाण करे। पीछे पूर्णमासी के दिन अष्टा-पद्जी पर्वत की स्थापना करके विधि युक्त चौवीस भगवान की पूजा करे एवं करावे।

चैत्र और आसोज में इस तरह दो ओली करने से चार वर्ष में, एक ओली करने से ८ वर्ष में सम्पूर्ण होती है।

पारणे के दिन ओली का उद्यापन करे । साधर्मी वत्सल करे । यथा-शक्ति दान देवे ।

,这个人,我们是我们的人,我们们的人,我们也是我们的,我们们的人,我们们们的人,我们们们的,我们们们的,我们们们的人,我们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们

# ज्ञान पञ्चमी पूजा विधि

प्रथम पवित्र जगह में चौकी के ऊपर ज्ञान (पैंतालीस आगम ) की स्थापना करनी। उसके आगे पांच नाजके पांच साथिये करे। पांच फल, पांच नैवेच, पांच फूलतथा पांच बत्तीका दीपक करे। अगर बत्ती अथवा धूप करे पीछे निम्न गाथा पढ़े—

णमंति सामंत महीवणाहं, देवाय पूर्व सुविहेय पुट्वि ।

भत्तीयचित्तं मणिदामएहिं, मंदार पुरम्तं पसवेहिणाणं ॥१॥ तहेव सङ्का मणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुरमोहे वरंसि एहिं।

पूर्यंति वदंति णमंति णाणं, णाणस्स लामाय भवक्खयाय ॥२॥ इसको पढ़कर ज्ञान पूजा करे । इसी तरह द्रव्य पूजा करके भाव पूजा करे । भावपूजा में प्रथम खमासमण देवे । पीछे इरियावहियं॰१ अणत्य॰१ कहकर एक लोगस्स का काउसग्ग करे । पार कर लोगस्स॰ पढ़े फिर बैठ-

१—प्रन्ठ ३।२- प्रन्ठ ४।

कर मुंहपत्ति की पडिलेहणा करे । तत्पश्चात् दो वन्दन<sup>9</sup> देवे । बाद पांच खमासमण देकर ज्ञान का चैत्यवन्दन करे।

नमस्कार कह णमुत्थुणं॰<sup>२</sup>, जावंति चेइयाइं॰, जावंत केविसाहु॰, नमोऽर्हत्, चैत्यवन्दन कह 'प्रणमू' श्री गुरु पाय॰' स्तवन कहे। फिर जयवीयराय॰ अणत्थ॰ कहकर एक णमोक्कारका कायोत्सर्ग करे। पीछे निम्न थुई कहे:-

देविंद वंदिय पएहि परूवयाणि, णाणाणि केवल मणोहि मई स्याणि। पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए. प्रया तवो गुणरयण जियाणदिंत ॥१॥

पीछे 'ज्ञान आराधवानिमित्तं करेमि काउसग्गं' ऐसा कह तस्सउत्तरी॰ अणत्य॰ पूर्वक एक लोगस्स का काउसग्ग पार कर 'बोधागाधं॰'४ गाथा से कार्योत्सर्ग पूर्ण करे । पीछे-

आभिण बोहियणाणं, सुयणाणं चेव ओहिणाणं च।

तह मणपञ्जव णाणं. केवलणाणं च पंचमयं ॥१॥

यह स्तुति कहे।

तदनन्तर खमासमण पूर्वक

श्री श्रुत ज्ञानाय नमः श्री मतिज्ञानाय नमः

श्री मनः पर्यव ज्ञानाय नमः श्री अवधिज्ञानाय नमः

श्री समस्त लोकालोक भास्कर केवलज्ञानाय नमः

पांच नमस्कार करे । अगर समय हो तो ज्ञान की, ५१ खमणपूर्वक नमस्कार करे जो कि पूर्व नवपद जी के गुणने में लिख आए हैं। "ॐ ह्वीं णमो णाणस्स" इस पद की २० माला फेरे और अन्त में गुरु महाराज से ज्ञान पञ्चमी पर्व का व्याख्यान सुने । इसके बाद यदि स्थिरता हो तो ग्यारह अंगों की सज्झाय पढ़े।

<sup>−</sup>ष्टठ ६ । २—प्टठ ६ । ३ – प्टठ ६ । ४ – प्रेट्ठ १८ गाथा ३ । ६ – १८४ ।

## संस्कृत ज्ञान पूजा (मालिनी बनद)

प्रकटित परमार्थे, शुद्ध सिन्धान्त सारे । जिन पित समयेऽस्मिन्, शारदासन्दधान । जगित समय सारम्, कीचितैः सन्मुनीन्द्रैः । स वसतु मम चिचे, सश्रुत ज्ञान रूपं ॥१॥ ॐ हीं श्रुत पूजन ज्ञानाय नमः॥ यह पढ़ पुस्तकों के जपर कुसमाञ्जली (चढ़ावे) उछाले ।

# जल पूजा ( द्रुत विलम्बित छन्द )

अतुल सौख्य निधान मनायिकं, शिव पदं विपदन्ति करं परं। जिगमि षुर्जिननाथ मुखोद्गतं, समय सार महं सलिलैर्यजे ॥१॥ ॐ, ह्वीं, मति श्रुतावधि मनपर्यव केवलज्ञानेभ्यो जलं यजामहे खाहा॥

( यह पढ़कर जल चढ़ावे )

## चन्दन पूजा (द्रुत विलिम्बत छन्द )

विषमयारिक सप्तम विन्द्यया, त्रिभुवनं प्रति बोध मयन्नयन् । उदय मन्त्र गतो वर चन्दनैः, समय सार सहस्र करोऽचिते ॥१॥ ॐ हीं मित श्रुतावधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो चन्दनं यजामहे खाहा॥ (यह पढ़कर चन्दन चढ़ावे)

# पुष्प पूजा ( द्रुत विलिम्बत इन्द )

शुभ पदार्थ मणी चुितिभर्चुतम्, प्रहत दुर्द्धर मोह तमोभरं। समय सार निर्धिस्वदरिद्रतां प्रशमनाय महामिसरोरुहैः ॥१॥ ॐ हीं मित श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो पुष्पं यजामहें स्वाहा॥ ( यह पढ़कर पुष्प चढ़ावे )

# धूप पूजा [ द्रुत विलम्बित छन्द ]

हगबबोधसुवृत्त महौषधं, शमित जन्मजरामरणामयं । अगुरिभर्गुरु भक्ति भरादहं, समयसारमसार हरं यजे ॥१॥ ॐ हीं मित श्रुति अविध मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ( यह पढ़कर धूप खेवे )

# दीप पूजा [ द्रुतविलिम्बत छन्द ]

विमल केवल बोध विधायिनी, समय सार मई किल देवता । हत तमः प्रशरेर्मणि दीपकैः, भगवती महती परिपूजये ॥१॥ ॐ ह्वीं मित श्रुति अविध मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ( यह पढ़कर दीपक खेवे )

# अक्षत पूजा ( द्रुत विलम्बित इन्द )

भव विपक्षत चेतन संत् सुखं, मदन मज्बर सन्समनौषधम् । शुभ निधं प्रतिबोधित सद्बुधं, समयसार मिमै स दक्वैयंजे ॥१॥ ॐ हीं मिति श्रुताविध मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्या अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ( यह पढ़ कर अक्षत चढ़ावे )

# नैवेच पूजा ( द्रुत विलम्बित इन्द )

的一个,这一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们

प्रस्तरामरनाथ मुखोद्गतम्, शुचिवचः कुसुमोत्कर पूजितं समय सार मपार रसान्वितं, चरूवरैर्प्रयजे शिवशर्मणे ॥१॥ ॐ ह्वीं मित श्रुति अविध मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ( यह पढ़कर नैवेद्य चढ़ावे )

# फल पूजा [ द्रुत विलम्बित इन्द ]

समयसार मई त्रिद्शापगा, परम हंस कुळोद्भव सूचिका। त्रिभुवनं क्छापक्षय कारिणी, शुभफ्छैः पुनती परिपूज्ये ॥१॥ ॐ हीं मित श्रुति अविधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो फलं यजामहे स्वाहा ॥ ( यह पढ़कर फल चढ़ावे )

# वस्र पूजा [ द्रुत विलिम्बत छन्द ]

विषम जाड्यविनाश पटीयसी, स्फुटतर प्रतिमैक निवन्धनं । समयसार मई श्रुतदेवता, मृदुदुकूलपटेर्मुदिमानये ॥१॥ ॐ हीं मित श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर वस्त्र चढ़ावे )

## अर्घ पूजा\* ( पृथ्वो छन्द )

तं, कनत्कनक भाजन स्थितम। नन्दीश्वरः, स्तुताय वितराम्यहं
श्रुति अवधि मनपर्यव केवल
गढ़कर अर्घ चढ़ावे )

र क्रीडित छन्द )
च्छीकरे—
कल्मषियो, बोत्सारयन्ति मुहुः ।
गळस्त्रुतां ।
। विधी, सम्पादयाम्यादरात् ॥१॥

न ।

सारोद्भवेः ।
क्रुम रसैः, कर्पूर सन्मिश्रितैः ॥
ंकारिभिः,
ग्तामिममतैर्गन्धैर्मनोनन्दनैः ॥२॥
मे ।

गणुणैः ।
।क निकर, व्याहार झंकारिभिः ।
मेः ।
रचिते, रम्येश्च पुष्पोत्करैः ॥३॥
वाहा ।
१२ व्यवतारं लिप कता श्रीसवाई जयपुर सरोरह शुभाष्यतैः सरसं चन्दनैर्निर्मितं, कनत्कनक भाजन स्थितम-नर्धमर्धमुदा। अभिष्ट फल लब्धये परम पद्म नन्दीश्वरः, स्तुताय वितराम्यहं समयसार कल्पदुमं ॥१॥ ॐ हीं मित श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेम्यो अर्ध यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर अर्ध चढ़ावे )

#### पुनः पूजा २

जल पूजा ( शादु ल विकीडित छन्द )

श्रीमत्पुण्य धुनी प्रवाह घवलां, स्थूलोन्छलन्छीकरें—

रालीनालि कुलानि कल्मषिये, बोत्सारयन्ति मुहः।

नीलाम्भोरहवासितोदर, लसङ्गृङ्गार नालस्त्रुतां ।

वार्घारां श्रुतदेवतार्च्चन विधी, सम्पादयाम्यादरात् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे जलं समर्पयामि ।

#### चन्दन पूजा

श्री मन्नन्दन चन्दन दुम भव, श्रीखण्ड सारोद्भवैः।

संद्यो मीलित जात्यकुङ्कृम रसैः, कर्पूर सन्मिश्रितैः ॥

तोष्टुबद्धिरभितौ, मत्तालिझंकारिभिः, वाग्देवीमिव

यायिकम श्रुतदेवतामभिमतैर्गन्धैर्मनोनन्दनैः ॥२॥

ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे चन्दनं समर्पयामि ।

## युष्प पूजा

श्रीमत्कल्पतरु प्रसून रचितैरम्लान मालागुणैः।

गन्धान्धीकृत चञ्चरीक निकर, व्याहार झंकारिभिः।

सौवण्येरय राजतैः शतदलैर्मुक्तामयैदीमभिः।

シンななとのとはまつというというというできる。

बाग्देवीमभिपूजयामि रचिते, रम्यैश्च पुष्पोत्करैः ॥३॥

ॐ हीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

सम्बत् १६२४ माधव मासे गुड़पक्षे तिथी १२ बुधवासरे लिपि कृता श्रीसवाई जयपुर नगर मध्ये मुनि वृद्धिचन्द्रेण स्वस्यार्थं।

## धूप पूजा

श्री मद्भृङ्ग तरङ्ग ताङ्ग घटनैः, स्वमीक्ष सोपानताम् । विभ्राणैरिव वभ्रुधूम पटलैरातिर्य्यगृद्ध्वीयतैः । धूपैर्व्योपिमिरापतन्मधु कराघातैरघध्वंसिभिः । सम्प्रीत्या परिपूजयामि धवलां जैनेश्वरीं भारतीम् ॥॥॥ ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे धूपं समर्पयामि ।

## दीप पूजा

श्रीमद्भिः सुरलोक सार मणिभिः, स्पद्धीमवाऽऽतन्वताम् ।
दीपानां निकरेरपाकृत तमः, खण्डैरखण्ड प्रभैः ।
निद्धीमैः कनकावदातरुचिभिनेत्र प्रियैरुङ्क्वलां,
जैनेन्द्रीं वचनावलीं मुनिमुखाम्भोज स्थितां संयजे॥५॥

ॐ हीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे दीपं समर्पयामि ।

#### अक्षत पूजा

श्री मद्भिः सुरसिन्धु फेण, धवलैः शाल्यक्षतैरक्षतैः । श्रोत्रैरर्धचयैरिव स्फुट तरैः, सन्निश्चितैर्निस्तुषैः ॥ वाग्देवीं ललित स्मितां ज्वलतरैः, पुण्याङ्करस्पर्द्धिभिः । भक्त्याऽच श्रुतदेवतां भगवतीमभ्यर्च्चयामो वयं ॥६॥ ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सुत्राग्ने अक्षतं समर्पयामि ।

## नैवेद्य पूजा

श्री मिद्धः कल्रघीत पात्र निहितैः, पीयूषपुण्योपमैः ।
पुण्यानामिवराशिमिश्रक्वरैरामोदवद्भिर्भृशम् ।
प्राज्य क्षीर घृत प्रभूत दिधिमः, सन्मिश्रितैः पावनैः,
वाग्देवीं नृ सुरासुरैरुपचितां जैनेक्वरीं प्रार्च्यये ॥७॥
ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे नैवेद्यं समर्पयामि ।

#### फल पूजा

श्री मत्पुण्य फलेरिवाति मधुरैः, कैश्चिच नाना रसैः।
हचैर्माघदिल प्रतान विरुतैरारब्ध गीतैरिव।
भारवत्कल्पतरूद्भवैः फल शतैः, भक्त्या यजे संफलीं।
वाग्देवीं जिनचन्द्र वृन्द महितां, मुक्त्याङ्गनासंफलीं॥८॥
ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे फलं समर्पयामि।

#### वस्त्र पूजा

श्री मत्त्व दुकूल पट्ट सुमहैश्रीनादि देशोद्भवैः, काञ्चीजैन वृहत्पटोल निचयैः, सत्क्षीम कौशेयकैः। अन्यैः शिल्पि विनिर्मितैः शुभतमैः, कैश्चिच्च नानाविधैः। वाग्देवीमभिपूजयामि रुचिरैर्वस्त्रैर्विचित्रेर्मुहुः॥९॥ ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे वस्त्रं समर्पयामि।

#### आभरण पूजा

श्री मत्काञ्चन पञ्च रत्न कटकेंः, केयूर हाराङ्गदैः ।

पट्टी नूपुर कर्णपूर मुकुटैः, ग्रैवेयकेंः कुण्डलैः ॥

प्रालम्बामरणांऽगुलीयकमणी, स्रब्धे खलाऽऽसूषणैः ।

वाणीं लोक विभूषणां प्रति दिनं, सम्पूजयाम्यार्हतीम ॥१०॥
ॐ ह्वीं श्रीं समग्र सूत्राग्ने आभरणं समर्पयामि ।

## ग्यारहवीं पुष्पाञ्जलि (स्नगधरा छन्द)

गन्धाळो: स्वच्छतोयेर्म्मलतुष रहितैरक्षतैर्दिव्यगन्धेः, श्रीखण्डेः सत्प्रसूनैरिल कुल कलितेः सन्निवेद्येः स वस्त्रेः। धूपैः संधूपिताहौर्वर फल सहितैभीसुरैः सत्प्रदीपैः। बाग्जैनीं पूजितालं दुरित विरहितं वाञ्छितं नः प्रदेयात ॥११॥ ॐ ह्वीं श्रीं समग्र स्त्राग्रे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

#### अन्त्य प्रार्थना

अर्हद्रक्त प्रस्तं गणधर रचितं द्वादशांङ्गं विशालम् । चित्रं बहुर्थ मुक्तं मुनि गण वृषभैर्घारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वार भूतं त्रत चरण फलं ज्ञेय भाव प्रदीपं । भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुत महमिखलं सर्व लोकैक सारम् ॥१२॥ (वंशस्थ छन्द)

> जिनेन्द्र\* वक्त्रं प्रति निर्गतो वचो, यतीन्द्र भूति प्रमुखैर्गणाधिपैः । श्रुतं धृतं तैश्च पुनः प्रकाशितं, शरवेद सङ्ख्यं प्रणमाम्यहं श्रुतम् ॥१३॥ दिवाठी पूजन विधि

पहले पूजन के समय जहां पूजन करानी हो वहां सुन्दरचित्रों से एवं अन्यान्य सजावट की चीजों से सुशोभित कर लेना चाहिये।

शुभ मुहूर्त तथा चौघड़िया एवं शुभितिथि तथा शुभिदिन और शुभ नक्षत्रमें प्रथम नवीन बही (जिसको जितनी बहियों की आवश्यकता हो उतनी बहियें खोल ) उत्तम चौकी या पट्टे पर पूरव या उत्तर की दिशा में स्थापन करे पूजन करनेवाला हाथमें मौली बांघे और पत्तों की वन्दर-बाल दरवाजों पर बांघे और नीचे दोनों तरफ घड़ों के ऊपर डाभी (नारियल) रखे और अन्यान्य दिव्याभरणों से अलङ्कृत हो सुन्दर पवित्र आसन को प्रहण करे सामने एक उत्तम चौकी या पट्टा रख उसपर चांदी की रकेवी में शारदाजी की मूर्त्ति या चित्र स्थापन करे। इसके वाद जल, चन्दन, पुप्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल श्रीशारदादेवी के पूजन

<sup>ं</sup> महोपाध्याय श्रीराज सोमगणि विरचते श्रुतस्कन्य श्रुतपृजा सम्पूर्णमगमन ।

ये दोनां पृजायं प्राचीन प्रन्थां से छिखी गई है इनमें हाने पश्चमा को शास्त्रपृज्ञन किस नियमानुसार अप्टप्रकारी पृजन करनी चाहिये इसका नुरु।सा वर्णन उपरोक्त पृजा के इस्त्रोकों में पाया जाता है अतः संस्कृत प्रेमियों को इससे छाभ छैना चाहिये।

<sup>🕆</sup> कथा नार्यिछ। 🗘 मकान को भी सजाना चाहिये।

के समय प्रत्येक मन्त्रों को पढ़कर मूर्ति के सम्मुख चढ़ावे। पूजा कराने वाला विद्वान तथा पूजा करने वाला एवं गन्ध चन्दनानुलिस तथा सुन्दर पवित्र वस्त्रों से विभूषित होना चाहिये इस तरह उपरोक्त सब सामग्री सम्पन्न हो जानेपर सुन्दर लेखनी तथा स्याही और दवात लेकर नीचे लिखे अनुसार बहीमें निम्नलिखित पदों को लिखें।

७४॥ वन्देवीरम् । श्री परमात्मने नमः, श्री गुरुग्यो नमः, श्री सर-स्वत्ये नमः, श्री गौतमस्वामीजी जैसी लिच्य, श्री केशरियाजीसा मण्डार, श्री भरतचकवर्त्ती जैसी ऋदि प्राप्त हो एवं बाहूबल्लजीसा बल, श्री अभय कुमारजीसी बुद्धि और कयवन्नासेठतना सौभाग्य एवं धन्नाशालीभद्रजीसी, सम्पत्ति प्राप्त हो ।

इतना लिखने के बाद नया वर्ष, नया मास एवं दिन तथा तारीख को सात लकीरों में लिखे इसके बाद १ से ९ तक पहाड़ की चोटी की तरह "श्री" लिखे अगर बही\* छोटी हो तो ५ या ७ "श्री" लिखे।

जीनयों को दिवाली के दिन ही नये वहीखाते बदलने चाहिये क्योंकि दिवाली से नया सम्बत् प्रारम्भ होता है।



तत्पश्चात् ऊपर लिखे अनुसार नीचे कुङ्कृम से खस्तिक लिखे इसके बाद श्री शारदाजी के सम्मुख जलधारा देकर श्री गुरुजी के द्वारा वासक्षेप करावे तत्पश्चात् हाथमें अक्षत कुङ्कृम ( रोली ), फूल लेकर नीचे लिखा हुआ स्लोक पढ़े।

मङ्गळं भगवान् वीरो, मङ्गळं गौतम प्रसुः । मङ्गळं स्थूळभद्राचाः, जैनधर्मीऽस्तु मङ्गळम् ॥१॥ इस स्लोक को पढ़कर मूर्त्ति के सम्मुख चढ़ा दे ।

## बही\* पूजा

उपरोक्त विधि से श्री शारदा पूजन समाप्त हो जानेपर जल, चन्दन, फूल, धूप, दीप, अक्षत इत्यादि अष्ट प्रकारीके द्वारा प्रत्येक बार नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ता हुआ पूजन करे।

ॐ हीं श्री भगवत्ये केवल ज्ञान स्वरूपाये लोकालोक प्रकाशकाये सरस्वत्ये जलं समर्पयामि । इस तरह उच्चारण करता हुआ हरएक सामग्री चढ़ावे इस प्रकार पूजन समाप्त हो जानेपर शारदा की निम्नलिखित आरती कपूर से करे।

#### शारदा आरती

जय आरती ज्ञान दिनन्दा, अनुभव पद पावन सुखकंदा ॥ जय० ॥१॥ तीन जगत के भाव प्रकाशक, पूरण प्रभुता परम अमंदा ॥ जय० ॥२॥ मतिश्रुति अविध और मनपर्यव, केवल काटै सब दुखदंदा ॥ जय० ॥३॥ भवजल पार उतारण कारण, सेवो ध्यावो भवि जन वृन्दा ॥ जय० ॥४॥ शिवपुर पंथ प्रगट ए सीधा, चौमुख भाखे श्री जिनचन्दा ॥ जय० ॥५॥

<sup>\*</sup> दिवाली पूजन के दिन रुपया चांदी सोने के शिक्के आदि पदार्थों का पूजन करना और अन्य मतावलिम्वयों से पूजा कराना जैनशास्त्रानुसार मिथ्यात्त्वकी पुष्टी करना है इसलिये सम्यक्त्वी श्रावकको दिवाली पूजनमें यह सब कार्य नहीं करने चाहिये।

अविचल राज मिले याही सों, चिदानन्द मिले तेज अमंदा ॥ जय॰ ॥६॥ आरती पढ़नेके बाद शारदा स्तोत्र पढ़े ।

## शारदा स्तोत्र

वाग्देवते भक्ति मतां स्वराक्तिः, कलाय विभ्रासित विग्रहामे । बोघं निशुद्धं भवति विधत्तां, कलाय विभ्रासित विग्रहामे ॥१॥ अङ्क प्रवीणा कलहंस पत्रा, कृतस्मरेणा नमतानिहंतुम् ।

अङ्क प्रवीणा कलहंस पत्रा, सरस्वती शक्वद पोहताह ॥२॥ ब्राह्मी विजेषिष्ठ विनिद्र कुंदं, प्रभावदाता घनगर्जितस्य ।

स्वरेण जैत्री ऋतुनां स्वकीये, प्रभावदाता घनगर्जितस्य ॥३॥ मुक्ताक्षमाला लसदौषधीशाम्, शृज्वलाभाति करेत्वदीये।

是好了她的说话,我就是对这个大大人的感染了我的说话,我就是我的的话,我们的人,我们的人们的人,我们的人们的人的人,我们们的人们的人们的人的人,我们的人们的人们的人

मुक्ताक्षमाला लसदौषधीशाम्, वां प्रेक्ष्य भेजे मुनियोऽपिहर्षम् ॥॥॥ ज्ञानं प्रदातु प्रवणा ममाति, शयालुनांनां भव पातकानि ।

त्वंनेमुषां भारति पुण्डरीक, शयालुनांनां भव पातकानि ॥५॥ प्रोढ़ प्रभावा समपुस्तकेन, ध्यातासि येनांसि विराजि हस्ता ।

प्रोढ़ प्रभावा समपुस्तकेन, विद्या सुधा पूरमदृर दुःखाः ॥६॥ तुभ्यं प्रणामः क्रियते मयेन, मराछवेन प्रमदेन गातः।

अति प्रतापै भुविरस्य नम्रः, मरालयेन प्रमदेन वातः ॥७॥ रुच्यार विदं भ्रमदं करोति, वेलं यदि योऽर्चततेऽघिंयुग्मं।

रुच्यार विंदं भ्रमदं करोति, स स्वस्यगोर्ष्टि विदुषां प्रविश्य ॥८॥ पाद प्रसादात्तवरूपसंपत, लेखाभिरामोदितमानवेशः।

अवेन्नरः सुक्ति भिरेवचिन्तो, लेखाभिरामोदितमानवेशः ॥९॥ सितांशुकांते नयनाभिरामा, मूर्त्ति समाराध्य भवेन मनुष्यः । सितांशुकांते नयनाभिरामा, धकारसूर्यक्षितिपावतंशः ॥१०॥

येन स्थितं त्वाममुसर्वतीर्थ्यः, समाजितामानत मस्तकेन । दुर्वीदेनां निर्देखितं नरेन्द्र समाजितामानत मस्तकेन ॥११॥

सर्वज्ञ वक्ता वरतामसमंकलीना, मालींगती प्रयण मंथर पादशैन ।

सर्वज्ञ वक्ता वरतामसमंकलीना, प्राणीतु विश्वतयशा श्रुतदेवतानः ॥१२॥ कृतस्तुति निविडमक्ति जड़पृक्तैः, गुफैर्गिरामितिगिरामधि देवता सा । वालीनुकंपइतिरोपयतु प्रसाद, स्मेरादृशं मिप जिनप्रमसूरिवर्या<sup>क</sup> ॥१३॥ चेत्री पूनम पर्व

श्री आदिनाथ भगवान् के प्रथम गणधर श्री पुण्डरीक स्वामी इसी चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन मोक्ष गये और अनन्त भन्यात्माओं की यहां आत्मसिद्धी होने से इस परम पवित्र तीर्थ की यात्रा करने से अपूर्व लाभ होता है और अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है। कहा है:—

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि, तेषां यद्यात्रया फलम् ।

पुण्डरीक गिरेर्यात्रा, तदेकापि तनोत्यहो ॥१॥ चैत्रस्य पूर्णिमास्यांतु, यात्रा शत्रुज्जयाचले । स्वर्गापवर्ग सौख्यानि, कुरुते करगाण्य हो ॥२॥

अर्थात तीन छोकों के सम्पूर्ण तीर्थों की यात्रा करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वह पुण्य श्री पुण्डरीक (शत्रुज्जय) तीर्थाधिराज की एक ही यात्रासे होता है और चैत्री पूणिमाके दिन जो भव्य शत्रुज्जय तीर्थ की यात्रा करते हैं वे स्वर्ग और मोक्ष के अनन्त सुखों को प्राप्त करते हैं। अगर यात्रा करने की सामर्थ्य न हो तो अपने नगर में, मन्दिर अथवा किसी पवित्र स्थान में यंथासाध्य श्री शत्रुज्जय पर्वत की स्थापना करके, पुण्डरीक स्वामी का ध्यान करने से भी भव्यजीव कर्मों का क्षयकर मोक्ष प्राप्त करते हैं अतएव सबको इस दिन सिद्याचलजी की स्थापना करके विधिपूर्वक सुवताचरण करना चाहिये।

चैत्री पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल सब प्रभातिक कृत्य करके मन्दिरजी में जावे और पूजा करें । तदनन्तर चावलों की हेरी बनाकर सिद्धाचलजी की स्थापना करें और पुण्डरीक गणधर अथवा श्री ऋपभदेव स्वामी का

<sup>ी</sup> इसके बाद गौतम स्वामी का अप्टक पढ़े जो आगे दिया गया है। 'इन्द्रभृति बग्रुभृति पुत्रं ।''

बिम्ब स्थापन करे। चावलों से श्री तीर्थाधिराजको वधावे। केशर, चन्दन, से पर्वत की पूजा करे। तब श्री संघ मिलकर पर्वत के चारों तरफ तीन प्रदक्षिणा देवे और पूजा शुरू करे। एकाग्रचित्त से अष्ट मङ्गलीक की स्थापना करके मूल प्रतिमा को पञ्चामृत\* से स्नान करावे। दश णमोक्नार गिनकर दश फूल या फूलमालाएं, दश फल, श्रीफल, अनार, नारंगी फल चढ़ावे। पट्टेपर दश साथिये करे। दश दीपक करे। दश जाति के मिष्टान्न, नैवेद्य चढ़ावे। कपूरकी आरती करे। पीछे सिद्ध गिरि गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके २१ खमासमण देवे। 'श्री सिद्धक्षेत्र पुण्डरीक गणधराय नमः' इस पद को दश बार नमस्कार करे। फिर 'श्री शत्रुक्षय पुण्डरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं' अणत्य के कहकर दश लोगस्स का

#### उद्यापन की सामग्री

१५ चंदुए, १६ पिछवाई, १६ बन्दरबाछ, १६ चौपड़, १६ रुमाछ, १६ ठवणी, १६ स्थापनाजी, १६ आसन, १६ पूजनी, १६ पूजनीकी दण्डी, १६ दवात, १६ कछम, १६ कागज, १६ स्थाहीकी पुड़िया, १६ पुस्तक, १६ पूठे, १६ पूठियां, १६ ओघे, १६ पात्रे, १६ मोरपीछी, १६ चन्दन के मुट्टे, १६ पूप्दाने, १६ कछम, १६ रकेबी, १६ कटोरी, १६ दीपक (छाछटेन सिहत), १६ अंगछहणे, १६ केशरकी पुड़िया, १६ चंबर।

## चैत्री पूनम के पांचों पूजन की सामग्री

१ श्री सिद्धाचलजी का चित्रपट, १ पट्टा।

सिद्धाचल पर्वतकी पूजा के लिये पुण्डरीक गणधर की तथा झृषभदेव भगवान की प्रतिमा।

१ घण्टा, १ घड़ियाल, १७० फूलमाला, १७० नारियल, १७० सुपारी, १७० मिठाई, १७० फल, १७० कपूर की पुड़िया आरती के लिये, १७० जल के कलश, १७० केशर की कटोरी, १७० दीपक, १७० कंगल्हणे, १७० कलश पश्चामृतके, १७० फुल गुलाव के !

#### दोपहर में श्री सिद्धाचलजी की पूजा करने की सामग्री

१ ध्वजा, २ जल, ३ चन्द्न, ४ पुष्प, ६ धूप, ६ दीपक, ७ अक्षत, ८ नैवेद्य, ६ फल, १० गुलाव जल, ११ अंगलूहणेका जोड़ा हरएक पूजा में यथाशक्ति नगदी अवश्य चढ़ावे।

अप्रामृत दूध, दही, घृत, केशर, मिश्री।

क्त हरएक बार बन्दनपूर्वक।

४---ब्रह्म ८।

काउसग्ग करे, अगर समय थोड़ा हो तो एक लोगस्स का काउसग्ग करे पारकर 'णमो अरिहंताणं॰' पूर्वक श्री तीर्थाधिराज की स्तुति कहे।

इसी तरह बीस, तीस, चालीस तथा पचास इन चारों पूजा के भेदों के वारे में भी समझ लेना। विशेषता इतनी ही है दूसरी पूजा में सब विधि बीस, बीस करनी।तीसरी पूजा में सब विधि तीस, तीस करे। इसी प्रकार चौथी पूजा में ४० और पांचवीं में सब विधि पचास, पचास करे। श्री 'सिद्धक्षेत्र पुण्डरीकाय मनः' इस पद की २० माला फेरे। पांचों पूजाओं में एक एक ध्वजा चढ़ानी चाहिये अगर ऐसा न हो सके तो कम से कम पांचों पूजाओं के निमित्त एक ध्वजा चढ़ावे। इस तपको कम से कम एक वर्ष, मध्यम सात वर्ष और उत्कृष्ट १५ वर्ष तक करे।

तप सम्पूर्ण हुए पीछे शत्रुखयजी की यात्रा करे। ज्ञान पूजा करे। यथारुक्ति साधर्मी बत्सल करे।

# श्री सिद्धाचल चैलवन्दन ( हरि गीत छन्द )

युग आदिमें प्रभु आदिने जिसको सनाथ बना दिया,

पूरब नवाणु वार निजपद शरण दे पावन किया । जिसके अणु अणु में भरा है दिस्य तेज अनुत्तरं,

तेजोमयं तमहं सदा प्रणमामि सिन्धिगरीक्वरम् ॥१॥ योगी तथा भोगी जहां निज साध्य साधनता वरें.

हैं अन्तराय अनंत उनका अन्त भी जल्दी करें। संसार में सर्वोच्चपढ़ पावें अचल सुख निर्भरं.

तं साध्य-सिद्धिकरं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीखरम् ॥२॥ जहँ पुण्यमृत्तिं अनन्त साधक साधुओं की भावना,

सन्ताप हर देती विमल वलशालिनी संभावना। विस्तारती आत्मिक अनन्त सुकान्त गुण रवाकरं,

तं दिन्य-भावभरं सदा प्रणमामि सिन्धगिरीव्वरम् ॥३॥

बहती विमल धारा जहां शत्रुंजयी सुखदा नदी,

जो दूर करती है अनादि कुकर्म की सारी बदी।

है आत्मभूमि में बहाती शान्त रस सुख निर्झरं,

विमलाचलं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीक्वरम्॥४॥

पापी अधम जन भी जहां तप-जप करें हो संयमी,

होवें अपाप सुधन्य वे उनके न हो कुछ भी कमी । वे मुक्तिरमणी रमण सुख भोगें अशेष अनश्वरं,

तमहं महा महिमामयं प्रणमामि सिन्धगिरीक्वरम् ॥५॥ जहँ अन्धकार विकार का छवलेश भी रहता नहीं,

अविवेक पूरित विकलता का अंश भी रहता नहीं। जहाँ हृदय होता है प्रकाशित सम्बिदात्मक भाखरं,

ध्येयं मतं तमहं सदा प्रणमामि सिन्धगिरीस्वरम् ॥६॥

जो है रजोमय आप पर परके रजोगुण को हरे,

है आप खूब कठोर पर जो और को कोमल करे।

आश्चर्यका अवतार तारक जो भवोदधि दुस्तरं,

सत्यं शिवं तमहं सदा प्रणमामि सिन्दगिरीक्वरम् ॥७॥ जहँ क्रोध मान तथैव माया छोभका चलता नहीं.

जहँ पूर्व सुकृतके बिना जाना कभी मिलता नहीं। जो है स्वयं जड़ किन्तु हरता है जड़त्व सुदुर्धरं,

जन-शंकरं तमहं सदा प्रणमामि सिन्द्रगिरीक्ष्वरम् ॥८॥

जहँ रोग शोक वियोग सारे नाश हैं होते सही,

दुर्भाग्य दुःख विशेष कर ढूंढे जहां मिलते नहीं।

सौभाग्य सुख प्रतिपद जहां पाते सुभव्य मनोहरं,

परमोत्तमं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीः श्वरम् ॥९॥

जहँ पंचकोटि सुसाधुगण से चेत्र पूनम पर्व में,

थ्री पुण्डरीक गणाधिनायक हैं गए अपवर्ग में I

सुलिसन्यु विसु भगवान् श्रीहरिप्ज्यपद पाए परं,

सविनय कवीन्द्र सुकीर्तितं तं नौमि सिन्धिगरीव्यरम् ॥१०॥

इसके वाद "जंकिचि॰", "णमुत्युणं॰", "जावंति चेइआइं॰", "जावंतकेवि

साहू॰", "नमोऽर्हत्॰" कहकर श्रीशत्रुंजय तीर्थराज का गुण गिनत १०

गाथा का स्तवन कहें ।

श्री सिन्धिगरि स्तवन गाथा १०

सुण सुण सेत्रुंज गिरस्वामी, जगजीवन अन्तर जामी । हूं तो अरज करूं सिर नामी, कृपानिध विनती अवधारो । भवसागर पार उतारो निज सेवक वान वधारो, कृपानिध विनती अवधारो ॥१॥ प्रमु सूरित मोहन गारी, निरस्थां हरले नरनारी । जाऊं वारीहूं वारहजारी, कृपानिध वीनति अवधारो ॥१॥ प्रमु कृपानिध वीनति अवधारो ॥१॥ हिकिसिय विमासण कीजे, मुझ ऊपर महरधरीजे । विलरंजन दर्शनदीजे, कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ अजसयल मनोरथफिल्या, भव भावना पातक टिल्या । प्रभू जो मुझसे मुख मिलिया, कृपानिध वीनति अवधारो ॥१॥ सरया संकट टिल्जावे, नवनव नित मंगलयावे । मुझ आतमपुण्य मरावे, कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ करजोड़ी वीनति कीजे, केशर चन्दन चरचीजे । दिन धन धन तेह गिणीजे कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ प्रसुदरश सरसलहि तोरो, अति हरिषत हुवा चितमोरो । जिमदीठां चन्द चकोरो, कृपानिधवीनति अवधारो ॥०॥ परतिल प्रभु पञ्चम आरे, वीस महामय संकट वारे । सहुसेवक काजसुधारे कृपानिधवीनति अवधारो ॥८॥ सेवा स्वामी सदासुखदाई, कामणा नरहैघर काई । वाधे संपति शोभा सवाई. कृपानिधवीनति अवधारो ॥९॥ नामिराय कुल्यरचन्दा, भव जन मन नयन अनन्दा । ओल्गो सुर असुरसुरिंच, कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ जानकि स्रिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ सामधर परम अनन्दा । वन्दे श्री जिनभक्ति स्रिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ जानकि स्रिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ जानकि स्रिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ वाभिरा पर अनन्दा । वन्दे श्री जिनभक्ति स्रिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ जानकि स्रिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥१॥ जानकि स्रिन्दा कृपानिधवीनित अवधारो ॥१॥ वाभिरा पर अनन्दा । वन्दे श्री जिनभक्ति स्रिन्दा कृपानिधवीनित अवधारो ॥१॥

## सिद्धगिरि स्तुति

विमलाचल मण्डण जिनवर आदि जिनन्द,

निरमम निरमोही केवल ज्ञान दिनन्द।
जे पूर्व निवाणूं वारधरी आनन्द,

सेत्रुझा गिरि शिखरे समवसर्या सुखकन्द॥१॥
इस प्रकार चैत्यवन्दन स्तवन स्तुति कहने के बाद

# श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुझाय नमः । २ श्री पुण्डरीकाय नमः । ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः । ४ श्री विमलाचलाय नमः । ५ श्री सुरगिरये नमः । ६ श्री महागिरये नमः । ७ श्रीपुण्यराशये नमः । ८ श्रीपर्वताय नमः । ९ श्रीपर्वतेन्द्राय नमः । १० श्री महातीर्थाय नमः । ११ श्री शाख्वताय नमः । १२ श्री दृद्ध-शक्तये नमः । १३ श्री मृक्तिनिल्याय नमः । १७ श्री पुण्यदन्ताय नमः । १५ श्री महापद्माय नमः । १६ श्री पृथ्वीपीठाय नमः । १७ श्री सूरमद्र-गिरये नमः । १८ श्री कैलाशगिरये नमः । १९ श्री पातालमूलाय नमः । २० श्री अकर्मकर्त्रये नमः । २१ श्री सर्वकामपूर्णाय नमः ।

ये सिद्धगिरि की खमासमणपूर्वक २१ जयित देवे ।

# श्री सिद्धाचल चैत्यवन्दन ( द्रुत विलिम्बत इन्द )

जय अनन्त गुणाकर शङ्कर ! जय महोदय हेतु निरन्तर ! । जय भयङ्कर दुःख निघर्षण ! जय गिरीश्वर पावन दर्शन ! ॥१॥ जय युदुर्गति पाप निवारण ! जय महा भव सागर तारण ! । जय यशाधर मोह तमोहर ! जय महालय भूत महेश्वर ! ॥२॥ जय महाघृति तेज विराजित ! जय भवोदय दुर्गुण वर्जित ! । जय विशाल विभुत्व समाश्रित ! जय गिरीश्वर योगि सुसेवित ! ॥३॥ जय निराजन पुण्य पदाश्रय ! जय सुञ्जुजल सिद्धि रमालय ! । जय निरामय निर्भय निर्मल ! जय गिरीश्वर सिद्ध महावल ! ॥॥

是她是她就想到她就被说法,不是这个不是这个孩子的孩子的我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们也有什么的,我们是我们的人,我们也是我们的人,我们也是不

जय रामोत्तम भूमि विशेषित ! जय वरिष्ठ विशिष्ठतया स्थित !। जय महाप्रम तीर्थ अनुत्तर ! जय गिरीश्वर शुद्धि महत्तर ! ॥५॥ शिवरमा मुख दर्शन के लिए. अचलता गुण शिक्षण के लिए। सिहाव निश्चल सिन्धिगिरीक्वर, शरण लूं मरणादि अगोचर ॥६॥ अमर के घर की नित नौकरी, सुरलता सुरधेनु करें खरी। अमर सेव्य गिरीक्वर तें कहो, कित रहे समता उनतें अहो ॥७॥ विकट मोहमहा भट को हरा. कर निज प्रभुता गुणसे भरा। मनु जयभ्वज मूर्त्त किया खड़ा,गुणी गणेन गिरीख़र को बड़ा ॥८॥ न जिसके बहिरात्म अभव्य भी, पुनित दर्शन पा सकते कभी। नयन दर्शन दर्शन ही नहीं, हृदय दर्शन दर्शन है सही ॥९॥ सुख सुदुःख समुत्थित भोग में, भवन या वन योग वियोग में। अमम हो विमलाचल जो रहें, सहज वे विमलाचल हो रहें॥१०॥ सुतर हो भव सागर सर्वथा, विलय जन्म जरा मरण व्यथा। बल विकाश अनन्त अनन्त हो, स्मरण में यदि तीर्थ जयन्त हो॥११॥ सुजन जो विमलाचल में चलें. विषय चोर नहीं उनको छलें। कुपयमें खलके बल होत हैं. सुपयमें खल निर्बल होत हैं ॥१२॥ गिरि अनेक यहां पर हैं खड़े. गगन में अति उन्नत हो अड़े। मिल रही उनमें कुछ भी भला, पर कहो विमलाचल की कला॥१३॥ अविरलोचत पुण्य प्रकाशके, सुहित कारक सिन्द गिरीशके। निकटमें यदि दोष न नाश हो, रविव घूक निदर्शन खास हो ॥१४॥ सु विमलाचलको तजें, स्वहित अन्य तथैवच जो भजें। सुरमणी तज पत्थर वे गहें, प्रथम के गुण थानक में रहें ॥१५॥ कुमति जो विमलाचल दुर्शन तें सही, कुटिल कर्म कभी रहते नहीं। किमु मदोद्धत हस्ति समूह भी, न मृग नाथ विलोक भगें कभी ॥१६॥ सफल जन्म घड़ी दिन है वही, अतुल भक्ति नदी जिसमें वही। न वह जन्म घड़ी दिन भी नहीं, सु विमलाचल भक्ति जहां नहीं ॥१७॥

जय कषाय बनान्तक, पावक ! जय कलंक निवारक पावक ॥१८॥ जय सुखोदिष वर्ष्टक चन्द्रमा ! जय जनाम्भुज बोधन अर्थमा ! जय विभो भगवत्व गुणाधिक ! जय भवाम्भुधि तारक नाविक ॥१९॥ जय सदा हरि पूज्य गिरीश्वर ! जय महा महिमा अजरामर ! जय कवीन्द्र सुगीत यशोनिधे ! जय महाजय पुण्य पयोनिधे ॥२०॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन कहकर "जंकिचि॰" कहे बाद "णमोत्थुणं॰"कहे जावंतिचेइयाइं॰ "जावंत केविसाहू॰" "नमोऽर्हत्त॰" कहकर बीस गाथाका श्री सिद्धाचल तीर्थराज का स्तवन पढ़े।

## श्री आबृ\*जी स्तवन गाथा २०

单张家民家的大学的家女女子,是不是是是我的,我是他们的家庭,我看着我们的,我们是我们的人,我们是我们的人,我们们们的一个女子,他们是我们的一个女子,这个女女的,他们是他们的

यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। यात्रा भणी उमहेज्यो तुम्हे नर भव लाहोलीज्योरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो। पंच-तीरथ मांहेळाजे आवू मारूँडेदेश विराजेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो स्वरगयी वादे लागो उंचो अंबरिये जाइ लागो रे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।१॥ एतो देवानो वास कहावे निरखन्ता त्रिपित नथात्रेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।एतोडूंगरियाने राजा एहनीछै बारह पाजारे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।२॥ छह ऋतु वास वणायो एतो चंपला अंवला छायोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।। सखर झरणा झाझा जिहां तिहावनवेल्याआझारे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो। सखर झरणा झाझा जिहां तिहावनवेल्याआझारे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।३॥ भार अढारे वणराई एतो इहां हिज निजरे आहरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।३॥ उपर भूमि विशाला देवल दीहा रिलयालारे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।॥ उपर भूमि विशाला देवल दीहा रिलयालारे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।वात्रा करज्यो।विमलमन्त्री वरदाई चक्केसरिदेवी सहाईरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।वात्रा करज्यो।वात्रा वरदाई चक्केसरिदेवी सहाईरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।वात्रा वरदाई चक्केसरिदेवी सहाईरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।।वात्रा करज्यो।वात्रा वरदाई चक्केसरिदेवी सहाईरे, यात्रीडा भाई आवीतोरे,

अाबूजी में मूळनायक भगवान् श्रृषभदेवजी की प्रतिमा है अतः यह स्तवन यहां पर
 िळखा गया है

1.1. 车下下下下下下午,在下午时间的一样,我们是阿克克克克克克克斯,我还是我们在这个孩子,我们有这个人的一样,我们有这么是我们的一样,我们有这个人的一样,我们

यात्रीडा भाई आव्जीनी यात्रा करज्यो । देवल तेण करायो पाहण आरास-मंडायोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥६॥ झीणी झीणी कोरणी झेरयो दलमाखण जेम उकेरयोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । नवि नवि भांति वणाई जिहांतिहां **झिणाईरे, यात्रीडा भाई** आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥७॥ उत्तरे पाहण जेतो जोखीजे पाहणतेतोरे, यात्रीडा माई आवूजीनी यात्रा करज्यो । आदिजिनेसर स्वामी प्रतिमा थापी हितकामीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥८॥ उगणीसकोडसोनइया द्रव्य लागत करि जस लीयारे, यात्रीडा भाई आवूजीनीयात्रा करज्यो । करजोड़ीने आगे मन्त्री जिनवर पाय लागेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करच्यो ॥९॥ पूठे चढ़िया हाथी मंडाणापित साह साथीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । इणदेवल समवड कोई भूमंडलमांही न होईरे, यात्रीडा भाई आवृजीनी यात्रा करज्यो ॥१०॥ बिल तिणवंश विगताला वस्तुपाल अने तेजपालारे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । देवनमी ऋष्टिपाई इहां तियां पिण सफल कराईरे, यात्रीडा माई आवूजीनी यात्रां करज्यो ॥११॥ तेहवो जिणहरपासे वार कोडनी लागतिभासेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी करज्यो । देवराणी जेठाणी आलानी अजब कहाणीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१२॥ इहां देवल सोहवधारी नेमनाथजी बालबहाचारीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । कस वट पाहण केरी मूरत सुरमा रंग हेरीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१३॥ देवल वाडोदीठो तेतो लागै नयणै मीठोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । तिहांकेई देवल पासे लोक जोवेघणो तमासोरे, यात्रीडा माई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१४॥ त्रिणगाउआगल जाइयै देवल देखी सुख लहियेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । चौमुखप्रतिमा च्यारो आदिनाथ देवजुहा-रोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१५॥ सोवनमं साते धातो क्षिगमिग् रही दिनने रातोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । मणचवदेसे चम्माली जिण बिवनो भार निहालोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी

,1918年,1918

यात्रा करज्यो ॥१६॥ श्रीमाली भोम सो भागी जिणवरथी जसु लय लागीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । एहनी करणी वाहवाहो इहांलीघो लखमी लाहोरे, यात्रीडा माई आवृजीनी यात्रा करज्यो ॥१७॥ ए ड्रं-गरियै आवी जिण यात्रा करे मनभावीरे, यात्रीडा भाई आयूजीनी यात्री करज्यो । जिहांतिहां पूजरचावे नाटकिया नाच करावेरे, यात्रीडा माई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१८॥ रातीजोगो दिवरावो जिनवरना जसगुण गावोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । साहमीवच्छर कीज्यो जातङ्ळीनो जसळीजोरे, यात्रीडा भाई आवृजीनी यात्रा करज्यो ॥१९॥ आगेथी आवी चाली वातां केई अचरज वालीरे, यात्रीडा भाई आवृजीनी यात्रा करज्यो । सुणियेछे जे कोई अहिणाणें जोज्यो तेईरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥२०॥ एतीरथ गुणगावा यात्रा ने।फलते पांबरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । एतीरथसमतालेंकुण आवे रूपचन्द बोलेरे। यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥२१॥ इस प्रकार जयविय-राय॰ अरिहंतचेइयाणं॰ अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करें।

## सिद्धिगिरि स्तुति

सुदी पक्षनी पूनम चैत्रमास शुभवार, विधिसेति लहिये आगम साख विचार । इम सोळे वरस लग धरिये ज्ञानउदार, करतां नरनारी पामें भवनोपार ॥१॥ स्तुति कह निम्न खमासमणपूर्वक जयति देवे ।

#### श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुङ्गाय नमः । २ श्री पुण्डरीकाय नमः । ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः । ४ श्री विमलाचलाय नमः । ५ श्री सुरगिरये नमः । ६ श्री महा-गिरये नमः। ७ श्री पुण्यराशये नमः। ८ श्री पर्वताय नमः। ९ श्री पर्वते-न्द्राय नमः । १० श्री महातीर्थीय नमः । ११ श्री शाख्वताय नमः । १२ श्री दृढ्शक्तये नमः । १३ श्री मुक्तिनिल्याय नमः । १४ श्री पुप्पदन्ताय नमः । १५ श्री महापद्माय नमः । १६ पृथ्वीपीठाय नमः । १७ श्री सुभद्र

गिरये नमः । १८ श्री कैलाशगिरये नमः । १९ श्री पातालमूलायनमः । २० श्री अकर्मकाय नमः । २१ श्री सर्वकामपूरणाय नमः ।

# श्री सिद्धगिरि चैत्यवन्दन ( दोहा )

श्री सिद्धाचल सकल सुख, सागर सिद्धि निघान । दुःख निवारण सिंदि हित, वन्दूं घर बहुमान ॥१॥ श्री सिद्धाचल पर सुजन, जो सीधा चल जाय । मव वन में भूले न वह, अजरामर पद पाय ॥२॥ श्री सिन्धा-चल शिखर पर, शिवरमणी अधिवास । गुण थानक नर जो पढ़ें, पावें सौल्य विलास ॥३॥ श्री सिद्धाचल अचल पद, आश्रित जन आधार । मोह महारि नरेश का, जहां न दण्ड प्रचार ॥१॥ श्री सिद्धाचल उच्चता, करे नीचता नाश। कर्म शिकारी का जहां, चले न कोई पाश ॥५॥ श्री सिद्धाचल जो लखे, आतम अन्तर रूप । वे जन निर्धन भी यहां, होवें त्रिभुवन भूप ॥६॥ श्री सिन्डाचल निकट में, प्रकट महोदय योग । विकट तमोगुण को हरे, भरे अतट सुख भोग ॥७॥ श्री सिद्धाचल क्षेत्र की, महिमा अपरम्पार । नित्य घनाघन कर्म बिन, देता फरू विस्तार ॥८॥ श्री सिद्धाचल सम यहां, है सिद्धाचल आप । अनुपमेय उपमा रहित, गुण हैं भरे अमाप ॥९॥ भीम भवोद्घि डूबते जीवों का आधार । द्वीप अनुत्तर सुलद यह, सिन्हाचल जयकार ॥१०॥ शान्त अपूर्व गिरीश यह, शत्रुक्षय सुविशेष । भूति भोग वृष वर शिवा, लम्बन रुद्र न लेश ॥११॥ पुरुषोत्तम श्रीपद नरक, नाशक अभिनव भाव। पर वृष भेदी है न यह, गिरिवर पुनित प्रभाव ॥१२॥ व्रह्म सनातन वरविधि पावन परम पुराण । है सिन्दा-वल किन्तु भव लय, कारण परमाण ॥१३॥ तिमिर हारि खरकर सुभग, मित्र अनन्त प्रकारा । यह सिद्धाचल है अहो !, अस्त रहित अवकारा ॥११॥ राज राज अमृत निधि, सोम कला गुण धाम, औषधीश है सिद्ध-गिरि, निर्लाञ्छन उद्दाम ॥१५॥ घन आश्रय सुरपंथ परम, विशद विष्णुपद खास । है अनन्त यह तीर्थपति, पर नहीं श्रन्याकाश ॥१६॥ रसमय जीवन धर महा, मोद हेत घनरूप । धम योनि पर है न यह, सिन्धिगरीश अन्प

也不是不是,这种人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,他们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们是一个人,我们就是一个人

॥१७॥ धर्मराज समवर्ति गुण, महासत्य यमराज । है सिद्धाचल किन्तु यह, मृत्यु विनाशक साज ॥१८॥ धर्मधातु श्रीघन सुगत, महा बोधि भगवान् । है सिद्धाचल पर न है, क्षणिक बाद परधान ॥१९॥ श्रीनन्दन प्रद्यम्न पद् कला केलि अभिराम । है सिद्धाचल विश्व में, पर नहीं मन्मथ काम ॥२०॥ क्षमा मूर्त्ति अचलाकृति, सर्वेसहा समान । श्री सिद्धाचल है सदा, पर नहिं कुपद विधान ॥२१॥ संवर जीवन सर्वतो मुख धन रस परिणाम । है सिद्धाचल सर्वथा, पर नहिं जड़ता धाम ॥२२॥ रत्नाकर पावन निधि, दिन्य महाराय नन्य । पर सागर जल निधि नहीं, यह सिद्धाचल भन्य ॥२३॥ पावक तमनाशक शुचि, मल जड़ता क्षय हेतु । है न हुताशन सिद्धिगिरि, शिव मन्दिर वर केंतु ॥२४॥ जगत्प्राण शीतल महा बल पवमान अमान । नूतन सिद्धाचल अहो, अप्रकम्प गुणवान ॥२५॥ जय जय सिद्धा-चल विमल गुण जय जय गिरिराज!। जय जय अनुभव सिन्हपद् जय त्रिभुवन सिरताज ॥२६॥ जय जय सुख सागर विमो ! जय जय जगदा-धार !। जय तीर्थेश्वर जय अभय, दाता जय जयकार !।।२७॥ जय भगवन् अघहर सदा, जयरात्रु झय भाव ! । जय साधक सिब्धिस्थिते ! जय सुत्रत विधि दाव ! ॥२८॥ जय सुरगण नायक हरि, पूज्य दयामय देव ! । जय जय मोह महोदधि, शोषकपद स्वयमेव ॥२९॥ जय सविनय सुकवीन्द्र गण कीर्तित गुणमणिमाल । जय सुचिरंजय सिद्धगिरि, शरणागत प्रतिपाल ॥३०॥

चैत्यवन्दन के बाद "जंकिचि॰, णमोत्थुणं॰, जावंति॰ चेइयाइं॰, जावंत केविसाहू॰, नमोऽर्हत्र॰" कहकर श्रीसिद्धाचलजी का तीस गाथा स्तवन कहे।

## सिद्धगिरि स्तवन गाथा ३०

मंगल कमला कंद ए, सुखसागर पूनम चन्द ए। जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानन्द ए।।१॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए। पुण्य भंडार मरेसु ए, मानव मव सफल करेसु ए॥२॥ कोडिह लाख पचास ए, सागर जिणशासन भास ए । रिसह जिनेसर बंस ए, उबझाय सरोवर हंस ए ॥३॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जित-शत्रु जग गाजियो ए। विजया तसु घर नार ए, बिहुं रमयति पासासार ए ।।।।। क्रूख हि जिन अवतार ए तिण राय मनाच्यो हार ए । उयर वस्यो दसमास ए, पभु पूरी जननी आस ए ॥५॥ बिहुं जण मन आणंदियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए । तिहुअण सयल उछोह ए, क्रम कम बाघे जगनाह ए ॥६॥ हंस घवल सारिस तणी ए, गति सुललित निजगति निरजणी ए । मलपित चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥७॥ अवर न समो संसार ए, विल ज्ञान विवेक विचार ए । गुण देखी गज गह गह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥८॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए । पीय साधै सब काज ए, प्रभु पालै पुहवी राज ए ॥९॥ हिव हथणाउर ठाम ए, विश्वसेन नरेसर नाम ए । राणी अचिरा देव ए, मनहर सुखमाणे बेव ए ॥१०॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवतरयो ए । मानव देवबखाणियो ए, चक्कीसर जिनवर जाणियो ए ॥११॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नाम दियो श्री शांत ए । जिन गुण कुण जाणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु ओपमा नहीं ए । ॥१२॥ नयण सलूणो हिरण लो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए । नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥१३॥ गीतही राग सुरंग ए, पभणे लोक कुरंग ए। तो ऊलम्यो सिस संक ए, तिण पाम्यो नाम कलंक ए ॥१४॥ इण पर मृग अति खळमल्यो ए, भय भंजण सामि सांभल्यो ए । आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥१५॥ लीलापति परणे घणी ए, नवनविय कुमर राया तणी ए। बल छल अस्यिण जोगवे ए, पीय राय भली पर भोगवे ए ॥१६॥ कुमर तणें मंडल समें ए, पंचास सहस बरसां गमे ए। तो तेजे दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥१७॥ साधी भरह छ खंड ए, वरतावी आण अखंड ए। चवद स्यण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जक्लें अही ए ॥१८॥ सहस बहुत्तर पुर वरा ए, बत्तीस मौडबद्ध नरवरा ए। पायक गामै कोड़ ए, छिन्नवे नमें

बे कर जोड़ ए ॥१९॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मन्दिर हुआ ए । लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस सहस नाटक रमें ए ॥२०॥ रूप जिसी सुरसुन्दरी ए. लक्षण लावण्य लीलामरी ए । जंगम सोहग देहरी ए, ऐसी चौसठ सहस अंतेउरीए॥२१॥ अवरज ऋष्टि प्रकार ए. मणि कंचण रयण मंडार ए । ते कहिवा कुण जाण ए, वपुवपुरे पुण्य प्रमाण ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए. चोथो दूसम सूसम समो ए । वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविध परा ए । जाणी अवसर सार ए, बिहुं लीधो संयम भार ए ॥२४॥ बिहुं खम दम धीरम धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए। बिहुं जिण झाण समाण ए, बिहुं पाम्या केवलञ्ज्ञान ए ॥२५॥ बिहुं देवहि कोडिह मैमिहि ए, बिहुं चोतीसै अतिसय सिह ए। समवसरण बिहुं ठाण ए, बिहुं योजन बाणि बखाण ए ॥२६॥ नाचे रणकत नेउरी ए, बिहुं आगली इंद अंतेउरी ए। हगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुर बहू ए ॥२७॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमला, बिहुं पगतल नव सोवन कमला। बिहुं जिण तणे विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥२८॥ बिहुं उवयार भुवन भरी ए, बिहुं सिद्धि रमणि सयम्वरी ए। बिहुं भञ्जी भव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥२९॥ इम बीजे ने सोलमो ए, जाणे चिन्तामणि सुर तरु समो ए। थूणि अ ति संझ विहाण ए, तिहां इह परिभव नविहांण ए ॥३०॥ बिहुं उच्छव मंगल करणा बिहुं संघ सयल दृरिय हरणा । बिहुं वर कमल वनण वयणा, बिहुं श्री जिनराय भुवण रयणा ॥३१॥ इम भगते मोलिमतणी ए, श्री अजिय शांति जिण थुय भिण ए। सरण बिहु जिण पाय ए. श्री मेरु नन्दन उवझाय ए ॥३२॥ 🕸

इस प्रकार स्तवन कहकर जयवियराय॰ अरिहंत चेइयाणं॰ अणत्य॰ कह निम्न स्तुति पढ़े।

अपर्युक्त स्तवन अजितनाथस्वामी और शान्तिनाथरवामी का है प्राचीन पुरत्तकों में तीमगाथा का स्नवन न होने से यहां दे दिया गया है ये दोनों ही तीर्थंद्वर शत्रुक्षय पर्वत पर समवसरे थे।

## सिद्धगिरि स्तुति

सेनुजामंडण आदिदेव, हूं अहनीस समरूं ताससेवे । रायणतल प्रभुतणा, पूजी सफल फलसोहामणा ॥१॥

## श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री राजु क्षयाय नमः। २ श्री पुण्डरीकाय नमः। ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः । १ श्री विमलाचलाय नमः । । ५ श्री सुरगिरये नमः । ६ श्री महा-गिरये नमः । ७ श्री पुण्यराशये नमः । ८ श्री पर्वताय नमः । पर्वतेन्द्राय नमः । १० श्री महातीर्थीय नमः । ११ श्री शाश्वताय नमः । १२ श्री दृढशक्तये नमः । १३ श्री मुक्तिनिलयाय नमः । १४ श्री पुष्पद-न्ताय नमः । १५ श्री महापद्माय नमः । १६ श्री पृथ्वीपीठाय नमः । १७ श्री सुमद्रगिरये नमः । १८ श्री कैछाशगिरये नमः । १९ श्री पाताल-मूलाय नमः । २० श्री अकर्मकाय नमः । २१ श्री सर्वकामपूरणाय नमः ।

ये सिन्दगिरि की खमासमणपूर्वक जयति देवे।

## श्री सिद्धाचल तीर्थराज चैत्यवन्दन

परमातम पदवी छहें, पुण्डरीक गणनाथ । चैत्री पूनम पर्वमें, पंचकोटि मुनिसाथ ॥१॥ पुण्डरीक गुणधाम यह, पुण्डरीक गिरिराज । यातें पावन तीर्थ जय, पुण्डरीक सिरताज ॥२॥ मंजुल मन मोहन जहां, पसरे परम सुवास । पुण्डरीक गिरिराज यह, पुण्डरीक पद खास ॥३॥ कर्म विकट शठ गजघटा, नाहो अपने आप । पुण्डरीक गिरिराज है, पुण्डरीक परताप ॥॥। मोह महा वनतिमिर भर, झटपट होवे दूर । पुण्डरीक गिरिराज पर, पुण्ड-रीक गुण नूर ॥५॥ निम विनमी विद्याधरा, दो कोटी मुनि संग । शत्रुक्षय गिरिराज पर, कर कर्मों से जंग ॥६॥ शत्रुखय कर आतमा, वर्ण गन्ध रस हीन । रूप अरूपी होगए, निजगुण सुख लयलीन ॥७॥ दश कोटी सुनि संगमें, द्राविड वारिखिछ । गए सिन्डगति सिन्डगिरि, नाश किया सह ॥८॥ वैमाविक पर्याय से, विरहित हो कर जीव । स्वामाविक पर्याय पा, हुए सिन्हगिरि शिव ॥९॥ साढे आठ कोटि यहां.

कुमार । प्रद्युम्नादिक शिव गए, कर भव सागर पार ॥१०॥ पांडव पांच महाबली, विजयी हो संसार । सिद्धि वधू स्वामी हुए, अजरामर अवतार ॥११॥ परम जैन धर्मी परं, अन्य लिंग पद धार । नव नारद पाए यहां, शिव सुख अपरंपार ॥१२॥ द्रव्य समर्थक भावका, अन्तर उन्नत भाव। भावे भव भय नाश हो, यहां यही गुण दाव ॥१३॥ सब उन्माद व रोग के. हेतु धातुका शोष । करे द्रव्य संलेखना, यहां सदा सुख पोष ॥१४॥ निज गुण रोधक कर्म सह, राग द्वेषका रोध । यहां भाव संलेखना, करे खगुण प्रतिशोध ॥१५॥ मविजन होते हैं यहां, शान्त कान्त शुचि अंग । पुण्या-मृत कल्लोलमें, करके स्नान सुरंग ॥१६॥ ज्ञानावरण वियोगतें, लोकालोक अशेष । जाने केवल ज्ञान पा, यहां अनन्त विशेष ॥१७॥ यहां दर्शनावर-णका, होते नाश अनन्त । वस्तुगत सामान्यता, दर्शन होत अनन्त ॥१८॥ पुद्गल संगत वेदनी, कुटिल कर्म हो नारा। अन्याबाध अनन्त सुख, होत यहां सुप्रकाश ॥१९॥ यहां मोहके नाश तें, हो मिथ्यात्व अभाव । गुण अनन्त सम्यक्त्व में, प्रकटे रमण सुभाव ॥२०॥ चंचल नयन निमेष सम. आयुषका कर अन्त । पावें थिति भविजन यहां, अक्षय सादि अनन्त ॥२१॥ नाम कर्म इन्द्रिय विषय, रहें नहीं छवछेश । यहां निरंजन सिद्धता, अनु-भव होत विशेष ॥२२॥ गौत्र कर्म नाशे यहां, प्रकटे समता रूप । और अगुरु लघु योगते, सुखमय रूप अनुप ॥२३॥ अन्तराय के अन्तसे, पसरे वीर्य अनन्त । दानादिक शुभ लिबयां, निज सत्ता विलसंत ॥२४॥ निज गुण ठाठ मिटा रहे आठ कर्म संयोग । तीर्थराज पे आतमा, उनका करे वियोग ॥२५॥ मित्रा तारादिक विशद्, आठ दृष्टि उछ्छास। योग अंगकारण यहां, पावें परम विकाश ॥२६॥ खेद खेप आदिक यहां, आठ दोष हो दूर। सहज महोदय हो यहां, परम योग अंकूर ॥२७॥ यम नियमादिक आठ विघ, योग योग निर्धार । यहां आठ विघ कर्मका, होता है संहार ॥२८॥ भव गुण आठों कर्मके, बन्ध सुदुःख निदान । उदय और उदीरणा, निज सत्ता सन्धान ॥२९॥ यहां निजातम वीर्य से, गुणठाणा क्रम रूढ़ । भेद करें भन्यातमा, पावें गृढ निगृढ ॥३०॥ नहीं पांच संस्थान

的话,这一样,一个时间,我们就是一个时间,我们是一个时间,我们的时间

न वेद विकार । पांच वर्ण दो गंघ रस, पांच न जहां प्रचार ॥३१॥ रपर्श आठ होते नहीं, जहां न होती देह । जन्म नहीं न जरा जहां, यही दिव्य गुण गेह ॥३२॥ सिन्ध अचल शाख़्त सकल, पुनरागमन विहीन । चौद्र-राज लोकान्त थिति, लोकोत्तर सुख पीन ॥३३॥ पर गुण कारकता नहीं, न जहां प्राहक शक्ति । कर्तृ त्वादिक भाव जहं, निज पदमें ही व्यक्ति ॥३॥ उत्पाद व्यय ध्रुवगुणी, आतम द्रव्य अभंग । गुण पर्यायों में सदा, पूर्ण समाधि सुरंग ॥३५॥ अस्ति नास्ति आदिक जहां, विद्यमान सतमंग । स्याद्वाद सुख सिन्धु में, भेदाभेद तरंग ॥३६॥ चउगति चक्कर से परे, परम सिन्धगित सार । सिन्धाचल चढ़ते उसे, पाते हैं नर नार ॥३०॥ तीर्ध-राज महिमा अगम, अलख अगोचर रूप । त्रिभुवनमें सबसे बड़ा, यही सर्व सिर भूप ॥३८॥ जय सुख सागर पुण्डरीक, जय जय श्री भगवान । जय सुर गणनायक हरी, पूज्य महोदय थान ॥३९॥ जय जय श्री आनन्द धन, देव चन्द्रपरधाम। नित कवीन्द्र कीर्तित करूं, प्रातः काल प्रणाम ॥४०॥ चैत्य वन्दन के बाद "जंकिंचि॰", "णमोत्युणं॰", "जावंति चेइ-

चैत्य वन्दन के बाद "जंकिचि॰", "णमोत्युणं॰", "जावंति चेइ-याइं॰", "जावंत केवि साहू॰", "नमोऽईत्॰" कहकर श्रीसिद्धाचल तीर्थीधराज का चालीस गाथा का स्तवन पढ़े।

# सिदाचल तीर्थराज स्तवन गाथा ४०

परम कल्याण हितकारी, विमल गिरिराज जयकारी। विजय जय कीर्तिगुणधारी, विमल गिरिराज जयकारी॥ टेर ॥ कल्पतरु काम कुम्भादि, न इसकी शान रखते हैं। समीहित दिन्यफलदाता, विमल गिरिराज जयकारी॥ परम॰ १॥ यहां आते हुये जन के, अलौकिक भाव होते हैं। अन्ठा क्षेत्र उपकारी, विमल गिरिराज जयकारी॥ परम॰ २॥ जलाता क्रोध अग्नि हैं, जगत को पर यहां आते। स्वयं जल राख होता हैं, विमल गिरिराज जयकारी॥ परम॰ २॥ वड़ा जो मान का पर्वत, जगत को मानता नीचा। वही नीचा यहां होता, विमल गिरिराज जयकारी॥ परम॰ ४॥ न माया डाकिनीकामी, यहां कुल जोर चलता है। हमेशा दूर

रहती है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ५ ॥ यहां पर लोभ का सागर, सहज में सूख जाता है। महा तेजो मयी मूर्चि, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ६ ॥ कलुषित भावना वाली, कुलेश्या कृष्ण नीलादि । यहां पर नाश होती हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ७ ॥ सुलेश्या तेज पद्मादि, विमल गुण भावना वाली । यहां सुविकाश पाती हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ८ ॥ निमित्तों की शुभाशुभता, शुभाशुभ काम करती हैं। जगत के शुभ निमित्तों में, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ९ ॥ अकारण काम कोई भी, यहां होते नहीं देखा । सुकारज में सुकारण है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ १०॥ सफल काल खभावादि, यहां पर पुष्ट होते हैं । सुकारण कारणों का है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ११॥ यहां पर आतमा होती, प्रमाणित सच्चिदानन्दी। नयों से और प्रमाणों से, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ १२ ॥ अहेतु हेतु-वादों से, प्रतिष्ठित निर्विवादी है। परम गुण प्राप्त विधि हेतु, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १३ ॥ स्वभाविक व्यंजना पर्याय, अनुभव खूब होता है। यहां पर आतमा का सत, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १४ ॥ निजावस्था रमणता में, अनन्ते अर्थ पर्याया । यहां प्रत्यक्ष होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ १५ ॥ असत् सत् आदि सत भंगे, अरथ पर्याय संवेदन । यहां होता विशदतर वर, विमल गिरि-राज जयकारी ॥ परम० १६ ॥ असत् सत वा उभयरूपे, त्रिभंगे व्यंजना होती । यहां निज आत्म की अनुपम, बिमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ॥ १७ ॥ तपस्वी भव्य गुण योगी, यहां पर शुद्ध ध्यानी हो । 'अनन्ते सिद्ध होते हैं. विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १८ ॥ वे जगमें, यहां जो जीव रहते हैं। भवोद्धिपार करते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १९ ॥ विराधक और आराधक, यहां पर बन्ध अरु मुक्ति । सहज में प्राप्त करते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २० ॥ यहां यात्रा करें पूजा, चतुर्विध संघ भक्ति जो । सकल होवें, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २१ ॥ नरक में

यहां पर यात्रियों को जो । सतावें दु:ख दें या तो, विमल्लगिरिराज जय-कारी ॥ परम० २२ ॥ जिनेश्वर तुल्य जिन प्रतिमा, सुपूजा को विमलजल से। यहां करते विमल गुण हो, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २३ ॥ यहां चन्दन सुखद पूजा. सकल सन्ताप हर करके। मनोहर दिव्य पद देवें, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २४ ॥ यहां वर पुष्प पुंजों की, सुगन्धी दिन्य मालाएं। चढ़ाते सिद्धगति चढ़ते, विमल गिरिराजं जय-कारी ॥ परम॰ २५ ॥ दशांगी ध्रप करने से, यहां जन पाप हरते हैं । अशुभ दुर्गन्ध को टारे, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २६ ॥ यहां पर दीप करने से, तिमिर भर नाश होता है। पुनित परकाश होता है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २७ ॥ सरल शुभ अक्षतों का जो. करें स्वस्तिक यहां पर वे । चतुर्गति चूर देते हैं, विमल गिरिराज जय-कारी ॥ परम० २८ ॥ सरस नैवेद्य ढ़ोते हैं, यहां जो पुण्य पावें वे । अनाहारक परमपदको. विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ २९ ॥ अनुत्तर फल चढ़ावें जो, यहां फल दिव्य पाकर वे। करम फल मुक्त होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३० ॥ यहां पर आरती करते, निजा-रति दुःख लय होवे । महोदय प्राप्त होता है, विमल गिरिराज ज्यकारी ॥ परम॰ ३१॥ सुमंगल दीप करने से, अमंगल भाव हटते हैं। परम मंगल यहां होवे, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३२ ॥ यहां पर द्रव्य पूजा भी, समुन्नत भाव प्रकटाती । हरे फिर भाव भव भय को, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३३ ॥ यहां पूजक हुए होवें, सदा स्वाधीन सुख भोगी । महागुण पूज्यतावाले, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३४॥ प्रमु श्रीकेवलज्ञानी, प्रमुख तीर्थंकरों की भी। यहां सिद्धि हुई शाश्वत, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३५ ॥ यहां शुक्र सेलगादिक ने, लपाये आठ कर्मों को । हुए अकलंक आनन्दी, विमल गिरिराज जय-कारी ॥ परम॰ ३६ ॥ यहाँ रघुवंश रामादिक, विजेता द्रव्य अरु भावे । अभयपद पूर्णता पाए, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३७ ॥ निजात्म में यहां आते, प्रकटता पूर्ण सुखसागर । न दुःख का 

विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३८ ॥ यहां जो भक्त आते हैं, सही भगवान होते हैं । अनिर्वचनीय महिमामय, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ३९ ॥ सुगुरु हरिपूज्य पद पावन, कवीन्द्रों से सुकीर्तित हैं । सदा वन्दे सदा वन्दे, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम॰ ४० ॥

्र स्तवन के बाद "जय वीयराय" "अरिहंत चेइयाणं" "अणस्य" ४० अथवा १ छोगस्स का कायोत्सर्ग करे । काउसग्ग पार कर "नमोऽर्हत्" कहकर स्तृति कहे—

## श्री शत्रुञ्जय स्तुति

श्री शत्रुक्षय गिरि तीरथसार गिरवर माहें जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार मन्त्रमाहि नवकारज जाणुं। तारामाहे जेमचन्द्र वसाणुं जलधर माहे जल जाणुं पंखी मांहे जेम उत्तमहंस, कुल मांहे जिम ऋषमनोवंश नामि-तणो जे अंश क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता। तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुक्षय गिरि गुणवंता॥ १॥

#### श्री सिद्धगिरि जयति

॥१॥ श्री शत्रुझयाय नमः॥२॥ श्री पुण्डरीकाय नमः॥३॥ श्री सिन्ध-क्षेत्राय नमः ॥४॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥५॥ श्री सुरिगरये नमः ॥६॥ श्री महागिरये नमः ॥७॥ श्री पुण्यराशये नमः ॥८॥ श्री पर्वताय नमः ॥९॥ श्री पर्वतेन्द्राय न्मः ॥१०॥ श्री महातीर्थाय नमः ॥११॥ श्री शाञ्चताय नमः ॥१२॥ श्री दृढ्सक्तये नमः ॥१३॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥१४॥ श्री पुष्पद्न्ताय नमः ॥१५॥ श्री महापद्माय नमः ॥१६॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः ॥१७॥ श्री सुमद्रगिरये नमः ॥१८॥ श्री कैलाशिंगरये नमः ॥१९॥ श्री पातालम्लाय नमः ॥२०॥ श्री अकर्मकाय नमः ॥२१॥ श्री सर्वकाम पूर्णाय नमः ॥

ये सिन्द गिरिकी खमासमणपूर्वक जयित देव

# श्री शत्रुञ्जय तीर्थराज चैत्यवन्दन

ॐ अहं पद पुण्यतम, त्रिभुवन पावन धाम । पुण्डरीक गिरिराज है, प्रतिदिन करूं प्रणाम ॥ १ ॥ अगमगुणी तीर्थेश की, महिमा अपरम्पार । सुरगुरु अथवा शारदा, कहत न पावें पार ॥ २ ॥ लघुमति गति अति मक्ति से, हूँ प्रेरित मैं आज । सुध बुध अपनी भूळकर, गाऊ तीरथ-राज ॥ ३ ॥ तारक गुण धारक यहां, हैं सब तीरथ रूप । द्रव्य भाव के भेद से, एक अनेक सरूप ॥ ४ ॥ जम्बू दक्षिण भरत में, सोरठ देश विशेष । तीर्थराज राजे वहां, त्रिकरण नम्ं हमेश ॥ ५ ॥ सिन्धाचल संसार में, तीर्थ शिरोमणि सार । दर्शन वन्दन रपर्शतें, संविजन तारण हार ॥ ६॥ शत्रुंजय श्री पुण्डरीक, विमलाचल अभिराम । सुरगिरि महागिरि आदि गुण, मय ध्याऊं शुभ नाम ॥ ७ ॥ निजवर बैठे भावसें, जो तीरथ शुभ नाम । जाप करें उनके यहां, नारों पाप तमाम ॥ ८॥ केवलज्ञानी आदि दे, तीर्थंकर अरिहंत । सिद्ध हुए होंगे तथा, काल अनन्तानन्त ॥ ९ ॥ ऋषमदेव स्वामी यहां, पूर्व नवाणुं वार । रायण रूंख समोसरे, जिनवर जगदाधार ॥ १० ॥ पुण्डरीक गणधर गुणी, पंच कोटि मुनि संग । चैत्री पूनम में यहां, भोगें सौख्य अभंग ॥ ११ ॥ निम विनिम विद्याधरा, दो कोटि सुनिसाथ । फागण सुदि दशमी हुए, शिव रमणीके नाथ ॥ १२ ॥ चैत्र बदी चउदश दिने, शत्रुंजय आधार । निम पुत्री चउसठ लहें, शिव मन्दिर अधिकार ॥ १३ ॥ द्राविड़ वारिखिल्ल मुनि, दश कोटि अनगार । कार्तिक पूनम में यहां, पाये पद अविकार ॥ १८ ॥ पांडव पांच तथा यहां, नव नारद ऋषिराज । प्रद्यमादिक यादवा, पाये अविचल राज ॥ १५ ॥ नेमि विना तेवीस जिन, पावन गुण मण्डार । समवसरे गिरिराज पे, करते-परउपकार ॥ १६ ॥ अंजित शान्ति जिननाथ दो, रहें यहां चंडमास । आतमगुण उन्नल किये, सहज समाधि विलास ॥ १७॥ थावचा सत सेंलगादिक, मुनि केंड् कोड़। कठिन कर्म जंजीर को, यहां झपट दें तोड़ ॥ १८ ॥ भरतेख़र के पाटपे, असंख्यात भूपाल । सिद्धाचल पे सहज में, छोड़ें भव जंजाल ॥ १९ ॥ जालि मयालि प्रमुख मुनि, आतम गुण

उद्दाम । प्रकटा कर पावें यहां, परमातम विश्राम ॥ २० ॥ सिन्द अनन्तों के परम, पुनीत शान्त अणुयोग । मूर्त्तरूप यह सिन्द गिरि, टारे भव दुःख भोग ॥ २१ ॥ सिद्ध रूप की साधना हित सुन्दर आकार । सिद्धायतन यहां करें, त्रिविध ताप अपहार ॥ २२ ॥ काल चाल से जीर्ण वे, होते हैं निर्द्धार । तीर्थ भक्त भाविक करें, उनका जीर्णोद्धार ॥ २३ ॥ इस अवस-पिंणि काल में, हुए असंख्य उद्धार । उनमें भी सोलह बड़े, हुए विदित संसार ॥ २४ ॥ ऋषभ देव उपदेशतें, भरत भरतपति खास । करें प्रथम उद्धार को, पावन पुण्य प्रकाश ॥ २५ ॥ भरत आठवें पाट में, दण्डवीर्य भूपाल । उद्धारक दूजे हुए, जिन शासन उजमाल ॥ २६ ॥ इशानेन्द्र उद्धार को, करे तीसरी बार । दुर्शन दुर्शन योगतें, तीन जगत जय-कार ॥ २७ ॥ चौथे सुरलोकेशने, किया चतुर्थीन्दार । तीर्थ भक्ति करते भविक, पावें भवोद्धि पार ॥ २८ ॥ पंचम पंचम देवपति, तीथोंद्धारक धन्य । तीरथ सेवा जो करें, ता सम धन्य न अन्य ॥ २९ ॥ भुवनपति-अधिपति करें, छष्टा जिणोंदार । होता जिणोंदार में, अठगुण पुण्य प्रचार ॥ ३० ॥ तीरथ वर उद्धार को, करें सातवीं वार । सगर चक्रवर्ती जयी, तीरथ भक्त उदार ॥ ३१ ॥ व्यन्तरेन्द्र सुनकर करें, अभिनन्दन जिन पास । अष्टम वर उद्धार को, आठ करम घन नाश ॥ ३२ ॥ नवमें उद्धा-रक हुए, चन्द्रयशा नरनाथ। चन्द्रप्रमु के पौत्रवर, शिव रमणी के नाथ ॥ २२ ॥ निज पितु शान्तिजिनेश के, सुनकर शुभ उपदेश । दशवें उद्धारक हुए, चक्रधरेश विशेष ॥ ३४ ॥ मुनिसुनत स्वामी समय, दशस्य सुत श्रीराम । ग्यारहवें उद्धार को, करें परम गुणधाम ॥ ३५ ॥ निज जननी कुन्ती कथन, पाण्डु पुत्र सुविचार । पाप नाश कारण किया, बारहवां उद्धार ॥ ३६ ॥ विक्रम संवत एकसौ—आठ बीतते सार । पोरवार जावड़ करे, तेरहवां उद्धार ॥ ३७ ॥ संवत वार तिहुत्तरे, बाहडदे श्रीमाल । चौद-हवां उद्धार कर, वरे विजय वरमाल ॥ ३८ ॥ संवत तेर इकहत्तरे, श्रीयुत समराशाह । पनरहवां उद्धार कर, पाये पुण्य अथाह ॥ ३९ ॥ पनरह सौ सत्यासी में, दोसी कर्माशाह । सोलहवां उद्धार कर, पाई शिवपुर राह ॥४०॥

तीर्थोद्धारक घन्य यों, सुजन सुगुण मण्डार । हुए तथा होंगे सही, अजरामर अविकार ॥ ४१ ॥ तीर्थेक्वर संयोगतें, तीर्थेक्वर पद योग । त्रिभुवन में
तिहुंकाल में, पावें भिव सुख मोग ॥ ४२ ॥ जिन मन्दिर प्रतिमा पुनित,
शात्रुंजय शुम भाव । करें करावें घन्य वे, पावें परम प्रभाव ॥ ४३ ॥ उत्तर
गुण से हीन मी, साधु वेश अधिकार । तीर्थराज में प्रणमते, प्रकटे लाम
अपार ॥ ४४ ॥ शात्रुंजय को मेटते, पापी होत अपाप । काती पूनम पर्व
में, भाव प्रभाव अमाप ॥ ४५ ॥ जयतु सनातन सिद्ध गिरि ! जयतु
विजयदातार । जयतु पाप सन्ताप हर, जयतु सार-संमार ॥ ४६ ॥ जयतु
अधम उद्धार कर, जय जय पालन हार । जय अविकारी भाव घर,जय जय
गुण भण्डार ॥ ४७ ॥ जय सुखसागर जय विभो ! जय मगवन गिरिराज ।
जय योगीक्वर गम्यपद, जय तीरथ सिरताज ॥ ४८ ॥ जय सुरगणनायक
हिर-पूज्य रुचिर रुचि घार । जय अध्यात्म विकाश हित, पुष्ट हेतु
विस्तार ॥ ४९ ॥ जय अनन्तं अति शान्त गुण, सिद्ध सिद्धि सुखदाम ।
जय "कवीन्द्र" कीर्तित ! सदा, सिवनय करूं प्रणाम ॥ ५० ॥

चैत्यवन्दन के बाद "जंकिंचि"—"णमोत्युणं"—"जावंति चेइयाइं"— जावंत केवि साह्र"—"नमोऽर्हत् कहकर निम्न लिखित स्तवन कहे—

## ( लघु शत्रु अय रास )

दोहा—आदि जिनन्द दिनन्द सम, ज्योतिरूप जगतेय । आतम गुण परकाश कर, भवियण कुं सुखदेय ॥१॥ वाग्देवी प्रणमी करी, सद्गुरु शीश नमाय । सिन्दक्षेत्र का गुण कहूं, सुभताने सुभत्याय ॥२॥ सुभता वचने चालतां, सदा सुरंभी देह । सुरपित नरपित सहुन में, या में शिव सुख तेह ॥३॥ सुमता जिन चेतन भणी, समझावे चित आय । प्रथम बात एही कहुं, सुणो भविक चितलाय ॥॥॥

## ( ढाल मारूजी की )

सुमता कहें चेतन भणी, साहिबजी, छोड़ो मिथ्या जाल हो। इक चित्ते एगिरि सेविये सा॰, जो निज गुणनी चाह हो॥ इक॰ ५॥ काल

आल अनादी से रह्यो सा॰, कुमति कथन वस होय हो भव दुःखः सह्य। सा॰ इक॰ ॥६॥ जन्म मरण करि नव नवा सा॰, नट व्यं वेश बनाव हो । चउमति में नाटक तुम कियो सा॰ इक॰ ॥॥ नरक निगोद में तुम रह्या सा॰, क्षण नहीं पाम्यो सुख हो। किम भूलो दु:ख देखी जिसा सा॰ इक॰ ॥८॥ देव मनुष्य अवतार में सा॰, मोह विडम्बना दुःख हो । चित्तधरने दुर्जन छांडिये सा० इक० ॥९॥ बल अपणो फोरचां विना सा॰, दुर्ज्जीन न पड़े पाय हो । जस लिजे दुर्ज्जीन क्षय करी सा॰ इक॰॥१०॥ मुझकूं कहये न संभरी सा॰, तो पिण अवसर देख हो। तुम आगे सकु कही सा॰ इक॰ ॥११॥ उत्तम नर जिणने कह्यो सा॰ अवगुण ज्ञाण हो । बिल जाणे मित्र कुमित्रने सा॰ इक॰ ॥१२॥ प्रेम धरी करी सा॰, कीजे वचन प्रमाण हो । जिन मारग उत्तम अादरो सा॰ इक॰ ॥१३॥ चारित्र धर्मनी आगन्या सा॰, धारो शिरपर आज हो। जिम पामो रंग वधामणा सा॰ इक॰ ॥१४॥ सुध सरधा जलकुं प्रही बोबे समकित बीज हो । नवपल्लव धर्मतरु ऊये सा॰ इक॰ ॥१५॥ उत्तम नर सुरपति पणा सा॰, पुष्प सुगंधी जाण हो। फल इनका पामस्यो सा॰ इक ॥१६॥ उत्तम ज्ञान प्रकाश से सा॰, सह रूप हो । परमातम पदकुं पिछाणिये सा॰ इक॰ ॥१७॥ तुं मुझ बल्लम है सदा सा॰, तुम गुण अपरम्पार हो। परमातम पद इक ।।१८॥ पिण निश्चे व्यवहार में सा , निश्चे नयकुं व्यवहारे शुद्ध क्रिया करी सा॰ इक॰ ॥१९॥ निज निज शक्ति अनुसरे सा॰, पाले व्रत मन शुद्ध हो । नव पदनोध्यान हियेधरी सा॰ इक॰ ॥२०॥ सिद्धगिरि प्रवहण चढ़ी सा॰, वेगे शिवपुर जाय हो । भवसागर पार पामो सुखे सा॰ इक॰ ॥२१॥ इण परि सुमता आयके सा॰, समझावे भविचित्त हो । सुख पामें समझे भवि जीके सा॰ इक॰ ॥२२॥ (दोहा)—इण पर सुमता वयण सुण, आसन भन्बी जीव । हरषा धरी व्रत आदरे, धर्म असृत रस पीव ॥२३॥ सिन्दगिरि इक अवसरे, आया वीर जिणंद। वान्द्या घर आणंद ॥२४॥ सिन्द्र्िगरीना गुण

भवि चित्त घार । प्रभु पद पंकज, नमन कर, बैठा करी इकतार ॥२५॥ भगवन् दीनी देशना, सिद्ध गिरी सम आज । जगमें कोइ तीरथ नहीं, परित्तत्व शिवपुर पाज ॥२६॥ काल अनादी से रह्यो, नाम ठाम परिसिद्ध । साधु अनन्ता इण गिरे, अणसण लही शिव लिद्ध ॥२७॥ नाम लियां सहु भय ठले, दुःख दारिद्र होये दूर । दिन दिन अधिकी संपदा, पामे सुख भरपूर ॥२८॥

#### ( ढाल )

जंबू द्वीपने मांहे कह्यो रें लाल दक्षिण भरत प्रमाण रे, भविक नर । सहु देशां मांहे सिरे रे लाल, सोरठ देश बखाण रे भ० ॥२९॥ इण गिरनी महिमा बड़ी रे लाल, कहे न सके कोई पार रे भ०। बीर जिणंदे भाष्तियो रे लाल ॥३०॥ विमलाचल प्रणम् सदा रे लाल, श्रान्द्र गुणों सम नाम रे भ०। घर बैठां शुभ भाव थी रे लाल, ध्यान कियां सुख पाम रे भ॰ ॥३१॥ प्रथम अनादी काल से रे लाल, अनंत सीधा इहां आय रे भ॰ । अनंत साघु बिल सीधसी रे लाल, प्रणमूं ए गिरी राय रे भ॰ ॥३२॥ फागुण सुदी दशमी दिने रे लाल, पूरबें निन्नाणुं रे। आदि जिणंद समोसरया रे लाल, चरण नमूं सुखकार रे भवि॰ वीर॰ ॥३३॥ पुण्डरीक गणधर नमूं रे लाल, पंच कोड़ी मुनि साथ रे भ०। चैत्री पूनम दिन आयेने रे लाल, झाली शिवपुर बाथ रे भ० वी॰ ॥ इंश। निम विनिम दो दो कोड़से रे छाछ, इण गिरि कीनो बास रे भ॰। फागुण सुदी दशमी दिने रे लाल, अविचल ज्यो प्रकाश रे भ॰ वी॰ ॥३५॥ निम पुत्री चौसठ कही रे लाल, अणसण लही शिव पाय रे भ॰ । द्राविड़ संघ काती पून में रे लाल, दश कोड़ी सीघा इहां आय रे भ॰ वी॰ ॥३६॥ राम भरत पांडव कह्या रे लाल, बलि नारद नव आय रे भ॰। थावचा सेलग मुनी रे लाल, जालि मयालि शिव पाय रे भ॰ वी॰ ॥३७॥ अजित शान्ति चौमासो रहा रे लाल, भविजीवां हित काज रे म॰। नेम बिना सहु आवियारे लाल, ए शिव पुरनी पाज र म॰

米米米,不不干,然后是本来,我们是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们是一个人,我们们们是一个人,我们们们们们们们们是一个人,我们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们

वी॰ ॥३८॥ साधु अनन्ता प्रतित्रकं केरेरेलाल, सीधाध्यान लगाय रे म॰। मनमोहन गिरि सेवतां रे लाल, पातिक दूर पुलाय रे म॰ वी॰॥३९॥

(दोहा)—कर जोड़ी नित प्रति नमूं, सह साधु मन भाय। सेत्रुंज महातम ग्रंथ से, भेद सुणो चितलाय ॥४०॥ भरतादिक सें आज लग, सोले उद्धार कहाय। ग्रन्थांतर में जेहना, भेद कह्या समझाय ॥४१॥ संप्रति काले ए रह्यो, षोड़समो उद्धार। करमचन्द डोसी तणो, जश रहो जग विस्तार ॥४२॥ देव भुवन जिम शोभता, नव बसी चैत्यना भाव। सुरपित नरपित सहु नमें, प्रगट्यां आतम दाव ॥४३॥ सहु बिम्बनी संख्या कहु, जेनव वसिमें होय। मूल नायक विसनाम में, प्रगट कहु छुं जोय ॥४४॥

## ( ढारु )

नमो रे नमो शत्रुंजय गिरि रे। ए चाल

प्रणमूं ए गिरि राय नेरे, धन्य दिवस थयो आज रे। सुमता ने सुपसाय थी रे, मनवंछित फल्या काज रे प्र० ।।४५॥ प्रथम विमल विस आयने रे, पूज्या जिन प्रतिबिम्ब रे। सभी चैत्यों में सोभता रे, छप्पन से छप्पन बिम्ब रे प्र० ।।४६॥ नाभिराय सुत जाणिये रे, मूल नायक छिव शान्ति रे। मोती बसी में बिम्ब रह्या रे, पचवीस से बयालीस क्रांतिरे प्र० ॥४७॥ बाला विस में सोभता रे, च्यार से षट् बिम्ब जाण रे। मूल नायक दोनुं वसीतणा रे, आदिनाथ गुण खाण रे प्र० ॥४८॥ अझुत बिम्ब मनोहरूं रे, इग्यारे कर ऊंचो जाण रे। विस्तार मान नव हाथ नो रे, मुझ बल्लभ जिम प्राण रे प्र० ॥४९॥ चौथी प्रेमा वसी हुं नमूं रे, आदिनाथ जगनाथ रे। पांच से अड़तीस जिहां रह्या रे, बिम्ब मिल्यां सहु साथ रे प्र० ॥५०॥ अजितनाथ स्वामी तणी रे, पांचमी हेमावसी थाय रे। अड़सठ ऊपर तीन से रे, बिम्ब नमूं गुण गाय रे प्र० ॥५१॥ ऊजम वसी छिट्ठी जाणिये रे, पद्म प्रभु जग भाण रे। ऋषमानन चन्द्रानने रे, वारिषेण वर्धमान रे प्र० ॥५२॥ बावन जिनाला शास्वता रे, चौमुख नन्दीसर भाव

रे । च्यार से गुण तीस शोभता रे, बिम्ब अनोपम राव रे प्र॰ ॥५३॥ नायंक पार्च प्रभुतणी रे, प्रतिमा साकर वसि मांच रे। और तेंयासी बिम्ब छै रे, नयणे दीठां सुख पाय रे प्र॰ ॥५४॥ आदिनाथ छीपा बसी रे, बीस बिम्ब सुविशाल रें। नवमी खरतर वसी बिम्बनी रें, ओपमा रवि . जिम भाळ रे प्र॰ ॥५५॥ आदिसर चौमुख तणी रे, प्रतिमा चार सुखदाय रे। और बिम्ब तेवीस सै रे, पंचदश देख्यां मन भाय रे प्र० ॥५६॥ वारे सहस त्रिण सै ऊपरे रे, अठावन बिल होय रे। इम नवविस सहु बिम्बनी रे, संख्या कही में जाय रे प्र॰ ॥५७॥ पांडव मन्दिर जाणिये रे, मरुदेवी टूंक सुखकार रे। शासन देवीनी मंदुरी रे, नेमचवरी धर्मद्वार रे प्र० ॥५८॥ रायण तल पगला नमूं रे, गणधर मन्दिर जाय रे। चबदे से बावन तणा रे, नित नित प्रणम् पाय रे प्र॰ ॥५९॥ पुण्डरीक छवि मोहिनी रे, देख्या मन बस थाय रे। भीम कुंड शुचि जल भरयो रे, सूर्य कुण्ड जल नाय रे प्र॰ ॥६०॥ त्रिण षट् बारेगाउनी रे, भमती देउं तीन रे । उलका झोलहु दरसण करी रे, सिन्ध शिला सिन्ध चीण रे प्र० ॥६१॥ चेलणा तलाई शोभती रे, अजित शान्ति थुंभ आत रे। भाडवा डूंगर हस्तगिरि रे, कदमगिरि कीनी जात रे प्र॰ ॥६२॥ इत्यादिक द्रशण करी रे, सिन्द बड़ सेवूं आय रे। अगणित चरण प्रमुतणा रे, नमन करूं मन लाय रे प्र॰ ॥६३॥ देवपुरी जिम सोमतो रे, डूंगर अतिहि विशाल रे । सहु जनपदना जातरी रे, पूजें सहस मिल माल रे प्र॰ ॥६४॥ इम सिद्धगिरि मन लायने रे, त्रिकरण नमूं तिहुं काल रे। और नमूं सहु भव्यने रे, जे शुद्ध आज्ञा पाल रे प्र॰ ॥६५॥ प्रतिदिन ए गिरिवर चढ़ी रे, अष्ट द्रव्य लेइ हाथ रे। द्रव्य भाव पूजा करे रे, मोहन सहु जगनाथ रे प्र० ॥६६॥ (दोहा)—इण परि संख्या बिम्बनी, करि आतम सुखदाय । अधिक बिम्ब कोई थापसी, नमसुं चित्त लगाय ॥६७॥ मन्द बुद्धि संयोग से, रही होय क्छु भूल । तोपिण ओगुण छांड़के, संघ हुवे अनुकूल ॥६८॥ प्रवल पुण्य संयोग से, मुझ सरिया सब काज । दुरशण पायो गिरि तणो, पाम्यो जग यश आज ॥६९॥ दान शील तप भावना, भेद धरमना चार

,是这一个人,这一个人,这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们的人,我们们的人,我们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人

सहु छार सम, भाव सहु मुखत्यार ॥७०॥ जिन प्रतिमा जिनसारखी, भगवन वचन प्रमाण । भावधरी प्रभु पूजतां, छिहये मुख निर्वाण ॥७१॥ शिव मुख से विमुखजिके, मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर, बांधे भवनी नींव ॥७२॥ धन्य दिवस जे ऊग में, मुझ आवे शुभ भाव.। मनवंछित मुख जब मिले, प्रगटे निज गुण दाव ॥७३॥ चिन्तामणि मुरतरु समो, ए तीरथ मुखकार । दिन प्रति गुण को समर के, पामूं भवजल पार ॥७४॥

# ( ढाळ ) सेत्रुंज साधु अनन्ता सीघा,

ए तीरथ नी अद्भूत महिमा, धारो चित्त मझार रे। पंच प्रमाद विषय सुख छंडी, भेटों गिरि सुखकार रे ए तीरथ॰ ॥७५॥ मनुषा जन्म पायके जे भवि, भेटे नहि गिरि एह रे। ते नर गरमा वासे कहिये, पशु सम गिणती तेह रे ए तीरथ॰ ॥७६॥ जो तीरथ नी महिमा सुण के, उत्थापे निज बुद्धि रे। ते नर काल अनन्तो भमसी, दुर्लभ पामें सिद्ध रे ए तीरथ॰ ॥७७॥ इम जाणी मन भावधरी ने, भवि मिल आवे धाय रे। छहरी संयत गिरि कुं सेवे. प्रातः उठ मन भाय रे ए तीरथ॰ ॥७८॥ इह भव पर भव मांहे कीधा, जे नर पाप अघोररे । ते इण गिरि के फरसण सेती, दूर होय सह चौर रे ए तीरय॰ ॥७९॥ रोग सोग सह नामें नासे, तूटे करम कठोर रे। दुष्ट देव देवी कामण सहु, भागे तीरथ जोर रे ए तीरय॰ ॥८०॥ आलोयणा लेई प्रभु साखे, पाप मेल सहु घोय रे। क्षण में निज गुण उज्बल पामें, रजक दृष्टान्त तुं जोय रे ए तीरथ॰ ॥८१॥ समिकतधारी जे सुर वरनी, थापना रही इहां जोय रे। धर्म बंधव जाणी वसु द्रव्ये, पूजा करे सहु कोय रे ए तीरथ॰ ॥८२॥ देव सहाये सहु मांहे, आनन्द मंगल होय रे। ईत उपद्रव भय नहिं न्यापे, दुखं दिस्ट सह खोब रे ए तीरथ॰ ॥८३॥ तीरथ यात्रा कर तीरथनी, भगति करो मन शुद्ध रे। तीर्थंकर पिण तीर्थं नमीने, दे उपदेश सुयुद्धि रे ए तीरथ० ॥८४॥ निज निज शक्ति प्रमाणे जे भवि, सेल खेत्र

不是一个人,这一个人,这一个人,我也不是我的事情,我们是我们的事情,我们是我们,我们是我们,我们是我们,我们们的,我们们的,我们们的是我们的,我们们的一个女人的人,我们们的一个女人的人,我们就是一个人的人,我们们的一个人

रे। खरचे निज मन भावधरी ने, पामें सहु जग कित्त रे ए तीरथ॰ ॥८५॥ जिम तीरथ गुण गुरु मुख सुणिया, परतिख पाम्यां आज रे । इण विधि बिम्ब चरण सह बंदी, सारया आतम काज रे ए तीरथ॰ ॥८६॥ धन ए चैत्री पूनम दिवसे, सन् उगणी सै तीस रे । धन्य घड़ी धन्य बेला एहि ज, पाम्या त्रिमुबन ईश रे ए तीरथ॰ ॥८७॥ दीन दयाल दयानिधि उत्तम, ऋषभदेव जिनराय रे । एहिजा देव रह्या त्रिभुवन में, मोहन गुणना दाय रे ए तीरथ॰ ॥८८॥ (दोहा)---कर जोड़ी विनती करूं, सुणो गरीव निवाज । कर्म सधन दूरे करी, दीजे त्रिभुवन राज ॥८९॥ मोसे अधम संसार में, कर्म सघन बस होय । तप जप संयम नहिं पले, किम पामुं पद तोय ॥९०॥ जे तुमरी आज्ञा धरे. तेहने दो जग राज। एह में प्रभु अचरज नहीं, अचरज मुझनें काज ॥९१॥ शशि गुण माहरो देखके, लिमये सहु अपराध । तुमरा वचन हिये वस्या, अचल अमृत रस स्वाद ॥९२॥ तीन तत्व चौरंग से, रंगाणी मुझ देह । अब मिण्या तपतंग को, रङ्ग चढ़े नहिं रेह ॥९३॥ तुम सहाय जोमाहरो, चेतन निज गुण पाय । तो अविचल आज्ञा धरूं तन मन वचन लगाय ॥९४॥ इम विनती प्रभुनी करी, समिकत निर्मेल काज । द्रव्य क्षेत्र काल भाव बिन. मिले न ज्ञिवपुर राज ॥९५॥ रत्न जडित सिंहासने, रयण आभूषणसार । अद्भृत रथ बैठे प्रभु, उच्छव करे नरनार ॥९६॥

## ( ढाळ ) आज महोच्छव रंग रलीरी,

आज उच्छव दिन मुझ मन भायो आ० । संघ सहु मिल गावे वधाई, रय वैठा सोहें जिनरायो आज० ॥९७॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला, मधुर ध्वनी अंवर रही छायो आज० ॥९८॥ मुर्तिदाबाद पूरव दिशि छाजे, अजीमगंज गंगा पार बसाया आ० ॥९९॥ बुद्धसिंह विसनचंद मिल भाई, गोत्र दुधेंडिया मांही कहायो आ० ॥१००॥ गिरि महिमा सुण भाव धरीने, विधिसे यात्र करी सुख पायो आ० ॥१००॥ पुण्य संयोग मिल्यो मोहे सजनी, आनन्द दायक संघ सवायो आ० ॥१०२॥ आज अंगन मोय

सुरतरु फिल्यो, दुःख दारिद्र सहु दूर गमायो आ॰ ॥१०३॥ आज मनोरथ सहु मुझ फिल्या, आज आनन्द मंगल बरतायो आ॰ ॥१०४॥ गुरु खरतर जिन आज्ञा पालक, सोहें हंस सूरि महारायो आ॰ ॥१०५॥ पाठक पद लायक गुण शोमित, सुगुण प्रमोद चैतन गुण पायो आ॰ ॥१०६॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक, पंडित लक्ष्मी प्रधान पसायो आ॰ ॥१०७॥ तासु सीस मोहन हित जाणी, उत्तम ए तीरथ गुण गायो आ० ॥१०८॥

इस प्रकार स्तवन कहके जयवीयराय॰ अरिहंत चेइयाणं॰ अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्गपार निम्न स्तुति पढ़े।

### सिद्धगिरि स्तुति

सेत्रुझागिरि निमये ऋषभदेव पुण्डरीक, शुभ तपनी महिमा सुणगुरु मुख निरभीक । शुद्धमन उपवासे, विधिसुं चैत्य बन्दनीक । करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥

#### श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुखयाय नमः। २श्री पुण्डरीकाय नमः। ३ श्री सिन्छक्षेत्राय नमः। ४ श्री विमलाचलाय नमः। ५ श्री सुरिगरये नमः। ६ श्री महा-िगरये नमः। ७ श्री पुण्यराशये नमः। ८ श्री पर्वताय नमः। ९ श्री पर्वते-द्राय नमः। १० श्री महातीर्थाय नमः। ११ श्री शास्त्रताय नमः। १२ श्री सह्दशक्तये नमः। १३ श्री मुक्तिनीलाय नमः। १४ श्री पुण्वत्ताय नमः। १७ श्री पुण्वीपीठाय नमः। १७ श्री सुमद्रगिरये नमः। ४८ श्री कैलासगिरये नमः। १९ श्री पातालमूलाय नमः। २० अकर्मकाय नमः। २१ श्री सर्वकामपूरणाय नमः।

ये सिन्हगिरि की खमासमणपूर्वक जयति देव

पांच कोड़ साधुओंके साथ पालीताणा तीर्थ (सिन्धाचलजी तीर्थ) पर चैत्र सुदी १५ के दिन ऋषमदेव स्वामी के प्रथमगणधर पुण्डरीक स्वामी

अनरान करके मोक्ष गये हैं इसीलिये इस पर्वत का नोम पुण्डरीकगिरि पड़ा है।

#### सर्व तपस्या पारण विधि

प्रथम अक्षत, नैवेद्य, फल, नगदी से ज्ञान पूजा करके इरियावहियं पड़िक्कमामि॰ पीछे अमुक तप पारवा निमित्त मुंहपत्ति पड़िलेहूं ? ऐसा कह मुंहपत्ति का पड़िलेहण कर दो बंदना देवे । पीछे खमासमण दे "इच्छा कारेण संदिसह भगवन् तुन्भे अहां अमुक तप पारावेह" कहे । गुरु के "पारावेमो" कहने पर पुनः खमासमण दे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अमक तप णिक्खेवणत्यं काउसग्गं कारावेह"। गुरु के "कारावेमो" कहने पर आठ स्तुतियों का देव वन्दन करे। तत्पश्चात "अमुक पारणार्थं करेमि काउसग्गं॰ अणत्थ॰" कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार थुई कह लोगरस० कह णमुत्युणं॰ कहे । पीछे नीचे बैठकर "भगवन् अमुक तप करते कोई अविधि या आशातना करी हो तथा जो कोई दृषण लगा हो उसके लिये मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं और ज्ञान भक्ति द्रच्य से भाव से किया होय सो प्रमाण फलदायक होजो" ऐसा कहे। गुरु के "णित्थारगा" पारगा होत्था । कहने पर पच्चक्खाण करे । तदनन्तर 'अमुक' तप आलोयणा निमित्तं करेमि काउसगां॰ १६ णमोक्कार का काउसम्म करे । पीछे यथाशक्ति स्वाध्याय करे गुरु भक्ति स्वामीवत्सल कर याचकों को दान देवे, सन्मान करे।

# शान्ति पूजा विधि

शुभमास, शुभतिथि, शुभवार, शुभ नक्षत्र, शुभघड़ी, शुभदिन, शुभमुहूर्त में पूजन करनेवाला तथा जिसकी तरफ से पूजन करायी जाय उसका चन्द्र बल देखकर सात से लेकर एकसौ आठ तक स्नात्रिये जिन मन्दिर में प्रतिमाजी के आगे पञ्च परमेष्टी का पट्टा और दाहिनी तरफ दशदिक्पाल के तथा बायीं तरफ नवग्रहों के पट्टों को स्थापित करे इसके बाद एक ( टोकनी ) या घड़ा <sup>१</sup> तांबा, मट्टी या पीतल के बड़े घड़े को सफेद खडिया से पोतें और पोतकर एक साथिया अन्दर और पांच साथिये बाहर करें उस घड़े को पीतल या तांबे की परात (थाल) में घड़ोंची पर घड़ेको रखे घड़ेके चारों तरफ चार सुपारी लगा दें जिससे घड़ा हीले नहीं फिर एक तिपाई बडे घडे पर रखे उस पर एक छोटे घड़े को बीच में सुराख करके रखे उसको भी खिडया से पोतकर पांच साथिये करे दोनों घडों में पञ्चरत्न २ की पोटली मैनफल मरोडफली और एक एक फूलों का हार बांघ देना चाहिये। फिर पञ्चरङ्गी३ इक्कीस खजली (पापड़ी) चारों तरफ बांघे और एक मोलीका पिण्डा बनावे और घड़ेके सुराखमें उसे निकाल कर रस्सी में पापडी पोवे और चारों तरफकी खजलियों के बीच की रस्सी में बांध देवे मोली का पिण्ड ठीक घड़े में विराजमान की हुई प्रतिमाजी की शिखरी पर ही होना चाहिये टेढ़ा नहीं होना चाहिये इसके बाद स्नात्री छोग अपने हाथ में मैनफल मरोडफली वांघ स्नात्रपूजा हकरावे तथा करें । दृघ, दही, घृत, मिश्री केशर इनका पञ्चामृत बनाकर रखे इसके बाद पान होने चाहिये इनके ऊपर चावल, सुपारी बादाम, पांच तरह का मेवा, इलायची, लौंग, बतासे, फल, पैसे नगद तैयार रखे फिर-

### आत्मरक्षा स्तोत्र

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नव पद्मात्मकं। आत्मरक्षा करं वज्र पञ्जराभं स्मराम्यहम्॥१॥ ॐ णमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरिस स्थितम्। ॐ णमो सव्व सिद्धाणं मुखे मुख पटम्बरम् ॥२॥

१घड़ा तांवे का शुद्ध होता है।

२पश्वरत्न, चांदी, सोना, मोती, मूंगा, माणक।

अयदि पाच रंग की पापड़ी न हो तो एक रंग से भी काम चल सकता है।

४स्नात्र पूजा में स्थापना का १) रुपया।) आना निछरावल करना उपयुक्त है आगे मन्दिरजी को जैसा नियम हो।

रक्षातिशायिनी । ॐ णमो आयरियाणं अङ्ग आयुधं हस्तयोद्द दुम् ॥३॥ उवज्झायाणं ॐ णमो छोए सञ्चसाहूणं मुच्छके पाद्यो शुभे। शिलावजूमयीतले ॥४॥ पञ्चणमोक्कारो एसो वज़मयो वहिः । सञ्बपावप्पणासणो वप्रो सन्त्रेसिं खादिरंगार खातिका ॥५॥ मंगलाणं पदंजेयं पढमं स्वाहान्तं हवइ देह रक्षणे ॥६॥ वप्रोपरि वज़मयं पिधानं नाशिनी । रक्षेयं श्चद्वोपद्रव महाप्रभावा कथितापूर्व सरिभिः ॥७॥ परमेष्ठी पदोद्धता पदैस्सदा । परमेष्ठी कुरुते रक्षां तस्य न स्याद्धयं व्याधि राधिश्चापि कदाचनः ॥८॥

यह स्तोत्र तीनबार पढ़कर आत्मरक्षा करावे ।

आत्मरक्षा करनेवाले स्नात्रियों को गुरु महराज की तरफ ध्यान रखना चाहिये कि वह स्तोत्र पढ़ते हुए किस किस अङ्ग पर हस्तस्पर्श (हाथ फेरते) करते हैं उसी तरह स्नात्रियों को भी अपने शरीर पर हाथ फेरना चाहिये।

सिरपर मुंह पर सब शरीर पर हाथों की मुद्री दृढ़ बांधनी चाहिये मूंछ पर हाथ फेरते हुए पैरों तक हाथ फेरना चाहिये शिखा (चोटी) पर हाथ रखकर जमीन को हाथसे बजाना चाहिये जबतक स्तोत्र पूरा न हो भगवान की तरफ हाथ जोड़े रहना चाहिये।

इसके बाद तीन णमोक्कार मंत्रके द्वारा स्नात्रियों की शिखा (चोटी) में गांठ दे यदि चोटी न भी होय तो बालों में मौली बांध कर शिखा का स्थापना करके तीन गांठ दे देवे। इसके बाद ॐ हीं श्रीं असिआउसाय नमों नमः। इस मंत्रको तीनवार स्नात्रियों के कान में सुनावे। इसके बाद मन्दिरजी में जितने भी अधिष्ठायक देव हों दादाजी, भैरूंजी, यक्षजी, देवीजी आदि का अष्टद्रव्य से पूजन करें, करावे। क्षेत्रपाळजी तथा भैरूंजी 分子的人,是是一个人,是是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,

को तैल तथा इत्र वरक, सिन्दुर चढ़ाकर उनका पूजन तथा आवाहन करे।

ात्र प्रस्का कार्य के कि स्ट्रा प्रमान के कि स्ट्रा प्रमान के कि स्ट्रा प्रमान कार्य के कि स्ट्रा प्रमान के कि स्ट्रा प्रमा पान ४२, बादाम ४२, किसमिस १६०, छवंग १६०, चावछ पावभर, बतासा ४२ पैसे ४२ और पञ्च परमेष्ठी, दशदिक्षाळ तथा नवग्रहों की भेटना में चांदी चढ़ावे और पञ्च परमेष्ठी से आधी आधी भेट दशदिक्-पाल तथा नवग्रहों पर चढ़ानी चाहिये बीचके पट्टे पर पंचपरमेष्ठी सहित ज्ञान, दर्शन, माला के आकार की स्थापना करे दाहिनी तरफ के पट्टे पर दशदिक्पाल बायीं तरफ के पट्टे पर नवग्रह की स्थापना करते समय उनका आबाहन मंत्र पढ़ावे, या पढ़े।

### पञ्चपरमेष्ठी आवाहन मन्त्र

अर्हन्त ईशा सकलाश्रसिद्धा, आचार्य वर्या अपि पाठकेन्द्राः। मुनीख़रा सर्व समीहितानि, कुर्वन्तुरत त्रययुक्त भाजः ॥१॥ इस मन्त्र के कहने के बाद कुसमाञ्जली छिड़के। इतना करने के बाद पंचपरमेष्ठीके पट्टे की निम्न क्लोकों से पूजा करे।

# पञ्चपरमेष्ठी पूजन मन्त्र

( अरिहंत पद पूजन मन्त्र )

अथाष्टद्छ मध्यान्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आविर्भू तोल्लसद्द्रोघाना वतस्थापयाम्यहम् ॥१॥ इस मन्त्रके पढ़ने के बाद जल, चन्दन, धूप, दीप चढ़ाके अरिहंत पद पर पान चढ़ावे ।

### सिद्ध पद्पूजन मंत्र

तस्यपूर्वद्छे सिद्धान्, सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् । निश्रेय सम्पदं प्राप्तान् निद्धे भक्ति निर्भरः ॥२॥ यह मन्त्र पढ़के जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप चढ़ाकर सिद्धपद पर पान चढ़ावे, उसके बाद आचार्य पद का मन्त्र बोले।

# आचार्य पद पूजन मन्त्र

स्थापयामिततः सूरीन् दक्षिणेऽस्मिन् दले मले चरतः पञ्चधाचारान् षट्

त्रिंशद्गुणैर्युतान् । ॐ ह्वीं श्रीं सूरीभ्योः नमः स्वाहा । कह जल चन्द्रनादि चढ़ा आचार्य पद पर पान चढ़ावे ।

#### उपाध्याय पद पूजन मन्त्र

द्वाद्शाङ्ग श्रुताघारान् शास्त्राध्यनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रे पश्चिमे दले। ॐ ह्वीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः स्वाहा। इस मन्त्र से उपाध्याय पद पर पान जल चन्द्रनादि चढ़ावे।

#### साधु पद पूजन मन्त्र

व्याख्यादि कर्म कुर्वाणान् शुभव्यानैकमानान् उद्गपुत्रगतान् वारान् साव्वाशीससुव्रतान् ॥१॥ ॐ हीं श्रीं साधुभ्यो नमः स्वाहा । पढ़ जल चन्दनादि चढ़ा साधु पद्पर पान चढ़ावे ।

# दर्शन पद पूजन मन्त्र

ተመተመተመ ተመተመተመ ከተመተመ ከተመተመ ተመተመ ተመተመተመ ተመተመተመ ከተመተመተመ ተመተመተመ ተመተመተመ ተመተመ ተመተመተመ ተመተመተመ ተመተመተመተመ ተመተመተመ ተመተመ ተመመ ተመተመ ተመመ ተመተመ ተመመ ተመተመ ተመመ ተመተመ ተመመ ተመተመ ተመመ ተመተመ ተ

जिनेन्द्रोक्त मत श्रद्धा लक्षणे दर्शने यजे। मिध्यात्व मथनं शुद्धं नस्तमीशान सहले ॐ हीं श्रीं दर्शनपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥६॥ इस मन्त्र से जल चन्दनादि चढ़ा दर्शन पद पर पान चढ़ावे।

#### ज्ञान पद पूजन मन्त्र

अशेष द्रव्य पर्याय रूपमेवाव भासकं ज्ञानमाग्नेयपत्रस्यं पूजयामि हिता वहम् । ॐ हीं श्रीं ज्ञानपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥७॥ यह मन्त्र पढ़ जल, चन्दन, पुप्प, धूप, दीप चढ़ा ज्ञान पढ़ पर पान चढ़ावे ।

### चारित्र पद पूजन मन्त्र

सामायिकादिभिभेंदैश्चारित्रं चार पञ्च्या संस्थापयामि पूजार्थ पत्रेह नैऋते क्रमात् ॐ हीं श्रीं चारित्रपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥८॥ यह मन्त्र पढ़ जल चन्द्रन पुष्प धृप दीप चढ़ा चारित्र पढ़ पर पान चढ़ात्रे, चढ़ाने के बाढ़ लाल वस्त्र से पट्टे को ढांक दे और मोली से साढ़ तीन आंटे देकर बांघ दें उसके बाद फल फूल अक्षत सब मिठाई रख कर चांदी की भेंट चढ़ात्रे।

#### भेंट मन्त्र

अर्हन्त ईशा सकलाश्च सिद्धा आचार्यवर्या अपिपाठकेन्द्रा मुनीश्वराः सर्व समीहितानि, कुर्वन्तुरत्न त्रययुक्तभाजः । इस मन्त्रके पढ़ने पर भेटना चढ़ा दे ।

फिर दशदिक्पालों का आवाहन कर हाथमें कुसुमाझली लेवे मंत्र बोलने पर छिड़क दे।

### दशदिग्पाल आवाहन मन्त्र

दिक्पाला सकला अपि प्रतिदिशं स्वंस्वंबलं वाहनम्, शस्त्रंहस्तगतं विधाय भगवतस्नात्रे जगदुर्लभे । आनंदोल्वणमानसा बहुगुणां पूजोपचारो-चयं, सन्ध्यायाप्रगुणं भवन्ति पुरुतो देवस्यलच्धासन् ॥१॥ इस मन्त्रके पढ़ने पर कुसुमाञ्जली पट्टे पर छिड़क दे और दशदिक्पालों के पट्टे की पूजन करे ।

# इन्द्रदिग्पाल पूजन मन्त्र

ॐ इन्द्राय पूर्व दिग्धीशाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभ्य बिंट गृहाण बिंटगृहाण जलंगृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतंगृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टिपुष्टि ऋष्टिवृष्टि उद्यं अभ्युद्यं कृष्ठ कुष्ठ स्वाहा। ॐ द्वीं श्रीं इन्द्राय नमः।

यह मन्त्र पढ़कर इन्द्र दिग्पाल पर पान चढ़ावे अग्नि दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्मुद्वीपे दक्षि-

नोट—जहां कहीं भी शान्ति पूजा अट्टाई महोत्सन, नवपदमण्डल पूजा हो उसमें उस नगर का नाम, मन्दिरजी के मूलनायकजी का नाम, करनेवाले का नाम 'अमुक' शब्द की जगह बोलना चाहिये और जहां जो नदी हो उसका नाम भी कहना चाहिये। णार्डभरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुका-राघिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिंछ गृहाण बिंछ गृहाण जलुं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैत्रेचं गृहणन्तु फलुं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धं वृद्धं उदयं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ हीं श्रीं अग्नये नमः ॥२॥ इस मन्त्र के पढ़ने पर अग्नि दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

### यमदिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय संपरिकराय अस्मिन् जम्भुद्वीपे दक्षिणाई भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अन्नागच्छ अन्नागच्छ सावधानीभूय बिंछ गृहाण बिंछ गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुणं गृहणन्तु धूणं गृहणन्तु दीणं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुप्टि पुष्टि ऋदि वृद्धि उदयं अभ्युद्धं कुरु कुरु स्वाहा ॐ हीं श्रीं यमाय नमः ॥२॥ यह मन्त्र पढ़ यमदिग्गाल पर पान चढ़ावे।

# नैऋत दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ नैऋताय सायुधाय सवाहनाय संपरिकराय अस्मिन् जम्युद्धीपे दक्षिणाई भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभ्य विलं गृहाण विलं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारानमुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋष्टि वृष्टि उद्यं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा उठ हीं श्री नैऋताय नमः ॥॥॥ इस मन्त्रको पढ़के नैऋत दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

# वरुण दिग्पाल पूजन मंत्र

🕉 वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अग्मिन् जम्युद्वीप

दक्षिणार्ड भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभ्य बिंह गृहाण बिंह गृहाण जलंगृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुषं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋदि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ हीं श्रीं बरुण दिग्पालाय नमः ॥५॥ यह मन्त्र पढ़कर वरुण दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

### वायव्य दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ वायव्याय सायुधाय सवाहनाय सपिरकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्ड भरत क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिल गृहाण बिल गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टिं पुष्टिं ऋदि वृद्धिं उद्यं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ हीं श्रीं वायव्याय नमः ॥६॥ इस मन्त्र से वायव्यदिग्पाल पर पान चढ़ावे।

### कुबेर दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बु द्वीपे दक्षिणार्ड भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानी भूय बिंछ गृहाण बिंछ गृहाण जल्ठं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फल्ठं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋदि दुद्धि उद्दर्य अन्युद्दयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्वीं श्रीं कुबेराय नमः॥॥।इस मन्त्र से कुबेरदिक्पाल पर पान चढ़ावे।

### ईशान दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ ईशानाय सायुधाय, सवाहनाया सपरिकराय अस्मिन जम्बुद्वीपे दक्षिणार्ड भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृह्णन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेचं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुदा गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋषि वृष्टि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्वीं श्रीं ईशानायनमः ॥८॥ इस मंत्रको पढ़कर ईशान दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

# ब्रह्म दिग्पाल पूजन मन्त्र

ॐ ब्रह्मणं सायुधाय सवाहनाय संपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षि-णार्ड भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिलं गृहाण बिलं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृह्णन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋष्टि वृद्धि उदयं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा ॐ हीं श्रीं ब्रह्मणे नमः ॥८॥ इस मंत्र को पढ़कर ब्रह्मदिग्पाल पर पान चढ़ावे।

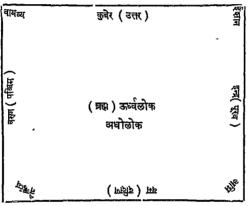
# नाग दिग्पाल पूजन मन्त्र

ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्ड भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सव अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिंछ गृहाण बिंछ गृहाण जलं गृह्वन्तु चन्दनं गृह्वन्तु पुष् गृह्वन्तु धूपं गृह्वन्तु दीपं गृह्वन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारन्मुद्रां गहणन्तु शान्ति तुष्टिं पुष्टिं ऋदिं वृद्धिं उदयं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ हीं श्रीं नागाय नमः ॥१०॥ इस मंत्र से नागदिग्पाल पर पान चढ़ावे । इसके बाद दशदिक्पाल के पट्टे को लाल टूल के कपड़े से ढांक कर मोली से तीन आंटे देकर बांध दे फिर दशदिक्पाल के पट्टे के आगे फल फूल मिठाई अक्षत आदि रख चांदी की मेंट चढ़ावे ।

这种,我们是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们

# मेंटना मन्त्र ( शार्दूल विक्रीड़ित )

दिक्पाला सकला अपि प्रतिदिशं स्वं स्वं बलं वाहनम् शस्त्रं हस्तगतं विधाय भगवत् स्नात्रे जगदुर्लभे आनन्दोल्वण मानसा बहुगुणं पूजोपचारो चयं, सन्ध्याया प्रगुणं भवन्ति पुरुषो देवस्य लब्धासन ॥१॥ इस मंत्र के कहने पर दशदिग्पाल के आगे चढ़ा दे।



时,大学时间的时候,这个人,我们也不是不是不是不是不是,我们是不是的,我们是不是,我们是不是,我们是我们的,我们是我们,这个是是我们,他们是我们的,我们是我们的,我们

दशदिग्पालों को पट्टे पर इस तरह विराजमान करना चाहिये।

#### नवग्रह आवाहन मन्त्र ( वसन्त तिलका )

सर्वे ग्रहा दिनकर प्रमुखा स्व कर्मः, पूर्वोपनीति फल दान करा जना-नाम् । पूजोपचार निकरं स्व करेषु लात्वा, सत्वांगतः सकल तीर्थकरा-चनेऽत्र ॥१॥ इस मन्त्र से कुसुमाञ्जली नवग्रह के पट्टे पर चढ़ावे ( छिड़कें ) ।

### नवग्रह पूजन मन्त्र

(सूर्य पूजन मन्त्र)

ॐ नमो सूर्यीय सहस्र किरणाय रक्त वर्णीय सायुघाय सवाहनाय सपरि-कराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानी-

选,这一个,不是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我

भूय बिलं गृहाण बिलं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्यु-दयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ सूर्योय नमः ॥१॥ इस मन्त्र को पढ़ कर सूर्य गृह पर पान चढ़ावे।

### चन्द्र पूजन मन्त्र

ॐ नमो चन्द्राय क्वेतवर्णीय षोडशकळा परिपूर्णीय रोहिणीनक्षत्रस्य अधिपते सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्धीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बळि गृहाण बळि गृहाण जळं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फळं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उद्यं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा ॐ चन्द्रायः नमः ॥२॥ यह मन्त्र पढ़ कर चन्द्रग्रह पर पान चढ़ावे।

### मङ्गल पूजन मन्त्र

ॐ नमो भौमाय रक्तवर्णीय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बु द्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिंछ गृहाण बिंछ गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृहणन्तु दोपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ भौमाय नमः ॥३॥ यह मन्त्र पढ़ कर मङ्गल ग्रह पर पान चढ़ावे।

### बुध पूजन मन्त्र

ॐ नमो बुधाय नील वर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्धीपे दक्षिणार्द्ध भरत क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक

पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानी भूय बिलं गृहाण बिलं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा ॐ बुधाय नमः ॥४॥ यह मन्त्र पढ़ कर बुध प्रह पर पान चढ़ावे।

#### बृहरुपति मन्त्र

ॐ नमो बृहरपतये पीतवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपिरकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्ड भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिंह गृहाण बिंह गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुषं गृहणन्तु धूषं गृहणन्तु धूषं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ बृहरपतये नमः । इस मन्त्र से बृहरपति ग्रह पर पान चढावे ।

#### शुक्र मन्त्र

ॐ नमो शुक्राय क्वेतवर्णीय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्भुद्वीपे दक्षिणार्च भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिंह गृहाण बिंह गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारानमुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ शुक्राय नमः। यह मन्त्र पढ़ कर शुक्र ग्रह पर पान चढ़ावे।

#### श्नि मन्त्र

ॐ नमो शनैश्वराय कृष्णवर्णीय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक

पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिं ग्रहाण बिं ग्रहाण जलं ग्रहणन्तु चन्दनं ग्रहणन्तु पुष्पं ग्रहणन्तु धूपं ग्रहणन्तु दीपं ग्रहणन्तु अक्षतं ग्रहणन्तु नैवेधं ग्रहणन्तु फलं ग्रहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां ग्रहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ शनैश्चराय नमः ।-यह मन्त्र पढ़कर शनि ग्रह पर पान चढ़ावे ।

#### राहु मन्त्र

ॐ नमो राहवे पञ्चवर्णीय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्भुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रो अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बिलं गृहण बिलं गृहण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युद्यं कुरु कुरु स्वाहा ॐ राहवे नमः। इस मन्त्र से राहु ग्रह पर पान चढ़ावे।

1945年,1956年

केंद्र (बायव)	ृबृहस्पति ( उत्तर )	वैष (ईसान)
शति (पर्द्वम)	सूर्य ( मध्य )	शुक्त (पूर्य)
Carry Sign	ताही है ) स्वाम	(tilke) litzik

नवग्रहों को पट्टे पर इस तरह विरोजमान करना चाहिये। केतु मन्त्र

ॐ नमो केतवे पञ्चवर्णीय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्धुद्वीपे दक्षिणार्ष्ट भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक - जिनचेत्ये -अमुक पृजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बर्छि गृहाण बर्छि गृहाण जर्छ गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं ग्रहणन्तु धूपं ग्रहणन्तु दीपं ग्रहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं ग्रहणन्तु फर्छं ग्रहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां ग्रहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठःठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ केतवे नमः। यह मन्त्र पढ़ कर केतु ग्रह पर पान चढ़ावे। "

द्शदिक्पाल नवग्रहों की पूजा करने के बाद बलिवाकुल शुद्ध स्थान पर निम्न श्लोक बोल कर चढ़ाना चाहिये।

### अथ द्रादिक्पाल बलि मन्त्र

ऐरावतः समारूढ़ः शक पूर्व दिशिस्थितः । संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बिल पूजां प्रयच्छतु ॥१॥ पूर्वदिशा की तरफ जल चन्दन बिलवाकुलादि चढ़ावे ॥१॥

#### अग्निदिक्पाल

सदाविह्न दिशोनेता पावको मेष बाहनः । संघरयशान्तयेसोऽस्तु बिल पूजां प्रयच्छतु ॥२॥ अग्निकोण में बिलवाकुलादि चढ़ावे ॥२॥ यमदिकृपाल

दक्षिणस्यां दिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः । संघस्यशान्तयेसोऽस्त बलिपूजां प्रयच्छतु ॥३॥ दक्षिणदिशा की तरफ बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥३॥ नैऋतदिकपाल

यमापरान्तरालोको नैऋतः शिववाहनः । संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बिल पूजां प्रयच्छतु ॥४॥ नैऋतकोण में बिलवाकुलादि चढ़ावे ॥४॥ वरुणदिक्पाल

यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः । संघस्यशान्तयेसोऽस्त बलि पूजां प्रयन्छतु ॥५॥ पश्चिमदिशा की तरफ बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥५॥ वायव्यदिक्पाल

हरिणोवाहनं यस्य वायन्याधिपतिर्मरुत् । संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बिल पूजां प्रयच्छतु ॥६॥ वायन्यकोण में बिलवाकुलादि चढ़ावे ॥६॥

,这种是一种,这种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是一种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种的,我们是一种,我们是这种的,我们是一种,我们是这种的,我们是一种,我们是这种的,我们是一种,我们是这种的,我们也可以是一种的,我们也可以是一种的,我们也可以是一种的,我们

# बिल वाकुल वासक्षेप मन्त्र

ॐ हां हीं सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं । ॐ णमो आयरियाणं । ॐ णमो उवज्झायाणं । ॐ णमो लोए सव्व साहूणं । ॐ णमो आगासगामीणं । ॐ णमो चारणल्रन्धीणं जेइमे किण्णर कि पुरुष महोरग गरुड़ गंधव्य जक्ख रक्ख पिसाय भूय डाइणप्यमइओ जिण घर णिवासिणो सिण्णिह याय ते सव्वे विलेवण धूव पुष्फ फल वइवसणाहिं बलि पिडच्छं ता तुिहकरा भवंतु पुष्टिकरा संतिकरा भवंतु । सव्वं जणं करंतु सव्वोजिणाणं संहाण प्रभावओ प्रसण्ण भावओ सव्वत्य रक्खं करंतु सव्व दुरियाणि णासंतु सव्व सिव मुव समंतु संति तुिह पुष्टि सिव सत्थयण कारिणो भवंतु स्वाहा ।

पातालाधिपतियोंऽस्तु सर्वदा पद्मवाहनः । संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥१०॥ अधोदिशा की तरफ बलिवाकुलादि चढावे ॥२०॥

दशदिग्पालों को बली चढ़ाने के समय जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, १० पैसे, पान आदि चढ़ाने के बाद चंबर डुलावे, शीशा दिखावे, शङ्क, घड़ियाल, झांझ आदि बजावे इसके बाद अखण्डजल की धारा देवे।

निम्नलिखित १८ स्तुतियों द्वारा किया करे।

### देव वन्दन विधि

"是我的人人,我们是我们是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人

पहले इरियावही॰ खड़े होकर पढ़े चार णमोक्कार काध्यान करे, उसके बाद लोगस्स॰ कहे फिर तीन दफे भगवान् को नमन करे और णमुत्थणं॰ सक्वेतिविहेण वंदामि तक कहने के बाद अरिहंत चेइयाणं॰ करेमि काउसगं खड़े होकर करे अणत्थ॰ उससिएणंसे अप्पाणं वोसिरामि तक कहकर एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग करे और नमोईत्सिद्धा॰ कहकर निम्नलिखित स्तुति कहे:—

असात अनाओं के नाम गेहूं, चना, ऊड़द, मूंग, जव (जो), मकई, ज्ञार। यह सतनजा ख्वाळते हैं और ख्वाळ कर चढ़ाते हैं।

是最高的,我们是是一个人,我们是一个人,我们就是他们是我们的,我们们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们就是我们的,我也是一个人,我们们们是一个人,我们们

#### वीर स्तुति ॥१॥

यदंघि नमना देव, देहिनः सन्ति सुस्थिताः । तस्मै नमोऽस्तु वीराय, सर्व विद्य विघातिने ॥१॥ कहकर पारे पीछे लोगस्स॰ सन्बलोए अरिहंत॰ बंदण विचयाए॰ अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और दूसरी स्तुति कहे ।

#### स्तुति ॥२॥

सुरपित नत चरण युगान नाभेय जिनादि जिनपतीन्नौमि, यद्वचन पालन पराः जलांजलिं दद्तु दुःखेभ्यः ॥२॥ कहने के बाद पारे पीछे पुक्खरवरदी॰ वंदणवत्ति॰ अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे तीसरी स्तुति कहे ।

# स्तुति ॥३॥

वदन्ति वृन्दारगणात्रतो जिनाः सदर्थतो यद्गचयन्ति स्त्रतः । गणा-धिपास्तीर्थं समर्थनक्षणे, तदङ्गिनामस्तुमते न मुक्तये ॥३॥ कहने के बाद पारे पश्चात सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अणत्य० कह एक णमोक्कार का काउसम्म करे पीछे चौथी स्तुति कहे ।

,我们是是一个人,我们是是一个人,我们是是一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我们也不会一个人,我

# स्तुति ॥श।

राकः सुरा सुरवरेस्सह देवताभिः सर्वज्ञ शासन सुखाय समुचताभिः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मति प्रवृत्तान्, भन्याञ्जना भवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥शा स्तुति कहकर पारे पीछे बैठे णमुत्युणं॰ कहकर खड़े हो "श्रीशांतिनाय देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि काउसम्मं, वंदणवत्ति॰ अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसम्म करे ।

#### शान्ति जिन स्तुति ॥५॥

रोग शोकादिभिदोंषेः रिक्षताय जितारये। नमः श्री शान्तये तस्मै विहिता नत शान्तये ॥१॥ फिर 'श्रीशान्ति देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में निम्न लिखित स्तुति कहे।

#### शान्ति देवता स्तुति ॥६॥

श्री शान्ति जिन भक्ताय भव्याय सुख सम्पदम् । श्री शान्ति देवता देवादशान्तिमपनीयते ॥१॥ इसके बाद 'श्रीश्रुत देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे निम्निलिखत स्तुति पढ़े।

### श्रुतदेवी स्तुति ॥७॥

सुवर्णशास्त्रिनी देयात, द्वादशाङ्गी जिनोद्धवाः । श्रुतदेवी सदामह्य-मशेष श्रुत सम्पदम् ॥१॥ इसके बाद 'श्री भुवन देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं॰ अणत्य॰' कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में निम्नस्त्रिखित स्तुति पढ़े।

#### भुवनदेवी स्तुति ॥८॥

चतुर्वणीय संघाय, देवी भुवन वासिनी। निहत्य दुरतान्येषा, करोतु सुख मक्षयम् ॥१॥ पीछे क्षेत्रदेवता निमित्तं करेमि काउसग्गं॰' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और क्षेत्रदेवता की निम्नलिखित स्तुति पढ़े।

#### क्षेत्रदेवता स्तुति ॥९॥

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु क्षेत्रदेवता ॥१॥ उक्त स्तुति कहने के बाद 'श्री अम्बिकादेवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणस्य कह एक णमोक्कार का काउसग्गं करे और निम्निलिखित अम्बिकादेवी की स्तुति कहे ।

#### अम्बिका देवी स्तुति ॥१०॥

अम्बानिहन्तु डिम्बामे सिन्ध बुद्ध समन्विता । सिते सिंहें स्थितागौरी वितनोतु समीहितम् ॥१॥ निम्नोक्त स्तुति कहने के बाद 'श्री पद्मावती देवी निमित्तं करेमि काउसगगं' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसगगं करे बाद में पद्मावतीदेवी की स्तुति कहें।

#### पद्मावती देवी स्तुति ॥११॥

धराधिपति पत्नीर्या देवी पद्मावती सदा । श्रुद्रोपद्रवतः सामां पातु फुंछत् फणावली ॥१॥ पूर्वोक्त म्तुति कहने के बाद 'श्री चक्रे खरी देवी निमित्तं करेमि काउस्सगं' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में स्तुति कहे ।

श्री चक्रे खरीदेवी स्तृति ॥१२॥

चंचचकधराचारु प्रवाल दल सिन्नमा। चिरं चक्रेखरी देवी नन्दता-निव भाचमां ॥१॥ इस स्तुति को कहने के बाद 'श्री अच्छुप्तादेवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करने के बाद स्तुति कहें।

श्री अच्छुप्तादेवी स्तुति ॥१३॥

खड़ खेटक कोदण्ड वाणपाणिस्ति चुितः। तुरङ्ग गमनाच्छुता कल्याणानिकरोतुमे ॥१॥ निम्नोक्त स्तुति कहने के बाद में 'श्री कुबेर देवता निमित्तं करेमिकाउसग्गं' अणत्थ॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और स्तुति कुबेर देवता की कहे।

श्री कुबेर देवता स्तुति ॥१४॥

मथुरापुरी सुपार्क्यः श्री पार्क्य स्तूप रक्षका । श्री कुबेरो नगा रूढ़ा सुतांकावतुवो भयात् ॥१॥ यह स्तुति कहने के बाद 'श्री ब्रह्म देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद्में स्तुति कहे ।

श्री ब्रह्मदेवता स्तुति ॥१५॥

ब्रह्मशान्ति समां पायादपायाद्वीरसेवकः । श्रीमत्सत्य पुरेसत्या येनकीर्तिः कृतानिज ॥१॥ इसके बाद 'श्री गोत्रदेवता निमित्तं करेमि काउसग्गं अणत्य० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और गोत्र देवता की स्तुति कहे ।

श्री गोत्र देवता स्तुति ॥१६॥

या गोत्रं पालयत्येव सकलापायतः सदा । श्री गोत्रदेवता रक्षां शंकरो-

是是一个人的现在分词的一个,他的人的人的现在分词,不是不是不是不是有的的,他们是不是一个,他们是一个一个,他们也是一个人的,他们也是一个人,也是一个人的人,也不

तु नतांगिरां ॥१॥ पीछे 'श्री शकादि समस्त देवता निमित्तं करेमि काउ-सगां' अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे स्तुति कहे ।

#### शकादि समस्त देवता स्तुति ॥१७॥

श्री शक्तप्रमुखायक्षाः जिनशासन संस्थिताः । देव्या देव्यस्तद्न्येऽपि संघं रक्षत्वपायतः ॥१॥ यह स्तुति कहने के बाद 'श्री शासनदेवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ॰ चारलोगस्स या सोलह णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे शासन देवता की स्तुति कहे ।

#### श्री शासनदेवी की स्तुति ॥१८॥

श्रीमद्विमानमारूढ़ा यक्षमातङ्ग सेविताः । सा मां सिद्धायिकापातु चक्रे चापेषु धारिणी ॥१॥ बाद में छोगस्स॰ कहके बैठे पीछे चैत्य वन्दन णमुत्थणं॰, जयवीयराय॰ पर्यन्त कहे ।

इस प्रकार सब किया विधान कर बड़े घड़े में पञ्चतीर्थजी की प्रतिमा और नवपदजी का गट्टा शान्ति? स्नात्र? करनेवाले को एक स्वास से तीन णमोकार गिन कर स्थापित करे उनके आगे पांच सुपारी पांच बादाम थोड़े से चावल, चांदी नगदी, भगवान के सम्मुख भेटस्वरूप रक्खे प्रतिमा स्थापना करने के बाद दो स्नात्रिये अपने दो हाथों में पञ्चामृत से भरे हुए वड़े बड़े कलश लेकर मैनफल मरोडफली बांध दे दो स्नात्रिये पञ्चामृत से उन दोनों बड़े कलशों को भरते रहें एक स्नात्रिया चँवर डुलावे एक स्नात्रिया केशर का छींटा और फूल एक एक णमोकार मन्त्र पढ़कर, बड़े घड़े में प्रतिमाजी पर चढ़ावे और दो स्नात्रिये एक एक णमोकार गिन

१ शान्ति पूजा करनेवाले स्नात्रियों को एकासण तप और अष्टप्रहर ब्रह्मचर्य का पालन करना परमावस्यक है यदि इतनी तपस्या भी करना मंजूर न हो तो उन्हें स्नात्रिया नहीं अनी पाहिये।

२ स्नात्र का जल शान्ति पूजा वाले घड़े में हो डाल दे।

नोट--दशदिरपाल तथा नवप्रह पूजन मन्त्रों में गृहन्तु की जगह गृहणन्तु छप गया है पाटक बग गृहन्त पदें।

कर एक एक जलधारा देना शुरू करें तीसरी धारा (ब्राबर) अखण्डरूप से जबतक सप्तरमरण का पाठ समाप्त न हो तबतक जलधारा बन्द न करें और पांच स्नात्रिये सप्तरमरणः का पाठ प्रारम्भ करें घड़ा जब प्रतिपूर्ण भर जाय तब एक एक णमोक्कार मन्त्र पढ़ कर जलधारा बन्द करदें।

इसके बाद एक स्वास से तीन णमोक्कार पढ़कर प्रतिमाजी तथा नवपद गृहें को बड़ें घड़ें से बाहर निकालें और निकाल कर जल चन्दन से अष्ट प्रकारी पूजा करें पीलें आरती करें आरती करने के बाद विसर्जन करने के लिये जल का कलका, केशर की कटोरी और कुसुमाझिल हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें।

### विसर्जन मन्त्र

नैव जानामि. नैव जानामि पूजनं। आह्वानं विसर्जनं नैव जानामि, त्वमेव श्राणं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनं यत्कृतं । आज्ञाहीनं तत्सर्वं परमेश्वर: देव, प्रसीद क्षम्यतां लोकपालादिशि विदिशिगता शुद्ध सद्मीशक्ताः। आयाता स्नात्र काले, कलुषहृतिकृते तीर्थ नाथस्यभक्त्याः॥ न्यस्ता शेषा पदाचा विहित, ं शिवसुखाः स्वापदं साम्प्रतन्ते । स्नात्रे पूजामवाप्यस्वमति, कृतिमुदो यान्तु कल्याणभाजः ॥३॥

यह मन्त्र पढ़कर पट्टों को स्थान से हटा दे फिर इसी मन्त्र से दशदिग्पालोंर को जहां बलिवाकुल चढ़ाया ही उनको अपने स्थान से

१ सप्तस्मरण का पाठ बहुत शुद्ध स्पष्ट रीत्यातुसार् घड़ा पूर्ण होने पर ही समाप्त करे शान्ति पूजा में जलवारा के समय सप्तस्मरण के पाठ करने की ही आज्ञा है।

२ कई शहरों के मन्दिरों में नियम है कि दशदिग्पालों को जहा विलवाकुल चढ़ाया जाता है वहां विश्वर्जन के समय मे भी जैसे प्रारम्भ में चढ़ाया जाता है वैसे ही विसर्जन के समय में भी चढ़ाया जाता है।

हटा दे शान्तिश पूजा की विधि समाप्त होने पर ज्ञानभक्तिश गुरुभक्तिश संधर्मीभक्तिश करे।

### शान्ति पूजा की सामग्री

घड़ा बड़ा, घड़ा छोटा, पट्टे तीन पञ्चपरमेष्ठी दशदिग्पाल नवप्रह, दोकलश टूंटीदार बड़े, तिपाई, पी॰डी (घड़ोंची), लाल कपड़ा, सफेद कपड़ा, चावल, बादाम, बतासे, पिस्ता, लोंग, मिश्री, सुपारी, छुहारे, चिरोंजी, पान, इत्र, तेल, फल पांच तरह के, फूल पांच तरह के, रोली, मोली, घूप, दीपक, घी, खीर, बड़े, पापडी, लापसी, वरक, नारियल, केशर, मिठाई पांच तरह की, दृध, दही, गुलाब जल, कपूर, पञ्चरल की पोटली, सतनजा, पैसे (रेजगी), नगद रुपये, मैनफल, मरोडफली, सिन्दूर, नी रंग के नौ कपड़े।

### नवपद मण्डल पूजा विधि

स्नात्रियों का कर्त्तच्य है कि नवपद मण्डल पूजा करने से पहिले पांच, सात, नौ, ग्यारह, इक्कीस इकत्तीस से एक सौ आठ तक जितने भी स्नात्रिये मिल सकें उन सबको पहिले अंग शुद्ध करने के लिये निम्नलिखित मन्त्रित जल से स्नान कराना चाहिये यदि स्नान कर भी चुके हों तो भी इन मन्त्रों द्वारा निम्न क्रिया अवस्य करनी चाहिये।

जल मन्त्र

ॐ हीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्पणि अमृतं श्रावय श्रावय खाहा । इस मन्त्र को सात वार पढ़ कर जल शुद्धि करे ।

#### स्नान मन्त्र

ॐ हीं अमले विमले विमलोड़वे सर्व तीर्थ जलापमे पां पां वां वां अधुचि शुचि भवामि स्वाहा । इस मन्त्र को सात वार पढ़ कर रनान करे ।

ବିଦ୍ୟୁଷ୍ଟର୍ବ୍ୟୁଷ୍ଟ୍ରେମ୍ବର୍ବ୍ୟୁଷ୍ଟର୍ବ୍ୟୁଷ୍ଟ୍ରମ୍ବର୍କ୍ୟୁଷ୍ଟ୍ରମ୍ବର୍କ୍ୟୁଷ୍ଟ୍ରମ୍ବର୍କ୍ୟୁଷ୍ଟ୍ରମ୍ବର୍କ୍ୟୁଷ୍ଟ୍ରମ୍ବର୍କ୍ୟୁଷ୍ଟ

१ शास्ति पृज्ञा, नवपद् मण्डल पृज्ञा, वीसस्थानक मण्डल पृज्ञा, अधिमण्डल १ना और प्रतिष्टा आदि क्रियाविधान का कार्य गृण्य्यों को कटापि नर्ती कराना चारिये

२ तान की पूजन करे भेटना चड़ावे।

३ गुरओं की भेंट चटावे।

४ माधर्मी भाइयो को प्रभावन है साधर्मी बत्सल करे :

的品种,我们是是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,这一个人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们们是我们的

### वस्त्र शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्वीं आं कों नमः। इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर वस्त्र शुद्ध करके पहने।

#### तिलक मन्त्र

. ॐ आं ह्वीं क्रों अर्हते नमः। इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर तिलक करे।

#### मयणफल मरोडफली शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्वीं अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु सुमन से सोमन से महु महुरे ॐ कवली कः क्षः स्वाहा । इस मन्त्र से मयणफल मरोड़ी फली मौली से बांध शुद्ध करके दाहिने हाथ में बांधना चाहिये। यह किया करने के बाद अङ्ग-रक्षा स्तोत्र तीन बार पढ़े।

### अङ्गरक्षा स्तोत्र

的,我们是是一个人,我们是我们是我们是我们是我们是我们是我们是我们的,我们是我们,我们是我们,我们是我们,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们

ॐ 'परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् । आत्मरक्षा करं वज पज्जरामं रमराम्यहम् ॥१॥ ॐ णमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसिस्थितम्। ॐ णमो सव्व सिद्धाणं मुखेमुख पटम्बरम् ॥२॥ अङ्गरक्षातिशायिनी । आयरियाणं णमो ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्द्धं हम् ॥३॥ ॐ णमो लोए सब्ब साहूणं मुच्छके पादयोक्शुमे । मयीतले ॥शा णमुकारो शिलावज् एसो मयोवहिः । पावप्पणासणो वप्रो वज्र मंगलाणं च सब्बेसिं खादिरंगार खातिका ॥५॥ स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं पढ़मं हवइ मंगलम्। रक्षणे ॥६॥ वज्रमयं पिधानं देह क्षुद्रोपद्रव नाशिनी । रक्षेयं प्रभावा कथिता

यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठी पदैरसदा। तस्य नस्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचनः॥८॥

ये स्तोत्र तीन बार पढ़कर अङ्गरक्षा करे। पीछे तीन बार णमोक्कार मन्त्र से मन्त्र कर चोटी में गांठ देवे तथा तीन दफा ॐ ह्वीं श्रीं असि आउसाय नमः । मन्त्र पढकर सब स्नात्रियों के कानों में फंक देवे । इतनी विधि तो हर कोई पूजा प्रतिष्ठा मण्डलादिक में स्नातियों को पहले अवश्य करनी, करानी चाहिये । पीछे मन्दिरजी में अधिष्ठायक देव देवी जो होय उन सबकी पूजा करावे, अष्टद्रव्य चढ़ावे । पीछे चमेली आदि के तैल में हींगलू अथवा सिन्दूर मिलाकर 'क्षेत्रपालजी' की पूजा करे, चांदी का वरक अथवा पन्नी से अङ्ग रचना करे, इत्र, जल, चन्दन, फूल, धूप, नैवेच, फल, जल, इत्यादि सर्व द्रव्य 'ॐ क्षेत्रपालाय नमः' ऐसा कह मन्त्र पढकर चढावे। पीछे मण्डलजी के दाहिने तरफ 'दशदिकपाल के पट्टे की स्थापना करे, एक एक दिक्पाल की पूजा पढ़के जल, चन्द्रनादि सर्व द्रव्य, नागर बेल के पान सहित चढ़ाता रहे। 'दशदिक्पाल' की पूजा करे बाद ऊपर एक ट्ल का वस्त्र (कसुम्बल ) वस्त्र मौली से बांघे । आगे सर्व द्रव्य सहित भेंट चढावे, दीपक करे । पीछे बायें तरफ नवग्रह के पट्टे की स्थापना करके पूर्वोक्त रीति से पूजा करे। पीछे स्नात्रियों को 'अठारह स्तुतियों की देव वन्दन' करना चाहिये। यहां पर 'दरादिकुपाल तथा नवग्रह' के पूजा का मन्त्र और देव वन्दन की विधि विस्तार के मय से नहीं लिखी है। वह पहले ही शान्ति 🕇 पूजा में लिख आये हैं। उसी प्रकार से सर्व विधि करें या करायें। प्रीक्रे मण्डलजी की पुजन करावे

### मण्डल पूजनं विधि

प्रथम दोनों तरफ मौली की बत्ती बना कर घृत का दीपक करे और दोनों दीपक चार पहर तक अखण्ड रहें। पीछे सोने चांदी के कलका में शुद्ध जल भरा हुआ लेकर सात णमोक्कार गिने और 'ॐ हीं

<sup>ी</sup> प्रष्ठ २२३।

了,我们就是这个人,我们是一个人,我们就是我们的,我们也是一个人,我们也是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的, 第一个人,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的

जीरावछी पार्चनाथ रक्षां कुरुकुरु स्वाहा' इस मन्त्र से सात बार जल मन्त्रित कर मण्डलजी के चारों तरफ धार देवे। ऊपर भी थोड़ा छींटा देकर पवित्र करे, धूप खेवे। पीछे नौ तार की मौली के साढ़े तीन आंटे पूर्वोक्त मन्त्र से देवे और मैनफल मरोडफली चारों कोनों में बांधे। पीछे केशर की कटोरी हाथ में लेकर 'ॐ आं हीं श्रीं अहंते नमः' इस मन्त्र से मन्त्रित कर मण्डल के ऊपर केशर का छींटा देवे। पीछे केशर, चन्दन, कुंकुम (रोली) लेकर मण्डलजी के चारों ओर तीन बार लगावे। पीछे वासक्षेप, पुष्प हाथ में लेकर 'ॐ भूरसीभूतधात्री विश्वधाराये नमः' इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित कर मण्डल के बीच में पूजा करे। फिर आचार्य, गुरु हाथ में वासक्षेप लेकर 'ॐ हीं श्रीं अहंत पीठकाय नमः' इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित कर मण्डल पर वासक्षेप करे।

इसके बाद स्नात्रियें हाथ में पुष्प चावल लेकर तीन बार मण्डल को बधावे। नीचे चावलों का स्वस्तिक (साथिया) करके, रुपया नारियल स्थापना में घरे। एक स्नात्रिया मन्दिर के अन्दर से प्रतिमाजी को लाकर त्रिगड़े के ऊपर मन्त्र पढ़ कर स्थापना करे। मण्डलजी के बीच में प्रतिमाजी रखने का यह मन्त्र पढ़े के नमोऽईत् परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्टिनेदिक् कुमारी परि पूजिताय चतुःषष्ठी सुरा सुरेन्द्र सेविताय देवाधि देवाय त्रैलोक्य महिताय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। इस मन्त्र को पढ़ कर नौ प्रतिमा अथवा एक प्रतिमा स्थापित करे। इस तरह मण्डल पूजा करे।

#### प्रथम वलय पूजा

प्रथम एक रकेबी में खेतगोला, खेतवस्त्र, खेत ध्वजा, आठ कर्केतक रत्न, चौतीस हीरे, हाथ में लेकर अरिहन्त पद की पूजा करे।

### अरिहन्त पद पूजा

अथाध्य दल मध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आविर्भूतालसद्वोधाना-व्रतः स्थापयाम्यहम् ॥१॥ निक्शेष दोषंधन धूमकेतृन्नपार संसार समुद्र

<sup>\*</sup> मण्डलजी पर प्रतिमाजी को विराजमान करने की रीति कहीं कहीं है।

सेतून् । यजैस्समस्तातिशयैक हेतून् , श्रीमजिनानाम्बुज कर्णिकायाम् ॥२॥ ॐ हीं श्रीं अईदुभ्यो नमः स्वाहा ।

### सिद्ध पद पूजा

पीछे रकेबी में लाल गोला, लाल ध्वजा, लाल वस्न, ८ माणिक रत, ३१ मूंगे, सर्वद्रव्य हाथ में लेकर सिद्ध पद की पूजा करे-तस्य पूर्व दले सिद्धान सम्यक्तवादि गुणात्मकान् । निः श्रेयसम्पदं प्राप्तान् निद्धे भक्ति निर्भरः ॥३॥ तत्पूर्व पत्रे परितः प्रणष्टः दुष्टाच्ट कर्मामधिगम्य शुद्धिः । प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनन्तबोधान् , सिद्धान् यजे शान्तिकरान्नराणाम् ॥श॥ ॐ हीं श्रीं सिन्धें स्यो नमः स्वाहा ।

# आचार्य पद पूजा

पीछे रकेबी में पीला गोला, पीली ध्वजा, पीला वस्त्र, ५ गोमेदकरत, ३६ सोने के फूल, जल लेकर आचार्य पद की पूजा करे।

स्थापयामि ततः सूरीन् दक्षिणेऽस्मिन् दल्लेमले । चरतः पञ्चधाचारान् षट् त्रिशद्गुणैर्युतान् ॥५॥ सूरी सदाचार विचारसारान्नाचारयन्तः खपरान् यथेष्ठम् । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थमभ्यर्च्ययाम्यक्षत गन्ध धूपैः ॥६॥ हीं श्रीं सूरीभ्यो नमः स्वाहा।

#### उपाध्याय पद पूजा

पीछे हरा गोला, हरी ध्वजा हरे मूंग के लड्डू, हरा वस्त्र, ध इन्द्रनील, २५ मरकेतकरत्न (पन्ना), लेकर उपाध्याय पद की पूजा करे। द्वादशाङ्गश्रुताधारान् शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यान् पवित्रे पश्चिमे दले ॥७॥ श्री धर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यैः पठन्तियेऽन्यानिप पाठ-यन्ति । अध्यापकांस्तां न पराब्जपत्रैः स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥८॥ 'ॐ हीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः खाहा ।'

#### साधु पद पूजा

पीछे रकेबी में काला गोला, काली ध्वजा, काला वस्न, उड़द केलड्डू, ५ राजपद्द, २७ अरिष्टरत (नीलम), जल लेकर साधु पद की पूजा करे ।

的人,我们是我们是我们的人,我们是我们的,我们们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的

व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्, शुभध्यानेक मानसान् । उदक् पत्रगतान् वारान्, साध्वाशीस सुव्रतान् ॥९॥ वैराग्यमन्तर्वचिस प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादशधाशरीरे । येषामुद्दक्यवगतान् सुकृतान् पवित्रान् , साधून्सदातान् परि-पूजयामि ॥१०॥ 'ॐ ह्वीं श्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा ।'

# दर्शन पद पूजा

पीछे एक रकेबी में क्वेत गोला, क्वेत क्वजा, क्वेत वस्त्र, ६७ मोती लेकर दर्शन पद की पूजा करे।

जिनेन्द्रोक्त मतश्रद्धा लक्षणे दर्शने यजे । मिथ्यात्व मथनेशुद्धं नरत मीशान् सद्दले ॥११॥ 'ॐ हीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा ।'

#### ज्ञान पद पूजा

फिर रकेबी में खेत गोला, खेत ध्वजा, खेत बस्न, चावल के लड्डू, ५१ मोती लेकर ज्ञान पद की पूजा करे।

अशेष दोष पर्याय रूपमेवावभासकं । ज्ञानमाग्नेय रूपस्थं पूजयामि हिताबहम् ॥१२॥ 'ॐ ह्वीं श्रीं सम्यग् ज्ञानाय नमः स्वाहा ।'

### चारित्र पद पूजा

फिर रकेबी में रवेत गोला, रवेत ध्वजा, खेत बस्र, ७० मोती लेकर चारित्र पद की पूजा करें।

सामायिकादिभिभेंदै श्रारित्रं चारु पञ्चधा । संस्थापयामि पूजार्थं पत्रेह नैऋ तेः क्रमात् ॥१३॥ 'ॐ हीं श्रीं सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ।'

#### तप पद पूजा

इसके बाद फिर रकेबी में खेत गोला, खेत ध्वजा, खेत बस्न, ५० मोती लेकर तप पद की पूजा करें।

द्विधा द्वादशधाभिन्नं पूते पत्र तपः स्वयं । निधाययामि भक्त्याय वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥१॥ 'ॐ हीं श्रीं सम्यक् तपसे नमः स्वाहा।'

#### नमस्कार इलोक

निःखंदत्वादि दिन्यातिशय मय तनून्, श्री जिनेन्द्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदाचार साराश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुन्दराण्यादि संज्ञम् । तित्सध्यैः पाठकानां यतिपति सिहता-नर्च्चयाम्यर्घ दानैः ॥१५॥ इत्यमष्ट दलं पद्मं पूरयेदर्हदादिभिः । स्वाहान्ते प्रणवाद्यश्च पदैविझनिवृत्तये ॥१६॥ ॐ ह्वीं श्रीं अर्हं असिआउसाय सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्वीं श्रीं अर्हं परमेष्टिन् परमनाथ परमदेवाधि देव परमार्हन् परमानन्त चतुष्टय परमात्मने तुभ्यं नमः ।

## द्वितीय वलय पूजा

पीछे दूसरे वल्रय में १६ कोठे हों उनमें एक एक कोठा छोड़ के आठ अवर्गादि वर्गों की स्थापना करे और बाकी के आठ खानों में अनाहत पदों की स्थापना करे।

'ॐ हीं णमो अरिहंताणं' यह मन्त्र पढ़कर मिश्री, लवंग चढ़ावे और आठ कोठों में से पहले कोठे में अवर्गादि स्वर स्थापित करे बाकी सात कोठों में व्यञ्जन वर्गों की स्थापना करे उनमें किसमिस या अंगूर मुनक्का चढ़ावे।

'ॐ हीं णमो अणिहंताणं' मिश्री छवंग चढ़ावे ॥१॥ अ आ इ ई उ क ऋ ऋ छ छ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ हीं स्वरवर्गाय नमः । इस जगह १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥२॥ 'ॐ हीं णमो अरिहंताणं' मिश्री छवंग चढ़ावे ॥३॥ क ख ग घ ङ ॐ व्यञ्जन कवर्गाय नमः । १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥१॥ 'ॐ हीं णमो अरिहंताणं' मिश्री छवंग चढ़ावे ॥५॥ च छ ज झ ज ॐ हीं चवर्गाय नमः । १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥६॥ ॐ णमो अरिहंताणं मिश्री छवंग चढ़ावे ॥७॥ ट ठ ड ढ ण ॐ हीं टवर्गाय नमः । १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥८॥ स्था छवंग चढ़ावे ॥८॥ उत्हों पमो अरिहंताणं' मिश्री छवंग चढ़ावे ॥९॥ त य द ध न ॐ हीं तवर्गाय नमः । १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥१०॥ ॐ णमो अरिहंताणं, मिश्री छवंग चढ़ावे ॥१॥ प फ व म म ॐ हीं

पवर्गीय नमः। १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥१२॥ ंॐ णमो अरिहंताणं, मिश्री छवंग चढ़ावे ॥१३॥ यर छ व ॐ हीं यवर्गीय नमः। ३२ द्राक्षा चढ़ावे ॥१४॥ ॐ हीं णमो अरिहंताणं, मिश्री छवंग चढ़ावे ॥१५॥ इत ष स ह ॐ हीं शवर्गीय नमः। ३२ द्राक्षा चढ़ावे ॥१६॥ सब ९६ द्राक्षा और यर छ व १ श ष स ह २ इन दोनों वर्गों में ६४ द्राक्षा चढ़ावे।

# तृतीय चतुर्थ पञ्चम वलय पूजा

आठ परमेष्ठी पदों में 'ॐ हीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा' ऐसा आठ बार कह कर आठ विजोरा चढ़ावे। ४८ छुहारे एक रकेबी में लेकर एक-एक छुहारा लिब्बपद पर चढ़ावे।

ॐ ह्वीं अहैं णमो जिणाणं ॥१॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो ओहि जिणाणं ॥२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ॥३॥ ह्वीं अर्ह णमो सन्बोहि जिणाणं ॥४॥ ॐ ह्वीं अर्ह णमो अणंतोहि जिणाणं ॥५॥ ॐ हीं अहैं णमो कह बुद्धीणं ॥६॥ ॐ हीं अहैं वीय बुद्धीणं ॥७॥ ॐ ह्वीं अर्ह णमो पयाणुसारीणं ॥८॥ ॐ ह्वीं अर्ह णमो आसी विसाणं ॥९॥ ॐ हीं अहैं णमो दिही विसाणं ॥१०॥ ॐ हीं अहैं णमो संमिण्ण सोयाणं ॥११॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो सयंसंबुद्धाणं ॥१२॥ ॐ हीं अहैं णमो पत्तेय बुद्धाणं ॥१३॥ ॐ हीं अहैं णमो बोहि बुद्धीणं ॥१४॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो उज्जु मईणं ॥१५॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो विउलमईणं ॥१६॥ ॐ ह्वीं अहैं णमा दस पुच्चीणं ॥१७॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो चउद्स पुञ्चीणं ॥१८॥ ॐ ह्वीं अर्ह णमो अहंग निमित्त कुसलाणं ॥१९॥ ॐ ह्रीं अर्ह णमो विउच्चण इष्टिपत्ताणं ॥२०॥ ॐ ह्रीं अर्ह णमो विज्जाहराणं ॥२१॥ ॐ ह्वीं अर्ह णमो चारण रुद्धीणं ॥२२॥ ॐ ह्वीं अर्ह णमो पणासमणाणं ॥२३॥ ॐ हीं अहैं णमो आगासगामीणं ॥२४॥ ॐ ह्मीं अर्ह णमो खीरासवेणं ॥२५॥ ॐ ह्मीं अर्ह णमो सप्पिया सवाणं ॥२६॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो महुआसवाणं ॥२७॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो अमिया सवाणं ॥२८॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो सिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐ ह्वीं अहैं णमो भयवया

महाइ महावीर वद्धमाण बुद्धरिसीणं ॥३०॥ ॐ हीं अईं णमो उग्ग तवाणं ॥३१॥ ॐ हीं अईं णमो अक्खीण महाणिसयाणं ॥३२॥ ॐ हीं अईं णमो वृह्णमाणां ॥३३॥ ॐ हीं अईं णमो वित्ततवाणं ॥३६॥ ॐ हीं अईं णमो तत्ततवाणं ॥३६॥ ॐ हीं अईं णमो महातवाणं ॥३६॥ ॐ हीं अईं णमो घोर गुणाणं ॥३८॥ ॐ हीं अईं णमो घोर गुणाणं ॥३८॥ ॐ हीं अईं णमो घोर गुणाणं ॥३८॥ ॐ हीं अईं णमो घोर गुण वंभयारीणं ॥४०॥ ॐ हीं अईं णमो घोर गुण वंभयारीणं ॥४०॥ ॐ हीं अईं णमो घोर गुण वंभयारीणं ॥४०॥ ॐ हीं अईं णमो खोर गुण वंभयारीणं ॥४०॥ ॐ हीं अईं णमो अमोसही पत्ताणं ॥४१॥ ॐ हीं अईं णमो खेलो सही पत्ताणं ॥४२॥ ॐ हीं अईं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥४५॥ ॐ हीं अईं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥४५॥ ॐ हीं अईं णमो वयणवलीणं ॥४५॥ ॐ हीं अईं णमो क्यवलीणं ॥४०॥ ॐ हीं अईं णमो क्यवलीणं ॥४८॥ ॐ हीं अईं अहं णमो क्यवलीणं ॥४८॥ ॐ हीं अहं अहं णमो क्यवलीणं ॥४८॥ कं हीं अहं अहं अहं अव्याल लिंच परेंभ्यो नमः।

इसी तरह लिंघ पद का नाम बोल तीसरे चौथे पांचवें वलय की पूजा में ४८ छुहारा चढ़ावे।

#### षष्ठ वलय

मण्डलजी में 'ह्रींकार' से 'क्रोंकार' तक । छहे वलय में आठ गुरु पादुकाओं पर आठ अनार निम्न मन्त्रों से चढ़ावे। ॐ ह्रीं अईत् पादुकाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं आचार्य पादुकाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं गुरु पादुकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं परम पादुकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं अदृष्ट गुरु पादुकाभ्यां नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं अनन्ता गुरु पादुकेभ्यो नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं अनन्ता गुरु पादुकेभ्यो नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं अन्ति गुरु पादुकेभ्यो नमः स्वाहा । इसी तरह छहे वलय में आठ दाड़िम चढ़ावे ।

#### सप्तम वलय

सातवें वलय में आठों दिशाओं में जयादिदेवियों की स्थापना कर, आठ नारंगी चढ़ावे । ॐ ह्वीं जयायै नमः स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्वीं

जम्भाये नमः स्वाहा ॥२॥ ॐ हीं विजयाये नमः स्वाहा ॥३॥ ॐ हीं थम्भाये नमः स्वाहा ॥४॥ ॐ हीं जयन्त्ये नमः स्वाहा ॥५॥ ॐ हीं मोहाये नमः स्वाहा ॥६॥ ॐ हीं अपराजिताये नमः स्वाहा ॥७॥ ॐ हीं अम्बाये नमः स्वाहा ॥८॥

#### अष्ट वलय

आठवां बलय में सोलह विद्या देवियों की स्थापना कर चांदी की वरक लगाई हुई सुपारियां चढ़ावें । यथा—१ ॐ हीं रोहिण्ये नमः। २ ॐ हीं प्रज्ञप्ये नमः। ३ ॐ हीं वज्र्रशृङ्खलाये नमः। ४ ॐ हीं वज्र्रशृङ्खलाये नमः। ४ ॐ हीं चक्रेश्वयें नमः। ६ ॐ हीं पुरुषदत्ताये नमः। ७ ॐ हीं काल्ये नमः। ८ ॐ हीं महाकाल्ये नमः। ९ ॐ हीं गीयें नमः। १० ॐ हीं गान्धायें नमः। ११ ॐ हीं सर्वास्त्र महाज्वालाये नमः। १२ ॐ हीं मानल्ये नमः। १३ ॐ हीं वैरोट्याये नमः। १६ ॐ हीं अच्छुप्ताये नमः। १५ ॐ हीं मानस्ये नमः। १६ ॐ हीं महामानस्ये नमः।

#### नवम वलय

फिर २४ शासन देवोंकी स्थापना कर २४ सोने के बरक छगी हुई सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ गोमुखाय नमः । २ ॐ महायक्षाय नमः । ३ ॐ त्रिमुखाय नमः । ४ ॐ यक्षनायकाय नमः । ५ ॐ तुम्बुरवे नमः । ६ ॐ कुसुमाय नमः । ७ ॐ मातङ्गाय नमः । ८ ॐ विजयाय नमः । ९ ॐ अजिताय नमः । १० ॐ ब्रह्मणे नमः । ११ ॐ यक्षराजाय नमः । १२ ॐ कुमाराय नमः । १३ ॐ पण्तालाय नमः । १५ ॐ किन्नराय नमः । १६ ॐ कुबेराय नमः । २० ॐ वरुणाय नमः । २१ ॐ यक्षराजाय नमः । १२ ॐ कुबेराय नमः । २० ॐ वरुणाय नमः । २१ ॐ यक्षराजाय नमः । २२ ॐ गोमेघाय नमः । २३ ॐ पार्श्वीय नमः । २४ ॐ ॐ ब्रह्म शान्तये नमः ।

पीछे नवमें वलय के बायें तरफ २४ शासन देवियों की स्थापना कर २४ चांदी की बरक लगी हुई सुपारियां चढ़ावे । यथा—

१ ॐ चक्रेखयें नमः । २ ॐ अजित वलाये नमः । ३ ॐ दुिरतायं नमः । ४ ॐ काल्ये नमः । ५ ॐ महाकाल्ये नमः । ६ ॐ यामाये नमः । ७ ॐ शान्ताये नमः । ८ ॐ भृकुट्ये नमः । ९ ॐ अशोकाये नमः । ११ ॐ मानत्ये नमः । ११ ॐ मानत्ये नमः । ११ ॐ चण्डाये नमः । १३ ॐ विदिताये नमः । १६ ॐ अंकुशाये नमः । १५ ॐ कन्दर्भये नमः । १६ ॐ विविताये नमः । १७ ॐ वलाये नमः । १८ ॐ वार्यये नमः । १८ ॐ वार्यये नमः । १८ ॐ प्राप्यये नमः । १० ॐ परादत्ताये नमः । २१ ॐ गान्धायें नमः । २२ अम्बिकाये नमः । २३ ॐ पश्चावत्ये नमः । २१ ॐ सिद्धायिकाये नमः ।

#### दशम वलय

दशवें बलय में चारों दिशाओं में चार द्वारपालों की स्थापना कर बलिबाकुलले ॐ कुमुदाय नमः, पूर्वदिशा की तरफ। ॐ अञ्जनाय नमः, दक्षिणदिशा की तरफ। ॐ बामनाय नमः, पश्चिमदिशा की तरफ। ॐ पुष्पदन्ताय नमः, उत्तरदिशा की तरफ चढ़ावे।

चार विदिशा की तरफ चार वीर पद पर विलवाकुल चढ़ावे। १ ॐ मणिभद्राय नमः। २ ॐ पूर्णभद्राय नमः। ३ ॐ किपलाय नमः। १ ॐ पिङ्गलाय नमः। इसी तरह दशवें वलय में आठों दिशा में, चार हारपाल. चार वीर स्थापना करे।

#### एकाद्य वलय

पीछं ग्यारहवें वलय में पूर्ण कलश के आकार ( खरूप ) में ऊपर किया हुआ सिद्धचकजी के गले के स्थान नवनिधान पद पर नव चांदी मोने के कलशों में यथाशक्ति नगदी रखकर चढ़ावे।

नीट-परं भगत मण्डलमी के उपर चनित्रवरी शासनदेवी आदि की मूर्गि भी विरासमान के भगत है।

#### नवनिधान मन्त्र

१ ॐ नैसर्प्पकाय नमः । २ ॐ पाण्डुकाय नमः । ३ ॐ पिङ्गलाय नमः । ४ ॐ सर्व रत्नाय नमः । ५ ॐ महापद्माय नमः । ६ ॐ कालाय नमः । ७ ॐ महाकालाय नमः । ८ ॐ माणवाय नमः । ९ ॐ शङ्खाय नमः ।

#### द्वाद्श वलय

पीछे बारहवें बलय में कुष्माण्ड व कोहला, (सीताफल) हाथमें लेकर दाहिने नेत्र के पास 'ॐ हीं विमलस्वामिने नमः।' कहकर चढ़ावे। फिर कोहला व (कुष्माण्ड) फल हाथ में लेकर बायें नेत्र के पास 'ॐ क्षेत्रपालाय नमः।' ऐसा कहकर चढ़ावे। पीछे कोहला व (कुष्माण्ड) फल हाथ में नीचे दाहिनी तरफ 'ॐ चक्रेश्वयें नमः' कहकर चढ़ावे। पीछे कोहला फल हाथ में लेकर नीचे बायों तरफ 'ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचकाधिष्ट-काय नमः' कहकर चढ़ावे।

#### त्रयोदश वलय

पीछे दशों दिशाओं में इन्द्रादिक् दशदिक्पालों कि की पूजा करे।
१ ॐ इन्द्राय नमः। २ ॐ अग्नये नमः। ३ ॐ यमाय नमः।
१ ॐ नैऋताय नमः। ५ ॐ वरुणाय नमः। ६ ॐ वायव्याय नमः। ७
ॐ कुबेराय नमः। ८ ॐ ईशानाय नमः। ९ ॐ नागाय नमः। १० ॐ
ब्रह्मणे नमः।

# चतुर्दश वलय

चौदहवें वलय में भी नीचे पेंदी के मध्य भाग में नवग्रहों की पूजा करें । १ ॐ सूर्याय नमः । २ ॐ सोमाय नमः । ३ ॐ भौमाय नमः । १ बुधाय नमः । ५ ॐ बृहरपतये नमः । ६ ॐ शुक्राय नमः । ७ ॐ इानेश्चराय नमः । ८ ॐ राहवे नमः । ९ ॐ केतवे नमः ।

<sup>😕</sup> कई जगह दशदिग्पालों पर कई स्थानों के मन्दिरों मे वेसन के लड्डू भी चढ़ते हैं।

तर दर अपने स्वाप्त इस तरह नवपद की बड़ी पूजा कराकर नवपदजी की आरती करे। पीछे नवपद्जी का निम्न चैत्यवन्दन करें। जो धुरि श्री अरिहंत मूल हत् पीठ पइ हिओ। सिन्द सूरि उवझाय साहु चिहुं साह गरिहिओ॥ दंसण णाण चरित्त तव पड़िसाहे सुंदर । तत्तक्खर सिरि वग्ग छिद्ध गुरु पय दछ डंबरू ॥ दिशिवाल जनस्व जिंस्वणी पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियो । सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतर अहाइमन वंछिय दियउ ॥१॥ पीछे जंकिंचि॰ णमोत्युणं नमोऽर्हत सिद्धा कहकर नवपदजी का स्तवन पढ़ कर जय-वीयराय अणत्य॰ कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और नवपदजीकी स्तुति कहे। पीछे गुरुके पास वासक्षेप ले ज्ञानपूजा, गुरुपूजा करे, धूप खेवे, नगदी चढावे । पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे । इसके बाद प्रवीक्त विसर्जनक की विधि करे।

# नवपद मण्डल पूजन की सामग्री

९ गोले, ८ ककेंतक रहा, ३४ हीरे, ८ माणक, ३५ मूं गे, ५ गोमे-दक, ३६ सोने के फूळ, ४ इन्द्रनीळ, ३५ मरकेतक रत्न (पन्ना), ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, ६७ मोती, ५१ मोती, ७० मोती, ५० मोती, ९ ध्वजा, ९ अंगलृहण, ६ कटोरी में १६-१६ दाख, २ कटोरी में ३२-३२, इस तरह कुळ १६० दाख, ८ बिजोरा, ८ मिश्री के कुञ्जे या १६-१६ मिश्री के दुकड़े, ८ कटोरी में १६-१६ लवंग, मिश्री की कटोरी में या मिश्री के कुञ्जे, ४८ छुहारे, ८ अनार, ८ नारंगी, ६४ यक्षजी के २४ यक्षणीजी और १६ विद्या देवी । ९ कलरा चांदी या सोने के, ४ सीताफल, ४ (कुब्माण्ड) पेठे, दशदिग्पालों की भेंट, नवग्रहों की भेंट, यथाशक्ति नवपदों में भेंट अवश्य चढावे ।

# विंशस्थानक मण्डल पूजन विधि

शुभिदन शुभघड़ी शुभनक्षत्र शुभमुहूर्त्त में पूजा करानेवाले का चन्द्र-वल देखकर विशस्थानक मण्डल बनावे सब स्नात्रियों को अङ्गशुद्धि, वस्त्र

प्रष्ठ २५२।

比亚头头头头来来来来的人,这是一个人,这是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个一个一个一个一个一个一个一个一个

शुद्धि, शिखाबन्धन, मैनफल, मरोडफली, मण्डलजी के तथा अपने हाथ में मोली बांधना चाहिये। केशर, चन्दन, कुंकुम (रोली) मण्डलजी में बन्धी हुई मोली में लगा दे। देवबन्दन दशदिक्पालों तथा नवप्रहों की पूजन भी करनी चाहिये और भेंट आदि सब कियायें नवपद मण्डल पूजन के समान ही करनी चाहिये।

### प्रथम वलय

### प्रथम पद् 🕇 पूजा

णमो णंतविण्णाण सदंसणाणं, सहाणंदिया सेसजंतू गयाणं। भवांभोज वित्थेयणे वारणाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं। ॐ हीं श्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा ॥१॥ सोने का बरक छगा हुआ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

### द्वितीय पद पूजा

लोगग्गमागोपरि संठियाणं, घुद्धाण सिद्धाण मणिदियाणं। णिस्सेस कम्मक्खय कारगाणं, णमोसया मंगलधारगाणं। ॐ हीं श्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ॥२॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

### तृतीय पद पूजा

अणंत संसुद्ध गुणायरस्स, दुक्खंधया रुग्गदिवायरस्स । अणंतजीवाण द्यागिहस्स, णमो णमो संघचउन्विहस्स ।ॐ हीं श्रीं प्रवचनाय नमः स्वाहा ॥३॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### चतुर्थ पद पूजा

कुवादिकेलि तरु सिंधुराणं, सूरीसराणं मुणिबंधुराणं । धीरत्तसंतिन्जिय , मंद्राणं, णमो सयामंगलमंदिराणं । ॐ हीं श्रीं आचार्येभ्यो नमः स्वाहा॥४॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

#### पञ्च पद पूजा

सम्मत्त संयम पतित भविजन, अतिहथिरकरता भला । अवगुण अदु-षित गुणविभूषित, चन्दिकरण समोज्जला । अष्टाधिकादशसहससीलांगरथ

क्हरएक पद में नगदी अवश्य चढ़ानी चाहिये।

gari reprakturanda <del>kanan kanan kana</del>

रुचिर घाराघरा भवसिन्धु तारण प्रवरकारण णमो थिवरमुणीसरा । ॐ हीं श्रीं स्थविराय नमः स्वाहा ॥५॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### षष्ट पद पूजा

सन्वोहिबीजंकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं। कुन्वोहिदंति हरिणे सराणं, विग्घोघसंताव पयोहराणं। ॐ हीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः खाहा ॥६॥ गोला, ध्वजा चढावे।

### सप्त पद पूजा

संतिष्जियासेसपरीसहाणं, णिस्सेस जीवाणदयागिहाणं । सण्णाण पञ्जाय तरु वणाणं, णमो णमो होउतवोधणाणं । ॐ ह्वीं श्रीं साधुभ्यो नमः स्वाहा ॥७॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### अष्ट पद पूजा

छद्व्य पञ्जाय गुणायरस्स, सयापयासी करणोधुरस्स । मित्यत्त अण्णाण तमोहरस्स, णमो णमो णाणदिवायरस्स । ॐ हींश्रीं सम्यग् ज्ञानाय नमः स्वाहा ॥८॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### नवम पद पूजा

अणंतविण्णाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारणस्स अणंत कम्मा-विरु धंसणस्स, णमो णमो णिम्मल दंसणस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहा ॥९॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### दशम पद पूजा

आणंदियासेस जगज्जणस्स, कुंदिदुं पादामल ताचणस्स । सुधम्म-जुत्तस्स दयासयस्स, णमो णमो श्री विणयालयस्स । ॐ ह्वीं श्रीं सम्यग् विनयाय नमः स्वाहा ॥१०॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

#### एकादश पद पूजा

कम्मोधकंतारदवाणलस्स, महोदयाणंद लया जलस्स । विण्णाण पंके म्ह्कारणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥११॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### द्वादश पद पूजा

सग्गापवग्गगासुहप्पयस्स, सुणिम्मलाणंत गुणालयस्स । सन्बव्यया भूषण भूषणस्स, णमोहि शीलस्स अदृसणस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् ब्रह्मचर्याय नमः स्वाहा ॥१२॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### त्रयोदश पद पूजा

विसुन्दसन्द्राण विभूषणस्स, सुरुन्दि संपत्ति सुपोषणस्स । णमो सदाणं त गुणप्पदस्स, णमो णमो सुन्द्रिकयापदस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् कियायै नमः स्वाहा ॥१३॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### चतुर्दश पद पूजा

ल्रद्धीसरोजा वलितावणस्स, सुरूव संलग्ग सुपावणस्स । अमंगलाणो कुह दुइवस्स; णमो णमो णिम्मल सत्त्ववस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥१४॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### पञ्चद्श पद पूजा

अणंत विण्णाण विभायरस्त, दुवालसंगी कमलाकरस्त । सुलब्दवासा जयगोयमस्त, णमो गणाधीसर गोयमस्त । ॐ हीं श्रीं गौतमाय नमः स्वाहा ॥१५॥ गोला, ध्वजा छढ़ावे ।

### षोड़श पद पूजा

मणूणसन्वाति सयासयाणं, सुरा सुरा घोसर वंदियाणं । रवींदुबिंबामल सग्गुणाणं, दयाघणाणंहि णमोजिणाणं । ॐ हीं श्रीं जिनेभ्यो नमः स्वाहा ॥१६॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### सप्तद्श पद पूजा

सिंविदिया पार विकार दोरी, अकारणा सेसजणोवगारी। महाभवातं करणा पहारी, जयौ सदा सुद्ध चरित्तधारी। ॐ हीं श्रीं चारित्रधारीभ्यो नमः स्वाहा ॥१७॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

#### अष्टादश पद पूजा

सुद्धक्रिया मंडलमंडणस्स, संदेह संदोह विखंडणस्स । मुत्ति उपादान

taktartiki kitartika

सुकारणस्स, णमोहिणाणस्स जसोधणस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् ज्ञानायनमः स्वाहा ॥१८॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### एकोनविंशति पद पूजा

अण्णाणवञ्ची वणवारणस्स, सुबोहिबीजांकुर कारणस्स । अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स णमो दया मंदिर सत्थयस्स । ॐ हीं श्रीं सम्यग् श्रुताय नमः स्वाहा ॥१९॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### विंशति पद पूजा

तुभ्यं नमः सकल विश्व वशंकराय, तुभ्यं नमः स्त्रिजगित जन शङ्क-राय । तुभ्यं नमो भुवन मण्डन मण्डनाय, तुभ्यं नमोऽस्तु जिनपङ्क विख-ण्डनाय । ॐ हीं श्रीं सम्यग् तीर्थपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥२०॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

### हितीय वलय

इसके बाद दूसरे वलय में ६४ इन्द्रों के नामों की स्थापना कर पूजन करे और ६४ अखरोट चढ़ावे।

१ ॐ सौधर्मेन्द्राय नमः स्वाहा । २ ॐ ईशानेन्द्राय नमः स्वाहा । १ ॐ माहेन्द्राय नमः स्वाहा । १ ॐ माहेन्द्राय नमः स्वाहा । १ ॐ माहेन्द्राय नमः स्वाहा । १ ॐ झसेन्द्राय नमः स्वाहा । ६ ॐ छान्तकेन्द्राय नमः स्वाहा । ७ ॐ ध्राकंन्द्राय नमः स्वाहा । १ ॐ आनतेन्द्राय नमः स्वाहा । १० ॐ प्राणतेन्द्राय नमः स्वाहा । ११ ॐ आरणेन्द्राय नमः स्वाहा । १२ ॐ अच्युतेन्द्राय नमः स्वाहा । १३ ॐ चन्द्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ११ ॐ चमरेन्द्राय नमः स्वाहा । ११ ॐ विशेन्द्राय नमः स्वाहा । ११ ॐ विशेन्द्राय नमः स्वाहा । १० ॐ विशुदेवेन्द्राय नमः स्वाहा । १० ॐ वेशुदेवेन्द्राय नमः स्वाहा । २० ॐ

विशिष्टेन्द्राय नमः स्वाहा । २७ ॐ जलकान्तेन्द्राय नमः स्वाहा । २८ ॐ जलप्रभेन्द्राय नमः खाहा । २९ ॐ अमितगतीन्द्राय नमः खाहा । ३० ॐ मितवाहनेन्द्राय नमः स्वाहा । ३१ ॐ बेलवेन्द्राय नमः स्वाहा । ३२ ॐ प्रभंजनेन्द्राय नमः स्वाहा । ३३ ॐ घोषेन्द्राय नमः स्वाहा । ३४ ॐ महाघोषेन्द्राय नमः स्वाहा । ३५ ॐ कालेन्द्राय नमः स्वाहा । ३६ ॐ महाकालेन्द्राय नमः स्वाहा । ३७ ॐ सरूपेन्द्राय नमः स्वाहा । ३८ ॐ प्रति रूपेन्द्राय नमः स्वाहा । ३९ ॐ पूर्णभद्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ४० ॐ माणवेन्द्राय नमः स्वाहा । ४१ ॐ भीमेन्द्राय नमः स्वाहा । ४२ ॐ महा भीमेन्द्राय नमः स्वाहा । ४३ ॐ किन्नरेन्द्राय नमः स्वाहा । किंपुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा । ४५ ॐ सत्पुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा । ४६ ॐ महापुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा । ४७ ॐ अमितकायेन्द्राय नमः स्वाहा । ४८ ॐ महाकायेन्द्राय नमः स्वाहा । ४९ ॐ गीतरतीन्द्राय नमः स्वाहा । ५० ॐ गीतयशेन्द्राय नमः स्वाहा । ५१ ॐ सन्निहितेन्द्राय नमः स्वाहा । ५२ ॐ सामानिकेन्द्राय नमः स्वाहा । ५३ ॐ धात्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ५४ ॐ विधात्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ५५ ॐ ऋषीन्द्राय नमः स्वाहा । ५६ ॐ ऋषिपालेन्द्राय नमः खाहा । ५७ ॐ ईश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा । ५८ ॐ महेश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा । ५९ ॐ वत्सेन्द्राय नमः स्वाहा । ६० ॐ विशालेन्द्राय नमः स्वाहा । ६१ ॐ हास्येन्द्राय नमः स्वाहा । ६२ ॐ श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा । ६३ ॐ हास्यरतेन्द्राय नमः स्वाहा । ६४ ॐ महा श्रेयेन्द्राय नमः खाहा ।

### तृतीय वलय

इसके बाद १६ विद्या देवियों के नाम की स्थापना कर पूजा करें और १६ सुपारी चांदी के बरक लगी हुई चढ़ावे।

१ ॐ रोहिण्ये नमः स्वाहा । २ ॐ प्रज्ञप्त्ये नमः स्वाहा । ३ ॐ वज्र् श्वृङ्खलाये नमः स्वाहा । ४ ॐ वज्रांकुशाये नमः स्वाहा । ५ ॐ चके श्वयं नमः स्वाहा । ६ ॐ पुरुपदत्ताये नमः स्वाहा । ७ ॐ काल्ये नमः

स्वाहा । ८ ॐ महाकाल्ये नमः स्वाहा । ९ ॐ गौर्य्ये नमः स्वाहा । १० ॐ गान्धार्य्ये नमः स्वाहा । ११ ॐ महाज्वालाये नमः स्वाहा । १२ ॐ वैरोट्याये नमः स्वाहा । १४ ॐ अच्छुप्ताये नमः स्वाहा । १५ ॐ मानस्ये नमः स्वाहा । १६ ॐ महामानस्ये नमः स्वाहा ।

### चतुर्थ वलय

इसके बाद २४ शासन देवों के नामों की स्थापना करे और सोने के बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ गोमुखाय नमः स्वाहा । २ ॐ महायक्षाय नमः स्वाहा । ३ ॐ त्रिमुखाय नमः स्वाहा । १ ॐ यक्षनायकाय नमः स्वाहा । ५ ॐ वुसुस्य नमः स्वाहा । ७ ॐ मातङ्गाय नमः स्वाहा । ८ ॐ विजयाय नमः स्वाहा । ९ ॐ अजिताय नमः स्वाहा । १२ ॐ अजिताय नमः स्वाहा । १२ ॐ अक्षराजाय नमः स्वाहा । १२ ॐ कुमाराय नमः स्वाहा । १३ ॐ षण्मुखाय नमः स्वाहा । १४ ॐ पातालाय नमः स्वाहा । १३ ॐ किन्नराय नमः स्वाहा । १६ ॐ गरुड़ाय नमः स्वाहा । १५ ॐ किन्नराय नमः स्वाहा । १६ ॐ गरुड़ाय नमः स्वाहा । १९ ॐ कुन्नेराय नमः स्वाहा । १० ॐ वरुणाय नमः स्वाहा । २१ ॐ मुकुटये नमः स्वाहा । २२ ॐ ग्रिकेटये नमः स्वाहा । २३ ॐ व्यक्षाय नमः स्वाहा । २३ ॐ पार्वि-यक्षाय नमः स्वाहा । २३ ॐ व्यक्षाय नमः स्वाहा । २३ ॐ पार्वि-यक्षाय नमः स्वाहा । २३ ॐ व्यक्षाय नमः स्वाहा । २३ ॐ व्यक्षाय नमः स्वाहा ।

,这一个一个人,我们是不是我们,我们是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们们是这一个,我们是我们的,我们就是我们的,我们就会

#### पञ्च वलय

१ ॐ चकेख्यें नमः स्वाहा । २ ॐ अजितबलाये नमः स्वाहा । ३ ॐ दुरिताय्यें नमः स्वाहा । ४ ॐ काल्ये नमः स्वाहा । ५ ॐ महा-काल्ये नमः स्वाहा । ६ ॐ स्यामाये नमः स्वाहा । ७ ॐ शान्ताये नमः स्वाहा । ८ ॐ भृकुट्ये नमः स्वाहा । ९ ॐ सुतारकाये नमः स्वाहा । १० ॐ अशोकाये नमः स्वाहा । ११ ॐ मानन्ये नमः स्वाहा । १२ ॐ चण्डाये नमः स्वाहा । १३ ॐ विदिताये नमः स्वाहा । ११ ॐ अंकुशाये

नमः स्वाहा । १५ ॐ कन्द्रपीय नमः स्वाहा । १६ ॐ निर्व्वाण्ये नमः स्वाहा । १७ ॐ वलाये नमः स्वाहा । १८ ॐ धारिण्ये नमः स्वाहा । १९ ॐ धरणित्रयाये नमः स्वाहा । २० ॐ नरदत्ताये नमः स्वाहा । २१ ॐ गान्धा-र्यो नमः स्वाहा । २२ ॐ अभ्बिकाये नमः स्वाहा । २३ ॐ पद्मावत्ये नमः स्वाहा । २३ ॐ पिद्मावित्ये नमः स्वाहा । २३ ॐ सिद्मायिकाये नमः स्वाहा ।

### षष्ट वलय

इसके बाद छड़े वलय में ९ नवनिधानों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और ९ कलश चढ़ावे।

१ ॐ नैसर्प्पकाय नमः स्वाहा । २ ॐ पाण्डुकाय नमः स्वाहा । ३ ॐ पिङ्गलाय नमः स्वाहा । ४ ॐ सर्वरत्नाय नमः स्वाहा । ५ ॐ महापद्माय नमः स्वाहा । ६ ॐ कालाय नमः स्वाहा । ७ ॐ महाकालाय नमः स्वाहा। ८ ॐ माणवाय नमः स्वाहा । ९ ॐ शङ्खाय नमः स्वाहा ।

### सप्त वलय

पांच रक्षकों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और ५ सीताफल चढावे।

१ ॐ विजयस्वामिने नमः स्वाहा । २ ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा । ३ ॐ चक्रेक्वर्य्ये नमः स्वाहा । ४ ॐ धरणेन्द्राय नमः स्वाहा । ५ ॐ पद्मावत्ये नमः स्वाहा ।

### अष्ट वलय

इसके बाद दशदिग्पालों के नामों की स्थापना करके पूजा करे और पान अष्टद्रंच्य सहित नगदी चढावे।

१ ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। २ ॐ अग्नये नमः स्वाहा। ३ ॐ यमाय नमः स्वाहा। ४ ॐ नैऋ ताय नमः स्वाहा। ५ ॐ वरुणाय नमः स्वाहा। ६ ॐ वायव्याय नमः स्वाहा। ७ ॐ कुवेराय नमः स्वाहा। ८ ॐ ईशानाय नमः स्वाहा। ९ ॐ नागाय नमः स्वाहा। १० ॐ व्रह्मणे नमः स्वाहा।

### नवम् वलय

इसके बाद नवग्रहों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और पान अष्टद्रच्य सहित नगदी चढावे।

१ ॐ सूर्यीय नमः स्वाहा । २ ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा । ३ ॐ भौमाय नमः स्वाहा । ४ ॐ बुधाय नमः स्वाहा । ५ ॐ वृहस्पतये नमः स्वाहा । ६ ॐ शुकाय नमः स्वाहा । ७ ॐ शनैश्वराय नमः स्वाहा । ८ ॐ राहवे नमः स्वाहा । ९ ॐ केतवे नमः स्वाहा । इसके बाद बलिवाकुलादि सब विधि नवपद मण्डल के समान ही चढ़ावे ।

### विंशस्थानक की सामग्री

पञ्चपरमेष्ठी, दशदिग्पाल, नवग्रहों के पट्टे, लाल कपड़ा, सफेद कपड़ा चावल, बतासे, बादाम, पिस्ता, लौंग, मिश्री, सुपारी, छुहारे, चिरौंजी, पान, इत्र, तेल, फल, फूल, पांच तरह के मिठाई पांच तरहकी, रोली, मौली, धूप, दीपक, घी, खीर, बड़े, पापड़ी, लापसी, बरक, नारियल, केशर, मैनफल, मरोडफली, पैसे, नगदी, अंगलूहण, गोले, ध्वजा, अखरोट, सीताफल, पेठे, सिन्दूर, सतनजा, गुलाबजल।

### ऋषि मण्डल पूजा विधि

शुम दिन, शुम घड़ी, शुम नक्षत्र, शुम मुहूर्त में पूजा करानेवाले का चन्द्रबल देख कर ऋषिमण्डल जो चौबीसीजी का मण्डल कहा जाता है नव पदजीके मण्डलके समान ही बनवावे सब स्नात्रियोंको उसकी विधि जैसे अङ्ग शुद्धि, वस्त्र शुद्धि, शिखां बन्धन, मैनफल, मरोड फली, मौली, मण्डलजी के तथा अपने हाथों में बांधना चाहिये और केशर, चन्दन, कुंकुमं (रोली) मण्डलजी की मौली में लगा दे। देववन्दन दशदिग्पाल तथा नवप्रहों की पूजन मेंट आदि की सब कियायें नव पद मण्डल पूजा के समान ही है।

### प्रथम वलय पूजा

पहले वलय में चौबीस तीर्थङ्करों के नामों की स्थापना कर उनकी पूजा करे २४ गोले चढ़ावे।

१ श्री आदिनाथाय नमः खाहा । २ श्रीअजितनाथाय नमः खाहा । ३ श्री सम्भवनाथाय नमः स्वाहा। ४ श्री अभिनन्द्ने नमः स्वाहा। ५ श्री सुमतिनाथाय नमः स्वाहा । ६ श्री पद्मप्रमवे नमः स्वाहा । ७ श्री सुपार्च्वनाथाय नमः स्वाहा । ८ श्री चन्द्रप्रभवे नमः स्वाहा । ९ श्री सुवि-धिनाथाय नमः स्वाहा । १० श्री शीतलनाथाय नमः स्वाहा । ११ श्री श्रेयांसनाथाय नमः स्वाहा । १२ श्री वासुपूज्याय नमः स्वाहा । १३ श्री विमलनाथाय नमः खाहा । १४ श्री अनन्तनाथाय नमः खाहा । १५ श्री धर्मनाथाय नमः स्वाहा । १६ श्री शान्तिनाथाय नमः स्वाहा । १७ श्री कुन्थुनाथाय नमः स्वाहा । १८ श्री अरनाथाय नमः स्वाहा । १९ श्री मिक्किनाथाय नमः स्वाहा । २० श्री मुनिसुत्रताय नमः स्वाहा । २१ श्री निमनाथाय नमः स्वाहा । २२ श्री नेमिनाथाय नमः स्वाहा । २३ श्री पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा । २४ श्री वर्द्धमानाय नमः स्वाहा । मण्डल में क्रोंकार है वहां बकारों 88-88 और स्थानों में बनावे और पूजा करें। १ ॐ ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब नमः । २ ॐ व ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब नमः। ३ॐ बबबबबबबबबबबब ब ब ब ब ब नमः । १ ॐ हीं अर्हद्भूयो नमः स्वाहा। २ ॐ हीं सिद्धे-भ्यो नमः स्वाहा । ३ ॐ ह्रीं आचार्येभ्यो नमः स्वाहा । ४ ॐ ह्रीं उपाध्या-येभ्यो नमः स्वाहा । ५ ॐ हीं साधुभ्यो नमः स्वाहा । ६ ॐ हीं ज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा । ७ ॐ ह्रीं दर्शनेभ्यो नमः स्वाहा । ८ ॐ ह्रीं चारित्रेभ्यो नमः स्वाहा । इन आठ पदों में आठ गोले पदों के रंग के अनुसार चढ़ावे ।

### द्वितीय वलय पूजा

दूसरे वल्रय में दुशदिग्पालों के नामों की स्थापना कर पान चढ़ावे।

१ ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा । २ ॐ अग्नये नमः स्वाहा । ३ ॐ यमाय नमः स्वाहा । ४ ॐ नैऋ ताय नमः स्वाहा । ५ ॐ वरुणाय नमः ६ ॐ वायव्याय नमः स्वाहा । ७ ॐ कुबेराय नमः स्वाहा । ८ ॐ ईशा-नाय नमः स्वाहा । १० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा । ततीय वल्लय

नवग्रहों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और पान चढ़ावे। १ ॐ सूर्याय नमः स्वाहा। २ ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा। ३ ॐ मङ्ग-लाय नमः स्वाहा। १ ॐ बुधाय नमः स्वाहा। ५ ॐ वृहस्पतये नमः स्वाहा। ६ ॐ शुकाय नमः स्वाहा। ७ ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा। ८ ॐ राहवे नमः स्वाहा। ९ ॐ केतवे नमः स्वाहा।

# चतुर्थ वलय

खर तथा व्यञ्जनों की स्थापना करके पूजा करे और किसमिस और मिश्री और सुनहरी बरक छगे हुए ८ गोले चढ़ावे।

ं १अ आइई उऊ ऋ ऋ ऋ ऌ ऌ ए ऐ ओ 'औ अं अः । २क खगषङ।३च छ ज झ ञ । ४ ट ठ ड ढ ण । ५ त थ द ध न । ६ प फ ब भ म । ७ य र छ व । ८ श ष स ह ।

#### पञ्च बलय

इसके बाद ग्यारह गणधरों की स्थापना करके उनकी पूजा करें । १ ॐ हीं इन्द्रभूतये नमः स्वाहा । २ ॐ हीं अग्निभूतये नमः स्वाहा । ३ ॐ हीं व्यक्ताय नमः स्वाहा । १ ॐ हीं व्यक्ताय नमः स्वाहा । ५ ॐ हीं मण्डिताय नमः स्वाहा । ७ ॐ हीं मौर्य पुत्राय नमः स्वाहा । ८ ॐ हीं अकंपिताय नमः स्वाहा । ९ ॐ हीं अचलभात्रे नमः स्वाहा । १० ॐ हीं मेतार्याय नमः स्वाहा । १० ॐ हीं प्रभासाय नमः स्वाहा । ११ ॐ हीं प्रभासाय नमः स्वाहा ।

नोट—शान्ति पूजाको आदि लेकर जितनी भी पूजार्ये है इन सबोंमें कृवा कराने बाले को रेशमी चहर तथा रेशमी धोती देनी चाहिये और स्नात्रियों को धोती, चहर, मुखकोश देना चाहिये।

### षष्ट वलय

इसके बाद ४८ लिब्ध पदों के नाम तथा उनकी पूजन करे और बरक लगे हुये ४८ लुहारे चढ़ावे।

१ ॐ ह्वीं अहै णमोजिणाणं। २ ॐ ह्वीं अहै णमोओहिजिणाणं। ३ ॐ हीं अहैं णमो परमोहिजिणाणं। ४ ॐ हीं अहैं णमो सच्चोहि जिणाणं । ५ ॐ हीं अहैं णमो अणंतोहि जिणाणं । ६ ॐ हीं अहैं णमो कहबुद्धीणं । ७ ॐ ह्वीं अहैं णमो बीयबुद्धीणं । ८ ॐ ह्वीं अहैं णमो पयाणु सारीणं। ९ ॐ हीं अहै णमो आसीवीसाणं। १० ॐ हीं अहै णमो दिही वीसाणं। ११ ॐ हीं अहै णमो संभिण्णसोयाणं। १२ ॐ हीं अहै णमो सयं संबुद्धाणं। १३ ॐ हीं अर्ह णमो पत्तेयबुद्धाणं। १४ ॐ हीं अर्ह णमो बोहि बुद्धीणं। १५ ॐ हीं अहैं णमो ऋजुमईणं। १६ ॐ हीं अहैं णमो विउलमईणं। १७ ॐ ह्वीं अहैं णमो दशपुव्वीणं। १८ ॐ ह्वीं अहैं णमो चउद्श पुव्वीणं । १९ ॐ हीं अहं णमो अहंग महानिमित्त कुश-लाणं। २० ॐ हीं अहं णमो विउव्वईणंइहिपत्ताणं। २१ ॐ हीं अहं णमो विज्जाहराणं । २२ ॐ हीं अहैं णमोचारणलडीणं । २३ ॐ हीं अहैं णमो पणासमणाणं । २४ ॐ हीं अहैं णमो आगासगामीणं । २५ ॐ हीं अहैं णमो खीरासवाणं । २६ ॐ ह्वीं अर्हं णमो सप्पिआसवाणं । २७ ॐ ह्वीं अहं णमो महुआसवाणं । २८ ॐ हीं अहं णमो अमिआसवाणं । २९ ॐ ह्रीं अहैं णमो सिन्दायणाणं । ३० ॐ ह्रीं अहैं णमो भगवया महइमहावीर वद्धामाण बुद्ध रिसीणं । ३१ ॐ हीं अहै णमो उग्गतवाणं । ३२ ॐ हीं अर्ह णमो अक्वीण महाण सियाणं । ३३ ॐ ह्वीं अर्ह णमो बहुमाणाणं । ३४ ॐ ह्वीं अहै णमो दिचतवाणं। ३५ ॐ ह्वीं अहै णमो तचतवाणं। ३६ ॐ ह्वीं अहैं णमो महातवाणं । ३७ ॐ ह्वीं अहैं णमो घोरतवाणं । ३८ ॐ ह्वीं अहैं णमो घोरगुणाणं । ३९ ॐ ह्वीं अहैं णमो घोरपक्किमाणं। ४० ॐ ह्वीं अहैं णमो बंभयारीणं। ४१ ॐ ह्वीं अहैं णमो आमोसही पत्ताणं। ४२ ॐ हीं अहैं णमो खेलोसहीणं। ४३ ॐ हीं अहैं णमो

जह्रोसहीणं । ४४ ॐ हीं अहैं णमो विप्पोसिह पत्ताणं । ४५ ॐ हीं अहैं णमो सव्योसिहपत्ताणं । ४६ ॐ हीं अहैं णमो मणवलीणं । ४७ ॐ हीं अहैं णमो वयणवलीणं । ४८ ॐ हीं अहैं णमो कायवलीणं ।

### सप्तम् वलय

इसके बाद चौबीस तीथङ्करों के पिता के नामों की स्थापना तथा पूजन करे और २४ सुपारी सोने के बरक लगी हुई चढ़ावे।

१ ॐ नामये नमः स्वाहा । २ ॐ जितरात्रवे नमः स्वाहा । ३ ॐ जितारये नमः स्वाहा । १ ॐ मेघाय नमः स्वाहा । ६ ॐ घराय नमः स्वाहा । ७ ॐ प्रतिष्ठाय नमः स्वाहा । ८ ॐ महसेनाय नमः स्वाहा । ९ ॐ मुत्रीवाय नमः स्वाहा । १० ॐ दृद्रयाय नमः स्वाहा । ११ ॐ विष्णवे नमः स्वाहा । १२ ॐ वासुपूज्याय नमः स्वाहा । १३ ॐ कृतवर्मणे नमः स्वाहा । ११ ॐ सिंहसेनाय नमः स्वाहा । १० ॐ सूर्याय नमः स्वाहा । १६ ॐ विश्वसेनाय नमः स्वाहा । १० ॐ सूर्याय नमः स्वाहा । १८ ॐ सुर्वर्शनाय नमः स्वाहा । १० ॐ सूर्याय नमः स्वाहा । १० ॐ सुम्भाय नमः स्वाहा । १० ॐ सुम्भाय नमः स्वाहा । २० ॐ सुम्नाय नमः स्वाहा । २० ॐ सुम्नाय नमः स्वाहा । २० ॐ सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । २३ ॐ अञ्चसेनाय नमः स्वाहा । २२ ॐ सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । २३ ॐ अञ्चसेनाय नमः स्वाहा । २२ ॐ सिद्धार्थाय नमः स्वाहा ।

为有有 电路 "我不是?"我不是,我不是我的人,我们是我们的人,我们们就是我们,我们们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们

इसके बाद माताओं के नामों की स्थापना तथा पूजन करे और २४ सुपारी सोने के बरक लगी हुई चढ़ावे।

१ ॐ मरुदेव्ये नमः स्वाहा । २ ॐ विजयाये नमः स्वाहा । ३ ॐ सेनाये नमः स्वाहा । १ ॐ सिद्धार्थाये नमः स्वाहा । ५ ॐ सुमङ्गरुगये नमः स्वाहा । ६ ॐ सुशीमाये नमः स्वाहा । ७ ॐ पृथ्वीमाताये नमः स्वाहा । ८ ॐ रामाये नमः स्वाहा । १० ॐ नन्दाये नमः स्वाहा । ११ ॐ विष्णवे नमः स्वाहा । १२ ॐ जयाये नमः स्वाहा । १३ ॐ द्यामाये नमः स्वाहा । १४ ॐ सुयशाये नमः स्वाहा । १५ ॐ सुवताये नमः स्वाहा । १६ ॐ अचिराये नमः स्वाहा ।

说,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们也是这种,我们也是这种的,我们们的

१७ ॐ श्रिये नमः स्वाहा। १८ ॐ देन्ये नमः स्वाहा। १९ ॐ प्रभावत्ये नमः स्वाहा। २१ ॐ विप्राये नमः स्वाहा। २१ ॐ विप्राये नमः स्वाहा। २३ ॐ वामाये नमः स्वाहा। २४ ॐ त्रिशाखे नमः स्वाहा। २४ ॐ त्रिशाखे नमः स्वाहा।

### अष्ट बलय

इसके बाद २४ शासन देवों के नामों की स्थापना कर पूजा करें सोने के बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ गोमुखाय नमः स्वाहा । २ ॐ महायक्षाय नमः स्वाहा । ३ ॐ त्रिमुखाय नमः स्वाहा । ४ ॐ यक्षनायकाय नमः स्वाहा । ५ ॐ तुम्झुरवे नमः स्वाहा । ६ ॐ कुसुमाय नमः स्वाहा । ७ ॐ मातङ्गाय नमः स्वाहा । ८ ॐ विजयाय नमः स्वाहा । ९ ॐ अजिताय नमः स्वाहा । १० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा । ११ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा । १२ ॐ कुमाराय नमः स्वाहा । १३ ॐ षण्मुखाय नमः स्वाहा । १४ ॐ पातालाय नमः स्वाहा । १५ ॐ विन्नराय नमः स्वाहा । १६ ॐ गरुड़ाय नमः स्वाहा । १५ ॐ विन्नराय नमः स्वाहा । १६ ॐ गरुड़ाय नमः स्वाहा । १७ ॐ विन्नराय नमः स्वाहा । १६ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा । १९ ॐ कुबेराय नमः स्वाहा । २० ॐ वरुणाय नमः स्वाहा । २१ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा । २१ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा । २१ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा । २१ ॐ वरुणाय नमः स्वाहा । २३ ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।

### नवम् वलय

इसके बाद चौबीस शासन देवियों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और चांदी के बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ चक्रेश्वयें नमः स्वाहा । २ ॐ अजितवलाये नमः स्वाहा । ३ ॐ दुरितायें नमः स्वाहा । ४ ॐ काल्ये नमः स्वाहा । ५ ॐ महा-काल्ये नमः स्वाहा । ६ ॐ श्यामाये नमः स्वाहा । ७ ॐ शान्ताये नमः स्वाहा । ८ ॐ भृकुट्ये नमः स्वाहा । ९ ॐ सुतारकाये नमः स्वाहा । १० ॐ अशोकाये नमः स्वाहा । ११ ॐ मानव्ये नमः स्वाहा । १२ ॐ

चण्डायै नमः स्वाहा । १३ ॐ विदितायै नमः स्वाहा । १४ ॐ अंकुशायै नमः स्वाहा । १५ ॐ कन्दर्पीयै नमः स्वाहा । १६ ॐ निर्वाण्यै नमः स्वाहा । १७ ॐ बलायै नमः स्वाहा । १८ ॐ घारिण्यै नमः स्वाहा । १९ ॐ धरणप्रियाये नमः स्वाहा । २० ॐ नरदत्ताये नमः स्वाहा । २१ ॐ गान्धार्ये नमः स्वाहा। २२ ॐ अम्बिकाये नमः स्वाहा। २३ ॐ पद्मावत्ये नमः स्वाहा । २४ सिद्धायिकायै नमः स्वाहा ।

इसके बाद २४ सहायक देवियों के नामों की स्थापना करके प्रजा करे और चांदीके बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ ह्रिये नमः स्वाहा । २ ॐ श्रिये नमः स्वाहा । ३ ॐ धृत्ये नमः स्वाहा । ४ ॐ लक्ष्मयै नमः स्वाहा । ५ ॐ गौर्य्ये नमः स्वाहा । ६ ॐ चण्डायै नमः स्वाहा। ७ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा । ८ ॐ जयायै नमः स्राहा । ९ ॐ अम्बायै नमः स्वाहा । १० ॐ विजयायै नमः स्वाहा । ११ ॐ क्लिन्नायै नमः स्वाहा। १२ ॐ अजितायै नमः स्वाहा। १३ ॐ नित्यायै नमः स्वाहा । १४ ॐ मदद्रवायै नमः स्वाहा । १५ ॐ कामाङ्गायै नमः स्वाहा । १६ ॐ कामवाणायै नमः स्वाहा । १७ ॐ सानन्दायै नमः खाहा । १८ नन्दमाल्ये नमः खाहा । १९ ॐ मायात्ये नमः खाहा । २० ॐ मायावित्यै नमः स्वाहा। २१ ॐ रौद्रघै नमः स्वाहा । २२ ॐ कालांयै नमः स्वाहा । २३ ॐ काल्यै नमः स्वाहा । २४ ॐ कालप्रियायै नमः स्वाहा ।

### द्शम् वलय

इसके बाद १६ विद्या देवियों के नामों की स्थापना कर पूजाकरे और सोने के वरक लगी हुई १६ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ रोहिण्यैनमः स्वाहा २।ॐ प्रज्ञप्त्यैनमः स्वाहा।३ ॐ वज्रश्रृङ्ख-लायै नमः स्वाहा ४। ॐ वज्राकुंशायै नमः स्वाहा ५। ॐ चकेरवयें नमः स्वाहा ६ । ॐ नरदत्तायै नमः स्वाहा । ७ ॐ काल्यै नमः स्वाहा । ८ ॐ महाकाल्ये नमः स्वाहा । ९ ॐ गौर्य्ये नमः स्वाहा ।

,是一个,我们是是一个人,我们们,我们们的人,我们们的人,我们们也是这个人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们也是是一个人,我们们的人,我们们的人,我们 第一个人,我们是是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们

गान्धार्य्ये नमः स्वाहा। ११ ॐ 🕸 महाज्वालाये नमः स्वाहा। १२ॐ मानन्ये नमः स्वाहा । १३ ॐ वैरोट्याये नमः स्वाहा । १४ ॐ अच्छुप्ताये नमः स्वाहा । १५ ॐ मानस्ये नमः स्वाहा । १६ ॐ महामानस्ये नमः स्वाहा ।

### एकादरा वलय

इसके बाद नवनिधानों के नामों की स्थापना कर पूजा करे नव कलश चढ़ावे ।

१ ॐ नैसर्पकाय नमः स्वाहा । २ ॐ पाण्डुकाय नमः स्वाहा । ३ ॐ पिङ्गलाय नमः स्वाहा । ४ ॐ सर्वरताय नमः स्वाहा । ५ ॐ महा-पद्माय नमः स्वाहा । ६ ॐ कालायनमः स्वाहा । ७ ॐ महाकालाय नमः स्वाहा । ८ ॐ मानवाय नमः स्वाहा । ९ ॐ शङ्काय नमः स्वाहा ।

### द्वादश वलय

इनकी पूजा कर चौंसठ इन्द्रों के नामों की स्थापना कर पूजा करे सोने के बरक लगी हुई ६४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ सौधर्मेन्द्राय नमः स्वाहा । २ ईशानेन्द्राय नमः स्वाहा । ३ ॐ सनत्कुमारेन्द्राय नमः स्वोहा । ४ ॐ माहेन्द्राय नमः स्वोहा । ५ ॐ ब्रह्मेन्द्राय नमः स्वाहा । ६ लान्तकेन्द्राय नमः स्वाहा । ७ ॐ शुक्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ८ ॐ सहस्रारेन्द्राय नमः स्वाहा । ९ ॐ आनतेन्द्राय नमः स्वाहा । १० प्राणतेन्द्राय नमः स्वाहा । ११ ॐ आरणेन्द्राय नमः स्वाहा । १२ ॐ अच्युतेन्द्राय नमः स्वाहा । १३ ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा । १४ ॐ सूर्येन्द्राय नमः स्वाहा । १५ ॐ चमरेन्द्राय नमः स्वाहा।१६ ॐ बली-न्द्राय नमः स्वाहा । १७ ॐ धारणेन्द्राय नमः स्वाहा । १८ ॐ भूतेन्द्राय नमः स्वाहा । १९ ॐ वेणुदेवेन्द्राय नमः स्वाहा । २० ॐ वेणुदालीन्द्राय नमः स्वाहा । २१ ॐ कान्तेन्द्राय नमः स्वाहा । २२ ॐ हरिस्सहेन्द्राय नमः स्वाहा । २३ ॐ अग्निशिखेन्द्राय नमः स्वाहा । २४ ॐ अग्निमाण-वेन्द्राय नमः स्वाहा । २५ ॐ पूर्णेन्द्राय नमः स्वाहा । २६ ॐ विशिष्टे-

<sup>\*</sup> सवस्त्र ।

न्द्राय नमः स्वाहा । २७ ॐ जलकांतेन्द्राय नमः स्वाहा । २८ ॐ जल-प्रभेन्द्राय नमः स्वाहा । २९ ॐ अमित्गतीन्द्राय नमः स्वाहा । ३० ॐ मितवाहनेन्द्राय नमः स्वाहा । ३१ ॐ बेलवेन्द्राय नमः स्वाहा । ३२ ॐ प्रमंजनेन्द्राय नमः स्वाहा । ३३ ॐ घोषेन्द्राय नमः स्वाहा । ३४ ॐ महाघोषेन्द्राय नमः स्वाहा । ३५ ॐ कालेन्द्राय नमः स्वाहा । ३६ ॐ महाकालेन्द्राय नमः स्वाहा । ३७ ॐ सरूपेन्द्राय नमः स्वाहा । ३८ ॐ प्रति रूपेन्द्राय नमः स्वाहा । ३९ ॐ पूर्णभद्देन्द्राय नमः स्वाहा । ४० ॐ माणवेन्द्राय नमः स्वाहा । ४१ ॐ भीमेन्द्राय नमः स्वाहा । ४२ ॐ महा भीमेन्द्राय नमः स्वाहा । ४३ ॐ किन्नरेन्द्राय नमः स्वाहा । ४४ ॐ र्किपुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा । ४५ ॐ सत्पुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा । ४६ ॐ महापुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा । ४७ ॐ अमितकायेन्द्राय नमः स्वाहा । ४८ ॐ महाकायेन्द्राय नमः स्वाहा । ४९ ॐ गीतरतीन्द्राय नमः स्वाहा । ५० ॐ गीतयशेन्द्राय नमः स्वाहा । ५१ ॐ सन्निहितेन्द्राय नमः स्वाहा । ५२ ॐ सामानिकेन्द्राय नमः स्वाहा । ५३ ॐ धात्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ५४ ॐ विधात्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ५५ ॐ ऋषीन्द्राय नमः स्वाहा । ५६ ॐ ऋषिपालेन्द्राय नमः स्वाहा । ५७ ॐ ईश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा । ५८ ॐ महेक्वरेन्द्राय नमः स्वाहा । ५९ ॐ वत्सेन्द्राय नमः स्वाहा । ६०-ॐ विशालेन्द्राय नमः स्वाहा । ६१ ॐ हास्येन्द्राय नमः स्वाहा । ६२ ॐ हास्यरतेन्द्राय नमः स्वाहा । ६३ ॐ श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा । ६४ ॐ महा श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा ।

### त्रयोदश वलय

इसके बाद आठ सिन्धियों के नामों की स्थापना कर पूजा करे ८ नारंगी चढ़ावे।

१ ॐ अणिमासिख्ये नमः स्वाहा। २ ॐ महिमासिख्ये नमः स्वाहा। २ ॐ रुघिमासिख्ये नमः स्वाहा। १ ॐ रुघिमासिख्ये नमः स्वाहा। ६ ॐ प्रकाम्यसिख्ये नमः

,我们是我们是一个时间,这一个时间,我们就是我们是这个人,我们就是我们的,我们就是我们一个时间,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们们一个时间,我们

स्वाहा । ७ ॐ ईशित्वसिद्धये नमः स्वाहा । ८ ॐ वशित्वसिद्धये नमः स्वाहा ।

# चतुर्दश वलय

इसके बाद चार कोने में चार द्वारपालों के नामों की स्थापना कर पूजा करे।

१ श्री गौतमस्वामिने नमः । २ श्री घरणेन्द्रोरक्षतु । ३ श्री पद्मावति रक्षतु । ४ श्री वैरोट्या रक्षतु ।

# ऋषिमण्डल पूजन की सामग्री

२४ गोले, ८ गोले, ५२ पान, ६ कटोरीमें १६-१६, २ में ३२-३२ किसमिस, ४८ छुहारे, २४ सुपारी, २४ सुपारी, २४ सुपारी, २४ सुपारी, २६ सुपारी, १६ सुपारी, ९ कल्र्चा, ६४ सुपारी, ८ मिश्री के कुञ्जे, ८ नारंगी।

# अष्टापद मण्डल पूजा विधि

प्रथम शुभदिन, शुभघड़ी, शुभमुहूर्त्त, शुभनक्षत्र और कराने वाले का चन्द्र बल देखकर अध्यापद मण्डल की स्थापना में गोलाकार रूप चौवीसों भगवान् के नामों की स्थापना करके पूजन करे और मैनफल, मरोडफली, मौली, शिखावन्धन, अङ्गरक्षा, देववन्दन तथा दशदिग्पाल, नवग्रहों के पट्टों की पूजन भेंट आदि, सब क्रियायें नवपद मण्डल पूजा विधि के समान ही करे पीछे अष्टद्रच्य चौबीसों भगवानों पर चढ़ावे।

# प्रथम जिन पूजा मन्त्र

श्री नाभेयजिनेशत्वं, नन्यायतिसदांशुकः। यथाकुमुद्धती नेता, नन्यायतिसतांशुकः।ॐ हीं श्रीं अर्हं ऐं श्री ऋषभदेव स्वामीअत्रवेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

### द्वितीय जिन पूजा मन्त्र

उपाध्वमतितं भक्ता, कन्द्धाना मनेकपं। प्रणतो द्वोघितं ज्ञान, कन्द-

的一个年代,这一个年代,人们,人们,他们一位,一个年代,我们的一个年代,我们的一个一个,我们的一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个

धाना मनेकपं । ॐ ह्वीं श्रीं अर्ह ऐं श्री अजितनाथ स्वामी अत्र वेदिका-पीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२॥ अष्टद्रव्य चढावे ।

# तृतीय जिन पूजा मन्त्र

श्री सम्भव प्रपन्नाये, समयंते सदादरात् । तेसंसार वनान्मुक्ति, सम-यंते सदादरात ॥ॐ हीं श्रीं अहैं ऐं श्रीसम्भव स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठ-तिष्ठ स्वाहा ॥३॥ अष्टद्रव्य चढावे ।

# चतुर्थ जिन पूजा मन्त्र

येऽभिनन्दयतेतीर्थ, राजपाद सभाजनाः। विल्लसन्तिचिरंतेऽत्र, राजपाद सभाजनाः।ॐ ह्वीं श्रीं अर्ह ऐं श्रीअभिनन्दन स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठ-तिष्ठ स्वाहा ॥४॥ अष्टद्रच्य चढावे ।

# पञ्चम जिन पूजा मन्त्र

पूजितां हद्वयीमुक्त्ये; कान्ताराजीवमालया । सुमते तव लीनाह, कान्ता-राजीवमालया।ॐ हीं श्रीं अहैं ऐं श्रीसुमित स्वामी अन्न वेदिकापीठेतिन्ठतिन्ठ खाहा ॥५॥ अष्टद्रव्य चढावे ।

### षष्टम जिन-पूजा मन्त्र

पद्मश्रम सुदृष्टीनां, भूरिशोभातपोद्याः । हन्यात्तमांसि पूषेव, भूरिशो-भातपोदया। ॐ हीं श्रीं अर्ह ऐं श्रीपद्मप्रभ स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥६॥ अष्टद्रव्य चढावे ।

### सप्तम जिन पूजा मन्त्र

सुपार्श्वतत् श्रुतं श्रुत्वा दर्प्पकोपक्रमानल । मुञ्जन्ति जन्तवरशान्ता, दर्भकोपक्रमानलं । ॐ ह्वीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व खामी अत्र वेदिकापीठेतिप्ठ-तिप्ठ स्वाहा ॥७॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

# अष्टम जिन पूजा मन्त्र

प्रभेन्द्रेण, वैरभाजि समुन्नतः। भवाश्चन्द्रप्रभेन्द्रेण तैर

भाजिसमुन्नतः। ॐ हीं श्रीं अहं ऐं श्रीचन्द्र स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥८॥ अष्टद्रच्य चढ़ावे।

# नवम जिन पूजा मन्त्र

सुविधेत्वद्विधि प्राप्य प्रमाचन्त्य समाहितः।येतेश्रेयः श्रियंश्रस्त प्रमाचंत्य समाहितः । ॐ हीं श्रीं अहं ऐं श्रीसुविधि स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥९॥ अष्टद्रच्य चढ़ावे ।

### दशम जिन पूजा मन्त्र

सेवतेशीतलस्त्वां ये, देव सम्पन्न केवलः । अपिमुक्तिर्भवेत्तेषां, देव-सम्पन्न केवलं । ॐ हीं श्रीं अर्ह ऐं श्रीशीतलस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१०॥ अष्टद्रच्य चढावे ।

# एकादश जिन पूजा मन्त्र

श्रीश्रेयांसतन्भाजां, परमोक्षगतिर्भवान् । अनंतान्सत्व विश्रांतं परमोक्ष गतिर्भवान् । ॐ हीं श्रीं अर्ह ऐं श्रीश्रेयांशस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥११॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

# द्वादश जिन पूजा मन्त्र

वासुपूज्य नवस्वर्ण, नीरजारूढ़ सक्रमः । हरत्वं विरहं मोहं, नीरजारूढ़ सक्रमः । ॐ हीं श्रीं अर्हं ऐं श्री वासुपूज्यस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१२॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

# त्रयोदश जिन पूजा मन्त्र

विमलत्वां प्रतिस्वंये, रञ्जयन्ति मनोभवं। अपिदुर्जय मुच्चैस्ते, रञ्जयन्ति मनोभवं। ॐ हीं श्रीं अर्हे ऐं श्री विमलस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१३॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

# चतुर्दश जिन पूजा मन्त्र

जिम्मवां समनं तत्वां, नमस्यन्ति महापदम् । येतेविश्व त्रयी छक्ष्मी,

नमस्यन्ति महापदम् । ॐ हीं श्रीं अर्हे ऐ श्रीअनन्तस्वामीअत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१४॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

# पञ्चदश जिन पूजा मन्त्र

नाश्रुतस्तवसिन्दान्तो, येनावीत नयस्ततः । वरंधर्म जिनन्दमी, येनावीत नयस्ततः । ॐ ह्वीं श्रीं अर्ह ऐं श्री धर्मस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१५॥ अष्टद्रच्य चढ़ावे ।

# षोड़श जिन पूजा मन्त्र

श्री शान्तेदेहिनांदेहि, सारङ्ग विद्धेधृति । शर्म कर्म ततेरंक, सारङ्ग विद्धेधृति । ॐ हीं श्रीं अर्ह ऐ श्रीशान्ति स्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१६॥ अष्टद्रच्य चढ़ावे ।

### सप्तद्श जिन पूजा मन्त्र

कुन्युनायस्तु पन्यानं, विधुतारो विषादृतः । पुंसां तन्यात् पिनाकी च विधुतारो विषादृतः।ॐ हीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुन्युस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१७॥ अष्टद्रच्य चढ़ावे ।

# अष्टादश जिन पूजा मन्त्र

येनत्वं नाचितः कर्म, वनवैश्वा नरोपमः । सो अरनाथ कुधीर्मन्या, वनवैश्वा नरोपमः। ॐ हीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअरखामी अत्र वेदिका पीठे तिष्ठ तिष्ठ खाहा ॥१८॥ अष्टद्रन्य चढ़ावे ।

# एकोनविंशति जिन पूजा मन्त्र

नांघीपद्मसुतः सिन्धि, प्रतिपन्न सदारुणः। येनते भिद्यते मल्ले, प्रतिपन्न सदारुणः। ॐ हीं श्रीं अर्हं ऐ'श्रीमल्लिस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ट निष्ट स्वाहा ॥१९॥ अष्टद्रच्य चढ़ावे। 也是是是一个人,我们是一个人,我们是是是一个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是这一个人,我们是这一个人,我们就是我们的,我们就是这

# विंशति जिन पूजा मन्त्र

श्री सुत्रत जीनाधीशा, मक्षमालोप लक्षितं । विरंचि मिवसेवड, मक्षमालोप लक्षितं। ॐ हीं श्रीं अई ऐं श्रीमुनीसुत्रतस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥२०॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

# एक विंशति जिन पूजा मन्त्र

र्देन्योऽपित्वद्गुणोद्गाना, सहामंदरसानुगाः।गायन्तित्वां नमे भक्त्या सहा-मंदर सानुगाः।ॐ हीं श्रीं अर्ह ऐं श्रीनिम स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२१॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

# द्यविंशति जिन पूजा मन्त्र

तृष्णातापात्वया वर्षं, शमितादान वारिणा, श्री नेमे जनतांराध्य, शमि-तादानवारिणा।ॐ हीं श्रीं अहें ऐं श्रीनेमी खामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२२॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

# त्रयोविंशति जिन पूजा मन्त्र

,不是人,我们是一个人,我们是不是一个人,我们是一个人,我们是是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是

पार्क्वदेवः सदाकृप्त, महाहार तरंगिताः । नाटयन्ति चरित्रन्ते महाहार तरंगिताः । ॐ हीं श्रीं अर्है ऐं श्री पार्क्वस्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२३॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

## चतुर्विशति जिन पूजा मन्त्र

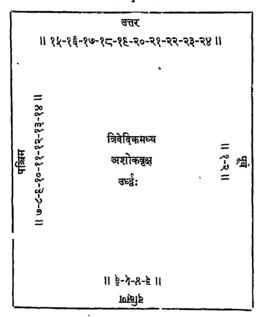
वीरोजिनपतिः पातुः, तत्वानः काञ्चनश्रियं। विभ्रन्नमेषु निस्सीमां तत्वानः काञ्चनःश्रियं। ॐ हीं श्रीं अहें ऐं श्रीपार्श्वस्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२॥। अष्टद्रव्य चढ़ावे।

इसी प्रकार अष्टापद्जी का मण्डल बनवावे जैसे इसमें गिनती दी है वैसे ही भगवानों को पहचानना चाहिये।

चत्तारिद्क्षिखणाये, पन्छिम्ओ अह उत्तराई । दशपुञ्चाए दो अहा, वयं-

मिवंदे चउच्चीसं ॥१॥ पुव्वाइ उसमजियं दिक्खणओ संभवाइ पिन्छमस्पासमाई धम्माई दशउत्तरओ ॥२॥

### अष्टापद\* मण्डल



### अष्टापद<sup>+</sup> मण्डलसामग्री

२४ गोले, २४ ध्वजा, २४ अंगलूहणे, २४ दीपक, २४ फल, २४ मिठाई, धूप, नगदी रुपये, २४ नारियछ। सब वस्तु चौबीस चौबीस होनी चाहिये।

इस अष्टापदजी पर्वत पर भरतचक्रवर्त्ती वा वनाया हुआ मिन्ट्र है और उसमें अपने अपने वर्ण तथा शरीर प्रमाण की प्रतिमाएं विराजमान हैं।

<sup>&</sup>lt;sup>प</sup> गुरु भक्ति और साधमीं भक्ति करे।

(60									`	<b>44</b> ∙	100														
,	१६ दक्षिावस्त्र किस अवस्थामें	अवस्था ३	m,	m	m².	m	. m	w.	w.	m <sup>r</sup>	m <sup>r</sup>		w.	mr	m	mr	w.	m a	w,	8	m² E	m².	8		, 3
i	१८ छंद्रास्थकाछ	१००० वपे	85	% %	* 2	8	<sub>दे</sub> महीने	° w	E.	ĵ.	w.	e oʻ	£ ~	U,	.अ. वर्ष	'n	:	Z 20°	m²	अहोरात्री	११ महीने	- a/	५४ दिन	<b>८४ दि</b> म	१२॥ वर्ष १ पक्ष
रेचय	१७ दीक्षा नगरी	अयोध्या		साबत्थी	अयोध्या	कोशलपुर	कौशाम्बी	बनारस	चन्द्रपुर	काकन्द्री	भिहिलपुर	सिंहपुर	चम्पापुर	कम्मिल्युर	अयोध्या	रत्नपुर	हस्तिनापुर	गजपुर	नागपुर	मिथिला	राजगृह	मिथिला	द्वारिका	बनारस	कुण्डलपुर
तीर्धङ्कर पट्ट परिचय	१६ दीक्षापरिवार	80008	8000	£			ŗ	ž	2	ž	"	ŕ	00	8000	ŕ	±	č	2		300	8000	2	\$	300	
₽ H	१५ होस्सातिथि	चैत्रवदी ८	माघसुद्दी ह	मागेशीपैसदी १५	माघसदी १२	वैशाखसदी ह	कर्तिकवदी १३	ज्येष्टसदी १३	पौषवदी १३	मार्गशीर्पेबदी है	माघबदी १२	फागुनवदी १३	कागुनसुदी १४	माघसदी ४	वैशाखवदी १४	माघसुदी १३	ज्येष्टवदी १४	वैशाखबदी ४	मार्गशीपसुदी ११	मार्गशीषेमुदी ११	क्रीगुनसुदी १२	आपाढ़सुदी ह	आवणमुद्री ह	पौषमुदी ११	मार्गशीपैबद्गी १०
•	१४ दीक्षातप	दो उपवास		2 .	; <b>;</b>	नित्यभक्त							चतुर्थमक्त			ĸ	*			तीन उपवास	ं हो उपबास		.=	तीन डपनास	दो उपनास
	संख्या	۵	~ (3	′ m	rox	د د	<b>/</b> 400	- 9	ນ	· w	° &	· &	£	% %	<u></u>	<u></u>	ش	2	ಜ	ಜ್ಞ	န	8	5	er.	20

		7				=								411						-				`	१ अ
-	२५ ज्ञान ग्रह	नियोह	सप्तर्पण	शास्ति ,	पियाछ	प्रियंग	<b>छ</b> त्ताह्	सिरस नागरख	मछिका	प्रियंग	तंत्रम् (	मृह्य			्र जिस्	दापापण	नन्दा	तिलंग	चम्पक	अशोक	चक्रतक	बकुल	वेहसी	ঘৰ	शालग्रक्ष
	२४ दानदेनेवाले	श्रयांस क्रमार	अहादन	सुरदंत	इन्द्रदत्त	धर्मदत्त	सुमित्र	<b>धर्मिमित्र</b>	पुष्पद्त	पुनर्वसु	मनद	सुनग्द	जंग	विजय	मझ	सोमदत्त	महेन्द्रदत	सोमद्त	अपराजित	विश्वतेन	मृषभसेन	द्गिद्ता	वरदेता	धनद्ता	बहुलदत्त
रेचय	दश् पारणे का तप	१ वर्ष	२ दिन	E OY	E 'O'	r oʻ	e e	s oʻ	r oʻ	e or	E G'	i,	e E	e,	ري ع	2	· *	<b>6</b> ′	E O'	o, 2	ر د د	(X	رم د	e E	2
तिर्धङ्कर पट्ट परिचय	२२ पार्णा	इस्ट्रस पाएणा	खीर			*		R		2	÷		11	2	-		2			E C	•				33
ਜ਼ਿ	२१ दीक्षा स्थान	히	वर्ग	व	히	त्र	;	£		•	ŗ		;	•	-		. 2	<u>`</u>				् वन	्या व्य	ोत बन	डच वन
	ं २१ की	सिद्धार्थ	बिहार	चक्तक	सहभ	सहभा	•		2	•			:			 %		•	:		मीछ	सहश्रार	सहआर	अरूणस्वेत	िनयखण्डच
	२० दीक्षा बन्न	~	~	~	~	~	~	~	~	~	or.	~	∞	~.	œ	~	~	~	<b>~</b>	~	~	~	~	or .	8
	संख्या	~	ır	m	20	¥	w	9	\ \v	w	0~	<b>%</b>	۶۶ د	€	20.	*	an.	2	2	₩	6. 	~~ ~	33	m ;	28

१६२	1	1								जै	न-र	.ब्रस	ार				_						-		
	३१ शिष्यणीनाम	ब्राद्यी साध्वी		इयाम	अधिता	काश्यपि	٠	., ., ., ., ., ., ., ., ., ., ., ., ., .	HHEI	बाह्याते ः	H23811	धारणी "	घरणी	मरा	पद्मा	शिवा	श्रुपि	स्मिनी "	रक्षिता	बन्धमती	पड्टाम्स्	STEEL 3	Single "	מפווליינו אי	अप्पूला ,, चन्द्रनबाळा ,,
	३०गणधरसंख्या	25	בי ש	206	, and a	000	9010	2 4	Y 60	۲ <u>۱</u>	น์า	( uu	40 40	9	0	m	์ แบ กา	, sy	, m	, l	Ĺľ	î, %	0 0	× ;	88
रेचय	२६ शिष्य गणधर नाम	कुडरीक गणधर	सिंहसेन	चार	विश्वनाम	: :	2	2	2	2	<b>:</b> :	गोशम "		٠,	•	अस्ति	चक्रायुध ,,	स्वयम्मु	. H.14	अभिक्षक		* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	, (C)	arefer	सम्बन्धि "
तीर्थङ्कर पट्ट परिचय	२८ ज्ञान तिथि	फागुन वदी ११	पौप सुदो ११	कात्तिक बदी १	पौष सदी १४	चेत्र सदी ११	चेत्र सदी १५	फागन बदी है	फागन बदी ७	कार्तिक सदी 3	पौष सदी १४	माघ बदी ३०	माघ सदी र	पौष सदी है	. नेशाख बद्दो १४	पौष सदी १४	पौष सुदी ह	चैत्र सुदो ३	कार्तिकसुद्दी १२	मार्गशीषेसदी ११	फागन बही १२	मार्गशीषेसती ११	साश्वितवदी ३०	चेत्र बदी प्र	वैशास सुदी १०
ਹਿ	२७ ज्ञान नगरी	प्रयाग नगरी	अयोध्या "	साबस्थी "	अयोध्या "	अयोध्या "	कौशाम्बी "	बनारस	चन्द्रपुरी ,,	काकन्दी	महिल्पुर ,,	सिंहपुर "	चम्पापुर ,,	कम्पिलपुर ,,	अयोध्या "	स्त्रियः "	हस्तिनापुर "	2	मिथिला	मथ्यरा	i i	मथरा "	गिरनार "	बनारस	मृजुवालिकानदी
	२६३ हानतप	३ उपबास	· ·	£	,,	φ.	ŕ	ž.	°.	ů.	*	£	e.	£	\$ 6'	r 'A	E E	:	£	£		بر د	:	, r	. 4
	संख्या	~	U,	w.	20	٠,	av	9	\ <u>'</u>	a	 	~	<u>.</u> چ	e.	20	*	<u>ش</u>	2	2	ಜ್ಞ	8	8	5,	£,	28

											410	1-1,	१स।												८२
	३७ मोक्ष परिवार	१०००० (साधु साध्वी)	0008	5000	•		208	00%	8000	6000			600	000	000	30%	- 000 W	8000	0000	**************************************	5000	5000	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	শ্ব	एकाकी
	३६ देशनिहार	आर्थ-अनार्थ		*	2	2	*				2	2	:		2			•			,	,, अनाय	" अनार्थ	,, अनार्थ	" अनार्थ
त्चय	३५ श्राविकासंख्या	০০০৪১১	०००५८५	हर्म्०००	००००१	०००३४४	०००५०५	४९ ३०००	88. १०००	०००१०४	845000	884000	8 इ इ इ े े े	000868	000874	863000	वृह् ३०००	<b>३</b> ८१०००	र्व १५०००	360000	व्यर्वकाव	385000	श्रृश्हें	व्यहरू	38⊂000
तीर्घङ्कर पट्ट परिचय	३४ शावकसंख्या  ३५ श्राविकासंख्या	340000	38,000	न्ह ३०००	श्र <u>्</u>	50000	र्षह्० ००	उद्देशक	380000	स्रह०००	३८६०००	र्थह०००	2१६०००	300000	205000	308000	180000	१७६ ०००	6000828	४८३०००	১০১১৯১		१६६०००		१५६०००
ਧੀ	३३ साध्यी सख्या	300000	330000	33,000	630000	000067	850000	830000	30000	830000	30000g	803000	80000	80000	5000	00864	40 60 60 60 60 60	0000	60000	00077	0002	88000	80000	35000	36,000
	३२ साधु संख्या	28000	500005	300000	30000	350000	33000	300000	3,4000	300000	80000	00082	05000	\$6000	000	£8000	£ 4000	6,000	, 00000	80008	30000	20000	6000%	र्१ह०००	8,8000
	संत्या	2	. 0.	m	· 30	×	- eto-	9	v	w	<u>۔</u>	88	ć.	e>	88	*	ج ه	200	2	જ	ري م	36	સ્ક	43	જ

,										_ `	য়ৰ	<b>र</b> ल	HI4													
	४३ राशी नाम	धन राशी		1	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	3. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.		<b>40.5.1</b> 5.1 5.1 5.1 5.1 5.1 5.1 5.1 5.1 5.1 5.1		2 h			*		<u>,</u>	is ,,		: : :		· :	1		किन्या		कन्या "
	४२ आयु प्रमाण	•	ळाख बर्प	:			· ·	2 200	:	~		* * * * * *	:	•		३० " " म	% " ° %	**************************************	8 tooo 3, a	: :	: :	: :	: :	: :	: :	: :
रिचय	४१ दीक्षा पर्याय	एक रुक्ष पूर्व			: :	: 2	: ;		: 3	१० हजार पर्वे	२५ हजार पर्व	२१ ल्याच वर्ष	८८ लाख वर्ष	10 miles 10	४४ छोख चन	" 0000039	" 50000 "	34000 "	रहेष्ट्र ,,	28000	48000	, coys	3400	600	, cg	83
तीर्थंङ्गर पट्ट परिचय	४०निर्वाणधास	अष्टापद्	सम्मेतशिखर	<b>.</b>	•			: <b>.</b>	· F	: 1	: 1	R 1	= चस्पायरी			•			**			*		मिरनार गिरी	सम्मेतशिखर	पाचापुरी
10	३६ निर्वाणतिथि	माघ बदी १३	चैत्र सुदी ५	चेत्र सुदी ५	वैशाख सुदी प	मेत्र सुदो ह	मार्गशीर्षेत्रहो ११	फागुन वदी ७	भादवा बद्दी ७	भादवा सुदी ६	वशाख बदी २	आवण बद्दी ३	आपाद सदी १४	आषाढ बद्दी ७	The Hotel	× 0 × 0	ज्यान्य सुद्धा र	ज्यन्त वदा १३	वशास्त्र वदा १	मागशापसुद्री १०	फागुन सुद्दी १२	ज्येष्ठ बद्री ह	वशास्त्र वदा १०	अगपाड़ सुदी ८	श्रावण सुद्दा ८	ं कातिक बद्रा ३०
	३८ मोक्ष संकेखणा	ह् उपवास	एक महीना	*				• •	•			•	•	•			66	· ·	8	<b>R</b>	·	*	*	6	čr c	.1
,	संख्या	~	o,	m	<b>3</b> 0	×	w	9	v	œ	%	<u>۵۰</u>	8	8	200	2 2	Y 41	y 8	2. 2	វិ ទ	× 5	2 6	, c	( E	, <sub>2</sub> ,	

											।पा	4-14	स्मा	''											<u> </u>
	४८ पूर्व भव मे पढ़ हुए शास्त्र	१४ पूर्व पहे	११ अग पढ़	33 33	33 33	. 26 _ 66	**	55 64	25	35 37	50 11		. 60 16	£¢ €¢		" "	24 25	39 37	35 39	6 (6	25 62	., ,,	33	.:	99 99
	४७ पूर्वजन्मनाम	पूर्व वज्जनाम कुमार	विमल नाम कुमार	धर्मसिंह कुमार	सुमित्र ,,	धमेमित्र ,,	सुन्दरवाह् "	दीप बाहु "	युग बाह्र "	लड्ड बाह्रू ,,	दिन्न बाह्र् "	इन्द्र दिन्न "	सुन्दर "	महोधर "	सिंहरथ "	मेघरथ ,,	रूपी ,,	सुन्दर सेन "	नन्द	सिंहिंगिरि ,,	अपळसळ "	राम्ब , "	सुनदूर सेन "	सुनर्ण बाहु "	नन्द ,,
तीर्थङ्कर पट्ट परिचय	४६ शासन यक्षणी	चक्रेश्वरी देवी	अजितबला देवी	दुरितारी देवी	काली "	महाकाली "	श्यामा 3,	शान्ता "	मुक्कदी "	सुतारका »	अशोका "	मानदी "	न्वण्डा ः,	बिद्ति "	मंकुशा "	कन्द्रपति "	निर्वाणी "	बला ,,	यारियो "	धर्माणिप्रया ,,	नरद्ता "	गान्धारी "	आम्बिका "	पद्मावती "	सिद्धायिका "
तीर्थङ्क	84 शासन यक्ष	गोमुख यक्ष	महा यक्ष	त्रिमुख यक्ष	यक्षनायक यक्ष	तुम्बर्	कुसुम "	मातक्ष ,,	विजय "	आजत "	महा	यक्षराज "	कुमार "	पण्मुख "	पाताल "	किन्नर ,,	गर्रह	गस्थवं ,,	यक्षराज "	क्षेत्र ,,	चर्न्या ः,	भुकुदी "	गोमेघ "	पार्ख ,,	ब्रह्मशान्ति "
	४४ नक्षत्र नाम	डत्तरापादा नक्षत्र	मोहिणी नक्षत्र	मृगसिरा	पुनर्वस	मधा	चित्रा	विशाखा	अनुराधा	मूला	पूर्वापाड़ा	श्रवणा	शतभिखा	<b>डन्तराभा</b> द्रपद्	रेवती	गुस्य	भरणी	कृतिका	रेबती	अश्विनी	श्रद्यण	अश्विनी	चित्रा	विशासा	डत्तराफाल्गुनी
	संख्या	~	D'	m	20	×	u.	9	v	w	چ	~	~	£,	200	*	es.	2	2	æ	8	~	er er		38

# शिलान्यास (नींव) भरने की विधि

शुभदिन, शुभघड़ी, शुभमुहूर्त्त, शुभनक्षत्र में पञ्चतीर्थजी की प्रतिमा जहां नींव खोदी गई हो वहां ले जावे और स्नात्रपूजा, दशदिग्पालों तथा नवग्रहों के पट्टों की स्थापना, वलिवाकुलादि का सब कार्य शान्तिपूजा के समान ही करना चाहिये।

जिस कोण में नींव खोदने का मुहूर्त्त हो उस कोण में गड्डा खुदवावे उस गड्डे में पृथ्वी की पूजन करे।

## पृथ्वी पूजन मन्त्र

ॐ पृथिव्ये नमः 'जलंसमर्पयामि' यह कह जल चढ़ावे और इसी मन्त्र से रोली का छींटा, पुष्प धूप, दीपक, मूंग, अक्षत (चावल ), दूव (हरी घास ), गुड़, बतासे, सुपारी आदि चढ़ावे।

एक ताम्बे के लोटे में सवासेर घी, चौखूंटा रुपया, पुरानी मोहर, पञ्चरत की पोटली डाल दे और सोने का सांप (नाग) को नैऋ तकोण में नागिनी को नाग के बायीं तरफ लोटे में बैठावे और लोटे को ढक दे ऊपर से नारियल रख लाल कपड़े से बांध दे।

#### मन्त्र

ॐ पृथ्वी पतये नमः यह मन्त्र पढ़ छोटे को गढ़े में रख दें। जो छोटा रखनेवाला हो उसके हाथ में गुरु मोती की राखी बांध कर तिलक करे और 'ॐ अनन्ताय नमः जलं समर्पयामि' जलका छींटा, गुड़, दूव इसी मन्त्र से चढ़ावे और गढ़े को चारों तरफ से गज गज भरतक भरवा दे खास तौर पर पांच ईंटे शुद्ध जल से साफ कर पूजन करनेवाला रखे। और विसर्जन का सब कार्य पूर्ववत करना चाहिये।

# जल यात्रा महोत्सव विधि

शुभदिन शुभघड़ी शुभनक्षत्र शुभमुहूर्त्त में जल यात्रा के वास्ते गङ्गा

नोट—जहां नदी हो वहां उसी नदी के जल से ईंटे शुद्ध करनी चाहिये। शिलान्यास विधि करानेवाले को भेंट अवश्य देनी चाहिये।

आदि निद्यों पर जाने के लिये निम्नलिखित किया करें पहले मिंडी के कलश ७-९-११-३१-४१ से लेकर १०८ तक लेने चाहिये उन कलशों में अन्दर तथा बाहर रोली के ५ साथिये करें उनके अन्दर ५ सुपारी एक एक रुपया वगैरह और बाहर एक-एक पञ्चरत्न की पोटली एक एक फूल माला मैनफल मरोडफली बांधे उनपर एक एक नारियल रखे पीछे स्नात्रिये भी अपने हाथों में मैनफलमरोडफली बांधे और अंग शब्द करें।

ॐ कल्मष दह दह स्वाहा। इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर चित्त ( मन ) शुद्ध करे फिर अङ्ग रक्षा करे ॐ ह्वीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष ॥१॥ इस मन्त्र को ६ बार पढ़कर पैरों पर हाथ फेरे । सिन्दाणं कटिं रक्ष रक्ष ॥२॥ इस मन्त्र से करघनी पर हाथ फेरे। ॐ हीं णमो आयरियाणं नामिं रक्ष रक्ष ॥३॥ इस मन्त्र से (सूंडी) पर हाथ फेरे । ॐ हीं णमो उवज्झायाणं हृद्यं रक्ष रक्ष ॥श॥ इस मन्त्र से हृदय की रक्षा करे। ॐ हीं णमो छोएसव्यसाहूणं ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष ॥५॥ ७ बार इस मन्त्र से मस्तक पर हाथ फेरे । ॐ ह्वीं एसोपञ्चणमो-कारो शिखां रक्ष रक्ष ॥६॥ ७ बार इस मन्त्र से चोटी पर हाथ फेरे । ॐ हीं सच्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष ॥७॥ ७ बार इस मन्त्र से आसन पर हाथ फेरे। ॐ ह्वीं मंगलाणं च सच्वेसि आत्मचक्षू रक्ष रक्ष ॥८॥ ७ वार इस मन्त्र से हृदय पर हाथ फेरे। ॐ हीं पढमंहवइ मंगलं पर चक्षु रक्ष रक्ष। ७ बार इस मंत्र से चक्षू पर हाथ फेरे फिर पूर्ववत अङ्गरक्षा स्तोत्र पढ़े इसके बाद दशदिग्पाल, नवग्रह, आवाहन, वलिवाकुल आदि सव कार्य शान्ति पूजानुसार करे। और सव स्नात्रिये निम्निलि-लित मन्त्रों से अंग शुद्धी करें।

ॐ हीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा ।।१॥ इस मन्त्रको सात बार पढ़कर दन्तधावन कुळा करने का जल मन्त्रे।

ॐ हीं यक्षसेनाधिपतये नमः ॥२॥ इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर रन्नधावन करे ।

ॐ हीं श्रीं क्वीं कामदेवाधिपति ममाभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा ॥३॥ सात बार इस मन्त्र को पढ़ कर मुख धोवे ।

ॐ हीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्घ जलोपमे पां पां बां बां अशुचिना शुचिर्मवामि स्वाहा ॥४॥ इस मन्त्र को सात बार पढ़कर स्नान करने का जल मन्त्रे और स्नान करें।

ॐ हीं ॐ क्रों नमः ॥५॥ सात बार इस मन्त्र को पढ़ कर घोती उत्तरासन धारण करे ।

ॐ नमो आँ हीं कौं अर्हते नमः इस मन्त्रको सात बार पढ़कर केशर या चन्दन से मस्तक में तिलक करे।

ॐ हीं अवतर २ सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु निवल्गु निवल्गु सुमनसे सोमनसे महुमहुरे ॐ कविल कः क्षः स्वाहा। इस मन्त्रको सात बार पढ़कर मैनफल मरोडफली हाथमें बांधे।

ॐ हीं अहैं भूभुंवः स्वघाय स्वाहा । इस मन्त्र को सात बार पढ़कर मस्तक पर वासक्षेप करे ।

इस प्रकार अपना अङ्ग शुद्ध कर भगवान की प्रतिमा को पालकी या रथ में विराजमान करे और गाजे बाजेंके साथ गङ्गा आदि महानदी पर जावे और वहां जाकर एक थाली में लहंगा, ओढ़नी, चूड़ी का जोड़ा, मेंहदी, मिटाई, फल, फूल, नगदी आदि सब सामग्री सजाकर गङ्गादेवी की पूजन करे । मध्य धारा में जाकर अष्टद्रव्य से निम्न मन्त्र के द्वारा जल की पूजन करे।

क्षीरोद्धि स्वयंमूश्च सरे पद्मा महाहदे । शीता शीतोदकाकुण्डे जलेऽ-स्मिन् सन्निधिं कुरु ॥१॥ गङ्गे च जमुने चैव गोदावरी सरस्वती । कावेरी नर्मदा सिन्धो, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥२॥ इसके बाद निम्न मन्त्र से मन्त्रे हुए कलश से जल निकाले ।

ॐ हीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय से से क्षीं क्षीं ब्लूं ब्लूं हां हीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय हीं जलदेवी देवान अत्रागच्छ अत्रागच्छ स्वाहा ।

इसके बाद इस मन्त्र से जलदेवी को बिल चढ़ावे। ॐ आँ हीं क्रों जलदेवी पूजाविलग्रहाण ग्रहाण खाहा। इसके बाद गङ्गादेवी को अष्टद्रव्य से निम्न मन्त्र पढ़ कर जल चढ़ावे।

१ ॐ हीं क्षीं ब्लूं जलं समर्पयामि स्वाहा। २ ॐ हीं क्षीं ब्लूं चन्दनं समर्पयामि। ३ ॐ हीं क्षीं क्ष्णं पुष्पं समर्पयामि। ४ ॐ हीं क्षीं ब्लूं पूर्पं समर्पयामि। ६ ॐ हीं क्षीं ब्लूं दीपं समर्पयामि। ६ ॐ हीं क्षीं ब्लूं दीपं समर्पयामि। ८ ॐ हीं क्षीं ब्लूं नैदेश समर्पयामि। ८ ॐ हीं क्षीं ब्लूं वस्त्रं समर्पयामि। ८ ॐ हीं क्षीं ब्लूं वस्त्रं समर्पयामि।

इसके बाद जलके सम्पूर्ण कलशों पर नारियल रख ऊपर से लाल कपड़ा बांध देवे और विसर्जनादि सब कार्य पूर्ववत् करे और गाजे वाजे के साथ ही वापिस अखण्ड जल\*धारा देता हुआ मन्दिर में आवे। भगवान के दाहिनी तरफ कलशों को रखे और अधिष्ठायक क्षेत्रपाल (भैरूं) जी की पूजा निम्न मन्त्र से करे।

१ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा जल चढ़ावे।
२ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा चन्दन चढ़ावे।
३ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा पुण्प चढ़ावे।
४ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा तिल चढ़ावे।
५ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा क्षिन्दुर चढ़ावे।
६ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा द्युप चढ़ावे।
७ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा द्युपक चढ़ावे।
८ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षां क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा द्युपक चढ़ावे।

<sup>😤</sup> प्रतिप्ठा अष्टान्हिकादि उत्सवों में ही जलयात्रा निकाली जाती है।

#### जैन-रक्षसार

९ ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षों क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा नैवेच चढ़ावे। १० ॐ हीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षों क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा फल चढ़ावे। और आरती करे पीछे णमुत्थुणं जावंति चेइयाइं जावंत केविसाह नमोऽर्हतिसचा उवसग्गहरं जयवीराय तक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे। यह सब कार्य समाप्त होने पर ज्ञानभक्ति, गुरुभक्ति साधमीं वत्सल या प्रभावना करे।

॥ इति विधि-विभाग ॥



# पूजा-विभाग

### स्नात्र\* पूजा

॥ दोहा ॥

चउतीसे अतिसय जुओ, वचनातिसय संयुत्त । सो परमेसर देखि भवि, सिंहासण संपत्त ॥१।

॥ ढाल ॥

सिंहासण बैठा जग भाण, देखि भविजन गुणमणि खाण। जे दीठे तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण कुसुमाञ्जलि मिलो आदि जिणंदा तोरा चरणकमल चौबीस, पूजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा। ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् आदि जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलि यजामहे स्वाहा।।२॥ चरणों पर टीकी दीजिये भवभवनोलाहो लीजिये। कुसुमाञ्जली चढ़ावे। चरणों पर केशर चढ़ावे।

॥ गाथा ॥

जो णियगुण पज्जवरम्यो, तसु अणुभव एंगत्त । सहपुग्गल आरोपतां, जोति सुरंग णिरत्त ॥३॥

॥ ढाल ॥

जो णिज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी। जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन। कुसुमाझिल मिलो शान्ति जिणन्दा तोरा चरण कमल चौबीस, पूजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद्शान्ति जिनेन्द्राय कुसुमाझिलं यजामहे स्वाहा॥श॥ घुटनों पर टीकी दीजिये भव भवनोलाहो लीजिये। कुसुमा-झली चड़ावे घुटनों पर टीकी देवे।

<sup>&</sup>lt;sup>क प्र</sup>थम हाथ की ह्येली मे पुष्प या कुसुमाञ्चली (पीले चावल) लेवे । विकास कार्यकार के किस्सा के किस्सा के कार्यकार के कार्यकार कार्यकार के किस्सा कार्यकार के कार्यकार के कार्यकार

#### ॥ गाथा ॥

णिम्मल णाण पथास कर, णिम्मल गुण संपण्ण । णिम्मल धम्म वएसकर, सो परमप्पा घण्ण ॥५॥ ॥ ढाल ॥

लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी । परमानन्द तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी

कुसुमाझिल मिलो नेमि जिणंदा तोरा चरण कमल चौबीस, पुजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा। ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् नेमी जिनेन्द्राय कुसुमाझिल यजामहे खाहा ॥६॥ हाथों पर टीकी दीजिये भव भवनो लाहो लीजिये। कुसुमाझली चढ़ावे दोनों हाथों में टीकी देवे। ॥ गाथा॥

> जे सिज्झा सिज्झंति जे, सिज्झसंति अणंत । जसु आलंबन ठवियमण, सो सेवो अरिहंत ॥७॥

#### ॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामें जगत् निहाले । उत्तम साधन मार्ग दिखा ले इन्द्रादिक जस्र चरण पखाले ॥

कुसुमाझिल मिलो पार्च जिणंदा, तोरा चरण कमल चौबीस, पुजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा। ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् पार्ख जिनेन्द्राय कुसुमाझिलं यजामहें स्वाहा ॥८॥ कन्धों पर टीकी दीजिये भवमवनो लाहो लीजिये। कुसुमाझली चढ़ावे और दोनों कन्धों पर टीकी देवे।

#### ॥ गाथा ॥

सम्मद्दिही देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारज उबज्झाय मुणि, जो णिम्मलआघार॥९॥

,这个人,这个人,是一个人,是一个人,是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,这个人,我们是一个人,我们也不是一个人,我们的一个人,我们也不是一个人,我们也不

### ॥ ढाल ॥

चउविह संघे जे मन धार्यो, मोक्ष तणो कारण निरधारचो । विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ।

कुसुमाझिल मिलो वीर जिणंदा तोरा चरण कमल चौबीस, पूजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा। ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् वीर जिनेन्द्राय कुसुमाझिल यजामहे स्वाहा ॥१०॥ मस्तक पर टीकी दीजिये मवभवनो लाहो लीजिये। कुसुमाझिली चढ़ावे और मस्तक पर टीकी देवे।

## ॥ वस्तुछंद ॥

सयल जिनवर सयल जिन वर, निमय मनरंग । कल्लाणकविहि संठिविय करि सुधम्म सुपिवत्त सुन्दर सय इग सत्तरि तित्यंकर इक समय विहरंति महियल चवण समय इगवीस । जिण, जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावे पूजिया करो संघ सुजगीस ॥११॥

一个人,一个人,这个人,我们是我们是一个人,我们是我们的,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们的一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们们们是一个人,我们们们是一个人,我们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们

भव तीजे समिकत गुण रम्या । जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥
तिज इन्द्रिय सुख आसंसयना । किर थानक वीसनी सेवना ॥१२॥ अति
राग प्रशस्त प्रभावता । मनभावना एहवी भावता ॥ सिवजीव करूं
शासन रहसी ॥ ऐसी भावद्या मन उल्लैसी ॥१३॥ लहि परिणाम एहवुं
भलूं ॥ निपजाविय जिनपद निरमलूं ॥ आउ बंध विचे एकभवकरी ।
श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥१४॥ तिहां थी चिवय लहे नरभव उदार ॥ भरते
तिम एरवतेज सार ॥ महाविदेह विजय परधान ॥ मध्यखंडे अवतरे जिन
निधान ॥१५॥

### ॥ ढाल ॥

पुण्यें सुपने ए देखें मनमां हरख विसेसें । गजवर उज्जल सुन्दर ॥ निरमल वृषभ मनोहर ॥१६॥ निरभय केशरी सींह । लखमी अतिहि अ वीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरमल शशि सुकुमाला ॥१७॥ तेज तरण

अति दीपै। इन्द्रध्वजा जगजीपे॥ पूरण कल्ह्या पंडूर। पद्मसरोवर पूर ॥१८॥ इग्यारमें रयणायर। देखे माताजी गुणसायर॥ बारमें भुवन विमान, तेरमें रतन निधान ॥१९॥ अगनिशिखा नीरधूम। देखें माताजी अनुपम ॥ हरखी रायनें माखें ॥ राजा अरथ प्रकासे ॥२०॥जगपित जिनवर सुखकर। होसे पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमसे। सकल मनोरथ फल्से ॥२१॥ (वस्तुछंद) पुण्य उदय २। उपना जिननाह ॥ माता तव रयणी समें। देखि सुपन हरखंत जागीय ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांभलो सामागीय त्रिभुवन तिलक महागुणी ॥ होसे पुत्र निधान, इन्द्रादिक जसु पाय नमी करसे सिद्धि विधान ॥२२॥

### ॥ ढाल ॥

सोहमपति आसन कंपीयो । देई अवधे मन आणंदीयो । मुझ आतम निरमल करण काज ॥ भवजल तारण प्रगट्यो जहाज ॥२३॥ भव अटवी पारग सत्थवाह, केवल नाणाईगुण अगाह । शिव साधन गुणअंकूर जेह ॥ कारण उल्ट्यो आषाि मेह ॥२४॥ हरसें विकसे तब रोमराय । बल्यािदकमां निज तन्ं न माय ॥ सिंहासनथी ऊठ्यो सुरिन्द । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥२५॥ सगअड़पय समुहा आवितत्य । करी अंजली प्रणमिअ मत्य सत्य ॥ मुल भाले ए क्षण आज सार । तियलोय पह्दीठो उदार ॥२६॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव विषयानल तापित तन्त समेव । तसु शान्तिकरण जलधर समान मिध्याविष चूरण गरुद्वान ॥२७॥ ते देव जगत्तारण समत्य । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सणत्य ॥ इम जंपी शक-रतव करेवी । तब देव देवी हरसे सुणेवी ॥२८॥ गावे तब रंभा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नरक्षेत्रे आरज वंसठाम ॥ जिनराज बधे सुर हर्ष धाम ॥२९॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख । जिन शासन मंगल अति विशेष । सुरपित देवादिक हरखसंग । संयम अरथी जननें

उमंग ॥३०॥ शुभवेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साय ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव । बधाई<sup>१</sup> बधाई थई अतीव ॥३१॥

### ॥ ढाल ॥

श्रीतीर्थपितनो कलश मज्जन गाइये सुखकार । नरक्षेत्र मंडण दुह विहंडण ॥ भिवक मन आधार । तिहां रावराणा हर्ष उच्छव ॥ थयो जग जयकार । दिशि कुमिर अविध विशेष जाणी । लह्यो हर्ष अपार ॥३२॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुण छंद । जिन जननी पासे आय पहुंती ॥ गह गहित आनन्द ॥ हे माय तें जिनराज जायो । शुचि वधायो रम्म । अम्हजम्म निम्मल करण कारण ॥ किरस सूईअ कम्म ॥३३॥ तिहां भूमिर सोधन दीप द्रपण बाय बीजणधार । तिहां किरय कदली गेह जिनवर ॥ जनिन मञ्जनकार । वर राखड़ीर जिनपाणि बांधी ॥ दीये इम आसीस । युगकोड़ कोड़ी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥३॥

जगनायकजी त्रिभुवन जगहितकारए परमातमजी चिदानन्द घनसारए॥५॥ उल्लालानी। जिन रयणीजी दश दिश उज्जलता घरे॥ शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्र ते संचरे। जिन जनम्याजी जिन अवसर माता घरे॥ तिण अवसरजी इन्द्रासण पिण थरहरे॥३६॥

### ॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसन इन्द्र चिंते कवण अवसर ए बन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपन्यो ॥ निज सिन्द संपित हेतु जिन वर जाणि भगते ऊमह्यो । विकसन्त वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥३७॥ ॥ ढाल ॥

तब सुरपतिजी घंटानाद्<sup>ध</sup> कराव ए । सुर छोकेजी घोषणा एह

不是,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们就是一个,我们就是

१ फूछ या अक्षत हाथमें लेकर भगवान् के सम्मुख ब्ह्राले फिर तीन फेरी देकर णमुत्थुणं० से सब्वेतिविहेण वंदामि तक पढ़े और दाहिने हाथ में रोळी का साथिया करके मौळी वांथे।

२ जमीन को वस्त्र से शोधन करे, दीपक, शीशा दिखावे, पंखा हिलावे।

३ भगवान् के दाहिने हाथ में मौली वांधे। ४ घण्टा वजावे।

的现在分词,这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们也是这个人,我们也是我们的,我们是这个人,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的 दिरावए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुवो अछे। तसुमगतेजी सुरपति मन्दिर गिर गर्छे ॥३८॥

### ॥ त्रोटक ॥

गर्छे मन्दिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनतणो । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवजां सवि सुरगणां ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देवाधिदेव निहालतां । आपणा पातिक सर्व जासे नाथ चरण पखालतां ॥३९॥

### ॥ ढाल ॥

इस सांभळजी सुरवर कोडि वहु मिळी । जिन वन्दनजी यन्द्रगिरि साहमी चली ॥ साहम पतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वन्दी स्वामी वधाविया ॥४०॥

### ॥ त्रोटक ॥

वधाविया\* जिनवर हुए वहुछे धन्य हूं कृतपुण्य ए । त्रैलोक्यनायक देवदीठो सुझ समो कुण अन्य ए, हे जगत जननी पुत्र तुम्हचे मेरु मजन बरकरी ॥ उच्छंग तुम्हचै विख्य थापिस आतमा पुण्ये भरी ॥४१॥

### ॥ हाल ॥

सुरनायकजी जिन निज कर कमले ठव्या । पांच रूपें जी अतिसय महिमाये स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तव वत्तीस आगल वहे । सुर कांडीजी जिन दरसणने ऊमहे ॥४२॥

### ॥ त्रोटक ॥

सुर कोडकोड़ी नाचती विलनाय शुचि गुण गावती। अप्छरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती । जय जयातूं जिनराज जग गुरु एम दे आशीपए । अम्हत्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ॥ ढाल ॥ ए ॥४३॥

सुरगिरिवरजी पांडुक वनमें चिट्टं दिसे । गिरिसिस्ट परजी सिंहासण

<sup>🗻</sup> दोनों हाथ से चावल या फुल उछाले ।

的现在分词,这时时,这时,我们是是是有不好,不是是的,这一年,这一年,他们,我们就是是我们的,我们就是我们的,我们就是我们,我们就是我们,我们就是我们的,我们就是我们的

सासय बसे ।। तिहां आणीजी शक्तें जिन खोले ग्रह्मा । चउसहेंजी तिहां सुरपति आवी रह्मा ।।४४॥

### ॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपित सर्व भगतें कलका श्रेणि बणाव ए, सिद्धार्थ पसुहा तीर्थ औषिष सर्व वस्तु अणाव ए। अन्चूयपित तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोडिने। जिन मजजनारथ नीर लावो सर्वे सुर कर जोडिने।।४५॥

### ॥ ढाल ॥

आत्म साधन रसी देव कोड़ी हसी, उछुसीने घसी क्षीरसागर दिशो । पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थंजल अमल लेवा भणी ते गई ॥४६॥ जाति अड कलश करि सहसअठोत्तरा, छत्र चामर सिंहा-सणे सुभतरा । उपगरण पुष्पचंगेरि पमुहा सबे, आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥४७॥ तीर्थं जल भरिय करी कलश करि देवता, गावता भावता धर्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम्ह शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥४८॥ समिकतें बीज निज आत्म आरोपता कलश पाणीमिसे भक्ति जल सींचता । मेरिसहरोविर सर्व आव्या वही । शकउच्छङ्ग जिन देखि मन गह गही ॥४९॥

### '।। गाथा ।।

हंहो देवा हंहो देवा अणाई कालो अदिष्टपुट्यो । तिलोयतारणो । तिलोयबंधू । मिन्छत्तमोहविद्धंसणो । अणाई तिण्ण विणासणो ॥ देवाहि देवो दिइन्बो दिइन्बो हिअय कामेहिं ॥५०॥

### ॥ ढाल ॥

एम पभणंति वण भुवन जोईसरा । देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पटिया केवि मित्ताणुगा । केई वररमण वयणेण अइ-उच्छगा ॥५१॥

<sup>\*</sup> यहां से सब स्नात्रियों को पश्चामृत के कछरा छेकर खड़े होना चाहिये।

### ।। वस्तु छन्द् ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश कर जोड़ी सर्व देवगण, लेइ कलरा आदेश पामीय अद्भुत रूप सरूप जुय। कवण एह पुछंति सामिय इन्द्र कहे जगतारणों पारग अम्हपरमेश. दायक धम्मणिहि करिये तस अभिशेष ॥५२॥

### ॥ हाल ॥

पूर्ण कलश् शुचि उदकिन धारा। जिनवर अंगे न्हामें। आतम निरमल भाव करंता वधते शुभ परिणामें । अच्युतादिक सुरपतिमञ्जन लोकपाल लोकंत। सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेख करंत ॥ ५३ ॥ पू॰ ॥

### ॥ गाथा ॥

तव ईसान सुरिंदो, सक्कं पभणेइ करि हु सुप्पसाओ । तुहा अंके महणाहो, खिणमित्तं अहा अप्पेह ॥५४॥ ता सिक्कंदो पभणेई, साहमिय वच्छलंमि बहुलाहो । आणाइ वंतेणं गिण्ह होउ कयत्थामो ॥५५॥

### ॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि । न्हवण<sup>ा</sup> करे प्रभु अंगे । विलेपण पुरुफणिमाला ठवि आ भरण अभंगे ॥ सो॰ ॥५६॥ तब सुरवर बहु जय जय रव कर । निश्चय घरिं आणंद । मोक्ष मार्ग सारथ पति पाम्यो ॥ मांजि सूं भवफंद ॥ सो॰ ॥५७॥ कोडिबत्तीस<sup>‡</sup> सोवन्न वाजंते वरनाद ॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने । जननीने सुप्रसाद ॥ सो॰ ५८ ॥ आणी थापी एम पर्यंपे अहा निसतरिया आज । पुत्र तुम्हारो धणीय हमारो ॥ तारण तरण जहाज ॥५९॥ सो० ॥ मात जतन करि राख़जो एहने तुह्य सुत अह्म आधार । सुरपति भक्ति सहित करे जिन भक्ति उदार ॥६०॥ सो०॥ निय निय कप्प नंदीसर ।

<sup>#</sup> इस जगह से थोड़ी थोड़ी जल धारा चढ़ावे।

<sup>🕆</sup> यहां पूर्णतया भगवान् को पश्चामृत से अभिपेख करावे।

गया सिव निर्कार । कहतां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा, केवल ज्ञान, कल्या-णक इच्छा चित्त मझार ॥ सो॰ ६१॥ खरतरगच्छ जिन आणारंगी,। राजसागर उवज्झाय ॥ ज्ञान घरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरू तणे सुपसाय ॥ सो॰ ६२॥ देवचन्द्र जिन भगतें गायो जनम महोच्छव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल्लस्यो ॥ संघ सकल आणंद ॥ सो॰ ॥६३॥

### ॥ ढाल ॥

इम पूजा भगतें करो । आतम हित काज ॥ तजिय विभव निज भावना । रमतां शिवराज ॥६४॥ इ० ॥ काल अनंते जे हुवा । होसे जेह जिणंद । संपई सीमंघर प्रमु । केवल नाण दिणंद ॥इ०॥ ६५ ॥ जनम महोछव इण परे, श्रावक रुचिवंत । बिरचे जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥६६॥ देवचन्द्र जिन पूजना । करतां भवपार । जिन पिंडमा जिन सारखी । कही सूत्र मझार ॥ इम० ६७ ॥

# अष्ट प्रकारी पूजा

## जल\* पूजा

॥ दोहा ॥ गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार । कुसुमे वासित शुचि जलें, करो जिन सात्र उदार ॥१॥

॥ हाल ॥

मणि कनकादिक अड़विध किर भरि कलस सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहिं दुरित प्रचार ॥ मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान । करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥२॥

॥ छन्द् ॥

हर्ष भरि अपसरावृन्द आवे । स्नात्र करि एम आसीस भावे । जिहां हमें सुरमिरि जंबु दीवो । अमतणा नाथ जीवातिजीवो ॥३॥

<sup>🤟</sup> यह पूजा पढ़ने के वाद जल से स्नान करावे।

4、人名共和人作的书子,"本在建筑的代表的主义的大学的人的人们的一个的人的人们的一个时间,他们的一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个

### ॥ श्लोक ॥

विमल केवलभासनभास्करं, जगति जन्तु महोद्यकारणं। जिनवरं-बहुमान जलौघतः, शुचि मनः स्नपयामि विशुद्धये ॥४॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा सृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिने-न्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥५॥

的,我就是这些一种的人,我们是不是一种,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们也是这一个人,我们是这个人,我们也会会会会会会会 अर्थ-में ग्रद्ध मन से निर्मछ केवछज्ञानरूपी किरणों के उद्योतक और संसारी जीवों के महान् उद्य के कारण जिनेन्द्र भगवान् को बहुत आदर के साथ जलों से अपनी आत्मशुद्धी के लिये स्नान कराता हूं ॥१॥

## चन्द्रन पूजा

॥ दोहा ॥

चन्दन कुंकुमा, सृगमदने घनसार ॥ जिन तनु छेपे तसु टले, मोह सन्ताप विकार ॥१॥

॥ ढाल ॥

सकल सन्ताप निवारण तारण सह भविचित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भविनित्त ॥ निज रूपे उपयोगी धारी जिन गुणगेह । भाव चन्दन सुह भावथी टाले दुरित अछेह ॥२॥

### ॥ चाल ॥

जिन तनु चरचतां सकल नाकी । कहे कुग्रह ऊप्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेपता आज म्हां की । भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥३॥

### ॥ इलोक ॥

सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं । विनय-कृंकुम चन्दन दर्शनैः, सहज तत्त्वविकाशकृतेऽर्चये ॥४॥ ॐ हीं परम परमा-त्में अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय चन्द्रनं यजामहे खाहा ॥५॥

अर्थ-परमतत्व प्रकाश के लिये सम्पूर्ण मोह (अज्ञानरूपी ) अन्धकार के दूर करनेवाले एवं परम शान्त स्वभावसे युक्त जिनेन्द्र भगवानको में विनयरूपी कुहुम (कशर) और दर्शनरूपी चन्दनों से पूजा करता हूं। 

## नवअंगी भाव पूजा

### ॥ दोहा ॥

ऋगां पे टीकी दें-पर उपगारी चरणयुग, अनन्त शक्ति स्वयमेव । प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव ॥१॥ घुटनों पे टीकी दें-जानु पूजा, दूसरी, समाधि भूमिका जान। आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥२॥ हाथों पे टीकी दें-कर पूजा जिनराज की, दिये सम्बन्छरी दान । ते कर मुझ मस्तक ठब्,ं पहुँचे पद निर्वाण ॥३॥ कन्यों पे टीकी दें-भुजवल शक्ति जानके, पूजा करूं चित लाय । रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥४॥ मरतक पे टीकी दें—सिर पूजा जिनराज की, लोकशिरोमणि भाव। चडगति गमन मिटायके, पंचम गति सम भाव ॥५॥ ललाट पे टीकी दें—लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम । वदन कमल वाणी सुनें, पहुंचे निज गुणधाय ॥६॥ कण्ठ पे टीकी दें—कण्ठ पूजा है सातमी, वचनातिशय वृन्द । सप्त भेद पेंयालीस श्रुत, अनुभव रस नो कन्द॥७॥ हृदय पे टीकी दें—हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चित मांह। गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाह ॥८॥ नाभी पे टीकी दें—नाभी मण्डल पूजके, पोड़रा दलको भाव। मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्द घन हरपाव ॥९॥

# पुष्प पूजा

## ॥ दोहा ॥

शतपत्री वर मं।गरा, चम्पक जाइ गुलाव । केतकी दमणो चोलसिरि. पूजो जिन भरि छात्र ॥१॥ 这一个人,这样,我们是我们是不是不是,他们是这样的,这一个人,他们是我们的,他们是我们的,他们是我们的,他们是我们的,他们是我们的是我们的,他们就是我们的,他们也

#### ॥ ढाल ॥

अमल अखिण्डित विकसित मिण्डित, शुम सुमनी घन जाति। लाखीनो टोडर ठवो, आंगी रचो बहुमांति। गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवा भन्य, गुणरागी जड़लागी पुष्प चढ़ावो नन्य ॥२॥

### ॥ चाल ॥

जगधणी पूजतां विविध फूलें, सुरवरा ते गणेंक्षण अमूलें खन्ति धर मानवा जिन पद पूजें, तसुतणा पाप संताप धूजे ॥३॥

### ॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्ध मनोरमैः, विशवचेतनभावसमुद्धवैः । सुपरिणाम प्रसूनघनैर्नवैः, परम तत्त्वमयं हि यजाम्यहं ॥॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमिज्जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥३॥ पुष्प चढ़ावे ।

(अर्थ) — खिले हुए निर्मल पवित्र तथा सुन्दर एवं शुद्ध अन्तः करण के भाव से समुस्पन्त नवीन सुपरिणाम रूप फूल में परमतत्व मयजिनेन्द्र भगवान को चढ़ाता हूं।

## ध्रप पूजा

कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान । मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिनने धूपदान ॥१॥

### ॥ ढाल ॥

धूपघटी जिम महमहे, तिम दहे पातक बृन्द । अरित अनादिनी जावे, पावे मन आनन्द । जे जन पूजे धूपे, भवकूपे फिर तेह । नावे पावे ध्रुवघर, आवे सुक्ख अछेह ॥२॥

### ॥ चाल ॥ ५

जिनघरे वासतां धूप पूरे, मिच्छत्त दुर्गन्धता जाई दृरे । धूप जिम सहज ऊर्द्धगत खभावे, कारिका उच्चगति भाव पावे ॥३॥

### ॥ इलोक ॥

सकलकर्ममहेंघनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं। अशुभ पुद्गल

संगविविज्जितं, जिनपतेः पुरतोऽरतु सुहर्षितः ॥४॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमिञ्जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥४॥ धूप खेवे ।

अर्थ — यह अपित्रत्र वस्तुओं के सम्पर्क से रहित तथा समस्त कर्म रूपी विशास्त्र कान्ठ को जलाने वाला हर्ष के साथ मेरे द्वारा दिया हुआ शुद्ध सम्वर भावरूप जो सुन्दर धूप वह जिनेन्द्र भगवान के आगे खेता हूं।

दीप पूजा

॥ दोहा ॥

मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर । बत्ती सूत्र कसुंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥१॥ ॥ ढाळ ॥

मंगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीत, दीपतणी जिस आलिका मालिका मंगलनीत । दीपतणी शुभज्योती द्योती जिन मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णीनन्द ॥२॥

॥ चाल ॥

जिन गृहे दीप माला प्रकासे, तेहथी तिमिर अज्ञान नासे । निज घटे ज्ञानज्योती विकासे, तेहथी जग तणा भाव भासे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

भविक निर्मलबोध विकाशकं, जिन गृहे शुभदीपकदीपनं । सुगुणराग विशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृतेजनाः ॥५॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमिञ्जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥ दीपक चढावे ।

अर्थ-भक्तजन संगल तथा निमल झानके प्रकाशक सुन्दर गुण एवं सच्चे प्रेमसेयुक्त सुन्दर दीपकका प्रकाश अपने हृदयभावके विकाशके लिये जिनेन्द्र भगवानके मन्दिरमें चढ़ावे।

## अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत पूरसुं, जे जिन आगे सार । खतिक रचतां विस्तरं, निजगुण भर विस्तार ॥१॥

不可以不是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们们

#### ॥ ढाल ॥

उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक अस्तिक मावे रंग । निज सत्ताने सन्मुख उन्मुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिक एह ॥२॥

### ॥ चाल ॥

स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागे। जन्म जरा मरणादि अशुभ भागे, नियत शिव शर्म रहे तासु आगे ॥३॥

## ॥ श्लोक ॥

सकल मंगलकेलि निकेतनं, परम मंगलमावमयं जिनं। श्रयत मन्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथपुरोऽक्षतस्वस्तिकं ॥४॥ ॐ हीं परमपर-मात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमिञ्जने-न्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥६॥ अखण्ड चावल चढ़ावे।

अर्थ--सम्पूर्ण मंगलोंके विहारस्थान तथा परम मंगल भाव जिनेन्द्र भगवान्को सब लोग आश्रय करते हैं यह दिखलाते हुये भन्यजन, हे नाथ आपके आगे कल्याण कारक अक्षत चढ़ावें।

为是,也有了什么,人都是不可能,我们也不是有什么,我们也是不是我们,我们就是我们的,我们就是我们的,我们也是我们的,我们是我们的,我们也是是一个,我们的是一个,我们

# नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृत पूर । धरो नैवेद्य जिन आगले, श्रुधा दोष तसु दूर ॥१॥

॥ ढाल ॥

लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर, सिंह केसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख सींघोड़ा भक्ति व्यक्तन घृतसद्य, करो नैवेद्य जिन आगले जिम मिले सुख अनवद्य ॥२॥

### ॥ चाल ॥

ढोवतां भोज्य परभाव त्यागे, भविजना निज गुणे भोज्य मांगे। अम्हभणो अम्हतणो सरूप भोज्य, आपजो तातजी जगत् पूज्य ॥३॥

### ॥ ३लोक ॥

सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज चेतनभावविलासकं। सरस भोजन नव्यनिवेदनात, परमनिर्नु तिभावमहं स्पृहे ॥४॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमिज्जनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥७॥ मिठाई (पकवान) चढ़ावे।

अर्थ—हे भगवन् सम्पूर्ण अपवित्र जड़ पदार्थों से रहित और स्वाभाविक चेतनभावको दंनेवाले नवीन तथा सरस भोजन आपको निवेदन करनेसे में परम निर्वृति भाव (मोक्ष) को प्राप्त करना चाहता हूं।

## फल\* पूजा

## ॥ दोहा ॥

पक बीजोरूं जिन करें, ठवतां शिवपद देह । सरस मधुर रस फल गिणें, इह जिन भेंट करेड़ ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

医骨骨骨骨 计可记记记录 计数据记录 化对射性原数性 化硫酸盐 解解结束 化硫酸铁矿 不知,我不不不不不不不好,我们这个人,我们这个人,我们这个人,我们是一个时间,一个人,这个人,

श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार, अंजीर बंजीर दाड़िम करणा पट्वीज सफार। मधुर सुखादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वर्ण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवे तेह ॥२॥

### ॥ चाल ॥

फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते छहे सफल पामी । सकल मनुध्येय गतिभेद रंगे, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगे ॥३॥

### ॥ श्लोक ॥

कटुककर्म विपाक विनाशनं, सरसपक्वफलब्रज्जहाँकनं। वहति मोक्ष-फलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिन्धिफलाय महाजनाः ॥१॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय फलं यजामहे खाहा ॥८॥ श्रीफल, सुपारी, नीला फल, प्रमुख चढ़ावे।

अर्थ—हं सज्जनबृन्द आप उत्तम मोक्षपळके प्रमु (मोक्ष के देनेवाले) जिनेन्द्र भगवान् के आगे सिद्धि फल प्राप्त करने के निमित्त कडुवे कर्म के परिणाम फल को नाश करने वाले सरस स्था पर फलों को चहाइये।

श्राप्त पृज्ञा तथा अण्ड प्रकारी पृज्ञा उपाध्याय देवचन्द्रजी महाराज की जनाई हुई है।

,这种是是一种,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是我们的人,我们就会会

# अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

इम अड़विधि जिन पूजना, विरचे जे थिर चित्त । मानवभव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥१॥ ॥ ढाल ॥

अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्रीज्ञानसागर उवझाय। तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥२॥

### ॥ चाल ॥

सम्बत् गुणयुत अचल इन्हु, हर्ष भरी गाइयो श्रीजिनेंदु । तासु फल जुकृत थी सकल प्राणी, लहें ज्ञान उद्योत घन शिव निसाणी ॥३॥

### ॥ श्लोक ॥

इति जिनवरपृन्दं भक्तितः पूजयन्ति सकल गुणनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तत्त्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्षसांख्यं श्रयन्ति ॥श॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय अर्धं यजामहे स्वाहा ॥९॥ चारों कोन में जल की धार देवे ।

अर्थ—इस पूर्वोक्त प्रकार से जो मनुष्य समस्त गुणों के निधान देवचन्द्रजी उनकी तरह आनन्ददायक एवं श्रेष्ठ जिनेन्द्र की पूजन और स्तुति करते हैं तथा प्रतिदिन अनन्त परमतत्व को मनन (विचार) करते हैं वे मोश्ररूपी परम सुख को सहज में ही प्राप्त कर हैने हैं।

## वस्त्र पूजा

शको यथा जिनपतेः सुरशेलच्लाः, सिंहासनोपरि मितरनपनावसाने । दध्यक्षतेः कुसुसचन्दन गन्धधृपैः, कृत्वार्च्चनन्तु विद्धाति सुवरत्रपृजां ॥१॥ तद्वत् श्रावक्वर्ग एप विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पृजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादतः । नीरागस्य निग्जनस्य विजितागतेस्त्रिलं।कीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया॥२॥ ॐ ह्वीं पग्मपग्मात्मने

अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥१०॥ वस्त्र चढ़ावे ।

अर्थ — जिस प्रकार इन्द्र ने सुमेर पर्वत के शिखर के अपर आसन पर स्थित जिनेन्द्र भगवान् को स्नान कराने के पश्चात् दही, अक्षत, गन्धादिक के द्वारा पूजन करके पीछे वस्त्र से पूजा की थी उसी प्रकार यह थावक् वर्ग सदा अपनी शक्ति, भक्ति एवं आदर के साथ बीतराग निरंजन तथा अजात शत्रु त्रिछोक के स्वामी जिनेन्द्र भगवान् की पूजा अपनी तथा अन्यान्य मनुष्यों की मुक्ति एवं क्टेश क्षय की कामना से करें।

and the second of the second o

## नमक\* उतारण पूजा

अह पड़ि भग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं । पड़इ सळूणचण लिज्जियंच, लूणंह्र अवहरंति ॥१॥ पिक्खेविणुं मुह जिण वरह दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्छह भरिय, जलग पइस्सईलूण ॥२॥ लूण उतारिह जिणवरह, तिण्णि पयाहिणि देव । तड़ तड़ शब्द करंतिये, विञ्जाविज्ज-जलेण ॥२॥ जं जेण विज्जव युई, जलेण तं तहइ अत्यसहस्स । जिनरूपा मच्छोणिव, फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स ॥४॥ नमक उतारे ।

### ॥ गाथा ॥

सव्यविं मुणिवइ जलविजल, तंतह भमणइ पास । अहि कयंतस्स णिम्मलओ, णिग्गुण दुन्धि पयास ॥५॥ जलण अणं विणु जलणिहि पास, भरिव कयञ्जल भाविह पास । तिष्णि पयाहिणि दिष्णिय पास, जिम जिय खुटइ भव दुहपास ॥६॥ जल णिम्मल कर कमलि लेविणुं, सुरवर भाविह सुणिवई सेवणुं। पमणई जिणवर तुहपइ सरणं, भय तुहह लन्भइ सिद्धि गमणं॥७॥ नमक जलमें गेरं।

## पुष्पमाला पहरावण पूजा

उण्णय पयय भत्तरस, णियठाणे संठिय कुणंतरस । जिण पासे भिमय जगरस, पिच्छतुह हुयवहे पड्णं ॥१॥ सन्त्रो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंति सन्त्रण्णृण अपासे, जड़स्स भमणं ण संक्रमणं ॥२॥ अच्चंत

<sup>.</sup> यह पट भगवान् पर नमक उतार कर अग्नि में गेरे।

<sup>&</sup>quot; या पट् नमक जल में गैरे।

仍然是我的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们的人,我们是我们的人,我们也是我们的人,我们也是我们的人,我们也是我们的

दुःकरं पिहु, हुयवह णिवड़ेण जड़ेन कयं । आणा सव्वण्णूणं ण कया सुकयत्य मूलमिणं ॥३॥ यहं कहकर माला पहनावे ।

## फूल पूजा

उवणेव मंगलेवो, जिणाण सुह लालि संवलिया। तित्थपवत्तय समई, तियसे विमुक्का कुसुम बुडी ॥१॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले।

# वृहत् नवपद-पूजा

प्रथम श्री अरिहंतपद-पूजा

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी, तासु धरी उर ध्यान । अरिहंतपद पूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥१॥

॥ काव्य ॥

जियंतरागारि जिणेसुणाणे सप्पाि हेराइ समप्पहाणे संदेह संदोहरयं हरंते, झाएहणिच्चंपि जिणेरिहंते ॥२॥ उप्पण्ण सण्णाण महोमयाणं, सप्पाि हेरा सणसंठियाणं । सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, णमो णमो होउ सयाजिणाणं ॥३॥ णमोणंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भाखताय ॥ यया जेहना ध्यानथी सौख्यमाजा, सदा सिद्धचकाय श्रीपालराजा ॥॥ कर्यो कर्म दुर्मम चकचूर जेणे, भला भन्य णवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना मन्य मावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण काले ॥५॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भन्यने हित धरीने । सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥६॥ करचा घातिया कर्म चारे अलगा, भवोषप्रही चार ले जे विलगा ॥ जगत्यंच कल्याणके सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षमामें ॥७॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमूं, घरम धुरन्धर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज बड बीरो जी ॥ ती॰ ८ ॥

### ॥ चाल ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्राति-हारज शोभता, जगजन्तु करुणावन्त भगवन्त भविकजनने थोभता ॥९॥

### ॥ ढाल ॥

(श्रीसीमंघर साहिब आगे)। तीजे मव वर थानक तप करी, जिन बाध्यूं जिन नाम ॥ चउसठ इन्द्रे पूजित जे जिन, कीजे तासु प्रणाम रे भिवका सिद्धचक्र पद बन्दो रे ॥ म० ॥ जिम चिरकाल अनन्दो रे ॥ म० ॥ उपराम रसनो कन्दो रे ॥ भ० ॥ रक्षत्रयीनो वृन्दो रे ॥ भ० ॥ सेवे सुरनर इन्दो रे ॥ भ० सि० १० ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरकें पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन निम अघ टालूं रे ॥ भ० सि० ११ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग उपन्ना, भोग करम खिण जाणी । लेह दीक्षा शिक्षा दिये जगने, ने निमये जिन नाणी रे ॥ भ० सि० १२ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामक सत्थवाह ॥ ओपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन निमये उछाहे रे ॥ भ० सि० ॥ १३ ॥ आठ प्रातिहारज जसु छाजे, पैतीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन निमये प्राणी रे ॥ भ० सि० १४ ॥

12. 平元,只好你不开了你你是有人的你的话,你你们就会会把了他们的的事情,我们就是我们的,我们就是我们的一个,我们们的一个,我们们的一个,我们们的一个,我们们的一个,我

### ॥ ढाल ॥

अरिहन्तपद ध्याता थको, दव्बह गुण पर्याये रे ॥ भेद छेद करि आतमा, अरिहन्त रूपी थायेरे ॥१५॥ वीर जिणेसर उपदिसे, तुम सांभळजो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी॰ १६ ॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमित्सिद्धचकाय अरिहन्तपदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥

# द्वितीय श्री सिद्धपद पूजा

॥ दोहा ॥

दुजी पूजा सिन्ध की, कीजे दिल खुशियाल। अशुम करम दुरे टले, फले मनोरथ माल॥१॥

॥ काव्य॥

दुडिंड कम्मावरणप्पमुक्के, अणंत णाणाइ सिरी चउक्के। समगा लोगगग पयप्प सिन्धे झाएह णिञ्चंपि समत्त सिन्धे ॥२॥ सिन्धाण माणंद रमाल याणं, णमा णमो णंत चउक्कयाणं। सम्मग्ग कम्मक्खय कारगाणं, जम्मंजरा दुक्ख णिवारगाणं ॥३॥ करी आठ कर्म क्षय पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या। निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिन्धाबुद्धा ॥४॥ त्रिभागोन देहा वगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञान-मयजातिवर्णीदिलेशा ॥ सदानन्दसौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनावाध अपून भीवादी स्वरूपा ॥५॥

### ॥ ढाल ॥

सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपोजी । अन्याबाध प्रभु-तामई, आतम संपत भूपो जी स॰ ॥६॥

॥ चाल ॥

जे भूप आतम सहज संपति, राक्ति व्यक्तिपणें करी । स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मनसरहंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥७॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अणकरसी चरम तिभाग विसेस । अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिन्द नमो ते असेस रे ॥भ० ८॥ पूर्व प्रयोगने गति परिणामे, वंधनछेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिन्द प्रणमो रंग रे ॥ भ० सि० ९ ॥ निरमल सिन्दशिलाने ऊपर जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिन्द प्रणमो संत रे ॥ भ० सि० १० ॥

जाणे पिण न सके कही पर गुण, प्राकृत तिम गुण जास । ओपमा बिण नाणी भवमांहे, ते सिद्ध दिओ उल्लास रे॥ म॰ सि॰ ११॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि । आतमराम रमापति सुमरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे॥ म॰ सि॰ १२॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभावजे, केवल दंसण नाणी रे। ते ध्याता निज आतमा, होय सिन्द गुण खाणी रे॥ वी॰ १२॥ सांभ लजो चितलाई रे०। ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिन्द चकाय सिन्दपदे अष्टद्रच्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

# तृतीय श्रीआचार्य पद पूजा

॥ दोहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष । मोहतिमिर दुरे हरे, सुझे भाव अशेष ॥१॥

॥ काच्य ॥

णतंसुहंदेइ पियाणमाया, जंदितिजीवा णिहसूरि पाया, तुम्हाहुते चेव सया सहेह, जंसुक्खसुक्खाइं छहुँ छहेह ॥२॥ सूरीणदृरीकयकुग्गहाणं, णमो णमो सूरिसमप्पहाणं । सदेसणा दाणसमायराणं, अखंड छत्तीस गुणायराणं । नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ़ साम्राज्यभाजा षट् वर्ग-वर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पाछवे सावधाना ॥३॥ भविप्राणिनें देशना देशकाछे, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आछे । जिके शासना धार दिग्दन्तकल्पा, जगत्ते चिरंजीवजो शुद्ध जल्पा ॥४॥

॥ ढाल ॥

आचारज मुनिपति गणी, गुणळत्तीसेधामो जी। चिदानंद रसस्वादता, परभावे निकामोजी आ०॥५॥

॥ चाल ॥

निकाम निरमल शुद्ध चिद्धन, साध्य निज निरधारथी ॥ वरज्ञान

दरशन चरण वीरज, साधना न्यापार थी। भवि जीवबोधक तत्त्वशोधक, सयलगुण सम्पतिधरा। संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तपगुण आदरा ॥६॥ ॥ टाल ॥

पांच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो । ते आचारज निमये तेहसुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥भ० सि०॥७॥ वर छत्तीसगुणेंकरि शोभे, युग-प्रधान जगमोहें । जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ भ० ८ सि० ८॥ नित अप्रमत्त धरम उब एसे निहं विकथा न कषाय । जेहने ते आचारज निमये, अकलूस अमल अमाय रे ॥ भ० सि० ९ ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पिडचोयण बिल जनने । पटधारी गच्छथम्म आचारज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ भ० सि० १० ॥ अत्यिमये जिन सूरज केवल, बन्दी जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटु ते, आचारज चिरंजीवो रे ॥ भ० सि० ११ ॥

#### ॥ ढाल ॥

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ बी॰ १२ ॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीमद्सिद्धचकाय आचार्य पदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥१३॥

## चतुर्थ श्रीउपाध्यायपद पूजा

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना, सुन्दर शोभित गात्र । उवज्झायपद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ॥१॥ ॥ काव्य ॥

सुत्तत्थसंवेगमयेसुएणं, संणीर खीरायमिवस्सुएणं, पीणंति जेते उव-ज्झायराए, झाएह णिच्चंपि कथप्पसाए ॥२॥ सुतत्थ वित्थारणतप्पराणं, णमो णमो वायगकुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं, सव्वप्पणाविजय मच्छ-राणं ॥३॥ नहीं सूरिपिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचका त्यक्त मदमोह माया ॥ विल द्वादशांगादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाने निरुद्धाभिधाने ॥॥॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदने तुल्य सिंहा ॥ गुणीगच्छ-संधारणे स्तम्भपूता, उपाध्याय ते वन्दियेचित्रभृता ॥५॥

### ॥ ढाल ॥

खंतिजुआ, मुत्तिजुआ अञ्जव मद्दवजुत्ताजी ॥ सन्चंसोयअकिंचणा, तवसंयम गुणरत्ताजी खं॰ ॥६॥

### ॥ चाल ॥

जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तिगुप्ता, सुमित सुमता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादइं तत्त्वसाधक, आत्मपर भविजनकरा ॥ भवभीरुसाधन धीरशासन, बहनधोरी सुनिवरा । सिन्दान्तवायनदान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥७॥

#### ॥ ढाल ॥

द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग तासु । सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उछास रे ॥ भ० सि० ८ ॥. अर्थसूत्रने दान-विभागे, आचारज उवज्झाय । भवित्रणे जे छहे शिवसंपद, निमये ते सुपसाये रे ॥ भ० सि० ९ ॥ मूरख शिष्यनीपाये जे प्रभु, पाहण पछुव आणे । ते उवज्झाय सकळजन पूजित, सूत्र अर्थ सिव जाणे रे ॥ भ० सि० १० ॥ राजकुमर सिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, जे उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० सि० ११ ॥ बावनचंदनरस सम वयणे, अहित ताप सब टाले । ते उवज्झाय निमजे जे विल, जिन-शासन उजवाले रे ॥ भ० सि० १२ ॥

### ॥ ढाल ॥

तप सञ्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे। उपाध्याय ते आतमा, जगबंघव जगभ्राता रे॥ वी॰ १३॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय श्री पाठकपदे अप्टड्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

上午,下午,不是,我们后在,你是我们是我们,我们是,他们是他们是他的人的人,我们的人,我们的,我们的人,我们是他们是他们的人,不是一个,不是一个,我们们,我们是

# पंचम श्रीसाधुपद पूजा

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनमणी, सावधान थया जेह । ते मुनिवर पद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥

॥ काव्य ॥

खंतेय दंतेय सुगुत्तिगुत्ते, मुत्तेपसंते गुण जोग जुत्ते । गयपमाए हय-मोहमाए, झाएहणिच्चं मुणिराय पाए ॥२॥ साहूण संसाहियसंजमाणं णमो णमो शुद्धद्यादमाणं । तिगुत्तगुत्ताण समाहियाणं, मुणीण माणंद पयिष्ट-आणं ॥ करे सेवनासूरिवायग गणीनी, करूं वर्णना तेहनीसी मुणीनी । समेता सदा पंचसमितेत्रिगुप्ते, त्रिगुप्ते नहीं काम भोगेषु लिप्ते ॥३॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रन्थटाली, हुई मुक्तिनेयोग चारित्रपाली । शुभष्टाङ्गयोगे रमें चित्तवाली, नमूं साधुने तेह निज पापटाली ॥॥

॥ ढाल ॥

好。"大学,我们是我们是我们是我们是我们是我们是我们是我们是我们的,我们是我们是我们的的,我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们

सकल विषयविष वारिने, निक्कामी निस्संगी जी । भवदव ताप समा-वता, आतम साधन रंगीजी ॥ स॰ ५ ॥

॥ चाल ॥

जे रस्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा। तप तेज दीपे कर्म जीपे नैव छीपे परमणी। मुनिराज करुणासिधु त्रिभुवन बन्दुं प्रणमूं हितभणी।।६॥

॥ ढाल ॥

जिम तरुफूले भमरो वैसे, पीड़ा तसु न उपाय। लेई रस आतम संतोषे, तिम सुनि गोचरी जाय रे॥ भ॰ ७॥ पांच इन्द्रीने जे नित जीते षट्काया प्रतिपाल । संजम सतर प्रकार आराधे, वन्दूं दीन-द्याल रे॥ भ॰ सि॰ ८॥ अठारसहस सीलांगना घोरी, अचल आचार चरित्र । सुनिमहंत जयणायुत बंदी, कीजे जनम पवित्र रे॥ भ॰ सि॰ ९॥ नव विध ब्रह्मगुति जे पालें, वारे विह तपसूरा । एहवा सुनि निमये जो

प्रगटे, पूरव पुण्य अंकूरा रे ॥ भ० सि० १० ॥ सोनातणी परे परीक्षा दीसे. दिन दिन चढ़ते वानें । संयम तप करतां मुनि निमये, देशकाल अनुमाने रे॥ भ० सि० ११॥

### ॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जे नितं रहें, निव हरखे निव सोचे रे। साधु सुधा ते आतमा, स्यूं मूंड़े स्यूं छोचे रे ॥ वी॰ १२ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्ता-नन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचकाय साधू पदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## षष्ट श्री दर्शनपद पूजा

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्वतणी परतीत । ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥१॥

### ॥ काव्य ॥

जंदव्यछकाइ सुसदहाणं, तं दंसणं सव्यगुणपहाणं। कुग्राह बाही उवयंतिजेण, जहाबिसुद्धेण रसायणेण ॥२॥ जिणुत्त तत्ते रह लक्खणस्स, णमो णमो णिम्मल दंसणस्स । मिच्छत्त णासाइ समुग्गमस्स, मूलस्स धम्मस्समहा दुमस्स॥ विपर्या सहो वासनारूपमिथ्या, टले जे अनादी अछेजे कुपण्या । जिनोक्ते हुइ सहजधीशुद्धस्यानं, कहियदर्शनंतेहपरमंनिधानं ॥३॥ बिनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूपं, चरित्रंविचित्रं मवारण्यकूपं । प्रकृतिसातने उपसमें क्षय तेह होवें, तिहांआपरूपेसदा आपजोवें ॥॥॥

### ॥ ढाल ॥

सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरूपीजी । जसु निरधार खमावछे, चेतन गुण जे अरूपी जी स॰ ॥५॥

### ॥ चाल ॥

जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयल पर ईहां टले, निजशुद्ध

प्रगटे अनुभव करुणा उच्छले। बहु मान परिणतवस्तु तत्त्वे अहव सुर-कारण पणे, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्त्वता संपति गिणे ॥६॥ ॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्द्दणा परिणाम । जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्द्र्शन नाम रे॥ म॰ सि॰ ७॥ मल उपराम क्षय उपराम जेह्रथी, जे होइ त्रिविध अमंग । सम्यग्द्र्शन तेह नमीजे, जिनधरमें दृढ़ रंग रे॥ म॰ सि॰ ८॥ पांच बार उपराम लहीजे, क्षयउपरामीय असंख । एक बार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन निमये असंख रे॥ म॰ सि॰ ९॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फल्रियो । सुख निरवाण न जेविण लहिये, समकित द्रशन बल्ओ रे॥ म॰ सि॰ १०॥ सडसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल । समकितद्र्शन ते नित प्रणम्ं शिवपंथनुं अनुकूल रे॥ म॰ सि॰ ११॥

॥ ढाल ॥

समसंवेगादिक गुणा, क्षयउपशम जे आवे रे। दर्शन ते हिज आतमा, स्यूं होय नाम धरावे रे॥ बी॰ १२॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचकाय दर्शन पदे अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा॥

## सप्तम श्री ज्ञानपद पूजा

॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिन्दचक तपमाह । आराधीजे शुभ मनें, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥१॥ ॥ काट्य ॥

णाणं पहाणंजय सिद्ध चक्कं, तत्ताववोहिक्क मयं प्रसिद्धं। धरेह चित्ता-वसहे फुरंतं, माणक्क दीवुव्व तमोहरंतं॥२॥ अण्णाण सम्मोहतमो हरस्स, णमो णमो णाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्स वगारगस्स, सत्ताणसव्वत्यपयास-गस्स । हुई जेह थी ज्ञानशुद्धप्रवोधे, यथावर्णणासे विचित्राविवोधे ॥ तिण-

वस्तुषट्द्रव्यभावा, न होवेविकत्या निजेन्छास्वभावा ॥३॥ हुई जाणिये पंचमत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरुपासथी योग्यता तेहवेदें। वली ज्ञेय हेया उपादेयरूपें, छहेचित्तमां जेम ध्याने प्रदीपें ॥४॥

### ॥ ढाल ॥

भन्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्रकाशक भावें जी। पर्याय घरम अनंतता, भेदा भेद स्वभावें जी ॥ भ० ॥५॥

### ॥ चाल ॥

जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधभाव विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंखता । स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी प्रथम भेद अभेदता. सवि कल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥६॥

### ॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये. ज्ञानते सकल आधार रे ॥ भ० सि० ७ ॥ प्रथम ज्ञान ने पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धान्ते भारुयूं । ज्ञानने वन्दो ज्ञान मनिन्दो, ज्ञानी ये शिवसुख चारुयं रे ॥ भ॰ सि॰ ८ ॥ सकल कियानं मूल ते श्रद्धा, तेहनं मूल जे कहिये। तेह ज्ञान नित नित बन्दीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० सि० ९ ॥ पंच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह । दीपकवर त्रिभुवन उपगारी, विल जिम रवि शशि मेह रे ॥ म० सि० १०॥ लोक उत्थ अधितर्थग्ज्योतिष, वैमानिकने सिन्धी । लोक अलोक प्रगट सब जेहथी. ते ज्ञाने तुझ शुद्धी रे ॥ भ० सि० ११ ॥

### ॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जे कमें छें, क्षय उपशम तसु थाये रे। तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० १२ ॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिन्धचकाय ज्ञानपदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥

张家子,我是这种人,他们也是是这样,他们是是一个人,他们是是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们们是一个人,他们们

# अष्टम श्री चारित्रपद पूजा

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊम्मेद् । पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उच्छेद ॥१॥

॥ काव्य ॥

सुसंबरं मोह णिरोहसारं, पंचप्पयारं विगयाइयारं । मूलोत्तराणेगगुणं पिवत्तं, पालेहिणिच्चं पिहु सच्चिरित्तं ॥२॥ आराहिया खंडिअ सिक्क्यिस्स, णमो णमो संजम वीरियरस । सन्मावणासंग विविद्विअस्स, णिञ्चाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ विल ज्ञानफलते धिरये सुरंगे, निरासंसता द्वार रोधे प्रसंगे ॥ भवांमोधि संतारणे यान तुल्यं, धरूं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥३॥ हुई जासु महिमा थकी रंक राजा, विल द्वाद्शांगी भणी होय ताजा । विल-पापरूपोपि निप्पाप थायें, थई सिद्ध ते कर्मने पार जायें ॥१॥

॥ ढाल ॥

चारित्रगुण विल विल नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी। पर रमणीय-पणो टले, सकल सिद्धि अनुकूलो जी।।चा॰ ५॥

॥ चाल ॥

प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्त्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनिन्द सेपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्जल काम कसमल चूर्णता ॥६॥

॥ ढाल ॥

देशिवरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यितने अभिराम। ते चारित्र जगत् जयवन्तो कीजे तासु प्रणामे रे॥ भ० सि० ७॥ तृण परे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त पिण विरयो, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते मैं मन-माहि धिरयो रे॥ भ० सि० ८॥ हुआ रंक पणे जे आदर, पूजत इन्द-निरन्द ॥ अशरण शरण चरण ते वाहूं, विरओ ज्ञान आनन्दे रे॥ भ० सि० ९॥ बार मास पर्यायें जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमियें। शुक्क शकल

,"是什么,这个人,我们是什么,我们是一个人,我们是一个人,我们是我们,我们是我们的,我们是我们,我们是我们的,我们是我们的,我们就会我们就是我们的,我们就是我们的,我们 अभिजात्य ते ऊपरि, ते चारित्रनें निमये रे ॥ भ॰ सि॰ १० ॥ चयते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्ते भारुयुं, ते वन्दू गुणगेह रे॥ भ० सि० ११॥

॥ हाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा, निजस्बभावमांहि रमतो रे । छेश्या शुद्ध अलंकरचो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी॰ १२ ॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचकाय चारित्रपदे अप्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे खाहा ।

## नवम श्री तपपद पूजा

॥ दोहा ॥

क्रमकाप्ठ प्रति जालवा, परतिख अगिन समान। ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥१॥ क्रमखपावे चीकणा, भाव मंगल तप जाण। अडतालीस लन्बी ऊपजे. नमो नमो तप जगभाण ॥२॥

### ॥ कान्य ॥

वज्झं तहामितर भेयमेयं, कयाइं दुम्भेय कुकुम्मभेयं दुक्खक्खयत्यं. कय पावणासं तवंतवेहा गमियं णिरासं ॥३॥ एयाइं जेकेविणवप्पयाइं. आराहियं तिष्ठ फलप्पयाइं, लहंति ते सुक्ख परंपराणं, सिरिसिरिपालणरेस रुव्य ॥४॥ कम्महुमोन्मूलण कुंजरस्स, णमो णमो तिन्वतवोयरस्स । अणेग लडीण णिवंधणस्स, दुसञ्झअत्थाणय साहणस्स ॥५॥ इय णवपयसिद्धि लहि. वीज्ञासिमर्द्धं पयड़िय सरवग्गं हींतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि-पीढावयारं, तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥६॥ त्रिकालिक पण कर्मकपाय टाले, निकाचितपणें वाधितां तेह वाले। कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यंतर दुभेदे, क्षमायुक्ति निहेत दुर्ध्यान छेदे ॥७॥ होइ जासु महिमा यकी लिच्च सिन्धि, अवांलकमणे कर्म आवर्ण शुद्धिः। तपो तेह तप जे महा-नंद हेते. होइ सिद्धि सीमंतिनी निज संकेते ॥८॥ इम नव पद ध्यावं परम

आनंद पावें, नव भव शिव जावें देव नर भवजन्म पावें । ज्ञानविमल गुण गावें सिद्धचक प्रभावें, सवि दुरित सकावें विश्व जयकार पावें ॥९॥

### ॥ ढाल ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यन्तर भेदें जी । आतम सत्ता एकता, पर परणति उच्छेदें जी इ० ॥१०॥

### ॥ चाल ॥

5.说e. · 可谓是是从果实是不是不是不是不是不是,我们是不是是是是是是是是是是是是

उच्छेद कर्म अनादि संतित जेह सिन्धिपणों वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अकियता करें। अंतरमुह्रत तत्त्व साधे सर्व संबरता करी, निज आत्मसत्ता प्रगट भावें करो तपगुण आदरी ॥११॥

### ॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंडलं, चड निक्षेप प्रमाणें जी । सात नयें जे आदरें, सम्यग्ज्ञाने जाणें जी इ॰ ॥१२॥

### ॥ चाल ॥

निरधारसेती गुणे गुणनो करइ जे बहुमान ए। जसु करण ईहा तत्त्व रमणें, थाये निरमल ध्यान ए॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरें, अक्षय अनंत महंत चिद्धन परम आनंदता वरे॥१३॥

### ॥ कलश ॥

इम सयल सुस्तकर गुणपुरंदर सिद्धचकपदावली, सविलिद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मन रली । उवज्झाय वर श्रीराजसागर ज्ञान-धर्म सुराजता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचन्द्र सुशोभता ॥१४॥

### ॥ ढाल ॥

जाणंता त्रिहुं ज्ञान संयुत ते भवमुगति जिनंद । जेह आदरें कर्मख-पेवा, ते तपसुरतरु कंदें रे ।। भ॰ सि॰ १५ ॥ करम निकाचित पिण क्षय जायं, क्षमा सिहत जे करतां, ते तप निमये तेह दीपावे, जिनशासन उजनंता रे ॥ भ॰ सि॰ १६ ॥ आमोसही पमुहा बहु लिंद, होवे जासु प्रभावें । अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटे, निमये ते तप भावें रे ॥ भ॰

The second secon

मि॰ १७॥ फल शिव मुख मोट्ट्रं मुरनरवर संपति जेहन्ं फूले। ते तप मुर तर सिखो बंद. शम मकरंद अमूले रे॥ भ॰ सि॰ १८॥ सर्ब्य मंगलमाहिं पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथे। ते तप पद त्रिकरणें नित-निमयें, वरसहाय शिवपंथें रे॥ भ॰ सि॰ १९॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनों, हुओ तनमय श्रीपाल। सुजस विलासे चौथे खंडे, एह इग्यारमी हालें रे॥ भ॰ सि॰ २०॥

### ॥ हाल ॥

इच्छारोधन संवरी, परणित समता योगे रे। तप ते एहिज आतमा, वरने निजगुण भोगे रे॥ वी० २१॥ आगमनो आगमतणो, भाव ते जाणो साचो रे। आतमभावें थिर हुओ, परभावे मतराचो रे॥ वी० २२॥ अन्य सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋष्टि दाखी रे। तिम नवपद ऋष्टि जाणजो, आतमगम छ साखी रे॥ वी० २३॥ योग असंख्य छ जिन कृषा, नवपद मुख्य ते जाणो रे। एहतणे अवछंविने आतम ध्यान प्रमाणो रे॥ वी० २४॥ ढाछ वारमी एहवी, चौथे खंडे प्री रे। वाणी वाचक जसनणी कोइ नहीं रहीय अधृरी रे॥ वी० २५॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्नानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् निरुचकाय नपपदे अन्य दृत्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

## सत्रह भेदी पूजा प्रारम्भ

॥ दोहा ॥

भाव भन्दे भगवंतनी, पृजा सतर प्रकार। परिसय कीवी हीपदी, अंग छटे, अधिकार॥१॥ ॥ राग सरपदी ॥

#### ॥ गाथा ॥

ण्हवण विलेवण वत्थयुगं, गंधारहणं च पुप्तरोहणयं। मालारोहण वण्णयं, चुण्ण पडागय आभरणे ॥३॥ मालकला वसुंघरं, पुष्कं पगरं च अह गुण मंगलयं। धूव उखेवो गीययं, नहं वञ्जं तहा भणियं ॥४॥

### ॥ दोहा ॥

सतर सुविध पूजापवरं, ज्ञाता अंगमझार । द्रुपद्सुता द्रौपदी परे, करिये विधि विस्तार ॥५॥

### ॥ राग देशाख ॥

पूर्व मुख सावनं, किर दशन पावनं अहत घोती घरी उचित मानी। विहित मुख कोशकं, क्षीरगंघोदकं, सुभृत मणिकलश किर विविध वानी। निमिव जिनपुंगवं लोम हस्तेनवं, मार्जनं किरय वा वारि वारि। भणिय कुसुमाञ्जली, कलशिविध मन रली, नवित जिन इंद्र जिम तिम आगरी।।६॥

## ॥ दोहा ॥

परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति सोपान । धरम रूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥७॥ पहिली पूजा साचवे, श्रावक शुभ परिणाम । शुचि पखाल तनु जिनतणी, करे सुकृत हितकाम॥८॥

## ॥ राग सारंग तथा मल्हार ॥

पूजा सतर प्रकारी, सुणियो मेरे जिणवर की। परमानंद अति छल्यो री सुधारस, तपत बुझी मेरे तन की॥ पू॰ ९॥ प्रभुकुं विलोकि निम जनत प्रमार्जित, करत पखाल सुचिधार विनकी। न्हवण प्रथम निजन्यजन पुलावत, पंककुं वरष जैसे घन घनकी॥ पू॰ १०॥ तरिण तरुण भव सिंघु तरणकी, मंजरी संपद्भल वरधनकी। शिवपुर पंथ दिखावण दीपी, धूमरी आपद वेल मरदनकी॥ पू॰ ११॥ सकल कुशल रंग

मिल्योरी सुमतिसंग, जागी सुदिश शुभ मेरे दिनकी । कहे साधु कीरति सारंग भरि करतां, आस फली मेरे मनकी ।। पू॰ १२॥

# हितीय विलेपन\* पूजा

॥ राग रामगिरी ॥

गात्र लूहें जिन मनरंगसुं रे देवा ॥ गा० ॥ सखरसुधूपित वाससूं हां हो रे देवा वाससूं । गंध कसायसुं मेलिये, ए नंदन चंदन चंद मेलिये हां हो रे देवा ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीये, कर लीये रयणपिंगाणी कचोलीये हां हो रे देवा क० ॥१॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे हां हो रे देवा । माल कंठ उदरंतरे । दुख हरे हां हो रे देवा । सुख करे तिलक नवे अंग कीजिए । दुजी पूजा अनुसरे हां हो रे देवा अ० । श्रावक हरि विरचे जिम सुरगिरे । तिम करे हां हो रे देवा । जिण पर जन मन रंजीए ॥२॥

॥ राग छिलतमां दोहा ॥

करहुं विलेपन सुख सदन, श्रीजिनचंद शरीर । तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोद्घि तीर ॥३॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग । चित्त खेद सवि उपसमें, सुखमें समरसि रंग ॥४॥ ॥ राग बिलावल ॥

विलेपन कीजे जिनवर अंगे । जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि॰ ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्षकर्दम, अगरमिश्रित मनरंगे ॥ वि॰ ५ ॥ पग जानू कर खंधे सिर, मालकंठ उर उदरंतर संगे । विलुपित अध मेरो करत विलेपन, तपत बुझित जिम अंगे ॥ वि॰ ६ ॥ नवअंग नव नव तिलक करत ही, मिलत नवे निधि चंगे, कहे साधु तन शुचिकर सुललित पूजा । जैसे गंग तरंगे ॥ वि॰ ७ ॥

我们是我们的是一个,我们的一个,我们的我们的我们的我们的我们的,我们的我们的,我们的我们的,我们的我们的,我们的我们的,我们们的我们的,我们们的我们的,我们们的人

<sup>🕆</sup> इस पूजा के बाद प्रतिमाजी पर जरासी जल का धारा देवे।

<sup>ः</sup> दृसरा स्नात्रियां केशर की कटोरी छेकर खड़ा रहे।

केशर चढ़ावे।

了好好,我就是我们的人,我们也是我们的,我们就是我们的,我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们们的人

## तृतीय वस्त्रयुगळ पूजा

॥ दोहा ॥ वसनयुगल उज्बल विमल, आरोपे जिन अंग । लाम ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥१॥

॥ राग गोडी ॥

कमल कोमलघने, चंदने चर्चिते, सुगंध गंधे अधिवासिया ए । कन-कमंडित हिये लालपञ्जवश्रुचि, वसनयुग कंत अतिवासिया ए ॥२॥ जिनप उत्तम अंगे, सुविधि शको यथा, करिय पहिरावणी ढोइये ए । पाप लूहण अंगे, लूहणुं देवने, वस्त्र युगपुंज मल धोइये ए ॥३॥

### ॥ रागवैराडी ॥

देव दुष्य जुग पूजा बन्यो है जगत गुरु, देव दुष्य हर अब इतनो मागूं रे। तूंहिज सब ही हित तूंहिज सुगति दाता, तिण नाम प्रभु चरणे लागूं रे॥ दे॰ ४॥ कहे साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देव दुष्य मिंश देहुं उत्तम बागूं रे। श्रावक अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सविराडे दुख संशय धुरमभागूं रे॥ दे॰ ५॥

# चतुर्थ वासक्षेप पूजा

।। राग गोडी दोहा ॥ पूज चतुर्थी इण परे, सुमति वधारे वास । कुमति कुगति दूरे हरे, दहे मोह दल पास ॥१॥

### ॥ राग सारंग ॥

हांहो रे देवा बावन चंदन घिस कुंकुमा चूरण विधि विरचे वासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोल तणो अधिवास ए ॥ हांहो रे देवा ॥ वास दशोदिशि वासते, पूजे जिन अंग उवंग ए ॥ हांहो रे देवा ॥ लालि भुवन अधिवासिया, अनुगामिकी सरम अभंगू ए ॥ श

## ॥ राग गोडी तथा पूर्वी ॥

मेरे प्रभुजी की आणंद, पूजो में ॥ वास भुवन मोह्यो सब छोए, संपदा भेलकी ॥ पूजा॰ ३ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा विजय, देवा तत्ता थेई । अप्परिमत्त गुण तोरा चरण नेवाकि ॥ पूजा॰ ॥ ४ ॥ कुंकुम चन्दनवासे, पूजीये जिनराज तत्ता थेई । चातुर्गति दुखें गौरी चातुर्थी धनिक ॥ पूजा० ॥ ५ ॥

# पंचम पुष्पारोहण पूजा

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार। प्रभुपूजा ए पंचमी. पंचम गति दातार ॥ १॥

॥ राग कामोद ॥

चंपक केतिक मालति ए. कुंद किरण मुच कुंद। सोवन जाइ जूईका, बिउलसिरि अरविंद् ॥ २ ॥ जिनवर चरण उवरि धर ए. मुक्-लित कुसुम अनेक। शिव रमणीवाहवासे वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ ३ ॥

### ॥ राग कानडा ॥

सोहेरी माई वरषे मन मोहेरी माई वरणे। विविध जिनचरणें ॥ सो० ॥ विकसी हसिअ जंपे साहिबक्ं, राखि प्रभु हम सरणे ॥ सो॰ ४ ॥ पंचम पूजा कुसुम मुकलितकी, पंचविषय दुख हरणे ॥ सो॰ ॥ कहें साधुकीरति भगति भगवंतकी, भविक नरा सुख करणे ॥सो०५॥

## षष्ट मालारोहण\* पूजा

॥ राग आशावरी दोहा ॥

छडी पूजा ए छती, महा सुरिम पुष्फमाल । गुण गृंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥१॥

<sup>🛪</sup> माला चढावे।

# तृतीय वस्त्रयुगल पूजा

॥ दोहा ॥ वसनयुगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग । लाम ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥१॥

॥ राग गोडी ॥

कमल कोमलघने, चंदने चिंते, सुगंध गंधे अधिवासिया ए। कन-कमंडित हिये लालपछ्ठवशुचि, वसनयुग कंत अतिवासिया ए॥२॥ जिनप उत्तम अंगे, सुविधि शको यथा, करिय पहिरावणी ढोइये ए। पाप लूहण अंगे, लूहणुं देवने, वस्न युगपुंज मल धोइये ए॥३॥

॥ रागवैराडी ॥

देव दुष्य जुग पूजा बन्यो है जगत गुरु, देव दुष्य हर अब इतनो मागूं रे। तूंहिज सब ही हित तूंहिज सुगति दाता, तिण नाम प्रभु चरणे लागूं रे॥ दे॰ ४॥ कहे साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देव दुष्य मिंश देहुं उत्तम बागूं रे। श्रावक अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सिवराडे दुख संशय धुरम भागूं रे॥ दे॰ ५॥

# चतुर्थ वासक्षेप पूजा

।। राग गोडी दोहा ॥ पूज चतुर्थी इण परे, सुमित वधारे वास । कुमित कुगित दूरे हरे, दहे मोह दल पास ॥१॥

॥ राग सारंग ॥

हांहो रे देवा बावन चंदन घिस कुंकुमा चूरण विधि विरचे वासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोल तणो अधिवासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ वास दशोदिशि वासते, पूजे जिन अंग उवंग ए ॥ हांहो रे देवा ॥ लाछि भुवन अधिवासिया, अनुगामिकी सरम अभंगू ए ॥ श।

### ॥ राग गोडी तथा पूर्वी ॥

मेरे प्रभुजी की आणंद, पूजो में ।। वास भुवन मोह्यो सब छोए, संपदा भेछकी ॥ पूजा ३ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा विजय, देवा तत्ता थेई । अप्परमित्त गुण तोरा चरण नेवाकि ॥ पूजा ॥ ४ ॥ कुंकुम चन्दनवासे, पूजीये जिनराज तत्ता थेई । चातुर्गति दुखें गौरी चातुर्थी धनकि ॥ पूजा ॥ ५ ॥

# पंचम पुष्पारोहण पूजा

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार । प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचम गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद् ॥

चंपक केतिक मालित ए, कुंद किरण मुच कुंद । सोवन जाइ जूईका, विउलसिरि अरविंद ॥ २ ॥ जिनवर चरण उविर धर ए, मुकु-लित कुसुम अनेक । शिव रमणीवाहवासे वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ ३ ॥

### ॥ राग कानडा ॥

सोहेरी माई वरणे मन मोहेरी माई वरणे। विविध कुसुम जिनचरणें ॥ सो० ॥ विकसी हिसअ जंपे साहिबकूं, राखि प्रभु हम सरणे ॥ सो० ॥ पंचम पूजा कुसुम मुकल्टितकी, पंचविषय दुख हरणे ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरित भगति भगवंतकी, भविक नरासुख करणे ॥सो०॥

# षष्ट मालारोहण" पूजा

॥ राग आशावरी दोहा ॥

छटी पूजा ए छती, महा सुरभि पुष्फमाल । गुण गृंधी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥१॥

भाना घटावे।

## ॥ राग रामगीरी गुजराती ॥

आहो नाग पुन्नाग मंदार नव मालिका, आहो मिल्लकासोग पारिषे कली ए। आहो भाला, मरुक दमणक आहो बकुल तिलक वासंतिका, आहो लाल गुलाल पाडल भेली ए ॥२॥ आहो जासुमणि मोगरा बेउला मालित, आहो पंच वरणे गूंथी मालती ए॥ आहो माल जिन कंठ पीठे ठवी लहलहे, आहो जाणी संताप सहु पालती ए॥३॥

### ॥ राग आशावरी ॥

देखी दामा कंठ जिन अधिक एघित नंद, चकोरकुं देखि देखि देखि जिम चंद । पंचिवध वरण रची कुसुमाकी जैसी, रयणाविल सुहमंद ॥ दे॰ ३ ॥ छट्टी रे तोडर पूजा तब डार घूजे, सब अरिजयणेंहारे छंद । कहे साधुकीरित सकल आशा सुख, भविक भगति जे जिण वंद ॥ दे॰ ४ ॥

# सप्तम वर्ण पूजा\*

॥ दोहा ॥ केतिक चंपक केवडा, शोभे तेम सुगात । चाढो जिम छढतां हुवे, सातिमये सुखशात ॥१॥ ॥ राग केदारा गौडी ॥ कुंकुमे चर्चिते विविध पंच बरणके, कुसुमसुं हारे अइहो । कुंन्द गुल्लाबसूं चंपको दमणकूं, जाससूं ए । हारे अइहो सातमी पूजमें अंग, आलंकिये ए । अंग आलंक मिश माननी मुगति, आलिंगिये ए ॥१॥

॥ राग भैरवी ॥

पंच वरणकी आंगी राचि, अह वो कुसुमकी जाती ॥ पं॰ ॥ कुन्द मुचकुन्द गुलाब शिरोमणि, कर करणी सोवन है जाती ॥पं॰ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंश जूई बेउल है वाती ॥ पं॰ ॥ पारिघ चरण कलार मंदारो, विन पट कूल बनी है भाती ॥ पं॰ ३ ॥ सुरनर किन्नर रमणिअ गाती, मैरव कुगति व्रत है दाती ॥ पं॰ ४ ॥

**<sup>%</sup> फूल चढ़ावे** ।

## अष्टम गंधवटी पूजा

॥ दोहा ॥

सुख देवा दु:ख मेटवा. यही आपकी वान । मुझ गरीबकी वीनती. सुन लीजे भगवान ॥१॥ अपनी अपनी गरज को, अरज करें सब कोय। मैं गरजी अरजी करूं, कि जैसी मरजी होय ॥२॥ शान्तिनाथ साता करो. तन मन करो अनन्द। आप तो पूरणब्रह्म हो, जगत उजागर सिद्धाचल समर्खं सदा, सोरठ देश मझार । पामी करी, वन्दुं बारम्बार ॥॥ मानव भव शतुञ्जय सरिखा गिरवरूं, ऋषभ सरीखा देव। पुण्डरीक सरिखा गणधरूं, विल विल वन्दू हेव ॥५॥ श्री केशरियानाथजी, तुम हो मोटा आनधरूं शिर ताहरे. करूं तुम्हारी सेव ॥६॥ यह चार शरणे जगतमें, और न शरणा कोय। इनको तो ध्याते थके. मन वंछित फल होय ॥७॥ दया मुगति तरु वेलडी, रोपी आदि जिनन्द। कुलमण्डण भई, सींची सर्व जिनन्द ॥८॥ हत्या जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजन्त । जे जिनवर पूज्या नहीं, पर घर काम करन्त ॥९॥ मोगरो, सोवन वाडी चम्पो क्रपलियांह । पास जिनेसर पूजसां, पांचू अंगुलियांह ॥१०॥ जिवडा जिनवर पूजिये, पूजाना फल होय। परजानमें. आण नलोपे पूरव विदेह विराजते, श्री सीमंधर सेवा करस्यां प्रभुतणी, नित ਚਨ

不是一个下下的时候是我的不是我的一个时候我们的我们就是我们的不是我们,我就是我们的我们的,我们就是一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个

是是,我们是这种,我们是这种,他们是这种,他们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们就是这种,我们是这种,我们就是这种,我们就是这种,我们就是这种,这

फूला केरे बाग में, बैठा श्री जिनराज। ज्यूं तारा में चन्द्रमा, त्यूं शोभें महाराज ॥१३॥ जग में तीरथ दो वडा, शत्रुक्षय गिरनार। इण गिरि ऋषभ समोसरचा, उणगिरि नेमकुमार॥१॥। भावे जिनवर पूजिये. भावे दीजे भावें भावना भाविये. भावें केवल ज्ञान ॥१५॥ मोहनी मूरत पास की, मो मन रही छुभाय। ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय॥१६॥ प्रभु नाम की औषधी से, सब संकट टल जाय। रोग शोक दारिद्र दु:ख, दर्शन से भग जाय ॥१७॥ राजमती गिरवर चढी, वन्दन नेम कुमार। स्वामी अजह न वावड़े, मो मन प्राण अधार ॥१८॥ धन ते साई पंखिया, बसे जो गढ़ गिरनार। चूंच भरे फल फूल सूं, चाढ़े नेम कुमार ॥१९॥ श्री केशरिया नाथ कूं, नमन करूं चितलाय। ऋष्टि बुद्धिमोहि दीजिये, दिन दिन अधिक सवाय ॥२०॥ श्री केशरिया नाथ के, केशर हंडा कीच। मरुदेवा के लाडले, बसें पहाड़ां बीच ॥२१॥ घंदोकर धन जोडियो, लाखां ऊपर कोड। मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड ॥२२॥ प्रभुजीका नाम कल्याण है, गुरुका वचन कल्याण । सकल सभा कल्याण है, जब प्रगटीराग कल्याण ॥२३॥ फूल इतर घी दृधमें, तिलमें तेल छिपाय। ज्यों चेतन जड़ कर्म संग, बंधे ममत दुख पाय ॥२४॥ ज्यों क्वास फल फूल में, दही दृध में घी। शरीर में जी ॥२५॥ पावक काप्ठ पाषाण में, ज्यों

ए सम्यक्त्वी जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
अन्तरगति न्यारा रहे, जिम धाय खिलावे वाल ॥२६॥
सोरठ राग सोहामणी, मुखे न मेली जाय ।
ड्यूंड्यूं रात गलंतियां, त्यूंत्यूं मीठी थाय ॥२०॥
सोरठ थारा देशमें, गढ मोटो गिरनार ।
नित उठ यादव वांद्र्यां, खामी नेम कुमार ॥२८॥
जो हूंती चंपो बिरख, वा गिरनार पहार ।
फूलन हार गुंथावती, चढती नेम कुमार ॥२९॥
रे संसारी प्राणिया, चढ्यो न गढ गिरनार ।
जैनधर्म पायो नहीं, गयो जमारो हार ॥३०॥
धन वा राणी राजे मती, धन वे नेम कुमार ।
शील संयमता आद्री, पहोतां भवजल पार ॥३१॥
दया गुणोंकी वेलडी, द्या गुणोंकी खान ।
अनंत जीव मुगतें गया, दया तणे परमान ॥३२॥

### ॥ दोहा सोरठो रागमां ॥

सुमती पूजा आठमी, अगर सेलारस सार । लाबोजिन तनु भावशूं, गंधवटी घनसार ॥३३॥

### ॥ राग सोरठ ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन वस वन सारोजी। आछो सुरमि शिखर मृग नामिनो जी देवा, चुन्न रोहण अधिकारोजी ॥ आ॰ ॥३४॥ वस्तु सुगंघ जब मोरियोजी देवा, अशुम करम चूरीजेजी ॥ आ॰ ॥ अंगण - सुरतरु मोरियोजी देवा, तब कुमती जन खीजे जी तब सुमती जन रीझें जी ॥३६॥

### ॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंघे ॥ जि॰ ॥ पू॰ ॥ गंघवटी घनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांघे ॥ पू॰ ॥३८॥ आठमी पूजा अगर सेव्हा रस, लावे जिन तनु रागे। धार कपूर भाव घन बरषत, सामेरी मित जागे ॥ पूर्व ॥३८॥

### नवम ध्वज\* पूजा

॥ दोहा ॥

मोहन ध्वज घर मस्तके, सूहव गीत समूल ॥ दीजे तीन प्रदक्षिणा, नवमी पूज अमूल ॥१॥

॥ वस्तु छंद ॥

सहस जोयण सहस जोयण हेममय दंड, युतपताक पंचे वरण। घुम घुमंत घूबरीय वाजे, मृदु समीर लहके गयण॥ जाण कुमति दल सयल भाजे, सुरपति जिम बिरचे ध्वजा ए, नवमी पूज सुरंग ॥ तिण परे श्रावक ध्वज वहन, आपे दान अभंग ॥२॥

### ॥ राग नद्दनारायण ॥

的,即是这种人,我们是是一个人,我们是一个人,我们是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人

जिनराजको ध्वज मोहना, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि॰ ॥ मोहन सुगुरु अधिवासियो ए करि पंच सबद त्रिप्रदक्षिणा। सधव वधू शिरसोहणा ॥ जि॰ २ ॥ मांति वसन पंच वरण बन्यो री, विघ करि ध्वज को रोहणां । साधु भणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणां खोहणां ॥ शिव मंदिरकूं अधिरोहणा, जन मोह्यो नट्टनारायणा ॥ जि॰ ४ ॥

### दशम आभरण पूजा

॥ राग केदारामां दोहा ॥

दशमी पूजा आभरण की, रचना यथा अनेक । सुरपति प्रमु.अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥१॥ शिर सोहे जिनवर तणे, रयण मुकुट झलकंत । तिलक भाल अंगद मुजा, श्रवण कुंडल अतिकंत ॥२॥

॥ राग गुंडमव्हार ॥

पांच पिरोजा नीलू उसणीया, मोती माणक लाल उसणीया, हीरा सोहे रे, मन मोहे रे धुनी खुनीपुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक

\* जिन गुरुजी को वासक्षेप करने के लिये बुलाये उनको भेंटना अवस्य देना चाहिये।

,这一个一个一个一个,我们是一个人的,我们是一个人的,我们是一个人的,我们是一个人的,我们是一个人的,我们是一个人的,我们的,我们的是一个人的,我们们的是一个人的,这一个人的,这一个人的,我们们的是一个人的,我们们的是一个人的,我们们们的是一个人的,我们们们的一个人的,我们们们们的一个人的,我们们们们们们的一个人的,我们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们

अंजना, मन मोहे रे ॥३॥ मौलि मुकुट रयणे जड्यो, काने कुण्डल हांरे। अति जुगते जुड्यो, उरहारू रे मनवारू रे ॥४॥ माल तिलक बांहे अंगदा आभरण दशमी पूजा मुदा । सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥५॥

### ॥ राग केदारो ॥

प्रमु शिर सोहे, मुकुट मिण रयणे जड़्यो । अंगद बाहु तिलक भालस्थल, एहु नीको कौन घड़्यो ॥ प्र॰ ६ ॥ श्रवण कुण्डल शिशा तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसें अलंकयों । दुख केदार चमर सिंहासन, छत्र शिर उविर धर्न्यो, अलंकृत उचित वरन्यो ॥७॥

### एकादश पुष्पगृह पूजा

॥ दोहा ॥

的分类,就是我们的对话,我就是自己的对话,一个我们一个有效,有效的话是我就是一般的话,我们的话,我们的话,我们的一个人,我们也不是我们的话,我们的话,我们也会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会

फूलघरो अति शोभतो, फूंदे लहके फूल। महके परिमल महमहा, ग्यारमी पूजा अमूल॥१॥

### ॥ राग रामगिरी ॥

कोज अंकोल रायबेलि नव मालिका, कुन्द मुचकुन्द वर विचिकलूं हारे अइहों वि ए ॥ तिलक दमणक दलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिघ पाडलूं हां रे अ पा ए ॥ प्रमुख कुसुमें रचें त्रिभुवनकूं रुचे, कुसुम गेहे विच तोरणूं, हां रे अ तो ए ॥ गुच्छ चन्द्रोद्यं झुम्बका उण्णयं, जालिका गोख चित चोरणूं हां रे अ चो ए ॥ रा॥

### ॥ राग रामगिरी ॥

मेरें। मन मोह्यां माई, आणंद झिलें। असत उसत दाम वघरी मनोहर, देखत तब, सब दुरित खिलें॥ फू॰ ३॥ कुसुम मंडप यंभगुच्छ चन्द्रोदय, कोरणि चारु विनाण सजें। ग्यारमी पूज भणी है गमगिरि विवृध विमाण, जैसे तिपुरभजें॥ फू॰ ४॥

# द्यादश पुष्पवर्षा पूजा

॥ दोहा मल्हार रागां ॥ वरषे बारमी पूजमें, कुसुम बदलिया फूल। हरण ताप सवि छोकको, जानु समा बहु मूछ ॥१॥ ॥ राग् भीम मल्हार देशी कडखानी ॥

मेघ वरसें भरी, पुष्फ बाद्छ करी, जानु परिमाण करि कुसुम पगरं। पंच वरणे बन्यो, विकच अनुक्रम चण्यो, अधोवृन्ते नहीं पीड पसरं॥ मे॰२॥ वास महके मिले, भमर भमरी मिले, सरस रसरंग तिण दुख निवारी। जिनप आगे करे, सुरप जिम सुख वरे, बारमी पूज तिण पर अगारी॥मे०३॥

॥ राग भीम मल्हार ॥

पुष्फ वाद्लीया वरसे सुसमां॥ अहो पु०॥ योजन अशुचिहर वरसे गंघोदक, मनोहर जानु समां ॥ पु॰ ४॥ गमन आगमनकी पीर नहीं तसु, इह जिनको अतिशय सुगुणे । गूंजत गूंजत मधुकर इमप भणे, मधुर वचन जिन गुण थूणे ॥ पु॰ ५ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करे, तसु पीडा नहीं सुमणे सुमणे । समवसरण पंचवरण अधोवृंत, विबुध रचे सुमणा सुसमा ॥ पु॰ ६ ॥ बारमी पूज भविक तिम करे, कुसुम विकसि हसि उच्चरे । तसु भीम बंघण अघरा हुवे, जे करहिं जे जिन नमें ॥पु००॥

## त्रयोद्श अष्ट मंगलीक पूजा

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥ तेरमी पूजा अवसरे, मंगल अप्ट विधान । युगति रचे सुमते सही, परमानन्द निधान ॥१॥

॥ राग बसंत ॥

अतुल विमल मिला, अखंड गुणें मिला सालि रजत तणा तंदुला ए । इलवण समाजकं, विघ पंच वर्णकं, चन्द्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ मेलि मंगल लिखे, सयल मंगल आखे, जिनप आगे सुथानक धरे ए। तेरमी पूजाविधि तेरमी मन मेरे, अप्ट मंगल अप्ट सिद्धि करे ए ॥अ०२॥ ব্লি নিমুক্তিসক্ষেত্র হৈ প্রেক্টিরিকিস ক্ষেত্র হার্টিরিকি ক্ষেত্র একন সংগ্রাহীক্ষরত ১৩০ ব ১ জির ৮৮ বংগে, হ রসপ । १ । সক্ষা । ব

#### ॥ राग कल्याण ॥

हो तेरी पूजा बणी है रसमें । अप्ट मंगल लिखे, कुशल निधान, तेज तरणके रसमें ॥ हां० ३॥ दर्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पूर्ण कुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें। वर्धमान स्वरितक पूजा मंगल्टिक, आनंद कल्याण स्बरसमें ॥ हां॰ ४॥

## चतुर्दश धूप पूजा

॥ दोहा ॥

गंधवटी सृगमद अगर, सेव्हारस घनसार। धरि प्रसु आगल धूपणा, चउदमि अरचासार ॥१॥

॥ राग वेलावल ॥

कृष्णागर कपूरचूर, सोगंध चम्पे पूर। कुंदरुक सेव्हारस सार, गंधवटी घनसार ॥२॥गंधवटी घनसार चंदन मृगमदा रस भेलिये, श्रीवास घूप दशांग, अंबर सुरिम बहु द्रच्य मेलिये ॥ वेरुलिय दंड कनक मंडित, धूपदाणुं कर धरे । भववृत्ति घूप करंति भोगं, रोग सोग अशुभ हरे ।।३॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

在这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们是这个人,我们就是这个人,我们的人 我们是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是我们的,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们就是这个人,我们 सब अरित मथनमुदार धूपं, करित गंघ रसाल रे।। देवा कर०।। धाम धूमा बळीय धूसर, कलुष पातिक गाल रे ॥ देवा, स॰ ४ ॥ ऊर्ध्व-गति सूचंति भविकूं, मघ मघे करनाल रे ॥ दे० ॥ चौदमी वामांग पूजा, दिये रयण विशाल रे । आरती मंगल माल रे, मालवी गौडी ताल रे ॥स॰५॥

### पंचद्श गीत पूजा

॥ दोहा ॥

कंठ भले आलाप करी, गावो जिनगुण गीत । भावो अधिकी भावना, पनरिम पूजा प्रीत ॥१॥ ॥ श्री राग ॥

आर्यावृत्तं ॥ यद्वदुनंतकेवल. मणंत फल मस्ति जैन

गुणवर्णनानवाद्येमीत्रामापालयेर्युक्तं ॥२॥ सप्त स्वरसंगीतेः. स्वानेर्जयनादि तालकरणेश्च ॥ चंचुरचारी चारी, गीनं गानं सुपीयूपं ॥३॥

### ॥ श्री राग ॥

जिनगुण गानं, श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि॰ ॥१॥ विशुध कुमार कुमिर आलापे, मुरज उपांग नाद जिनतं । पाट प्रवंध धुओप्रतिमानं, आयित छंद मुरति सुमितं ॥५॥ शन्द्रसमान रुच्यां त्रिभुवनकूं, सुर नर गावे जिन चिरतं । सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं, पनरिम पूज हरे दुरितं ॥ जि॰ ॥६॥

## षोडश नृत्य पूजा

॥ दोहा ॥

कर जोडी नाटक करें, सजि सुन्दर सिणगार । भव नाटक तेनिव भमें, सीलमी पृजा सार ॥१॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥

काव्यं । शार्द्ध त्रविक्रीडित वृत्तं । भावा दिप्पिमणासुचार चरणा, संपुण्ण चंदाणणा, सिप्पिम्मासम रूप वेस वयसो, मत्तेभ कुम्भत्यणा त्यव-ण्या सगुणापि करस रवई, गगाइ आलावणा कुम्मारी कुमरावि जैन पुरअं। णच्चंति सिंगारणा ॥२॥

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अहसयं कुमार कुमरीओ सृरियाभेणं देवेणं संदिहा रंग मंडवे पविद्वा जिण णमंता गायंता वायंता णञ्चंतेत्ति ॥२॥ ॥ रागनह त्रिगुण ॥

नार्चित कुमार कुमरी, हागडदि तत्ता थेइया । हागडदि हागइदिकि, थोंगि थोंगिनि, मुखे तत्ता थेइया ॥ ना॰ ॥४॥ वेणु वीणा मरज बाजे, सीलही सिणगार साजे, तन नननन्नानेइया, घणण पणण पृषर घमके, रण ण ण ण प्या णेइया ॥ना॰ ॥५॥ क संनि कंचुंकी तरुणी, मंजरी झंकार करणी, मोर्सित कुमरिया, हस्तकृत हाबादि भावे, दुर्द्द्वि भगरूपा ॥ ना॰ ॥६॥ सोलमी नाटक पूजा, सुरियामे रावण्ण कीनी । तत्ता थेइया, जिनप भगते भविक लीणा, आणंद तत्ता थेइया ॥ ना॰॥७॥

# सप्तदश वाजित्र पूजा

॥ दोहा ॥

ततघन सुखिरे आनघे, वाजित्र चउविध वाय । भगत भली भगवंतनी, सतरमी ए सुखदाय ॥१॥ सुरमद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवजाए पणवो । सुरणारि तूरो, पमणेइ तूं णंद जिणणाह ॥२॥

॥ राग मधु माधवी ॥

तूं नंदिआनंदि बोलत नंदी, चरण कमल जन्तु जगत्रय वंदी। ज्ञान निरमल बावन मुख वेदी, तिवलि बोले रंग अतिही आनंदी॥ तुं० ॥३॥ भेरी गयण वजंती, कुमति त्यजंती । सेवे जैन जयणाएवंती, जैन शासन, जयवंत नदंती । उदयसिंह परिपरिय वदन्ती ॥ तू॰ ॥४॥ सेव भविक मधु माधव फेरी, भवना फेरी णप्पभणेती, कहे साधु सतरमी पूजा वाजित्र सब, मंगल मधुर ध्वनिकरहकहंति ॥ तू॰ ॥५॥

### कलग

### ॥ राग धन्या श्री ॥

了,在这种,我们就是这个是是是是我们的,我们就是我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是一个,我们的是是我们的,我们们们的,我们们 भवि तूं भण गुण, जिनके सब दिन, तेज तरिण मुख राजे । कवित शतक आठे युणत शकस्तव, युय युय रंग हम छाजे ॥ भ० ॥६॥ अणिहरुपुर शांति शिवसुख दाई, नवनिधि सिद्ध आवाजे । सतर सुपूज सुविधि श्रावककी भणी मैं भगति हित काजे ॥ भ० ॥७॥ श्री जिनचन्द्र-सूरि खरतर पित, धरम बचन तसु राजे । संवत् सोल्ड अढार श्रावण धूरि, पंचमी दिवस समाजे ॥ म॰ ॥८॥ दया कलश गुरु अमरमाणिक्यवर, तासु पसाय सुविधि हुइ गाजे। कहे साधुः कीरति करत जिन संस्तव, शिवलीला सख साजे ॥ भ० ॥९॥

यह पृज्ञा साधु कीर्तिजीकी वनाई हुई है और सम्बन् १६१८ श्रावण वदी १ को वनी है।

जलका कलश, केशर, अंगल्हण, वासक्षेप, फूल अनेक वर्णके, फ्लोंकी माला, धूप की गोली, (गन्धवटी) ध्वजा<sup>१</sup>, आभूषण, फूलघरा, फूलों की बरसा और गुलाबजल गुलाबपास में भर कर छिड़के, अष्टमङ्गलीक, धूप इसके बाद पूर्ववत अष्ट<sup>२</sup> प्रकारी पूजा करे।

# विंदातिस्थानकः पूजा श्री जिनेन्द्रपद पूजा

॥ दोंहा ॥

सुख संपति दायक सदा, जगनायक जिनचंद ।
विधन हरण मंगल करण, नमो नामि नृप नंद ॥१॥
लोकालोक प्रकाशिका, जिनवाणी चित धार ।
विश्वातिपद पूजन तणो, कहर्स्यूं विधि विस्तार ॥२॥
जिनवर अंगे भाखिया, तप जप विविध प्रकार ।
विश्वातिपद तप सारिखूं, अपर न कोइ उदार ॥३॥
दान शील तप जप किया, माव बिना फल हीन ।
जैसे भोजन लवण बिन, नहीं सरस गुण पीन ॥१॥
जे भवियण सेवें सदा, मावे स्थानक बीश ।
ते तीर्थंकर पद लहे, वंदे सुरनर ईश ॥५॥

#### ॥ ढाल ॥

श्री अरिहंत पद सिन्धपद ध्यावो, प्रवचन आचारिज गुण गावो । स्थविर पंचम पद पुनरुवझाया, तपसि नाण दंसण मन भाया ॥६॥

१ एक खास से तीन णमोकार गिनकर सधवा स्त्रियां ध्वजा शिर पर रख कर गाजेवाजे के साथ तीन फेरी देवें और पुजारी शंख बजाता रहे। (मरुस्थळ) मारवाड़ देश में इस ध्वजा को प्रहण कर सधवा स्त्रियां बड़े समारोह के साथ नगर में घुमाती हैं। २ पृष्ठ ३०६

३ जलका कलरा, अंगलूहण, केशरकी कटोरी, फूल, धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य, फल, नारियल, हरएक पूजा में जपर्युक्त सामग्री के साथ कम से कम एक रूपया अवस्य होना चाहिये।

张孙人作用的"可能的"的影响的"我们,你们就从我们是一个这种情况,这种情况,是我们有对现代的"我们"的"我们,我们是我们的"我们是我们是我们的"我们的",我们们是我们的"我们的",我们们们的"我们们"

### ॥ उलालो ॥

并可以此种的人,我们是我们是一个人,我们是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们是我们的人,我们就会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会会 मनभाव विनया वश्यकामल, शील किरिया जाणिये। तप विविध उत्तम पात्र, वेया वच समाधि वालाणिये । हित कर अपूरव नाण संग्रह, घरो मन सुजगीश ए । श्रुत भक्ति पुनि तीरथ प्रभावन, एह थानक वीश ए ॥७॥

#### ॥ ढाल ॥

एह थानक बीश जग जयकारा, जपतां लहिये जिनपद सारा। करम निकंदे विसवा बीहों, भाख्यां जगतारक जगदीहों ॥८॥

### ॥ उलालो ॥

जगदीश प्रथम, जिणंद जगगुरु, चरम जिनवरजी मुदा । भव तीसरे पद सकल सेवी, लही जिनपति संपदा ॥ बाबीश जिनवर, सकल सुसकर, इंद्र जसु गुणगाइये । इग दोय त्रिण, सहु पद जपीने, तीर्थपति पद पाइये ॥९॥

### ॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक पद सदा, भिजये तप करि शुद्ध । अति निर्मल शुभ योगता, करिके तसु गुण लुद्ध ॥१०॥ विमल पीठ त्रिक तदुपरे, ठविये जिनवर वीश । पूजन उपगरण मेलि करी, अरचीजे - सुजगीश ॥११॥ ्षेक एक ए पद तणो, द्रव्य पूज<sup>्</sup>परकार। पंच अष्टविध जाणिये, सत्तर इगविस सार ॥१२॥ अष्ट जातिना कलश करि, विमल जले भरपूर । पूजो भवियण सह मुदा, होय सकल दुख दूर ।।१३।। सोहे सह परमेष्ठिमें, जिनवरपद अभिराम। वेद निक्षेप सुमरिये, वंघते शुभ परिणाम ॥१८॥

> ॥ राग देशाख ॥ ( पूर्वमुखसावनं, )

परमपद दायकं, लायकं जिनपदं विमलभानं।

数据的方式,这些人,这些人,这么是是这种的方式,这是是是这种,他们是是这种,他们是是这种,他们是这种,他们是是这种,他们是是这种,他们是有一个,我们是这一个,他们

चतुरधिकतीस अतिशय अमल बारगुण वचन पणतीस गुणमणिनिधानं ॥ हां रे अइयो १५ ॥ सुख करण जिन चरण पद्मसेवित सदा,
अमर सुर असुर नर हृदयहारी । एह जिनवर तणी आण पूरण सदा, दाम
जिम जगतजन शिरसिधारी ॥ हां रे अइयो १६ ॥ जिनप पद दरस, पारस
फरसते हुवे । प्रगट निज रूप, परिणित विभामं । तिजय बहिरात्म, गिरिसारता भवि लहे, अनुपमं आत्मकांचन प्रकाशं ॥ हां रे अइयो १७ ॥ हुवई
जिनराज पद, जाप रिव किरणतें, तुरत बहु दुरित भव तिमिर नाशं ।
धनचिदानन्द वरकंदधन भवि लहे, तीर्थंकर चरण कमलाविलासं ॥ हां रे अइयो
१८ ॥ वर विषुध मणि लही काच लघु सकलकों, प्रहण करवा कवण कर
पसारे । तिम लही जिन चरण शरण शुभ योगसे, अपर मुरसरण कुण
हृदय धारे ॥१९॥ प्रभु तणे पंच कल्याण केरे दिने, प्रगट तिहुं लोकमें हुयो
उजेरो । भविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, बांधियो गोत्र जिनराज केरो ॥२०॥ जेह त्रिण काल नित नमें जिन हरषसूं, तेह भवजल
तरे जनम त्रीजे । अधिक भव यदि करे तदिप निश्चय करे, सप्त बलि
अष्ट भव करीय सीझे ॥२१॥

### ॥ काव्य ॥

णमो णंतविण्णाण, सदंसणाणं सयाणंदिया सेस जंत्राणाणं ॥ भवां-भोज वित्येयणे वारणाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥२२॥ ॐ हीं श्री अर्हद्म्यो नमः ।

## द्वितीय श्री सिद्धपद पूजा

॥ दोहा ॥

तनु त्रिमागके घटनतें, घन अवगाहन जास । विमल नाण दंसण कियो, लोकालोक प्रकाश ॥१॥ अविनाशी अमृत अचल, पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज,नमो सिद्ध जयकार ॥२॥

,他们是这种的人,我们的一个,这一个的人,我们的一个,我们们的人,我们们的一个,我们们的一个,我们们的一个,我们们们的一个,我们们的一个,我们的一个,我们的一个,

### ॥ राग सोरठ ॥

### ( कुंदिकरण शिश उजलो रे देवा, )

अतुभव परमानंद सूं रे बाला, परमातम पद बन्दो रे, करम निकंदो वंदिने रे बाला, लिह जिन पद चिर नंदो रे ॥३॥ गगन पएसंतर बली रे बाला, समयान्तर अणफरसी रे इच्य सगुण परजायना रे बाला, एक समय बिद दरसी रे ॥३॥ एक समय ऋजुगित करी रे बाला, भए परमपद गामी रे । भांगे सादि अनंतमा रे बाला, निरुपाधिक सुखधामी रे ॥५॥ अखिल करममल परिहरी रे बाला, सिद्ध सकल सुखकारी रे । विमल चिदानन्द घनथया रे बाला, बर इकतीस गुणधारी रे ॥६॥ उत्पन्नता बिल विगमता रे बाला, अवता त्रिपदी संगे रे । प्रभुमें अनंत चतुष्कता रे बाला, सोहे समकम मंगे रे ॥७॥ पनर मेदें ए सिद्ध थया रे बाला, सहजानंद सक्ष्पी रे । परम ज्योतिमें परिणम्या रे बाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥८॥ जिनवर पिण प्रणमें सदा रे बाला, एहने दिक्षा अवसरें रे । तिण प्रभुपद गुणमालिका रे बाला, कंठे धरिये सुमरें रे ॥९॥ इस्तिपाल भिव भगतिसूं रे बाला, सिद्ध परमपद भिजने रे । पद श्रीजिन हर्षे लहाो रे बाला, परगुण परणित तिजने रे ॥१०॥

#### ॥ काव्य ॥

छोगमाभागोपरि संठियाणं, बुद्धाणसिद्धाण मणिदियाणं। णिस्सेस कम्मक्खय कारगाणं। णमोसया मंगल धारगाणं॥११॥ ॐ ह्वीं श्री सिद्धेभ्यो नमः।

### तृतीय प्रवचनपद पूजा

॥ दोहा ॥

पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्यूं न भमो संसार।
गमो कुगति परिणमनता, दमो करण भयकार॥१॥
जैसें जलधर वृष्टि तें अखिल फलद विकसाय।
तैसें प्रवचन भक्तितें, शुभ परिणति हुलसाय॥२॥

,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们是一个人,我们们的一个人,我们们的一个人,我们们的一个人,我们们的一个人,我们们的

### ॥ श्री राग ॥

### ( जिनगुणगानं श्रुत अमृतं, )

प्रवचन ध्यानं सुखकरणं, परिहरिये सहु विषय विकारं, करिये प्रवचन आचरणं ॥ प्र॰ ३ ॥ सप्त भंगी भूषित ए प्रवचन, स्यादवाद सुद्राभरणं । सप्त नयात्मक गुणमणि आगर, बोधबीज उतपित करणं ॥ प्र॰ ४ ॥ जैसे अमृत पान करणतें, हवइ सकल विष संहरणं । तैसे प्रवचन अमृत पाने, कुमित हलाहल प्रविशरणं ॥ प्र॰ ५ ॥ प्रवचनको आदेय ए किहये, सकलसंघ तसु अधिकरणं । तिण ए संघ चतुर्विध प्रवचन, ए पद अखिल कलुष हरणं ॥ प्र॰ ६ ॥ यदि भविजन तुम ए चाहतु हो, सुगित रमणिजन वशकरणं । करण तीन इक करि तप करियें, प्रवचन पद समरण धरणं ॥ प्र॰ ७ ॥ जिनवरजी पण ए तीरथने, प्रणमे मध्यसमवसरणं । भवजल तारण तरिण समानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र॰ ८ ॥ जिम भरतेसर संघ भगित करि, लहियो पुण्यफला चरणं । चक्री पद अनुमिव विल शिवपद, लीध करिय करम निर्ज-रणं ॥ प्र॰ ९ ॥ नरपित संभवजिन हरषे करि, आराधो प्रवचन चरणं । करम निकंदी थयो जगदीसर, जिन परमा उर आभरणं ॥ प्र॰ १० ॥

### ॥ काव्य ॥

अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स, दुक्खंघयारुग्गदिवायरस्स । अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संघचउव्विहस्स ॥११॥ॐ ह्वीं श्रीप्रवचनाय नमः।

## चतुर्थ आचार्यपद पूजा

॥ दोहा ॥

पद् चतुर्थ निमये सदा, स्रीसर महाराज । सोहम जंबू सारिखा, सकल साधु सरताज ॥१॥ सारण बारण चोयणा, पडिचोयण करतार । प्रवचनकज विकसायवा, सहस किरण अवतार ॥२॥

### ॥ राग रामगिरी ॥ ( गात्र लूहें, ए )

आचारज पद ध्याइये रे वाला, तासु विमल गुण गाइये। पाइये हांहो रे वाला पाइये। जिनपति पद जगिश्तर तिलो रे॥ आ॰ ३॥ जिन शासन उजवालतां रे वाला, सकलजीव प्रतिपालतां॥ पालतां हां॰॥ पालतां चरण करण मग चालतां रे॥ आ॰ ४॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुरनर जन मन मोहता॥ मोहता हांहो॰॥ भवियणने पिडबोहता रे॥ आ॰ ५॥ पंचाचार विराजता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता॥ गाजता हांहो॰॥ सूरि सकल सिर छाजता रे॥ आ॰ ६॥ उपदेशामृत वरसता रे वाला, दुरित ताप सहु निरसतां॥ निरसतां हांहो॰॥ परमातम पद फरसतां रे॥ आ॰ ७॥ धरम धुरंधरता धरा रे वाला, जग बांधव जग हितकरा॥ हितकरा हांहो॰॥ स्वपर समय विहु गणधरा रे॥ आ॰ ८॥ वद्यो हांहो॰॥ पुरुषोत्तम नृप शिव लह्यो रे ॥आ॰९॥

### ॥ काव्य ॥

,是这种情况的不是一个的人的,我们也是有的情况,我们是我的人,我们是我的人,我们是我的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们们的人们是我们的人们的人,

कुवादि केलि तरु सिंधुराणं, सूरीसराणं मुणिबंधुराणं। धीरत्तसंतिज्ञिय मंदराणं, णमो सया मंगलमंदिराणं॥१०॥ ॐ ह्वीं श्री आचार्यभ्यो नमः।

## पंचम स्थविरपद पूजा

॥ दोहा ॥

द्विविध स्थविर जिनवर कहा, द्रव्य भाव परकार । लैंकिक लोकोत्तर वली, सुणिये भेद विचार ॥१॥ जनकादिक लौकिक थविर, लोकोत्तर अणगार । पंचम पटमें जाणिये. द्वितीय स्थविर अधिकार ॥२॥

॥ राग सारंग ॥

निन निमये यविर मुनीसरा

पंचमहा व्रत धारक बारक, कुमित जगत जय हितकरा ॥ नि॰ ३॥

也是是是这种的人,我们是是这种,我们是这种,我们是是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,这种是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是这种,他们是

संयम योगे सीदित बालक, ग्लानादिक सहु मुविवरा। एहने उचित सहाय दीयन ते, वारे एहना दुःखभरा ॥नि॰श॥ पर्याय वय श्रुत त्रिविध ए थिवरा, वीसरु साठ समो परा। वयधर समवायाधिक पाठक, एह थिवर गुण आगरा॥ नि॰ ५ ॥ त्रीजे अंग कह्या दस थिवरा, रत्नत्रयीना गुणधरा। ते इह निर्मल भावे प्रहिवा, भिवक सरोज दिवाकरा॥ नि॰ ६॥ क्षीरजल्धिसम अतिहि गंभीरा, सुरिगिरि गुरु धीरज धरा, शरणागत तारणता धारा, ज्ञानविमल जल सागरा॥नि॰७॥ श्रुत पद धीरज ध्यान करणते, द्रव्यादिक ज्ञातावरा। तेह खरूप रमण कह्या थिवरा, नहीय धवल केशांकुरा॥ नि॰ ८॥ एह थिवरपद सेवी भगतें, पदमोत्तम बसुधेशरा। पद श्रीजिन 'हरषे तिण लहिये, मुनिवर कुमुद निशाकरा॥ नि॰ ९॥ ॥ काव्य॥

सम्मत्तसंयम्, पतित भविजन, अतिहि' थिर करता भला । अवगुण अदूषित, गुण विभूषित, चंदिकरण समुज्जला । अष्टाधिकादश सहस शीलांग, रथ रुचिर धाराधरा । भवसिंधु तारण, प्रवर कारण, नमो थिवर मुनीसरा ॥१०॥ ॐ हीं श्री स्थविराय नमः ।

### षष्ट उपाध्यायपदं पूजा

॥ दोहा ॥

प्रवरनाण दरसण चरण, धारक यति धर्म सार । समितिपंच त्रिण गुप्तिधर, निरुपम धीरजधार ॥१॥ चरण कमल जेहनां नमें, अहोनिश सुर नर राय । जडता गिरिदारण कुलिश, जयजय श्री उवज्झाय ॥२॥

॥ राग भैरव ॥

( पंच वरणक आंगी राची )

भाव घरी उवझाया वंदो, विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदी, लहो जिनपद अतिशय घारी ॥ भा॰ ॥३॥ कुमति मदतरु भंजन सिंधुर, सुमतिकंद घन हैं अवतारी । अंग दुवालस भणे भणावे, शिष्य भणी चित

,是是是一个,一个人,是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们,不好的,你我们看到我的,我们的,我们的,我们就是我们的,我们就是一个人,我们就是一个人,我们就是 सूत्र उपदेश दियणतें, वाचक अति ८॥ सकल हितधारी ॥ भा० विमलाचारी । भव त्रीजे अमृत सुख पावे, सुर असुरेन्द्र मनोहारी ॥ भा॰ ५ ॥ हय गय वृष पंचानन सरिखा, करमफंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृप, दिनकर विधु मंडारि तुलाधारी ॥ भा॰ ६ ॥ जंवू सीता नदीकांचन गिरि, चरमजलिघ ओपमा भारी । ए ओपमा बहुश्रुतनी जाणी, उत्तराध्ययन कही सारी ॥ भा॰ ७ ॥ अनल पंचिवंशति गुण मणि निधि, सकल भुवन जन उपगारी । संशय तिमिर हरणवासर मणि, पाप ताप आंतपवारी ॥भा०८॥ प्रवर शङ्ख पय भरियो सो हे, तिम ए ज्ञान चरण चारी, महेन्द्रपाल पाठकपद सेवा लहियो जिनपद विजितारी ॥ भा॰ ९ ॥

#### ॥ काव्य ॥

सच्चोहि बीजांकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं । कुट्योहि दंती हरिणेसराणं विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥१०॥ ॐ हीं श्रीउपा-ध्यायेभ्यो नमः ॥११॥

### सप्तम साधुपद पूजा

॥ दोहा ॥

जाणे जिनवाणी सरस, स्यादवाद गुणवंत । मुनि कहिये शिव पंथने, साधे साधु कहंत ॥१॥ शमता रस जल झीलता, विशदानंद स्वरूप। तिण पाम्यो पद सप्तमे, नमो नमो मुनि भूप॥२॥

॥ राग भीम मव्हार ॥ ( मेघ बरसे भरी पुष्प बादल करी. )

भक्ति धरि सातमे, पद भजो मुनिवरा, सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा । गुण सतावीश भूषण करी शोभिता, शोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥भ० ३॥ चरण सत्तरि परम, करण सत्तरि धरा, शिव करण नाण किरिया प्रधाना । प्रतिदिने दोष, आहारना वरजिता, सप्त चालीस यति धरम निधाना ॥भ० थ।। मदन मद मंजता, कुमति जन गंजता, भक्त जन रंजता क्षांति

公公存在分分分分 经不存在 化光光化化光光 化石油 化石油光光光光光光光光 分名 化乙基苯基羟基乙基

化化液性液 丁寧儿 计转换性 医红花花 化苯酚苯酚 化二氯甲酚酚 计存储器 经存储器 医阿克特氏征 医克格特氏征 医克格特氏征 计记录记录 计记录记录 计记录记录

सुमित धरिया सदा चरण परिया जना, तारिया ज्ञान गंभीर दिखा॥भ०५॥
तृणमिण सम गिणे चतुर विध धर्मना, परम उपदेश दायक उदारा।
बिहरभ्यंतर भिदा, बारिवध अति कठिन, तप तपे सकल जिउ अभयकारा॥ भ०६॥ विल अठावीश, मनहरण गुण लिब्ध निधि, सातमे छह
गुणठाण विसया। सप्त भय वारका, प्रवर्राजन आगन्या, धारका खगुण
परिणमन रिसया॥ भ०७॥ पंच परमाद, कल्लोलताकुल महा, पार संसार
सागर जहाजा। विविध नव वािं युत, शील व्रतके धरा, मधुर निज
वािण रंजित समाजा॥ भा०८॥ कोिंड नव सहस थुणिये महामुनिवरा,
वीरभद्र जिम करिय साधु सेवा। परम पद जिन हरष, सूं ब्रह्मो तस्र तणा,
चरण कज युग नमें सकल देवा॥ भ०९॥

#### ॥ काव्य ॥

संतिष्जिया सेसपिरसिहाणं, णिस्सेस जीवाण दयागिहाणं । सण्णाण पञ्जाय तरूबणाणं, णमो णमो होउ तवोधणाणं ॥१०॥ ॐ हीं श्री सर्वसाधुम्यो नमः ।

### अष्टम श्री ज्ञानपद पूजा

॥ दोहा ॥

विमल णाण वर किरण किय, लोकालोक प्रकाश । जीत लही निज तेजसें, जिण अनंत रविभास ॥१॥ सहु संशय तम अपहरें, जय जय णाण जिणंद । णाण चरण समरणथकी, विलय होय दुख दंद ॥२॥

॥ राग घाटी ॥

( मेरो मन बस कर लीनो, जिनवर प्रमु पास, )

भावें ज्ञान वंदनकरिये, शिव सुख तरूकंद । जिनचन्द्र पद गुण धरिये, वरिये परमआनंद ।।भा०३॥ मतिनाण श्रुत पुनरविध, मनपरयव जाण । लोकालोक भाव प्रकाशी, वर केवल नोण ॥ भा० ४ ॥ पंच ए इकावन भेदे, कहोो जिनवर भान । जगजीव जडता छेदे, ज्ञानामृत रसपान ॥ भा० ५ ॥

बिन ज्ञान की घी किरिया, होय तसु फल ध्वंस । मक्षामक्ष प्रगट ए करिये, जिम पय जल हंस ॥ भा॰ ६॥ वरनाण सहित सुकिरिया, करी फल दातार । हुवो ज्ञान चरण रसीला, लहो भवजलपार ॥ भा॰ ७ ॥ ज्ञानानंद अमृत पीघो, भरतेसर महाराय । तिणमें अमृत पद लीघो, सुरपती गुण गाय ॥ भा॰ ८ ॥ सेवी ज्ञान जयत नरेशें, भये जिन महाराज । सोहे ज्ञान ए त्रिभुवनमें, सह गुणपरि सिरताज ॥ मा॰ ९॥

॥ काव्य ॥

छद्दव पञ्जाय गुणायरस्स, सया पयासी करणाधुरस्स । मिच्छत्त अण्णाण तमोहरस्स, णमो णमो णाणदिवायरस्स ॥१०॥ ॐ ही श्रीज्ञानाय नमः ।

## नवम दर्शनपद पूजा

॥ दोहा ॥

दरसण आश्रय धर्म्मनी, एहना षट् उपमान । दरसण बिन नहि चरणविधी, उत्तराध्ययने जान ॥१॥ जिन दरसण फरस्यो मलो, अंतर मुहुरतमान । अर्द्धपुद्रल परियट रहे, तसु संसार वितान ॥२॥

> ॥ राग कामोद ॥ ( चंपक केतिक मालती, )

जिणदरसण मुझ मन वस्यो ए, हां रे अइयो मन ए, उपजत परम आनन्द । जिन दरसण दरसण दिये. नाण तरु कंद ॥३॥ दरसण मोह रिपु जीतिया, ए ॥ अ॰ ॥ वरदरसण उल्संत । दरसण घट परगट हुवा, भवियण भव न भमंत ॥४॥ जिनवर देव सुगुरु व्रती ए ॥ अ॰ ॥ केवली कथित जिनधर्म । तीन तत्त्व परिणति रमे, ते दरसण करे हार्म ॥५॥ जिन प्रभु वचनोपरि सदा ए ॥ अ॰ ॥ थिर सरदहण धरंत । इण लक्षणतें जाणिये, समकितवंत महंत ॥६॥ इग दुगति चउ शर दस विहा ए, सतसठि भेद विचार ॥ अ०॥ विल्ठ परतीत समिकत भण्यो, द्रव्य भाव परकार ॥७॥ द्रव्ये जिण दरसण कह्यू

KANATANIN KANATAN KANA

是是"大家的"的主点状态,也是必须在这种的情况是这种的情况,这种是是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是,

॥ अ० ॥ भावे समिकत सार । द्रव्यते दरसण भावतो, दरसण कारण धार ॥८॥ द्रव्यते दरस यदिगत वली ए ॥ अ० ॥ तदिष उत्तर हितकार । सय्यंभव जिनदरसणो, पायो दरसण सार ॥९॥ दरसण विण किरिया हता ए ॥ अ० ॥ अंक बिना जिम बिंदु । बिल हिणियो विन चिन्द्रका, वासरमें जिम इन्दु ॥१०॥ हिरिविकम नृप सेवतो ए ॥ अ० ॥ दरसण पद अभिराम । पद श्रीजिन हरषे धर्यू, वधते शुभ परिणाम ॥११॥

### ॥ काव्य ॥

अणंत विण्णाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारणस्स । अणंत कम्माविल धंसणस्स, णमो णमो णिम्मलदंसणस्स ॥१२॥ ॐ हीं श्री दर्श-नाय नमः ।

### दशम विनय पद पूजा

॥ दोहा ॥

विनय भुवन रंजन करे, विनये जस विस्तार । विनय जीव भूषित करे, विनये जयजयकार ॥१॥ विनय मूल जिनधर्मनूं, विनय ज्ञान तरुकंद । विनय सकलगुण सेहरो, जयजय विनय समंद ॥२॥

॥ रागसामेरो ॥ ( पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधे, )

ध्यावोरी माई, विनय दशम पद ध्यावो। पंच मेद दश विध तेरस विध, बावन मेद गणेशे। छ्यासठ मेद कहा आगममें, विनयतणा सुविशेषे ॥ ध्या॰ ३॥ तीर्थंकर सिन्द कुल गण संघा, किरिया धर्म वरनाणा। नाणी आचारज सुनि थिवरा, पाठक गणि गुण जाणा॥ ध्या॰ ४॥ ए अरिहादिक तेरस पदनो, विनय करे जे भावे। ते तीर्थंकर पद अनुभविने, अमृतपद सुख पावे॥ ध्या॰ ५॥ जिम कंचनमें मृदुगुण लाभे, नहीय कालिमा पावे। तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावे॥ ध्या॰ ६॥ तिम विनयीमें हो मृदुता गुण,

的。 1. 1 元子,1. 1 元子,1.

कुमति कठिनता नासे । कृष्णादिक छेश्यानी मिलनता, जाये विनय गुण भासे ॥ ध्या॰ ७ ॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देववंदन निरधारो । गुरु बंदन विधि चारसे बाणूं, भेद करी उर धारो ॥ ध्या॰ ८ ॥ तीर्थंक-रादिकनो मन रंगे, विनय चरण शुभ ध्यायो । धन नामा भविजन शुभ-योगे, पद जिन हर्षे पायो ॥ ध्या॰ ९ ॥

॥ काव्य ॥

आणंदिया सेसजगज्जणस्स, कुंदिंदु पादामलताचणस्स । सुधम्म जुत्तस्स दयासयरस, णमो णमो श्रीविणयालयस्स ॥१०॥ॐ हीं श्रीविनयाय नमः ॥

## एकादश चारित्रपद पूजा

॥ दोहा ॥

इग्यारमपद नित नम्ं, देश सरव चारित्र । पंक मलीनता दूर करो, चेतन करे पवित्र ॥१॥ एह चरण सेवन करे, रंक थकी सुरराय। तीन जगतपति पद दिये, जसु सुरनर गुणगाय ॥२॥

> ॥ राग सारंग ॥ (बावन चंदन घसि कु०.)

चरण सरण मुझ मन हरचो, सुख करण हरण घन पाप ए॥ हां हो रे वाला ॥ एह चरण जलघर हरे, अज्ञान तरुणतर ताप ए ॥ हां० ३ ॥ आठ कषाय निवारतां, देशविरति प्रगट हुवे खास ए ॥ हां॰ ॥ चार कषाय निवारिया, समविरति छहे गुणवास ए ॥ हां॰ ४ ॥ इगवासर सेन्यो अको, शुद्ध सर्व संवरचारित्र ए ॥ हां॰ ॥ परमानंद घन पद दिये, सुरलोक जनित सुखचित्र ए ॥ हां० ५ ॥ भवभय तरुगण छेदवा, ए संयम निशित कुठार ए ॥ हां॰ ॥ ज्ञान परंपर करण छे, अमृत पदनो हितकार ए ॥ हां॰ ६ ॥ चरण अनंतर करण छे, निरवाण तणो निरधार ए ॥ हां॰ ॥ सरवविरति शुद्ध चरणसे पामे अरिहंत पद सार ए ॥ हां० ७ ॥ वरस चरण परजायमें, अनुत्तर सुख अतिक्रम होय ए॥ हां०॥ सतर भेद चारित्रना, कहिया

的名词复数人,我们是我们是我们是我们是我们的,我们是我们的,我们是我们是我们的,我们是我们是我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的

जिन आगम जोय ए ॥ हां॰ ८ ॥ देशथी सम संयम विषे, उज्जलता अनंत गुण थाय ए ॥ हां॰ ॥ अरुणदेव सेवी चरणने, भये जगगुरु जिन महाराय ए ॥ हां॰ ९ ॥

#### ॥ काव्य ॥

कम्मोघकंतार द्वाणलस्स, महोद्याणंद लयाजलस्स । विण्णाण पंके-रुहकारणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥१०॥ ॐ हीं श्रीचारित्राय नमः।

## द्यादश ब्रह्मचर्य पद पूजा

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी, काम कलश अवधार । ब्रह्मचर्य इण सम कह्यूं, कामित फलदातार ॥१॥ जिम जोतिसियां रजनिकर, सुरगणमें सुरराय । तिम सहु व्रत शिर सेहरो, ब्रह्मचरज कहिवाय ॥२॥ ॥ राग काफी जंगलो ॥ ( भलो प्रसुगुण बाल्हा हो, )

भवभयहरणा शिवसुलकरणा, सदा भजो ब्रह्मचारा हो ॥ भ० ॥ शील विबुध तरु प्रतिपालनकों, कि जिनवर नववारा हो ॥ भ० ३ ॥ दिन्यो-दारिक करण करावण, अनुमित विषय प्रकारा हो ॥ भ० ॥ त्रिकरण जोगें ए परिहरियें, भिजयें भेद अढारा हो ॥ भ० ॥ कनक कोडिनो दान दिये नित, कनक चैत्य करतारा हो ॥ भ० ॥ एहथी ब्रह्मचरज धारकनो, फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ५ ॥ सहस चौरासी श्रवण दान फल, शुभव्रह्मव्रतफल सारा हो ॥ भ० ॥ विजयसेठ विजया सेठाणी, उभय पक्ष ब्रह्मघरा हो ॥ भ० ६ ॥ भये सुदर्शन सेठ शिलसें, सुगतिवधू भरतारा हो ॥ भ० ॥ सहस अढार शिलांगरथ धारा, धारि करो निसतारा हो ॥भ० ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन, सिंधुर मद मतवारा हो ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदऋषि सरिखे, तर्थो भवजलिध अपारा हो ॥ भ० ८ ॥ पच्चक्खाण विरति निहं एहमें, ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो ॥ भ० ॥ सकल सुरासुर किन्नर

的。即是一个,我们的一个人,我们是不是一个人,我们是一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们是一个人,我们也不是一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们的一个人,我们们的一个人,我们们们的一个人,我们们们们的一个人,我们们们们们们们们们们们们们们们们们们们

नरवर. घरिय भगति हितकारा हो ॥ भ॰ ९ ॥ ब्रह्मचरज व्रतघर नरवरके, प्रणमें चरण उदारा हो ॥ म॰ ॥ दशमें अंगे भणियो नरवर्मा, नरपति गुण आधारा हो ॥ म॰ १० ॥ ब्रह्मचरजव्रत पाल लह्यूं पद, जिन हरषे जयकारा ॥ भ० ११ ॥

#### ॥ काव्य ॥

सग्गापवगगग सहप्पयस्स, सुणिम्मलाणंत गुणालयस्स । सन्वव्यया भूसण भूसणस्त, णमोहि सीलस्स अद्सणस्य ॥१२॥ ॐ हीं श्रीब्रह्मचर्याय नमः ।

### त्रयोद्दा क्रियापद पूजा

॥ दोहा ॥

करम निरजरा हेत है. प्रवर किया गुण खाण। जिनशासननी स्थिति रहि, किरियारूपे जाण ॥१॥ँ भुवनमांहि किरिया मही, सकल शुद्ध विवहार । प्रवरनाण दरिसणतणो. शुद्ध किरिया सिणगार ॥२॥

> ॥ राग मालवी गौडी ॥ ( सब अरति मथनमुदार धूपं, )

शुमध्यान किरिया हृदय धरिने. धर्म सकल उरधार रे। किरिया, अशुभ पणबीस बार रे॥ शु॰ ३॥ ज्ञानवंत अञ्चल्ल भट है, किरिया शस्त्र वतंस रे । सुभटनाणी कियाशस्त्रें. करयकर्म अरिध्वंस रे ॥ शु॰ ४ ॥ ज्ञानसेंती वदे शिव यदि, तेरमें गुण ठाण रे । एकनाणें करि जिनेसर, किसु न लहे निरवाण रे ॥ शु॰ ५ ॥ जिनप शैलेशीकरण करी, चउदमे गुणठाण रे । सरवसंबर चरण करणें, छहे पद निरवाण रे ॥ शु॰ ६ ॥ ए अनंतर अमृत कारण, कह्यो जिनवर भान रे । सरब संबर चरण किरिया, न शिव इण विणु जान रे ॥ शु॰ ७ ॥ एक नाणें इक क्रिया में, न शिव वितरण शक्ति रे । कहे जिनवर उभय योगें, लहे भविजन भक्ति रे ॥ शु॰ ८ ॥ गरल मिश्रित

सरस भोजन, अशुभ परिणित धार रे। अमृत संयुत तेह भोजन, रुचिर परिणित कार रे॥ शु॰ ९॥ ज्ञानसहिता तेम किरिया, किर करे निसतार रे। ज्ञानविणु किरिया न दीपे, मनोगत फल्रसार रे॥ शु॰ १०॥ ज्ञान परिणित रमी किरिया, तेह किरिया सार रे। भयो हरिवाहन जिनेसर, शुद्ध किरिया धार रे॥ शु॰ ११॥

॥ काव्य ॥

विशुद्धसन्द्राण विभूसणस्स, सुरुद्धि संपत्तिसुपोसणस्स । णमो सदा-णंत गुणप्पदस्स, णमो णमो सुक्किरियापदस्स ॥ १२ ॥ ॐ ह्वीं श्रीक्रियायै नमः ॥ १३ ॥

## चतुर्दश तप पद पूजा।

॥ दोहा ॥

समतारस युत तपरुचिर, भणियो जिन जग भान । शिवसुर सुख चंदन फल्प्द, नंदनविपिन समान ॥१॥ सघन करम कानन दहन, करन विमल तप जान। विपिन धूमकेतुन समो, जय तप सुगुणनिधान ॥२॥

> ॥ राग कल्याण ॥ ( तेरी पूजा बनी है रसमें, )

मेरी लागी लगन तप चरणें। सकल कुशल में प्रथम कुशल ए, दुरित निकाचित हरणें॥ मे॰ ३॥ जैसे गणधरकी जिनचरणे, चातककी जल धरणे॥ मे॰ ॥ जैसी चक्रवाककी अरुणें, चकोरकी हिमकर किरणें॥ मे॰ ॥ जिनवर पण तद्भव शिव जाणे, त्रण चड नाण सुकरणें॥ मे॰ ॥ तद्पि सुकोमल करण चरणने, ठवय कठिन तप करणें॥ ५॥ कपट सहित तप चरणधरणतें, बांछित फल निव तरणें॥ मे॰॥ नित ए दंभ रहित तपपदके, सुरपित गण गुण वरणें॥ मे॰ ६॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन, पूरव भव तप सरणें॥ मे॰ ॥ रहिया तद्पि कपट निव छंड्या, भये स्त्री गोत्राचरणें॥ मे॰ ७॥ दृढमहारी पांडव धनकरमी, छंड्या

करमा वरणें ॥ मे॰ ॥ तपसे शोभ लही त्रिभुवनमें, केवल कमलाभरणें ॥ मे॰ ८ ॥ लाख इग्यारह असी हजारा, पंच सहसदिन खिरणें ॥ मे॰ ॥ मासखमण किर नंदन मुनिवर, पाम्यो फल शिव धरणें ॥ मे॰ ९ ॥ तप किरियो गुणरयण संवत्सर, खंधक समतादरणें ॥ मे॰ ॥ चउदसहस मुनि में कह्यो अधिको, धन्नो तप आचरणें ॥ मे॰ १० ॥ बाह्यअभ्यंतर भेदें ए तप, बार भेद अधिकरणें ॥ मे॰ ॥ वसने कनककेतु पाम्या पद, जिन हरषें भवतरणें ॥ मे॰ ११ ॥

#### ॥ काव्य ॥

ल्डीसरोजावलितावणस्स, सरूवसंलग्ग सुपावणस्स । अमंगलाणो कुहदुद्दवरस, णमो णमो णिम्मल सत्त्ववस्स ॥१२॥ ॐ हीं श्री तपसे नमः।

## पंचदश गौतमपद पूजा

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमे, पद सेवो सुप्रसन्न । विल सहु जिन गणधर नमो, चौदेसे बावन्न ॥१॥ दान सकल जगवश करे, दान हरे दुरितारि । मन वांक्रित सहु सुख दिये, दान धरम हितकारि ॥२॥

॥ राग सोरठ ॥

( तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभु मैं, )

पनरम पद गुण गाना हो भिव ॥ पनरम० ॥ भाव धरी करिये मन रंगे, परम सुपात्रे दाना हो भिव पनरम० ॥ ३ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदें, द्रव्यलंखन ए जाना ॥ हो भिव प० ॥ सर्वोत्तम उत्तम हुवे भाजन रतनकनक रूपाना ॥ हो भिव प० ॥ ४ ॥ मध्यम पात्र कहीं जे एहवा, ताम्र धातु निपजाना ॥ हो भिव प० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिना, तेह जवन्य कहाना ॥ हो भिव प० ॥ ५ ॥ भावपात्रनो लंखन कहिये, सुणिये सुगुण स्थाना ॥ हो भिव प० ॥ पंचम चरणधरे विल वस्ते क्षीणमोह गुण ठाना ॥ हो भिव प० ॥ ६ ॥ स्तनपात्र सम ते सर्वोत्तम, पात्र कह्यां जिन

भाना ॥हो भवि प॰॥ प्रवरनाण किरिया घर मुनिवर लाभालाभ समाना॥हो भवि प॰ ॥ ७ ॥ ते कांचन भाजन सम कहिये, भवजल तारन याना ॥ हो भवि प॰ ॥ शुद्ध मन द्वादश व्रत दरसन धर, तारपात्र सम जाना ॥ हो भवि प० ॥८॥ शुद्ध समिकतधर, श्रेणिक परमुख, रह्या अवि-रति गुणठाणा ॥ हो भवि प॰ ॥ ताम्रपात्र सम एइने कहिये, भावी गुण-मणि खाना ॥ हो भवि प॰ ॥९॥ अपर सक्छजन मिथ्यादृष्टी छोहादि पात्र गिनाना ॥ हो भवि प॰ ॥ जिनशासन रंगे रंगाना, वाचंयम सुप्र-माना ॥ हो भवि प॰ ॥१०॥ एहने दान दिया शिव लहिये, एह सुपात्र पहिचाना ॥ हो भवि प॰ ॥ पंचदान दशदान निकरमें, अभयसुपात्र महिराना ॥ हो भवि प॰ ॥११॥ नरवाहन शुभ पात्र दानतें, भये जिन हरष निघाना ॥ हो भवि प॰ ॥ शालिभद्र वलि सुरसुख लहियो, सुरनर करय वखाना ॥ हो भवि प॰ ॥१२॥

### ॥ काव्य ॥

अणंतविण्णाण विभायरस्स, दुवाल संगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जयगोयमस्स, णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥१३॥ ॐ ह्वीं श्रीगौतमाय नमः।

## षोडश वैयावृत्य पूजा

॥ दोहा ॥

सोलम पद में जाणिये, वेयावच विधान । अखिल विमल गुणमणितणो, सोहे प्रवरनिधान ॥१॥ जिनसूरी पाठक मुनी, बालक वृद्ध गिलान । तपसी चैत्य संघनूं, करो वेयावच प्रधान ॥२॥

॥ राग जंगली ॥ ( मुने म्हारो कब मिलहो मन मेलू )

सेबोभाई, सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दशपद नो, करो वेयावच भारी ॥३॥ श्रीतीर्थंकर त्रिमुवन शंकर, अवर केवली हारी। मन-पर्यवधर अवधिनाणधर, चौदपूरव श्रुतधारी ॥ से॰ ४ ॥ दशपूर्वी उत्कृष्ट

चरणधर, लिब्बवंत अणगारी । ए जिन कहिये इन बंदनंतें, भवि हुवे जिन अवतारी ॥ से॰ ५ ॥ जिनमन्दिर बिम्ब करिय भरावे, पूज करे मनुहारी । वेयावच कहीये ए जिनकी, करिये भवजलतारी ॥ से०६॥ आचारज परमुख नवपदकी, वेयावच विजितारी । भक्तिपूर्व वस्त्रीषध अनजल, देवे गुणविस्तारी ॥ से॰ ७ ॥ पंचसय मुनिनी करिय वेयावच, पूरवभव व्रत-चारी । भरत बाहुबिल चक्रीपद्भुज, बिल लिह्यो वरी शिवनारी ॥ से॰ ८ ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी, करीय वैयावच सारी । तिनसे स्वर्गलोकमें दुईकी, भई प्रशंसा भारी ॥ से॰ ९ ॥ इत्यादिक सोलमपद उघरे, बहुल-भव्य कमजारी । तिनसे इन वेयावचपदकी, वारि जाउं वार हजारी ॥से॰१०॥ नृप जीमृतकेतु सोलमपद, सेवी भये दुखवारी । श्रीजिन हरष धरी हरि-वंदित, शरणागत निसतारी ॥ से॰ ११ ॥

#### ॥ काव्य ॥

मणुण्ण सन्वातिसया सयाणं, सुरासुराधीसर वंदियाणं । रविंदु विंवा-मल सन्गुणाणं, द्याघणाणं हि णमो जिणाणं ॥ १२ ॥ ॐ हीं श्रीजिनेभ्यो नमः ।

### सप्तद्श समाधि पद पूजा

॥ दोहा ॥ सतरम पदमे सेविये, सहु सुख करण समाधि। जिन सेवनते भविकनो, गर्मे व्याधि अरु आधि॥१॥ ब्रह्मनगर पथ विचरतां, पर पाथेय समान । ए समाधि पद जाणिये, सुरमणि किये हैरान ॥२॥

> ॥ राग कहेरवो ॥ (बाजे तेरा बिखुआ रे)

मेरी रे समाधि चरण चित बसियो, तसु गुण समरण कियो मंन बिसियो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तुवतुहैं, अनुभवरंगे अतिहि विकसियो ॥ मे॰ ३ ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि, सुरतरु मानुं नित

नित भुवन विलिसेयो । असर्न वसन सिल्लादिक मिक्त, करिय संघनी करुणा रिसयो ॥ मे॰ ४ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ए सुनिये, कह्यो जिन लोकालोक दरिसयो । सारण वारण चोयण प्रमुखे, पितत सुथिर करे धरम हरिसयो ॥ मे॰ ५ ॥ भाव समाधि द्वितीय ए किहये, जो करे सो जिन चरण फरिसयो । सकल संघ को जो उपजावत, दुविध समाधि दुरित तसु निसयो ॥ मे॰ ६ ॥ सुमित पंच त्रण गुपित धरे नित, सुरिगिरिवरनो धीरज करिसयो । जगत जंतु अघ तपत हरनकूं अनुभव अमृत घार वरिसयो ॥ मे॰ ७ ॥ ध्यान अनल करमेंधन दाहत, जिनसें परगुण परणित खिसियो । ए मुनितरिण तेज सम दीपत, अमृत सुखामृतपान तरिसयो ॥ मे॰ ८ ॥ इन पदमें ऐसे मुनि जनके, समर्रनतें हुय जग अवतिसयो । ए पद सेवी नृपित पुरंदर, भये जगपित जिन हरष हुल्सियो ॥ मे॰ ९॥

### ॥ काव्य ॥

सिंविदिया पारविकारदारी, अकारणा सेसजणोवगारी। महाभयातंक-गणापहारी, जयो सदा शुद्ध चरित्तवारी॥ १०॥ ॐ हीं श्रीचारित्रधा-रिन्यो नमः।

,这种,这个人,也是是一种,我们的人,我们是是一种,我们们们是我们的,我们们们是我们的,我们们的一个,我们们的一个,这个人,我们的,我们们的一个,我们们的一个,我 第一个,我们们们们的,我们们们的一个,我们们们们的,我们们们的,我们们们的,我们们的一个,我们们们的一个,我们们们们的一个,我们们们们们们的一个,我们们们们们的

### अष्टाद्श ज्ञानपद पूजा

॥ दोहा.॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवूं सदा, अष्टादश पद मांहि । इण पद सेवक जिन तणा, सहु संकट भय जांहि ॥१॥ जैसी कुमतिनि शुद्धता, घोर तपे किर होय । तत् अनंत गुण शुद्धता, सुज्ञानीकी जोय ॥२॥ ( दिलदार यार गबरू, राखुं रे हमारा घटमें )

जिन चन्द्र नाम तेरा, महाराज ज्ञान तेरा। जीते रे विकट भव मटने, सद्पूर्वज्ञान धरणा॥ वितरे जिनेन्द्र चरणा, करे सर्व कर्म हरणा ॥ जी॰ ३॥ जगमें महोपकारी, भय सिन्धु वारि तारी, कुमतांधता विदारी॥ जी॰ ४॥ सहु भावनो प्रकाशी, परम स्वरूप वासी, परमात्म

सद्मवासी ॥ जी॰ ५ ॥ बिनु हेतु विश्वबंधु, गुण रह्न राशि सिंधु, समता पियूष अंघू ॥ जी॰ ६ ॥ स्याद्वांद पक्ष गाजे, नयसप्तसे विराजे, एकान्त पक्ष माजे ॥ जी॰ ७ ॥ छिह तीर्थ पाव तारा, इनसे जिनेन्द्र सारा, भविका किया उधारा ॥ जी॰ ८ ॥ पद सेवि ए नरिन्दा, भये सागरादि चन्दा, जिन हर्षके समन्दा ॥ जी॰ ९ ॥

#### ॥ काव्य ॥

सुद्धिया मंडल मंडणस्स, संदेह संदोह विखंडणस्स । मुत्ती उपादाण सुकारणस्स, णमोहि नाणस्स जसोघणस्स ॥१०॥ ॐ हीं श्रीज्ञानाय नमः ।

## एकोनविंशतितम श्रुतपद पूजा

॥ दोहा ॥

注意,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我

पाप ताप संहरण हरि, चंदन सम श्रुत हार । तत्त्व रमण कारण करण, अशरण शरण उदार ॥१॥ इगुनवीस पदमे भजो, जिनवर श्रुतनी भक्ति । इनपद वंदनसे छहे, विमलनाण युत शक्ति ॥२॥

#### ।। राग ॥

( व्रजवासी कानतें मेरी गागर ढोरी रे )

भविजन श्रुतभक्ति, चरण शरण उर धरिये रे। ए श्रुतभक्ति सुमंगल माल, विमल केवल कमलावरमाल ॥ भवि॰ ३॥ सकल द्रव्यगण गुणप-र्याय, प्रगट करण ए श्रुत मन भाय। अतुल अनंतिकरण समवाय, धरण तरणगण सम कहिवाय॥ भ॰ ४॥ ए श्रुतकुमित युवितन संग, अगणित रमण तणो करे मंग। अरथें भाख्यो श्रीजिनराज सूत्रे गणधर मुनि सिर ताज॥ भ॰ ५॥ ए श्रुत सागर अगम अपार, अनंत अमल गुणरयणा धार। भवभय जलिचि तरण जहाज निसुणी मगन भई सकल समाज॥ भ॰ ६॥ भवकोटी लगे तप करी जीव अज्ञानी करे जितनी सदीव। कर्मनिरजरा तितनी होय, ज्ञानीके इक क्षणमें जोय॥ भ॰ ७॥ एक सहस कोडि लसहकोडि, चतुरतीस कोडि अक्षर जोडि। अडसिठ लाखहु

这一个人,我们们是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是我们的人,我们也会会会会会的,我们也是我们的人,我们也是我们的人,我们的人的人

t*trazenteakk<u>e ikus</u> kanzenki kikak kaen* 

सात हजार, अडसय असीय प्रमित चितधार ॥ भ॰ ८ ॥ इतने वरनसे इक पद होय. एक श्लोकका गणित ए जोय । इक पदको परिमाण ए जाण, इण पदसे आगम परिमाण ॥ भ० ९ ॥ तीन कोडि अरु अडसठि लाल, सहस वैयालिस ए पद भाख । इतने पदसे अंग इग्यार, केरी गणना भवि चित घार ॥ भ० १० ॥ बारम दृष्टिवादको मान, असंख्यात पदको पहिचान । इनको चौदपूरव इक देश, इंसको पार लह्यो है गणेश ॥स॰११॥ एह दुवालस अंग उदार, एहनी जइये नित बलिहार । एहनी द्रव्यभाव बहु भक्ति, करिये घरिये जिनपदयुक्ति ॥ भ०१२ ॥ रह्नचूड नृप सुलमा धार जिनश्रुत भक्ति करी हितकार । भये जिन हरष परमपद दाय, जिनके सर नरपति गुण गाय ॥ म॰ १३ ॥

#### ॥ काव्य ॥

अण्णाणवळ्ळी वणवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स । अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स, णमो दयामंदर सत्युयस्स ॥१४॥ ॐ हीं श्रीश्रुताय नमः ।

# विंशतितम श्री तीर्थपद पूजा

॥ दोहा ॥

प्रवचनीय अरु धर्मकथी, वादि निमित्ती जीण । तपसी विद्या सिद्ध पुनि, कवि एह मुनिभाण ॥१॥ भाव तीर्थ प्रमुजी कह्या, प्रभावीक ए अष्ट । तीर्थ प्रभावन जे करे, ते फल लहे विशिष्ट ॥२॥

### ॥ राग धन्या श्री ॥

तीरथ परभावन जयकारा ॥ ती॰ जिनसे भव सागर जल तरिये; ते तीरथ गुण धारा ॥ ती॰ ३ ॥ जिनके गणधर तीरथ कहिये, विल सहु संघ सुखकारा । एह महा तीरथ पहिचानो, वंदि छहो भवपारा ॥ती॰ ४॥ अडसठ छौकिक तीरथ तजि करि, भज छोकोत्तर सारा । द्रव्यभाव दोय भेद लोकोत्तर, स्थिर जंगम भयहारा ॥ ती॰ ५ ॥ पुंडरीक पर मुख

,这是我的是我是我的人,我们是不是我的,我们是我们的,我们是是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是这个人,我们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,

तीरथ, चैत्य पंच परकारा । एह वर तीरथ थावर किहये, दीठां दुरित विदारा ॥ ती॰ ६ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीश जिन, विहरमान भवतारा । दोय कोडि केवल विचरंता, जंगम तीर्थ उदारा ॥ ती॰ ७ ॥ संघ चतुर्विध जंगम तीरथ, जिन शासन उजियारा । वर अनंत गुण मूषण मूषित, जिनको नमत जिनसारा ॥ ती॰ ८ ॥ ए तीरथ परभावन करिये, शुभ भावन आधारा । शिव कज जल विंशति तम पदकी, जाऊं प्रतिदिन बलिहारा ॥ ती॰ ९ ॥ ए तीरथ परभावन करतो, मेरु प्रभु अविकारा । पद जिन हर्ष लहीने तिरया, भवभय जलिंघ अपारा ॥ ती॰ १० ॥

### ॥ काव्य ॥

महा महानन्दपद प्रदाय, जगत्रयाधीश्वर वंदिताय। जिनश्रुत ज्ञान पयोनदाय, नमोऽस्तु तीर्थाय, शुभंददाय ॥११॥ ॐ हीं श्रीतीर्थाय नमः।

## विशंतितम पद स्तुति

॥ राग गरबो ॥

(सुणि चतुर सुजाण परनारी सूंत्रीतड़ी) चित हरख धरी, अनुभव रंगे बीस परमपद वंदिये। शिवं रमणि वरी, केवल सखिय सहाय, करी चिर नंदिये। ए बीस चरण असरण सरणा, चिर संचित दुरित तिमिर हरणा। नित चित ए पद समरण धरणा ॥१॥ ए पद समरण जिण चित धरिया, तरिया तरसे तरे भव दरिया। सदानंत भविक सहु भयहरिया ॥ चि॰ २॥ ए पद गुण सागर मनुहारा, वर्णन तरणी ए बहुहारा। इन्द्रादिक सुर न लह्यो पारा॥ चि॰ ३॥ ए पद अतिशय महिमा धारा, आश्रित पद कमला भरतारा। जिनचन्द्रानन्द धन पद कारा॥ चि॰ ४॥ जिन हर्ष सूरिन्द के शिव करणा, चन्द्रामल गुण विंशति चरणा हुयज्यो असु अरज ए अब धरणा॥ चि॰ ५॥

#### कलग

ए वीश थानक भुवन नंदन अध निकन्दन जानिये। विवुधेन्द्र चन्द्र नरेन्द्र वंदित पद जिनेन्द्र बखानिये। ए वीश पद भव जलिध तारण,

तरण गुण पहिचानिये ॥ इम जाणि भविजन कुशल कारण, वीश पद उर आणिये ॥१॥ इह वरस\* चन्द्र दिनेन्द्र हरिमुख, विधि नयन छिति मिति धरूं। तिह मास भादव धवलदल तिथि, पंचमी रिववासरूं। बंगाल जन पद जहां विराजित, शिखर तीरथ गिरिवरूं। सहु नगर शोभित, अजीमगंजपुर द्वितीय बालूचर पुरूं ॥२॥ खरतर गणेशर विजित सुरगुरु, विमल गुण गिरिमाधरा। गुण भवन भविजन निलन कानन नित विकाशन दिन करा। मुनिचन्द्र श्रीजिनलाम सुरीन्द्र सुगुरु महीयल युगवरा॥ सक्लेन्द्र वंद्य जिनेन्द्र शासन मंडना नितिहत धरा॥३॥ तस्र पट्ट उज्जल शिखरि गणवर, उदय गिरि वासर करा। योगीन्द्र वृन्द नरेन्द्र वंदित, चरणपंकज गणधरा। आचार पंच, छतीस गुणधर, सकल आगम सागरा॥ युगप्रवर श्री, जिनचन्दसूरि गुरु सकलसूरीसरा॥४॥ तसु चरण कमल, बियुगलसेवन, अहनिशि मधुकरता धरी। पुन सुगुरुपद, अरिवंद युगनी कृपा नित चित आदरी॥ गणधार श्रीजिन हरषसूरी, हरषधर धन अधहरी। या बीस पदकी विविध पूजन, विधि तणी रचना करी॥५॥

# ऋषि मगडल पूजा

是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个, 第二个是是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们就是一个,

### प्रथम पूजा

॥ दोहा ॥

प्रणमी श्रीपारस विमल, चरणकमल सुखदाय। श्रहिषमंडल पूजन रच्ं, वरविध युत चितलाय ॥१॥ नंदीश्वर मंदिर गिरे, शाश्वत जिन महाराज। अरचे अड विधि पूजसे, जिमि समस्त सुरग़ज॥२॥ तिम चितजिनपति गुणघरी, श्रावकसमिकत धार। विरचे जिन चौबीस की, अडविधि पूज उदार॥३॥

<sup>\*</sup> यह पूजा श्री जिनहर्षसूरिजी महाराज की बनाई हुई है और सम्वत् १८७१ के छम भग भावता सुदी ५ को बनी है।

多子!""我说我们,我就是我的我们,我们我们的我们,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们的人们的

# द्वितीय श्री अजित जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जय जिणंद दिणंद सम, लखि भविजन विकसात । परमानंद सुकंद जल, विजया मात सुजात ॥१॥

॥ राग ॥

( आय रहो दिल बागमें प्यारे जिनजी, )

एकं अरज अवधारिये अजित जिन एक अरज अवधारिये॥ अजित जिनेसर, जग अल्वेसर, क्र्रम निजर निहारिये। तारण तरण विरुद्द सुणि तेरो, आयो शरण तिहारिये॥ अजित जिन एक॰ २॥ चरम सिंधु भवभय जल निपतित, चरण पतित मोहे तारिये। परमानन्द धन शिव वनितानन, कंज मधुपान सुकारिये॥ अजित॰ ३॥ चिर संचित धन दुरित तिमिर हर, तुम जिन भये तिमिरारिये। कहे शिवचन्द अजित प्रभु मेरे। एह अरज न विसारिये॥ अजित॰ ४॥

#### ॥ काव्य ॥

सिटल चन्द्रन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुघूपकैः विविध नन्य मधु प्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद्अजित जिनेन्द्राय जलं, चन्द्रनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## तृतीय श्री सम्भव जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जय जितारि सम्मव सदा, श्री सम्भव जिनराज । सकल लोक जिण जीतलिये, जीतो मोह समाज ॥१॥ जैनाकर गुण पूर, सेवा तेज सनूर । भक्ति भाव पूरण उरधार, मुक्तिपुरी पथसार ॥२॥

### ॥ राग बेलाउल ॥

( गंधवटी घनसार केसर, मृगमदारस भेलीये )

अपरिमित वर शिखर सागरधार सम्भव कार ए. जिनराज सम्भव पाय बंदो लहो भवजल पार ए। वलि जलिघ जात सुजात कुंजर कुम्भ भंजन जानिये, तसु जनक नाम समान नामा भए जिन उर आनिये ॥३॥ जसु चरण पंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो, मिल करि सुरासुर खचर व्यंतर भमर नितचित ऊमह्यो। जसु चरणकमलेष्ठवग लांछन कनक सुवरण कायए । सहु भुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥४॥ जसु मधुरवाणी जगवखाणी पैतीसवर गुणधारिणी। संसार सागर भय करामर पतित पार उतारिणी । स्याद्वाद पक्ष कुठार घारा कुमति मद तरु दारिणी, प्रभुवाणि नित शिवचन्द्र गणिके हवी मंगलकारिणी ॥५॥

### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्द्न पुष्प फलबर्जैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्च्यजे ॥६॥ ॐ ह्वीं परमपरमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सम्भव जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## चतुर्थ श्री अभिनन्दन जिन पूजा

॥ दोहा ॥

श्री चतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भविचित लाय। भक्ति युक्ति संकट हरण, करण तीन सुख्याय ॥१॥

॥ राग सोरठ ॥

(कंद किरण शशि ऊजलो रे देवा०.)

संवर नन्दन जिनवरू रे वहाला अभिनन्दन हितकामी रे। जगद्भिनन्दन जगगुरु रे वहाला, दुरित निकन्दन स्वामी रे ॥२॥ लोका-लोंक प्रकाशता रे बहाला, करता अविचल धामी रे । अन्याबाध अरूपिता

रे बहाला, विमल चिदानन्द स्वामी रे॥३॥ बांछित पूरण सुरमणि रे बहाला, ए प्रभु अंतरजामी रे। ऐसे जिन महाराज रे बहाला, शिवचन्द नमें शिर नामी रे॥॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फलबजैः, सुविमलाक्षत दीप सुघूपकैः । विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ हीं परमपरमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् अभि-नन्दन जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## पञ्चम श्री सुमति जिन पूजा

॥ दोहा ॥

पञ्चम जिननायक नमूं, पंचिम गति दातार । पंचनाणवर विमल कज, वन विकसन दिनकार ॥१॥

॥ राग कैरवो ॥

( वंसी तेरी वैरिणी बाजे रे, )

सुद्धमाव चितथिर घरिके रे । पूजा सुमित जीणंद ॥ सुद्धमाव॰ ॥ जिन भक्तिकरण रसीला, लहो परम आणंद ॥ सुद्धमाव॰ २ ॥ जिनराज सुमित समन्दा, करें कुमित निकन्द । प्रभुना चरण अरिवन्दा, बंदे असुर स्रिन्द ॥ सुद्ध॰ ३ ॥ कनकाम तनु चुित सोहे प्रभु सुमंगलानन्द । करु-णोपशम रस भरिया, बंदे नित शिवचन्द ॥ सुद्ध० ४ ॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फलवजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीमिरहं वसुभिर्ध्यजे ॥५॥ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सुमित जिने-न्द्राय जलं चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## षष्ट पद्म प्रभ जिन पूजा

॥ दोहा ॥

हिव षष्टम जिनवर तणी. पूजन करो उदार । भविचित भक्ति घरि करी, सुख संपति करतार ॥१॥ ॥ राग सारंग ॥

( बाबन चंदन घसि कुम कुमा॰ )

हां होरे देवापदम प्रभु मुख चन्द्रमा, नित सकल लोक सुखदाय ए ॥हां०॥ हरिसुर असुर चकोरड़ा, नित निरख रह्या छळचाय ए ॥ हां ॥ २ ॥ जिन मुख वचन अमृत तणो. जे श्रवण करे भवि पान ए ॥ हां ॥ ते अजरामरता लहे, हरिगण करे जसु गुण गान ए ॥ हां॰ ॥३॥ घर नृप कुल नभ दिन मणि, प्रभु मात सुशीमा नंद ए ॥ हां ॥ प्रभु दर्शनतें प्रति दिने, होज्यो शिवचंद आनन्द ए ॥ हां० ॥४॥

#### ॥ काव्य ॥

सिल्ल चन्द्रन पुष्प फल वर्जैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नन्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ हीं परम परमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् पद्म प्रभ जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## सप्तम सुपा३र्व जिन पूजा

॥ दोहा ॥

श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो, कामित पूरण काज। भो भविजन पूजो सदा, वसुविधि पूज समाज ॥१॥

।। राग कल्याण ॥

( मेरा दिल लाग्या जिनेश्वर से )

मेरी लागी लगन जिनवरसे ॥ मेरी० ॥ जैसे चन्द चकोर भमरकी, कमल मधुरसे ॥ मे॰ ॥ एह सुपारस प्रभु भये पारस, गुणगण

समरण फरसे ॥ मे॰ ॥ चेतन लोह पणो परिहरके, हुय ले कंचन सिरसे। मे॰ ॥२॥ ए प्रमु करुणा करकूं धरिले, उर जिम कमल भमरसे ॥ मे॰ ॥ जे भविजिन पद लगन धरे तसु, निहं भय मरण असुरसे ॥ मे॰ ॥३॥ मात पृथ्वी तनु जात तनु द्युति, सम शुभ कंचन सरसे ॥ मे॰ ॥ कहें शिवचन्द्र चित्त नित मेरो, रहो प्रमु पद लय भरसे ॥ मे॰ ॥॥

### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फलविजाः, सुविमलाक्षत दीपसुधूपकेः । विविध नन्य मधुप्रवरान्नकेः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ॐ हीं परम परमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सुपार्श्व जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## अष्टम श्रीचन्द्र प्रभ जिन पूजा

॥ दोहा ॥
अष्टम जिनपद पूजिये, विविध कष्ट हरनार ।
अष्टसिष्टि नवनिधि छहे, जिन पूजन करतार ॥१॥
॥ राग भीम मल्हार देशी कडखानी ॥
( मेघ बरसे भरी पुष्फ बादछ करी )

परमपद पूर्व गिरिराज परि उदय छिह, विजित परचन्द्र दिनकर अनन्ता। चन्द्रप्रभ चिन्द्रका विमल केवल कला, कलित शोभित सदा जिन महन्ता॥२॥ परम०॥ कुमितमत तिमिर भर हरिय पुन भृरि भिव, कुमुद सुख करिय गुणरयण दरिया। गिहर भव सिंघु तारण तरिण गुण, धारि भव तारि जिनराज तरिया॥ परम०॥३॥ राखिये आज मोहि लाज जिनराज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परिया। परम शिवचंद पद्पद्म मकरंद रस, पान नित करण तत्पर भरीया॥ परम०॥॥॥

॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुप्प फलवर्जैः, सुविमलाक्षत दीप सुघृपकेः । विविध

नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिननमीिभरहं वसुभिर्व्यजे ॥५॥ ॐ ह्वीं परम परमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् चन्द्रश्रम जिनेन्द्राय जलं. चन्द्रनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मद्रां यजामहे खाहा ।

## नवम श्री सुविध जिन पूजा

॥ दोहा ॥

सुविध सुविध समरण थकी, कामित फल प्रकटाय। अतीगहन संसार वन, बहुल अटन मिट जाय ॥१॥

॥ राग ॥

(चंपक केतिक मालती.)

सुविध चरणकज वंदिये ए, नंदिये अति चिरकाल । शिव तरवारि निकंदिये ए, विघन कंद तत्काल ॥ हां ए० २ ॥ आज जन्म सफल भयो, दीठो प्रभु दीदार । तनु मन दृग विकसित भये, जिम कज लखि दिन-कार ॥ हां ए० ३ ॥ अमृत जलधर वरिसयो, भवि उरक्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु अगियो, शिव फलनो दातार ॥ हां ए० ४ ॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्घ्यजे ॥५॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सुविध जिने-न्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## दशम श्री शीतल जिन पूजा

॥ दोहा ॥

मुझ तन मन शीतल करो, श्री शीतल जिनराय।

,这是是是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这个人,我们

### ॥ राग घाटो ॥

## ( दादा कुशल सुरिन्द॰ )

मेरे दीन दयाल तुम भये सकल लोक प्रतिपाल। सुणि शीतल जिनवर महाराज, चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज ॥ मेरे दीन॰ ॥ न नमूं सहु सिवकारी देव, करसूं चरण कमलनी सेव ॥ मेरे॰ २ ॥ जैसे सुमिरण करतल पाय, कुण ले कांच सकल हुलसाय। तुम सम सुरवर अवर न कोय, हेर हेर जग निरख्यो जोय ॥ मेरे॰ ३ ॥ प्रभु दर्शन जलधर धनधोर, लिखय नृत्य करे भविजन मोर । पद शिवचन्द्र विमल भरतार, अरज एह उर धारिये सार ॥ मेरे॰ ४ ॥

#### ॥ काव्य॥

सिलल चन्दन पुष्प फलविज्ञः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् शीतल जिने-न्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## एकादश श्री श्रेयांस जिन पूजा

॥ दोहा ॥ श्रीश्रेयांस जिनेन्द्र पद, नद द्युति सिल्लाघार । जे नेत्रे मञ्जन करे, ते शुचि हुई विधुतार ॥१॥

### ॥ राग ॥

( सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण॰, )

श्रीश्रेयांस जिनेश्वर जग गुरु, इन्द्रिय सदनसमंद हैं। जसु वसु विध पूजन से अरचो, उर धरि परमानन्द हैं॥ ए समकित धर श्रावक करणी, हरिणी भविमन रंग हैं। विजय देव जिन प्रतिमा पूजी, जीवाभिगम उपांग हैं॥ श्री॰ २॥ सूरियाभ प्रभु पूजन करियो, राय पसेणी उपांग हैं। ज्ञाता अंगे द्रौपदी श्राविका, पूज्या जिन प्रति बिम्ब हैं। काल अनंत

भमसी भव वनमें, मंदमती भय भ्रान्त हैं ॥ श्री॰ ३ ॥ विष्णु मात तनु जात नृप, विमल कुलंबर हंस हैं । सकल पुरन्दर अमर असुरगण, शिरो-वरि प्रमु अवतंस हैं । इम सुरवरनी परिश्रावक जे, पूजे जिन उन्नरंग हैं । ते शिवचन्द्र परमपद लहिस्ये, निश्चय करि भव भंग हैं ॥ श्री॰ ४॥

॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फलबजैः, सुविमलाक्षत दीप सुघूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्ध्यजे॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् श्रेयांस जिने-न्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, सुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## द्यादश श्री वासुपूज्य जिन पूजा

॥ दोहा ॥

हिव बारम जिनवरतणी, पूजन करिये सार । भाव भक्तियुत भवि सदा, द्रव्य भक्ति चितधार ॥१॥

॥ राग ॥

( सब अरति मथन मुदार धृपं )

सकल जगजन करत वंदन, जया नंदन सामि रे। दुरित ताप निकन्द चन्दन, परम शिव पद गामि रे।। देवा॰ २॥ नृपित वर वसुपूज्य नृप कुल, विपिन नंदन जात रे। सहिर चंदन नंद नंदन, नंद मदिकय घात रे॥ देवा॰ ३॥ वासु पूज्य जिनेन्द्र पूजो सकल जन महाराज रे। करत नृति शिवचन्द्र प्रभु ए, निखिल सुर सिरताज रे॥ देवा॰ ४॥

#### ॥ काव्य ॥

सिल्ल चन्दन पुष्प फलविज्ञः, सुविमलाक्षत दीप सुधृपकः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकेः जिनममीभिरहं वसुभिर्व्यज्ञे ॥५॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् वासुपृज्य जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे खाहा ।

# त्रयोद्श श्री विमल जिन पूजा

॥ दोहा ॥

विमल विमल प्रभु कर मुझे, मलिन कर्म करो दूर। तेरम प्रमु रिमये सदा, मुझ उर मिझ गुणपूर ॥१॥ ॥ ढाल ॥

(सिद्ध चक्र पद वंदो रे भ०)

विमल चरण कज बंदो रे, बंदनसे आनन्दो रे। जसु गणधर मुनि-वर गण मधुकर, सेवत पद अरविन्दो । स्थाम उदर सुगति मुक्ता फल, कृतवर्मा नृप वंदो रे ॥ भवि॰ २ ॥ सहुजग मंडल विमल करणकूं, शासन नभ चंदो । उदय भयो भवि कुमुद विकसवा, वर गुण रयण समंदो रे ॥ भवि॰ ३ ॥ यदि भव बंघ हरण भवि चाहो, प्रभु वंदी चिर-नंदो । विमल चिदानन्द घन मय रूपी, नित बंदत शिवचन्दो रे ॥भ०४॥ ॥ काव्य ॥

सिलल चन्द्न पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुघूपकैः। नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् विमल जिने-न्द्राय जरुं, चन्दनं, पुष्पं, घूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फरुं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे खाहा ।

चतुर्दश श्री अनन्त जिन पूजा

॥ दोहा ॥

हिव चउदम जिन पूजतां, हरिये विषय विकार। भो भवियण सुणिये सदा, ए प्रभु सरणाघार ॥१॥ ॥ ढाल ॥

( पंचवर्णी अंगी रची॰, )

पूज करणी प्रभुजीनी दुरित निवारी ॥ दुरित॰ ॥ अनंत तरणि हिम

करण तरण तर, किरण निकर जीता है भारी। अनंत नाणवर दर्शन तेजे, प्रमुसूं यशोदर हैं अवतारी ॥ पू॰ २ ॥ लोकालोक अनंत द्रव्य गुण, पर्याय प्रकट करण है हारी। तातें अन्वय युत जिन धरियो, अनंत नाम अति है मनुहारी ॥ पू॰ ३ ॥ सिंहसेन नृप नंदन वंदन, करते इन्द्रचन्द्रें सुखकारी। सादि अनंत मंग स्थिति धरियो, पद शिवचन्द्र विजयये-धारी॥ पू॰ ४ ॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्द्रन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् अनन्त जिने-न्द्राय जलं, चन्द्रनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, सुद्रां यजामहे स्वाहा।

## पञ्चदश श्रीधर्म जिन पूजा

॥ दोहा ॥

भातुभूप कुल भातुकर, पनरम जिनसुर सार । शोभित सहु जग विपिनजन, हरष फलद जलधार ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

धर्म जिनेश्वर धरम धुरंधर, जग बन्धव जग बाला। सुन्नता नंदन पाप निकंदन, प्रभु भये दीन दयाला॥ मैं वारिजाऊं २॥ प्रभु धीरज गुण निरिस अमर गिरि, लिज लीनो अचला धारा। जिन गंभीरता चरम सिंधु लिख, किय लोकान्त विहारा॥ मैं॰ धर्म॰ ३॥ ए जिन चंद्र चरण अरचनतें, लिह जिन पति अवतारा। करम वैरि दल करि भवि लिहस्यो, पद शिवचन्द्र उदारा॥ मैं॰ धर्म॰ ४॥

#### ॥ काच्य ॥

सिल्ल चन्दन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नन्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्म्यजे ॥५॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने · 并是不是不是不是不是不是不是不 人名克格斯特的 人名西班西斯特的

· 并不是我的,我就是我的我的,我就是我的,我就是我的人,我就是我的人,我就是我的人,我们就是我的人,我们也是我们的人,我们是这个人,我们是我们的人,我们是我们

अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् धर्म जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# षोडरा श्री शान्ति जिन पूजा

॥ दोहा ॥

अचिरा उदरे अवतरी, शांति करी सुस्रकार । मारि विकार मिटायके, नामधरचो शांतिसार ॥१॥

॥ राग विभास ॥

( भावधरि धन्य दिन आज सफलो गिणूं, )

शान्ति जिनचंद्र निज चरण कज शरण गत, तरिण गुणधारि भववारि तारी। कुमित जन विपिन जिन, कुमित घन वृतिन तित, छितिन शितधार तरवार वारी॥ शां॰ २॥ एक भव पद उभय चक्रधर तीर्थकर, धारिया वारिया विघनवारी। सकल मद मारिया, विमल गुण धारिया सारिया भक्ति वंछित अपारी॥ शा॰ ३॥ हरिण लंछन धरा, वर्ण सुवरण करा, सुरवरा हित धरा गत विकारी। मोहभट धरिण धरगण हरण वज्रधर, कुसुद शिवचन्द्र पद रजिनकारी॥ शा॰ ४॥

#### ॥ काव्य ॥

सिंठल चन्दन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नन्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्च्यजे ॥५॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् शान्ति जिने-न्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# सप्तदश श्री कुन्थु जिन पूजा

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीपसम, मिझ भवसागर जाण । भक्ति युक्ति नित पूजिये, लहिये अमल विनाण ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

### ( अरिहन्त पद नित ध्याइये )

कुंयु जिणंद गुण गाइये ॥ वारि ॥ मन वंछित फल पाइये रे । प्रमु समरण लय लाइये ॥ वारि ॥ भविभव तिज शिव जाइये रे ॥ कुंयु ॥ २॥ भव जलगत निज आतमा ॥ वा ॥ करणा उर धिर ताइये रे । चरण करण उपयोगिता ॥ वा ॥ ग्रहण करण कूं धाइये रे ॥ वा ॥ कुं ॥ ३॥ ए प्रमु दर्शन जीव ने ॥ वा ॥ अनुभव रसनो दाइये रे । वर शिवचन्द विमल बघे, दिन दिन शोभा सवाइये रे ॥ कुं ॥ १॥

#### ॥ काव्य ॥

सिल्ल चन्दन पुष्प फल्क्नजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नन्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीमिरहं वसुमिर्य्यजे ॥५॥ ॐ हीं परम परमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् कुंयु जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## अष्टादश श्रीअरनाथ जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जिन अठारमो ध्याइये, भविजन चित्त मझार । करण तीन इककर मुदा, प्रतिदिन जयजयकार॥१॥

### ॥ राग ॥

( वसंत संग लागी ही आवे, कुण खेले तोसं होरी रे )

निज विमल भक्तिसे अर जिनसे नित रिमये रे ॥ निज॰, नि॰ ॥ निजगुण निजगुण तुल्य करणकूं, चंचल चित हिय दिमये रे ॥ नि॰ ॥२॥ सुमित युवित संयम उर धरिके, कुमित नारि संग गिमये रे ॥ नि॰ ॥ अनुभव अमृत पान करणते, विषय विकृत विष दिमये रे ॥ निज॰ अर॰ ॥३॥ जिनवर संग रमण दव अनले, पंक सघन वन घिमये रे । कहे शिवचन्द्र जिनेन्द्र रमणसे, भवरणमें निव भिमये रे ॥ नि॰ ॥४॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फलविज्ञोः, सुविमलाक्षत दीप सुघूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनमभीभिरहं वसुभिर्च्यजे ॥५॥ ॐ हीं परम परमा-त्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् अरनाथ जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, सुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## एकोनविंश श्रीमिह जिन पूजा

॥ दोहा ॥

उगणीसम जिन चरणकज, भमर होय लयलाय । सेवे तसु भवि भमरता, अगणित दुरित विलाय ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

मिश्लिजणंद उपकारी रे ॥ वाला मिश्लि० ॥ मैं तो वारी जार्ज वार हजारी रे ॥ वाला मिश्लि० ॥ कुंम नरेक्कर गगनांगणमें सहस किरण अवतारी रे ॥ वाला० मिश्लि० ॥२॥ पूरव भव षट्मित्र नरेन्द्र प्रति, बोधि सिन्धु भवतारी । वेदत्रयी चिर ही तनु धारचो, सकल संघ सुखकारी रे ॥ वाला० मिश्लि० ॥३॥ शकल कुशल हिर चंदन तरुवर, नंदन वन अनुकारी रे ॥ संघ चतुरविध भूरि खचरगण प्रणत चन्द्र अनुहारी रे ॥ वाला० मिश्लि० ॥॥॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्दन पुष्प फल बजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः, जिनममीभीरहं वसुभि-र्य्यजे ॥५॥ ॐ हीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मर्जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् मिल्ल जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

## विंशतितम श्रीमुनिसुत्रत जिन पूजा

॥ दोहा ॥

पद्मोत्तर वर पद्मनद, गत पर पद्म समान । विंशतितम जिन पूजिये, केवल लिच्छ निधान ॥१॥ ॥ राग गरवो (ढाल) ॥

( सुण चतुर सुजाण, परनारीसे प्रीति कबहु नहिं कीजिये )

मुनि सुब्रत जिनेन्द्र सुनिजर धरि मुझपर वर द्रशन दीजिये। प्रमु द्रश प्रीति निरुपाधिकता, करिये छिहिये शिव साधकता। तब तुरत मिटे सब बाधकता।। मु॰ २॥ अमृतमें साध्य पणो विछसे, प्रमु द्रशन साध-नता उछसे। तब मुझमें साधकता मिछसे॥ मु॰ ३॥ मिन्नादि करणता यदि विघटे, एकाधि करणता यदि सुघटे। तबमुझ शिव साधकता प्रकटे॥ मु॰ ४॥ एकाधिकरणता मुझ करिये मिन्नाधिकरणता परिहरिये। शिवचन्द्र विमछ पद् तब वरिये॥ मु॰ ५॥

#### ॥ काव्य ॥

सिटिट चन्दन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नन्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्च्यजे ॥६॥ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

## एकविंशतितम श्री निम जिन पूजा

॥ दोहा ॥

अंतर वैरि नमाविया, तब लहियो निम नाम । भविजन ए प्रभु पूजसे, सरिये वंछित काम ॥१।

### ॥ राग (ढाल)॥

(हम आये हैं शरण तिहारे, तुम प्रभु शरणागत तारे,)
श्रीनिम जिनवर चरण कमलमें, नयन भमर युग धरियें रे। तिण
किय गुण मकरंद पानसे, चेतन मदमत करियें रे॥ वारि चेतन॰ २॥
एह चरण कज अहनिश विकसे, परकज निसि कुमलावे रे। ए न बले
बिल तुहिन अनलसे अपर कमल बल जावे रे॥ वा॰ ३॥ ए पद
कज गुण मधुरस पीवत, जीव अमरता पावे रे। अपर कमल रस लोभी
मधुकर, कजगत गज गिल जावे रे॥ वा॰ ४॥ परकज निजगुण
लिच्छपात्र हैं, पदकज संपद् देवें रे। तातें पद शिवचन्द्र जिणंदके अहनिश्चि सुरवर सेवें रे॥ वा॰ ५॥

#### ॥ काव्य ॥

सिंटल चन्दन पुष्प फलवजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे॥६॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् निम जिने-न्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## द्यविंशतितम श्री नेमी जिन पूजा

॥ दोहा ॥

बाबीसम जिन जगगुरू, ब्रह्मचारि विख्यात । इण बंदन चंदन रसे, पाप ताप मिट जात ॥१॥ ॥ राग रामगिरि (ढाल)॥ ( गात्र लृहे जिन मन रंगसूं रे देवा )

नेमि जिणंद उर घारिये रे, विषय कषाय निवारिये रे। वारिये हां रे बाला ब्रारिये, ए जिनने न विसारिये रे॥ वा॰ २॥ जलघर जिम प्रसु गर-जता रे, देशना अमृत वरसता रे। वरसता हां रेवाला वरसता, भविक मोर

सुनि उल्लस्ता रे ॥ वा॰ ३॥ समवसरण गिरि परिहरचा रे, भामंडल चपला वह्या रे। चपला वह्या, सुरनर चातक ऊमह्या रे ॥वा॰४॥ बोध बीज उपजावियो रे, भवि उर क्षेत्र बधावियो रे । भविक सुगति फल पावियो रे ॥ वा॰ ५॥

#### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्द्रन पुष्प फलब्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः विविध नन्य मधु प्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥६॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा सृत्यु निवारणाय श्रीमद् नेमि जिनेन्द्राय जलं, चन्द्रनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं फलं, वस्त्रं, सुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## त्रयोविंदातितम श्रीमत्पार्च्व जिन पूजा

॥ दोहा ॥ अखसेन नंदन सदा, वामोदर खनि हीर। लोक होखर शोभे प्रभू, विजित कर्मबड़ वीर ॥१॥

॥ राग ॥

( बाजे तेरा बिछुआ बाजे, )

पास जिणंदा प्रभु मेरे मन बिसया। शिव कमलानन कमल विमल कल, तर मकरंद पान अति रिसया॥ वामानन्दन मोहिन मूरत, सकल लोक जनमन किय विसया॥ पास जि॰ २॥ परम ज्योति मुख चंद विलोक्ता, सुरनर निकर चकोर हरिसया। अंजन गिरि तनु दुति जिन जलधर, देशना अमृतधार वरिसया॥ पास जि॰ ३॥ पिय किर भवि चिरकाल तरिसया, सुगति युवित तनु तुरत फरिसया। कुमुद सुपद शिवचन्द्र जिणंदिनी, वारिजाऊं मन मेरो अतिह हुलसिया॥ पास जि॰ ४॥

#### ॥ काव्य ॥

सिल्ल चन्दन पुष्प फलवजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्ध्यजे ॥५॥ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् पार्श्व जिने- ,这一个,我们是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们的,我们的人,我们的人,我们是我们的人,我们的人,我们们的人,我们们的 न्द्राय अलं चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# चतुर्विंशतितम श्रीमद्यीर जिन पूजा

॥ दोहा ॥ इक्षाकु कुल केतु सम, त्रिशलोद्र अवतार । ए प्रमुनी नित कीजिये, विविध मक्ति सुखकार ॥१॥

॥ राग ॥

( तेज तरण मुख राजे. )

चरम बीर जिनराया, मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया । सिद्धारथ कुल मंदिर ध्वज सम, त्रिशला जननी जाया। निरुपम सुन्दर प्रभु दर्शन तें, सकल लोक सुख पाया ॥ मेरे॰ २ ॥ वामा चरण अंगुष्ट फरसते, सुर गिरिवर कंपाया । इन्द्रभूतिगणघर मुख मुनिजन, सुरपति वंदित पाया ॥ मेरे० ३ ॥ वर्तमान शासन सुखदाया, चिदानंद घनकाया । चन्द्र किरण गुण विमल रुचिर घर, शिवचन्द्र गणि गुण गाया॥ मेरे॰ ४॥ वर-स नंद\* मुनि नाग धरणि मित, द्वितीयाखिन मनमाया । धवल पक्ष पंचमि तिथि शनियुत, पुरजय नगर सुहाया ॥ हां मेरे॰ ५ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरी-इवर साहिब, वर खरतर गच्छराया । क्षेमकीर्ति शाखा भूषण मणि, रूपचन्द्र उवझाया ॥ मेरे॰ ६ ॥ महापूर्व जसु भूरि नरेश्वर, वंदे पद हुलसाया । तासु शिष्य वाचक पुण्यशील गणि, तसु शिष्य नाम घराया ॥ मेरे००॥ समय सुन्दर अनुग्रही ऋषिमंडल, जिनकी शोभा सवाया। पूज रची पाठक शिवचन्दे, आनंद संघ बघाया ॥ मेरे॰ ८ ॥

### ॥ काव्य ॥

सिलल चन्द्न पुप्प फल व्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नट्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीनिरहं वसुभिर्य्यजे ॥९॥ ॐ ह्वीं परम परमा-

<sup>\*</sup> यह पूजा उपाध्याय श्री शिवचन्द्रजी महाराज की वनाई हुई है और सं० १८७६ में दूसरे आसोज सुदी ५ शनिवार को वनी है।

的,这样,这一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们,我们的一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

त्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय मद्वीर जिनेन्द्राय जलं<sup>न</sup>, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# शासन पति पूजा

## प्रथम जल पूजा

॥ दोहा ॥

सरस्वती जगदीश्वरी, श्रुतदेवी सुखदाय।
जिन मुख उद्भव भारती, नमों शारदा माय॥१॥
बर्धमान जिनवर नमूं, जिन शासन सरदार।
विझ हरण मंगल करण, नमूं मंत्र नवकार॥२॥
तूं दायक सोवन गुरू, वाकूं करूं प्रणाम।
दीवाली पूजन रचूं, वीर जिनेश्वर नाम॥३॥
पूजा शिव सुख दायिनी, कहमूं सूत्र प्रमाण।
शासनपति महाबीर के, पूजो छह कल्याण॥॥॥

也是一个,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

॥ सोरठा ॥

जल चन्दन वरफूल, धूप दीप अक्षत महा। नैवेद्य फल पटकूल, ध्वजा अर्घ आरात्रिका॥५॥ ॥ दोहा॥

उत्तम जल कलशा भरी, पूजा त्रिशलानंद। निर्मल होवे आतमा, दिन दिन होत आनंद॥६॥

॥ कवाली ॥

( राम कहने का मजा जिसकी जबां पर आगया ) आज मैं आया शरणमें, नाथ करुणा कीजिये । कठिन कमों में पड़े

<sup>ी</sup> जल, चन्द्रन, पुष्प, धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य, फल, नारियल, वस्न और नगड़ी सब चीजें चौबीस चौबीस होनी चाहिये।

,这个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们 की लाज अब रख लीजिये॥ जातिकी एक बाह्मणी थी, देवा नंदा नाम था। ऋषभदत्तकी वो वधू थी, विप्रकुल उजला दिया॥ आज॰ ७॥ शुक्क छह आषाढ की, रात्री पटल से छा रही। देवानंदा ब्राह्मणीने, अल्प निद्रा ले लई ॥ आज॰ ८॥ माता बनाई आपने, उसके उद्दर अवतार ले । दिवस ब्यासी रहे उनके, मनोरय सब फल चले ॥ आज॰ ९॥ इंद्र के आदेश से, हरनेगमेषी आ परे। उस ब्राह्मणी की कोखसे, सिद्धार्थ के घरमें घरे ॥आज॰१०॥ शास्त्र इसको गर्भ हर, कल्याण कह अपना लिया। आपने उस ब्राह्मणी का, नाम अजरामर किया ॥ आज॰ ११ ॥

( किससे करिये प्यार यार खुदगरज जमाना है )

महावीर जिनचंद नंद, सिद्धारथ राजा स्वर्गलोक से आए, क्षत्रीकुंड नगर मन भाए। त्रिशला उद्र अवतार लियो, नंदन महाराजा के ॥ महा॰ १२॥ आखिन विद तेरस दिन आए, माता उदर गर्भ कहलाए। धनद देव मंडार तत्क्षण महाराजाके ॥ महा॰ १३ ॥ स्वप्न चतुर्दश मात निहारी, सचराचर सब भए सुखारी। घर घर मंगल माल होत, दिन दिन महाराजा के ॥ महा॰ १४॥ चैत्र सुदी तेरस दिन आया, तीनलोक में आनंद छाया । जन्म लीन महाराज घरे, सिद्धारथ राजा के ॥ महा॰ १५॥ सकल भुवन में कर उजियारे, दास चतुरके कारज सारे। करे जन्म अभिषेक सुरासुर, पति महाराजा के ॥ महा॰ १६॥ ( चाल इन्द्रसभा )

पाप कर्म सवि घोवन कारन, सुद्ध चेतन परकास । जल पूजन कर शासन पतिकी, निर्मल आतम भास ॥१७॥ ( रागिनी भैरवी त्रिताल )

प्रभुजी को सुरपतिस्नात्र करावे, सुर नर सवि सुख पावे ॥ उत्तम कलश सुवर्ण रजत के, नीर सुगंघ भरावे । क्षीरोदक गंगोदक आने,

inder the substitution of the control of the contro

सर्वीषघि जल लावे ॥प्र०१८॥ तीर्थोदक वर पद्मद्रहोदक, जल अभिषेक करावे । कल्याणक अभिषेक करे जो, दास चतुर गुणगावे ॥प्र०१९॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीराचीर्थमिदं प्रवृत्तमतुरुं वीरस्य धोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥२०॥

ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

## द्वितीय चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केशर चन्दन मृगमदा, अंबर और बरास । लेई पूजी सिन्धार्थमूं, महाबीर हरि रास ॥१॥ (कितनीक दूर तेरी काशी रे पांडे)

शासनपित महाबीर रसीछे, शासनपित महाबीर रसीछे॥ छप्पन दिक्कुमरी गुण गावे, आवे जिनवर तीर रसीछे। चाँसठ सुरपित पांडुक वन में, पूजे जिनवर वीर रसीछे॥२॥ ताल मृदंग दुंदुमी वाजे, सरनाई गंभीर रसीछे। ताथेइतान करत सूं विनता, तीर करे प्रभु तीर रसीछे॥३॥ देव सकल सुरनाथ हुकुम से, लावे तीरथ नीर रसीछे। धिस चन्दन धनसार विलेपन, लावे सुरवर धीर रसीछे॥३॥ शक्रइंद्र पड़ गए संशय में, देखाबाल सरीर रसीछे। संशय मोचन चरण परससे, मेरु चलायो धीर रसीछे॥४॥ थर थर कांप गये सुरपित सुर, देखि अतुल वल वीर रसीछे। दास चतुर अब प्रमुकूं पूजे, कुंकुम चंदन सीर रसीछे॥६॥

( चाल इन्द्रसभा )

शुद्धातम चन्द्रन करि घिसिये, ज्ञानादिक गुण साय। सौरभ प्रगटे सकल लोक के, होय निरंजन नाय॥७॥ <sub>路地</sub>说的是非常的是一种,他们是是一个人,他们是一个人,他们们是一个人,他们们们是一个人,他们们们是一个人,他们们们是一个人,他们们是一个人,他们是一个人,他们是一个人

### (रागनी त्रिताल)

भक्ति बाले ! शासन नायक, सेव अब पूज निरंजन देव ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, और बरास मिलेव । क्रम जानूं कर कंध सीस भाल गल, नव अंग पूजन भेव ॥ भ॰ ८ ॥ मेरो साहिब प्राण पियारो, जो है देवाधि देव । याके अंग परस सुख उपजे, वो मुख कहि न सकेव ॥ भ॰ ९ ॥ प्रसुगत रागी अद्भृत रागी, यह आश्चर्य कहेव । हे अनियारे अखियन वारे, दास चतुर सुख देव ॥१०॥

### ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणामिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीराचीर्थमिदं प्रवृत्तमतुरुं, वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः, श्री वीरमद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्वीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

## तृतीय पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

अपतित भूमि सुगन्ध शुभ, घौत प्रमार्जित फूल । पंच वरण भाजन भरी, पूजन समकित सूल ॥१॥

( दिलदार यार गबरू राखूं घूंघट का पट में )

सुनिये विनय हमारी, महावीर नोम वारे। हम बाल मित्र आए, आज्ञा पिता कि पाए। खेलन कुं जीव चाहे, महावीर नाम वारे। सुनिये॰ ॥२॥ आली अशोक वारी, उसमें खिली है क्यारी। फूलन बहार न्यारी, महावीर नाम वारे। सुनिये॰ ॥३॥ चाले सखा बुलाए, वन वाटिकामें आए। फूलनके हार पाए, महावीर नाम वारे। सुनिये॰॥॥॥ अज्ञान का पठाया, सुर एक मूर्ख आया। करि नाग रूप धाया, महावीर नाम वारे। सुनिये॰ ॥५॥ आके सखा पुकारा, आता है नाग कारा। सुनके उलार डारा, महावीर नाम वारे। सुनिये॰ ॥६॥ पुनि कीन दुष्ट

माया, प्रमुने उसे दबाया। अब दास सिर नमाया, महावीर नाम वारे। मुनिये॰।।७।।

### ॥ इन्द्रसभा ॥

हृदय कमलदल स्थित परमेश्वर, चिदानंद भगवान । वाके गुण कुसुमावलि करके, पूज सकल सुखदान ॥८॥

### राग मालवी गौडी

पूज हो कल्याण प्रमुका, सकल सुर सुख दाय ये देवा। पंच सायक दुःखदायक, नास तसु हो जाय ये देवा, नास। मालती मुचकुंद दमणो, केतकी सरसाय ये देवा, केतकी। पडल चंपक मोगरा सिति, बोलश्री वरलाय ये देवा बोलश्री। शांच वरण प्रमोद दायक, कुसुम वन वर साय ये देवा कुसुम। भक्ति भाव प्रमोद करिके, सरस दाम बनाय ये देवा, सरस। शांश।। नाम मेरो प्राण जीवन, देख मन हुलसाय ये देवा, देख। चतुर सागर दासने अब लियो हृदय लगाय ये देवा, लियो। ॥११॥

### ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वर्क्म निचयो, वीराय नित्यं नमः । वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य धोरं तपः । वीरेश्री धृतिकीर्त्ति कान्ति निचय, श्रीवीरमद्रं दिशः ॥१२॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय पुष्यं यजामहे स्वाहा ॥

## चतुर्थ धूप पूजा

॥ दोहा ॥

शुद्धौषध चूरन करी, द्रव्य सुगन्ध मिलाय । प्रभु सम्मुख करिये हवन, कर्म समिध जल जाय ॥१॥ ( उद्धवजी कब दर्शन देंगे, बंशी के बजाने वाले )

सांइयां अब कब मिलना होगा, कहे नंदीवर्धन भाई ॥ तुम संयम मारगमें जाते, हम ऊपर दया न लाते । अब काह करें हम नाथजी,

ना रहे पिता अरु माई ॥ सांइयां॰ २ ॥ मगसर विद दशमी आई, इन्द्रा-दिक इन्हें बधाई । अब संयम लेते सांइयां, सब जीवको सुखदाई ॥ सांइयां॰ ॥३॥ यह संयम मारग वंका, निहं इसमें कुछ भी शंका । यह नहीं सोवनी लंका, कइ कष्ट परे दुखदाई ॥ सांइयां॰ ॥१॥ संसार सकल दुखखानी, कइ मरे जा रहे प्रानी । यह सांची विधि तुम जानी, इस कारण चले दुराई ॥ सांइयां॰ ॥५॥ प्रसु संयम लेकर भारी, सिव कर्म सिमिध कूंजारी । कहे दास चतुर बलिहारी, कर जोड़ि वीर जिन राई ॥ सांइयां॰॥६॥

#### ॥ इन्द्रसभा ॥

अष्ट कर्म वनदाह करन घन, है तप अग्नि समान । पिंडपात्र करि धूप करेसो, पावे निर्मल ज्ञान ॥७॥

( रागनी एमन कल्याण, धीमें त्रिताले की ठुमरी )

तूं ईश्वर प्राण पति मेरा, और न कोई सहायक मेरा ॥ तूं ही जगतारक दुःख निवारक, असरन जनको सरन है तेरा । कृष्णागुरु अरु मृगमद अंवर, छेइ घनसार छोबान सु गहेरा ॥ तूं॰ ८ ॥ धूप करों प्रसु सम्मुख तोरे, सरस सुगंध अति सुख देरा । दास चतुर कूं पार उतारो, मैं हूं प्रमु शरणागत तेरा ॥ तूं॰ ९ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिता । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः । वीराचीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरमद्रंदिश ॥१०॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

## पञ्चम दीप पूजा

॥ दोहा ॥

शुद्ध हवी शुभ पात्रमें, शुद्ध वर्तिका जोय। करि दीपक पूजे प्रभू, मोह तिमिर क्षय होय॥१॥ (रागनी मांड)

महावीर प्रभूने तप संयम दीपाया हैंजी वाह, वाह वाह जी हो हो हो हो महावीर प्रभूने ॥ चंड कौशिक फणी आयके, दियो आपके डंक । महाराज उसको अष्टम स्वर्ग पठाया हैंजी वाह ॥ वाह० २ ॥ शुल हस्त घर है देखनें, दिये कष्ट अति घोर । बलिहारी उसको सिद्धारथ समझाया हैंजी वाह ॥ वाह० ३ ॥ संगम सुर एक नीचनें, दिये घोर उपसर्ग । सुरराज उसको सुग्दर मार भगाया हैंजी वाह ॥ वाह० २ ॥ कानोंमें कीलें दई, गवली नीच अजान । जिनराज उसपर शान्ति भाव दरसाया हैंजी वाह ॥ वाह० ५ ॥ तप दीपक दीपाय के, मोह तिमिरक्षय कीन । महावीर प्रभूके दास चतुर, गुण गाया हैंजी वाह ॥ वाह० ६ ॥ ॥ इन्द्रसभा ॥

> चेतन पात्र सुकर्म वर्तिका, दुखद कर्म हवि होय। ज्ञान ज्योति प्रगटे तनु भीतर, तम अज्ञानको खोय॥७॥ (रागनी भैरबी)

प्राण मेरे ख्या सुप्रदीपक आज, साहेब गरीव निवाज ॥ तृं प्रमेश्वर तृं जगदीश्वर, तूही सुधारन काज । तेरी अखियन पर में वारी, जाऊं हूँ महाराज ॥ प्रा॰ ८ ॥ तुमसे मेरा प्रेम देखके, हाय कर्मको लाज । अब जो साहेब प्रेम मिटादां. तो सुझ हाय अकाज ॥ प्रा॰ ९ ॥ दीख पड़्यों अब रूप तुम्हारां, इस दीपकके साज । दास चतुरके बांदित फल गण, रंक निपायां राज ॥ प्र॰ १० ॥

॥ इलाक ॥

वीरः सर्वे मुरा मुरेन्द्र महितो, बीरंबुधाः मंश्रिताः । बीरेणामिहतः

स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री घृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरमद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय दीपं यजामहे खाहा ।

## षष्ट अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

पंचवर्ण अक्षत सरस, भरि कंचनके थाल । अक्षत प्रमु गुण गायके, पूजों दीन दयाल ॥१॥ ( कृष्ण घर नंद के आये, सितारा हो तो ऐसा हो )

बीर सिद्धार्थके नंदन, जिनेश्वर हो तो ऐसे हों॥ वैशाख की दशमी, मिला है ज्ञान जिनवर को। कटे हैं फंद कर्मों के, महावीर हों तो ऐसे हों ॥ वीर॰ २ ॥ मिला एक आय अभिमानी, इन्द्र भूती त्राह्मण था। बनाया शिष्य अरु गणघर, गणेश्वर हों तो ऐसे हों ॥ वीर॰ ३ ॥ दिघ बाहन नरेश्वर की, घिया चंदन सुबाला थी । किया पर वर्तिनी उसको, दयावर हों तो ऐसे हों ॥ वीर॰ ४॥ मंखली पुत्र कोघा ने, जलाए दोय मुनिवर को। किया नहिं कोघ कुछ उसपर, क्षमाधर हों तो ऐसे हों ॥ बीर॰ ५॥ जमाली दुष्ट निन्हव को, दिया सुरलोक रहने को। चतुरसागर मुनीजनके, महेश्वर हों तो ऐसे हों ॥ बीर० ६ ॥

### ॥ इन्द्रसभा ॥

अक्षत द्रव्य मोक्ष सुख अक्षत, अक्षत केवल ज्ञान । अक्षत तत्त्व योनि पुनि अक्षत, पांचों अक्षत जान ॥७॥

( रागनी आशावरी )

नाथ तेरे अक्षत सुख से यारी, मैंने करलड़ है सुखकारी॥ तेरे घर में भूख न प्यासा, जन्म नहीं नहिं मारी । रोग न शोक न वृद्ध न बाल न, ये सब अचरजकारी ॥ ना॰ ८॥ स्वामी शिव वनिताको

रितयों, जाने सब संसारी । क्षणभर अक्षत सुख नहिं छोड़े, लोक कहें ब्रह्मचारी ॥ ना॰ ९ ॥ तूं नहिं हमरी ओर निहारे, हमने काह बिगारी । तेर कारण पियारे, हम तरसत हैं भारी ॥ ना॰ १० ॥ तेरे कारण बन बन भटकी, खाक बदन में डारी । दास चतुर की ओर न देखे, अब क्या मरजी तिहारी ॥ ना॰ ११ ॥

### ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य धोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥१२॥ ॐ ह्वीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

## सप्तम नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस शुची पकान्नले, भिर नैवेद्य के थाल । शासनपति महावीरके, आगे धरों रसाल ॥१॥ (तर्ज बनजारे की)

महावीर जिनेश्वर ज्ञानी, सुखदायक बोले वानी॥ करि समवसरण सुर राजा, गढ कांगुर ओ दरवाजा। विचरल पीठिका जानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी॥२॥ आशोक वृक्षकी छाया, सिर चामर छत्र धराया। सुर दुंदुमि नाद वखानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी॥३॥ तहां विठ परिपदा बारा, भामंडलका उजियारा। सिम देखत जिनवर कानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी॥४॥ पशुपक्षी सुरनर सारे, भिनमिन देसावर वारे। सिम समझ परे जिनवानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी॥५॥ वाणी अमृत रस वरसे, सुन सकल परषदा हरपे। कहे दास चतुर सुख खानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी॥६॥

LATION TO THE SECTION OF THE SECTION

॥ इन्द्रसभा ॥

पांच सुमित पंचेंद्रिय निग्रह, सोहि सरस पकान्न । रस अनंत युत मिष्ट पदारथ, छे पूजों भगवान ॥७॥ ( रागनी कांगडा प्रभाती )

मेरे प्रभु को मीठो दर्शन, कहो किसको नहिं भावेजी॥ कामी कोधी कपटी धुतारे, उनकूं नहीं सुहावेजी। द्वेषी अज्ञ पापी जन प्रभुकूं, देखि देखि जल जावेजी॥ मेरे॰ ८॥ सज्जन मित्र भले मन वारे, इसके ही गुण गावेंजी। दुष्ट कर्मको मारनहारे, वे इसके दिग आवेंजी॥ मेरे॰ ९॥ गुड भी मीठों शाकर मीठी, मीठी चिकया मावेजी। अन्न भी मीठो अमृत मीठो, नहिं दर्शनके दावेंजी॥ मेरे॰ १०॥ भिर नैवेद्य थाल कंचन के, प्रभुके सम्मुख ठावेंजी। दास चतुर अब मीठो दर्शन, जन्म जन्म विच पावेंजी॥ मेरे॰ ११॥

### ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुरुं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरमद्रंदिशः ॥१२॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

## अष्टम फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल पूजन महाराज की, करे भविक धरि प्रेम । बिन प्रयास पार्वे सही, शिवफल निश्चय नेम ॥१॥

॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर छे मेरी ॥ शासनपति महावीर जिनेखर, अविचल शिवसुख पायो रे॥ पावा पुरि में करि चल्लमासो, सांचो धर्म दिपायो रे। हस्तिपाल राजा प्रसु पूजे, तन मन धन हुलसायो रे॥ शा॰ २॥ कइयक श्रावक कइयक राजा,

कइयक मुनि मन भायो रे। कइयक देव अमरपित कइयक, प्रभु चरणन चित लायो रे॥ शा॰ ३॥ पुण्य पाल राजा करजोरी, प्रभु चरणां सिर नायो रे। पूछी इस कल्यिया की रचना, जिनवर भेद बतायो रे॥शा॰ ४॥ गुरु गौतम कूं आज्ञा दीनी, देवदत्त घर जावो रे। नास्तिक मत का पूरा पंडित, उस कूं तुम समझावो रे॥ शा॰ ५॥ सोहम गणधर कूं समझा के, स्त्रविपाक सुनायो रे। ऋषा धर्म को उत्तर सास्तर, दास चतुर सुन पायो रे॥ शा॰ ६॥

### ॥ रागनी पीलू घन्याश्री ॥

फल पूजन फल दायक प्रभु की, करत मुजन भर पार लहेगा ॥ शुद्ध अमिक्षत सिटत गलित निहं, पितत न भूमि मुधीत कहेंगा । श्रीफल पृंगी बदाम छुहारे, द्राक्षादिक फल भेद कहेगा ॥७॥ पात्र रजत भिर मधुर फलिन से, प्रभुके सम्मुख लाय ठवेगा । मुख से किर जिनवर गुण गायन, ताल मृदंग धुनि युत रहेगा ॥८॥ प्रेम सुलाय नयन जल भिर किर, अशुम करम क्षणमांहि दहेगा । हम प्रभुको इन फलसे पूजें, प्रभु शिव फल हमही कूं चहेगा ॥९॥ दास चतुर कूं फिर का चहिये, तीन भुवन जय लहेगा । फल पूजन फल दायक प्रभु की, करत सुजन भवपार लहेगा ॥१०॥ ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणामिहतः स्वर्क्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रकृत्त मतुरुं, वीरस्य धोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरमद्रंदिश ॥११॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय फरुं यजामहे स्वाहा ।

### नवम वस्त्र पूजा

॥ दोहा ॥

देव दिव्य युग वस्त्र से, पूजो दीन दयाल । विना वस्त्र निर्वाह नहीं, इस पंचम कलिकाल ॥१॥

### ॥ इंद्रसभा ॥

द्वादश अंग सूतन्तु सूत्र सम, गणधर धुनक समान। देव दुष्य श्रुत निर्मल प्रगट्यो, सो पटधार सुजान ॥२॥

### ॥ हम दयाका डंका बजाय जायेंगे ॥

作品的的条件,但是这个有关的,我们就是我们的现在,我们的现在分词,我们就是我们的,我们的人们的人,我们的人们的人们的人们的人们的人们的人们的人们的人们的人们的人们 प्रभु अरजी हमारी अवस्य सुनो॥ दुष्ट अधर्मी लोक जगत में, पाखंड पूजन होसि घनो ॥ प्र॰ ३॥ तीन वरनके नर पाखंडी, होवेंगे सिम आप जनो। शुद्ध सनातन जैन धरम कूं, करदेंगे वे कनो कनो ॥ प्र॰ ४ ॥ थोड़ा आयुष और बढ़ा लो, इन दुष्टनके मान हनो । शासन नायक वीर जिनेश्वर, बोले सुरनर सभी सुनो ॥ प्र०५ ॥ भावी भाव कूं कोइ न टारे, सत्य मंत्र तुम यही भनो । दास चतुर की अर्जी न गुजरी, होगयो सुरपति ऊन मनो ॥ प्र॰ ६ ॥

### ॥ राग श्री ॥

पट युगल वसनमें बलिहारी, बलिहारी में तेरी बलिहारी॥ सुन्दर वेल लगी है तोमें, फूलन की छवि है न्यारी । झीनी झीनी पतियां झलके, नीकी लागत है क्यारी ॥ पट० ७ ॥ भार अल्प और मूल्य घनो है, मोतिनकी झालर सारी । जिन गुनिजन ने तुझे बनाया, उसकी पन में हूँ बारी ॥ पट॰ ८ ॥ अब मैं भेट करूं हूं तेरी, इन साहिबके सुखकारी । दास चतुर के नाथ पियारो, जो है निरंजन अविकारी ॥ पट ९ ॥

### ॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरमद्रंदिश ॥१०॥ ॐ ह्वीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ।

,这是这个人,我们的是一个,我们是一个,我们是一个,我们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的,我们们的一个,我们们的一个,我们的一个,我们的一个,我们的一个,

## दशम ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

दंड मनोहर लायके, सुंदर ध्वजा बनाय। करो चैत्य महावीर के, उत्सव ध्वजा चढाय॥१॥

( राजुल पुकारे नेम पिया )

गौतम पुकारे प्राणनाथ क्या दगा किया। मुझे छोड़के अकेले आप, मोक्ष चल दिया॥ गर आपकी न राय थी कि, मोक्ष ले चलें। तो अंतका मिलाप मुझसे क्यों हटा लिया। गौतम॰॥२॥ हर वखत आप मुझ को, गौतम कह बोलावते। एक आज का ही दिन हुना, बिलकुल मुलादिया। गौतम॰॥३॥ जो होति बात कुल मि फौरन पूल आप से। करता दलील आपसे, उस दम बता दिया। गौतम॰॥४॥ कहां जाय के विचार अब किस को सुनाऊंगा। आज इस दुविधाने मेरा दिल दुखा दिया॥ गौतम ५॥ सूरत पियारी आपकी, कब देख पाऊंगा। यह दास की पुकार जो थी सब सुनादिया गौतम॰॥६॥

### ॥ कोयल कुहुक रही मधु बनमें ॥

मैं बिलहारी पावा पुरि की पावा पुरि के, जल मंदिर की में बिलहारी पावा पुरि की ॥ कार्त्तिक वदी अमावस राते, भीड़ मची इंदर पुरवर की ॥ मैं० ७ ॥ शासन नायक मोक्ष सिधारे, आज्ञा ले सुरवर इंदर की ॥ मैं० ८ ॥ चंदन चय बिच दाह करीके, रत्न पीठिका कर जिनवर की ॥ मैं० ९ ॥ चरण पीठिका स्थापन करिके, पूजा करत सकल ईश्वर की ॥ मैं० १० ॥ नंदी वर्धन आदिक राजा, कीन्हीं यात्रा पावा पुरिकी ॥ मैं० ११ ॥ ध्वज पूजन जिनवर की करके, आसा पूगी-दास चतुर की ॥ मैं० १२ ॥

वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाःसंश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वक्तं निचयो, वीराय नित्यं नमः । वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुरुं, वीरस्य-

。 第一个时间,一个时间,一个时间,他们也是一个时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们的时间,他们

घोरंतपः । वीरे श्री घृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीर भद्रंदिश ॥१३॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय ध्वजां<sup>†</sup> यजामहे स्वाहा ।

# एकादश अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

आठों कर्म खपाय के, मोक्ष गए महाराज । पूजों अर्घ चढायके, दीवाळी दिन आज॥१॥ राग मांड (जरा टुक जोवोतो सही )

नाथ मोहि तारोतो सिंह, मैं कहों दोहि करजोरी ॥ मैं अज्ञानी कछु ना समझूं, साचो मूढ़ मई । इन कर्मनि में मेरो रहवो, आछो है नहीं ॥ नाथ॰ २॥ मूळ परचो मैं पंथ तुम्हारो, मटक्यो चार गई। दीनवंधु अब राह बतावो, दीनानाथ दई॥ नाथ॰ ३॥ पापी लंपट और धुतारे, मेरे साथ रही । मोरे मन को वे भरमावे, संपित लूट लई ॥ नाथ॰ ४॥ जो अब अरजी नहीं सुनोगे, तो मैं आज कही। दास चतुर अब इन दुष्टनसे, बचने को नहीं॥ नाथ ५॥

॥ जोगिया आशावरी ॥

नाथ तेरे चरण कमल पर वारी, तेरी यात्रा करे नर नारी ॥ खरतर गण नम मंडल सूरज, आचारज पद धारी। जिन कृपा चंद्र सूरीश्वर राजे, महिमा अजब बनी॥ नाथ ६॥ जय सुख राज विवेक मुनीवर, कीना विल सुख कारी। संयम तप कृपा गुणवाले, दीपरही उजियारी॥ नाथ० ७॥ पर गन गत जो मिथ्या वादी, कर्दम सम गुणधारी। सूख गए नय मारग खेती, वा अब पक गइ सारी॥ नाथ० ८॥ चारबीस\* शत वर्ष पचासे, गांव तलने मझारी। कार्चिक विद चउदस शनिवारे, दीवाली दिन जुहारी॥ नाथ० ९॥ दास चतुर

<sup>🕆</sup> ध्वज पूजनमें ध्वजा पर गुरुओंसे वासक्षेप करावे ।

<sup>\*</sup> यह पूजा श्री मुनि चतुर सागरजी महाराज की वनाई हुई है और वीर सम्बत् २४५० तथा विक्रमी सम्बत् १६७० के कार्त्तिक वदी १४ शनिवार को बनी है।

मानर अनुयोगी, कीन्ही पूजा तयारी। भृल परी जो इन पूजन में. मारु करो अधिकारी॥ नाय० १०॥

### ॥ इलोक ॥

वारः सर्व मुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाःसंश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थ मिदं प्रदृत्तमतुरुं, वीरस्य- वांग्नपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीर भद्रंदिश ॥११॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय अर्थ यजामहे खाहा ।

# पञ्च ज्ञान पूजा

## प्रथम मति ज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

,为是是公司,中国人员,他们的人员,他们的人员,他们的人员,我们的人们的人,他们们的人们,我们们有一个人的人的人,他们的人,他们的人们的人,他们的人们的人,他们的

वर्षमान जिनचंदकूं, नमन करी मनरंग।

पूज रच्ं भिव प्रेम से, सांभलजां उछरंग॥१॥

पांच ज्ञान जिनवर कह्या, मित श्रुति अविध प्रधान।

मनपर्यव केवल वडां, दिनकर जात समान॥२॥

ज्ञानवड़ां मंसार में, गुरु बिन ज्ञान न होय।

ज्ञान महिन गुरु वंदिये, मुचि कर तनमन दाय॥३॥

थार जिणंद वर्षाणियां. नंदी सूत्र मझार।

भव्य सदा अनुभव धरों, पावो मुख श्रीकार॥थ॥

विरमल गंगोदक भरी, कंचन कल्या उदार।

श्रृत नागर पूजन करों. भाव धरी भिवनार॥थ॥

र चिन हराव धरी, अनुभव रंगे वीन परम पद सेविये)

मित अति भन्नो नक्तन विमन्न गुण आगर, भवितन सैविवे । १ मित्रान नदा निम्बे, निज्ञ णप स्कूल दुरे गमिवे । सन मन प्रो, निज्ञ गुण रिम्बे ॥ मन्य ॥ स्वीतन का अवग्रह इस ज्यों। चउ भेद करी मनमें आणो, इम भाखे श्रीजिन जगभाणो॥ म००॥ अरथें किर भेद जिणंद आखें, पण इन्ही मनकर प्रभु दाखें, मुनि मानस ते दिलमें राखें ॥ म०८॥ विल षट् विध भेद इहां किहये, षट् भेद अपाय करी लिहये, पट् विध धारण भिव सरदिहये ॥ म०९॥ इम भेद अठाइस भिव धारो, इम भाखें जिनवर सुखकारो, निश्चय व्यवहार ते अवधारो ॥ म०१०॥ विल रतन जिलत कंचन कलहो, भिव पूजन कर तनमन उलसे, चिदरूप अनूप सदा विलसे ॥ म०११॥ ए ज्ञान दिवाकर सम किहये, इम सुमित कहे दिलमें गिहये, ए ज्ञानथी अनुपम सुख लिहये ॥ म०१२॥ ॐ हीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमितिज्ञानधारकेभ्यो अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# द्वितीय श्रुतज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

श्रुतधारक पूजन करो, भाव धरी मनरंग । उपकारी सिर सेहरो, भाखे जिन उछरंग ॥१॥ मृगमद चंदन वाससें, जो पूजे श्रुतअंग । अनुभव शुद्ध प्रगटे सही, पावें सौख्य अभंग ॥२॥ (नभिजीके नंदाजीसे लाग्या मेरा नेहरा,)

श्रुत जाकी पूजाकर सीखो भिव सेहरा॥ विनय सिहत ग्ररु वंदन करके छुल छुल, पाय नमें गुरु देवरा। तीन तीस आसातन टाली, भगत करे भिव गुणगण गेहरा॥ श्रु॰ ३॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरते, ज्यूं पावस ऋतु वरसे मेहरा। दश विध विनय करे श्रुत गुरुको, सेवे ज्यूं अलि फूलने नेहरा॥ श्रु॰ ४॥ गुण मिण रयण भरवो श्रुतसागर, देख दरस हरखावे मेरा जियरा। पूजन वायन बिल बिल करिये, सीझे बंछित ज्यूं मुनि सेवरा॥ श्रु॰ ५॥ गुरु भगती जैसे गणधरकी, वीर कहे सुण ज्यूं मुनि सेवरा॥ श्रु॰ ५॥ गुरु भगती जैसे गणधरकी, वीर कहे सुण गौतम सेहरा। ऐसे गुरुकी भिक्त सीखो, ए श्रुतज्ञान सकल सुख

देहरा ॥ श्रु० ६ ॥ गुरु बिन और न को उपगारी, श्रीगुरुदेव नित गुण-मणि जेहरा । ऐसे गुरुकी कीरत करके, सुमित घरो दिस्टमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ७ ॥

## ( नित निमये थिवर मुनीसरा, )

नित निमये श्रुतघर मुनिवरा । अरथें श्री जिनराज वखाणे, सूत्रें श्रीगुरु गणधरा ॥ नि॰ ८ ॥ मेघधुनी जिम भविजन सुण के, हरखे ज्यूं केकीवरा । अंग इग्यारे गुणमणि धारक, बारे उपांग उजागरा ॥ नि०॥ जगत उद्धारण तूं परमेसर, सकल विमल गुण आगरा । छेद पयन्ना नंदी सेवो, मूल सूत्र मिव गुणकरा॥ नि॰ ९॥ श्रुतधारी गौतम गुरु दीवो, पूरवचौद विद्याधरा। पहिलो आचारांग सूत्र वलाणे, चरण करण गुण सुसकरा ॥ नि॰ १०॥ दृजो सुयगड़ांग सूत्रसुणीजे, भेदतिसय तेसठ खरा । तीजो ठाणांग सूत्र विराजे, सुणतां पाप मिटेपरा ॥ नि॰ ११ ॥ चौथो समवयांग सुहावे, अर्थ अनेक करीवरा । पांचमे भगवइ महिमाकरिये ॥ सहस छत्तीस प्रसनधरा ॥१२॥ छही ज्ञाता अंगसूं ध्यावो, घरम कथा कहे जिनवरा । नि॰।सातमो अंग उपाशक कहिये, दश श्रावक प्रतिमाधरा । नि॰ ॥१३॥ आठम अंगे जिनवर दाखे, अन्तगड केविल मुनीवरा । नि॰।नवमें अंगे भवि सुन धारो, अनुत्तरववाइं सुखकरा। नि॰ ॥१४॥ प्रश्नविचार कह्या जिन दशमें, अंगुष्ठादिक शुभतरा। अंग इग्यारमें जिनवर दाखे, कर्मविपाक विविध परा ॥ नि॰ १५ ॥ बारमो अंग जिणंद वखाणे, अतिशय गुण विद्याघरा । अक्षर श्रुत विल सन्नी कहिये, सम्यक् भेद अधिकतरा ॥ नि॰ १६ ॥ सादि भेद सपरजव छहिये, गम्यक् भेद सुणो नरा । अंग प्रविष्ट कहे जिनवरजी, भेद चौद सुणजों खरा ॥ नि॰ १७ ॥ इम जो श्रीश्रुत ज्ञान आराघे, भाव भगत कर बहु परा । सुमति कहे गुरु ज्ञान आराघो, वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि॰ १८ ॥ ॐ ह्वीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री श्रुतज्ञानधारकेम्यो अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## तृतीय अवधिज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

अगर सेव्हारस धूपसे, पूजो अवधि उदार। बोध बीज निरमल हुवे, प्रगटे सुक्ख अपार ॥१॥ नवल नगीने सारखो, ज्ञान वडो संसार। सुरनर पूजे भावसूं, महियल ज्ञान उदार ॥२॥ ( निरमल होय भज ले प्रमु प्यारा, )

没有情况的,我们就是这个人,我们就是这个人的,我们就是这个人的,我们就是这个人的,我们就是这个人的,我们就是这个人的,我们就是这个人的,我们就是这个人的,我们就是 19 अवधिज्ञानको पूजन करले, ज्यूं पावो भव पार सलूणा ॥ अ॰ ॥ ज्ञान वडो सुख देण जगतमें, उपगारी सिरदार सऌणा ॥ अ॰ ॥३॥ मेद असंख कहे जिनवरजी मूल भेद षटसार ॥स॰अ॰॥ बहुमाण हियमाण वखाणे, सूत्रे श्रीगणधार, स॰ ॥अ०॥४॥ सुरनर तिरि सहु अवधि प्रमाणे।देखें द्रव्य उदार ॥ स॰ ॥ अवधि सहित जिनवर सहु आवे । थाये जग भरतार ॥ स॰ ॥५॥ ज्ञान विना नर मूढ़ कहावे। ढोर समो अवतार॥स॰॥ ज्ञान दीपक सम जग मांहे । दिन दिन अधिकी सार ॥ स॰ ॥६॥ मूळमंत्र जग वस करवाको, एहिज परम आधार, स॰ ॥ अ॰ ॥७॥ ज्ञाननी पूजा अहनिस करिये, लीजे वंछित सार, स॰ ॥ ज्ञानने वंदी बोध उपावो, करम कलंक निवार, स॰ ॥ अ॰ ॥८॥ इत्यादिक महिमा भवि सुणके, पूजो अवधि उदार, स॰ ॥ सुमति कहे भिव भाव घरीने, सेवो ज्ञान अपार स॰ ॥ अ॰ ।।९॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीअवधिज्ञान धारकेम्यो अष्टद्रव्यंमुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# चतुर्थ मनपर्यवज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

केतिक दमणो मालती, अवर गुलाब सुगंघ। भाव धरी पूजन करो, हरे कुमति दुरगंध ॥१॥ मनपर्यव पूजा करो, विविध कुसुम मनरंग। महके परिमल चिहुं दिसे पांमे सुजन अमंग ॥२॥

## ( शत्रुंजानो वासी प्यारो लागे मोरा राजिंदा )

जिनजीरो ज्ञान सुहावे मोरा राजिंदा ॥ जि० ॥ जिन जीरो ज्ञान अनंतो सोहे, कहतां पार न आवे ॥ म्हा॰ जि॰ ॥३॥ सन्नी नर मन परयव जाणे ते मुनि ज्ञान कहावे ॥ म्हा॰ ॥ विपुल्पतीने ऋजुमित किहये, ए दुय मेद लहावे ॥ म्हा॰ जि॰ ॥४॥ अंगुल अढिए जणो देखे, ते ऋजु नाम धरावे ॥ म्हा॰ ॥ संपूरण मानव मन जाणे, तेही विपुल कहावे ॥ म्हा॰ ॥५॥ मनगत भाव सकल ए भाखें, ते चौथो मन भावे ॥ म्हा॰ ॥ एहनी महिमा नित नित कीजे, तिम भिव नाम धरावे ॥ म्हा॰ जि॰ ॥६॥ जगजीवन जगलोचन किहये, मुनिजन ए नित ध्यावे ॥ म्हा॰ विश्वल होशा ले जिनवर उपगारी, चौथो ज्ञान उपावे ॥ म्हा॰ जि॰ ॥७॥ मनकी संसा दूर करत हैं, सुणतां आण मनावे ॥ म्हा॰ ॥ तन मन सुचिकर पूजन करले, जनम जनम सुख पावे ॥ म्हा॰ जि॰ ॥८॥ विविध कुसुमसे पूजा करतां, बोध लता उपजावे ॥ म्हा॰ ॥ सुमित कहे भिव ज्ञान आराधो, श्रीजिन देव बतावे ॥ म्हा॰ जि॰ ॥९॥ ॐ हीं श्रीपरम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मनपर्यवज्ञान धार-केम्यो अष्टद्रव्यंसुद्रां यजामहे स्वाहा ।

## पश्चम केवल ज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

प्रसु पूजा ए पंचमी, पंचमज्ञान प्रधान । सकल भाव दीपक सदा, पूजो केवल ज्ञान ॥१॥ फल दीपक अक्षत धरी, नैवेद्य सुरभि उदार । भाव धरी पूजन करो, पावो ज्ञान अपार ॥२॥ ( तुम बिन दीनानाथ द्यानिधि कौन खबर ले )

तूं चिदरूप अनुप जिनेसर, दरसन की बिटहारी रे ॥ तूं॰ ॥ निर-मरु केवल पूरण प्रगट्यो, लोकालोक बिहारी रे । केवलज्ञान अनंत विराजे, क्षायक भाव विचारी रे ॥ तु॰ ॥३॥ ज्योत सरूपी जगदानंदी, अनुपम

शिव सुख धारी रे । जगत भाव परकाशक भानू, निज गुण रूप सुधारी रे ॥ तु॰ ॥४॥ सकल विमल गुण धारक जगमें, सेवत सब नर नारी रे, आतम शुद्ध सरूपी भविजन गुण मणिरयण भंडारी रे ॥ तु॰ ॥५॥ केवल केवलज्ञान विराजे, दुजो भेद न धारी रे। आतम भावे भविजन सेवो, जगजीवन हितकारी रे ॥ तु॰ ॥६॥ और ज्ञान सब देश कहावे, केवल सरव विहारी रे । सर्व प्रदेशी जिनवर भाखे, साखे श्रीगणधारी रे ॥ तु॰ ॥७॥ भए अयोगी गुणके धारक, श्रेणि चढ़ी सुखकारी रे। अष्ट कर्मदल दुर करीने, परमातम पद धारी रे ॥ तु॰ ॥८॥ ऐसी ज्ञान बडो जगमांहे, सेवो शुद्ध आचारी रे । सुमति कहे भविजन सुभ भावें, पूजो कर इकतारी रे ॥ तु॰ ॥९॥ फल अक्षत दीपक नैवेद्यसे, पूजा ज्ञान उदारी रे । पूजत अनुभव सत्ता प्रगटे, विलसें सुख ब्रह्मचारी रे ॥ तु॰ ॥१०॥ ॐ हीं श्री परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीकेवलज्ञान ज्ञानधारकेग्यो अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे खाहा।

### कलश

(केसरियाने जहाजको लोक तिरायो)

असरण सरण कहायो, प्रभु थारो ज्ञान अनंत सुहायो ॥अ॰॥ मति श्रुति अविघ अने मनपर्यव, केवल अधिक कहायों। भन्य सकल उपगार करत हैं, श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र॰ ॥११॥ खरतरगच्छपति चन्द्रसूरीक्वर, राजत राज सवायो। तेजपुंज रवि शशि सम सोहे, देखत दिल उलसायो ॥ प्र॰ ॥१२॥ प्रीतसागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धर्म सुपायो । शिष्य क्षमाकल्याण सुपाठक, सद्गुरु नाम घरायो ॥ प्र॰ १३॥ घरम विशाल दयाल जगतमें, ज्ञान दिवाकर ध्यायो । ज्ञान क्रियानो मूल जे कहिये । तत्वरमण मन भायो ॥ प्र॰ १४ ॥ बीकानेर नगर अति सुंदर, संघ सकल सुखदायो । शुद्धमति जिन धर्म आराधक, भगत करो मुनि रायो ॥ प्र० १५ ॥ उगणीसे चालीसे वरसे, आसु सुदि वरदायो । ज्ञान

<sup>,</sup>我们是我们是一个,我们是我们的,我们们的,我们们的,我们们们的,我们们们们们的,我们们们们的,我们们们的,我们们们的,我们们的人们的,我们们的人们的,我们们的 श्रवह पूजा श्री सुमति विजयजी महाराज की वनाई हुई है और सम्बत् १६४० आसोज

了,我们的人,我们的人们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人们的人们的,我们们的人们的人,我们们的一个人,我们们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们们的人

विजयकारक सब जगमें, नित प्रति होत सहायो ॥ प्र॰ १६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासे, ज्ञान अधिक जस गायो । कुशल निधान मोहन मुनि भावे, ज्ञान तणो गुण गायो ॥ प्र॰ १७ ॥

# पञ्च कल्याणक पूजा

### च्यवन कल्याण

॥ दोहा ॥

पञ्च कल्याणक जिनतणा, पूजो जे मन भाव। श्री जिनचंद्र पदते छहे, अखय अचल पदछाव॥१॥ ( पूर्व मुख सावनं )

पञ्च कल्याणकं विविध गुण थानकं, तारकं भविजनं यान-पात्रं ॥ अइयो म॰ २ ॥ वीसथानक पदं भक्ति धरसे वदं, सकलमल कर्म दुख वार गात्रं ॥ अइयो स॰ ३ ॥ तृतीय भव संचितं, तीर्थपद मद्भुतं, नर सुर भवकरं शुद्धवाचं ॥ अइयो नर॰ ४ ॥ शुक्ति सुक्ति परंचविय मातूद्रं, लहिय जिनचंद्र शुभ सुपन सूचं ॥ अइयो ल॰ ५ ॥

॥ दोहा ॥

च्यवन कल्याणक सेवतां, पामे भवनो पार । आतम गुण निर्मल हुवे, बोध बीज मंडार ॥६॥ (मेरी तुंबियेकी पटवारी परोसण ले गई )

तेरे आननकी बलिहारी दिनेसर में गई जी। अत्युज्जल गज वृपम मनोहर, सिंह श्री सुखकारी जी॥ ते॰ ७॥ दाम शशी दिनकर अति मुन्दर, ध्वज कुम्मसर गुणधारी जी। सागर भुवन त्रिविध गुण आगर, बिहरत प्रकाशी जी॥ ते॰ ८॥ तीर्थंकर पद द्योतक जाणी, आनन्द हर्प उद्यासी जी। इन्द्रादिक शकस्तव कीधो, गुण जिनचन्द्र विलासीजी॥ ते॰ ९॥

॥ इलोक ॥

सकल तत्त्व विभाकर भारवरं, त्रिभुवने भवताप निवारकं । त्र्यवन घाम

जिनेश्वर वेद षट्, सकल तीर्थ जलैः स्नपयाम्यहं ॥१०॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा।

## चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥ चन्दन सूं जिन पूजतां, मिटे कर्म घन ताप । च्यवन कल्याणक ध्यावतां, बांघे समकित आप ॥१॥ ( श्री सिखर गिरि भेट्या रे )

तुझ दर्शनके कामी रे, सुरनर मुनिराया । अहावीसें मित परकाशें, चवदवीसे श्रुतधारा ॥ षट् भेंदें अवधि मन भावें, असंख्यात भेदे विचारा रे ॥ सु॰ २ ॥ तीन ज्ञान थी गभें आया, त्रिभुवन जन सुखदाया । चन्दन सूं जिनचन्द्र कूं पूजित, आतम गुण उलसाया रे ॥ सु॰ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

प्रवल कर्म विताप निवारकं, सरस शीतल भाव वितीर्णकं । मृगमदा गर चन्दन कुंकुमैः, विमलमाव द्युतैः च्यवनं यजे ॥४॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यो चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

## पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

पञ्चवरण के फूल सूं, च्यवन स्थित जिनराय । निश दिन पूजो भाव सूं, दर्शन शुद्ध उपाय ॥१॥ ॥ निरमोहिया तो सूं कें दिन बोलूं रे ॥

कवयारयें दर्शन प्रभु तूं रे, जब निज संपत्ति परिणमस्यें रे ॥ क॰ २॥ काल अनन्त निगोदमें भिमयों, भूस्यादि संखकर संखेरयें रे ॥ क॰ २॥ विकलेन्द्री मांहे काल संख्याते, नर तिरि मांहे पिण घरस्यें रे ॥ इत्यादिक भव संतित वारक, कारण थी काज विकरयें रे ॥ क॰ ४॥ प्रभु कारण थी

समिकत कारज, निज गुण संपति पर नमस्यें रे श्रीजिन चन्द्रनि किरपाथास्यें, तो निश्चय भवतरस्यें रे ॥ क॰ ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

अविध धी श्रुतिभाव समन्वितैः, कठिन कर्म वियोग समुद्भवैः। सुकुसुमैः प्रकरोम्यहमर्च्चनं, जिनजिनं च्यवनं तबहेतवे ॥५॥ ॐ ह्वीं परमा-त्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः पुप्पं यजामहे स्वाहा॥

### धूप पूजा

॥ दोहा ॥

सरस सुगंधित धूप सूं, पूजे जे जन दाव। करम काष्ट सब दाह के, पामें निरमल भाव॥१॥ (सब अरति मथन मुदार धूपं)

सब करम दहन सुगंध धूपं, कृष्णागर ठो बांणरे। तगर मृग मद कपूर केशर, मिश्रित सेलारस मांन रे॥ स॰ २॥ आर्त्त रौद्र विध्वंस कारण, धरम शुकल ध्यान पाय रे। आतम गुण निष्पन्न हेत्, प्रमु सुगंध मन भाय रे॥ श्री जिन चंद्र सुख दाय रे, मंगल परम विधाय रे॥३॥ ॥ क्लोक॥

प्रबल मोह महा रिपु भरम कृत्, त्रिभुवने सकलाचि निकंद कृत्। सुरिम गंघ दशांगज क्षेपकैः, जिन जिनंच्यवनं अहमर्चये ॥४॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ॥

## दीपक पूजा

॥ दोहा ॥ दीपक शुभ सूचक सदा, गर्भ स्थिति जिनराय। भाव सहित दीपक करे, मोह तिमिर मिट जाय ॥१॥ ( जयकारी जिनराज)

भाव दीपक जिनराय ज्ञान प्रकाशी रे, तत्वा तत्व स्वभाव, विभाव

विनाशी रे । अनुभव रस आस्वाद क्षायक मावे रे, मन मन्दिर उजमाल लोक दिखाने रे ॥२॥ जिनवर दर्शन होय मुझने पहि लूं रे, तो थारखूं हूं धन्य जन्म संभालूं रे, जिनचन्द्र छे वीतराग, तो पिण करस्यें रे, महिर सेवक निज जांण दर्शन देखें रे ॥३॥

#### ॥ इलोक ॥

सकल पुद्रल भाव विकाशकं, तिमिर पाप वितान विनाशकं। भवि-जनान्शुभसूचक दीपकं, जिनजिनां भवने प्रकरोम्यहं ॥४॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेम्यः दीपं यजामहे स्वाहा॥

# अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अत्युञ्जल अक्षत सरस, मंगल अति सुखकार । करसी जे जिन आगले, पामें निज गुणसार ॥१॥ ( मेरो मनड़ो हरख्यो प्रभु पास साम रे मैं कैसे नमूं सुरपरिया )

मेरो मनड़ो लग्यो जिनराज चरण में, दर्शन लहिया कैसे ॥च० र॥ काल अनन्त भम्यों दर्शन विन, योग करण भरमइया ॥ च॰ ३ ॥ अना-यासतें नर भव पायो, पावनरूप वधइया ॥च॰४॥ अब दुक मेहर नज़र प्रभु कीजे, सप्तक्षय सुघ पइया ॥ च॰ ५ ॥ श्रीजिनचन्द्र अखय पद कारण, चरण कमल चल जइया ॥ च॰ ६॥

#### ॥ इलोक ॥

विमल दर्शन शुद्ध समन्वितं, जिनपति करुणा रस सागरं। परम मंगल मक्षत मंगलं, जिन जिनां च्यवनंअहमर्चये ॥७॥ ॐ हीं परमा-त्मने चतुर्विशति तीर्थंकरणां च्यवन कत्याणकेम्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

# नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

भाव भगत थी ढोकतां, नैवेद्य अनेक प्रकार । गर्भस्थित जिन आगले, पामे ऋदि भंडार ॥१॥

# ( प्रभु कृं भजले मनुवा )

जिन नाम मुमग्ले जीवड़ा, नर भव हैं एही सार रे। नरक तियेच अति दुवनी कारण, तिहां नहीं संस्कार रे॥ जि॰ २॥ देवादिक वहु मृत्वनी कारण, समरण किण परकार रे॥ जि॰ ३॥ अवहुं आयो प्रभुजी पामें. करणानिधि विरुद् संभार रे॥ जि॰ ४॥ दीन द्याल द्यानिधि माहिब, नरकादिक दुःख वार रे॥ जि॰ ४॥ श्री जिनचन्द्र अखय. मुमरणने यामें मंगल माल रे॥ जि॰ ६॥

#### ॥ इलोक ॥

सकल लोक विभाव विवर्जिनं, सहज चेतन तत्त्व विचारकं । सुर्गम भोजन गंधित सत्कृतं, जिन जिनां च्यवनं अहमर्चये ॥७॥ ॐ हीं परमा-त्मने चनुविद्यति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः नेवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

# फल पूजा

॥ दोहा ॥

नाना फल सूं पूजतां, मिटे दुकर्म विकार । निण कारण जिनराजकीं, पूज रचो तिहुंकाल ॥१॥ ( कब मिलसी मन मेलुं )

स्वामि मेरो अवधारयें दर्शन नेरो । श्री जिनराज द्यानिधि माहिय. श्रीते स्व उदारो ॥ स्वा० २ ॥ तुम छो तीन भुवन के नायक. बीन तड़ी स्वयारो ॥ स्वा० २ ॥ पोताणी करणी पिणधारयें, तुम प्रमु काज सुगरें ॥ स्वा० ४ ॥ जो अपणी सेवक कर जाणे, तो चहिये तुम स्वर्णे ॥ स्वा० ५ ॥ श्री जिनचन्द्र अस्वय दर्शन तें, जाणे होसी स्वर्णे ॥ स्वा० ५ ॥ श्री जिनचन्द्र अस्वय दर्शन तें, जाणे होसी

# अर्घ पूजा

अक्षय पद निवासी जैन चन्द्रं यजंते, अविचल निधि धामं ध्याययन्प्रा-प्तुवंति । निश्चि दिन शुभ सौख्यं राज्यलक्ष्मीं तनोति. जिनवर परमेठी वोध बीजं बवर्तु ॥१॥ ॐ ह्वीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः अर्घं यजामहे खाहा ।

# जन्म कल्याणक पूजा

जल पूजा ॥ दोहा ॥

पूरब पुण्यें जन्मिया, अक्षय मुनि जिनचन्द। सुरनर मिल उच्छव करे. चढत भावनो कंद ॥१॥ ( मैं तो तुम पर वारी हो पास जिणंदा )

मै तो तुमरी बलिहारी हो प्यारे जिनंदा । जनम अनंतर आसन कंपित, छप्पन दिक्कुमरी आई । जिनमाता जिनवर कूं वंदी, स्वस्व कृत्य सजाई ॥ त्या॰ २ ॥ सूती करम करीने सघली, जिनवर मात जनम सफल कर वानें काजें, मङ्गल गान बधाई ॥ प्यारे॰ ३ ॥ जिनवर जन्म समयने कालें, नारक पिण सुख पावें । दशों दिशा निर्मलता धारें, अन्यादिक शुभ भावें ॥ प्या॰ ४ ॥ शक्रादिक सहु हरष घरीनें, घंट सुघोष बजावें । निय निय परिकर संगलेईनें, मेरु शिखर पर जावें ॥ हो प्या० ५ ॥ आवि पुरंदर मातनमीनें, पंचक रूप बनाई । संपुट लेई मंदिर धाई, रोम रोम हरखाई ॥ हो प्या॰ ६॥ भाव अखय उत्संगे जिनचन्द्र, आनन्द अङ्गनमावें । अच्युतादिक सुरपति निय निय, अभियोगिक देव बुलावे ॥ हो प्या॰ ७ ॥

चतुः षप्ठीजी अप्ट सहस कुम्म मानकं, तीर्थोदकजी औषघ सहु उन्मानकं । एक एकनो जी इन पर उच्छव नल्पकं, जिन सम्मुखजी आवि

करे नृत्य गानकं ॥८॥

#### ॥ त्रोटक ॥

नृत्य गान करके भाव धरके, विमल जल कर जिन न्हवे । अच्यु-तादि इन्द्र निर्जर स्नापयित्वा प्रभुस्तवे ॥ ततो सोहम विमल जल कर भक्ति निर्भर उत्सुकं, जिनचन्द्र अंगे वसन मार्जित यक्ष कर्दम लिप्तकं ॥९॥ सुनइयाजी कोड़ि बत्तीस उबारिया । सहु वाजित्रजी मनोहर शब्द बजाइया ॥१०॥ तदनन्तरजी इन्द्रादिक जिनरायनें, आनंदेंजी अर्पण करि मात ने ॥११॥

मातनें अर्पण सर्व सुरपित जाय नंदीश्वर पछे । अष्टाह्विका करि उत्सव सहु निज थानक गछे॥१२॥ माता पिता बहु दान देवें मान हर्ष वसे करें। अशुचि कृत्य टाली खजन आगें नाम थाप्यो अनुसरें॥१३॥

#### ॥ श्लोक ॥

जिनां जन्मं ज्ञात्वा सकल विश्वधंद्राः प्रमुदिताः, प्रभो भक्त्युत्साहैः जिनवर मिहम्नैः प्रचलिताः। गृहे गत्वा नत्वा त्रिभुवन गुरुं मेरु शिखरे, जलैषैः तीर्थानां सकल जिनराजं स्वपयति ॥१४॥ ॐ हीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेंद्राय जन्म कल्या- णकेन्यः जलं यजामहे स्वाहा ।

#### चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

चन्दन सूं जिन पूजतां, मिटे ताप मिथ्यात । जन्म महोच्छ्य सेवतां, थाये गुण विख्यात ॥१॥ (सह्यां की नगरियां बता दे)

जिनवर जन्म वधाइ सोहाई मोरे मनमें। अनुपम रूप जिनेसर पेखी, आनन्द अंगन माई सजन में ॥ मो॰ २ ॥ कनक वरण तन प्रभु को राजे, दिनकर तेज समाइ सुतन में ॥ मो॰ ३ ॥ रक्तोत्पल समकर मद सोहे, हग्पीयूष भराई वदनमें ॥ मो॰ ४ ॥ अर्द्ध चन्द्र सम माल विराजें, नासा शुक मुख पाइ सोभन में ॥ मो॰ ५ ॥ घूघर वाले अलख अनुपम,

भ्रू धनु चुति छिव छाई नयन में ॥ मो॰ ६ ॥ हार मुकुट कुंडल कटका-दिक, रण झणकार कराई मगन में ॥ मो॰ ७ ॥ चन्दन खोरा बनी अति सुन्दर, प्रीति बचन सुखदाई करण में ॥ मो॰ ८ ॥ श्री जिनचन्द्र आंगन में खेलत, निरख निरख उलसाई चरण में ॥ मो॰ ९ ॥

#### ॥ खोक ॥

यथाग्रीष्मे चन्द्रैः निदुरतर घर्मोपशमनं, जगञ्जंतू तापं समुपशमनं श्रीजिनवरैः । सुपर्व्व श्रीखंडैः मृगमद सुगन्धे शुभकृतैः, जिनां जन्मावर्त्यां अचल सुख वाशाय सुयजे ॥१०॥ ॐ हीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

### पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥ भव्य कमल प्रति बोधवा, मानो उदयो भान । पञ्च वरण के कुसुमसे, अर्ची जन्म कल्यान ॥१॥ ( होरी खेलत नेम हरख चित्तधारी )

प्रभु छिब निरख निरख मन भाई ॥ प्र० ॥ इन्द्राणी मिल नृत्य करत हैं, मंगल गान बधाई । प्रत्युत्संग जिनराज खिलावे, बोले बचन सुधाई ॥ प्र० २ ॥ पञ्च बरण के सुमन लेईने, अनुपम माला पहराई मात पिता मिल उच्छव करके, देवें मान बधाई ॥ प्र० ३ ॥ समिकत पुष्ट निमित्त नोकारण, आतम हेतु सहाई, श्रीजिनचन्द्र अखयचन्द्र राजित उरगण मांहि रहाई ॥ प्र० ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

सुरेन्द्राणां वन्धं सकल गुणधामं शिवकरं, विशालैः श्रीकारैः परम निज धर्मैः विकशितैः । क्रिया सम्यज्ञानैः निज गुण निवाशाय विद्धे, जिनां जन्मावस्थां सुरभि कुसुमैरर्चनमहं ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने ज्ञान-त्रय सहिताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः पुष्णं यजामहे स्वाहा ॥

## धृप पूजा

॥ दोहा ॥

सेलारस मिश्रित प्रवर, सुमित सुगन्ध मिलाय । सरस धूप जिन आगलें, सकल करम क्षय थाय॥१॥ ( कड्हला अचिरानन्दन खामिनो )

जन्म समय प्रमु पेखीयो, रिव शशिके अनुहारेंजी । जिन दर्शन थी उपनो, आतम गुण संभारेंजी । अब मिलिया म्हांने सुरतरु ॥२॥ तत्व रुची निज आत्मनी, अथवा शुद्ध सिद्धान्तजी, समिकते शुद्धनयंकरी, संग्रहथाये एवं भूतेंजी ॥ अ॰ ३ ॥ श्रीजिनचन्द्र अखय परसादथी, पाम्योबोध समस्तें जी । आतम गुण पर गट करी, थयो आज सनायें जी ॥ अ॰ ४ ॥ ( श्लोक )

समस्तं आवर्णेधन दहन कर्तुं ज्वलनवत्, सुगंधेः कर्पूरेः मृग मद मुगंधेः सुनिचयेः। दशांगेः यद्भूषेः सुरनर गणानां मनहरैः जिनां जन्मा वस्था शिवपद निवासाय सुयजे॥५॥ ॐ हीं परमात्मने ज्ञान त्रय सहिताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याण केम्यः धूपं यजामहे स्वाहा।

# दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

भाव दीप परमेसर्स्ः, तम अज्ञान विनास । द्रच्य दीप जलावतां, पामें आतम भास ॥१॥ ( पूर्व पुण्याई हे सरिखी )

जन्म महोच्छव अनुपमिनरखी ॥ प्० २ ॥ सकल विभावनी है त्यागी निर्मल सत्ता गुणनी गगी ॥ प्० ३ ॥ सत्ता त्रिविधे है जाणी, वाश्रक नाथक सिन्ध बखाणी ॥ प्० थ॥ मिथ्या भावें है वाश्रक, समिकत केवली मंहि साधक ॥ प्० ५ ॥ कमे विभावी है निर्द्धा, प्रभुजी साथक मत्ता भुदी ॥ प्० ६॥ ज्ञान त्रिभंगी है भाषी, एनोनिरुपम ज्ञान प्रकाशी ॥ पृ० ७ ॥ त्रिभुवन जननो है नायक, एतो मक्ति वत्सल सुखदायक ॥ पू॰ ८ ॥ श्री जिनचन्द्रनी है निरखी, अद्भुत महिमा निज गुण परखी ॥ पू॰ ९॥ ॥ क्लोक ॥

समस्तं अज्ञानं तिमिर दिलतं भास्करिमव, जनानां सद्बोधं तरिण मिवदातुं शुभ करं। जनानामाधारं हित अहित भावान्त्रगटयन, जिनां जन्मावस्थां मिणघटेत् दीपं च विद्धे ॥१०॥ ॐ हीं परमात्मने ज्ञानत्रय सिहताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेन्यः दीपं यजामहे स्वाहा ।

### अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अत्युज्जल अक्षत तणां, मङ्गल अष्ट विधान । अष्ट कर्मने छेदवां, जिन आगे मंडान ॥१॥ (मन मोह्यो री माई)

चित लाग्यो री माई श्री जिनराज चरणमें ॥ चि॰ ॥ षट् द्रव्य गुण पर्यायनो ज्ञाता, नियस्वभाव युत पख में । नित्या नित्य पखथी चडमंगी, सादि शांत विअ पखमें ॥ चि॰ २ ॥ सादि शांति अनादि शांति, अनादि अनन्त चडमंग में । रूपि अरूपी भेदनो ज्ञायक, नय गुण युत सुरंग में ॥ चि॰ ३ ॥ जन्म कल्याणक त्रिकरण ध्याता, थाये आतम संग में । श्रीजिनचन्द्र षट् द्रच्य प्रकाशक, अद्भुत स्वगुण रंग में ॥ चि॰ ४ ॥ .

#### ॥ इलोक ॥

जगन्नार्थं स्तुत्वा विमल जल कल्लोल लहरी, तथा गाव क्षीरं दिष्ठं धवल वत फेण पसरं। यथा वज् श्रेणी रजत गिरिवच्चंद्र रुचयः, जिनां जन्मावस्थाक्षत धवल मांगल्य विद्धे ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याण-केम्यः अक्षतं यजामहे खाहा।

# नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥ सरस सुगंघ माघुर्यता, नैत्रेच अनेक विधान । श्री जिन आगल ढोकतां, पामें परम निधान ॥१॥ (त्रीजे मव वर०)

श्री जिनवर पदकज सुखदायक, भवजल तारण भिन्न । मोक्ष रूप कारज कर वाने, आतम कत्ती अभिन्न रे । भविका जन्म कल्याणक सेवो, अविचल सुखनोकंद रे ॥ भ० २ ॥ आर्यादि संयोगी कारण, प्रमु कारण निर्वित्ते । इतरेतर संयोगी कारण, कर्ता कारण युक्तें रे ॥ भ० ३ ॥ पर पुद्गल सहाय तजीनें भास्यो अन्यावाघ, श्री जिनचन्द्र अखयपद कारण, आतम शक्ति अवाघ ॥ रे भ० ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

अपारे संसारे जगदिचर भावं त्वनुभवं, त्रिभावैवैराग्यं सकल जगदङ्गे-विरिहितम् । सुबोधैः सञ्ज्ञानैः प्रमित सहितं भोज्य सरसं, जिना जन्मा वस्यां मधुर तर भोज्यं च विद्धे ॥५॥ ॐ ह्वीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहि-ताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

### फल पूजा

॥ दोहा ॥

सरस मधुर फल कर धरी, पूजे जे जिनराज। सादि अनंत भागें करी, पामें भविजन पाज॥१॥ (पंग हिंडोला)

चालो सखी देखन जाइयें, प्रभु कुं झुलावे हो जिन कूं, भविजन देखन जाइये ॥ प्र॰ ॥ आयो मनोहर काल प्राष्ट्र, सकल वन आनंद । जहां असित जलधर गगन गर्जित, दमन दमक मनिंद ॥ सित मुक्ति इव वक पंक्ति विचरे, मेघ धारा कंद । ऐसो समय जब देखिके नृत्य करे

हर्षद् ॥ प्र०२ ॥ तहां विमल पयसापूर्ण विभृत्, कमल मधुकर सेव । वचन चातक विरह सूचक, करे दादुर टेव ॥ तरु श्रेणि मंडित कुसुम संचित, फल निचय भूएव । वैडूर्य मणिरिव अवनि राजे, इन्द्र गोण मणेव ॥ प्र०२ ॥ श्रीकार जंवूक आम्र श्रीफल दाड़िमादिक युक्त । अंजीर वंजीर नासपाती, सेववी जहां उक्त । नारंग करणा नृत नौजा भेद भाव अनुक्त ॥ मधु माधवी वरवेल शोभे, सरस द्राक्षा भुक्त ॥ प्र०२ ॥ सुर रमण कानन वीच चंचिद, रयन खंभ अनुप । मणि रतन मंडित सुरंग झूलन, शोभ सुन्दर भूप ॥ तिहां मनुज सुरपति सचि मनोहर, सज सिंगार सरूप । जिनचन्द्र भक्ति अखय झूलन, गीत गान निरूप ॥ प्र०५ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

महा कर्मारीणामित कटु विपाकं विनशयन, सुपक्वं श्रीकारं सुरिम फल भावैः विकसितं । नवीनं सद्शौच्यं परम सकलं मंगल मिदं, जिनां जन्मा वस्था मतुल फल मांगल्य विद्धे ॥६॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञान-त्रय सहिताय परोपकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा । अर्घ पूजा

॥ श्लोक ॥

अक्षय पद निर्विषं जैनचन्द्रं यजंते, निधि उदयव्याप्तं जन्म कच्याण भावं । प्रति दिवसमनन्तं पूर्णमानन्द भूतं, प्रविश अचल सौख्यं ज्ञान वृद्धि करोति ॥१॥ ॐ ह्वीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परो-पकारैक रिसकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः अर्धे यजामहे स्वाहा । चारित्र कल्याणक पूजा

> जल पूजा ॥ दोहा ॥

गुण सागर चारित्रनें, प्रणमो शुद्ध खभाव। जिनचन्द्र अक्षय आदरें, त्यागें पर गुण भाव॥१॥ गंगा मगध तीर्थना, भावे जिनवर स्नान । करम सर्वनें घोववा, सौगंधित जल मान ॥२॥ ( ऐसी करूं इकतारी )

ऐसी पड़ी मोह जान प्रमु, संग त्याग करोगे ॥ ए० ॥ निर्जरे पेषी स्वगुण गवेषी परगुण भोग तजी ने ॥ प्र॰ ३ ॥ श्री तीर्थंकर जान उदयवर बच्छर दान, देई ने ॥ प्र॰ ४ ॥ पुद्रल संगता जान अनित्यता, सुमति गुप्ति छेई ने ॥ प्र० ५ ॥ ताप समाबन निज गुण भावन, संजम रंग रंगी ने ॥ प्र॰ ६ ॥ चारित्र भूषण गुणगण वर्द्धन, पर्यव ज्ञान वरीने ॥ प्र॰ ७ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय सुखकंदे, निर्मल योग धरीने ॥ प्र० ८ ॥

#### ॥ ३लोक ॥

चारित्रं सुख सागरं निरुपमं मांगल्यकं शैवदं, इन्द्राद्यापि निरंतरं वहृविधैः स्तुत्वाभजेत् वन्दतां । संसारे सकलं असार नितरां धारा धरो सन्निभं, दीक्षायां स्नपयाम्यहं शुचि जलैः ज्ञात्वा जिनाधीश कान् ॥९॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय मिजनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः जलं यजामहे खाहा ।

#### चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

मृग मद सुर चन्दन करी, विलेपन सुरपति कीय। भव ताप सब दूर कर, निरु पाधिक सख लीघ ॥१॥ ( जमुना के नीरे तीर वाज तेरा विछुआ )

श्री जिनराज परम गुणरागी, पर पुद्रल अनुरागता त्यागी ॥ श्री॰ २ ॥ समता रस संपूरण सागर, आश्रव रोघक संवर जागी ॥ श्री॰ ३ ॥ ज्ञान ध्यान अनुपम त्रय मंगी, अनुभव उत्कट रस अनुरंगी ॥ श्री॰ ४॥ चरण करण धर सप्तति अंगी, राग द्वेष परमाद विभंगी ॥ श्री॰ ५ ॥ भोज्यादि व्यवहारें भागी, निर्मल ज्ञान थी निश्चय योगी ॥ श्री॰ ६॥ श्री जिनचन्द्र निज गुण अनुयोगी, निर्मम निग्रन्थ स्व सद्घोगी ॥श्री० ७॥

,我们们对了她们就是这种好的,我们就是不是我的人,我们就是我们的,我们就是我们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人,我们

#### ॥ श्लोक ॥

स्नात्वा श्री जगनायकं अघहरं संताप दूरीकरं, पर्यायैः खगुणं विशुद्धि हितदं देवेन्द्र वंद्यं विभुं। काश्मीरागर कुंकुमं मृगमदं श्रीखंडकैः कर्दमैः, कर्मध्नं तृतीयेजिनं शुभमनैश्चारित्र भावं यजे॥८॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्री मज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा।

## पुष्प पूजा

्॥ दोहा ॥

अनुभव रस में घूमता, चारित्रें जिनराय । विविध कुसुमंकरि पूजिये, भवि शुभभाव धराय ॥१॥

॥ राग सारंग ॥

शुचि आचरणा जिनवरा, भावद्या अधिकार । वधावण सहु संचरता गुण धरा ॥ शु॰ २॥ जन उपगार रसिक शुभध्यानी, आश्रव रोधक निर्जरा ॥ शु॰ ३॥ जिन पारस कर छोहनो कञ्चन, तिन जिन आतम गुणकरा ॥ शु॰ ४॥ नयगम मंग निक्षेप प्ररूपक, स्वपरवर हित अनु-सरा ॥ शु॰ ५॥ ज्ञान सागर उपश्चम रस धोरी, स्वसाधन सुखसंचरा ॥ शु॰ ६॥ श्री जिनचन्द्र अखय अनुरागता, आतम सुख वर्द्धन करा ॥ शु॰ ७॥

#### ॥ श्लोक ॥

सम्यक्ते जिन आत्म तत्त्व सहितं स्याद्वाद मुद्रांकितं, सौगंध्येः नवमिष्ठका च कर्णेः गुर्ह्घम्से वित्रका । अंकांजैर्जल जादिभिः शुभ करेः हम्यं सदा वासयन्, चारित्रं जननं शुचि शिवपदे सत पुप्पकेरच्चेये ॥८॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेदज्ञान संयुक्ताय श्रीमिञ्जनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेम्यः पुष्पं यज्ञामहे स्वाहा ।

॥ दोहा ॥

श्री जिन आगल धूपना, सरस सुगंधित सार । कृष्णागर मृगमद मिश्रित, सेव्हा रस घनसार ॥१॥ ( चरण शरण चित लायो )

والمار وماما فالمطاع والمراج و चरण शरण मन भायो, जिनवर चरण॰। चारित्र पदः चित लायो जिनवर, दुप्ट कषायनो दाहक प्रभुजी, निर्मल संवर ध्यायो ॥ जि॰ २॥ देह निरागी स्व अप्रमादी, आतम गुणवर संसुख जायो। कर्म प्रकृति विभाव विरागी, भविजन पाप पुलायो ॥ जि॰ ३ ॥ साध्यरसी निजतत्त्वें तन्मय, याग निरोध सुहायो । सप्तनयात्मक धर्म प्ररूपक, जिनचन्द्र सेवन पाया ॥ जि॰ ४ ॥

#### ॥ इलोक ॥

والمراقة والمنافقة والمنافئة والمراوا والموالية والموالي कमीणं दहनं करोति सततं, चारित्र नामोद्भवं, तेनैवं परिहत्य भोग सकलं, चक्की तथा तीर्थकृत । गृह्णात्पक्षय सौख्यदं गुणि गणं तीर्थः सदा सेवितं, तंबंदे गर चन्द्नेः रसयुतैः धूपैस्सदा अर्च्चये ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्यङ्कराय वेदज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ।

# दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

दीप करो जिन आगले, आतम भाव विकास । भाव अहिंसक सागग, इन्द्रिय निग्रह जास ॥१॥ ( नथनी रो मोति थारो अजब वन्योहे चंपकरी )

नंयम नम दश भेद घरी प्यारे चारित्र हुफ्कर कर्महरी ॥ म० ॥ अभिन्यापी निज आतम तत्वें, सर्व परिग्रह त्याग करी ॥ स॰ २ ॥ दंश मशक शीनादि परीसह, अनुकूछ अन्य उपसर्गा करी, मन्दिर इवअप्रकं-प्तालारी, ध्यान समाधी त्याग हरी ॥ सं० ३ ॥ त्रसंघावर जीवादि घट्टन,

अति उत्कट समभावचरी । श्री जिनचन्द्र अनुभव रस, आस्वादी भविजन बोघ विकाश करी ॥ सं० ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

नैर्मस्यं निज आत्म माव घटितं, अज्ञान विध्वंसकं तत्त्वातत्त्व विकाशने बहुपटुः, ज्ञानेश्चतुर्भिर्युतं । तैले वर्जित वर्षि धूम ममलं, त्रैलोक्य-मुदीपकं, दीपं श्री जिनमन्दिरे शिवपदे प्रज्वालनंकीयते ॥ ५ ॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कस्याण केम्यः दीपं यजामहे स्वाहा ।

# अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अत्युज्जल अक्षतकरी, मंगल अष्ट लिखाय। श्री जिन आगे भावसूं, निरुपाधिक सुखदाय॥१॥ (वंशी वाले हो कान मेरी गागर उतार)

मोह निवारी हो, प्रभु भव पार उतार, अब शरण संभार ॥ मो॰ ॥ कर्म निकंदन विविध प्रकार, नाण सिहत जिनतप आधार ॥ मो॰ २ ॥ यम नियम आसन, नंदी प्राणायाम । भयत्रिकके चिद् मेदनो धाम ॥ मो॰ ३ ॥ प्रत्याहार ध्यान वेद बखाण, धारणवाण समाधि सुजाण ॥ मो॰ ४ ॥ अद्धेष जिज्ञासा और सुश्रुष, श्रवण बोध मीमांशा पोष ॥ मो॰ ५ ॥ परिशुद्ध अप्रति पत्ति यथा कम, अंग भेद प्रवर्त्ति जाणो सोष ॥ मो॰ ६ ॥ इत्यादिक महाप्राणायामिकयो, मन जीवन कारण जगजयो ॥ मो॰ ७ ॥ सोहे पिण प्राणायाम तणी नहिं शक्त, मावें मन जीवे जिन अनुरक्त ॥८॥ अखय निधि दायक श्रीजिनचंद, यह शुद्ध ध्यान भविक आनन्द ॥मो॰९॥

#### ॥ इलोक ॥

मोहच्छेदक ब्रह्म शस्त्र परमं सन्नाह चारित्रकं, त्रैलोक्ये भयदायकं जगजनान् मिथ्यात्व विध्वंसकं । सौन्दर्यं सगुणं विशाल सुखदं त्राणैक देवे-न्द्रवत, दीक्षां श्री जिननायकं अघ हरं नित्यक्षतैरच्चेये ॥ १० ॥ ॐ हीं

的是一个,我们是一个我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们们,我们们的一个人,我们们们的一个人,我们们们

परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

# नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

स्याद्वादयी ऊपनो, नित्यानित्य स्वभाव । षट् दर्शन नय संग्रही, आतम शुद्धनो भाव ॥१॥ (तेरी सूरत सजन मेरा जुहार रे )

प्रभु मूरित संयम तप मय रे, संयम तप मय नाण रे ॥ प्र० ॥ संयम उदय भया आश्रव तिमिर गया । आतम स्वभाव में रम रह्यो रे ॥ प्र० २ ॥ दुष्कर करण किया, भव दुख हरण भया । वर सादि तप कर कर्म जया रे ॥ प्र० ३ ॥ इक्ष्वादि भोज्य लह्या, मोदक परमान्न गह्या । घेवर साकर द्राख पाक लह्या रे ॥ प्र० ४ ॥ इन विधि पारन किया, भविजन मुक्त दिया । जिनचन्द्र अनुभव रस लह्या रे ॥ प्र० ५ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

अन्यालिस स्वरूप शुद्ध सहितं, अव्याप्ति निस्संगता, भव्यानां शुचि वोधकं हितकरं सद्भावना भावितं । नैपुण्यैः पुरुषेः सुगंध सहितैः सद्ज्ञान भिर्निर्मितं, सद्भोज्ये र्जिननायकं शुभमनैः, चारित्र भावं यजे ॥६॥ ॐ ह्वीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेदज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

# फल पूजा

॥ दोहा ॥

चारित्र पद अति निर्मलो, अविचल सुखनों घाम । सुरनर पूजो फल करी, वोध बीजनो ठाम ॥१॥ ॥ सोरठा ॥

श्री जिन पद आनन्द युत, फलसें पूजो भविक । चारित्र पद सुसकंद, ज्ञान नैन दाता अधिक ॥२॥

# (कौन वन ढूढ़ूं री माई)

अव चारित्र भ्षित श्री जिनफल से पूजोरी माई भविजन पूजोरी माई ॥ अ० ३ ॥ सामर्थ्य योग द्विभेद सन्यासी, धर्म योगअभिधायी । मोहादिकक्षय उपशम रूपे, कायोत्सर्ग लयलायी ॥ फलसें ४ ॥ योगतणी अडदिहीमांहे, धैर्यादि चार रहाई । निर्मल दर्शन वोधनोधामी, थिरहेल् सहाई ॥ फलसें० ५ ॥ अल्पाहार निहार सुरिम गंध, कांता धर्म प्ररूपी । उपशम शान्ति ध्यान नो सागर, परमा दिनकर रूपी ॥ फ० ६ ॥ आतम अनुभव शिवनो हेतू परा अपूरव भाई । क्षीणमोह गुणठाणे प्रकृति, क्षयकृत शेष ठहराई ॥ फ० ७ ॥ सत्तावन उदय गत भावें, अवेद्य संवेद्य नसाई । वेद्य संवेद्ये जिनचन्द्र हिन्द, अक्षयपद सुखदायी ॥ फ० ८ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

सद्धावं जलधारकं स्थिरतरं भूधर्म आसास्थितः, चारित्रं परिणामकं सुखकरं वीजैक कल्पद्रुमः । अंकूरं अशुभं निवर्तितकरं ध्यानं व्रतं पंचकं, ज्ञानादिः फल पूर्णता फल शिवं चारित्र महमर्च्चये ॥ ९ ॥ ॐ ह्वीं परमा-त्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान सहिताय श्रीमज्ञिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा ।

# अर्घ पूजा

श्री सकल जिनचन्द्रं भक्तितोये यजंते, अविचल निधिकोशं दीक्षया प्राप्नुवंते । त्रिकरण शुभयोगैः ध्याययन् मोक्षलक्ष्मीं, अचल विमल सौख्यं सिद्ध भाजं भवन्ति ॥१॥ ॐ हीं परमात्मने चतुर्विशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्रीमञ्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः अर्धं यजामहे खाहा ।

# केवलज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥ ( छेद त्रिमंगी )

बंदू जिन पद पंकज सुखदाइ, कल्याणक सुखधाम । केवल कमला प्रमु प्रगट वरणणें, श्रवण मिले सुखकाम॥१॥ शिव संपति दायक सुरनर नायक, पूजित पद अभिराम । भविजन मन भावन श्री, जिनचन्द्र भजो निज आतमराम॥ बरवाणनाण में परम अमोला, झल हल भानु समान । षट् द्रव्य भावकृ आविर भावें, कीनो जान सुजान, एतादृश महिमा पूरण पूरित, तीन लोक गुन खान ॥ भविजन॰ २ ॥ धन धन जिन नायक नाम, रूप गुण ज्ञान अनंत विलास । सांभल मन भावन पावन, कीरति सकल सुचेतन वास । मिल वाने कारन काज संवारे, भक्ति अखय गुरु वास ॥ भ॰ ३ ॥

### ( गुण अनंत अपार )

ज्ञानामृत रसकूपे प्रभु तुम, समता जलधि सरूप ॥ प्रभु० ॥ पंचद्श पर कीरति क्षयकर, पायो सयोगी ठाण । चत्वारिंशत् नेत्रें शेषें उदियक भावें जाण ॥ प्र॰ ४ ॥ करम दुक्कर तिमिर ध्वंसक, प्रगट्यो ज्ञान स्वभाव । लोकालोक प्रकाशे दिनकर, वस्तु अनंत स्वभाव ॥ प्र०५ ॥ सर्व द्रव्यगत सर्व पर्याय, परदेश भाव अनंत । सर्व प्रदेश एक द्रव्य गुण, बोध भाव अनंत ॥ प्र॰ ६ ॥ खपर पर्याय सर्वज्ञाता, गुण अक्षय जिनचन्द । षावश्यक द्वितीय ज्ञाने ए अधिकार दिनंद ॥ प्र॰ ७ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

निर्व्याघातं समस्तं. भविजन हितदं नैर्मलं बोधवीजं. लोकालोक प्रकाशं खपर दिनमणि मोक्ष छक्ष्यैक हम्यै । भावान्या व्यासरूपं परम गुणधरं शुद्ध सद्रूपयुक्तं, कैवर्ल्यं तीर्थनायं सकल गुणयुतं तीर्थकैः स्नापयामि ॥८॥ ॐ हीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोका-लोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थंकृतां केवल कल्याणकेम्यो जलं यजामहे स्वाहा।

### चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

अनन्त गुणनी संपदा, प्रगट भई सुखकंद। जिन पद चंदने अर्झो

### ( मूरति शान्ति जिनन्दनी )

समवसरण छवि निरखने, सुरनर मुनि हरखाय ॥ स॰ ॥ ज्ञान घनाघन ऊमह्यो, गरजारबधुनि थाय । आतम परणित बीजली, आतम नयरिपोष ॥ स॰ २ ॥ शतत्रय जिहां घनु जलधारा उपदेशे । भविजन मन निश्चल रही, चातक विरत विशेषे ॥ स॰ ३ ॥ करम ताप उपशम जिहां, वक पंक्ति शुभ ध्यान । वायूते स्याद्वादता निरुपम जिनचन्द्र वान ॥ सम॰ ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

देवेन्द्रे: यस्य भक्त्या समवशरणके चैत्य पीठं च चक्रे, श्री तीर्था धिप वचन गुणयुतः, प्रातिहार्योष्ट युक्तः । चत्वारो मूलरूपै रितशय सहजे रुद्रघातिक्षयाच्चनंदंद्विझाधिकेकं परमितशयैश्चन्दनैरर्च्चयेऽह ॥५॥ ॐ ह्वीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

# पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

सकल गुण निर्मल करी, भावो जल जिनराय । इच्योज्वल सत्पुष्पथी, पूजो जन मन भाय ॥१॥

( जाग रे सब रयण विहानी )

प्रमु निरखत भवि मन अति छोभा ॥ प्र॰ ॥ समवसरण विच स्वामि विराजे, द्वादश पर्षद अनुपम शोभा ॥प्र॰ २॥ अष्ट प्रातिहार च्यझन करि शोभे, मनोहर पॅतिस गुणयुत वाणी । घातिक्षय एकादश अतिशय, मूला तिशय चार वखाणी ॥ प्र॰ ३ ॥ एकोनविंशति सुरकृति अतिशय, परि-णामिक सत्ता ये विलासी । श्री जिनचन्द्रजी पूरण ज्ञानी, विन चितन अप्रयासी ॥ प्र॰ ४ ॥

#### ॥ ३लोक ॥

पर्यायानन्त धर्मैः स्वगुण वरयुतं, भंग निक्षेप गम्यैः, हेयादेय प्रवाहै भ्य नय सहितदीयकैः शुद्धबोधम् । सौम्यैः सौगंधयुक्तै विबुध सुखकरं, स्व स्वभावैरगाघं, नैर्मल्यैः पञ्चवर्णैः सुरिम सुकुसुमैरच्चेयेऽहं जिनेन्द्रान् ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

## धूप पूजा

॥ दोहा ॥

अनंत तीन अगाधता, केवल ज्ञान निधान । ऐसे जिनवर धूप सूं, पूजो भक्ति विधान ॥१॥ ( मूरत थारी मोहनगारी आछी प्यारी लागे )

श्री जिनराज हो अनुपम परमशुद्धता है थारी। गुण ज्ञानादिक पर्याय पंच, अविचल संपद सारी ॥ श्री॰ २ ॥ कम भावी पर्याय कहीजे, गुणजे धर्म स्वकामी । एक अनेक अस्ति अपर युत, निजगुण भोगि अकामी ॥ श्री॰ ३ ॥ पुद्रल वर्णीदिकामना शब्दे, तेहनी मोगता त्यागी आतम भाव रहे जिनचन्द्रे, आवि सुक्खने रागी ॥ श्री॰ ४ ॥

#### ॥ इलोक ॥

为,我们是我们的,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们们的人,我们就是我们的,我们们的人,我们就是我们的,我们就是我们的,我们们的人,我们们的人 शुद्धैकं तीक्ष्ण भावैः सकल रिपुजयोद्धोष कीर्तिर्विशालं, वेत्तारं सर्व वस्तुनगुणमगुण यथा वस्थितं निर्विकल्पैः । भावाभावं निजगुण रमणं दाहकं अप्ट कमीन, शुद्धात्मज्ञानरंगैः कलिमलि दलितैर्गेघ धूपैर्यजेऽहम् ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोका-लोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेम्यो धूपं यजामहे स्वाहा ।

# दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

आत्मानंदित बुद्धताः, निज भावें स्वयस्तीन । सर्व वस्तु परकासता, शिवमारगनो दीन ॥१॥ (वीर जिन प्यारे मैं)

मेरे मन केवल ज्ञान लुभायो, दरश सुहायो ॥ मे॰ ॥ नयगम भंग निक्षेपें प्रभुजी, चउिवह धर्म बतायो ॥ मे॰ २ ॥ उत्कट निज गुणनो छे भोगी, योगी योग रमायो ॥ मे॰ ३ ॥ परमातम स्वपर उपयोगी, रिसक तदात्म समायो ॥ मे॰ ४ ॥ स्व पर शक्ति सहज प्रवर्ती शुभध्याने लय लायो ॥ मे॰ ५ ॥ अयोगी पिण पुद्रल त्यागी, जिनचन्द्र दरश में पायो ॥ मे॰ ६ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

भावान्य ध्वंसकर्तुं तिमिर तरिण वद्भव्य जीवान्प्रकाशं दीपं सम्यक्त्य रूपं सकल तमगणं, कंक मिथ्यात्वनाशं। राग द्वेषाज्यवर्ति प्रवल जिन तपो बिह्न प्रज्वालनं च, सज्ज्ञानं सुप्रकाशं, सकल जिनगृहे दीप मुद्दीपयामि ॥७॥ ॐ ह्वीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्या- णकेन्यो दीपं यजामहे स्वाहा।

### अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

जीवादिक निज परणतें, वसें सर्व परिणाम । पिण प्रभुता पामें नहीं, विण केवल निजधाम ॥१॥ ॥ असरण सरण चरण कमल श्री जिनराजके ॥

च्यारि कर्म धातिमर्म शिव सदन मिलान के ॥ च्य॰ ॥ केवल परम ज्ञान भान ज्योतिरूप मान के ॥ च्या॰ ॥ आतम वरस नो सागर जिन-

,这个,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是我们,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们也不是我的,我们也不是我们的,我们也会会会会会会会会会的,

वर, स्वगुणराग अन्य त्याग वस्तु भाम वीतराग, जगत नाथ मुगति साथ ज्ञान भास के ॥ च्या॰ २ ॥ नित्यादिक भेदें वर प्रभुता, परिणामि कत्व ग्राहकत्व व्याप्त बोधकर्तृ कर्म, हर्तृ आदि शक्ति वासके, ॥च्या॰ ३ ॥ निरमळस्या द्वादनी मुद्रा,जिनचन्द दुख निकंद, बोधकरंगुण अमंद तत्वरंग, दोष भंगद्रव्य रूप जास के ॥ च्या॰ ४ ॥

#### ॥ श्लोक )

नास्तित्वास्तित्व भावै जिनवर गुणैः सर्व भावेषु वोध्यं, स्याद् दिस्तित्वं कथं चिद्रहितं मुभयकं, नास्ति भावं कदाचित् । श्री स्याद्वादो, पदेशं भविजन हितदं नैर्मलं बोध वीजंनच्योत्पन्नैः सुगंधैः सकल जिनवरं अक्षतैरर्च्चयेऽहं ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेन्यो अक्षतं यजामहे स्वहा ।

# नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञान निधान तें, प्रमु महा धनवान । नैवेचें जग तातकूंं, पूजो भविक सुजान ॥१॥

माई पूजना मन रंगे कीजे, जिनवर ब्रह्म कूं ॥ मा० ॥ पंचम चिद्रूप भावो, परम पदारथ पावो । कामधेनु सुरतरु मणि, समवेदें ज्ञान शुचिकर्म कूं ॥ मा० २ ॥ आतम गुण अनुरागी, पर पुद्रल रागनो लागी । अवि-हरण पूजन, दुर करूं त्रय धर्मकूं ॥ मा० २ ॥ धन धन वरगुण नाणी अमिय सम जिनवर वाणी । मन आणी नैवेदों अब भजो जिनचन्द्र परम कृं ॥ मा० ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

श्रीमत्तीर्यङ्करेषु दृढतर सकलं कर्म नाशं च कृत्वा, रुद्रं विझाधिकं, द्विप्रकृति रुद्धिकं प्राप्तं कैवल्य शेषं ज्ञानोत्पन्न प्रकर्ष, मित मधुर तरं गंधसौरभ्ययुक्तैः । श्री सर्वज्ञं सुमोज्यं प्रवर गुण युत्ते मंगलंढोकयेऽहं ॥५॥ · 不是是是一种,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们们是一个人,我们们是一个人,我们就是一个人,我们就是一个人,我们就是一个人,我们就会会会会会会会会会会会会会会会会会

ॐ हीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थ कृतां केवल कल्याणकेम्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

# फल पूजा

॥ दोहा ॥

परम पावन ज्ञानमय, भविजनकूं सुख देत । ऐसे दानी पूजिये फलकरि भक्ति सुचेत ॥१॥

॥ तेरे चरण कमल भेट ॥

विमल ज्ञान कांति देख बोध बीज पह्यां ॥ वि॰ ॥ मोह रिपुनाशकृत्, भविक जन शासकृत् । ज्ञान ध्यान भूल भृत अविचल सुख दह्यां ॥वि॰ २॥ निर्मल फिटक मान शुम, अशुभ भाव जान पण अशुभ पुद्रल इव दूरथी तज्ञह्यां ॥ वि॰ २ ॥ शुद्धता रमण रूप, भोग्यता गुण खरूप । परम अखय रस जिनचन्द्र पद लहह्यां ॥ वि॰ ४ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

चारित्रं अभ्रयोगं गुण परिरमणं, चंचला तेज युक्तं, घोषं गर्जारयोगं त्रिक धनुष विडौजं दया वारि घाँरे । चैतन्ये धर्म भूस्यां गुण सकल जलै-वींज सम्यक्त्व रूपं तस्मात् कैवल्य रूपं, अतुलक फलदं सत्फलं ढोक-येऽहं ॥५॥ ॐ ह्वीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेम्यो फलं यजामहे स्वाहा ।

अर्घ पूजा

श्री अक्षय जिनचन्द्रं निर्मलं ज्ञानयुक्तं, अविचल निधि धामं भक्तितो धाययन्ति त्रिकरण शुभ योगैः राज्यलक्ष्मीभवन्ति त्रिविद् अचल सीख्यं सिद्धिरूपं भवन्ति ॥१॥ ॐ हीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म- जरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेम्यः अर्धं यजामहे स्वाहा।

# मोक्ष कल्याणक पूजा

### जल पूजा

॥ दोहा ॥

पूजो निर्मल मन करी, अविचल पदनो ठाम । मुक्ति कल्याणक ध्यावतां, पामें अखयपद घाम ॥१॥ ( तुम साहिब सुखदाई कुशल गुरु )

सादि अनन्त सुखदाई, श्री जिनसादि अनन्त सूखदाई। सुखम योग निरोध न करके, आयुजी वीर्य रहाई ॥श्री०२॥ निय निय तनुमान, ऊन त्रिमागें घन पर देश समाई। द्विसप्तित परकीरित क्षय कर, तेरे अंतर माई॥ श्री० ३॥ पूर्व प्रयोगित गितने योगें, सहुसंग त्याग कराई। एक समय अणफरस प्रदेशें चउवीसम माग ठहराई॥ श्री० ४॥ सप्तमंगी अनन्त चतुष्टय परावर्त्त रहाई। श्री जिनचन्द्र अखय निधिदायक, सुर-तरु सम अखय कहाई॥ श्री० ४॥

#### ॥ श्लोक ॥

वीर्यायुं जीव रघनतरं योगरोधं च कृत्वा, त्रैभागोनं निज घन कृतं सर्व मात्म प्रदेशान् । सिन्धस्थानं अचल पदवीं प्राप्त नैर्मल्य धामं, निर्वाणे श्री जिनवरगणान् सज्जलैः स्नापयामि ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने अनन्त चतुष्क सिहताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेस्यः धूपं यजामहे स्वाहा ॥

#### चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

निरुपद्रव शिवपद अचल, अन्यावाध स्वभाव । शिवपद चन्दन पूजतां, पावें कर्म विभाव ॥१॥ ( तें तज दीनो साहिदा )

दर्शन दीजो साहिया शिवपद ठायके । निराकारता घन परिणामें,

正是是我的人,我们是我们是我们是我们是我们是我们的,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们们的人,我们是我们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们们们们的人, अवगाहन अन्त समायके ॥ द॰ २ ॥ प्रभुकी प्रभुता लखिये किन पर अरूपी रूप रहायके ॥ द॰ ३ ॥ अनन्त सुख लयलीन भये प्रभु, सेवक चित्त लभायके। एत दिवस मोहे रटता बीते, तम गुण गण मन लायके ॥ द० ४ ॥ पूर्वे भविजन कृंबहु तारे, तारक विरुद्ध धरायके । श्री जिनचन्द्र विनती अवधारो, सेवक अपनो जनायके ॥ द॰ ५॥

#### ॥ श्लोक ॥

कृत्वा दाहं प्रथम समये सप्तति द्वि प्रकृत्यः, शेषं विश्वं समय नयने, सर्व विध्वंश कृत्वा । अन्यारपर्शं गमन समये चन्द्रलोकान्तलक्षं, निर्वाणे श्रीजिनवरगणान् चन्दनैरर्चयेऽहम् ॥६॥ ॐ हीं परमात्मने अनन्त चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याण-केभ्यः चन्द्रनं यजामहे खाहा ।

# पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

श्री अरिहन्त अनन्त गुण, शिवपुर राज समिछ । पूजिये, सुमन करी भवनिद्ध ॥१॥ जिनवर ( ऊघो ऐसी तुम्हे कहियो जाय हो जाय )

लीन हो लीन। परित भाव अगाध-मर पदवर विलासी, आतम शक्ति खमाव विकाशी । चिद्घन रूपी गुण अविनासी, निज गुण आतम पीन हो ॥ अ॰२॥ निर गेही परमाण परमेही, निलेंशी निवेंश अमेयी, ध्यान वियोगी भविजन ध्येयी, उपशम रस मांहे भीन हो ॥ अ॰ ३॥ अशरीरी उपमोग सुमोगी, निरावर्ण निर्मंघ अमोगी, अखय जिनचंद अगंघ अयोगी, अव्याबाघ सुलीन हो ॥ अ॰ ४॥

### ॥ इलोक ॥

प्राग् योगे नैवगति परिणामाच वंधाय संगं । उद्वेंगत्वा समय शशि-भृद् योजने भाग जैनं, सर्वं रूपं सकल भयगाह्यात्मशक्त्याविलासं।

आत्मानन्दं जिनवर गणान् पुप्पमारोपयामि ॥१॥ ॐ ह्वीं परमात्मने चतु-फसहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशतितीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

# धूप पूजा

॥ दोहा ॥

स्पर्श निरमोहिता, रस संठाण विहीन।
पूजो भविजनधूप सूं, जूं थावो गुणलीन॥१॥
(राग मल्हार)

शिव पद थारो नीको भव भायाजी, जिनराया म्हारे मन भायाजी ॥ शुडातम निज रूप विलासी, नो योगी अयोग कहाया जी ॥ जिन॰ २ ॥ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय गुण गाजे राजे शिवपद राया जी ॥ जिन॰ १ ॥ तारण तरण विरुद्ध धराई, निज गुण मांहि रहाया जी ॥ जिन॰ १ ॥ कारज कारण किरिया त्यागी, अकर्तृत्व रूप रमाया जी । जिन सेवक मन वंछित पूरो, अचरज भाव सुहाया जी ॥ जिन॰ ५ ॥ श्री जिनचंद अखय निध दाई संघ उद्योत कराया जी ॥ जिन॰ ६ ॥

#### ॥ इलोक ॥

त्यक्ताहारं मनुविरहितं नित्य चिद्रृपमासं, अट्यावाधं परिणतम गापाक्षयं शक्ति युक्तं वेदानन्तं प्रति समयिकं भंगकं साद्यनन्तं क्षीणाप्टं श्री जिनवर गणं धृप दाहं करोमि ॥ ७ ॥ ॐ ह्वीं परमात्मने चतुष्क-निह्नाय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याण केन्द्रः धृषं यजामहे स्वाहा ।

# दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

एक सिन्छ अवगाहना, तिहां अनन्त समाय । भविजन शुद्ध रवभावधी दीप करो मनलाय ॥१॥

# ( दिलदार यार गवरूं राखूं घूंघट का पटमें )

जिनराज रूप तेरा निज वस्तु धर्म हेरा, सञ्ज्ञान का उजेरा॥ ध्याऊंरे अपनो घट में घन कर्म भोग छेदी, भव तापनो विभेदी। ध्याऊं २ ॥ संठाण षट् नो त्यागी, आकार धन मांहि पागी अरूप चिद्रूपरागी ॥ ध्याऊं २ ॥ अलोकालांक भासी निज भावना विकासी, जिनचंद अखय विलासी ॥ ध्या० ४ ॥

#### ॥ इलोक ॥

वर्णैः गन्धैदिचर विरहितं मोह कर्त्ती च हीनं, भोगैयोंगैः सरस रहितं पूर्णमानन्द स्वादी । भेदें वेंदें रुचिक रहितं वाण संघे विंहीनं, आत्मा-नन्दं जिनवर गृहं दीपके चातियामि ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने चतुष्कसहि-ताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः दीपं यजामहे खाहा।

## अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

निरवेदी निवेंदता, क्षमी दमी जिनराय। अक्षत सूं सिन्द पूजतां, अचल अखय पद्ठाय ॥१॥

॥ सोरठा ॥

में तेरी प्रीति पिछानी हो। सिद्ध पद सूं मन लानी हो भवि सिद्ध पद सूं ॥ अविचल नगरीनो अधिराजा, शिव रमणीय लोभाना हो ॥ भवि सिद्ध॰ २ ॥ अनन्त चतुष्टय उत्कट मंत्री, खामी भक्ति रहाना हो ॥ भवि सिद्ध० २॥ मणि मंडित लोकाय सिंहासन, छत्र अलोक शुमाना हो ॥ भवि सिन्द्र॰ ४॥ दर्शन- ज्ञान परावर्त्त चामर, अजर अमर दरसाना हो ॥ भिव सिन्द्र॰ ५ ॥ सोइ कुंडल किरीट विराजे, शोमा रूप निघाना हो ॥ भवि सिन्द्र॰ ६ ॥ ध्याता ध्येय रमणता रूपं, हृद्य हार पहराना हो ॥ भवि सिन्द्र० ७ ॥ विविध स्तव उद्घोपन करतां, भंभानाद हो ॥ भवि सिद्ध॰ ८ ॥ गुण परिकर करि अति छवि छाजे, जिनचन्द्रगज महाना हो ॥ भवि सिन्द्र॰ ९ ॥

॥ खोक ॥

गेहे लेखा रहित मधनं मार्दवं शक्तिवन्तं, ध्यानेर्मुक्तो सकल मनुजं ध्येय रूपं अनंगी । सङ्गैर्मङ्गे रहितमतनुं सर्वमेय प्रमाणं, आत्मा-नन्दं जिनवर गणं अक्षतेरच्चेयहम्॥१०॥ॐ हीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थकराणां निर्वाण कल्याणकेन्यः अक्षतं यजामहें स्वाहा।

### नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

निज निज वस्तु परणतें, जानें सकल खभाव । विविध गुण परिणत करी, चाढ़ो भोज्यनोभाव ॥१॥

( भजलो हो भगवान कूं)

करले हो श्री सिद्ध ध्यान कूं, जो होय शिवपद डेरा त्याग जगका भावकूं, निज ज्ञानका उजेरा। जिम भावके प्रकाशतें, अंधकारका नसेरा॥ कर०२॥ ध्यान कर वर सिद्ध का जूं कटे भवफंद तेरा। गारुड़ीय मंत्र सुयोग थी, नागपास का विणेरा॥ कर०२॥ निरागीराग तेरा जूं मिटे अज्ञान अन्धेरा। दिनकर उदय जिनचंदतें पट्डच्य का उजेरा॥ कर०१॥

॥ स्लोक॥

प्रान्मारेषा जग शिखरवत् सिन्ध सर्वार्ध शृङ्का, तात्वाद्विषट् प्रमित सकरुं योजनं ऊर्द्ध मोगे। चन्द्राकारार्जुन कनकबद्धजूवरोज युक्तं सिन्धस्थानं सरस मधुरं ढ़ौकये नव्य भोज्यं ॥५॥ ॐ हीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थकराणां निर्वाण कल्याणकेम्यः

नवेदं यज्ञामहे स्वाहा। फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल सूं सिद्ध पद पूजतां, होवे सिद्ध विलास ।

आतमगुण विकशित करी, भविजन घर उछास ॥१॥

下下一下,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就会说,我们就是我们的,我们就是我们的,我们们的,我们

#### ॥ रसना राम कही॥

पुण्य उदय भयो आज, सिन्ध पद ध्यान धरी ॥ सि॰ ॥ आतम गुण परणित सूं रमतां, निज गुण शुन्धवरी। ध्याता ध्यान ध्येय सुसमायं, कमं कलंक टरी ॥ सिन्धपद॰ २ ॥ तुम स्वगुणरागी परगुण त्यागी, हूं तुझ राग करी । निरागी सूं राग करीने, कारण कार्य सरी ॥ सिन्ध॰ ३ ॥ मिक्त भर शुभ ध्यान धरीने, विकसित आत्म कली । वंछित पूरण सुरतह सिरखो, चिन्ता दूर हरी ॥ सिन्ध॰ ४ ॥ चिन्तामणि सम धर्म अनूपम, भव भव शर्म दरी । चित्रावछी ज्ञाननो दायक, भवोद्धि पार तरी ॥ सिन्ध॰ ५ ॥ अखय जिनचंद सदा वरदायी, प्रकटी पुण्य घड़ी । निन्धि उदय आतम हितकारी, मङ्गल सङ्ग खड़ी ॥ सिन्ध॰ ६ ॥

#### ॥ कान्यम् ॥

चत्वारिंशत्सुमित सिहतैः, योजनं छक्षमानम्, बाहुर्ल्यं षट्द्रिसिहत-मितैः, योजनं मध्य भागे । तत्सयन्ते अतिशयतरं, पत्रवत्सूक्ष्म भावम्, सिन्धस्थानं सकल फलदं सत्फलैरर्न्चयेऽहम् ॥७॥ ॐ हीं परमात्मने चतुष्क सिहताय अविचलिनिधस्थानाय चतुर्विशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याण-केम्यः फलं यजामहे स्वाहा ।

# अर्घ पूजा

भद्दारकं गुण निधेर्जिनराज स्र्रेः, पादेषु राम विजये पद पाठकोऽभूत् । वादीन्द्र वाद मद भञ्जन हस्तिनादं । शास्त्रार्णवे विविध तत्त्व विचार गामी ॥ १॥ क्रमादायत श्री महिम तिलकं पाठक महान्वभूव तिन्छण्यौ लबिध कुमरे श्चित्र सहितं । सुब्रह्मं यत्रपर्शं वसुशशियुतं वर्ष शुभदं तृतीयं सर्वज्ञो च्यवन तिथि पक्षे बिरचितः ॥ २॥ ॐ हीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः अर्धं यजामहे स्वाहा ।

#### ' कलश

श्री सकल जिनचन्द्रं कारणं ज्ञानवृद्धेः, भवजलिधरङ्गं पञ्चकल्याण युक्तम् ।

दुरित तिमिरदाहं शुद्ध सद्बोधबीजम्, अविचल निधिधामं ध्याययन्प्राप्नुवन्ति ॥१॥ गणाधीशौदार्यं सकल गुण रत्नैर्जलनिधिः । गाम्भीरो भूच्छ्रीमान् प्रवर जिनराजैर्मुनिपतिः । तत्पट्टे सूरीन्द्रैर्चुमणि जिनरङ्गेर्खरतरः । वृहद्गच्छाधीशो भविजन निधानैक समभूत् ॥२॥ क्रमादायार्त श्रीजिन अखय सूरीन्द्रमभवत् । नराणां यत्तापं तदुपशमनं पूर्ण शशिभृत् ॥ तत्पट्टे मार्चण्डो भविक जसु बोषेक रसिकः । भुवौ विख्यातं श्री प्रवर जिनचन्द्रो विजयते ॥३॥

भविजन शुभ भाव भक्ति कल्याणक निमये रे. गर्भ जन्म दीक्षा वरज्ञान परमातम पद पंचम जान । ए जिनवरके पंच स्वरूप, वरण न किये गणधर गुण रूप ॥ स॰ ४ ॥ जिनकी वाणी गुण गणधीर, विविध अरथ त्रिपदी गम्भीर । श्री जिनराज चरण युग भक्ति, विलसी आतम भावनि वृत्ति ॥ म॰ ५ ॥ तिन प्रभुके यह पंच उल्लास, कल्याणक रचना इहां भास । परम मंगल प्रभु पंच कल्याण, भविजन दायक परम निधान ॥भ०६॥ श्रवण मनन ध्यायन मनलाय, भविजन गान किये अघ जाय। वृद्ध मनोहर खरतर धीश, गणभृत श्रीजिन अखय सूरीश ॥ म० ७ ॥ तत्पट्टे उदयाचल भान, श्री जिनचन्द्र सुरिंद्र सुजान । तसु आज्ञायें भक्ति उदार, रचना कीधी संघ हितकार ॥ भ०८॥ ज्ञान निधि गुणमणि भंडार, महिम तिलक पाठक सुखकार । तत्पंकज मधुकर सुख पीन, चित्रलिध आतम गुणलीन॥९॥ तत्पद निद्धि उदय जगमान, जिन आज्ञा प्रतिपालक जान।।१०।।भाग्य नन्दी गुरुपद् अनुरक्त पाठकचरित्र नन्दीयुक्त कलकत्ता मंदिर सुखंघाम, राजऋद्धि पूरण सुखंकाम । तसु श्रावक अति तत्व विचार, धर्मतना जाने सुविचार ॥ भ० ११ ॥ पुण्योदय महणोत विख्यात, महताव धरमशुममात । जीबादिक शुभ तत्त्वनो ज्ञान, तिन प्रेरक थी रचना जान ॥भ॰ १२॥ नन्द\* वसु प्रवचन राशि रूप,सम्भव च्यवन दिसव दिन भूप । भणस्ये सुणस्ये जे नर भाव तस घर थास्यें निन्धि स्वभावा। भ० १३॥

<sup>\*</sup> रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० मट्टारक श्रीपूच्यजी श्रीजिन अखयसूरिजी महाराज के शिष्य जं० यु० प्र० वृ० मट्टारक श्री पृच्यजी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज ने यह पश्चकल्याणक पूजन विक्रम सम्बत् १८८६ मि० फागुन सुदी द को कलकत्ते में रची है।

# चतुर्दश राजलोक पूजा

## जल पूजा

॥ दोहा ॥

पय प्रणमी जिन राजना, भाव धरी उछरंग। लोक चवदनी वरणना, भाखूं हूं मन रंग<sub>॥१॥</sub> स्वर्ग मृत्यु पाताल में, शास्वत जिनवर जेह । त्रिकरण शुद्ध करी हिये, वंदू हूँ ससनेह ॥२॥ सात राज नीचे कह्यो, अधोलोकनो कह्यो, तेहनं कहूं सात राज ऊरध अठारे सहस जोयण कह्यो, तिरछो छोक उदार । द्वीप समुद्र असंख्य है, तेहनो सुनो अधिकार ॥४॥ अवर द्वीप कूटादिके, ते कहिये विस्तार। सुनता लाभ हुये घणा, सफल हुये अवतार ॥५॥ द्वीप अढ़ी में चिहुं दिशे, बंदूं नित जिनराज। वारिषेण महाराज ॥६॥ चन्द्रानना. ऋषभानन वर्द्धमान चौथो सही, शास्त्रत श्री जिनराज। भाव धरी पूजो सदा, पावो सुक्ख समाज॥७॥ लेई करी, पूजो दीन दयाल। अशुभ करम दूरे हुये, फले मनोरथ माल।।८॥ ( आज आयो रे उछाह जिवडा नाच जिनन्द आगे )

भवि भाव घरी जिनवर पूजन करिये रे ॥ भ० ॥ पहली रतन प्रभा इम जान इकलख अस्सी योजन मान ॥ भ०९ ॥ धुर दस योजन रेणू जान, फिर अस्सी में व्यन्तर मान ॥ भ० ॥ अणपन्नी पणपन्नी देव, आठ निकाय कही नित मेव ॥ भ० १० ॥ दस जोयण विल रेणू जान, ए सत योजन लेखो आन ॥ भ० ॥ अठ शत जोयण मध्ये जान, देव पिशाच कहा

जगभान ॥ भ० ११ ॥ सौ योजण विल पृथ्वी पिंड. इन पर सहस जोजनो कंड ॥ भ॰ ॥ सहस योजन ऊपरला ढाल. प्रथम प्रतरनो भेद निहाल ॥ भ॰ १२ ॥ तीन सहस ऊंचो परमान, नारकी जीव रहे तिण ठान ॥ भ॰ ॥ इन परतेरे प्रतर सुजान, तिन पर सहने छे परमान ॥ भ॰ १३ ॥ नारिक जीवरहें तिण ठाम, शास्त्र थकी अवधीनो नाम ॥ भ० ॥ प्रतर प्रतरको अंतर जोय सहस इग्यारे पांचसौ होय ॥ भ० १८ ॥ तियासी योजन धार, इण पर दाखे सहु गणधार ॥ भ०॥ असुरादिक दस देव निकाय, भवनपति ए सहु कहवाय ॥ भ॰ १५ ॥ अंतर मांह रहे ए देव, इम भाखें जिनवर नित मेव ॥ भ० ॥ सात कोडने बहुतर लाख, भवन पतिना भवन ए दाख ॥ भ॰ १६ ॥ सहस योजन विरु नीचे जान. नारकी रहित भविक मद आन ॥ भ० ॥ एक लाखने असी हजार, प्रथम नरकनों पिंड विचार ॥ भ॰ १७ ॥ एक लाख वत्तीस हजार, दुजी नरक तणो अवधार ॥ भ॰ ॥ प्रतर इग्यारे कहा जगदीश, गुरु मुख थी धारो निस दीश ॥ भ॰ १८ ॥ एक लाख अडाइस हजार, वालुक पिंड कहे गणधार॥ भ०॥ पंक प्रमानो पिंड विचार, एक लाख वलि वीस हजार ॥ म॰ १९ ॥ पांचमी धूम प्रमानो पिंड, एक छाख अठारे कंड ॥ म॰ ॥ एक लाख सोले हजार, लड़ी तम प्रभानो अवधार ॥म॰२०॥ सहस अठारे ने विक लाख, सातिम तम तमानो ए दाख ॥ भ० ॥ इन पर सात राजनो भेद, सतगुरु भाखे धार उम्मेद ॥ भ० २१ ॥ शाश्वत चैत्य इहां जिन जान, ते वन्दों भिव गुणमणि खान ॥ भ० ॥ सुमति सदा सेवो जिनराज, वंछित पूरण ए महाराज ॥ म॰ २२ ॥ ॐ ह्वीं चतुर्दश रन्वात्मके शाखता अशाखता जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# द्वितीय चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

बावन चंदन कुंकुमा, मृगमदने घनसार। पूज करो जिनराजनी, उत्तम फल दातार॥१॥ हिवे तिरछा छोकमं, नर तिर्यंच विशेष।
भेद विचार सुनो तुमे, तनमन कर शुभ छेश ॥२॥
जम्मुद्धीपे जे कह्या, शास्त्रत श्री जिन सार।
मेरू ऊपर शोभता, बन्दो भिव सुखकार ॥३॥
कंचन गिरि पर शोभता, शास्त्रत जिनवर देव।
भाव घरी सेवो सदा, मन बांछित फल छेव ॥४॥
बिल गजदन्त ऊपरे, शास्त्रत श्री जिनचन्द।
वक्षस्कारे बिल नमूं, शास्त्रत श्री सुखकंद ॥५॥
जम्बू बुक्षे बिल नमूं, भाव घरी मन रंग।
श्री वैताद्य गिरींद्ना, बंदू घर उछरंग॥६॥
नन्दी सर रुचकादिके, भाख्या श्री भगवंत।
भाव घरी सुनि बांदता, पावे सुक्ख अनंत ॥७॥
श्री मानुषोत्तर ऊपरे, चैत्य कह्या जिनराज।
ते बंदे सुनि प्रेम सूं, निज गुण मिक्त समाज॥८॥

॥ ढाळ फागणी ॥

( व्रज मंडल देश दिखावो रसिया )

अब तिरछो लोक सुनो ज्ञानी, अब तिरछो लोक सुनो। तिरछो लोकमें द्वीप समुद्र हैं, असंख्याता कहे ज्ञानी ॥अब॰ ९॥ जलचर थलचर जीव सबेही, रहे सदा कहे गुरु ध्यानी ॥ अब॰ ॥ अणपन्नी पमुहा देवन की, राजत है जहां राजधानी ॥ अब॰ १० ॥ नव सौ योजन ऊपर कहिये, जोतिष देव महा ज्ञानी ॥ अब॰ ॥ प्रह गण तारा सूरज चन्दा, चरिथर रूप भविक जानी ॥ अब॰ ११ ॥ ऊरध भागमें अपर उदिध हैं, आधेमांहि चरम पानी ॥ अब॰ ॥ लवण समुद्र में लवण सरीखो, मीठो चरम उदिध पानी ॥ अब॰ १२ ॥ जिन प्रतिमा आकारे जलचर, देखि लहे व्रत बहु प्रानी ॥ अब॰ ॥ पिहलो जम्बु द्वीप बखाणो, लाख योजनो शुभ थानी ॥ अब॰ १३ ॥ जगती वेदी किर अति शोमित, केकि करत जहां सुर रानी ॥ अब॰ ॥ चारे पासे चार वरणना, विजयादिक सुर रहे जानी ॥ अब॰ १४ ॥ दोय लाख लवणे करिवींट्यो, खारो जेहनो बहु पानी ॥ अब॰ ॥ अनाहिय नामे देव तेहनो, मालिक छे सुनो भवि प्राणी ॥ अब॰ १५ ॥ दुजो घातकी खंड कहीजे, चार लाख है परमानी ॥ अब॰ ॥ अठलख योजन समुद्र वींटिया, कालो दिघ नाम सुनो ज्ञानी ॥ अब॰ १६ ॥ सोलह लख योजन परमाणें, द्वीप पुक्कर वर गुणखानी ॥ अब॰ ॥ बीच मानुषोत्तर परवत किह ये, इतनी सीम मनुष जानी ॥ अब॰ ॥ बीच रित्रा आगे द्वीप आठमो, तेरमोरुचक कहे जानी ॥ अब॰ ॥ बचीस रित्रकर सोले दिघ मुख, चार अंजन गिरि कहे जानी ॥ अब॰ ॥ बावन मन्दिर जिनवर दाख्या, ते बंदे मुनि शुभध्यानी ॥ अब॰ १९ ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वंदे जिनवर सुख खानी ॥ अब॰ ॥ इण पर एक द्वीप में उदिध, असंख्यात तिरछे जानी ॥ अब॰ २० ॥

#### ॥ पनिहारी री॥

जम्बुद्धीपना भरत में, सुखकारिरेलो । खंड कह्या छह सार, वाला जी ॥ मध्य खंड उत्तम कह्यो, सु॰ आरज देश प्रधान ॥ वाला जी ॥ साडा पचवीसक जिण कह्या, सु॰ जहां जिन धरम सुजांन वाला जी ॥२१॥ जिनवर मुनि मुनिवर केवली, सु॰ विचरे जहां मुनिराज वालाजी । तप जप संजम आदरे, सु॰ सफल करे निज काज वालाजी ॥ २२ ॥ त्रेसठ शलाका जहां कह्या, सु॰ तेना सुनो अधिकार वालाजी । बारै चक्री जानिये, सु॰ सब में ए सरदार वालाजी ॥ २३ ॥ वासुदेव नव महावली, सु॰ सुर धीरज अवतार वालाजी । प्रति वासुदेव कह्या बलि, सु॰ नव संख्याये धार वालाजी ॥ २४ ॥ तीर्थंकर चौबीस ए, सु॰ सुनज्यो धर शुम माव वालाजी । ऋषम अजित सम्भव नमो, सु॰ अमिनन्दन महाराज वालाजी ॥ २५ ॥ सुमति पदम सुपारसजी, सु॰ चन्द्र प्रम जिन-

राज वालाजी । सुविधि शीतल जिन साहिबा, सु॰ सारो वांलित काज वालाजी ॥ २६ ॥ श्री श्रेयांस जिनेसरू, सु॰ वासु पूज्य जिनराज वालाजी । विमल अनन्त जिन घरम जी, सु॰ घरम तणा दातार वालाजी । २७ ॥ शान्ति कुंषु अरनाथ जी, सु॰ चिन्ता चूरण हार वालाजी । मल्ली प्रसु उन्नीसवां, सु॰ वीसमा सुन्नत देव वालाजी ॥ २८ ॥ नमी नेमि बावीसम, सु॰ पारसनाथ सुसेव वालाजी । चौवीसमा श्री वीरजी, सु॰ देवे सुख नित मेव वालाजी ॥ २९ ॥ घरम विशाल दयालनो सु॰ सुमति कहे मन रंग वालाजी ॥ २९ ॥ घरम विशाल दयालनो सु॰ सुमति कहे मन रंग वालाजी ॥ ३० ॥ ॐ० हीं चतुर्दश रज्वातमके शाक्वत अशाक्वत जिनेन्द्राय अस्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# तृतीय कुसुम पूजा

॥ दोहा ॥

सत पत्री वर मोगरा, चंपक जाइ गुळाब। पुष्प लेई जिनराज नी पूज करो शुभ भाव ॥१॥ ऊर्ध्व लोक में जे अछे, शाखत श्री जिनराज। परम शुचि हुय पूजिये, सफल होय सब काज ॥२॥

।। चाल नैना सफल थई ॥

दिल में हरषधरी, भवि पूजो जिनवर सार दिल में हरष धरी। अर्ध्व लोक में जे अछेरे, शाश्वत श्री जिनराज। द्रव्य भाव पूजो सहूरेपावो सुक्ख समाज।। दिल में हरषधरी ३॥ पहिलो सुधरम् नाम हैरे दुजो छे ईशान। तीजो सनत्कुमार छे रे, चौथो माहेन्द्र जान॥ दिल में॰ ४॥ ब्रह्म लोक पंचम कह्यो रे, छहोलांतक देव। सातमों शुक्र सहू कहे रे, धारो दिल नित मेव॥ दि॰ ५॥ सहस्त्रार नामे आठ मोरे, देव लोक नो नाम। तिर्यंच जेहनी जे कहीरे, इतनी गिंत अमिराम॥ दि॰ ६॥ नवमो आनत जानिये रे, प्राणत दसमो सार। आरणनाम इग्यारमों रे बारमो अच्युत धार॥ दि॰ ७॥ ए सहु देव जिनन्दनी रे, आवे करिवा सेव। कल्याणक उच्छव करे रे, पाये सुख नित मेव॥ दि॰ ८॥ कल्पोत्पन्न कही जिये रे, ए सकछा सुरराय । नव ग्रेवैयक जानिये रे, कल्पातीत कहाय ॥ दि० ९ ॥ तिण पर पंचानुत्तरें रे, देव कह्या जगभान । विजय नाम पहिछो कह्यो रे, दजो वैजयंत जान ॥ दि० १० ॥ जयंत नाम तीजो सही रे, अपराजित अभिराम । सर्वारथ सिन्ध जानिये रे, सब सुख केरो ठाम ॥ दि० ११ ॥ चार आठ विछ सोछना रे, चौसठने बत्तीस । इतने मनना सुन्दरू रे, मोती कहे जगदीस ॥ दि० १२ ॥ कल्पातीत छे ए सहू रे, भावे वंदे तेह । एकावतारी ए सहू रे, भाखे प्रभु ससनेह ॥ दि० १३ ॥ छाख चौरासी ऊपरे रे, सहस सताणुसार । ऊपर विछ तेवीस छे रे, भाखे इम गणधार ॥ दि० १४ ॥ इहां जे शाख्वत जिनवरू रे, पूजो भिव सुखकार । सुमित सदा जिनराज कूं रे, वंदू बारम्बार ॥ दि० १५ ॥ ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शाख्वत अशाख्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रच्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

# चतुर्थ धूप पूजा

॥ दोहा ॥

धूप दशांग लेई करी, पूजो जग भरतार । अशुभ करम दूरे हुवे, प्रगटे सुक्ख अपार ॥१॥ चवदे राज ऊपर रहे, सिद्ध महा जयकार । तीन लोक सिर छत्र है, करुणा रस भंडार ॥२॥

॥ चाल ( श्री चन्द्रप्रभ जिनवर साहब ) ॥

निरमल सिद्ध सिलाने ऊपर, सिद्ध रहे सुलकारा मैं वारी जाऊं सिद्ध रहे सुलकारा । निरमल जोत विराजे साहिब, निरमम निरहंकारा, मैं वारी जाऊं निरमम निरहंकारा ॥३॥ अनन्त ज्ञान दरशन जग प्रगट्यो, मिट गये करम विकारा । अजर अमर अक्षय स्थित जेहनी, वोध बीज दातारा, मैं वारी जाऊं वोध बीज दातारा ॥१॥ राज चवदके ऊपर राजे, सिद्धशिला जयकारा, मैं वारी जाऊं सिद्धशिला जयकारा । पॅतालीस लाख योजन कहिये, स्फटिक रतन वहु सारा, मैं वारी जाऊं सारा, मैं वारी जाऊं निर्माल जयकारा । पॅतालीस लाख योजन कहिये, स्फटिक रतन वहु सारा ॥५॥ आठ योजन की जाड़ी

"我们是这个时间,我们就是这个时间,我们就是这个时间,我们就是这个时间,我们就是这个时间,我们就是这个时间,我们就是这个时间,我们就是这个时间,我们的时间,我们的 बिचमें, छेहड़े तनुक उदारा, मैं वारी जाऊं छेहड़े तनुक उदारा। उछटे छत्र आकारे दाखी, सूत्रे श्री गणधारा मैं वारी जाऊं सूत्रे श्री गणधारा ॥ नि॰ ६ ॥ घटारी मटारी छे अति सुन्दर, कारण क्षेम उदारा, मैं वारी जाऊं कारण क्षेम उदारा । जनम भरण , सब आधी व्याधी, दुर किया दुख सारा ॥ मैं॰ ७ ॥ अध्य करमको दूर करीने, विलसे सुख अविकारा । मैं वारी जाऊं विलसे सुख अविकारा । सादि अनन्त थिति जेहनी छाजे, सेवे सुरनर सारा ॥ मैं॰ ८ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे, करुणारस भंडारा, मैं वारी जाऊं करुणारस भंडारा । गुण इकतीस प्रगट भए जिनके, प्रगट्यो सुक्ख अपारा ॥ मैं॰ ९ ॥ लोकालोक काछना प्रगटे, देखे भाव उदारा, मैं वारी जाऊं देखे भाव उदारा । सुरनर मुनिवर सेवा करत हैं, जय जय जग भरतारा ॥ मैं॰ १०॥ घरम विशाल दयाल के नन्दन, सुमति कहे सुखकारा, मैं वारी जाऊं सुमति कहे सुखकारा । सिद्ध अनन्त की सेवा करतां, सदा हुवे जयकारा ॥ मैं॰ ११ ॥ ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शास्त्रत अशास्त्रत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

### पश्चम पूजा

#### ॥ दोहा ॥

दीपक पूजा पांचमी, करो भविक मन रंग। दीपक जिम प्रगटे सही, केवल ज्ञान अभंग ॥१॥ शाश्वत श्री जिनचन्द्र कूं, नमन करी सुखकाज । भाव घरी नित पूजतां, पावें सुक्ख समाज ॥२॥

#### ॥ चारु ॥

ऋषमानन जिन सेवो रे मनवा, ऋषमाननन जिन सेवो । तारण तरण जिनेसर कहिये, देवें सुख नित मेवो रे ॥ मनवा॰ ३ ॥ लोकालोक प्रकाशक एही, एहना गुण नित गावो रे ॥ म० ॥ सुरनर सबही पाय परत हैं, एहनी आन धरावो रे ॥ म॰ ४ ॥ तारण तरण यही अलवे सर, लुल लुल सीस नमाबो रे ॥ म॰ ॥ लोक अलोक को तूंहिज दरसी, तनमनसे गुणगावो रे ॥ म॰ ५ ॥ परम पुरुष परमेसर साचो, ए देखी

रे॥ म०॥ अवर देव तुम काहेको ध्यावो, वीतरागको जाचो रे॥ म० ६॥ इन सम अपर कौन उपगारी, भव भवमें सुखदायी रे॥ म०॥ सुर नर मुनिवर सबही ध्यावे, सुरपित सीस नमायो रे॥ म०॥ ७॥ भविक कमल तुम दरसन करिके, परम परमसुख पायो रे॥ म०॥ आज हमारे हरष बधाई, आज आनन्द उछायो रे॥ म० ८॥ आज अमी घर मेहला वरस्या, आज अधिक सुख पायो रे॥ म०॥ तारण तरण जिनेसरजीकी, पूज रची वरदायो रे॥ म० ९॥ रायपसेणी जीवामिगममें, एहनो फल दरसायो रे॥ म०॥ अष्ट इन्य चंगेरी धरके, विधि पूर्वक मन लायो रे॥ म० १०॥ घरम विशाल दयाल के नन्दन, सुमित प्रभू गुण गायो रे॥ म०॥ ए जिनराजकी पूजन करतां, समिकत शुद्ध उपायो रे॥ म० ११॥ ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शास्वत अशास्वत जिनेन्द्राय अष्ट इन्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

### षष्ट अक्षत पूजा

### ॥ दोहा ॥

अक्षत अमल अखंडले, पूजो दीन दयाल । मंगल आठ करो बली, प्रगटे मंगल माल ॥१॥ श्री चन्द्रानन जिनवरूं, दृजा श्री महाराज । सुरतरु सम सेवो सदा, बंछित पूरण काज ॥२॥

### यात्रीडा भाई यात्रा निनाणं करिये॥

सखीरी ए जिन पूजन करिये रे। जिन सेट्यां भवजल तिरये, सखी री ए जिन पूजन करिये ॥ श्री चन्द्रानन महाराजा रे, जग जीवन तूं जिन राजा रे, प्रभु तारण तरण जहाजा ॥ स॰ ३ ॥ तुम बीतराग गुण राजा रे, सुरनर सब पूजन काजा रे, आवे भगते ले शुभ साजा ॥ स॰ ए॰ ४ ॥ ए करुणा निधि महाराजा रे, प्रभु दोष रहित मुनि राजा रे, सेट्यां सफल हुए सब काजा ॥ स॰ ए॰ ५ ॥ वर अष्ट द्रव्य शुभ लेई रे, पूजो जिनराज सनेही रे, जिम सफल हुवे निज देही ॥ स॰ ए॰ ६ ॥ इमझाखत श्री जिन राजा रे, बल्ल तारण

,"你是是我们的,我是我们的人们是是他们的人们的人们的人们,他们的人们是是一个人们的,我们们是是这一个人的人们,我们们的人们,他们们是是这一个人的人,他们们是一

तरण जहाजा रे, जग जीवन छे सुख काजा ॥ स॰ ए॰ ७॥ जिनराज समो नहिं देवा रे, सुरपित सारे नित सेवा रे, एतो देवें फल नित मेवा॥ स॰ ए॰ ८ ॥ पूरव पुण्य विना किमपावे रे, जिन सेव मली बडदावे रे, एतो ज्ञानी अरथ बतावे ॥ स॰ ए॰ ९ ॥ बहु अतिशय जेहना छाजे रे, गुण पैंतीस वाणी राजे रे, एतो जगतारक जिनराजें ॥ स॰ ए॰ १०॥ चवदे राज में ए जिन चंदा रे, समरवां होत सदा आनन्दा रे, एतो जग जीवन सुख कंदा ॥ स॰ ए॰ ११ ॥ विल आये चौसठ इंदा रे. दिशि कुमरी हरष अमंदा रे, करे उच्छव श्री जिनचन्दा ॥ स॰ ए॰ १२ ॥ जिन मेरु शिखर ले आवे रे, सौ धरम सदा शुभ भावे रे, करि वृषभ रूप न्हव रावे ॥ स॰ ए॰ १३ ॥ यथा योग सहु सुर भगती रे, करे निज निज भावे जगती रे. एतो सफल करे निज शक्ति रे॥ स० ए० १४ ॥ शशि सम शीतल गुण सोहे रे भिव देखीने मन मोहे रे, जसु रूप अधिक सहु होवे ॥ स॰ ए॰ १५ ॥ जिनराज समो नहीं कोई रे, देख्या देव अपर सब जोई रे, पिण दोष सहित सब होई ॥ स॰ ए॰ १६ ॥ प्रभु पाप करम सब घोई रे, जसु आतम निरमल होई रे, कहे सुमित सदा गुण जोई ॥ स॰ ए॰ १७॥ ॐ ह्वीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाखत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे खाहा ।

# सप्तम नैवेच पूजा

॥ दोहा ॥

मोदक मोती चूरना, सरस छेइ पकवान । पूजा करो जिन राजनी, पावो ज्यूं सन मान ॥१॥ वारिषेण जिन पूजिये, सातमी पूज प्रधान । भय सगळा दूरे रहें, प्रगटे सुक्ख निधान ॥२॥

॥ चाल ॥

बिगड़ी कौन सुधारे नाथ बिन बि॰।वारिषेण जिन अन्तर जामी,पूज्यो सेवा पामी रे। परम पुरुष पमेसर साचो, जग जीवन विसरामी रे॥ बि॰ ३॥ छोक अछोक को तूं है दरसी, तुम सम अवरन स्वामी रे। तूं प्रभु अश- रण शरण कहावे, तूं मुझ अन्तर जामी रे ॥ बि॰ ४ ॥ तुम गुण को कोइ पार न पावे, मिहमा त्रिभुवन पामी रे । तेरी आन जगत सहु माने, करुणा रस नो धामी रे ॥ बि॰ ५ ॥ दीन दयाल दयानिधि कहिये, पुरुषोत्तम हित कामी रे । तेरी सेवा नित नित सारे तेतो नव निधि पामी रे ॥ बि॰ ६ ॥ जग जीवन आलोचन कहिये, परमारथ सब पामी रे । केवल ज्ञान प्रगट भयो जिनके, क्षायक भाव सुनामी रे ॥ बि॰ ७ ॥ वारिषेण जिन तीजो कहिये, उपकारी सुखधामी रे । सर्व देव में देव शिरोमणि, दो वंलित मुझ स्वामी रे ॥ बि॰ ८ ॥ सुमति कहे ए जिनकी सेवा, भव भवमें विसरामी रेबि॰। ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाख्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

### अष्टम फल पूजा

॥ दोहा ॥

फुळ पूजा जिनराजकी, करो भविक गुणवंत । अशुभ करम दूरे हरो, पावो सुक्ख अनन्त ॥१॥ वरधमान चौथो नमूं, केवळ ज्ञान दिनंद । उपकारी सिर सेहरो, इम भाखे मुनिचंद ॥२॥

॥ चाल ॥

( तुम बिन दीनानाथ द्यानिधि को॰ )

वरधमान जिन सेवो भविजन, ज्यूं वंछित फल पावो रे। ऋषभानन चन्द्रानन स्वामी, वारिषेण मन लावो रे॥ वरधमान जिन पूजो भावे, वांछित फल तुम पावो रे॥ वर॰ ३॥ चवद राजमें ए जिन छाजे, एहनी भगित करावो रे॥ वर॰ ॥ शाश्वत नामे ए जिन छाजे, गुरु मुखर्थी सुध पावो रे॥ वर॰ ॥ भाव सिहत ए जिनवर पूजे, दोष सकल मिट जावे रे॥ वर॰ ॥ भाव सिहत ए जिनवर पूजे, दोष सकल मिट जावे रे॥ वर॰ ॥ तनमन सुचिसे जो जिन पूजे, लाम अनन्त उपावे रे॥वर॰॥ पंचमेरु ऊपर जिन छाजे, कंचनगिरि वली पावे रे॥ वर॰॥ पंच मरत विल पंच ऐ खत, पंच विदेह कहावे रे॥ वर॰ ६॥ मानुषोत्तर विल राजे, ते पिण मनमें लावे रे॥ वर॰॥ गजदंता विल परवत ऊपर, शास्वत एहज

पावे रे ॥ वर॰ ७ ॥ जम्बू धातकी पुष्कर वृक्षे, ए जिनराज कहावे रे ॥ वर॰ ॥ इण विधि शाश्वत चैत्य नमीने, जनम जनम सुख पावे रे ॥ वर॰ ८ ॥ धरम विशाल द्यालके नन्दन, भाव सिहत गुण गावे रे ॥ वर॰ ॥ सुमति सदा ए जिन की सेवा, जगमें सुजस उपावे रे ॥वर॰९॥ ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रच्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

### नवम ध्वज पूजा

#### ॥ दोहा ॥

नवमी ध्वज पूजा करो, भाव धरी मतिवंत । त्रिभुवनमें जय पामिये, प्रगटे सुक्ल अनन्त ॥१॥ इन्द्र ध्वजा प्रभु आगले, सिणगारी मन रंग । उच्छव कर लाओ सही, होय सदा उछरंग ॥२॥ सुन्द्रि सब आयो सही, पहरी वस्त्र प्रधान । ध्वज पूजन उच्छव करो, ज्यूं पावो सनमान ॥३॥ कंचन वरण अति शोभता, पहरी नव सर हार । परम शुचि हुय तुम करो, पूजा श्री जिन सार ॥४॥

#### ॥ चाल ॥

जिन गुण गावत सुर सुन्दरी, ध्वज पूजन भवि इण पर करके ।।ध्व०॥ सहस योजननो इन्द्र ध्वजा ए, भाव सहित जिन आगल घर रे॥ ध्व०५॥ पंचवरणकी झलहल कंती, मंगल रूप अमंगल हर रे॥ ध्व०॥ नवरंगी अरु ध्वज बहु चंगी, फुरक रही असमानके घर रे॥ ध्व० ६॥ कंचन थाल लेई ध्वज उत्तम, वर सुन्दर ले मस्तक घर रे॥ ध्व०॥ गाजे बाजे सब मिल गोरी, फिर लावत जिनवरके घर रे॥ ध्व० ॥ सज सोले सिणगार कामिनी, तीन प्रदक्षिण दे जिनवर रे॥ ध्व०॥ उज्जल कमल अखंडित चावल, लेई खिस्तक आगलि कर रे॥ ध्व० ८॥ जिन गुण गावत हरष वधावत, तन को मैल अलग तूं कर रे॥ ध्व०॥ आज हमारे ।। व्व०॥ आज हमारे ।। ध्व०॥ अज हमें स्वराह अगलि कोमित, देखत भविजन के मन हर रे॥ ध्व०॥ पाप नियाणा दर आगलि कोमित, देखत भविजन के मन हर रे॥ ध्व०॥ पाप नियाणा दर

करी ने, समिकत शुद्ध सदा तूं वर रे॥ ध्व॰ १०॥ इण पर शाश्वत जिनकी सेवा, भाव सहित भविजन अनुसर रे॥ ध्व॰॥ सुमित कहे ए जिनकी आज्ञा, अपने सिर पर तूं नित धर रे॥ ध्व॰ ११॥ ॐ हीं चतुर्द्श रज्वात्मके शाख्वत अशाख्वत जिनेन्द्राय अप्टद्रव्यं सुद्रां यजामहे खाहा।

### दशम नाटक पूजा

॥ दोहा ॥

दशमी पूजा अवसरे, गावो गीत विशेष । नृत्य करे प्रभु आगले, पावो लाभ अशेष ॥१॥ कुमर कुमरी आठ शत, राय पसेणी माह । सूरि याभ रचना करी, भक्ति करे चित चाह ॥२॥ रावणने मंदोदरी, सुनिये शास्त्र मझार । अप्टापद गिरि ऊपरे, नृत्य करे वहुसार ॥३॥ गोत्र तीर्थंकर वांचिये, भक्ति करी मितवंत । तिण पर तुम भक्ती करो, पावो लाभ अनन्त ॥१॥

#### ॥ जिन गुण गावत सुर सुन्दरी ॥

नृत्य करें मिल सुर सुन्द्री रे ॥ नृ० ॥ थेई थेई तान करें प्रसु आगे, सुन्द्र सब सिणगार करी रे ॥ नृ० ॥ गल मोतियनको हार विराजे, वेसर मोती लाल जरी रे ॥ नृ० ५ ॥ बांहे बाजू हीरा जिड़या, विचमें चूनी लाल खरी रे ॥ नृ० ॥ कंचुक किसया हरष उल्लिया, दीसे मोहन बेल परी रे ॥ नृ० ॥ कंचुक किसया हरष उल्लिया, दीसे मोहन बेल परी रे ॥ नृ० ॥ कंचुक किसया हरष उल्लिया, दीसे मोहन बेल परी रे ॥ नृ० ॥ हाथें चूड़ी सोहे रुड़ी, पग नेवर झणकार करी रे ॥ नृ० ॥ ठम ठम नाचत जिन गुण गावत, भावत नाचत सुर महरी रे ॥ नृ० ॥ औंखने भटके मुखने लटके, मोहे सुरनर देव नरी रे ॥ नृ० ॥ हीर चीर पाटम्वर पहरी, प्रसु आगल गुण गाय खरी रे ॥ नृ० ॥ हीर चीर पाटम्वर पहरी, प्रसु आगल गुण गाय खरी रे ॥ नृ० ॥ घपमप घपमप मादल बाजे, चंग रंग नाचत किन्नरी रे ॥ नृ० ९ ॥ मोहन गारी सब मिल नारी, देखत सुरनर चित्त हरी रे ॥ नृ० ॥ शिका सम वदनी कोयल वयणी, वरसत अमृत मेध झरी रे ॥ नृ० १० ॥ विध वत्तीसे नाटक करके.

निज गुण अपनो शुद्ध करी रे ॥ नृ॰ ॥ रावण राजा नारि मंदोदरी, अष्टापद पर नृत्य करी रे ॥ नृ॰ ११ ॥ गोत्र तीर्थंकर बांध्यो भावे, तिन परि तुम भवि भगत करी रे ॥ नृ० ॥ सुमति कहे सेवो भल भावें, श्री जिन तारण तरण तरी रे ॥ नृ॰ १२ ॥ ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शास्त्रत अशाखत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

#### कलश

॥ तेज तरण मुख राजे ॥

करिये चतुर नर ॥ इ०॥ शाखत विधि पूजन जिनवर राज चवदमें, इण नामे अवधरिये॥ च॰ १३॥ द्वीप अढ़ीमें जे जिन छाजे, ते बंदी अघ हरिये ॥ च॰ ॥ सहस सत्तावन लाख छपन वलि, अष्ट कोड़ मन धरिये॥ च॰ १४॥ चउसयछयाली चैत्य वन्दीने, पाप करम सब हरिये।। च० ॥ तीन लोकनी संख्या दाखी भवि-जन ते उर धरिये ॥च॰ १५॥ शाख्वत अशाख्वत सहु जिनवरनी, सेव करो सुख करिये ॥ च॰ ॥ अष्ट सिद्धि नवनिद्धिना दायक, चरण करण गुण घरिये ॥ च० १६ ॥ कामधेनु चिन्तामणि थी ए, बांछित अधिक सूं करिये ॥ च० ॥ ऋषभानन चन्द्रानन स्वामी, वारिषेण मन घरिये ॥च०१७॥ वर्द्धमान जिन सुखके दाता, पूजत अनुभव वरिये ॥ च॰ ॥ मंगल कारण सब दुख बारण, भव्य सकल उर धरिये ॥ च॰ १८ ॥ लोक चवदना भेद वखाण्यो, गुरु मुख थी अवधरिये ॥ च॰ ॥ ए पूजन जे भणसी गुणसी, तस् वंछित सब सरिये ॥ च॰ १९ ॥ संवत सय उगणीसे त्रेपन\*, माधव सुदि शुभ करिये ॥ च॰ ॥ आखा तीज दिवस सुखकारी, पूज रची गुण भरिये ॥च॰ २०॥ श्री जिनचन्द्र सूरि गुरु खरतर, तसु गुण गण उर धरिये ॥ च॰ ॥ प्रीत सागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धरम सुम-रिये ॥ च॰ २१ ॥ सीस क्षमा कल्याण सुपाठक, ज्ञान तणा गुण

<sup>\*</sup> यह पूजा बीकानेरमे श्री सुमति मुनिजी महाराज ने सम्बत् १९५३ वैशाख सुदी ३ को

दिरिये ॥ च०॥ तसु सेवक मुनि धर्म विशाला, उपगारी सुख करिये ॥ च० १२ ॥ तसु सेवक मुनि सुमित कहत हैं, पूजो शुभ मन धरिये ॥ च० ॥ हित बहुम गणिवरके आग्रह, पूज रची सुख करिये ॥ च० २३ ॥ बीकानेर नगर सुखकारी, संघ सकल हित करिये ॥ च० ॥ वंलित पूरण मंगल माला, सुजस शोमा नित वरिये ॥ च० २४ ॥ ॐ हीं चतुर्दश रज्वात्मके शाखत अशाखत जिनेन्द्राय अष्ट द्रच्यं मुद्रां यजामहे खाहा ।

# श्री दादा गुरुदेव पूजा

॥ आवाहन\* मन्त्र ॥

सकल गुण गरिष्ठान् सत्त्वपोिमर्वरिष्ठान् । शम दम यम जुष्टांश्रारु चारित्र-निष्ठान् ॥ निष्विलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् । मुनिपकुशलसूरिन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥

ॐ हीं श्रीं श्रीजिनदत्त-श्रीजिनकुशल-श्रीजिनचंद्रसूरिगुरो अत्रावतरा-वतर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा ।

ॐ हीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संन्निहितो भव वषट् ।

# जल\* पूजा

#### ॥ दोहा ॥

ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥१॥ सौधर्मा मुनिपित प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट । मिध्या मत तम हरणकां, भव्य दिखावन वाट ॥२॥ सुस्थित सुप्रतिबद्ध गुरू, सूरि मंत्रको जाप । कोटि कियो जब ध्यान धर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥३॥ दशपूर्व्वी श्रुतकेवली, भये वज्रधर स्वाम । ता दिनतें गुरुगच्छ को, वज्र शाख भयो नाम ॥॥॥ चंदसूरि भये चन्द्र सम, अतिहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्थो बहु विज्ञान ॥५॥ वर्द्धमान के पाट

अप्रथम चौकी या पट्टे पर चावलों का साथिया कर नारियल पर रुपया रख कर उपरोक्त मन्त्र से आवाहन करे।

<sup>ी</sup> यहा से हर एक पूजा में नियमानुसार जल चन्द्रनादि लेकर खड़ा रहे।

पद, स्रि जिनेश्वर भाश। चैत्यवासिका जीत कर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥६॥ अणिहलपुर पाटण सभा, लोक मिले तिहां लक्ष । खरतर विरुद्द सुधानिधी, दुर्लभराज समक्ष ॥७॥ अभयदेव स्रिर भये, नव अंग टीकाकार । यंभण पारस प्रगट कर, कुछ मिटावन हार ॥८॥ श्रीजिनवहुम स्रिर गुरु, रचना शास्त्र अनेक । प्रतिवोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥९॥ हुंबड श्रावक बावडी, अहारे हजार । जैन द्याधर्मी किये, वरते जय जयकार ॥१०॥ दादा नाम विख्यात जस, सुरनर सेवक जास । दत्तस्रि गुरु प्जतां, आनंद हर्ष उल्लास ॥११॥ दिल्लीमें पतशाहनं, हुकम उठाया शीष । मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो विसवाबीस ॥१२॥ ताके पट्ट परंपरा, श्री जिनकुशल सुरिंद । अकबरको परचा दिया, दादा श्री जिनचंद ॥१३॥ ऐसे दादा चारको, पूजो चित्त लगाय । जल चन्दन कुसुमादि कर, ध्वज सुगंध चढ़ाय ॥१४॥

### ॥ दादा चिरंजीवा ॥

गुरुराज तणी कर पूजन, भिंब सुखकर मिलसी लिच्छ घणी ॥ गु॰ ॥
गुरु दत्त सुरिंद जग सुखकारी, गुरु सेवकने सानिधकारी। गुरु चरण
कमलकी बलिहारी ॥ गु॰ १५ ॥ संवत इग्यारे वार शशी, बत्तीसे जनम्यां
शुभ दिवसी। श्रावग् कुल हुंबडने हुलसी ॥ गु॰ १६ ॥ जसु बालगसा
पितु नाम भणे, बाहडदे माता हर्ष घणे। इकतालीसे दीक्षा पभणे ॥गु॰ १७॥
गुणहत्तरे बल्लभ पाट घरी, गुरु साया बीजनो जाप करी। गुरु जगमें
प्रगट्या तरणतरी ॥ गु॰ १८ ॥ मणिधारी जिनचंद उपगारी, जिनदत्त
सुरिंदके पटघारी। भये दादा दृजा सुखकारी ॥ गु॰ १९ ॥ राशल पितु
देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता। दिल्लीपित शाह सुगुण
गाता ॥ गु॰ २० ॥ जसु चौथे पाट उद्योत करी, जिनकुशल सुरिंद अति
हर्ष भरी। तेरेसै तीसे जन्म घरी ॥ गु॰ २१ ॥ जसु जिल्ला जनक जगत्र
जीयो, वर जैतश्री शुभ स्वपन लियो। गुरु छाजेड गोत्र उद्यार कियो
॥ गु॰ २२ ॥ धन संतालीसे दीक्षा घरी, जिनचन्द सुरीश्वर पाट बरी।

गुणहत्तरे सूरिमंत्र जाप करी ॥ गु॰ २३ ॥ सेवामें बावन वीर खरा, जोग-नियां चौसठ हुकम धरा । गुरु जगमे कइ उपकार करा ॥ गु॰ २४ ॥ माणक सूरीश्वर पद छाजे, जिनचन्द सूरि जगमे गाजे । भये दादा चौथा सुख काजे ॥ गु॰ २५ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावसकी पूनमवालो । सब श्रावक मिल पूजन चालो ॥ गु॰ २६ ॥ जिन अकबरको परचा दीना, काजीकी टोपी वश कीना । बकरीका मेद कहा तीना ॥ गु॰ २७ ॥ गंधोदक सुरमि कलश भरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी । या पूजन कवि ऋहिसार करी ॥ गु॰ २८ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

सुरनदीजलिनम्मलधारकैः, प्रबलदुष्कृतदाधनिवारकैः। सकल मङ्गल वाञ्चितदायकं, कुशलस्रिगुरोश्चरणौ यजे ॥२९॥ ॐ हीं परमपुरुवाय परम गुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा।

## केशर चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केसर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप । परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥१॥ ॥ चाल वीण वाजेकी ॥

आये भरुअच्छ नग्न, धाम धूम धूं। बाजते निशान ठार, हर्प रंग हूं॥ दीनके दयाल राज सार सार तूं॥ दी० २॥ मुसलमान मुगलपृत, फीज मीजमूं। फीत मीत हो गया हायकार सूं॥ दी० ३॥ सधन विधन देख आप, हुकम दीन यूं। लावो मेंगे पास आप. जीव दान दृं॥ दी० ४॥ मृतक पृत मंत्रसे उठाय दीन दृं। देखके अचंभ रंग, दास खास कूं॥ दी० ५॥ करत सेव भाव पूर, नुकराज जूं। छोड़के अभध्य खान, हाजरी भरुं॥ दी० ६॥ बीज खीजके पडीं. प्रतिक्रमणके मूं। हाधसे उठाय पात्र, ढांक दीन छूं॥ दी० ७॥

婚姻强称的情况,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们们的人,我们们的人,我们们的人们的人,我们们的人,我们们的人们的人,我们们的人们的人,我们们的人 दामनी अमोल बोल, सिखराज तूं। देउं वरदान छोड, बंध कीन क्यूं || दी॰ ८ || दत्त नाम जपत जाप, करत नांह चूं | फेर मैं पडूंगी नांह, छोड़ दीन फूं ॥ दी॰ ९॥ करोगे निहाल ओप, पाव पलकनें। रामऋद्सिसार दास, चरण छांह छूं ॥ दी० १० ॥

॥ इलोक ॥

मलय चन्दन केंसर वारिणा, निखिल जाड्यरुजातपहारिणा। सकल मङ्गल वाञ्छित दायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥११॥ ॐ हीं पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो क्ंुंकुमं चन्दनं निर्वपामि स्वाहा ।

### पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मुचकुंद । जो चाढे गुरु चरण पर, नित घर होय आनंद ॥१॥

( नींद तो गइ वादीला म्हारी )

गुरु परतिख सुरतरु रूप, सुगुरु सम दृजो तो नहीं । दृजो तो नहीं रे सुमतिजन, दृजो तो नहीं ॥ गु॰ ॥ चित्तौड नगरी वज्रथंभमें, विद्या पोथि रही रे । हेजी यंत्र मंत्र विद्यासे पूरी, गुरु निजहाथ प्रही ॥ गु॰ २॥ पुर उज्जैनी महाकालके, मंदिर थंभ कही रे। हेजी सिद्धसेन दिनकरकी पोथी, विद्या सर्व रुही रे ॥ गु॰ ३॥ उज्जैनी व्याख्यान बीचमें, श्राविका रूप ग्रही रे । हेजी जोगनियां छलनेको आई, सबको कील दई ॥ गु॰ ४ ॥ दीन होय जोगनियां चौसठ, गुरुकी दासि भई रे। हेंजी सात दिये वर-दान हरवसें, पसरचा सुजस मही ॥ गु॰ ५ ॥ पुष्पमोल गुरुगुणकी गूंथी, चाढ़ो चित्त चही रे। हेजी कहे रामऋदसार सुजसकी, बूंटी दई॥ गु॰ ६॥

॥ इलोक ॥

कमलचम्पक केतिक पुष्पकैः, परिमलादृतषट्पदवृन्दकैः । सकल मङ्गल

वाञ्छितदायकं, कुशलस्रिगुराश्चरणौ यजे ॥७॥ ॐ ह्वीं श्रीं परम पुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवतेजिनशासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो पुष्पं निर्वपामि स्वाहा ।

### धूप पूजा

॥ दोहा ॥

धूप पूज कर सुगरुकी, पसरे परिमल पूर । जससुगंध जगमें वधे, चढेसवाया नूर ॥१॥ (कुबजाने जादृ डारा)

・カトラ・カーとのこのことであるとのこのものなるのであるとの方をなるのでものできるとのできるのは、大学の様々となってもが終わるとなって、ことはないをしているとのできると、ことになって、ことになって、ことになっているとのできるとは、これをはないできる。

अंबिका बिरुद बलाणे, गुरु तेरा अंबिका । तुम युग प्रधान नाहिं छाने गढ गिरनारपे अंबड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाणे । युग प्रधान इस जग में कोई, देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु॰ २ ॥ कर उपवास तीन दिन वीते, प्रगटी अंबा ज्ञाने । प्रगट होय करमें लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ गु॰ ३ ॥ या गुण संयुत अक्षर बांचे, ताको युग वर जाने । अंबड मुलक मुलकमें फिरता, सूरि सकल पतवाने ॥ गु॰ ४ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने । वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला वांच सुनाने ॥ गु॰ ५ ॥ सर्व देव हैं दास जिनों के, मरुधर कल्प प्रमाने । युग प्रधान जिनदत्त सूरिश्वर, अंबड शीश झुकाने ॥ गु॰ ६ ॥ उद्योतन मूरीने निज हाये, चौरासी गल ठाने । सो सब तुमरी सेवा सारे, चौरासी गल माने ॥ गु॰ ७ ॥ जो मिध्यात्वी तुमको न पूजे, सो नहिं तत्त्व पिछाने । भद्रवाहु स्वामी तुम कीर्त्तन, कीनी प्रन्थ प्रमाने ॥ गु॰ ८ ॥ युग प्रधान परिकीनि गंडिका, गणधर पद वृत्ति माने । कहे रामऋदिसार गुरू की, पृजा भूप कराने ॥ गु॰ ९ ॥

#### ॥ इलोक ॥

अगर चन्द्रन धूपदशाङ्गजेः, प्रसरितेः खलु दिश्रु मुध्रम्नकेः॥ सकल मङ्गल वाञ्चितदायकं, कुशल मूरि गुरोश्वरणीयजे॥१०॥ॐ हीं श्रीपरम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोदीपकाय चरण कमलेभ्यो धूपं निर्व-पामि खाहा ॥

# दीप पूजा

॥ दोहा ॥

दीप पूज कर सुगुण नर, नित नित मंगल होत । उजयालो जगमें जुगत, रहे अखंडित जोत॥१॥

许是这种,他们是是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一 पूजन कीजोजी नरनारी, गुरु महाराज की हो पू॰ ॥ सिंधु देश में पंच नदी पर, साधे पांचो पीर । लोई ऊपर पुरुष तिराये, ऐसे गुरू सधीर ॥ पू॰ २ ॥ प्रगट होय के पांच पीरने, सात दिये वरदान । सिंधु देश में खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ पू॰ ३ ॥ सिंधु देश मुलतान नगर में बड़ा महोत्सव देख, अंबड़ और गच्छका श्रावक, गुरुसे कीना द्वेष ॥ पू॰ १ ॥ अणहिलपुर पत्तनमें आवो, तो मैं जानूं सचा । बड़े महोत्सव आवेंगे, तूं निर्धन होगा कचा ॥ पू॰ ५ ॥ पत्तन बीच पघारे दादा, सम्मुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यूरे अंबड, अहंकार फल पाया ॥ पू॰ ६ ॥ मनमें कपट किया अंबडने, खरतर महिमा धारी । जहर दिया उन अशन पानमें, गुरु विघ जानी सारी ॥ पू॰ ७ ॥ भणशाली मुख बर श्रावकसे, निर्विष मुद्रि मंगाई । जहर उतारा तब लोकोमें, अंबड निंदा पाई ॥ पू॰ ८ ॥ मरके व्यंतर हुवा वो अंबड, रजोहरण हर लीना। भणशाली व्यंतर वचनोंसे, गोत्र उतारा कीना ॥ पू॰ ९ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा छेके, गोत्र बचाया सारा । ऋदिसार महिमा सद्गुरुकी, दीपक का उजियारा ॥ पू॰ १० ॥

॥ इलोक ॥

अतिसुदीप्तिमयैः खलु दीपकैः, विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः। सकलमङ्गल वाञ्छितदायकं, कुशलस्रिगुरोश्चरणौ यजे॥ ११॥ ॐ हीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरण कमलेभ्यो दीपं निर्व-पामि स्वाहा।

### अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरु तणी, करो महाशय रंग । क्षति न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥१॥ (अवधू सो जोगी गुरु मेरा)

रतन अमोलक पायो, सुगुरु सम रतन अमोलक पायो। गुरु संकट सब ही मिटायो॥ सु०॥ विक्रमपुर नगरी लोकनको, हैजा रोग सतायो। बहुत उपाय किया शांतिकका, जरा फरक नहीं आयो॥ सु०२॥ जोगी जंगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो। फरक नहीं किनहीने कीना, हाहाकार मचायो॥ सु०२॥ रतन चिंतामणि सरिखो साहिब, विक्रमपुर में आयो। जैन संघका कप्ट दूर कर, जय जयकार वरतायो॥ सु०१॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण, सब ही शीश नमायो। जीवित दान करो महाराजा, गुरु तब यूं फरमायो॥ सु०५॥ जो तुम समकित ब्रतको धारो, अबही कर दृं उपायो। तहत वचन कर रोग मिटायो, आनंद हर्ष वधायो॥ सु०६॥ जो कोई श्रावक ब्रत नहिं धारचो, पुत्री पुत्र चढ़ायो। साधु पांचसै दीक्षित कीना, साधवियां समुदायो॥ सु०७॥ मंत्रकला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दिपायो। ऋदिसार पर किरपा कीनी, साचो इलम वतलायो॥ सु०८॥

॥ श्लोक ॥

सरलतण्डुलकैरतिनिर्मलैः, प्रवरमीक्तिकपुंज वदुःबलैः । सकलमङ्गल वाञ्चितदायकी, कुशलसूरिगुरोश्चरणी यजे ॥ ९ ॥ ॐ हीं परमपुरुपाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो अक्षतं निर्वपामि स्वाहा । नैयेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

नेवेच पूजा सातमी, करो भविक चित चाव । गुरुगुण अगणित कुण गिणे. गुरुभव तारणनाव॥१॥ 大品名:在这个人的人,这种人们是不是不是不是不是一种人,他们们是这种人,他们也是是这种人的,他们也是这一个人,他们也是这一个人,他们也是这一个人,他们也是这一个人

### ( तेरी पूजा बनी है रसमें )

गुरु किया असुर को वशमें ॥ हो गुरु ॥ बडनगरीमें आप पघारे, सांमेळा घसमसमें । ब्राह्मण लोक बड़े अभिमानी, मिलकर आया सुसमें ॥ हो र ॥ महिमा देख सक्या निहं गुरुकी, भरे मिध्यात्वी गुसमें । मृतक गऊ जिन मंदिर आगे, रख दी सनमुख चसमें ॥ हो र ॥ श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरूसे कसमें । चिन्ता दूर करी है संघकी, गउ उठ चाली घसमें ॥ हो र ॥ मरी गऊको जीती कीनी, लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पड़ी रुद्रालय, संघ भया सब सुखमें ॥ हो र ॥ ब्राह्मण पांव पड़े सब गुरुके देख तमासा इसमें । हुकम उठावेंगे शिर उपर, तुम संतितकी दिशमें ॥ हो र ॥ नमस्कार है चमत्कारको, कीनी पूजा रसमें । कहे रामऋदिसार गुरूकी, आनंद मंगल जशमें ॥ हो र ॥ ॥ इलोक ॥

बहुविधेश्चरुमिर्वटकैर्यकैः, प्रचुरसप्पिषि पक्व सुसञ्जकैः । सकलमङ्गल वाञ्छितदायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥८॥ ॐ हीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि स्वाहा ।

### फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल पूजा से फल मिले, प्रगटे नवे निघान । चिहुं दिशि कीरति विस्तरे, पूजन करो सुजान॥१॥ (स्थ चढ यदुनंदन आवत हैं)

चालो संघ सब पूजनको, गुरु समरचां सनमुख आवत हैं रे ॥चा॰॥ आनंदपुर पट्टनको राजा, गुरु शोभा सुन पावत हैं रे॥ चा॰॥ भेज्या निज परधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत हैं रे॥ चा॰ २॥ लाभ जान गुरु नगर पधारे, भूपति आय वधावत हैं रे,॥ चा॰॥ राजकुमरको कुष्ठ मिटायो, अचरज तुरत दिखावत हैं रे॥ चा॰ ३॥ दश हजार कुटुम्ब संग

नुपको, श्रावक धर्म धरावत हैं रे ॥ चा॰ ॥ प्रतापगढ़को पमार राजा, पुरमें गुरु पघरावत हैं रे ॥ चा॰ ४ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवरकी, बारह वत उचरावत हैं रे ।चा०। चौहान भाटी पमार इन्दा पुन राठौड कहावत हैं रे ॥चा०॥ सीसोदा सोलंकी नरवर महाजन पदवी पावत हैं रे ॥ चा॰ ५ ॥ ऐसे सात राज समिकत धर, खरतर संघ बनावत हैं रे ॥ चा॰ ६ ॥ कुष्ठ जलंदर क्षयी भगंघर, कइयक लोक जीवावत हैं रे ॥ चा॰ ॥ ब्राह्मण क्षत्री और माहेखर, ओस वंश पसरावत हैं रे॥ चा॰ ७॥ तीस हजार एक लख श्रावक, महिमा अधिक रचावत हैं रे ॥ चा॰ ॥ कहत राम ऋद्विसार गुरूकी, फल पूजा फल पावत हैं रे ॥ चा॰ ८ ॥

#### ॥ श्लोक ॥

पनसमोच सदा फलकर्कटैः, सुसुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः। सकल मङ्गल वाञ्छित दायकौ, कुशालसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ९ ॥ ॐ हीं परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्वीपकाय चरण कमलेभ्यो फलं निर्वपामि खाहा ।

### वस्त्र अतर पूजा

॥ दोहा ॥

वस्त्र अतर गुरु पूजना, चोवाचंदन चंपेल । दुश्मन सब सञ्जन हुवे, करे सुरंगा खेळ॥१॥

( मनडो किम ही न भाजे हो कूंथुजिन )

लखमी लीला पावे रे सुंदर, लखमी लीला पावे । जे गुरु वस्त्र चढावे रे सुं॰, सुजस अतर महकावे रे सुं॰॥ दुरजन शीश नमावे रे सुं॰॥ दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबण खतरे आवे । साचे मन समरे सद्-गुरुको, दुखकी टेर सुनावे रे॥ सुं॰ २॥ वाचंता व्याख्यान सुरीव्वर, पंखी रूपे थावे । जाय समुद्रमें जहाँज तिराई, फिर पीछा जब आवे रे ॥ सुं• ३॥ पूछे संघ अचरजमें भरियो, गुरु सब बात सुनावे । ऐसे दादा दत्त-

कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावे रे॥ सुं ४॥ बोधर गूजरमछ श्रावककी, दादा कुशल तिरावे। सुक्खसूरि गुरु समय सुंदरकी, जहाज अलोप दिखावे रे॥ सुं॰ ५॥ बारेसे इग्यारे दत्तसूरि, अजमेर अनसन ठावे। उपज्या सौधरमा देवलोके, सीमंधर फरमावे रे॥ सुं॰ ६॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगरमें जावे। कुशल सूरि देराउर नगरे, भुवनपती सुर थावे रे॥ सुं ७॥ फागुन विद अम्मावस सीधा, पूनम दरस दिखाये। मिणधारी दिछीमें पूज्यां, संकट सुपने नावे रे॥ सुं॰ ८॥ रथी उठी नहीं देख बादशाह, बांही चरण पधरावे। वस्त्र अतर पूजा सदगुरुकी, ऋदिस्सार मन भावे रे॥ सुं॰ ९॥

॥ श्लोक ॥

अखिलहीरशुभैर्नवचीरकैः, प्रवरप्रावरणैः खलु गंधतैः। सकल मङ्गल वाञ्चित दायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे॥ १०॥ ॐ ह्वीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरण कमलेभ्यो वस्त्रं सौगन्धितं निर्वपामि स्वाहा।

# ध्वज\* पूजा

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजा गुरुराजकी, लहके पवन प्रचार । तीनलोकके शिखर पर, पहुंचे सो नर नार ॥१॥ (जिन गुण गावत सुर सुन्दरी रे,)

ध्यज पूजन कर हरष भरी रे ॥ ध्य० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां, श्री सद्गुरुके द्वार खरी रे । अपछर रूप सुतन सुत लीनी, ठम ठम पग झणकार करी रे ॥ ध्य० २ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षिणा, धन धन आनंद आज घरी रे । निर्धनको लखमी वकसावत, पुत्र बिना जाके पुत्र करी रे ॥ ध्य० ३ ॥ जो जो परतिख परचा देखा, सुणो भविक दिल वीच धरी

<sup>#</sup>ध्वजा पर गुरु महाराज से वासक्षेप अवश्य करानी चाहिये। और गुरुआंकी भी भेंट देनी चाहिये।

रे। फतेमछ मडगितया श्रावक, पहली शंका जोर करी रे॥ ध्व० १॥ परितख देखूं तब मैं जानूं, प्रगट्या तत्क्षण तरण तरी रे। पुष्पमाल शिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक धरी रे॥ ध्व० ५॥ मांग मांग वर बोले वाणी, फरक बतायो गुरु मेंघ झरी रे। फरक बतायो दोय लाख पर, तेरी मिहमा नित्य हरी रे॥ ध्व० ६॥ गैनचंद गोलेकाको तें, परितख दीना दरस फरी रे। विक्रमपुरमें थंभ तुमारा, चित्र करावत सुर सुन्दरी रे॥ ध्व० ७॥ थानमछलूणियां पर किरपा, लखमी लीला सहज वरी रे। लखमीपित दृगडकी साहिब, हुंडीकी सुगतान करी रे॥ ध्व० ८॥ जा उपगार करचा तें मेरा, दीनी सममुख अमृत झरी रे। तेरि कृपासें सिद्धि पाई, जागे जस अरु माग भरी रे॥ ध्व० ९॥ भूखा मोजन तिसिया पानी, भरत हजारी देव परी रे। विषम बखत पर सहाय हमारे, ऋदिसार की गरज सरी रे॥ ध्व० १०॥

#### ॥ श्लोक

मधुरव्यनिकिङ्किणीनाद्कैर्ध्वजविचित्रितविस्तृतबासकैः। सकल मङ्गल वाञ्चित दायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥११॥ ॐ हीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा।

#### कलश

महारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द । कंठ विराजित सरखती, जगमें श्री जिनचन्द ॥१॥

॥ राग अशावरी ॥

( पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पूजन )

तेरे चरण कमल विल्हारी ॥ सु॰ ॥ साह सलेम दिल्लीको बादशाह, मुनके शोभा तिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारक पदधारी ॥ सु॰ २॥ अन्मावसकी पूनम कीनी, चंद उगायो भारी । चढके गगन करी है चरचा मुरुजसे तप धारी ॥ सु॰ ३॥ उगनीसे चौदेकी सालमें, लखनड नगर 次,是是这种人,是是一个人,是是一个人,是是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们 मझारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमें यह बात बिचारी ॥ सु॰ ४ ॥ जैन स्वेताम्बर देव जो सन्चा, पूरे मनसा हमारी। वाणी निकसी राज्य तुम्हारा, होवेगा इकवारी ॥ सु॰ ५ ॥ अंघेकी खोली आंख सुरतमें, पूजे सब नर नारी। कहां लग गुण वरणूं मैं तेरा, तूं ईश्वर जयकारी॥ सु॰ ६ ॥ उगनीसे ' संबत्सर त्रेपन, मगशिर मास मझारी । शुक्क दुज जिन-चंद सुरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी॥ सु॰ ७॥ कुशल सूरिके निज संतानी, क्षेमकीर्त्ति मनुहारी । प्रतिबोध्या जिन क्षत्रि पांचसै । सहित अणगारी ॥ सु॰ ८ ॥ क्षेमघाड़ शाखा जब प्रगटी, जगमें आनंद-कारी । धर्मशील साधू गुण पूरे, कुशल निधान उदारी ॥ सु॰ ९॥ या पूजन करतां सुख आनंद, अन घन लक्ष्मी सारी। कहत राम ऋदिसार गुरूकी, जय जय शब्द उचारी ॥ सु॰ १० ॥

॥ इति पूजा विभाग ॥



ণ यह पूजा उपाध्याय रामलालजीगणी ने सम्वत् १६५३ मार्गशीर्प शुक्ला२ को वनाई है।

# **ग्रारती-विभाग**

## शान्तिनाथ भगवानकी आरती

जय जय आर्रात शान्ति तुम्हारी, तोरा चरणकमलकी जाऊं बिल-हारी ॥ जय॰ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनम चन्दा ॥ जय॰ २ ॥ चालीस धनुष सोवन मय काया, मृगलंकन प्रभु चरण मुहाया ॥ जय॰ ३ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहें, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय॰ ४॥ मंगल आर्ति भोरिह कीजे, जनम जनम को लाहो लीजे ॥ जय॰ ५ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावें, सो नरनारी अमर पद पावें ॥ जय॰ ६ ॥

### संध्या आरती

ऋषम अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमित पदम श्री सुपासकी जय। महाराज कि दीनदयाल कि आरित कीजे॥ चन्द सुविधि शीतल श्रेयांसा वासुपूज्य जय, जय जिनराज कि॥ जय॰ १॥ विमल अनन्त धर्म हित-कारी, जय जय शान्तिनाथ सुखकारी॥ जय॰ २॥ कुंयुनाथ अर मिल सुनिसुन्नत, जिनवर निम निम सोवन काय कि॥ जय॰ ३॥ नेमिनाथ प्रसु पार्व चिन्तामणि, वर्द्धमान भव पार कि॥ जय॰ ४॥ कंचन आरित वहुविधि सजकर, लीजे अंग उल्लाह की॥ जय॰ ५॥ सकल संघ मिल आरित करत हैं, आवागमन निवार कि॥ जय॰ ६॥

### नवपद आरती

जय जय जग जन वंछित पूरण, सुरतर अभिरामी। आतम रूप विमल कर तारक अनुभव करिनामी॥ जय जय जग सारा, जय जय जग मारा। आरती पार उतारा, सिंडचक सुखकारा॥१॥ जगनायक जगगुरु जिन चंदा. भज श्री भगवंता। आतमराम रमा सुखभोगी, सिंडाजयवंता॥२॥ पंचाचार दिंपं आचारज, जुगवर गुणधारी। धारक वाचक मृत्र अर्थना, ,这种,我们是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们的人,我们也没有一个人,我们也没有一个人,我们也没有一个人,我们也没有一个人,我们也没有一个人,我们就 पाठक भवतारी ॥ जय॰ ३॥ सम दम रूप सकल गण ज्ञायक, मोटा मुनिराया । दरसन ज्ञान सदा जयकारक, संजम तपभाया ॥ जय॰ ४॥ नवपद सार परम गुरु भाखे, सिन्दचक्र सुखकारी। ए भव परभव रिन्दि सिद्धि दायक भवसागर वारी ॥ जय॰ ५ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावें, मन वंछित फल पावें। श्री जिनचन्द अखय पद पूजत, शिव कमला पावें ॥ जय॰ ६॥

# ''विंदाति स्थानक आरती''

॥ जीया चतुर सुजान नवपद के गुण गाय रे ॥ '

पिया विंशति थान मंगल आरती गाय रे ॥आरती०॥ सुमति प्रिया कहे चेतन पतिको, निसुण वचन मन भाय रे ॥पि॰ १॥ यदि निजगुण परिणति तुम चहिये तिनको एह उपाय रे ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल समुदाय रे ॥ पि॰ २ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण, भव भय हरण विधाय रे । एह आरती दुरति वारती, अनुपम सुरसुख दाय रे ॥ पि॰ ३ ॥ जैसे भगतें करत आरती, सकल सुरासुर राय रे । तैसे भवि तुम करोआरती, ए पद गुण चितलाय रे॥ पि॰ ४॥ पंच प्रदीप से करत आरती, जे नित चित्त उलसाय रे । ते लही पंच चिदानंद घनता, अंचल अमर चढ़ पाय रे ॥ पि॰ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित जोते, दुरमति तिमिर विलाय रे। एह आरती तुरत तारती, भव जल निपतत घाय रे॥ पि॰ ६॥ पद जिनहर्ष ए करणी, मन हरणी करवाय रे। चन्द्र विमल शिव सिद्धि निद्धि धरणी वरणी किनविध जाय रे ॥ पि॰ ७ ॥

# ऋषि मंडल आरती

जय जय जिनराजा, वारी जय जय जिनराजा । आरती करूं शिव-काजा भव भय दुख भाजा ॥ जय॰ १॥ ऋषभ अजित सम्भव जिनराया, अभिनंदन सुमित । पद्म सुपारश चंद्रा प्रभु सें, दूर हुवे कुमित ॥ जय॰ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सवाई, करि बारम जिनकी । विमल अनंत धरम प्रभु शांति, हर आरति तन की ॥ जय॰ ३ ॥ कुंथुनाथ अर महि

मुनि सुवत, निम नेमि श्री कारी । पार्श्व जिनेश्वर वीर जिनंदा, आतम हितकारी ॥जय॰ ४॥ इण विधि आरती जे भवि करसी, भवसागर तिरसी। श्रीजिनचंद अखय पद फरसी शिव कमला वरसी ॥ जय॰ ५॥

### शासन पति आरती

हां करो आरती प्रमु की रस में ॥ हां करो ॥ बीस स्थानक तप कर तीजे भव । हुए तीरथ पति सुसमें ॥ हां करो॰ १ ॥ स्त्रप्त चतुर्दश मातिनहारे । देव देवेन्द्र हुद्धसमें ॥ जिन अभिमुख हुय शकस्तव करि । सुरवर सबिह हरषमें ॥ हां करो॰ २ ॥ इन्द्र हुकुमसे घनद देवता, भरत खजाने ठसमें । तीन मुवनमें हरष भयो है, रोम रोम नस नसमें ॥ हां करो॰ ३ ॥ सरव कल्याणक आरती करके, किये कर्मकूं नष्टमें । दास चतुर के बंछित फल गये, अब नहीं संशय इसमें ॥ हां करो॰ ४ ॥

### पञ्च ज्ञान आरती

जय जय आरती ज्ञान दिनंदा, अनुभव पद पावन सुख कंदा॥ जय॰ १॥ तीन जगत के भाव प्रकाशक, पूरण प्रभुता परम अमंदा॥ जय॰ २॥ मित श्रुति अविध और मन पर्यव, केवल काटे सब दुख दंदा॥ जय॰ ३॥ भव जल पार उतारण तारण, सेवो ध्याओ भविजन वृन्दा॥ जय॰ ४॥ शिवपुर पंथ प्रगट ए सीधा, चौमुख भाखे श्री जिन चन्दा॥जय॰ ५॥ अविचल राज मिले याही सों, चिदानंद मिलें तेज अमंदा॥ जय॰ ६॥

### पञ्च ज्ञान आरती

जय जग सुखकारी, वारी जय शम पद धारी । आरती करूं सहकारी, जय जग सुखकारी ॥ जय॰ ॥ अष्टाविंशति भेद करी ने, मित ज्ञाने राजे ॥ वारी मित ज्ञाने राजे ॥ ध्यावत पूजत भविजन केरा, भव संकट भाजे ॥ जय॰ १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति, प्रवचन प्रति दाखे ॥ प्रव॰ ॥ श्री श्रुतज्ञान की महिमा जिनवर, स्वमुख थी भाखे ॥ जय॰ २ ॥ रूपी दृष्य विषयी मर्योदा, करि अवधी सोहे ॥ करि॰ ॥ भेद पट्क संख्याती

जीवा, मविजन मन मोहे ॥ जय॰ ३ ॥ तूर्य ज्ञान मनपरयव कहिये, भेद युगम लहिये ॥ भेद॰ ॥ ऋजुमित विपुलमित सरदिह्ये, न्यूनाधिक गिहये ॥ जय॰ ४ ॥ लोक लोकोत्तर गत वस्तु, गुण पर्यव भासी ॥ गुण॰ ॥ केवल एक सहाय अनन्ते, भए निर्वृति वासी ॥ जय॰ ५ ॥ पंच ज्ञान की आरती करतां, भव आरती छाजे ॥ भव॰ ॥ जिम वरदत्त कुमर गुणमंजिर, तिम भक्ती काजे ॥ जय॰ ६ ॥ वृहत भट्टारक खरतर पित जिन हंस सूरि राया ॥ हंस॰ ॥ तद पंकज मधुकर कंचन, निधि आनंद वरताया ॥ जय॰ ७ ॥

### पञ्च ज्ञान आरती

जय जय आरती ज्ञान कि कीजे, जासे पांच ज्ञान प्राप्ती फल लीजे ॥ मित श्रुति अविध सदा हितकारी, मन पर्यव केवल सुखकारी ॥१॥ त्रिपदी श्री अरिहंत उचारे, सूत्र की रचना करे गणधारे ॥२॥ साखा श्री निरयुक्ति वखाणें, प्रति साखा भाष्य मन आणें ॥३॥ करणी पत्र भिवक हितकारी, टीका पुष्प सदा उपकारी ॥४॥पहली आरती भिवक उतारो, चउगित सुमन का संकट वारो ॥५॥ दुजी आरती आरति टारे, सर्व जीव को सब सुखकारे ॥६॥ तीजी आरती मन सुध करके, ज्ञानावरणी सबल रिपुथरके ॥७॥ चौथी आरती त्रिकरण करता, सुगित रमणि को होवे भरता ॥८॥ पांचमी आरती शुक्क ध्यान जे ध्यावे, पंचिम गित निश्चय सो पावे ॥९॥ ऐसी पांचों आरती करिये, भवसागर लीलासे तरिये ॥१०॥ अमृत वर्द्धन सुगुरु वचनसे, दान सागर सेवे शुभ मन से ॥११॥ जय०॥

# पञ्च कल्याणक आरती

जय जय जिनराया, पंचकल्याणक शिव सुख दायक, भविजन मन भाया ॥जय॰ १॥ लक्षण लक्षित पञ्चकल्याणक, आनन्द हिंतकारी । श्रीमद् अर्हत त्रिभुवन बंदित, दीक्षा गुणधारी ॥ जय॰ २ ॥ लोकालोक प्रकाशक केवल, उत्कट बेध बधाई । परमातम चिद्रूप अरूपी, चार अनन्त लय लायी ॥ जय॰ ३ ॥ पञ्चकल्याणक परम आराधक तारण तरण तरी, पञ्च प्रमाद तजीने भविजन, जिन कल्याण घरी ॥ जय॰ ४ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय निधि कारन सुध दर्शन दायी, त्रिकरण शुद्धें निश दिन ध्यावत शिव संपति पायी ॥ जय॰ ५ ॥

# निर्वाण ( कल्याणक ) आरती

जय जगदीश्वर अति अलवेशर वीर प्रभूराया । पतित उधारण भव भय भंजण, बोध बीज पाया ॥ जय जय जिनराया, आरती करूं मन भाया होय कंचन काया ॥ जय॰ १॥ क्षत्रिय कुण्ड नगर अति सुन्दर, सिद्धारय राया। सुदि आषाढ़ छट्टके दिवसे, त्रिसला कुक्षी आया ॥जय॰२॥ चाँद सुपन देखी अति उत्तम, निज प्रीतम भाखे । अरथ भेद सहु निश्चे करिने, जिन गुण रस चाखे ॥ जय॰ ३ ॥ चैत्र सुदी तेरस दिन उत्तम, सहु ग्रह उच्च पात्रे । जन्म देई दिश कुमरी सहुना, आसन कंपात्रे ॥ जय० ४॥ उच्छव कर जावे निज थानक, इन्द्र सहू आवे। मेरु शिखर स्नात्र महोत्सव, करि आनन्द पांत्रे ॥ जय॰ ५ ॥ वसुधारा वृष्टी कर सहु सुर, निज थानक जावे । सिद्धारथ करे जन्म महोत्सव अचरज सहु पावे ॥ जय॰ ६ ॥ कंचन वरण तेज अति दीपत, हरि लंछन छाजे । कुल इक्ष्वाकु अंग सहु लक्ष्ण, राशि ज्यों मुख राजे ॥ जय॰ ७ ॥ सम्बत्सर दे प्रभु छेवे, चारित्र सुखदाई । मार्गशीर्प दशमी वदि पक्षे, उत्तम तरु पाई ॥ जय॰ ८ ॥ वारे वरप छद्मस्थपना में, दुप्कर तप पाले । भारव सुद इसमी के दिनकूं, दोष सहू टाले ॥ जय॰ ९॥ केवल पाये मभी सुर संगे, पाबापुरि आर्बे । गुणगण लंकृत देशना देके संघ सह पावे ॥ जय॰ १० ॥ भूमंडल विच वहू जीवको, अविचल सुख देवे । नुरनर इन्द्र सभी मिल पूजे, जगमें यश लेबे॥ जय॰ ११॥ चरम चींमाना पाबापुरि करके, अन्त समय जाणी । हस्त पालकी शुक्र सालमें, मोले पहर वाणी ॥ जय॰ १२ ॥ परियंकासन छट नपस्या, एक चित्त गुण भानी । कार्त्तिक कृष्ण अमावसके दिन, शिव कमला पामी ॥ जय॰ १३ ॥ इन्हार्क निर्वाण महोत्सव, करि प्रभु गुण गावे । देव मुखे गणधर गुरु गौतम, सुणनें पछतावे ॥ जय॰ १४ ॥ वीतराग गुण मनमें धारी, अनित्य भाव भावे । केवल ज्ञान प्रगट होय तत्क्षण, सुरनर गुण गावे ॥जय॰ १५॥ निर्वाण कल्याणक शासन पतिकी आरती ज्यो गावे । शिव सुख लक्ष्मी प्रधान मिले जब मोहन गुण गावे ॥ जय॰ १६ ॥

# दिवाळी की आरती

जय जय जगदीश जिनेसर जगतारन राजा, धनधन कीरति तेरी इन्द्र करत बाजा जय जय अविकारा तुम जग आधारा, आरती अमर उतारा, भव आरतीटारा ॥ जय॰ १॥ षट् कायक प्रतिपालक, अंनुकपाधारी । निश्चय नयव्यवहारी, भविजन निस्तारी ॥ जय॰ २॥ मतिश्रुति अविघ सहित तुम, अंबोदर आए। देवनर मंगल गाए, पुष्पन बरसाए॥ जय॰ ३॥ जन्म महोत्सव जाना, चौसठ इन्द्रोंने । प्रभु मूरति कर लीनी, मेरू पर वीने ॥ जय॰४॥ क्षीरोदक हिमकलसें योजन शत शतके। जिन तनु लघु चित धरके, कर धर सब तनके ॥ जय॰ ५ ॥ अंतरयामी जाना, सब सुर मन तन की । पदनख मेरु कंपाये, भूसर जलथरकी ॥ जय॰ ६ ॥ घड़ड़ घड़ड़ घूमिगिरि धरके, सुरगण सिम कंपे। प्रभुकृत जान खमाये, जय जय मुख जंपे ॥ जय॰ ७ ॥ अगम शक्ति जिन जाना, प्रफुलित जल ढारे । सुर-भिवस्त्र सब भूषण, चमरू झपटारे ॥ जय॰ ८ ॥ घुंगि धुनि धपमप पामा दल धोंको भेरन झलकारे । गुड़ड़ गुड़ड़ झांझां कठतारा नौवत् सुर भारे ॥ ९ ॥ ताथेई ताथेई सचिगण नाचे, रिमिझम नूपूर का द्रुपदताल सुर गावे आनन्दकी वरला॥ जय॰ १०॥ या विधि सन्नि जिनेन्द्रें सेवें, जग नायक जाना। अमृत उदय धन धन जिम नर भव, जिम धट परवाना ॥ जय० ११ ॥

### नंदीश्वर द्वीप आरती

"जीया चतुर सुजाण नवपद के गुण गाय रे" जीया अष्टम द्वीपमंगल आरती गाय रे।परमानंदपद एहीज, जपतां अजरामर सुख पायरे ॥जी॰ १॥ ऋषमानन चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान पद भाय रे।

ኯ በንግር የምንግ ነገር የተገኙ ተግግግ ችግር አን የተብጣ እንነዊ ነገር አን ያንፈ ተመንያ የተመመተቸው የአንተመተከተ አንተ አን ያንደን ተመንቋን የተመንቋን የተመንቋን ያንፈን የተመንቋን መንግ ነገር የተመንቋን የተመንቋ የተመንቋን የተመንቋ የተመንቋ

ए च्यारे जिन शाश्वत सोहे, समरण मंगल थाय रे ॥ जी० २ ॥ अप्ट प्रकारी पूज मनोहर, मन शुद्ध कर मन भाय रे । जन्म जरा दुःख दूर करण ते, कीजे एह उपाय रे ॥ जी० ३ ॥ पंच प्रदीप से आरती कीजे, डावे आवर्त्त कहाय रे । जो नर आरती पढ़े पढ़ावे, तो थाये सुर राय रे ॥ जी० ४ ॥ मंगल कारी विघन निवारी, सुखकारी लय लाय रे । पंचम गति पामे एह नामे जे गावे चितलाय रे ॥ जी० ५ ॥ एह आरती भवि- जन मोहे, नामे नवनिध थाय रे । सुखकारी ए सकल मनोहर, कर्प्रमद्र गुण गाय रे ॥ जी० ६ ॥

### पंच तीर्थ आरती

जय जय आरती आदि जिनंद की, जय जय आरती आदि जिनंद की।। पहली आरती प्रथम जिनंदा, शत्रंजय मंडण ऋषम जिनंदा ॥ दृसरी आरती मरुदेवी नंदा, युगला घरम निवार करंदा ॥ जय० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंहासण प्रभुजी में सोहे । चौथी आरती नित्य नई पूजा, देव ऋषभदेव अवर न दृजा ॥ जय॰ २ ॥ पंचमी आरती प्रमु जी ने मावे, प्रभुजी ना गुण सेवक इण गावे। कर जोड़ी सेवक इम बाले, नहीं कोई माहरा प्रभुजी ने तोले ॥ जय॰ ३ ॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तेरा चरण कमल की में जाउं बलिहारी। आरती कीजे प्रभु आदि जिनंद की, मृगलंछन की में जाउं बलिहारी। विश्वसेन अचिराजी के नंदा, शांति जिनंद मुख पूनम चंदा ॥ जय॰ ४ ॥ आरती कीजे प्रभु नेम जिनंद की, शंख लंछन की में जाउं बलिहारी। समुद्र विजय शिवा देवी को नंदा, नेमि जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय॰ ५ ॥ आरती कीजे पसु पारा जिनंद की, फर्णिद लंछन की में जाउं वलिहारी। अश्वसेन वामा जी के नंदा, पारा जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय॰ ६ ॥ आरती कीजे महावीर जिनंद की, सिंह लंछन की में जाउं वलिहारी। सिद्धारय त्रिशला के नंदा, बीर जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय० ७ ॥ आरती कींजे चाँबीश जिनंद की, चाँबीश जिनंद की में जाउं विलहारी। चरण कमल नित सेवित इन्दा, चाँवीश जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय० ८ ॥

### मंगल दीपक

दीवो रे दीवो मंगछिक दीवो, आरित उतारण बहु चिरंजवो ॥ दी॰ १ ॥ सोहामण घर पर्व दीवाली, अंबर खेले अमरा बाली ॥ दी॰ २ ॥ वेपल भणे इण कुल अजुवाली, भावें भक्तें विघन नीटाली ॥ दी॰ ३ ॥ देल भणे इणें कलिकालें, आरित उतारी राजा कुमर पालें ॥ दी॰ ४ ॥ हम घर मंगलिक तुम घर मंगलिक, मंगलिक चतुर्विध संघ ने हो जो ॥५॥

### मंगल दीपक

विविध रत्न-मणि जिल्त रचो, थाल विशाल अनुपम लावो। आरती उतारो, प्रभुजी नी आगे, भावना भावी शिव सुख भावे॥ आ॰ १॥ भात चौद ने एक विस मेवा, भण त्रण वार प्रदक्षिणा देवा॥ आ॰ २॥ जिम तिम जलधारा देई जंपे, जिम तिम दोहग थर थर कंपे आ०२॥ बहु भव संचित पाप पणा से, सब पूजामें भाव उल्लासे॥ आ०४॥ चौद भुवन मां जिन जी कोई, नहीं आरति इम समजोई॥ आ०५॥

### मंगल दीपक

चारो मंगल चार, आज म्हारे चारो मंगल चार । देखा दरस सरस जिनजीका, शोभा सुंदर सार ॥ आज॰ १ ॥ छिनु छिनु छिनु मन मोहन चरचो, घसी केसर घनसार ॥ आज॰ २ ॥ विविध जाति के पुष्प मंगाओ, मोगर लाल गुलाब ॥ आज॰ ३ ॥ धूप उखेवी ने करो आरती, मुर्ख बोले जय २ कार ॥आज॰ ॥॥ हर्ष धरी आदीसर पूजो, चौमुख प्रतिमा चार ॥ आज॰ ५ ॥ हेत धरी मन भावना भावो, जिम पामो भव पार ॥ आज॰ ७ ॥ ६ ॥ सकल संघ सेवक जिन जीका, आनंद घन उपकार ॥ आज॰ ७ ॥

# गौतम गणधर आरती

जय जय गणधारा, गौतम गोत्र इन्द्र भूति नामें भवियण हित-

ये दोनों गणधरों की आरती रंगविजय खरतर गच्छीय यति पन्नालालजी महाराजकी
 ई हुई है।

कारा ॥ जय॰ ॥ अष्टा पद गिरि मानु अवलंबन चौबीस जिन ध्याया । पनरह सौ तिहत्तर तापस, ते सहु समझाया ॥ जय॰ १ ॥ दी दीक्षा जिन को निज कर से, वे शिवपद पाया । अन्त वीर संयम नेह त्याग कर, केवल उपजाया ॥ जय॰ २ ॥ पद्मोदय कहे बारह वर्ष पर, पंचम गित पाई । दिलीप चरण सेवें करजोड़ी, जय शिवपद दाई ॥ जय॰ ३ ॥

### सुधर्म गणधर आरतो

जय जय पटधारी, भविजन शुभिनस्तारी, शिवसुख दातारी ॥जय।। पंचम गणधर सुधर्म स्वामी, पटधर पट पाया । वीर प्रभू निर्वाण गये पर, शासन दीपाया ॥ जय॰ १ ॥ जिन भाषित त्रिपदी अनुसारे, पूरब विस्तारे । द्वादशाङ्ग उपदेश करीने, भवियण कूं तारे ॥ जय॰ २ ॥ निज गुरु सेती वीस वरष पर, पाम्यो शिव थाने । पद्मोदय गुरु चरण पसाये, दिछीप छहे ज्ञाने ॥ जय॰ ३ ॥

# श्री गुरुदेव आरती

जय जगदीश हरे, ॐ जय जगदीश हरे।

जय जय गुरुदेवा, ॐ जय जय गुरुदेवा। आरित हरो नित एहवा, सुख सम्पित मेवा॥ जय॰ १॥ कुमति निवारन सुमित बधारन, पावन गुरु सेवा। कुशल करो गुरु सेवक पर सुख सानिध देवा॥ जय॰ २॥ गुरु कल्पवृक्ष सम बांछित पूरन, दुःखमें सुध लेवा। संकट कष्ट मिटाय सबन के,दें समिकत मेवा॥ जय॰ ३॥ श्री जिनदत्त कुशल गुरुके, पद पङ्कज सेवा। श्री रत्नसूरिके शिष्य प्रवर हैं, सूरज यित देवा॥ जय॰ ४॥

### मणिधारी जी की आरती

जय जय मणिधारी, आरती करूँ हितकारी, सुख सम्पति कारी ॥ जय॰ १ ॥ गुणमुनि आगर, महिमा सागर, भविजन हितकारी । दीन दयाल दया कर मो पर, जिन शासन वारी ॥ जय॰ २ ॥ ग्यारेसे सत्तानवे वरषे उपनी हरष वधाई । बारेसे तेतीसे वरषे, सुर पदवी पाई ॥ जय॰ ३ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावे, मन वांछित पावे। श्री जिनचन्द्र कृपा कर मो पर, मंगल माला घर आवे ॥ जय॰ ४ ॥

## कुश्ल गुरु आरती

जय जय आरति सत् गुरु तेरी, कर पूरण आशा मन मेरी। जि लागर जगनन्द विख्याता. जयति श्री वर सतगुरु माता ॥१॥ संवत तेरसें छतीसे जाया. निव्यासी स्वर पदवी पाया ॥२॥ बीर जिनेश्वर चौपन ठामे, श्री जिन कुशल सुरीश्वर नामें ॥३॥ छाजेहड गोत्रीय कहंता, पटघारी जिन-चंद् मुनिंदा ॥४॥ करजोड़ी सेवक गुण गावें, पूजत मन वंछित फल पावें ॥५॥

# रत्नसूरिजी की आरती

जय जय आरति रतन सुरिन्दा, अनुभव पायो आप जिनंदा ॥ज॰१॥ शान्ति दान्ति विद्याके सागर, संघका काटो भवभय फंदा ॥ ज॰ २ ॥ रङ्ग सूरिके गच्छमें सोहे, खरतर गच्छको परम आनंदा॥ ज॰ ३॥ सूरज तुमको हृदयसे ध्यावें, आरति हरो गुरु, सदा मुनिदा ॥ ज॰ ४ ॥

# चक्र इवरी देवी की आरती

जय जय आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणम्ं हूँ तुम चरणारी ॥ जय॰ १॥ श्री सिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जगसौ ख्याली॥ जय॰ २॥ सुविहित गच्छ नी शासन देवी, सकल संघने सुक्ल करेबी ॥ जय॰ ३ ॥ निलवट टीलडी रत्न बिराजे, काने कुंडल दोय रिव शशि छाजे ॥ जय॰ ४॥ बांहे बाजूबंघ वोरखा सोहे, नील वरण सहु जन मन मोहें ॥ जय॰ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूड़ी खलके, पायल घूंघरडा घम धमके॥ जय॰ ६॥ वाहन गरुड़ चढ्या बहु प्रेमे, तुझ गुण पार न पामू केमे ॥ जय॰ ७ ॥ चूनडी जडमां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहु जीपे ॥ जय॰ ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे, रोग शोग भय दूर निवारे ॥ जय॰ ९ ॥ तसु घर पुत्र पुत्रादिक छाजे, मन बंछित सुख संपद राजे ॥ जय॰ १०॥ देवचन्द सुनि आरती गावे, जय जय मंगल नित्य वधावे ॥ जय॰ ११ ॥

### चक्रेक्वरी देवी की आरती

जय जय जिनपद सेवन कारक, जय जय जगदंबे । अहनिशि तुझ पद समरन, दिल विच ध्यान घरे ॥ जय॰ १ ॥ भविजन वंछित पूरन सुरतरु, चक्रेश्वरी अंबे । बसु भुज शोभित कनक छवी तनु, सेवित सुर वृन्दे ॥ जय॰ २ ॥ पंचानन तिम खगपित वाहन, आयुध हस्त घरे । ऋदि वृद्धि नित सेवक पावत, आनंद संघ करे ॥ जय॰ ३ ॥

## यक्षराज को आरती

जय जय ऋषभ पदाम्बुज सेवक, जय जय यक्षराया, शासनके तुम रक्षक भविजन सुखदाया ॥जय॰ १॥ कामगवी जिन वंछित दायक, कंचन वरण सुहाया। संकट विकट निवारण कारण, वर कुंजर चढ़ि आया॥ जय॰ २॥ उदिध भुजा करि शोभित तनु छवि, गुणनिधि सुरराया। आरत हरण करन आरती श्री संघ हुळसाया॥ जय॰ ३॥

### भैरव आरती

जैन के उद्योत भैरूं समिकत घारी । शान्ति मूरित भविजन सुख-कारी ॥जैन॰ १॥ निर्मल जलसे न्हवण कराऊं, अंगिया रचाउं थांरी न्यारी न्यारी न्यारी । केशर चंदन घिसूं घनेरा, चरण चढ़ाऊं उंगली न्यारी न्यारी न्यारी ॥ जैन॰ २ ॥ भांति भांतिके पुष्प चढ़ाऊं, हार गुंथाउं कलियां न्यारी न्यारी न्यारी । अष्ट द्रव्य पूजामें लाऊं, भावना भाउं हितकारी शुभकारी ॥ जै॰ ३ ॥ हाथ खखरिया, पांव पकड़िया विच विच हीरा मोती लग रहे भारी । सेवक भैरूंजी से अरज करत हैं, नित प्रति लो बाबा ढ़ोक हमारी ॥ जै॰ ४ ॥

### भैरव आरती

जैन के उद्योत भैरूं समिकत धारी, शान्ति मूरित भवियंण सुखकारी। पूंघर वाला केश सिंदूर से छिव के, केसर के तिलक सोहे, उगो मानो रिव के॥ जैन॰ १॥ सिर पर मुकुट कुण्डल काने शोभतो। गल सोहे धुक धुकी हिये हार मोहतो ॥ जैन॰ २ ॥ छड़ी लिये हाथ में देहरा के वारणा । पूजा करे नरनारी रखवारी के कारणा ॥ जैन॰ ३ ॥ रोग शोक दूर करो वैरी को भगाय दो । बालकों की रक्षा करो, अन्न धन पुत्र दो ॥ जैन॰ ४ ॥ पूरण कल्पतरु चाहे फलदाता है । पूजा लेवे नित प्रति रागे रंग माता है ॥ जैन॰ ५ ॥

॥ समाप्तोऽयं आरती विभागः॥



# चैत्यवन्द्रन-विभाग

## <sup>भ</sup>त्री आदिनाथजीका चैत्यवन्दन

सुवर्ण वर्णं गजराज गामिनं, प्रलम्ब बाहू सुविशाल लोचनम् । नरामरेन्द्रैः स्तुतपाद पङ्कजं, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥१॥

### ॥ श्री अजितनाथ चैत्यवन्दन ॥

श्री जितरात्रु नरेश नन्द, विजया तनु जात । गज लाञ्छन सोवन वरण, सोहे प्रभु गात ॥१॥ सार्च च्यार शत धनुष मान, प्रभु उन्नत काय । आयु बहत्तर लाख पूर्व, जिन अजित अभाय ॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, नयिर अयोध्या ठाम । पञ्चाणू गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ एक लाख मुनि तीस सहस, आर्या त्रिण लक्ष । दोय लाख श्रावक सहस, अठाणूं दक्ष ॥४॥ पण लख पैंतालीस सहस, श्रावकणी सार । देवी अजिता महायक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास क्षमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ श्री सम्भव जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री संभव जिनराज देव, तनु सोवन वान । श्री जितारि सेना सतन, पद तुरंग प्रधान ।।१॥ साठ लाख पूरव प्रगट, प्रमु आयु प्रमाण । धतुष चार सौ मान उच्च, प्रभुकाय वखाण ।।२॥ छ्ड भत्त संजम लियो ए, सावत्थी पर ठाम । इक रात दुय गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ दोय लख मुनि त्रिण लख, समिण वली सहस छत्तीस । सहस त्रयाणूं तीन लाख, श्रावक सुजगीस ।।४॥ छ लख सहस छतीस शुद्ध, श्रावकणी सार । त्रिमुख यक्ष दुरितारि देवि, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि सांथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ श्री अभिनन्दन जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री अभिनन्दन विश्वनाय, कपिलाञ्छित पाय। श्री संबर सिद्धारथा, सुत सोवन काय ॥१॥ सार्द्ध तीन शत धनुष मान, प्रभु देह बिराजे। आयु लाख पञ्चास पूर्व, अतिशय गुण छाजे॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, नयरि अयोध्या ठाम। गणधर इक शत सोल युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ त्रिण लख मुनि आर्यो छ लख, विल तीस हजार। सहस अठ्यासी दोय लख, श्रावक सुविचार ॥४॥ सहस सतावीस पांच लाख, श्रावकणी सार। यक्ष नायक कालीसुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण॥६॥

### ॥ श्री सुमति जिन चैत्यवन्दन ॥

कनक वरणी श्री सुमित नाथ, जिपये जसु नाम। मेघ नरेसर मंगला, अङ्गज अभिराम ॥१॥ घनुष तीन रात देह मान, जसु लाञ्छन क्रांच। आयु लाख चालीस पूर्व, बहु सुकृत संच ॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, नयिर अयोध्या ठाम। इक रात गणधर परिवर्यो, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ वीस सहस त्रिण लख, साधु पण लख तीस। सहस साध्वी श्रावक, दोय लाख सहस इकअसीस ॥४॥ पांच लाख सोले सहस, श्रावकणी सार। महाकालि सुर तुम्बरू, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

# ॥ श्री पद्म प्रभ जिन चैत्यवन्दन ॥

देवि सुसीमानन्द चन्द, घर नरपित घाम । रक्त वरण प्रभु कमल अङ्क, पद्म प्रभु नाम ॥१॥ घनुष अढ़ाई सौ प्रमित, तनु उन्नत सोहे । आयु पूर्व तीस लाख, भव दुःख विछोहै ॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, कौशाम्बी पुर ठाम । गणघर इक शत सात युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ तीस सहस त्रिण लख साघु, चौलख वीस सहस । साध्वी श्रावक दोय लाख छिहोत्तर सहस ॥४॥ पांच लाख विल सहस पांच, श्रावकणी सार।

कुसुम यक्ष श्यामा सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ त्रिण सय अड़ सुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ श्री सुपार्श्व जिन चैत्यवन्दन ॥

प्रहरसम समर्छं श्री सुपास, काञ्चन सम काय। श्री प्रतिप्ठ पृथ्वी सुतन, खित्तक जसु पाय ॥१॥ बीस लाख पूरव सकल, जसु आयु प्रमाण। धनुष दोय सौ मान देह, जसु उन्नत जाण ॥२॥ छड भच संजम लियो ए, पुरि वणारसी ठाम। पञ्चाणूं गणधर सहित, आपो शिव-पुर खाम ॥३॥ त्रिण लख मुनि चौ लख, समणि वलि, तीस हजार। सहस सत्तावन दोय लख, श्रावक गुणधार॥४॥ सहस त्रयाणूं चार लाख, श्रावकणी सार। सुर मातङ्ग शान्ता सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ पञ्चसयां मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण॥६॥

#### ॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री महसेन नरेस नन्द, चन्द्रश्रम स्वामी। शश्चि ठाञ्छन उज्वल वरण, सेवृं सिर नामी ॥१॥ धनुष दोय सौ मान चारु, जसु उन्नत काय। आयु वरस दश लाख पूर्व, चन्द्र पुरी राय ॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, मात लक्ष्मणा नन्द। त्रयाणवें गणधर सहित, दूर करो दुख दन्द ॥३॥ दुय लख सहस पचास, साधु तिलख असी सहस। साध्वी श्रावक दोय लाख, पचास सहस ॥४॥ सहस इकाण्ं च्यार लाख, श्रावकणी सार। धुक्ती देवी विजय यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। श्रमु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण॥६॥

### ॥ श्री सुविधि जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय जिनवर सुविधिनाथ, उज्वल तनु वान । श्रीरामा सुग्रीव जात उरु, मकर प्रधान ॥१॥ दोय लाख पूरव प्रवर, जसु आय सुजान । THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

धनुष एक सौ मान जास, तनु उच्च पिछान ॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, काकन्दी पुर ठाम । अठ्यासी गणधर सहित, आपो शिवपुर खाम ॥३॥ दोय लाख मुनि सहस्र बीस, श्रमणी इक लक्ख । दोय लक्ख गुणतीस सहस, श्रावक सुध पक्ख ॥४॥ चौ लख इकहत्तर सहस, श्रावकणी सार । देवी सुतारा अजित यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रमु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ श्री शीतल जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री दृद्रथ नन्दा सुतन, शीतल जिनराय। श्री बच्छ लाञ्छन कनकवान, सोहे जसुकाय ॥१॥ एक लाख पूरव बरस, जसु आयु प्रमाण। नेऊ घनुष प्रमाण देह, गुण नयण निहाण॥२॥ छ्ड भत्त संजम लियो ए, भिह्लपुर बर ठाम। इक्यासी गणधर सिहत, आपो शिवपुर स्वाम॥३॥ एक लाख मुनि षट् अधिक, श्रमणी एक लख। दो लख निच्यासी सहस, श्रावक सुध पक्ख॥४॥ सहस अठावन च्यार लाख, श्रावकणी सार। देवि अशोका बहा यक्ष, नित सांनिधिकार॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण॥६॥

### ॥ श्री श्रेयांस जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय विष्णु नरेश नन्दन, विष्णु तनु जात । खड़ग लाञ्छन कनक वान, सुन्दर तर गात ॥१॥ असी धनुष सुप्रमाण देह, जित तेज दिणन्द । लाख चौरासी बरस आयु, श्रेयांस जिणन्द ॥२॥ छ्ट भत्त संजम लियो ए, नगर सिंहपुर नाम । छिहोत्तर गणधर सिंहत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ सहस चौरासी शुद्ध साधु, इक लख त्रिण सहस । साध्वी श्रावक दोय लाख, गुण्यासी सहस ॥१॥ चौ लख अड़तालीस सहस, श्रावकणी सार । यक्षराज सुर मानवी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवन्दन ॥

बारम जिनवर वासु पूज्य, बहु सुजस निधान । श्री वसुपूज्य जया सुतन, माणिक सम यान ॥१॥ महिष लञ्चन सत्तर धनुष, जसु देह प्रमाण । बरस बहत्तर लाख जासु, आयुष्य पिछाण ॥२॥ चउत्थ भत्त संजम लियो ए, चम्पापुरी शुभ ठाम । बासठ गणधर सूं जुगत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ सहस बहुत्तर सुद्ध साधु, साध्वी इक लख । दोय लाख पनरे सहस, श्रावक सुध पख ॥॥॥ चौ लख सहस छतीस, मान श्रावकणी सार । चण्डा देवी कुमार यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ षट् सय मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा चम्पापुरी, करो संघ कल्याण ॥६॥

#### ॥ श्री विमल जिन चैत्यवन्द्न ॥

श्री कृतवर्म कुलावतंस, श्यामा तनु जात। सूकर लाञ्छन कनकवान, श्री विमल विख्यात ॥१॥ धनुष साठ सुप्रमाण जासु, तनु उच्च विराजे। आयु वञ्छर साठ लाख, जसु निरमल छाजे॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, कम्पिलपुर शुभ ठाम। गणधर सत्तावन सहित, आपो शिवपुर स्वाम॥३॥ सुनिवर अङ्सठ सहस मान, अङ्सय इक लख। श्रमणी श्रावक अङ् सहस, जपर दोयं लख॥॥। च्यार लाख सुश्राविका, चौबीस हजार। षण्मुख सुर विदिता सुरी, नित सांनिधिकार॥५॥ छ सहस मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ क्याण॥६॥

#### ॥ श्री अनन्त जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय देव अनन्तनाथ, सोवन सम बान । सुजसा देवी सिंहसेन, इल तिलक समान ॥१॥ स्पेन लञ्छन घर तीस लाख, संवच्छर आय । सुन्दर धनुष पचास मान, उन्नत जसु काय ॥२॥ छट्ट भत्त संजम लियो ए, नयिर अयोध्या नाम । निज पचास गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ मुनिवर बासठ सहस मान, तह बासठ सहस । आर्या श्रावक दोय लाख, ऊपर छ सहस ॥४॥ चार लाख चउदे सहसं, श्रावकणी सार । अंकुशा सुरी पाताल यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ सात सहस परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि करो संघ कल्याण ॥६॥ ॥ श्री धर्म जिन चैत्यवन्दन ॥

पनरम प्रणमूं धर्म नाथ, सुत्रता तनु जात । मानु भूप सुत वज्र अङ्क, काञ्चन सम गात ॥१॥ धनुष पैतालीस मान, जासु तन उन्नत जाण । संवच्छर दश लाख शुद्ध, जसु आयु प्रमाण ॥२॥ छ्ट भत्त संजम लियो ए, नगर रत्नपुर नाम । तयालीस गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ चौसठ सहस सुसाधु, चार सय बासठ सहस । श्रमणी श्रावक दोय लाख, ऊपर चौ सहस ॥४॥ च्यार लाख तेरे सहस, श्रावकणी सार । किन्नर कन्दपी सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ अड़हिय सय परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण॥६॥

### ॥ श्री शान्ति जिन वन्दन ॥

विपुल निर्मल कीर्ति भरान्वितो, जयित निर्जरनाथ नमस्कृतः । लघु विनिर्जित मोह धराधिपो, जगित यः प्रभु शान्ति जिनाधिपः ॥१॥ विहित शान्त सुधारसमज्जनं, निखिल दुर्ज्जय दोष विवर्ज्जितम् । परम पुण्यवतां भजनीयतां, गतमनन्त गुणैः सहितं सताम् ॥२॥ तमचिरात्मजमीश मधीश्वरम्, भविक पद्म विबोध दिनेश्वरम् । महिम धाम भजािम जगित्त्रये, वर मनुत्तर सिद्ध समृद्धये ॥३॥

#### ॥ पुनः ॥

सोलम जिनवर शान्ति नाथ, सेवो सिर नामी । कञ्चन वरण शरीर कान्ति, अतिशय अभिरामी ॥१॥ अचिरा अङ्गज विश्वसेन, नरपित कुल-चन्द । मृग लाञ्छन घर पद कमल, सेवे सुरनर बृन्द ॥२॥ जगमां अमृत जेह्वी, ए जास अखण्डित आण । एकमने आराधतां, लहिये कोड़ि कल्याण ॥३॥

#### ॥ श्री शान्तिनाथ जिन चैत्यवन्दन ॥

सोलम जिनवर शान्तिनाथ, सोवन सम काय। विश्वसेन अचिरा सुतन, मृग लिञ्जित पाय ॥१॥ चालीस धनुष प्रमाण, उच्च जसु देह विराजे। आयु वन्छर लाख एक, जलधर धुनि गाजे॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए, हथणा पुर वर नाम, निज गणधर छत्तीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ बासठ सहस सुसाधु, छ सय विल इकसठ सहस । श्रावक साध्वी दोय लाख, बिल नेऊ सहस ॥४॥ सहस त्रयाणूं तीन लाख, श्रावकणी सार। निर्वाणी सुरी गरुड़ यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ नव सय मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

#### ॥ श्री कुन्थुनाथ जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय जग गुरु कुन्यु नाथ, श्री माता जाय। सूर नरेश्वर अङ्ग जात, काञ्चन सम काय ॥१॥ देह धनुष पैतीस मान, लाञ्छन जसु छाग। सहस पच्याणूं वर्ष आयु, वल तेज अथाग ॥२॥ छह मत्त संजम लियो ए, हत्यणा पुर वर ठाम। निज गणधर पैतीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ साठ सहस मुनि श्रमणि, संघ साठ हजार छ सै। इक लख गुणवासी सहस, श्रावक मुध उलसे ॥४॥ सहस इक्यासी तीन लाख, श्रावकणी सार। सुर गन्धर्व बला सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। श्रमु सीधा सम्मेत गिरि, करो मंघ कल्याण ॥६॥

#### ॥ श्री अर जिन चैत्यवन्दन ॥

देवी नन्दन देवनाय, अरनाथ प्रधान । लाञ्छन नन्दावर्त्त नाम, वपु काबन वान ॥१॥ तात सुदर्शन धनुप तीस, जसु देह प्रमाण । सहस वीगती वर्ष आयु, अति निर्मल नाण ॥२॥ छह भत्त संजम लिया ए, द्विणाउर पुर टाम । निज गणधर तंतीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ गायु सहस पचास मान, साठ सहस श्रमणी । सहस चौरासी एक लाख श्रावक सुमति घणी ॥४॥ सहस बहोत्तर तीन लाख, श्रावकणी सार। धारणि सुरी यक्षेश सुर, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधासम्मेत गिरि, करो संघकल्याण ॥६॥

### ॥ श्री मिछ्छ जिन चैत्यवन्दन ॥

是是这个人,我们是我们的人,他们就是这个人,他们也是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们是这个人,我们们的人,我们们就会会会会会会会会会 उगणीसम श्री महिनाय, नील वरण काय । देवी प्रभावती कुम्भराय, नन्द्न जिनराय ॥१॥ कलका लञ्छन पचवीस धनुष, तनु उच्च पिछाण। सहस पचावन वर्ष मान, जस आयुस जाण ॥२॥ अहम भत्ते व्रत लियो ए, नगरी मिथिला नाम । गणघर अहावीस युत, आपो शिवपुर खाम ॥३॥ जसु चालीस हजार साघु, पंचावन सहस । साध्वी श्रावक एक लाख, तैयासी सहस ॥४॥ तीन लाख सत्तर सहस, श्रावकणी सार । सुर कुबेर धरण प्रिया, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रमु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

## ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैखवन्दन ॥

श्री हरिवंश सुमित्र राय, पद्मा तनु जात । श्री मुनि सुव्रत वर्ण, त्रिजगति विख्यात ॥१॥ कच्छप लाञ्छन धनुष वीस, तनु उन्नत सोहे । आयु तीस हजार वर्ष, भविजन मन माहे ॥२॥ छट्ट भत्त संजम लियो ए, राजगृही पुर नाम । निज अढार गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ तीस सहस मुनि जासू, सीस पंचास सहस । साध्वी श्रावक एक लाख, बावत्तर सहस ॥१॥ तीन लाख पंचास सहस, श्रावकणी सार । नर दन्ता सुरी वरुण यक्ष, निधि सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रमु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ श्री निम जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय विजय नरेश नन्द, काञ्चन समकाय । नील कमल लांछन वरण श्री निम जिनराय ॥१॥ आयु दश हजार वर्ष, वप्रा सुत सार। धनुष पनर जसु देह मान, उत्तम गुणधार ॥२॥ छह भत्त संजम लियो ए,

नगरी मिथिला नाम । निज गणधर सतरे सहित, आपो शिवपुर खाम ॥॥॥ बीस सहस मुनि जासु सीस, इमचल सहस । श्रमणी श्रावक एक लाख, बिल सत्तर सहस ॥॥॥ त्रिण लख अड़तालीस सहस, श्रावकणी सार । भृकुटि यक्ष गंधारि देवी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुंए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेतिगिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

#### ॥ श्री नेमि जिन चैत्यवन्दन ॥

समुद्र विजय सुत नेमिनाथ, कृष्ण वरण काय। शौरीपुर अवतार जासु, शंख छञ्छन पाय।।१॥ देह धनुष दशमान उच्च, हरिवंश विख्यात। संवच्छर इक सहस आयु, धन शिवा सुजात।।२॥ छ्ड भत्त संजम छियो ए, नयिर द्वारिका नाम। गणधर इग्यारे सिहत, आपो शिवपुर स्वाम।।३॥ सहस अढारे शुद्ध साधु, तह चालीस सहस। श्रमणी श्रावक एक लाख, गुणहत्तर सहस ॥४॥ तीन लाख छत्तीस सहस, श्रावकणी सार। अम्बादेवि गोमेध सुर, नित सांनिधिकार ॥५॥ मुनि पण सय छत्तीस सुंए, मास समण तप जाण। प्रमु सीधा गिरनार गिरि, करो संघ कल्याण।।६॥

### ॥ पार्श्वे जिन चैत्यवन्दन ॥

श्रयामि तं जिनं सदा मुदा प्रमाद वर्जितं, स्वकीय वाग्विलासतो जितोरमेघगर्जितम् । जगत्प्रकाम-कामित प्रदान दक्षमक्षतं, पदं दघान- मुचकैरके तवोपलक्षितम् ॥१॥ सतामवद्यमेदकं प्रभूत सम्पदां पदं, वलक्ष- पक्षसङ्गतं जनेक्षण क्षण प्रदम् । सदैव यस्य दर्शनं विशां विमर्दितैनसां, निहन्त्यसातजातमात्मभक्तिरक्त चेतसाम् ॥२॥ अवाप्य यत्प्रसाद मादितः पुरुश्रियो नरा, भवन्ति मुक्ति गामिनस्ततः प्रभाप्रभास्वराः । भजेयमाश्च से- निदेव देवमेव सत्पदं, तमुच्चमानसेन शुद्ध बोध वृद्धि लाभदम् ॥३॥

#### ॥ पार्श्व जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री अश्वसेन नरेशनंद, वामा जसु मात पन्नगढांछन पार्श्वनाथ, नीळ वरण गात ॥१॥ अति सुन्दर जिनराज देह, नव हाथ प्रमाण वरस एकसौ मान आयु, जसु निरमळ नाण ॥२॥ अहम तप संजम ळियोए, नयरि बनारसी नाम गणधर दस परिवार युत, आपी शिवपुर धाम ॥३॥ सोलह सहस मुनि जास शीश, अडतीस सहस। श्रमणी श्रावक एक ठाख, चौसडी सहस ॥४॥ त्रिणळख गुण चालीस सहस, श्रावकणी सार, पार्श्व यक्ष पदमा-वती, नित सांनिधिकार ॥ ५ ॥ तेतीस मुनि परिवार सुं ए, मास समण तप जाण प्रभु सीधा सम्मेतिगिरि करो संघ कल्याण ॥६॥

### ॥ वीर जिन चैत्यवन्दन ॥

वरेण्य गुणवारिधिः परमनिवृतः सर्वदः, समस्त कमलानिधिः सुरनरेन्द्र कोटिश्रितः । जनाति सुखदायको विगत कर्म वारो जिनः, सुमुक्तजन सङ्गमस्वमिस वर्दमान प्रभो ॥१॥ जिनेन्द्र भवतोऽद्भुतं मुखमुदार बिम्ब स्थितं, विकार परिवर्जितं परम शांत मुद्राङ्कितम्। निरीक्ष्यं मुदितेक्षणः क्षणिमतोऽस्मि यद्भावनां जिनेश ! जगदीश्वरोद्भवतु मे सर्वदा ॥२॥ विवे-किजनवह्नमं भुविदुरात्मनां दुर्लमं,-दुरन्तदुरित व्यथाभर निवारणे तत्परम् । तवाङ्गपद पद्मयोर्युगमनिन्द्य वीर प्रभो, प्रभूत सुख सिद्धये मम चिराय सम्पद्यताम् ॥३॥

### ॥ वीर जिन चैत्यवन्दन ॥

वन्दूं जगदाधार सार शिव संपति कारण। जन्म जरा मरणादि रूप भव ताप निवारण ॥ श्री सिद्धारथ तात मात, त्रिशलातनु जात । सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृत रूपे राजतो ए, चौवी-समों जिनराय । क्षमा प्रमुख कल्याण मुनि, आपो करि सुपसाय ॥१॥

### ॥ चतुर्विशति जिन चैत्यवन्दनं ॥

आदिनाथ पहला नुमूं, शिवदायक स्वामी । अजितनाथ बीजा नमूं जग अंतरजामी ॥१॥ श्री संभव त्रीजा नमूं, त्रिभुवन हितकारी । अभि-नन्दन चौथा नम् प्रभु जगदाघारी ॥२॥ सुमतिनाय जिन पांचमां, सुमति तणा दातार । पद्मे प्रभु छट्टा नमूं, पहोता मुक्ति मझार ॥३॥ श्री सुपार्ख जिन सातवां, कह्याकर्म चकच्रे । चन्द्र प्रम जिन आठवां, पाम्यासुस भरपूर ॥४॥ सुविधिनाथ नवमां नम्ं, प्रभुजी परमद्याल । दशवां श्रीशीतल

प्रमुकाटी कर्मणी जाल ॥५॥ श्री श्रेयांस इग्यारवां, प्रमुजी गुण मणिखाण। वासु पूज्य जिन बारवां, दीठा परम कल्याण ॥६॥ विमल नाथ जिन तेरवां, विमल विमल गुण खाण। अनन्त नाथ जिन सेवतां, प्रगटे आतम ज्ञान ॥७॥ धर्मनाथ जिन पनरवां, धर्मतणा दातार। शान्तिनाथ जिन सोलवां, तारे भवनो पार ॥८॥ कुंथुनाथ जिन सतरवां, तारक त्रिमुवन नाथ। श्री अरनाथ अद्वारवां, साचा शिवपुर साथ ॥९॥ मुनि सुत्रत जिन बीसवां, दीठा आवेदाय॥१०॥ निमनाथ इकवीसवां, धारक गुण समुदाय। नेमिनाथ बाबीसवां, भक्ति करो चितलाय॥११॥ आशापूरे पासजी, त्रेवीसमो जिनचन्द्र। वर्द्धमान चौवीसवां, प्रणमें सुरनर इंद ॥१२॥ ए चौवीसें जिन सदा, समरो चित हियलाय। आतम निर्मल कीजिये, प्रमुजी ना गुण गाय॥१३॥ प्रमु समरचां पातक कटे, कोटि विघन टलि जाय। अम्बालाल करजोडि ने, प्रणमें जिनवर राय॥१४॥ संवत उगणीसें इग्यारमो ए, माह सुदी पंचमी सार। जिन गुण गाता प्रेमसूं, रलपुरी सुमझार॥१५॥

### श्री सिद्धाचल चैलवन्दन

श्री रात्रुखय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे । भावधारीने जे चढ़े, तेने भवसागर पार उतारे ॥१॥ अनन्त सिद्धनो एह ठाम, सकळ तीर्थनो राय । पूर्व नवाणूं रिषम देव, ज्यांठिवयो प्रभु पाय ॥२॥ सूरज कुंड सुहामणा, कविडयक्ष अभिराम । नाभिराय कुळ मंडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥३॥

#### ॥ सिद्धाचल चैत्यवन्दन ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं। सुरराज संस्तृत चरण पंकज, नमो आदि जिनेक्वरं ॥१॥ विमल गिरिवर शृङ्कमंडण, प्रवर गुणवर भृथरं। सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० २॥ करित नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं। सुर इन्द्र विल २ नमे अहर्निज, नमो० ३॥ पुण्डरीक गणपित सिन्द साधी, कोडिपण मुनि मन हरं। श्री विमल गिरिवर शृङ्क सिन्दा, नमो० १॥ जिन साध्य साधन

सुर मुनिवर कोडिनंत ए गिरिवरं। मुक्ति रमणी चढ्या रंगे, नमो॰ ५॥ पाताल लोक मुरलोक मांही, विमल गिरिवर तो परं । नहिं अधिक तीरथ तीर्थपति, नमा॰६॥ इम विमल गिरिवर शिखर विहंडण ध्याइये । निज शुद्ध सत्ता साधनारथ परमज्योति निपाइये ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरं। गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्म विजय सुहितकरं ॥७॥

### ॥ सिन्हाचल चैत्यवन्हन ॥

जय जय नाभि नरिंद नंद, सिन्दाचल मंडण । जय जय प्रथमजिणंद चन्द भवदुःख विहंडण ॥१॥ जय जय साधु सुरिंद घुन्द, वंदिय परमेश्वर । जय जय जगदानंद कंद, श्री रिपभ जिनेस्वर ॥२॥ अमृतसम जिन धर्म नु ए, दायक जगमें जाण । तुझ पद पंकज प्रीतिधर निसदिन नमत कल्याण ॥३॥

## श्रीसीमंधर जिन चैत्यवन्दन

जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी । जय जय करणा शान्त दांत, भविजन हित कामी ॥१॥ जय जय इन्द निरन्द वृन्द सेवित शिरनामी । जय जय अतिशयानन्त, वन्त अन्तरगतिजामी ॥२॥ पूर्व विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वामी । त्रिकरण शुद्ध त्रिहुंकालमें, नित प्रति करूं प्रणाम ॥३॥

### ॥ सीमन्धर जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री सीमंघर वीतराग, त्रिभुवन उपकारी । श्री श्रेयांस पिताकुले, बहु शोभा तुमारी ॥१॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जिण जायो जयकारी। वृषभ लञ्छन विराजमान वंदे नरनारी ॥२॥ धनुप पांचरों देहिड ए, सो ह्य सोवन वान । कीर्ति विजय उवज्झायनो, विनय घरे तुम ध्यान ॥३॥

### ॥ सीमंधर जिन चैत्यवन्दन॥

सीमंघर परमात्मा, शिव सुखना दाता । पुक्खल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥१॥ पूर्व विदेह पुंडर गिरी, नयरियें सोहे । श्री श्रेयांस

राजा तिहां, भवियण ना मन मोहे ॥२॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्य की राणी मात । कुन्यु अरिजन अंतरे, श्री सीमंघर जात ॥३॥ अनुक्रमे प्रमु जनिमयां, विल यौवन पावे । मात पिता हरके करी, रुकमिणी परणावे ॥३॥ भोगवी सुख संसारना, संयम मन लावे । मुनि सुव्रत निम अंतरे, दीक्षा प्रमु पावे ॥५॥ घाती कर्मनो क्षयकरी, पाम्यां केवल नाण । वृषम लञ्को शोभतां, सर्व भावना जाण ॥६॥ चौरासी जस गणधरा, मुनिवर एकसौ कोड़ । त्रण भुवनमां जोयतां, निहं कोय एहनी जोड़ ॥७॥ दश लाख कह्या केवली, प्रमुजीनो परिवार । एक समय त्रणकालना, जाण सर्व विचार ॥८॥ उदय पेढ़ाल जिनातरे ए, थाशे जिनवर सिद्धि । जस विजय गुण प्रणमतां, शुभ वंकित फल लिखि ॥९॥

### श्री नवपद् चैत्यवन्द्न

श्री अरिहंत उदार कांति अति सुन्दर रूप सेवो, सिन्ध अनन्त संत आतम गुण भूप। आचारज उवझाय साधु समतारस धाम, जिन भाषित सिन्धान्त शुन्ध अनुभव अभिराम ॥१॥ बोध बीज गुण संपदा ए नाण चरण तब शुन्ध। ध्यावो परमानन्द पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥२॥ इह परभव आणंद कंद, जग मांहि प्रसिन्धो, चिंतामणि सम जाए योग बहु पुण्ये छद्धो। तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो॥३॥ सिन्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद खरूप। अमृतमय कल्याण निधि, प्रगटे चेतन भृष ॥४॥

#### ॥ नवपद चैत्यवन्दन ॥

पहले पद अरिहंतना गुण गाऊं नित्ये। बीजे सिन्ध घणा तणा, समरो एक चित्ते ॥१॥ आचारज त्रीजे पद, प्रणमों बिहुं कर जोड़ी। निमये श्री उवझाय ने, चौथे पद चित मोड़ी ॥२॥ पंचम पद सब साधु ने, नमतां न आणो लाज। ए परमेष्ठी पंच ने, ध्याने अविचल राज ॥३॥ दंसण शंकादिक रहित, पद छट्ठे धारो। सर्व नाण पद सातमें, क्षण एक न विसारो ॥४॥ चारित्र चोखूं चित्त थी, पद अप्टम जिपये। सकल भेद "以非共元与基础法?将<mark>被其实的发生这种建筑的主义是不是不是不是有的,是是是是是是,是是这种的,是是这种的,是是这种的,是是是是是是是一个,是是一个,是是一个的,是是是</mark>

बीच दान फल, तप नवमी तिपये ॥५॥ ए सिन्द चक्र आराधतां, करे वंछित कोड । सुमिति विजय कविराय नो, राम कहे करजोड़ ॥६॥ ॥ नवपद चैत्यवन्द्रन ॥

जय जय श्री अरिहंत देव, द्वादश गुणधारी। जय जय सिद्ध महाराज, शत्रुगण हणिया भारी॥१॥ जय जय सूरि उवझाय, पचवीस गुण-धारी। जय जय साधुशान्त दान्त भविजन हितकारी॥२॥ ज्ञान चरण नमो, तपसेवो निरधारी। माणकचन्द प्रणमें सदा, नित वंदो नरनारी॥३॥

#### ॥ परमातम चैत्यवन्दन ॥

परमेखर परमात्मा, पावन परमिष्ट । जय जय गुरु देवाघि देव, नयणे मैं दीष्ट ॥॥१ अचल सकल अधिकार सार, करुणा रस सिन्छ । जगत जन आधार एक, निःकारण बन्धु ॥२॥ गुण अनन्त प्रभुता हरा ए, कुछ भी कहान जाय । राम प्रभु जिन ध्यान थी, चिदानन्द सुख थाय ॥३॥

### ॥ श्री पर्यूषण चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्यूषण आविया, पूजो जिन चौवीस । शासन जेहने दीपतो, जयवंतो जगदीश ॥१॥ अष्टम दीप को जाणिये, नन्दीश्वर शुभनाम । देवदेवी नाटक करे, करे प्रभु गुण ग्राम ॥२॥ अट्टाई महोत्सव सुरकरे, पूजे नित प्रभु मेव । श्री जिन चारित्र सुरितणों माणक करे नित सेव ॥३॥

#### ॥ पञ्चतीर्थ चैत्यवन्दन ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तोरूं नाम । ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन-तणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥१॥ शत्रुं जय श्री आदिदेव, नेम नमूं गिर-नार । तारंगे श्री अजितनाथ, आवू ऋषम जुहार ॥२॥ अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौबीसी जोय । मणिमय मूरित मानसूं, भरत भरावी सोय ॥३॥ सम्मेत शिखर तीरथ बडूं, ज्यां वीसे जिनपाय । वैभारक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥ मांडव गढ़ नो राजियो, नामे देव सुपाश । ऋषभ कहे जिन समरतां, पहुंचे मन नी आश ॥५॥

#### ॥ ज्ञान पञ्चमी का चैत्यवन्दन ॥

मकल बस्तु प्रति भास भानु निरमल सुख कारण, सम्यग् दर्शन पुट हेनु भवजल निधि तारण। संयम तप आनंद कंद अज्ञान निवारण, भार विकार प्रचार ताप, तापित जन ठारण॥१॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परिणति पड़ियोहन, साहु साहूणी संघ सर्व आराधन सोहन ॥ मोह् तिमिर विध्यंम स्यार, मिश्यात्व पणासण, आतम शक्ति अनंत शुद्ध, प्रभुता परकासन ॥२॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण, मनपर्यव केवल, भेद पचास क्षायोपस-मिक, एक क्षायक निर्मल दो परोक्ष, प्रथम तिहां दुगपरतक्ष दिसत सकल प्रत्यक्ष प्रकाशभास, श्रुव केवल अपरमित्त ॥३॥ धर्म सकल नो मृत शुद्ध विपदी जिन भाष्य, वाहिर अंग प्रधान खंध गणधरसु प्रकास ॥ शाष्या श्री निर्युक्ति भाष्य पित्र शाखा दीपे, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सव जीपे ॥१॥ ए पंचांगी सारवोध कत्यो जिन पंचम अंगे, नंदी अनुयोग द्वार शाले मानो मनरंगे ॥ वीर परम पद जीत अनुभव उपगारी, अभ्यानी आगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोह् पंक हरनीरसम सिद्धान्त अवाधे, देव चन्द्र आणा सहित नय भंग अगाधे ॥ ए श्रुत ज्ञान मुहामणो सकल मोक्ष सुग्वकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥६॥

#### ॥ द्वितीया चैत्यवन्दन ॥

नम् नम् प्रश्नि दिने, प्रभु श्री नेमिनाय । प्रश्नि तर करवा थकी, भिन्ने निर्माने साथ ॥१॥ पाँच ज्ञान आगधिये, मीत श्रूति अर्थाय ज्ञान । भन्न पर्ये चीथी करो, पंचमी केवल छात ॥२॥ बरुचने सुप्रगंजिने, असमी तर एरं । श्री चारित्र मुरी तसी, मासक करी यन नेह १८४१

### ॥ अष्टमी चैत्यवन्दन ॥

आठ त्रिगुण जिनवरनी, करूं नित प्रति सेव । दंड वीरज राजा थयो, अष्टमि तप नित मेव ॥१॥ आठ करम दुरे करो, करो प्रभु नित सेव । पार्च प्रभू नित ध्यावतां, वर्चे आनंद मेव ॥२॥ चैत्र वदी आठम दिने, जनम्या ऋषभ जिनंद । जिन चारित्र सूरी तर्णो, बंदे माणक चंद ॥३॥

### ॥ एकादशी चैत्यवन्दन ॥

एकाद्श पड़िमा वहो, पढ़ो इग्यारे अंग । एकाद्शी आराधिये, करिये गुरुनो संग ॥१॥ जन्म दीक्षा केवल लह्या, प्रमु श्री मिछ नाय। सुव्रता ए तिथि वही, गयो मुक्तिके साथ ॥२॥ मौन करी आराधिये, एका-द्शी शुभ मेव । जिन चारित्र सूरी तणों, माणक करे नित मेव ॥३॥

॥ चतुर्दशी चैत्यवन्दन ॥

,这种是这种,我们就是这种,我们也是不是不是不是,这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是这种,我们是是有的,我们的是这种的,我们 चौद सुपन लहे मात ए, श्री जिनवर केरी । चौद रयनपति जेहना, प्रणमें पद फेरी ॥१॥ चउदश दश जिन वंदिये, भावधरीने आज । जन्म मरण मिट जात ए, फेरी चौदा राज ॥२॥ जंगम युग प्रधान ए, श्री चारित्र सुरिंद् । पदम प्रमोद प्रसाद थी, लहे माणक विद्या वृन्द ॥३॥

॥ चैत्यवन्दन विभाग समाप्त ॥



# स्तवन-विभाग

#### ऋषभ स्तवन

ऋषभ जिनेसर भेटवा रे लाल, मो मन अधिक उछाह सुखकारी रे। देश छपनमें दीप तोरे लाल, गुण गिरवी गजगाह ॥सु॰ १॥ लाल गोपाल सहू करे रे ठाल, ऋषभ देवरी आण । अद्भुत महिमा जेहनी रे लाल, माने सहू राय राण ॥ सु॰ २ ॥ नवखण्ड संघ्या अंगनो रे लाल, दीसे परतिल रूप । दीठो कोई न दूसरो रे लाल, इण युगल स्वरूप ॥ सु॰ ३॥ दूर यकी हूं आवियो रे लाल, यात्रा करण जिनराज । सुख कूरम नजर निहा-लियो रे लाल, महर करी महाराज ॥ सु॰ ४॥ लांच्या कव घट घाट जे रे लाल, लांघी विषमी नाल । दरसण दीठे ताहरो रे लाल, भांज गया जंजाल ॥ सु॰ ५ ॥ निरखी मृरत सांवली रे लाल. नयन भये लयलीन । जिना सारखी रे छाछ, भेद गिणो मतिहीन ॥सु॰ ६॥ जगमें देवछे घणो रे लाल, ते चितमें न समाय । मेयो मधकर मालती रे लाल, अवर न आवे दाय ॥ सु॰ ७ ॥ ध्यान धरे मन ताहरे सूरे लाल, जाप जपे दिन रात । दरसण देखे भावसूं रे लाल, पूजा करे प्रभात ॥ सु॰ ८ ॥ पात्रे पूत अपू-तिया रे लाल, धनहीणा धन होय । रोग शोक संगला दले रे लाल, गंज न सक्के कोय ॥ सु॰ ९ ॥ तारे भवसागर थकी रे छाछ, दले गरमा वास । अजर अमर पदवी छहै रे लाल, विलमं लील विलास ॥ सु॰ १०॥ तृं गति तूं मित तूं घणी रे लाल, तूं बान्धव तूं मीत । इण तीरय दीठां यको रं लाल, आयो विमलगिरी चीत ॥ सु॰ १२ ॥ हूं गिरिवो हूं गुण निलो र लाल, हूँ हुवो आज सनाथ । समकित कीधो निरमलो रे लाल, लाघो मुक्तिनो साय ॥ सु॰ १२ ॥ भाव भछे वर्द्धमान सृं रे छाछ, पूजा कुसुम कपूर । देवदत्त वर प्रभाव सूं रे लाल, ज्ञान भक्ति भरपूर ॥ मु० १३ ॥ जागी पुण्यतणी दशा रे लाले, जो भेट्या देव जिनराज । तृठो देव त्रिभुवन भणी रे लाल, सेवकने शिवराज ॥ सु॰ १८॥ मुनिवर गुण सनरे समें रे

लाल, मगसिर मास रसाल । श्री जिन रंग<sup>†</sup> पसावले रे लाल, फलिय मनोरथ माल ॥ सु॰ १५॥

### ऋषभ देव स्तवन

#### ॥ राग मांड ॥

श्रांरा दरशन पाया आज, दुखड़ा मांजे जी । म्हारा दुखड़ा भांग्या जाय, थांरो मुखड़ो देख्यां जी ॥ मरु देवी को छाड़छो जी, नाभि रायनो नन्द । विनीता मांही आवियो जी, पूजें इन्द्र अहमिन्द्र ॥ म्हारा० १ ॥ इक्ष्राकु वंश मांही जनमियोंजी, सोवन सिरखी देह । वृषम छञ्छन प्रभु तांहरोजी, आनन्द हर्ष धनेह ॥ म्हारा० २ ॥ वदी चैत्रकी अष्टमी जी, छीनो प्रभु अवतार । देव देवाङ्गना आविया जी, पूजन अष्ट प्रकार ॥ म्हारा० ३ ॥ नन्दीश्वर पर छेगयां जी, महोत्सव अठाई धार । समिकत वां निरमछ करी जी, छेख सिद्धान्त मझार ॥ म्हारा० थ ॥ इम जो करणी आदरें जी, श्रावक श्राविका सार समिकत सुध अपनी करें जी, उतरे भव जछ पार ॥ म्हारा० ५ ॥ शत्रुक्षय आवू सोहतां जी, देश मेवाड़ां आप । केशरियाजीके नाममूं जी, कटे पाप संताप ॥ म्हारा० ६ ॥ संवत् उणीसे सत्ताणवेंजी, नयरी कछकत्ता जान । पोष सुदी दशमी तिहां जी, मांडराग सुविहान ॥ म्हारा० ७ ॥ गच्छ खरतरमें राजियोजी, रतन सूरि सुखकार । यिति सूरजने धारियो जी, रिषम देव आधार ॥ म्हारा० ८॥

### आदिनाथ स्तवन

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, बीनतड़ी अवधारो रे जगनातारो, मुझ तारो जी कृपानिधि स्वामी । जग जशबाद प्रगट छे ताहरो, अबि-चल सुख दातारो रे ॥ ज॰ १॥ निज गुण भोक्ता, परगुण लोसा,

<sup>া</sup> यह स्तवन जैनाचार्व्य जं यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री जिनरंग सूरिजी महाराज ने वनाया है।

<sup>%</sup> यह स्तवन रंगविजय खरतर गच्छीय जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्व्यमहजीने सम्वत् १६ ६७ पोष सुदी १० को बनाया है।

आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज॰ ॥ अविनाशी अविचल अधिकारी, शिव-वासी जिन रायो रे ॥ ज॰ २ ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निस्णी, हूं तुज चरणे आयो रे ॥ ज॰ ॥ तूं रींझावण हेतू ततिखण, नाटक खेळ मचायो रे ॥ ज॰ ३ ॥ काल अनन्ते रह्यो एकेन्द्री, तरु साधारण पामी रे ॥ ज॰ ॥ वरस संख्याता विळ विकलेन्द्री, वेष घरचा दुःख धामी रे ॥ ज॰ ४ ॥ मुरनर तिरि बल्टि नरक तणी गति, पंचेन्द्री पणो घारचो रे ॥ ज॰ ॥ चौवीसे दंडक मांहि समतो, अब तो हूं पिण हारचो रे ॥ ज॰ ५ ॥ भव नाटक नित प्रति कर नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज॰ ॥ सम-रथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने जाच्यो रे ॥ ज॰ ६ ॥ जो मुझ नाटक देखी रींझिया तो मुझे वंछित दीजे रे॥ ज॰॥ जे नवि रीझातो मुझ भाखो, विल नाटक निव कीजे रे ॥ज॰७॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तूं दुःखड़ा नवि कापें रे ॥ ज॰ ॥ दाता सेती सूंब भले रो, वहिलो उत्तर आपें रे ॥ ज॰ ८ ॥ तुझ सरिखा साहिब पिणे म्हारे, जो निव कारज सारो रे ॥ ज॰ ॥ जो मुझ करम तणी गति अवली, दोष न कोई तुम्हारो रे॥ ज॰ ९॥ दीनदयाल दया करि दीजे, शुद्ध समकित सहि नाणी रे॥ ज॰ ॥ सुगुण सेवक ना वाञ्छित पूरो, ते हिज गुण मणी खाणी रे॥ ज॰ १०॥ वर्ष अठारे गुणतालीसे, जेठ सुदी सोमवारो रे॥ ज॰॥ लालचन्द प्रतिपद दिन भेट्या, बीकानेर मझारो रे ॥ ज॰ ११ ॥

### अजित जिन स्तवन

(मारूं मन मोह्यं रे श्री विमला चले रे )

पंथीडूं निहालूं रे बीजा, जिन तणो रे, अजित अजित गुण धाम । जे तें जी त्यारे तेणे हूं जीतो रे, पुरुष किस्यूं मुझ नाम ॥ पंथीडूं० १॥ चर्म नयण करी मारग जोव तोरे, भूलो संयल संसार । जेणे नयणे करि मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथीडूं० २॥ पुरुष परम्पर अनु-भव जोवतां रे, अंघो अंघ पुलाय । वस्तु विचारे रे जो आगमें करी रे, चरण घरण नही ठाय ॥ पंथीडूं॰ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परम्परा रे,

पारन पहुँचे कोय। अभिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे, छे विरला जग जोय ॥ पंथीडूं॰ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दीच्य नयण तणों रे, विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगे रे तरतम वासनारे, वासित बोध आधार ॥ पंथीड्ं ५ ॥ काल लब्धी लही पंथ निहालसूं रे, ए आशा अविलम्ब । ए जन जीवे रे जिनजी जाण जोरे, आनंद घन मत अम्ब ॥ पंथीडूं॰ ६ ॥

### श्री सम्भव जिन स्तवन

(रातड़ी रिमने किहां थी आवियारे)

संभव देव ते घुर सेवो सवे रे, लहि प्रभु सेवन भेद । सेवन कारण पहेली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ संभव॰ १ ॥ भय चंचलता हो जे परणाम नीरे, द्वेष अरोचक भाव । खेद प्रवर्त्ति हो करतां थकीये रे, दोष अबोध लखाय ॥ संभव॰ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परिणति परिपाक । दोष टले बली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ संभव ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधुसूँ रे, अकुशल अपचय चेत । ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परि शीतल नय हेत ॥ सं० ४॥ कारण जोगें हो कारज नीपजेरे, एमां कोइ न वाद । पण कारण विण कारज साधिये रे, ए निज मत उनमाद ॥ संभव॰ ५ ॥ मुगध सुगम करी सेवन आदरें रे, सेवन अगम अनूप। दे जो कदाचित सेवक याचना रे, आनंद घन रस रूप ॥ संभव॰ ६॥

### श्री अभिनन्दन जिन स्तवन

( सिंधुओ आज निहोजोरे दीसे नाहलो )

अभिनंदन जिन दरसण तरसीये, दरसण दुरलभ देव । मत मतभेदें रे जोजई पूछिये, सहु थापे अहमेव ॥ अभि॰ १ ॥ सामान्ये करी दरसण दोहलूं रे, निरणय सकल विशेष। मद में घेरचो रे अंघो केम करे, रवि शशि रूप विलेष ॥ अभि॰ २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नयवाद । आगम वादें हो गुरुगम को नहीं, ए सवलो विषवाद ॥ अभि॰ ३ ॥ घाती डूंगर आड़ा अति घणां, तुझ दरिसण जगनाय । घीठाई

करी मारग संचरूँ, सेंगू कोई न साथ ॥ अभि० ४ ॥ दरसण दरसण रटतो जो फिरूं, तो रण रोझ समान । जेहने पिपासा हो अमृत पाननी रे, किम भाजे विष पान ॥ अभि० ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण काज । दरसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, आनंद घन महाराज ॥ अभि० ६ ॥

### श्री सुमति जिन स्तवन

॥ राग वंसंत तथा केदारा ॥

सुमित चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अविकार । मित तरपण बहु सम्मत जाणीये, परिसर पण सुविचार ॥ सुमिति॰ १ ॥ त्रिविध सकल तनु घरगत आतमा, बिह्रातम धुरि भेद । बीज अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सुमिति॰ २ ॥ आतम बुद्धे कायादिक प्रद्यो, बिह्रातम अध रूप । कायादिकनो हो साखी धर रह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुमिति॰ ३ ॥ ज्ञानानन्दें हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि । अतीन्द्रिय गुणि गण मणि आगरू, इम परमातम साध ॥ सुमिति॰ ४ ॥ बिह्रातम तज अंतर आतमा, रूप थई थिर भाव । परमातम तूं हो आतम भाव सूं, आतम अरपण दाव ॥ सुमिति॰ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टले मित दोष । परम पदारथ संपित ऊपजे, आनन्द धन रस पोष ॥ सुमिति॰ ६ ॥

#### श्री पद्म प्रभ जिन स्तवन

( चांदलिया संदेशो कहें जे रे म्हारा कंतने रे )

पद्म प्रभ जिन तुझ आंतरूं रे, किम भांजे भगवंत । करम विपाके कारण जोड़ने रे, कोई कहे मितमंद ॥ पद्म॰ १॥ पयइ ठिई अणुभाग प्रदेश थी रे, मूल उत्तर वहु भेद । घाती हो बंधूद्य उदीरणा रे, सत्ता करम विच्छेद ॥ पद्म॰ २॥ कन कोपलवत् पयि पुरुस तणी रे, जोड़ी अनादि स्वभाव । अन्य संजोगी जिहां लगे आतमा रे, संसारी कहेवाय ॥ पद्म॰ ३॥ कारण जोगे हो बंधे बंधने रे, कारण मुगति मुकाय । आश्रव

संवर नाम अनुक्रमें रे, हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म॰ ४ ॥ पुंजन करणे हो अंतर तुझ पड़्यो रे, गुण करणे करि भंग । ग्रंथ उकतें करि पंडित जन कह्यो रे, अंतर भंग सुअंग ॥ पद्म॰ ५ ॥ तुझ मुझ अंतर अंतर भांजसे रे, वाजसे मंगल तर । जीव सरोवर अतिशय वाधसे रे. आनन्द घन रस पूर ॥ पद्म० ६ ॥

### श्री सुपार्श्व जिन स्तवन

॥ राग सारंग मल्हार ॥

श्री सुपास जिन वंदिये, सुख संपतिने हेतु । सात सुधारस जलनिधि, भवसागर मां सेतु ॥ श्री सुपास॰ १॥ सात महाभय टालतो, सप्तम जिनवर देव । सावधान मनसा करी, घरो जिनपद सेव ॥ श्री सुमति० २ ॥ शिव शंकर जगदीखरूं, चिदानंद भगवान्। जिन अरिहा तीर्थंकरूं, ज्योतिष रूप असमान ॥ श्री सुमति॰ ३॥ अलख निरञ्जन वच्छलूं, सकल जन्तु विसराम । अभयदान दाता सदा, पूरण आतम राम ॥ श्री सुमति॰ ४ ॥ वीतराग मद कल्पना, रति अरति भय सोग । निद्रा तंद्रा दुरदसा, रहित अवाधित योग ॥ श्री सुमति॰ ५ ॥ परम पुरुष परमात्मा, परमेश्वर परघान। परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव परमान ॥ श्री सुमति॰ ६॥ विघि विरिच्च विश्वंभरूं, ऋषिकेश जगनाथ। अघहर अघमोचन धणी, मुक्ति परम पद साथ ॥ श्री सुमति॰ ७ ॥ एम अनेक अभिद्या धरे, अनुभव गम्य विचार । जे जाणे तेहने करे, आनंद घन अवतार ॥ श्री सुमति॰ ८॥

### श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन

( कुमरी रोवे आऋंद करे मुने कोई मुकावे )

देखण दे रे सखी मुझे देखण दे, चंद्र प्रभ मुखचंद । उपशम रसनो कंद, गत कलिमल दुख दंद ॥ सखी॰ १॥ सुहम निगोदन देखिओ, बाद्र अतिहि विशेष । पुढवी आउन लेखिओ, तेऊ वाउन लेस ॥ सखी॰२॥ बनस्पति अति धण दीहा, दीठो निहं दीदार । बिति चउरिंदी जल लिह, गितसिन्न पणधार, ॥ सखी॰ ३ ॥ सुरितिरि निरय निवास मां, मनुज अनारज साथ । अपजता प्रतिमास मां, चतुर न चिढ़यो हाथ ॥ स०४ ॥ एम अनेक थल जानिये, दरसन बिणु जिनदेव । आगम थी मत जानिये, कीजे निरमल सेव ॥स॰५॥ निरमल साधु मगति लही, योग अवंचक होय । किरिया अवंचक तिम सही, फल अवंचक जोय ॥ स॰ ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरूं, मोहनीय क्षय जाय । कामित पूरण सुरतरु, आनन्द धन प्रमु

#### पुनः राग

चन्द्रा प्रभुजी से ध्यान रे, मोरी लागी लगन वा । लागी लगन वा छोड़ी न छूटे, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो॰ १ ॥ दान सीयल तप भावना भावो, जैन धरम प्रतिपाल रे ॥ मो॰ २ ॥ हाथ जोड़ कर अरज करत है, बंदत सेठ खुशाल रे ॥ मो॰ २ ॥

### श्री सुविधि जिन स्तवन

( एम धन्नो धणने परचावे )

सुविधि जिणेसर पाय निमने, शुभ करणी एम कीजे रे। अति घणो उलट अंग धरीने, प्रह उठी पूजी जें रे॥ सुविधि॰ १॥ द्रव्य भाव शुचि भाव धरीने, हरले दहे जह्ये रे। पण अहिगम साचवतां, एक मना धुरि यह्ये रे॥ सु॰ २॥ कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साली रे। अंग पूजा पण भेद सुणी एम, गुरु मुख आगम झाखी रे॥ सु॰ ३॥ एहन्ं फल दोय भेद सुणी जे, अनंतरने परम्पर रे। आणा पालण चित्त प्रसन्नी, मुगित सुगित सुर मंदिर रे॥ सु॰ ४॥ फूल अक्षत वर धूप पह्यो, गंध नैवेद्य फल जल भरी रे। अंग अग्र पूजा मिल अड़ विध, भावे भविक शुभ गित वरी रे॥ सु॰ ५॥ सत्तर भेद एकवीस प्रकारे, अहोत्तर शत भेदे रे। भाव पूजा बहुविध निरधारी, दोहग दुरगित छेदे रे॥ सु॰ ६॥ तुरिय भेद पिड़वत्ती पूजा, उपशम खीण संयोगी रे।

चउहा पूजा इम उत्तर झयणें, भावी केवल भोगी रे ॥ सु॰ ७ ॥ एम पूजा वहु भेद सुगीने, सुखदायक शुभ करणी रे। भविक जीव करसे तेले से, आनंद घन पद घरमी रे ॥ सु॰ ८॥

### श्री शीतल जिन स्तवन

( मंगलिक माला गुणहि विसाला )

以这些,并没有关于我的,我就是这种,我是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们的,我们们的 शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे। करणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शीतल॰ १॥ सर्व जन्तु हितकरणी करूणा, कर्म विदारण तीक्षण रे। हाना दान रहित परणामी, उदासीनता विक्षण रे ॥ शीतलः २ ॥ पर दुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण पर दुःख रीझे रे । उदासीनता उभय विलक्षण, एक ठामे केम सीझे रे ॥ शीतलः ३ ॥ अभयदान तेम लक्षय करूणा, तीक्षणता गुण भावे रे । प्रेरण विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मित नावे रे ॥ शीतल० ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निर्प्रथता संयोगे रे। योगी भोगी वक्ता मौनी, अनुप योगि उपयोगे रे ॥ शीतल ५॥ इत्यादिक वहु भंग त्रिभंगी, चमतकार चित देती रे। अचरजकारी चित्र विचित्रता, आनंद घन पद हेती रे ॥ शीतल॰ ६॥

### श्री श्रेयांस जिन स्तवन

( अहो मतवाले साजना )

श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे । अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुगति गति गामी रे॥ श्री श्रेयांस॰ १॥ सयल संसारी इन्द्रियरामी, मुनिगण आतमरामी रे । मुख्य पणे जे आतम रामी, तो केवल निःकामी रे ॥ श्री॰ २॥ निज खरूप जे किरिया साघे, तेह अध्यातम लहिये रे । जेह किरिया करि चलगित साधे, तेन अध्यातम कहिये रे ॥ श्री॰ ३ ॥ नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडो रे । भाव अध्यातम निज गुण साघे, तो तेहसूं रहमंडो रे ॥ श्री॰ ४॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणी ने, निर विकल्प आदर जो रे । शब्द अध्या- तम भजना जाणी, हान ग्रहण मित धरजो रे ॥ श्री॰ ५ ॥ अध्यातम जे बस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे । बस्तु गते जे बस्तु प्रकाशे, आनंद धन मतबासी रे ॥ श्री॰ ६ ॥

### वासु पूज्य जिन स्तवन

( तूं गिया गिरसिखर सोहे )

वासु पूज्य जिन त्रिमुवन स्वामी, घन नामी परणामी रे। निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामी रे॥ वासु॰ १॥ निराकार अभेद संग्राहक, भेद ग्राहक साकारो रे। दर्शन ज्ञान दुभेद चेतना, वस्तु ग्रहण व्यापारो रे॥ वासु॰ २॥ कर्चा परिणामि परिणामो, कर्म जे जीवे करिये रे। एक अनेक रूप नयवादे, नियये नर अनुसरिये रे॥ वासु॰ ३॥ दुःख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे। चेतनता परिणामन चूके, चेतन कहे जिन चंदो रे॥ वासु॰ ४॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल मावी रे। ज्ञान करम फल चेतन कहिये, लेजो तेह मनावी रे॥ वासु॰ ५॥ आतम ज्ञानी श्रवण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिङ्गी रे। वस्तुगतें जे वस्तु प्रकाशे, आनंद घन मित संगीरे॥ वा॰ ६॥

#### विमल जिन स्तवन

( ईंडर आंबा आंवली रे, ईंडर दाड़िम द्राख )

दुःख दोहग दुरे टल्या रे, सुख संपद सूं भेट । धींग धणी माथे कियारे, कुण गंजेंनर खेट । विमल जिन दीठा लोयण आज, म्हारा सीधा वंछित काज ॥ विमल १ ॥ चरण कमल कमला वसे रे, निरमल थिर पद देख । समल अथिर पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख ॥ विमल २ ॥ सुझमन तुझ पद पंकजे रे, लीनो गुण मकरन्द । रंक गणें मंदिर धरा रे, इंद चन्द नागेन्द ॥ विमल ३ ॥ साहिब समस्य तूं धणी रे, पाम्यो परम उदार । मन विसरामी वाल हो रे, आतम चोआ धार ॥ विमल ४ ॥ दरसण दीठे जिन तणो रे, संशय न रहे वेध । दिनकर करमर पसरंतारे, अंधकार प्रति वेध ॥ विमल ५ ॥ अमिय भरी मृर्ति रची रे, ओपम न

घटे कोय । शान्त सुधारस जीलतरे, निरखत तृपति न होय ॥ वि॰ ६॥ एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिन देव । कृपा करी मुझ दीजिये रे, आनंद घन पद सेव ॥ विमल्ल ७॥

### अनंत जिन स्तवन

धार तखारनी सोहली दोहली, चउदमा जिन तणी चरण सेवा। धार पर नाचता देख वाजीगरा, सेवना धार पर रहें न देवा॥ धार॰ १॥ एक कहें सेविये विविध किरिया करी, फल अनेकान्त लोचन न देखे। फल अनेकान्त किरिया करी बापड़ा, रड़बड़े चार गित मांहे लेखे॥ धार॰ २॥ गच्छना भेद बहु नयण नीहालतां, तत्वनी बात करतां न लाजे। उदर भरणादि निज काज करतां थकां, मोहनडिया कलीकाल राजे॥ ३॥ बचन निरपेक्ष व्यवहार झूठो कह्यो, बचन सापेक्ष व्यवहार सांचो। बचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांमली आदरी कांई राचो॥ धार॰ १॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे, केम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो। शुद्ध श्रद्धान विण सर्व किरिया करी, छारपर लीपणो तेह जाणो ॥ धार॰ ५॥ पाप नहिं कोइ उत्सूत्र भाषण जिसो, धर्म निहं कोई जगसूत्र स रिखो। सूत्र अनुसार जे भिवक किरिया करे, तेहनो शुद्ध चारित्र परिखो॥ धार॰ ६॥ घार॰ ६॥ एह उपदेश नूं सार संक्षेप थी, जेनर चित्तमें नित्य ध्यावे। ते नर दिव्य बहुकाल सुख अनुभवी, नियत आनंद धनराज पावे॥ धार॰ ७॥

### धर्म जिन स्तवन

धरम जिनेसर गाऊं सूं, भंगम पड़सो हो प्रीत जिनेसर । ब्रीजो मन मंदिर आणूं नहीं, ए अम कुलबट रीत जिनेसर ॥ धर्म॰ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहुफिरे, धर्म न जाणे हो मर्म जिनेसर । धरम जिनेसर चरण प्रद्यां पछी, कोई न बांधे हो कर्म जिनेसर ॥ धर्म॰ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सद गुरु करे, देखे परम निधान जिनेसर । हृदय नयण निहाले जग-धणी, महिमा मेरु समान जिनेसर ॥ धर॰ ३ ॥ दौड़त दौड़त दौडिओ, जेनी मननी रे दौड़ । जिन प्रेम प्रतीत विचारो ढूकड़ी, गुरुगम हे जोरे जोड़ ॥ जि॰ घर॰ ४ ॥ एक पखी केम प्रीति वरे पड़े, उभय मिल्या हुए संघि जि॰ हूंरागी हूंमोहे फंदियो, तुं निरागी निखंधि ॥ जि॰ घर॰ ५ ॥ परम निधान प्रगट मुख आगलें, जगत उलंधी हो जाय जि॰ । ज्यांति विना जुओ जगदीसनी, अंधो अंध पुलाय ॥ जि॰ घ॰ ६ ॥ निरम्सल गुण मणि रोहण भूधरा, मुनि जद मान सहंस जि॰ । धन्य ते नगरी धन वेला घड़ी, माता पिता कुल वंशा ॥ जि॰ घ॰ ७ ॥ मन मधुकर वर करजोड़ी कहें, पद कज निकट निवास जि॰ । घन नामि आनंद घन सांमलें, जिनेसर ए सेवक अरदास ॥ धरम॰ ८ ॥

### शांति जिन स्तवन

शांति जिनंद गुण गावो, मना शिव रमणी सुख पाओं तुम शांति ॥ मन वच काय कपट तज आतम, शुद्ध भावना भावो मना ॥ शांति॰ ॥१॥ दयाश्रम अरु शीत तपस्या, करि सब कर्म खपावो मना ॥शांति॰ २॥ माया मोह लोभ पर निन्दा, विषय कषाय नसावो मना ॥शांति॰ ३॥ जगवन्दन अचिरा नन्दन को, निश दिन ध्याय रिझावो मना ॥ शांति॰ ४॥ जिन पद कज मधुपम जाते, उत्तम ध्यान लगावो मना ॥ शांति॰ ५॥ जिन कल्याण मिर प्रमु चरणे, वेर वेर लय लावो मना ॥ शांति॰ ६॥

### श्री कुंथु जिन स्तवन

( अम्बर देहां मुरारी हमारो )

कुंयु जिन मनड़ो किम हीन वाजे हो ॥ कुं० ॥ जिम जिम जतन करीने गर्यः निम निम अलगं भाजे हो ॥ कुं० १ ॥ रजनी वासर वसनी जजड़. गयण पायाले जाय । सांप खायने मुखडो योयं. एह ओखाणो त्याय हो ॥ कुं० २ ॥ मुगति तणा अमिलापी निपया. ज्ञानने ध्यान अन्यान । वयरीडं काइ एह्यं चिन्ने. नाखे अलये पाने हो ॥ कुं० ३ ॥ आनम आगम धरने हाथे, नाबे किण विधि आकृं। किलां कणे जो हत

<sup>े &</sup>lt;sup>१९</sup> स्टान रंगः विजयः सरस्यमणीय रंऽ युः १० मृतः प्रहारण श्री पूरण रंगे श्रीक्तिस <sup>अप्रहा</sup>ः स्टिशः सरामाज का बमाया हुत्याने ।

不好者就是我是我我不好的我不 精神神经神经治外神经经常就是我的我们的人们是我们的人们的人们

करी हटकूं, तो व्याल तणी परे वाकूं हो ॥ कुं॰ ४ ॥ जो ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साह्कार पण नाहीं । सर्व मांहे ने सहुथी अलगूं, ए अचरज मन मांही हो ॥ कुं॰ ५ ॥ जे जे कहूं ते कानन धारे, आप मते रहे कालो । सुरनर पंडित जन समझावे, समझे न माहरो सालो हो ॥ कुं॰ ६ ॥ मैं जाण्यूं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले । बीजी बाते समस्य छे नर, एहने कोइन झेले हो ॥ कुं॰ ७ ॥ मन साध्यूं तेणे सघलू साध्यूं, एह बात नहीं खोटी । एम कहे साध्यूं ते निवमानूं, एक ही बात छे मोटी हो ॥ कुं॰ ८ ॥ मनडूं दुराराध्यते वस आण्यूं, ते आगम थी मित आणूं । आनंद घन प्रभु माहरूं आणो, तो सांचूकरि जाणूं हो ॥कुं॰ ९॥

### श्री अर जिन स्तवन

( रिषभनो वंस रयणयरूं )

घरम परम अरनाथ नो, किम जाणूं भगवंत रे। खपर समय सम-झाविये, महिमावंत महंत रे॥ घरम॰ १॥ शुद्धातम अनुभव सदा, ख समय एह विलास रे। परबड़ी छाहड़ी जेह पड़े, ते पर समय निवास रे॥ घ॰ २॥ तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी, ज्योति दिनेस मझार रे। दर्शन ज्ञान चरण थकी, शकति निजातम धार रे॥ घ॰ ३॥ भारी पीलो चीकणो, कनक अनेक रंग रे। पर्याय दृष्टि न दीजिये, एकज कनक अमंग रे॥ घ॰ ४॥ दर्शन ज्ञान चरण थकी, अलख सरूप अनेक रे। निर विकल्प रस पीजिये, शुद्ध निरंजन एक रे॥ घ॰ ५॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एकंत रे। व्यवहारें लख जे रहे, तेहना भेद अनंत रे॥ ॥ध॰६॥ व्यवहारें लखे दोहिला, कोई न आवे हाथ रे। शुद्ध नय स्थापना सेवतां, नवी रहे दुविध साथ रे॥ ध॰ ७॥ एक पखी लखि प्रीतनी, तुम साथे जगनाथ रे। कृपा करीने राख जो, चरण तलें ग्रही हाथ रे॥ घ॰ ८॥ चक धरम तीरथ तणों, तीरथ फल ततसार रे। तीरथ सेवे ते लहें, आनंद धन निरधार रे॥ घ॰ ९॥

### श्री मिल्ल जिन स्तवन

सेवक किम अवगणिये हो मिह्ह जिन, एह अब शोभा सारी। अबर जेहने आदर अति दीए, तेहने मूल निवारी हो ॥ महि॰ १ ॥ ज्ञान सुरुपम अनादि तुम्हारूं, ते लीघूं तुम ताणी । जुओ अज्ञान दशारी साबी, जातां काणन आणी हो ॥ म॰ रे ॥ निद्रा सुपन जागर उजागरतां, तुरिय अवस्था आवी । निद्रा सुपन दशारीसाणी, जाणी न नाथ मनावी हो ॥ म॰ ३ ॥ समकित साथें सगाई कीधी, सपरिवार सुं गाढ़ी । मिथ्या मति अपराधण जाणी, घर थी बाहिर काढ़ी हो ॥ म॰ ४ ॥ हास्य अरति रति शोक दुर्गच्छा, भय पामर कर साली । नोकषाय श्रेणी गज चढ़तां, श्वान तणी गति जाली हो ॥ म॰ ५ ॥ राग द्वेष अविरतिनी परिणति. ए चरण मोहना योघा । बीतराग परिणति परणमता, उठी नाठा बोघा हो ॥ म॰ ६ ॥ वेदोदय कामा परिणामा, काम्यक रसहु त्यागी । नि:कामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पागी हो ॥ म० ७ ॥ दान विघन वारी सहु जनने, अभय दान पद दाता । लाभ विघन जग विघन निवारक, परम लाभ रस माता हो ॥ म॰ ८ ॥ वीर्य विघन पंडित वीर्ये हणी, पूरण पदवी योगी । भोगोपभोग दोय विघन निवारी, पूरण भोग सुभोगी हो ॥ म॰ ९ ॥ ए अढ़ार दृषण वरजित तनूं, मुनि जन वंदे गाया । अविरति रूपक दोष निरूपण, निरदृषण मन भाया हो ॥ म० १० ॥ इण विघ परखी मन विसरामी. जिनवर गुण जे गावे । दीनबंधुनी महिर नजर थी, आनन्द घन पद पावे हो ॥ म० ११ ॥

### मुनि सुव्रत जिन स्तवन

हाथ जोड़के अरज करूं, मोरी अरजी मानो जी, ॥ हाथ॰ ॥ काल अनन्त मोहे भटकत बीत्यो, अबतो तारो जी ॥ हाथ॰ १ ॥ अधम उधारण हो प्रमु तुमहीं, मेरी ओर निहारो जी ॥ हाथ॰ २ ॥ तुम बिन 记,我们是这个人,我们就是我们是我们是我们的,我们是我们的,我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们的人,我们的人

देव नहीं ऐसा, का पे जाय पुकारूं जी ॥ हाथ॰ ३ ॥ सूरि कल्याण\* की अरज यही है, भव विपत्ति निवारो जी ॥ हाथ॰ ४ ॥

### श्री निम जिन स्तवन

( धन धन सम्प्रति सांचो राजा )

षट् दरसण जिन अंग भणी जे, न्यास षडंग जो साधे रे। निम जिनवरना चरण उपासक, षट दरसण आराधे रे ॥ षट॰ १ ॥ जिन सर पादप पाय वखाणूं, सांख्य जोग दोय भेदे रे । आतम सत्ता विवरण करता, लहो दुग अंग अखेदें रे॥ षट० २॥ मेद अभेद सुगत जिनवर दोय कर भारी रे। लोकालोक अलम्ब भजीये, गुरु गम थी अव-धारी रे ॥ षट॰ ३ ॥ लोकायतिक कुख जिनवरनी, अंश विचारी जो कीजे रे। तत्व विचार सुधारस धारा, गुरु गम विण केम पीजे रे॥ षट॰ ४॥ जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग, अंतरंग वहिरंगे रे । अक्षरन्यास घरा आधा-रक, आराघे घरि संगे रे ॥ षट॰ ५ ॥ जिनवर मां सघला दरशण छे, दर्शने जिनवर भजना रे । सागर मां सघली तटनी सही, तटनी मां सागर भजना रे ॥ षट॰ ६ ॥ जिन स्वरूप यई जिन आराघे, ते सही जिनवर होवे रे । भृङ्गी ईलीकाने चटकावे, ते भृङ्ग जग जोवे रे ॥ षट० ७॥ चूरण भाष्य सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति परंपर अनुभवें रे । समय पुरुषना अङ्ग कह्या ए, जे छेदे ते दुरभवें रे ॥ षट॰ ८ ॥ मुद्रा बीज धारण अक्षर, न्यास अरथ विन योगे रें। जे ध्यावे ते निव वंची जे, किया अवंचक भांगे रे ॥ षट॰ ९ ॥ श्रुत अनुसार विचारी बोलूं, सुगुरु तथा विधिना मिले रें । किरिया करि निव साधि सिकये, ए विषवाद चित्त सघले रे ॥ षट० १० ॥ ते माटे ऊमा करजोड़ी, जिनवर आगल कहिये रे । समय चरण सेवा शुद्ध दे जा, जेम आनंद घन छिहये रे ॥ षट॰ ११ ॥

<sup>\*</sup> यह स्तवन रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूच्य जो श्रीजिन कल्याण सूरिजी महाराज का बनाया हुआ है।

स्तवन-विभाग ५०६

श्री नेमि जिन स्तवन

(राग मांड)

म्हारा नेमीश्वर भगवान थे तो प्यारा लगगो जी शौरीपुरमें जनिमयां जी, समुद्र विजयका नन्द । मात शिवादे थांहरी जी, निरस्थां होय आनन्द ॥ थे० १ ॥ स्याम वरण तन थांहरो जी, कुल पायो हरिवंश । लंखन शंबसे शोभता जी, श्रावण मास अवतंस ॥ थे० २ ॥ राजुल व्याहण थे गया जी, जूना गढ़के मांय । पशुवन रोबन देखके जी, कांप्यो हियड़ो आय ॥ थे० ३ ॥ हुकुम दियो प्रशु नेम जी, रथ उल्टो ल्यो किराय । राजुल परणवा कारनें जी, लाखा जानां जाय ॥ थे० ४ ॥ पशुवन वाड़ा खुलवायके जी, करिलयो योगी वेश । राजुल तज प्रशु जा बस्या जी, गिरनार गिरीके देश ॥ थे० ५ ॥ धातिक कर्म खपायके जी, उपज्यो केवल ज्ञान । जैन धर्मको भाखके जी, कींनो जग कल्याण॥ थे० ६ ॥ धन्य प्रशु है थाने जी, धन धन राजुल नार । मोक्ष पदको पा गये जी, नौवत केकरतार ॥ थे० ७ ॥

श्री नेमि जिन स्तवन

सुअ देवी सानिध करी, गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ निर्वे क्लात सम्पा । सुल सम्पति नित पूर ॥॥ नेमीसर यादव नंदनो, राजमती मरतार । निज चरणा पावन कियो, विचरंता त्रिणवार ॥५॥ तीन कल्याणक इण गिरी, वा वीसमो मगवंत । दीक्षा केवल सिक्ड गई, गुण गिरवा गुणवंत ॥६॥ गत चौवीसी जिनवर्ह, आठ वरम जिनंद । कल्याणक त्रिण त्रण यया, माखे ज्ञान दिणवं ॥७॥ संयम शिव केवल सिरी, शास्त्र तणो विरतन्त । करम खाय अक्षय लही, एकाकी पिण अन्त ॥८॥ श्रीणिक जीव प्रमुख

्राप्त स्थान के स्था जिल्ला के स्थान के स सभी, भावी जिन चौवीस । सिन्द रमण पद पावसी, ए भाखें जगदीश ॥९॥ चरम जिनेसर दोय वली, तेहना तीन कल्याण । पासे रेवत गिरिवरें, बोलें गणघर वांण ॥१०॥ जम्मा रुकमणी नन्दनो, राजमती रह नेम । ढंढण मुनि इम बहु हुआ, कहतां तो आवे प्रेम ॥११॥ एहवी मोटी जेहनी, महिमा न आवे पार । सिन्द रमण पद एह छे, आपे मवजल पार ॥१२॥ विधि सुं जे नर इण गिरी, यात्रा श्री गिरनार । अम्बा तसु सानिध करे, पूरे पुज्ये भण्डार ॥१३॥ घर बैठे जे नर करे, भावे श्री गिरनार । मन वंछित फल पावसी, जावे भव जल पार ॥१४॥ अठारे से सड़सठ समें, चैत्री पूनम आज । श्री संघ सानिघ शुभमने, कीनो आतम काज ॥१५॥ अखय\* सदा ए गिरि रहें, नामे शिव सुख कंद । भव भव दीजे सेवना, भाखें श्रीजिनचंद ॥१६॥

### श्रीथम्भण पार्श्वनाथजीका स्तवन

,这种是一种,是一种,是一种的人,也可以是一种的人,也可以是一种的人,也可以是一种的人,也可以

प्रभु प्रणम्ं रे पास जिणेसर थंभणो, गुण गाइ वारे मुझ मन उछ्छट अति घणो, ज्ञानी बिणरे एहनी आदिन को छहे, तोही पिणरे गीता ख गुरु इम कहे । इम कहे शास्त्र तणे प्रमाणे, राम दशरथ नंदने, बंदवा पाजे शीत काजे, समुद्र तट ए कण बनें, तिहां रह्या बान्धव राम लक्ष्मण, साथ सेना अति घणी, प्रासाद एक उत्तंग तोरण, थापणा जिणवर तणी ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

तिहां मूरित रे मूळ गम्भारे पासनी, मन बंछित रे आशा पूरे आसनी, ते राजा रे दिन प्रति पूजा साचवे, करजोड़ी रे वे बांधव इम बीनवे, बीनवे स्वामी तुम्ह प्रसादे । जलधि जल थंभे किमें, तो पाज वांघूं लंक साधूं इम कही प्रभु पाय नमें, बहु पूज करतां ध्यान धरतां, सात मास गया जिसे । नव दिवस अधिका थया ऊपर, जलिंघ जल धंम्यो तिसें ॥२॥ ए अति सयरे अचरिज पेख्यो प्रमु तणो, तिण कारण रे, नाम

<sup>#</sup> यह स्तवन जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री पूच्यजी श्री जिन चन्द्रसूरीजी महाराज ने सं० १८६७ चैत्री पूनमको बनाया है।

*የተያላቸውናቸውቸቸቸቸዋቸቸቸቸዋቸ የተ* 

रिता कर्नान हो। इस राजन किसी कि ए जिल्लान जिल्ला किसीन विसेत्र किसी किसी होने के किसी कर हो से सेसीन के से होता

दियो तसु थंमणो जल ऊपरी रे पाज करी पाथर तणी, गढ़ लंका रे साधेवा सीता भणी गढ़ लंक साधी सीत आणो तेण बन आव्या बली, दिन आठ अठाइ महोच्छव किया मन पूगी रली, श्री राम राजा शुद्ध श्रावक विनीता नगरी बसे, बीसमा जिनवर तणे बारे इम थया गुरु उपदिसे ॥३॥इण अनुक्रम रे केतहो काल गयो वही, ते प्रतिमा रे तिन बन में निश्चल रही। इण अवसर रे इन्द तणें आयस करी, सायर तट रे सोवन मय द्वारा पुरी, द्वारका नगरी कृष्ण राजा अर्द्ध भरत तणो धणी, तिहां बसे यादव कोडि छप्पन बहें आग्या जिन तणी, तिण काल तिण बन तेह तीरथ तेहनी महिमा सुणी, सारङ्ग प्राणी भाव आणी आव्या तिहां यात्रा भणी ॥३॥

#### ॥ ढाल ॥

THE STATE OF THE S

तिहां नरहर जिनहर मन उछास मनमें आनन्दे वंदे थंभण पास, पेखे अति नवली पूजा प्रभुजिने देह, एकेणें की धी इम मन थयो संदेह, संदेह थयो अटवी चिहुं पासे नहीं मानव संचार, केण करी विद्याधर सुरवर पूजा सतर प्रकार, इसी बिमासी मंडप अंतर रह्या युगपते ठाम, मध्यरात पातालें आवी बासग बिसहर साम ॥५॥ तिहां आवी प्रणमें देनाटक आदेश, मिलि नागकुमारी बिरचे अद्भुत वेष, शकस्तवपभणे जाण्यों श्रावक एह, हरि प्रगट्यो ततिखण, साहमी तणइ ससनेह, ससनेह वासग ऋष्ण नरेसर वैठा विम्ब बखाणें, ए श्रीजिनवर पास जिणेसर आदि न कोइ जाणें, असी सहस वर सामें पूज्या जेहुन्ता पायाले, वरण एक प्रासाद कराच्यो थाप्या एह जिनाले ॥६॥ सहु वात कहीने वासग गयो पायाले, श्रीकृष्ण नरेसर मन चिन्तइ ततकाले, जो एहवो तीरथ हुवे द्वारिका मझार तो जाणूं नरभव सफल थयो अवतार, सफल जनम करि वानें काजे तेह विम्य तिहों आणे श्रीद्वारिका, हेममय जिणवर थाप्या प्रगट प्रमाणे । घणें काल पूजा तहां पामी, करम निकाचित जाणी, श्रावकने सुपनान्तर आवी. देव वदे इम वाणी ॥७॥ प्रभु प्रतिमा बाहण, छेइ समुद्र मझार ।

मुंके जो नगरी, थास्ये अवर प्रकार। तिण सागर अन्तर, काल गयो बहु जाम दक्षिण दिसि उत्तम, कुन्ती नगरी ठाम, कुन्ती नगरी जैन बसे, जहां श्रावक सागरदत्त, बाहण सात बहे व्यापारे पोते पर घल वित्त, अन्य दिवस सायर बिच बहतां जहां छे थंभण पास, ऊपरि आच्या थंभ्या बाहण ने सविथया उदास ॥८॥ मास दिवस बाणी थई अम्बर सुरराय, प्रतिमा थंभण पाशनी सायर जलिंघ माहिं सुर प्रगट्यों जिण सासणे, सुर कहें बांणी एह प्रतिमा भाव सूं प्रगटी करो जइ जैन कुन्ती नगर जिण हर मूल नायक ए धरो, ते बिम्ब कुन्ती मांहि थाप्यो, कहे वह श्रावक तहां ए सकल तीरथ नाथ समरथ पुण्य योग मिल्यो इहां ॥९॥ इण अवसर दस उर पुरइ पालत्तइ सूर, विद्या बल अम्बर भमें अतिशय भरपूर, तीरथ जाय जिण हरनमें, तेन में सेत्रूंजा प्रमुख गिरिवर सदा पाखी पारनें पाली तानें रह्या थांणे नागा-रजुन जोगी पने, ते धातु सोवन काज धमतां मास छट्टे रस करे, करि कोप भैरव बीर नाखें रूप पंखी नो घरे ॥१०॥ तिण पालनें सूरिनें जाण्यो एह महन्त, पूछेको सुर दाखवें अतिशय गुणवन्त, कृपा करि मुझ भाखवो गुरु तेह भाखे जेह थंभे उपद्रव सुर नर तणो, तिण करचो कुन्तीने प्रसादे पास छे प्रमु थंभणो, कुण यक्ष बीर बेताल व्यन्तर सहु तस् सेवा करे, तेहनी दृष्टि साधि विद्या जेम तुम वंछित सरे ॥११॥

#### ॥ ढाल ॥

विद्या पिण आकर्षणी हुन्ति जोगी ने पास, ते प्रतिमा आणी तिहां थापी निज आवास, सोवन रस सीधो जिहां, रस तिहां सीधो सुजस लीधो, नदी सेढ़ीनें तटे। गुरुने जणाच्यो तिण कहाच्यो, बिम्ब भंडारचो घटे, इणकाल धरम सुथान थोड़ा हुसी मलेच्छा इण इहां खाखरातले सेढ़िकातीरे बिम्ब भंडारचो तिहां॥१२॥

#### ॥ ढाल ॥

मेघ आगम सही नदी उछ्छटि वही बेलुका बिम्ब ऊपर बले ए, तेण भुंइ घेनूचरे, खार सुरही झरे चीकणी, भूमि खाखर तले ए, केतल

दिन पछे सुगुरु खरतरगच्छे । श्री अभयदेव सूरी सरूए, षट् बिगय परिहरी ज्य तप आदरी रक्त पिची थई मुनि वरूए, ते रक्त पिची गलत काया चित्तमें चिन्ता करे, अधरात सासण देवि आवी कोकडा नव कर धरे, ए सूत्र तुं सुलझाइ सुपरे तासगुरु जंपेइसो, जो थायसी मुझ निरोग काया तो सही उख़ेलसूं ॥१३॥ ताम देवीय कहे नदिय सेढ़ी बहे, तेण तट वृक्ष खाखर तले ए । तिहां तुम्हें जाइवो तबन करिबो नवों प्रगट थासी प्रमु थंभणो ए, तेहने स्नात्र जल रोग सबि जाय टले, इम कहीय गई सासण सुरीये, संघ सगलो मिली तिहां जाइ मन रली, ताम धरणेंन्द्र ध्याने धरीये तहां करि जयतिहुअण बत्तीसी पादा, प्रगट्या ततक्षिणे तसु स्नात्र नीरे, सुख शरीरे धन्य धन्य सहुको भणें, तहां थान थाप्यो सुजस व्यापो थयो परचो अति घणो. तेहने नामें तेण ठामें ग्राम वास्यो थंमणो ॥१४॥ थईय महिमा घणी पाश थंभण तणी, सुगुरु काया नव पह्मवीए संघ आवे घणा करे वद्यामणा महयल कीरत विस्तरीए, सुपन जे देवता कोकडा नव हुता सूत्रते सूत्र सिद्धान्त नामें वृत्ति नव अंग नी, भेद नव भंग नी, रची आचारजे तेण ठामें सहुय यामें आसकर जो आवए बहु भाव भक्ते एकचित्ते सेवतां सुख पावए, एकदा गुरु धरणिन्द, ध्याने प्रगट थई पदमावती श्री अभयदेव सुरिन्द आगलि, इम कहे सांभल यति ॥१५॥ तवनजे तुम्ह करचो मंत्र अतिशय भरखो, अन्ति तसुगाह जे वे कहीए, तेह गुणीये जहां इन्द्र आवे तहां कष्ट विणतेह गुणवी नहीं ए, तेह मंडारवी काज संभारवी, अवर इण तवन महिमा घणीए, समरतां सम्पदा रोग नावे कदा सदा आवश्यक भणीए, पडिक्समणा नित भणे धुरि एह विधि खरतर तणीए, इम कही सासण देवि सामण गई, निज यांनिक भणीए, केतले दिवसे देश गुङ्जर सयल म्लेन्छायन थयो, भले ठांम जाणी विम्व आणी नयर श्री खम्मा यत ठच्यो ॥१६॥ खम्भ नयर सिरि पास जिणेसरू, दिन दिन दीपत अति अल्बेसरः। जात्र करेवा मुझहुन्ती रली, प्रभुमें भेट्यो आस सहू फली मुझ आस सफरी, यईय सामी जांम भेट्या जगपती सोभाग्य सुन्दर करोउन्नति

ठामें

هجامة بالمهليوليوليط والميامة عاصا فاحداجا يتأسا واساما والماما والماما والهاجان والهاما والماما مالماما والماما والماماما والماما وال

所成为,他们我有你就想你看了一种的话,这是你们是他的,我也是我的,我们也是我们的,我们也是我的,我们就是我们的,我们也是我的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我

करूं । एह वीनती अञ्चसेन वामादेवी अङ्गज, ध्यान मन तोरा घरूं, करि कृपा स्वामी सीस नामी सदा तुद्ध सेवा करूं ॥१७॥

#### कलग

इम स्तव्यो थम्भण पास सामी, नगर श्री खंभाइते । जिम सुगुरु श्री मुख सुणी वाणी, शास्त्र आगम सम्मतें। ए आदि मूरत सकल सूरत सेवर्ता सुख संपए । मन भाव आणी लाभ जाणी, कुशल\* लाभ पयं पये ॥१८॥

### श्री गौड़ो पार्श्व जिन वृद्ध स्तवनम्

वाणी ब्रह्मा वादिनी, जागे जग विरूयात । पास तणां गुण गावतां, मुझ मुख वसज्यो मात ॥१॥ नारंगे अणहळ पुरे, अहमदाबादें पास । गौडीनो घणि जागतो सहुनी पूरे आस ॥२॥ शुभ बेळा शुभ दिन घड़ी, मुहूरत एक मंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥३॥

#### ॥ हाल ॥

गुणहि विशाला मंगलिक माला, वामानो सुत सांचो जी। धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणि जाचो जी ॥४॥ अणहिल पुर पाटण मांहे, प्रतिमा, तुरक तणेंघर हुंती जी । अञ्चनी भूमि अञ्चनी पीडा, अञ्चनी वालि विगूती जी ॥ गु॰ ५ ॥ जागंतो यक्ष जेहने कहिये, सुहनो तुरकनें आपे जी । पास जिणेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ सन्तापे जी ॥ गु॰ ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट कर जे, मेबा गोठीने दीजे जी । अधिकम ले जे ओछोम ले जे, टक्का पांच सौ लीजे जी ॥ गु॰ ७॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंघ बंघारये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लच्छि घणी घर जास्ये जी ॥ गु॰ ८ ॥ मारग पहेलो तुझने मिलस्ये, सारथवाह जे गोठी जी। निलवट टीलो चोखा चेड्या, वस्तु वहें तसु पोठी जी ॥ गु॰ ९ ॥

अह स्तवन कुशळळाभ सूरिजी महाराज का वनाया हुआ है ।

#### ॥ दोहा ॥

मनस्ं बिहिनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण । बीबीने सुहणा तणो, संभलावे सिंह नाण ॥१० ॥ बीबी बोले तुरकने, बड़ा देव है कोय । अवस ताव परगट करो, निहं तर मारे सोय ॥११॥ पाछली रात परोडिये, पहली बांघे पाज । सुहणा मांहे सेठने, संमलावे यक्षराज ॥१२॥

#### ॥ ढाल ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी। पास तणी प्रतिमा तूंछे जे, छेतो सिर मत धूणे जी ॥ एम॰ १३ ॥ पांच सै तेहने आपे. अधिको म आपिस बारूं जी। जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारे जी ॥ एम॰ १४ ॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठी ने सुणजे जी। पूजिस प्रणमिस तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजे जी ॥ एम॰ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुंतो जी । पाटण मांहे सारथवाहू, हियडे तुरकने जोतोजी ॥ एम॰ १६ ॥ तुरकें जाता दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी। संकेत पहुंतो सांचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ एम॰ १७ ॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझने आएं, पास जिणेसर केरी जी। पांच से टक्का जो मुझ आपे, मोल न मांगू फेरी जी ॥ एम॰ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा छेई, थानक पहुँतो रंगे जी । केशर चन्दन मृगमद घोली, विधिसूं पूजा रंगे जी॥ एम० १९॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी। अनुक्रम आव्यां परिकर मांहे, श्री संघने सुर साखे जी ॥ एम॰ २० ॥ उच्छव दिन दिन अधिका थाये, सतरह भेद सनात्रो जी। ठाम ठामना दरसन करवा, आवे छोक प्रभातो जी ॥ एम० २१ ॥

#### ॥ दोहा ॥

इक दिन देखे अवधसूं, परिकर पुरनो भंग। जतन करूं प्रतिमा तणों, तीरय अछे अभंग ॥२२॥ सुहणो आपे सेठने, यल अटवी उजाड । महिमा थास्ये अति घणी, प्रतिमां तिहां पहुंचाड ॥२३॥ कुशल

अछे, तुझने मुझने जाणी। संका छोड़ी काम करि, करतो संताणी ॥२४॥

#### ॥ ढाल ॥

ः तम्पाविति प्राणि अस्य अस्य प्राप्ति । प्राणि विति प्राणि अस्य अस्य प्राप्ति अस्य अस्य प्राप्ति अस्य स्थानिक स्थान पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषम जो तरे। परिकरथी परि-याणों करे, एक थल चढ़ी बीजा उतारे ॥२५॥ बार कोस आव्या जे तले, प्रतिमा निव चाले ते तले। गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावूं सही ॥२६॥ आ अटवी किं करूं प्रयाण, कटको कोइ न पहाण । देवल पास जिनेसर तणों, मंडावृं किम गरथें विणो ॥२७॥ बिन श्री संघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां । चिन्तातुर निद्रा लहें, यक्षराज आवीने कहे ॥२८॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां. घणो जाणीजे तिहां । स्वस्तिक सोपारी ने ठाणी, पाहण तणी उल्लटस्ये खाणि ॥२९॥ श्री फल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनी सरसी कुओ । खारा कुआ तणो इह सेनाण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥३०॥ सिलावटो सीरोही वसे, कोड पराभवियो किसमिसे। तिहां थकी तुं इहां आण जे, सत्य वचन माहरो मान जे ॥३१॥ गोठी नो मन थिर थापियो, सिलावट ने सुहणो दियो। रोग गमी ने पूरो आस, पास तणो मंडे आवास ॥३२॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण। गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावट ने गया तेडवा ॥३३॥ आवे सूरमो, जीमे खीर खांड घृत चूरमो । घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥ यंभ यंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रंग मंडप रलियामणो रसे, जोतां मानव नो मन वसे ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समों मांडे आवास । दिवस विचारी इंडो धरचो, ततिखण देवल ऊपर चल्यो ॥३६॥ शुभ लगने शुभ बेला वास, पम्मासण बैठा श्री पास । महिमा मोटी मेरु समान, एकल मिल बिगड़े रहेवान ॥३७॥ बात पुरानी मैं सांभली, तवन मांहि सूधी सांकली। गोठी तणा गोतरिया अछे, यात्रा करीने परने पछे ॥३८॥

#### ॥ दोहा ॥

विधन विदारन यक्ष जिंग, तेहनो सकल स्वरूप । प्रीति करे श्री संघ ने, देखाडे निज रूप ॥३९॥ गिरुओ गौडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करे श्री संघ ने, आशा पूरणहार ॥४०॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावनहार ॥४१॥

#### ॥ ढाल ॥

वरण अढार तणों छहे मोग, विघन निवारे टाले रोग। पिवत्र थई समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥४२॥ निरघन नो घरि घन नो स्त, आपे अपुत्रिया ने पूत। कायर ने सूरापण घरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥४३॥ दो भागी ने दे सो भाग, पगिवहूणा ने आपे पाग। ठाम नहीं तेहने दे ठाम, मन वंछित पूरो अभिराम ॥४४॥ निराधारा ने दे आधार, भवसागर ऊतारे पार। आरितयानी आरत मंग, घरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥४५॥ समरचां सहाय दीजे यक्षराज, तेहना मोटा अछे दिवाज। बुढिहीन ने बुढि प्रकाश, गूंगा ने दे वचन विलास ॥४६॥ दुस्वियाने सुख नो दातार, भय भंजन रंजन अवतार। बंधन तूटे वेडी तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥४७॥

#### ॥ दोहा ॥

श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्ति युद्ध दूरे टले, दुद्धर सिंह सियाल ॥४८॥ चोर तणां भय चूकवे, विष अमृत उडकार । विषधरनो विष ऊतरे, संग्रामें जय जयकार ॥४९॥ रोग शोक दारिद्र दुःख, दोहग दुर पलाय । परमेसर श्री पास नो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

#### ॥ कडखानी चाल ॥

ॐ जितुं ॐ जितुं ॐ जितुं उपसम घरी,ॐ ह्वीं श्रीं श्री पार्श्व अक्षर जगंते। भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते॥ ॐ ५१॥ दुन्दरा रोग सोगा जरा जन्तु ने, ताव एकांतरा दुत्तपंते। गर्भ वन्धन वर्ण सर्प विच्छू विषं, चालिका वालमेवा झखंते॥ ॐ ५२॥

साइणी डाइणी रोहिणी रङ्कणी, फोटका मोटका दोप हुंते। दाढ़ उंदर तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते॥ ॐ ५३॥ धरणेन्द्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटबी अटंते। लक्ष्मि लोहूं मिले, सुजस वेला उले, सयल आस्या फले मन हंसते॥ ॐ ५४॥ अप्ट महा भय हरें कान पीड़ा टले, ऊतरे सृल सीसग भणंते। वदतवर प्रीत सूं प्रीति विमला प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मंते॥ ॐ ५५॥

### पाइर्व स्तवन

अपने घर वेठ के लील करो, निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरो। तुम देश देशान्तर कांई दोड़ा, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥१॥ मन बंछित सगली आस फले, सिर जपर चामर छत्र हुले। आगे चाले झलमल घोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥२॥ भूत प्रेत पिशाच वेताल वली, डाकिणी साकनी जाय टली। छल छिद्रन लागे कांई झोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥३॥ एकान्तरता वसिया दाहू, औपघ विन जाय धई माहू। न दुखे माथो पग गोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥१॥ कण्ठ माल गढ़ गृम्बड़ सगला, त्रण उरमें रोग टले सवला। न करे पीड़ा फुनगल फोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥५॥ न पड़े दुर्मिक्ष दुःकाल कदा, धुम वृष्टि सुमिक्ष सुकाल सदा। ततिखण तुम अधुम करम तोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥६॥ तू जाग तो तीरथ पास पहू, तुझ नाम जो जाने जगत सहू। मुझ जाने भव दुःख थी छोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥७॥ श्री पार्श्व महेवा पुर नगरे, जिन मेट्या प्रमु हरष धरे। गणि समय सुन्दरजी गुण जोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥०॥

### पार्ख जिन स्तवन

श्री संखेसर पास जिनेसर भेटिये, भवना संचित पाप परा सब मेटिये। मन घर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंता एक कोड़ि चतुर विध देवता ॥१॥ ध्यान घरूं प्रभु दूर थकी में ताहरो। जल जिम लीनो मीन, सदा मन माहरो। भव भव तुमहीज देव चरण हूं सिर धरूं, भव-

KINERATE SERVICE THE SERVICE S

सागरथी तार, अरज याहींज करूं ॥२॥ भूख त्रिषा तप सीत, आतम ए ना सहें, तप जप संजम भार, तणी निव निरवहें । पिण जिनवरजीना नाम तणी आसत घणी, एहिज छे आधार, जगत गुरु अम्ह भणी ॥३॥ तुम्ह दरसण विण स्वाम, भवोदिध हूँ फिरचो सिहया दुःख अनेक । न कारजको सरचो । मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजिये, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजिये ॥४॥ यादवपित श्रीकृष्णतणी आरित हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दुरे करी । परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिनचंद सकल रिपु जीपतो ॥५॥

### पार्ख जिन स्तवन

तेरे चरण भेट आज, आनन्द अंग छिह्यां। आनन्द अंग छिह्यां प्रभुजी, दरसण बहु पइयां।। तेरे॰ १॥ अश्वसेनजी के छाछ, तीनछोक प्रतिपाछ। तोडमान कमठ नाग, राज सुक्ल दइयां।। तेरे॰ २॥ चार जात देव कोड, सेवा करें कर जोड़। मधुर मधुर ध्वनि करे, अपछर गुण गइयां।। तेरे॰ ३॥ अखय\* सदा जिनचंद, चाहत शिव सुक्ल कंद। निरख निरख दर्शन करें, आनन्द बहु पइयां।। तेरे॰ ४॥

ં મુખ્ય પુરાવભાગ કેલ્પુ કે મુખ્ય પ્રાથમ લાગ લાગ લાગ પુરાવભાગ પુરાવભાગ મામ મુખ્ય પુરાવભાગ મુખ્ય પ્રાથમ મુખ્ય મુખ્ય

### वीर जिन स्तवन

( जग जीवन जग वाला हो )

वीर जिणंद गुण गावसूं, जिम थाय आतम उद्धार लाल रे। पुण्य योगे प्रमु मुझ मिल्यो, पञ्चमकाल मझार लाल रे॥ वीर॰ १॥ जगदीसर परमातमा, जगबंधु जगनाथ लाल रे। जग उपगारी जग गुरू तुमें, जग रक्षक शिव साथ लाल रे॥ वीर॰ २॥ जिन गुण कण पण कीर्तना, चितामणि सम जाण लाल रे। अवगुण बोले गोशालो वली, जमाली दुःखनी खाण लाल रे॥ वीर॰ ३॥ अनंत पुण्य कर्म योगथी, तीर्थंकर पद धार लाल रे। गोत्र करम उदये प्रमू, ब्राह्मणी कूखे अवतार लाल रे॥

्रा केप्रकार के द्वार क्षम्बार में उत्पन्न में उत्पन्न के ने महार मुंबान के कार के कि

म्य स्तवन रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० दृ० भट्टाग्क श्री पूच्य जी श्री जिन
 अखय स्रिजी महाराजके शिष्य श्री पूच्यजी श्री जिनचन्द्र स्रिजी महाराजका बनाया हुआ है।

वीर॰ ४ ॥ शक स्तवे पुरषोत्तम, तेथीते प्रभु गर्भ उदर छाछ रे । गर्भ नीच इपसद अधम कहे, प्रमु निंदा ए होवे नीच छाछ रे ॥ वीर॰ ५॥ गर्भा-धान कल्याण श्रेय छे, पंचकल्याण मझार लाल रे । न गर्भ नीच अकल्याणक कह्यं, तो किम विरुद्ध उच्चार लाल रे ॥ वीर॰ ६ ॥ देवानंदा कूल थी त्रिशला कूले, गर्म घारण श्रेय रूप लाल रे। इंद्रे ते निश्चय मानिये, न मानूं अकल्याण रूप लाल रे ॥ वीर॰ ७ ॥ सूं मानूं कल्याण फल माता कहूं, होरी तीर्थंकर तुम पूत छाल रे। विश्वकुल नीच ऋष निद्य दाखवी, ताते अकल्याणक भूत लाल रे ॥ वीर॰ ८ ॥ कल्याण ते श्रेय भाषियूं, श्रेयने कल्याण फल जाण लाल रे। नीच अवरणा वादे वीर नूं, मानूंती म्हारूं कल्याण लाल रे ॥ बीर॰ ९ ॥ जे दिन विषकुले आविया, माने अच्छेरूं शुभ कल्याण लाल रे। ते क्षत्रीकुले बीर किम होवे, नीच अशुभ अकल्याण लाल रे ॥ वीर॰ १० ॥ कल्पे ते शुभ समृद्धि कही, अणंत आवर्वं कल्याण लाल रे । ते वित्र सिद्धारथ कुले थय्ं, बलि वित्र मोक्ष कल्याण लाल रे ॥ वीर॰ ११ ॥ च्यवन इन्द्रने जाण्यूं वीर नूं, तो उच्छव किहां मंडाण लाल रें। मोक्षे अंघारूं डाणां गमां, पणमानी जे कल्याण लाल रे ॥ वीर॰ १२ ॥ जिनचन्द्र\* वीर वियोग थी, मोह्थी थाय दुःख शोक लाल रे। देवा नन्दा गौतमने, जिम ले जो कल्याण मोक्ष एक लाल रे ॥ वीर॰ १३॥

### वीर जिन स्तवन

(आज महोच्छव रंग रही री)

जायो सुत त्रिशला दे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ॰ १॥ सजि सिणगार सकल सुर वनिता, अपने अपने मेल चली री। सिद्धारथजी के आंगन, पूरी मोतियन चौक पूरी री ॥ आ॰ २॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री। बाजत ताल मृदंग सुरप-

<sup>#</sup> यह स्तवन जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिन चन्द्रस्रिजी महाराज ने

तनी, बेना बीन वोचंग वली री ॥ आ॰ ३ ॥ इन्द्र हुकुम कर घरणिंद पठायो, सब वसुधा धन धान्य भरी री । कनक रजत मिन पंच वरन के, कुसुम विखेरत गल्चिय गली री ॥ आ॰ ४ ॥ जय जयकार भयो जिनशासन, व्याधि व्यथा सब विपति हरी री । हरखचंद जनम्यो प्रमु मेरो, मनकी आशा सफल फली री ॥ आ॰ ५ ॥

### राग भैरवी

वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी मेहरबान भई रे। आप नहीं आवे बहुधा पठावे, तेरी सूरत कुरबान भई रे।। वीर॰ १॥ शासन-नायक यही अरज है, दीजे दरस, बड़ी देर भई रे। आस दास की पूरण कीजे, चरण सरण छपटाय रही रे॥ वीर॰ २॥

## चौबीस जिन स्तुति

पहिलो श्रीऋषभेसर प्रणमूं, दृजो अजिय जिणेसर देव। संभव अभिनन्दन सुखदाई, सुमित सुमित सुर सारे सेव ॥१॥ पदम प्रभु जिन अधिक पंडूर, श्री सुपासचन्द्र प्रभु स्वामी। सुविधि शीतल श्रेयांस सवाई, नित प्रणमूं वासुपूज्य सिर नामी॥ प॰ २॥ विमल अनन्त सदा वरदाई, धर्म शान्ति कुन्थु अर धिर रागें। मिल्लिनाथ तेजी सुनि सुव्रत, निम नेमि सदा दुखते वारे, ताके नमूं पाये लागें॥ प॰ ३॥ परितख जेहनो दीसे परचो, पुरसा दाणी समरूं पास। वर्डमान चउवीसम जिनवर, जिग जोगे जेहनो जस वास॥ प॰ ४॥ परम पुरुषनां नाम जपंतां, कीधा करम खपे लख कोडि। भाव सिहत उठि परभाते, जिन रंग\* सूरि नमें कर जोडि॥ प॰ ५॥

### सीमंधर जिन स्तवन

श्री सीमंघर साहिबा, वीनतडी अवधार ठाल रे। परम पुरुष परमेसर्रू आतम परम आधार लाल रे॥ श्री॰ १॥ केवलज्ञान दिवाकरूं, भांगे

<sup>\*</sup> यह स्तवन जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्रीजिन विजय रंग सूरिजी महाराज का वनाया हुआ है।

सादि अनन्त लाल रे। माषक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लाल रे॥ श्री॰ २॥ इन्द्र चन्द्र चक्कीसरूं, सुर नर रहे कर जोड लाल रे। पद पङ्कज सेवे सदा अणहुंता इक कोड लाल रे ॥ श्री॰ ३ ॥ चरण कमल पिंजर बसे, मुझ मन हंस नितमेव लाल रे। चरण शरण मोहि आसरो, भव भव देवाधि देव लाल रे ॥ श्री॰ ४ ॥ अधम उधारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे। कहे जिनहर्ष दया करी, दीजो अविचल सुःख लाल रे ॥ श्री॰ ५॥

### सीमन्धर जिन स्तवन

ፈለዚያ የተመመጀመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመር የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመሪያ የተመመመር የተመመመር የተመመር የተመመመሪያ የተመመመር የተመመመር የተመመመር የተመመር የተመመመር የተመመመር የተመመር የተመመር የተመመመር የተመመር የተመመር የተመመመር የተመመመር የተመመር የተመመር የተመመመር የተመመር የተመመር የተመመመር የተመመር የተመመር የተመመመር የተመመመር የተመመር የተመመር የተመመመር የተመመር የ सुणो चन्दाजी, सीमंघर परमातम पासें जावजो । सुझ बीन तड़ी, प्रेमधरीनें इण परे तुम संभलावजो ॥ जे तीन भुवन ना नायक छे, जस चौसठ इन्द्रें पायक छे, ज्ञान दरसण जेहनें क्षायक छे॥ सुणो॰ १॥ जेनी कञ्चनवर्णी काया छे, जस घोरी लंछन पाया छे। पुण्डरीक नगरी नो राया छे ॥ सुणो॰ २ ॥ वार परषदा मां हे विराजे छे, जस चौतीस अति-शय छाजे थे । गुण पैतीस वाणियें गाजे छे ॥ सुणो॰ ३ ॥ भवि जननं ते पिंड बोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे। रूप देखि मविजन मोहें छे॥ सुणो॰ ४॥ तुम सेवा करवा रिसयो छूं, पण भरत मां दूरे वसिओ छूं। महा मोहराय में फिसयो छूं॥ सुणो॰ ५ ॥ पण साहिब चित्त मा धरियो छे, तुम आण खड़ग कर प्रहियो छे। तब कांड्क मुझ थी डरियो छे ॥ सुणो॰ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वाघे मुझ मन अति नूरो ॥ सुणो॰ ७ ॥

### सिद्धाचल स्तवन

सिन्धाचल गिरि भेन्छा रे, धन्य भाग्य हमारा । ए गिरिवर नी महिमा मोटी, कहतां न आवे पारा । रायण रूंख समोसरया स्वामी, पूरव नवाणूं वारा रे ॥ धन्य सिद्धा॰ १ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्य सूं पूजो भावें, समकित मूल आधारा रे ॥ धन्य सिद्धा॰ २ ॥ दूर देशान्तर थी हूं आयो, श्रवण सुणी गुण तोरा । पतित 

उधारण बिरुध तुमारो, ए तीरथ जग सारा रे ॥ धन्य सिद्धा॰ ३ ॥ भाव भगति सूं प्रभु गुण गावे, अपना जनम सुधारा । यात्रा करी भविजन शुमभावें, नरक तियेच गति वारा रे ॥ सिद्धा धन्य॰ ४॥ संवत अठार त्रयासी आषाढ़े, विद आठम भीमवारा । प्रभुजी के चरण प्रताप संघ में 'क्षमारतन' प्रभु प्यारा रे ॥ धन्य० सिद्धा० ५ ॥ अष्टापद् गिरि स्तवनम्

मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशिदीस जी। चत्तारि अह दस दोय वंदियाजी, चिहुं दिशि जिन चौवीसजी ॥ म॰ १॥ योजन योजन अन्तरेजी,पावडशाला आठजी । आठ योजन ऊंचो देहरोजी, दुःख दोहग जाय नाठजी ॥ म॰ २ ॥ भरतें भराव्या भलां देहराजी, सोमा यारां र्थूमजी। आपे मूरत सेवा करें जी जाण जोई ने ऊभजी॥ म॰ ३॥ गौतम स्वामि तिहां चढ्याजी, बली भागीरथ गंगजी। गोत्र तीर्थंकर वांघियाजी, रावण नाटक रंगजी ॥ म॰ ४॥ देव न दीघी मुझने पाखंडी जी, आवूं केम हजूरजी । समय सुन्दर कहे वन्दना जी, प्रहर्ज गमते सूर जी॥ म० ५॥

# पर्यूषण स्तवन

करलो करलो रे थे भविजन प्राणी शिव सुख वर लो ॥ पर्व पजूसण करलो ॥ सब सुरवर मिल निज निज भक्तें, द्वीप नंदीक्वर जावे रे । आठ दिवस अद्वाई महोत्सव कर सुख पावे रे ॥ पजूसण॰ १॥ तिम भव प्राणी आतम शक्ते, धार्मिक कार्य आराधो रे । जिनवरजीकी पूजा करके, शिव मुख साघो रें॥ पज्रसण॰ २॥ विविध प्रकारे पूजा रचावो, समिकत निर्मह करलो रे । आंगी भावना मन सुध करके, भवजल तरलो रे ॥ पज्० ३ आठ दिवस अटाई तपस्या, करके काज सुधारो रे। जैन धर्म की महिम करके मान बधारो रे ॥ पजूसण० ४ ॥ हाँची घोड़ा और पालखी, रय ह नेयारी करावो रे । बस्त्रासृषण सज कर, भवियण मंगल गावो रे ॥ प॰ ५ वाजे गाजे सब मिल गोरी, गुरुके पासे जावो रे। कल्पमूत्रको लेकर म 

हाथ धरायो रे ॥ पज्रसण ६ ॥ घर ले जावो रात्री जगावो, ज्ञान की भक्ति करावो रे । सर्व शहर में फिर कर, गुरुके पासे लावो रे ॥ प० ७ ॥ कल्पसूत्र की पूजा करके, वाचना नव को सुन ले रे । मधुरी वाणी गुरु मुख प्राणी, अमृत पी लो रे ॥ पज्रसण ८ ॥ जिन चिरत्र ने और पटावली, समाचारी भावे रे । तीन अधिकार आदि से सुने, वो मुक्ति में जावे रे ॥ पज्रसण ९ ॥ अद्वाई उपवास करो भिव, बड़े कल्प को बेलो रे । संवत्सरी को तेलो करके, वारेसे झेलो रे ॥ पज्रसण १० ॥ मूल पाठ को एक चित सुणने, चैत्यप्रवाडी में जावो रे । मोहन मुद्रा जिनवर निरखी, अति हरखावो रे ॥ पज्रसण ११ ॥ अभय अमारी पटह बजावो, दान सुपात्रे देवो रे । अनुकम्पा कर जीवों ऊपर प्रेम जगावो रे ॥ प० १२ ॥ नव विध ब्रह्म गुप्ति को धारो, भावना सुध मन भावो रे । दोय टंक पिक्कमण करीने, पाप भगावो रे ॥ पज्रसण १३ ॥ संवत्सरी पिक्कमणों करिने, जीव चौरासी खमावो रे । अपराधी को माफी देकर, अति हरखावो रे ॥ पज्रसण १४ ॥ तिवरी गाम चौमासे रहकर, पर्व पज्रसण ध्याया रे । संवत् उन्नीसे अस्ती वर्षे, पूच्य हिर गुण गाया रे ॥ पज्रसण १५ ॥

### शान्ति जिन स्तवन

शान्ति दान्ति कान्ति सोहे, शान्ति सुखकार रे। विश्वसेन तात मात, अचिरा मंडार रे॥ छंछन कुरंग रंग, सोवन सुचार रे॥ शा॰ १॥ वंश है इक्ष्वाकु हस्ते, नाग अवतार रे। पंचमो चकी सही, सोछमे सुचार रे॥ शा॰ २॥ भविक तरण तरि, अरि अपहार रे। श्री जिन छाम ध्यायो, पायो भव पार रे॥ शा॰ ३॥

#### ॥ पुनः राग ॥

निरंजन साइयां रे, सांइ मेरा टुक सा मुजरा लेत ॥ निरं० ॥ तुम तीरथ के देवता जी, हम केशर दा बोल । कनक कचोली हाथ में जी, पूजा करूं रंग रोल ॥ निरं० १ ॥ तुम अम्बर दा मेहला प्रमु, हम गिरिवर दा मोर । रिमझिम रिमझिम मेहला वरसे, ठम ठम नाचे मोर ॥ नि० २ ॥ हम गुण काली कोयली जी, प्रभु गुण आंबा मोर । मांजर के परताप से कांइ, करवा लागी सोर ॥ निरं॰ ३ ॥ तुम हो मोतियन की लड़ी रे, हम गुण ऊंडा भोर । रूपचन्द दिलदार मया कर, तुम बिन, देव न और ॥ निरं॰ ४ ॥

#### सरस राग

#### ॥ राग खम्बाच ॥

घड़ि घड़ि पल पल छिन छिन निश्चित्व प्रभु को समरण कर ले रे॥ घ॰॥ प्रभु समरण से पाप कटत हैं, अशुभ करम सब हरले रे॥ घ॰ १॥ मन बच काय लगी चरणन नित, ज्ञान हिये में घर ले रे॥ घ॰ २॥ दौलतराम प्रभू गुण गावे, मन बंछित फल वरले रे ॥घ॰॥

#### राग मल्हार

चहुं ओर बदरिया वरसे, अब घरर घरर घन गरजे ॥ नेम प्रभू गिरनार सिधारे, देखन कूं जिया तरसे ॥ चहुं॰ १ ॥ दादुर मोर शोर सुन श्रवणें, नयन भए घन जरसे ॥ चहुं॰ २ ॥ ढूंढ़त ढूंढ़ सकल वन वन में, कबहुं पिया नहिं दरसे ॥ चहुं॰ ३ ॥ सो दिन सफल जानेंगे सजनी, दिवस घड़ी जिन फरसे ॥ चहुं॰ ४ ॥

### राग मिंभोटी

यह अरजी मोरी सिहयां, मोहि तार छो गह बहियां। मैं नांहि जानूं सिहयां, यह अरजी मोरी सिहयां ॥१॥ मैं तारण तरण सुण्यो छे, मैं यातें शरणो गिहयां। इन तें उवार छिहयां, ये अरजी मोरी सिहयां॥ मोहि॰ २॥ इन करमन के बस होय के, मैं भटक्यो चहुं गित मिहयां। मैं नाहिं जानूं सिहयां, यह अरजी मोरी सिहयां॥ मोहि॰ ३॥ हित करके दास निहारे, कर जोडि पड़ी हूं पह्यां। शिव देत क्यों ना सिहयां मोहि तार छो गह बिहयां॥ ये॰ ४॥

### राग अडाणो

मोतियन की माला जिन गल सोहे । मस्तक मुकुट सोहे मन मोहन,

कुण्डल लागत वाला ॥ जिन॰ १॥ भजो रे भजो तुम लोक सिंहर के, नहीं भजे सो काला। माणक पर प्रभु महिर करो तो अपना बिरुद संभाला ॥ जिन गल॰ २॥

### राग सोरठ

म्हानूं प्यारो लागे छे जी थारो उपदेश। ज्ञान जगावण अवगुण मेटन, संशय रहे न लेस ॥ म्हानूं १ ॥ मोह तिमिर दुःख दूर करन कूं, भगत बढ़ावत हेत । चन्द फते नित येही चाहे, समिकत सुख कूं खेत ॥ म्हान् र॥

### राग मल्हार

वरिषत वचन झरी हो सुगुरु मेरो । श्री श्रुतज्ञान गगनतें उमटी, ज्ञान घटा गहरी ॥ हो सुगुरु॰ १ ॥ स्याद्वाद नय विजुली चमकत, देखत कुमति डरी । अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी॥ हो सुगुरु॰ २ ॥ श्रद्धा नदी चढ़ी अति जोरे, शुद्ध सुभाव घरी । सुभर भरची सुमता रस सागर, समिकत भूमि हरी॥ हो सुगुरू॰ ३॥ प्रगटे पुण्य अंकूरे चहुं दिस, पाप जवास जरी । चातक मोर पपद्या भविजन, बोलत भक्ति भरी ॥ हो सुगुरु॰ ४ ॥ द्या दान व्रत संजम खेती, भविक किसान करी। हरखचन्द सुर नर शिव सुख की, सहज स्वभाव करी॥ हो सुगुरु० ॥ ५ ॥

## राग काफी

बाबा केशरिया विराजे धुलेवा मैं डारूं गुलाल मुद्दी भरके, मैं डारूं गुलाल झोली भरके। चोवा चावा चन्दन और अरघ जल, केशरकी गागर भरके ॥ बा॰ १॥ मस्तक मुकुट और जुग कुण्डल, आंगी जड़ाऊ झला झलके ॥ बा॰ २ ॥ बांहे बाजू वन्ध वहिरख विराजे, फूलन के गजरे सरके ॥ बा॰ ३ ॥ नामिराया मरुदेवी को नन्दन, रिमयें भवि आदेशर से ॥ बा॰ ४॥ आदि खान है दास तुमारो, तार लियो अपनी करके ॥ बा॰ ५ ॥

### राग खम्भायची

राज री वधाई बाजे छे, महाराज री वधाई बाजे छे। सरणाइ सिरे नौबत बाजे, घन ज्यूं गाजे छे॥ महा॰ १॥ इन्द्राणी मिल मंगल गावे, मोतियन चौक पुरावे छे॥ महा॰ २॥ सेवक प्रभुजी से अरज करे छे, चरणारी सेवा प्यारी लागे छे॥ महा॰ ३॥

### होली स्तवनम्

#### (राग वसन्त)

जय बोलो रे पास जिणेसर की ॥ ज० ॥ मस्तक मुकट सोहे मन-मोहन, अंगिया सोहे केशर की ॥ ज० १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंडित तन की, स्थाम घटा जैसी जलधर की ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अद्भुत ज्ञानी, करणा कीधी विषधर की ॥ ज० २ ॥ कमठ उडाल वाय ज्यूं बादल, जीत करी अपणे घर की ॥ ज० २ ॥ मात वामा उद्देर जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसर की ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करम दल सबल खपाये, श्रेणि चळ्या जे शिवपुर की ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचन्द्र मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतर की ॥ ज० ७ ॥

### वसन्त होली

मधुवनमें जाय मची होरी ॥ म० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उड़ावो, सुमता केशर रङ्ग घोली ॥ म० १ ॥ अमृत रूप धरम जिनवर को, शुद्ध क्षमा कहे करजोड़ी ॥ म० २ ॥

#### (वसन्त होली)

इक सुणले नाथ अरज मेरी ॥ इ० ॥ इह संसार गहर तरु सिंधू, भंवर पड़त जिहां भव फेरी ॥ इ० १ ॥ कोधादिक बहु मगर मच्छ हैं, ग्रह जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥ ऐसे जलिंघ से पार करो तो, तारण तरण विरुद्द तेरी ॥ इ० ३ ॥ धरम जिनेसर जग परमेसर, दूर करो दुखकी बेरी ॥ इ० ४ ॥ परम क्षमा गुण लायक दायक, अनुपम कीरत जग तेरी ॥ इ० ५ ॥

### होरी

हां हां रे यमुना तट धूम मचाई है री माई, नेम सांवरो खेले होरी ॥ यमु॰ ॥ दस दसाई ठाडे हैं घेरे, नीकी बनी है सुजन टोरी । नेम प्रमु को ब्याह मनावत, बत्तीस सहस संग ित्ये गोरी ॥१॥ भर पिचकारी नेम मुख पर डारत, श्टुङ्गी छरत केशर घोरी । अबीर गुलाल को मंडप छायो, भाल रचत चन्दन घोरी ॥ यमु॰ २ ॥ होरी वसन्त धमाल सुर गावत, करत सेव यों झकझोरी । या उप्रसेन दुलारी विवाही, यों ही कहे भामां भोरी ॥ यमु॰ ३ ॥ मुसकाने प्रमु से खेल देखके, जग जंजाल दियो छोरी । अमृत पद दायक दम्पति, रङ्ग नमें दोल करजोरी ॥ यमु॰ ४ ॥

### स्तवन होरी

भर पिचकारी छोडूं तोरे चरन, तोरे चरन ॥ भर० ॥ अनन्त-काल मोहे भटकत बीते, कुमित कुटिलता भागी हरन ॥ भर० १ ॥ ज्ञान गुलाल अबीर संयम की, निज आतम ने घारी सरन ॥ भर० २ ॥ शील हजारा सत का जल भर, सुमित केशर से करो न्हवन ॥ भर० ३ ॥ कु गुरु कुदेव कुधमें को त्यागो, शुद्ध समिकत का राखो जतन ॥ भर० ४ ॥ संवत् उन्नीसौ छयानवे में, फागुन सुदी तिथि चौदस बनन ॥ भर० ५ ॥ लक्ष्मणपुर सोंघि टोले में हैं गे, पारस प्रभू की हुई लगन ॥ भर० ६ ॥ शिव नगरी में आप विराजें, सूरजि को रख लो अपनी शरन ॥ भर० ७ ॥

### स्तवन होरी

मेरे घट की गगरिया रङ्ग से भरी, शिवपुर को बात पूर्छू कव की

<sup>#</sup> यह स्तवन कं यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्रीजिन विजय रंग सृरिजी महाराज का वनाया हुआ है।

<sup>ा</sup> यह स्तवन रंग विजय खरतर गच्छीय र्ज० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पृष्यजी श्री जिन रत्न सूरिजी महाराज के शिष्य जेन गुरु पं० प्र० यति सूर्व्यमहजी ने सं० १६६६ फागुन सुदी १४ को वनाया है।

खरी ॥ मेरे॰ १ ॥ परम जोत प्रभु सिद्ध शिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मेरे॰ २ ॥ मोहन रंग भरबो रंग शिवपुर, अजर अमर पद सुक्ख करी ॥ मेरे० ३ ॥

### होरी

सांवरो सुखदाई, जाकी छवि वरणी न जाई ॥ सांव० ॥ श्री अश्वसेन वामा नन्दन की, कीरत त्रिभवन छाई । सम्मेत शिखरगिरि मंडन प्रभुको, देख दरस हरखाई हृदय मेरो अति हुलसाई ॥ सांव॰ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनन्द बधाई । तीन मुवन को नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुण्याई सफल मेरो जनम कहाई ॥ सांव॰ २ ॥ प्रमु के दरस सरस बिन पाये, भव भव भटक्यो में भाई । अब प्रभु चरण रारण चित चाहत, बाल कहे गुण गाई ॥ सांव॰ ३॥

#### स्तवन

العام المقاملية في المساومة والمقاملة والمعاملة والمعامل

रंग मच्यो जिनद्वार रे, चालो खेलिये होरी। पास प्रभू दरबार रे, फागुन के दिन चार रे ॥ कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा॰ १ ॥ कृष्णागर की धूप घटत है, परिमल महके अपार रे ॥ चा॰ २ ॥ ठाठ गुठाठ अबीर उड़ावत, पासजी के दरबार रे ॥ चा॰ ३ ॥ भर पिचकारी गुलाब की छिड़को, वामा देवी कुमार रे ॥ चा॰ ४॥ ताल मृदङ्ग वीण ढफ बाजे, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा॰ ५ ॥ सब सिखयन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा॰ ६ ॥ रहा सागर प्रभु भावना भावे, मुख बोले जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

#### लावनो

आगडदृं आगडदृं वाजे चौघडा, सवाई डंका साहेव का । छननन छननन आवाज होती, महल बनाया गगनों का ॥ कल्याण पारसनाथ नामका, नित नित वाजे चौघड़ा । तीन लोकमें सचा साहिव, पार्खनाथ अवतार वड़ा ॥१॥ वनारसी नगरीमें तेरा जनम हे, माता वामा के नन्दा ।

अश्वसेन के कुछ में शोभे जैसा सरद पूनम चन्दा ॥ स्वर्गलोक में हुवा आनन्दा, इन्द्राणी मंगल गावे । तेतीस कोड देवता मिलकर, उच्छव करणे कूं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा । चौसठ इन्द्र अरज करंता, चन्द सूरज करता सेवा ॥ केइ सुर नर साहेब के आगे, अरज करंता खड़ा खड़ा । जिनके सरूप को पार न पावे, जिनका गुण है सबसे बड़ा ॥३॥ दूर देस से आया जोगी, बड़े जोर तपरया करता। नीचे लगाता ज्वाला जोगी, बड़े बड़े झोंके खाता ॥ बारह बरस की उमर प्रसू की, छोटेपन में बहुत कला। बरोबरी के लिये सोवती, तपसी कृं देखन चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसे, ऐसी तपरया क्यूं करता । ओ जोगी ! तेरे बड़े लकड़े में, बड़ा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगी सूं कहता, तो भी जोगी नहीं सुनता। छकड़े दिये फेंक जंगल में, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या किया वे जोगी तमने वहा नाग को जला दिया । दिया सार नवकार नाग कूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ बड़ी उमेद से आया साहिब, सम्बत्सरी का दोन दिया । मात पिता की आज्ञा लेकर, महाराज ने योग लिया ॥ ६ ॥ राज छोड़के चले जंगल में जुगती से काउसग्ग किया । बड़े धीर गम्भीर प्रभूने, तीन लोक में नाम किया ॥ उष्णकाल की बड़ी धूप में, निरंजन निराकार खड़ा । कमठासुर ने किया कडाका, नभ मण्डल बादल चढ़ा ॥७॥ उसी दिनमें कमठाप्तर ने, पिछला दावा जगवाया । मेघ माली की सेना लेकर, जल कूं जलदी बुलवाया । बड़ा किया घनघोर जोरसे, पवन चलाया मतवाला । कडड कडडकर हुआ कडाका, बिजलीका उजवाला ॥८॥ मूसलघार मेघ बरसता, गगन गाजता चौताला । सात खूंट की बड़ी झड़ी में, प्रभू खड़ा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी, नाथ निरंजन धीर बड़ा । पराजय नहिं होय जिनूंका, ऐसा प्रभु का ध्यान चढ़ा ॥ ९ ॥ संकट से सिंहासन डोला, हुवा घण्टका आवाजा । अवधि ज्ञान से इन्द्रें देखा, घाओ घाओ घरणी राजा ॥ घरणी धर जलदी से आया, पदमावती कूं संग लिया । पदमावती ने लिया शीश

पर. शेषनाग ने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोड उपाय किये कुछ भी काम नहीं चलता । तरणे वाला साहिब उनकुं, छलनेवाला क्या करता ॥ जीते श्री जिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड़ खड़ा । घरणी-धर साहिबके आगे, अरजी करता खड़ा खड़ा ॥ ११ ॥ केंबल पाय शिव पद कूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला । लगी ज्योतमें ज्योति दीप की, तपे तेजका अजुवाला । वीस नगर पार्वनाथ का, देवल बनाया तेताला ॥ बड़े देवल में इन्द्र ही सोहे, घण्ट बाजता चौताला ॥ १२ ॥ बड़ी जुगतसे सिंहासण कर. कोट बनाया देवल का । जगह जगह पर शिखर चढ़ाया, द्रवाजा शुभ केवलका ॥ भामण्डल के आगे शोभता, मूल गम्भारा आरस का ॥ १३ ॥ पीछे पचीस देरियां सोमित, सिरे काम सिंहासण का । मूळ नायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रभु पारस का । चौमुख की चतुराई बनी है, वह काम है सारस का ॥ अढारेसे पेंसठ सवाई, मुहुर्च फागण मासे मला। सुदी तीज कूं तखते बैठें जगह जगह पर नाम चला ॥१॥ देश देशके संघ बहु मिलकर, तेरे दर्शन कूं आया। जगतगुरू जिन-राज जगतमें, बड़ी तेरी अक्कल माया। धर्मचन्द जोड़ता सवाईने बड़ा साहमी वात्सल किया। सकल संघकी आज्ञा लेकर, बड़ा शिर निशान दिया ॥१५॥ करमचन्दने देवचन्दने खेमचन्दने खूब किया। पारसनाथ कूं तखत बैठाकर जगह जगह पर नाम किया॥ की चिँ विजय गुरुराज, कुं प्रणमूं पाय गुरूका राज बड़ा गुलाबचन्द साहेंबके आगे, जिन सासनका काम बड़ा ॥१६॥ तेजा गाता चंग रंगमें, ज्ञान ध्यान में खड़ा खड़ा । हाथ जोड़के अरजी करता, पारसनाथजी तूं ही बड़ा ॥ बड़ा काम तेरे है साहिब, मुखसे नहिं कहणे आता । शिवरमणी कूंबरी है जिनजी भविजन कूं सुखके दाता ॥१७॥

### आदि जिनेसर पारणो

आदि जिनेसर कियो पारनो, आ रस सेलडी ॥ आ॰ ॥ घडा एक सौ आठ सेलडी, रस भरिया छे नीका । उलट भाव श्रेयांस वहिरावे, मांड 品,在是一个人,这个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们们是一个人,他们们们是一个人,他们们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们也可以不是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以让我们的一个人,他们也可以 दिवी आबूकारे ॥ आ॰ १ ॥ देव दुंदुभी बाज रही है, सोनइयारी बरखा । बारे मास सो कियो पारनो, गई भूख सब तिरखा रे॥ आ० २॥ ऋदि सिद्धि कारज मनोकामना, घर घर मंगळाचार । दुनिया हरख बधामणा सिरे, आखा तीज तिवहार रे ॥ आ० ३ ॥ श्री रात्रुंजा सिद्धक्षेत्र है, मोटो कहिये धाम । श्री संघ का मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वाम रे ॥ आ॰ ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो. राखो मेरी लाज। बे करजोड़ी नानूं कहता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ आ॰ ५ ॥

### ऋषभ जिनेसर पारणो

हथनापुर में ऋषभ जिनेसर किया पारनी । जन्म लियो प्रभु नगर विनीता, नाभी राजा नंद । मरुदेवी माताकी कृंखे, आयो आनंद कंद ॥१॥ इन्द्रादिक मेरू पर्वत पर, इन्द्राणी मिल संग । अहाई महोत्सव करने के हित, लाए गुण भगवंत ॥२॥ ले दीक्षा प्रमु विचरण लागे, प्राप्त कियो शुभ ज्ञान । विचरत विचरत हथनापुर में, आये दया निघान ॥३॥ दर्शन से श्रेयांस कुमर के, हिय में उपजा ज्ञान । शीश नमाय प्रभू को दीना, शुद्ध भाव से दान ॥४॥ इक्षू रस से किया पारणा, घड़ा एक सौ आठ। पुरवासी सब मुदित हुए, तब निरख करम का नाठ ॥५॥ देव दुन्दुभी बाजन लागी, सोनइयां की वरषा। आखा तीज परव का दिन है, सूरज\* का मन हरषा ॥६॥

## नव पदजी की लावणी

जगत में नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले भारी । प्रथम पद तीर्थ-पती राजे, दोष अष्टादशक्ं त्याजे । आठ प्रांति हारज छाजे, जगत प्रमु गुण बारे साजे ॥ अष्ट कर्म दल जीतके, सकल सिद्धि ते थाय । सिद्ध अनंत भजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रकट भयो निज खरूप भारी ॥ जगत॰ १ ॥ सूरि पद में गौतम केशी, ओपमा चंद सूरज जैसी ।

अब स्तवन रंग विजय खरत्तरगच्छीय श्री पूज्यजी श्री जिन रह सृरिजी महाराज के शिष्य जैन गुरु पंठ प्रठ यति सूख्ये महजी ने बनाया है।

उवारचो राजा परदेशी, एक भव मांहे शिव छेशी ॥ चौथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय । सन्व साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वसाण्यों वीर जिनन्द भारी ॥ जगत॰ २ ॥ द्रच्य षट् की श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावें । बिना यह ज्ञान नहीं किरिया, जैन दर्शन सें सब तिरिया । ज्ञान पदारथ सातमें, पद में आतमराम । रमतारम्य अध्यातमें, निज पद साधें काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत॰ ३ ॥ जोग की महिमा बहु जाणी, चकधर छोड़ी सब राणी । यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे । करम निकाचित काटवा, तप कुठार कर ल्याय । क्षमा युत नवमां पद धरें, कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद मुखकारी ॥ जगत॰ ४ ॥ श्री सिद्ध चक्र भजो भाई, आचामल तप विधि सें थाई । पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, भाव श्रीपाल तणे करजो । संवत उगणीसे सतरा समें, जयपुर श्रीजिन पाश । चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुझ आश ॥ बाल कहे नवपद छवि प्यारी ॥ जगत॰ ५ ॥

### पञ्चद्रा तिथि स्तवन

सुगुण सनेही साजन श्री सीमंघर खाम, अरज सुणो एक जग गुरु मुझ आशा विसराम । पूरव विदेहें विजय मली पुक्खलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी घन ते नयरी गाम ॥१॥ घन ते लोक सुणें जे योजन गामिनी वान, घन ते महियल चरण घरे जिहां जिनवर भान । घन ते मविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदन कमल निरखी नित्य माने उत्सव अंग ॥२॥ सुगुरु सुखें प्रभु सुजस तुम्हीणों सांभल कान, मिलवाने हुलसे मन माहरूं घरूं एक ध्यान । भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोड़, पण प्रभु लग पहुंची जे तेह नहीं पग दोड़ ॥३॥ आडा डूंगर अति घणा विच वहे निदयां पूर, किम मुझ थी अवरावे प्रभुजी एटली दूर । आंखड़ली उलझो करे जोयवा मुख जिनराज, पांखडली पाई नहीं ते विन किम सरे काज ॥४॥ वाटडली वहेतो कोई न मिले सेंगूं साथ, कागलियो लिख आपूं हूं जिम तेहने हाथ । जाणूं शिशाहर साथे कहुं संदेशो जेह, पण

अलगो यई ऊपरि वाडे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रभुजी, तुम थी यहीं अवाय, तो इण भरतना वासी भविजन पावन थाय। साहिब नी तो सुनजर सघले सरखी होय, पन पोतानी प्राप्ति सारूं फल प्रति जोय ॥६॥ THE REPORT OF THE PARTY OF THE अलगो छूं पण माहरे तुमसूं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियड़े खिण खिण चित्त । हूं छूं सेवक तूं छे माहरो आतमराम, न हिय विसारूं जीवं ज्यां लिंग ताहरू नाम ॥७॥ साचे दिल थी मुझ सूं घर जो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु कर जो मोपरि महिर अछेह । दूसम काल तणो दुःख टालो दीनद्याल, पालो विरुद् संभालो निज सेवक सूं कृपाल ॥८॥ आराविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण मोटानी महिर छतां नवि थाय निराश । केई वसे प्रभु पासे केई वसे छे दूर, राज महिर नी रीतें सकल ने जाणें हजूर ॥९॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामिसुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे आत्म उमंग । सहिजें एक पलक तो थाये प्रभु तुझ संग, लाम उदय जिनचन्द्र लहे नित प्रेम अभंग ॥१०

### द्वितीया का स्तवन

सकल संसार अवतार ए हूं गणूं, सामि सीमंघरा तुम्ह भगते भणूं। मेटवा पाय कमल भाव हियडे घणों, करिय सुपसाय जे वीनवूं ते सुणूं ॥१॥ तुम्ह सूं कूड अरिहन्त सूं राखिये, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोिं करि भाखिये। अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवण घणी ॥२॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चटको चढ़े लोभ वयरी नड़े । वयण रस नयण रस काम रस रसियो, तेम अरिहन्त तूं हियड़े नवी वसियो ॥३॥ दिवस ने राति हियड़े अनेरो धरूं मूढ़ मन रीझवा बलिय माया करूं। तूं ही अरिहन्त जाणे जिस्यो आचरूं तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ श॥ कर्म्मवसि सुक्खने दुःख जेहूं सहूं, मन तणी बात अरिहंत किणने कहूं । करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंघरा ॥५॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुनूं, धर्म ने कराय प्रभु पाप पोते घनूं। एक अरिहंत तू देव बीजो नहीं,

एह आधार जग जाण जो अहा सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहं. हस्यो बोलो रम्यो रंग रातो बहुं । जयो जयो जग गुरु जीव जीवन घरा, तुझ समोवड नहीं अवर वाव्हे सरा ॥७॥ अमिय सम वाणि जाणें सदा सांभलुं, बार परषदा मांहि आवी मिलूं। चित्त जाणुं सदा सामि पाय जे लगूं , किम करूं ठाम पुंडरगिरी वेगलूं ॥८॥ भोलिङा भगति तुं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टि गोचर हुस्ये। जेहने नामे मन वयण तन उछसे, दूर थी ढुकडा जेम हियड़े वसे ॥९॥ मला भलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें। ध्यान करतां सुपन मांहिं आवी मिले, देखिये नयण तो चित्त आरति टले ॥१०॥ सामि सोहामणा नाम मण गह गहे, तेहस्ं नेहजे बात तुम्हरी कहे । तुम्ह पद भेटवा अति घणो टलवलूं , पंख जो होय तो सहिय आवी मिलूं ॥११॥ मेरु गिरि छेखणी आभ कागल करूं, क्षीर सागर तणा दूध खड़िया भरूं। तुम्ह मिलवा तणा सामि संदेशड़ा, इन्द्र पण लखिय न सके अछे एवड़ा ॥१२॥ आएणे रंग भरि बात मुख जे टली, ऊपजे सामि न कहाय मुख तेतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाड़ ने कोड़ प्रभु पूर सबि माहरा ॥१३॥ पुच्च भवि मोह वश नेह हुवे जेहने. समरिये एणि संसार नित तेहने । मेह नो मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चिच मोरे गमे ॥१४॥ खरो अरिहंत न्ं ध्यान हियड़े वस्यं, बापडूं पाप हिव रहिय करशे किस्यूं। ठाम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततिखण सर्प नी जाति न सके रही ॥१५॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंघरा तुम्ह पय अणुसरी । शुद्ध चारित्र कहिये प्रभू पालसूं, दुःख भंडार संसार मय टालसूं ॥१६॥ तुम्ह हूं दास हूं तुम्ह सेवक सही, एह में बात अरिहंत आगल कही। एवड़ी म्हारी भक्ति जाणी करी, आप जो बाप जी सार केवल सही ॥१७॥ एम ऋदि वृद्धि समृद्धि कारण, दुरित बारण मुख करो । उवझाय वर श्री भक्ति लामें, युण्यो श्री सीमंधरो ॥ जय जयो जग गुरु जीव जीवन, करी सामि मया घणी । करजोड़ि विल विल वीनवूं, प्रभु पूरो आशा मन तणी ॥१८॥

### पंचमी वृद्ध स्तवन

प्रणमूं श्री गुरु पाय, निर्मल ज्ञान उपाय। पांचिम तप भणुं ए, जनम सफल गिणुं ए॥१॥ चउवीसमो जिनचन्द, केवल ज्ञान दिनन्द। त्रिगहे गह गह्यो ए, भवियण ने कह्यो ए॥२॥ ज्ञान बहुं संसार, ज्ञान मुगति दातार। ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो सर्द ह्यो ए॥३॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश। ज्ञान बिना पशु ए, नर जाने किसूं ए॥॥ अधिक आराधक जान, भगवित सूत्र प्रमान। ज्ञानी सर्व तु ए, किरिया देशतु ए॥५॥ ज्ञानी श्वासोश्वास, करम करे जो नाश। नारकी ने सही ए, कोड वरस कहि ए॥६॥ ज्ञान तनो अधिकार, बोल्यां सूत्र मझार। किरिया छे सिह ए, पण पाछें किह ए॥७॥ किरिया सिहत जो ज्ञान, हुए तो अति परधान। सोना नें सूरो ए, शंख दूधें भरचो ए॥८॥ महा निषीध मझार, पांचिम अक्षर सार। भगवंत भाष्वियो ए, गणधर साखियो ए॥९॥

#### ॥ ढाल ॥

पांचिम तप विधि सांभलों, जिम पामो भव पारों रें। श्री अरिहंत इम उपिद्से भिवयन ने हितकारों रें॥ पां० १०॥ मगसर माह फागुन भला, जेठ आषाढ़ वैशाखों रें। इण षट् मासें लीजिये शुभ दिन सद्गुरु साखों रें॥पां० ११॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रें। पोथी पूजों ज्ञाननी, सगति हुवे तो नन्दी रें॥पां० १२॥ बे करजोड़ी भाव सूं, गुरुमुख करों उपवासों रें। पांचिम पिडक्कमणों करों, पढ़ों पंडित गुरु पासों रें॥ पां० १३॥ जिन दिन पांचिम तप करों, तिन दिन आरंभ टालों रें। पांचिम स्तवन थुई कहों, ब्रह्मचरिज पिणपालों रें॥ पां० १४॥ पांच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी रें। पांच वरस पांच मासनी, पांचिम करों शुभ दिन्द रें॥ पां० १५॥

#### ॥ ढाल ॥

हिव भवियन रे पांचिम ऊजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन

खरचो घणो। ए अवसर रे आवतां विल दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण, धर्म काज किहां वली । पांचमी दिन गुरु पास आबी. कीजिये काउसग्ग रही ॥ त्रण ज्ञान दर-सन चरण टीकी, देइ पुस्तक पूजिये । थापना पहिली पूज केशर, सुगुरु सेवा कीजिये ॥१६॥ सिद्धान्तनि रे पांच परति विटांगणा, पांच पूठारे मख-मल सूत्र प्रमुख तणां । पांच डोरा रे लेखण पांच मजीसणा. वासकूपा रे कांबी वारू वरतणां ॥ वरतणां वारू विखय कमली, पांच झिलमिल अति भली । स्थापना चारज पांच ठवणी. मुहपत्ति पड् पाटली ॥ पट सूत्र पाटी पंच कोथल, पंच नवकर वालियां। इन परे श्रावक करे पांचिम, उजमणें उजवालियां ॥१७॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिये, घर सारू रे दान बली तिहां दीजिये । प्रतिमानी रे आगल ढोवणां ढोइये, पूजानों रे, जे जे उपगरण जोइये ॥ जोइये उपगरण देव पूजा काज कलश शृङ्कार ए, आरती मङ्गल थाल दीवो घूपदाणूं सार ए। घन सार केशर अगर स्रखंड अंगलूहणूं दीस ए, पंच पंच संघली वस्त ढोवो सगति सूं पचवीस ए ॥१८॥ पांचमीता रे सहमी सर्व जिमाड़िये, रात्रि जोगं रे गीत रसाछ गवाडिये। इम करनी रे करतां ज्ञान आराधिये, ज्ञान दरसन रे उत्तम मारग साधिये ॥ साधिये मारग एह करनी ज्ञान छिहये निरमलो, सुरलोक में नरलोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो । अनुक्रमें केवल ज्ञान पामी सासता सुख जे लहे, जे करे पंचिम तप अखंडित वीर जिनवर इम कहे ॥१९॥

#### कलश

इम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिनेसरो । मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवन, अतुल वल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिनचन्द्र स्रिज, सकल चन्द्र नमंसियो । वाचना चारज समय सुन्दर, भक्ति भावे प्रशंसियो ॥२०॥

#### पश्चमी स्तवन

पंचिम तप तुम करो रे प्राणी, जिम पामो निर्मल ज्ञान रे। पहलूं ज्ञान ने पाछे किरिया, नहीं कोई ज्ञान समान रे॥ पं०१॥ नंदीसूत्र

मां ज्ञान वखाणूं ज्ञान ना पांच प्रकार रे। मित श्रुति अवधि अने मन पर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे॥ पं॰ २॥ मित अहावीस श्रुत चउदह वीस, अवधि छे असंख्य प्रकार रे। दोय भेद मन पर्यव दाख्यो, केवल एक उदार रे॥ पं॰ ३॥ चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, तेज सुं तेज आकाश रे। केवल ज्ञान समूं नहीं कोई, लोकालोक प्रकाश रे॥ पं॰ ४॥ पारसनाथ पसाय करी ने, माहरी पूरो उमेद रे। समय सुन्दर कहे हूं पण पामूं, ज्ञान नो पंचमो भेद रे॥ पं॰ ५॥

### अष्टमी स्तवन

अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गौडी पास। सेवा सारे जेहनी सुर नर, मन धरिये उल्लास ॥१॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुज्ञानी पास जिणंदा। सुन्दर सूरित मूरित सोहे, मो मन अधिक सुहाय पलक पलक में पेखतां मानुं, नव निव छिब देखाय ॥२॥ भव दुःख भंजन जन मन रंजन, खंजन नयन सु रंग। श्रवणें सुणी गुण ताहरा, महारा विकस्या अंगो अंग ॥३॥ दूर थकी हूं आयो विहने, देव लह्यो दीदार। प्रारथियां पहिंडे नहीं, साहिबा एह उत्तम आचार ॥४॥ प्रश्न मुखचन्द विलोकित हरिषत, नाचत नयन चकोर। कमल हसे रिव देखिने, जिम जलधर आगम मोर ॥५॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम। मेरे मनमें तूं बसे, साहिब शिव सुख नो ही ठाम ॥६॥ माता वामा धन्य पिता, जसु श्री अञ्चसेन नरेस। जनमपुरी बाणारसी, धन धन काशी नो देश ॥७॥ संवत् सतरेसे वाबीसें, विद वैशाख वखान। आठम दिन भले भावसूं, म्हारी यात्र चढ़ी परिनाम ॥८॥ सांनिधकारी विव्र निवारी, पर उपगारी पास, श्री जिनचन्द जुहारतां, मोरी सफल फली सहु आस ॥९॥

द्शमी वृद्ध स्तवन

पास जिनेसर जगति छोए, गबड़ी पुर मण्डण गुण निछोए। तवन करिस प्रभुताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए॥१॥ नयरी नाम वणारिस ए, सुर नयरी जिम रिद्धें बसि ए। तेण पुरी छे दीपतो ए, अञ्चसेन राजा

रिपु जीपतो ए ॥२॥ वामा तसु घरि नार ए, तसु गुणहि न छन्मे पार ए । तासु उदर अवतार ए, तसु अतिसय रूप उदार ए ॥३॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन गह्या ए। पूछे भूपित ने कह्या ए, कर जोडि कह्या जे जिम लह्या ए ॥४॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो, माय तणो मन हरख्यो । बीजे वृषम उदार, धरणी जिण धरचो भार ॥५॥ तीजे सिंह प्रधान, जसु बल कोई न मान । चउथे देखी श्री देवी, कमल बसे सुर सेवी ॥६॥ पांचमे पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला। छडे दीठो ए चन्दो, ग्रहगण केरो ए इन्दो ॥७॥ सातमे सूरज सार, दूर कियो अन्ध-कार । आठमें धजह छहकंती वरण विचित्र सोहन्ती ॥८॥ नवमें पूरण कुम्म भरियो निरमल अंम । देखि सरोवर दशमें, मनह थयो अति विशमें ॥९॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीर जलिय जसुनामें । बारम देव विमान, वाजित्र ध्वनि गीत गान ॥१०॥ तेरम रतननी रासी. दह दिशि ज्योति प्रकाशी । सुपन चवद में ए दीठो, पावक धूम थि मीठो ॥११॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप उदार । पुत्ररतन होस्ये ताहरे, थास्ये उदय हमारे ॥१२॥ चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार । सुन्दर सुत तुमे जनमस्यो, कुल दीपक आधार ॥१३॥ वामा प्रीतम वचन सुनी आवी मन्दर झत्ति, देव सुगुरु कीरति करी, जनम कियो सुक्रयत्य ॥१८॥ इण अनुक्रमि ऊग्यो दिवस, कीधा सुपन विचार । ते घरि पहुँता आपणे, दीघा दान अपार ॥ ॥१५॥ हिव जनम्या जग गुरू जगत हुओ जयकार, खिण इक नारिकयें पायो सुख अपार । दिशि कुमरी मिलकर सूत्र करम निशि कीघ, करि थानक पहुंती वंछित तेहनो सीध ॥१६॥ तिण हिज निशि चौसठ इन्द्र मिली तिहां आवे, लेई निज भगतें सुर गिर स्नात्र करावें। करि जनम महोच्छव जननी पासे ठावे, तिहांथी सुर सब मिली दीप नंदीसर जावें॥१७॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार, घर घर गाईजे कीजे मंगलाचार । इग्यारम दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥१८॥ प्रभु वाघे दिन दिन कला करी जिम चन्द, त्रिहूं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविन्द । गुण कला विचक्षण विद्या तणोय निधान, यौवन वय

आयो परणायो राजान ॥१९॥ कुमर पदे प्रमु रहितां काल मुखें गमे ए, आयो मन वैराग संयम लेवा समे ए। तब लोकान्तिक देव जणावे अवसर ए, देइ सम्वत्सरी दान याचक जन मुख करूं ए॥२०॥ स्वामी संयम लेइ इन्द्रादिक सब मिल्या ए, देश विदेश विहार करी करम निरदल्या ए। पामिय केवलज्ञान सुरे महिमा करि ए, थापिय चउविह संघ मुगति रमणी वरिए ॥२१॥ इम श्री गौड़ी पास तणा गुण जे नर गावें, तेह नर नारी इह परलोकमुं वंखित पावें। संघ करी संघ पतीजी के गवड़ी पुर जावें, चीर धाड़ संकट टले विघन बुराइन आवे ॥२२॥ धरणराय पउमावइ जास बहें सिर आण, सांवल वरण मुशोभित नवकर काय प्रमाण। कल्पवृक्ष चिन्तामणि काम गवी सम तोले, श्री गुणशेखर सीस समय रंग इणपरि बोले ॥२३॥

### मौन एकादशी का स्तवन

समबसरण बैठा मगवन्त, धर्म प्रकाशे श्री अरिहन्त। बारे परपदा बैठी जुड़ी, मगिशर शुदि इग्यारस बड़ी ॥१॥ मिछनाथ ना तीन कल्यान, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान। अर दीक्षा लीधी रूबड़ी ॥ मग॰ २ ॥ निमने उपनों केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान। ए तिथि नी मिहमा ए बड़ी ॥ मग॰ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुए तिमिहीज पंचासिन संख्या परगडी ॥ मग॰ ४ ॥ अतीत अनागत गनता एम, डेढ़िसे कल्याणक थायें तेम। कुण तिथ छे ए तिथि जे वड़ी ॥ मग॰ ५ ॥ अनन्त चौवीसी इन परें गिनो, लाम अनन्त उपवासा तनो। ए तिथि सहु तिथि शिर राखड़ी ॥ मग॰ ६ ॥ मौन पने रह्या श्री मिछनाथ, एक दिवस संयम वत साथ। मौन तनी परी वत इम पड़ी ॥ मग॰ ७ ॥ अठ पहिरी पोसो लीजिये, चौविहार विधि सूं कीजिये। पण परमाद न कीजे घड़ी ॥ मग॰ ८ ॥ बरस इग्यार करो उपवास, जावञ्जीव पन अधिक उलास। ए तिथि मोक्ष तनी पावड़ी ॥ मग॰ ९ ॥ ऊजमणूं कीजे श्रीकार, उलास। ए तिथि मोक्ष तनी पावड़ी ॥ मग॰ ९ ॥ ऊजमणूं कीजे श्रीकार, जान नां उपगरण इग्यार इग्यार। करों काउसग्ग गुरु पायं पड़ी ॥ मग॰

॥१०॥ देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजीजे मन रली । मुक्तिपुरी कीजे दुकड़ी ॥ मग० ११ ॥ मौन इग्यारस मोटूं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व । व्रत पचक्खाण करो आखड़ी ॥ मग० १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें, कीधूं स्तवन सह मन गमे । समय सुन्दर कहे चाहड़ी ॥ मग० १३॥

### चउदह गुणठाणों का स्तवन

सुमित जिणंद सुमित दातार, वंदृ मन सुध बारम्बार, आणी भाव अपार । चवदे गुण थानक सुविचार, किहस्यूं सूत्र अरथ मन धार, पामें जिम भव पार ॥१॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुण ठाणों, बीजो सास्वादन मन आणों, तीजो मिश्र बखाणो । चौथो अविरत नामनो, देश विरति पंचम परमानो, छहो प्रमत्त पिछान् ॥२॥ अप्रमत्त सत्तम छही जे, अष्टम अपूरव करण कहीजे, अनित्त नाम नवम्म । सूखम छोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नाम इग्यार, खीण मोह बारम्म ॥३॥ तेरम संयोगी गुणठान, चउदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधमम बखाणे, ए छक्षण मिथ्या गुण ठाणे, तेहनां पांच प्रकार ॥४॥

### ( सफल संसारनी )

जेह एकांत नय पक्ष थापी रहे, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहे ॥५॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमें सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र निव सरदहे रहे विकल्प घणें, संसयी नाम मिथ्यात चौथो भणे ॥६॥ समय निहं काय निज धंद राता रहें, एह अज्ञान मिथ्यात्व पंचम कहे । एह अनादि अनंत अभन्यनें ॥७॥ जेम नर खीर घृत जीमने वमें, सरस रस पय विल स्वाद केहवो गमें । चौथ पंचम छडे ठाण चढ़ने पड़े, किणिह कषाय वस आय पहले अड़े ॥८॥ रहे विच एक समयादि षट् आवली, सहिय सासादनें थित इसी सांमली । हिव इहां मिश्र गुण ठाण तीजो कहे, जेह उत्कृष्ट अंतर मुहूरत लहे ॥९॥

(वे करजोड़ी वाम)

पहिला चार कषाय सम कर समकिती, केतो सादि मिध्यामती ए।

ए बेहिज छहे मिश्र सत्य असत्य जहां, सर दहणां बेऊं छती ए॥१०॥ मिश्र गुणालय माहिं मरण छहे नहीं, और बंधन पड़े नवो ए। के तो छहे मिथ्यात्व केसर समिकत छहे, मित चोखी गित परमवे ए॥११॥ च्यार अप्रत्याख्यान उद्ध्य करि छहे, मित विन किहां समिकत पणो ए। ते अविरत गुण ठाण तेतीस सागर, साधिक थिति एहनी भणी ए॥१२॥ द्या उपशम संवेग निरवेद आसता, समिकत गुण पांचे धरे ए। सहु जिन बचन प्रमाण, जिन शासन तणी अधिक अधिक उन्नत करे ए॥१३॥ कइ्यक समिकत पाय पुत्रल आराधतां, उत्कृष्टा भव में रहे ए। कइ्यक भेदी गंठि अंतर मुहूरते, चढ़ते गुण शिवपद छहे ए॥१४॥ चार कषाय प्रथम त्रिण बिछ मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्त्वनी ए। सातें प्रकृति जास परही उपशमें, ते उपशम समिकत धणी ए॥१५॥ जिण साते क्षय कीष्ठ ते नर क्षायकी, तिण हिज भव शिव अनुसरे ए। आगिल बांध्यो आऊ तातें तिहां थकी, तीजे चौथे भव तिरे ए॥१६॥

### ( इण पुर कम्बल कोइ लेसी )

पंचम देस विरित गुणठाण, प्रगटे चौकड़ी प्रत्याख्यान । जे नतजेवा बीस अभक्त, पाम्यो श्रावक पणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारे, साया बारे व्रत संभारे । पूजादिक षट् कारज साधे इग्यारे प्रतिमा आराधे ॥ १८ ॥ आर्च रौद्र ध्यान है मन्द, आयो मध्य धरम आणंद । आठ बरस उणी पुव्व कोड़, पंचम गुणठाणे थित जोड़ ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुण थान, इक इक अंतर मुहुरत मान । पंच प्रमाद वसे जिन ठाम, तेन प्रमन्त छहो गुण धाम ॥२०॥ जिनवर कल्प जिन कल्प आचार, साधे षट् आवश्यक सार । उद्यत चौथा चार कषाय, तेन प्रमत गुणठाण कहाय ॥२१॥ सूधो राखे चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत आराधे । जिहां प्रमाद क्रिया विधिनासे, अपरमन्त सप्तम गुण भासे ॥२२॥

( नदी यमुना के तीर उड़े दोय पंखिया )

पहिले अंसे अडम गुण ठाण तणे, आरंभे दोय श्रेणि संखे पतें गणें।

उपशम श्रेणि चढ़े जे नर हुवे उपसमी, क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दश क्षय गमी ॥२३॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण छहे, अहम नाम अपूरव करण त्रिणी कहे । सुकछ ध्याननो पहिलो पायो आदरे, निरमल मन परिणाम अडिगा धरे ॥२४॥ हिव अनिवृत करण नवमो गुण जानिये, जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न मानिये । क्रोध माया संजलणा हणें, उदे नहीं जिहां वेद अवेद पणों तिणें ॥२५॥ जिहां रहे सूखम लोभ कहांइक शिव अभिलखे, ते सूखम संपराय दशम पंडित दखे । संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे, मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपसम छहे ॥२६॥ श्रेणि चढ्यो जो काल करे किणही परे, तो थाये अहमिन्द्र अवर गति नादरे । चार वार सम श्रेणि छहे संसार में, एक भवे दोय श्रेणि अधिक न हुवे किमें ॥२७॥ चढ़िइग्यारम सीम सभी पहिले पड़े, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुद्रल रहे । क्षपक श्रेणि इग्यारम गुण ठाणो नहीं, दशम थकी बारमम चढे ध्यानें रही ॥२८॥

( एक दिन कोई मगध आयो पुरंदर पास )

खीण मोह नामें गुण ठाणो बारम जान, मोह खपायो नेडो आयो केवल ज्ञान । प्रगट पणे जहां चारित्र अमल यथा ख्यात । हिव आगे तेरम गुण ठाण तणी कहें बात ॥२९॥ घातिय चौकड़ी क्षय गई रहीय अघातिय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहनें जूना कापड़ जेम । दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरे श्री भगवंत ॥३०॥ देखे लोक अलोकनी लानी परगट बात, मिहमावंत अठारे दृषण रहित विख्यात । आठे वरसे ऊणी कही इक पूरव कोड़ी, उत्कृष्टी तेरम गुण ठाणिए थित जोडि ॥३१॥ सैलेसी करण निरूक्ष्या मन वच काय, तेण अयोगी अंत समइ सहु प्रकृति खपाय । पांचे लघु अक्षर उचरंता जेहनो मान, पंचम गित पामें शिवपद चउदम गुण ठान ॥३३॥ त्रीजे वारमें तेरमें मांहे न मरे कोइ, पहिलो बीजा चाथो पर भव साथे होइ । नरक देवनी गित मांहे लोभे पहिला चार, घुरला पांच तिरी मांहिमणुए सर्व विचार ॥३३॥

#### कलश

इम नगर वाहड़ मेर मंडण सुमित जिण सुपासाउले, गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आगमने भले। संवत् सतरे सै छत्तीसे श्रावण वदी एकादसी, वाचक विजय श्री हरष सानिध कहें सुनि इम धर्मासी ॥३॥॥

#### अमावस का स्तवन

वीर सुणो मोरी वीनती, कर जोड़ी हो कहूं मन नी बात । बालक नी परे बीनवूं, मोरा सामी हो तुमे त्रिभुवन तात ॥वीर०१॥ तुम द्रसण बिन हूं भम्यो, भव मांहे हो सामि समुद्र मझार । दुःक्ख अनन्ता मैं सहाा, ते कहिता हो किम आवे पार ॥वीर०२॥ पर उपकारी तू प्रभू, दुःख भांजे हो दीन द्याल । तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामि मुझ ने हो। निज नयन निहाल ॥वीर०३॥ अपराधी पिण उन्दरचा, ते कीथी हो करुणा मोरा साम । परम भगत हूं ताहरी, तेने तारो हो नहीं ढीछ नो काम ॥ बीर॰ ४॥ शूलपाणी प्रति बूझन्या, जिन कीघा हो तुमने उपसर्ग । डंक दियो चण्ड कोसीये तें दीघो हो तम्र आठमो सर्ग ॥ बीर॰ ५ ॥ गोशालो गुण हीनडो जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद । ते बलतों ते राखीयो, शीत लेश्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वीर॰ ६ ॥ ए कुण छे इन्द्र जालीयो, इम कहितां हो आयो तुम तीर । ते गौतम ने तें कीयो, पोता नो हो प्रभुता रो वजीर ॥ वीर॰ ७ ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा, जो झगड्यो हो तुझ साथ जमाल । तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो कीघो ते कृपाल ॥ वीर॰ ८॥ ऐमन्तो ऋषी जे रम्ये, जल मांहे हो बांधी माटी नी पाल । तिरती मूकी कांचली, ते तारचो हो तेहने तत्काल ॥ वीर॰ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दृहव्यो, चित चूकी हो चारित्र थी अपार । एकावतारी तेहनें ते कीधो हो करुणा भण्डार ॥ वीर॰ १० ॥ बार बरस वेश्या घरे, रह्यो मूकी ने हो संयम नो भार। नन्दीखेण पिण उन्हरचो, सुर पदवी हो दीधी अतिभार ॥ वीर०११॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृह वासे हो वसियो वरस चौबीस।ते पिण आई कुमार ने, ते तारचो हो तोरी एह जगीस ॥ वीर॰ १२ ॥ राय श्रेणिक राणी

चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह । समवसरण साधु साधवी, ते कीधा हो आराधक तेह ॥ वीर॰ १३ ॥ वत नहीं नहीं आखड़ी, नहीं पोसो ही नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिक राय ने, ते कीधो हो सामि आप सरीख ॥ वीर॰ १४ ॥ इम अनेक ते उधरचा, कह तोरा हो केता अवदात । सार करो हवे माहरी, मन मांहे हो आणो मोरडी बात ॥ वीर॰ १५ ॥ स्थो संजम निव पले, नहीं तो हुवो हो मुझ द्रसण ज्ञान । पिण आधार छे एतलो, एक तोरो हूं धरूं निश्चल ध्यान ॥ वीर॰ १६ ॥ मेह महीतल वरसतो, निव जावे हो रक विषमी ठाम । गिरुआ सहिजे गुण करे, स्वामी सारो हो मोरा बांछित काम ॥ वीर॰ १७ ॥ तुम नामें सुख सम्पदा, तुम नामें हो दुख जावे दूर । तुम नामें वांछित फले, तुम नामें हो मुझ आणंद पूर ॥ वीर॰ १८ ॥ इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चौबीसमो, शासनाधीश्वर सिंह लंछन सेवता सुर तरु समो । जिणचन्द त्रिशला मात नंदन सकल चन्द कला निलो, वाचनाचारज समय सुन्दर संथुण्यो त्रिभुवण तिलो ॥ वीर॰ १९ ॥

## निर्वाण कल्याणक स्तवन

मारग देशक मोक्षनो रे, केन्नल ज्ञान निधान । भाव दया सागर प्रभू रे, पर उपकारी प्रधानो रे । वीर प्रभू सिन्ध थया, संघ सकल आधारो रे । हिव इण भरत मां कुन करसी उपगारो रे ॥ वीर॰ १ ॥ नाथ बिहूणी सैन्यज् रे, वीर बिहूणो रे संघ । साधे कुण आधार थी रे परमानन्द अमंगो रे ॥ वीर॰ २ ॥ मात बिहूणा बालज्यं रे, अरहो पर अथठाय । वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाये रे ॥ वीर॰ २ ॥ संशय छेदक वीर नो रे, विरह तें केम खमाय । जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर॰ ४ ॥ निर्यामक भव समुद्र नो रे, भव अटवी सत्यवाह । ते परमेशर बिन मिल्यां रे, किम बाधे उच्छाहो रे ॥ वीर॰ ५ ॥ वीर थकां पिण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार । हिवणा श्रुत आधार छे रे, एह जिन आगम सारो रे ॥ वीर॰ ६ ॥ इण काले सब जीव ने रे, आगम

थी आनन्द । ध्यावो सेवो मविजनो रे, जिन प्रतिमा सुख कन्दो रे ॥वीर॰ ७ ॥ गणधर आचारज सुनि रे, सहुने इण परि सिद्ध । भव भव आगम संग थी रे, देवचन्द्र पद लीघो रे ॥ वीर॰ ८ ॥

## चैत्री पूर्णिमा का स्तवन

पय प्रणमी रे जिनवर ना सुयसाउछे, पुंडर गिरि रे गाइस हूं शुभ भाउले । मित सुरगिर रे सहस जीभ जो मुख हुवे, किम ते नर रे विमला-चल ना गुण स्तवे । किम स्तवे गुणगण गिरिना जहां मुनि सीधा बहू, गिररायना गुण छे अनंता, कहे जिनवर मुख सहू । निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाखिये, तिरयंच नारक गति तणी ना दुःख दूरे राखिये ॥१॥ जिनराजा रे पहिलो आदि जिनेसरूं, तसु नंदन रे चक्रवर्ति भरतेसरूं। तसु अंगजरे पुण्डरीक गुणगणनी कलो, शम दम रस रे विनय विवेक गुण भलो । गुण भलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम शिव पुरी, पुण्डरीक गणधर प्रथम विहरे सुमित गुपते संचरी । पण कोडि साथे विमल गिरिवर मुक्ति पदवी पाव ए, सुदी चैत्री पूनम तेणे पुण्डरीक कहाव ए ॥२॥ हिव चैत्री रे पूनिम वर्ष सुहावणो, रात्रुंजे रे आराध्यां फल होवे घणो । मन शुद्ध रे आपण पे थानक रही, आराध्यां रे यात्रा पुण्य पामें सही । ते पुण्य पामें दान तप जप धर्म ध्यान मनें धरे, बहु भाव भक्तें त्रिविध पूजा आदि जिनेश्वरनी करे । भावना भावे तेन दिवसे पंच कोडि गुणो फले, अनुक्रमे ते नर मुक्ति पामी सिद्ध सुन्दरनें मिले ॥३॥ द्श वीशा रे तीस चाळीस पूजा कही, पञ्चायत श्रावकनी मति सरदही। चउथ छहे रे अहम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुझ मन वसे । मन वसे पूज कपूर धूवे मास खमण फले वली, सामन्न धूवे पक्खनो फल जे करे मननी रली। हिव पूजती विधि जेम गुरु मुख सुणी अछे परंपरा, ने मोहमाया कपट छंडी सुणो भवियण साद्रा ॥१॥ तंदुल राशी विमल गिरि थापी, तसु ऊपरि पट्टादिक आपी । प्रतिमा आदि जिणेसर केरी, पुण्डरीकने थापी निवेरी ॥५॥ सेन्नुंज गिरिनें मन चितीजे, करम

1997年,1997年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,1998年,19

तणा फल दूर करीजे। मोती तंदुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षिण पूज रचावो ॥६॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करम बन्ध दूरे किर आठ। प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिन वरना गुण हियड़े धरेवा ॥७॥ ऊमा थई नवकार गुणंता, दश दश जैती तिलक करंता। माला पुष्प पुंगी फल ढोवो, मेरु भरण वर धूप उखेवो ॥८॥ शकरतव पांचे देव वांदे, जधन्यना वंदण पाप छेदे। दशे नमस्कार करंत जेती, राखी करी दृष्टि जिनेन्द्र सेती ॥९॥ आराधिवा कीजे काउसग्ग, जिणें किये माजे कर्म वग्ग। लोगस्स उझोय दसे वरवाणूं, वेला प्रमाणि अहिं एग आणूं ॥१०॥ इणें प्रकारे धुर पूज एह, इसी परे बीजी च्यार तेह। दशा तणी दृद्धि तिहां करीजे, एकैक पूठे अथवा गिणीजे। बहुत्तरे आरित मंगलेबो, पछे प्रभु आगलि ते करेवो ॥११॥

#### कलश

इम करिये पूजा यथा योगु संघ पूजा आदरो, साधरमी वच्छल करो भविका भव ससुद्रली लावरो । संपदा सोहग तेह मानव ऋिं वृद्धि बहु लहे, श्री अमर माणिक सीस सुपरे साधू कीरति इम कहे ॥१२॥

### पखवासा तप चैत्यवन्दन

श्री मुनि सुत्रत जिनराय, चौविह धर्म प्रकासें। पखवासा तप करण को, बीच परपदा भासें॥ पन्द्रह दिन तप की विधि, सुध मन होय छिहिये, प्रतिपद से आरम्भ कर, पूर्णिमा तक सर दिहये॥१॥ हरिवंश कुल में अवतरवा, राजग्रही नगरि सुहायो। जेठ वदी अप्टमि दिने, प्रभु जन्मोत्सव करायो॥ कच्छप चिन्ह से शोभते, काया धनुष बीस कहायो। सुमित्र नृपति के पट्ट पर, मात पद्मावित जायो॥२॥ फागुन वदी वारस दिने, संयम व्रत वतलायो। अप्ट कर्म कूं नप्ट कर, केवल ज्ञान दिपायो॥ सहस तीस वर्ष आयु से, जिनवर सिन्ह पद पायो। श्री रत्नसूरि शिष्य मोतीचन्द्र वतायो॥॥॥

,是是是一个人,是是一个人,我们是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一

#### पखवासा तप का स्तवन

जंब्द्धीप सोहामणो, दक्षिण भरत उदार। राजग्रही नगरी मली, अलकापुर अवतार ॥१॥ श्री मुनि सुब्रत स्वामिजी, समरंता सुख पाय। मन वंछित फल पामिये, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री॰ २ ॥ राज करे तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम। पटराणी पद्मावती, शील गुणे अभिराम ॥ श्री॰ ३ ॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्री जिनवर हरिवंश। माता कुक्षी सरोवरे, अवतरियो राय हंस ॥ श्री॰ ४ ॥ जेठ पढम पक्ष अष्टमी, जायो श्री जिनराय। जन्म महोच्छव सुर करे, त्रिभुवन हरख न माय ॥ श्री॰ ५ ॥ सांवल वरण सोहामणो, निरूपम रूप निधान। जिनवर लंछन काल्रबो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री॰ ६ ॥ परणी नार प्रभावती, भोग पुरंद्र साम। राजलीला सुख मोगवे, पूरे वंलित काम ॥ श्री॰ ७ ॥ तब लोकांतिक देवता, आवि जपे जयकार। प्रभु फागुन वदि बारसे, लीधो संजम मार ॥ श्री॰ ८ ॥ शुभ फागुन वदि बारसे, मन धर निर्मल ध्यान। चार कर्म प्रभु चूरिया, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ श्री॰ ९ ॥

ततिखण तिहां मिलिया, चिलया सुरनर कोिड । प्रभुना पद पंकज, प्रणमें बे कर जोिड़ ॥ बे कर जोिड़ मच्छर छोिड़, समवसरण विरतंत । माणक हेम रूप मय त्रिगडो, छत्र त्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां, स्वामि चौिवह धर्म प्रकासे । वारे परषदा बैठे आगली, सुण मन उल्हासे ॥१०॥ तप ने अधिकारे, पखवासो तप सार । पडवा थी कीजे, पनरह तिथि उदार । पनरह तिथि गुरु मुख लीजे, जिस दिन हुए उपवास । श्री मुनि सुन्नत नाम जपी जे, बांदी देव उछास ॥ तप ऊजमणें रजत पालणों, सोबन पूतली चंग । मोदक थाल देहरे, मूंकी जिनवर स्वाम सुरंग ॥११॥ तप करिये निरंतर, अहोरत दर्शनी जेम । मन वंछित केरा, सुख पामी जे तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार पर, अति वछम भरतार । जस कीरत सोमाग बढ़ाई, महियल महिमा प्राण ॥ परभव मुगति फल लहियें, ए तप ने प्रमाण ॥१२॥ थिर थापी चतुर्विध, संघ तणो अधिकार ।

मरुन्छ प्रमुख नगरादिक करिया विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक, पंच सयां परिवार । कार्तिक सेठ जितरात्रु तुरंगम, सुत्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरस आउस्तो, पाले जग दया सार । श्री सम्मेत शिखर परमेसर, पहुंता मुगति मझार ॥१२॥ इम पञ्च कल्याणक थुणिया, त्रिभुवन तात । मुनि सुत्रत स्वामी, बीसमो जिनवर राय ॥ बीसमो जिनवर राय जगत गुरु, भय भंजण भगवंत । निराकार निरंजन, निरुपम अजरामर अरिहंत ॥ श्री जिनचन्द विनय शिरोमणि, सकल चन्द गणि सीस । वाचक समय सुन्दर इम पमणे, पूरो मनह जगीस ॥११॥

### पखवासा तप स्तुति

श्री मुनि सुन्नत प्रभुवर, जाकी करिये सेव। पखवासा तप आदरिये, सुध मन होय नित मेव॥ प्रतिपद से पूर्णिमा, प्रभुजी की करिये सेव, श्री रत्नसूरि शिष्य, मोतीचन्द गुण हेव॥१॥

### दश पचक्खाण चैत्यवन्दन

णमुक्कारसी और पोरिसी साढ पोरिसी पुरिमहु, एकासणा णिव्वि और एगलठाणा देवहु ॥१॥ दत्ति आयंबिल उपवास ही पञ्चक्खाण ए जाण, इनको नित प्रति करण से पामें स्वर्ग विमान ॥२॥ दश पञ्चक्खाण करतां यकां आत्मानन्द स्वरूप जिन रत्नसूरि शिष्य प्रवर सूरज शुद्ध प्ररूप ॥३॥

#### दश पचक्खाण का स्तवन

सिद्धारथ नन्दन नमूं महावीर भगवन्त । त्रिगड़े बैठा जिनवरूं परषद् बार मिल्नत ॥१॥ गौतम गणधर समय पूछे श्री जिनराय । दस पञ्चक्खाण किसा कह्या कियां कवण फल थाय ॥२॥

#### सीमंघर करज्यो

श्री जिनवर इम उपित्से, सांभल गोमय स्वाम । दस पश्चक्खाण किया थकां, लिहिये अविचल ठाम ॥ श्री॰ ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरिसी साहु पोरिसी पुरिमडु । एकासण नीवी कहीं, एक लठाण देवडु ॥ श्री॰ ४ ॥ दिच आयम्बिल, उपवास हीं, एहिज दस पश्चक्खाण । एहना फल सुन गोयमा

जुजूबा करूं बखाण ॥ श्री॰ ५॥ रत्नप्रभा शर्कर प्रभा, बालुक तीजी जान । पंक प्रभा तिम धूम प्रभा, तम प्रभा तमतम ठाम ॥ श्री॰ ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर । जीव करम बस ते सही, उपजे तिनहीज ठोर ॥ श्री॰ ७ ॥ छेदन भेदन ताडना, भूख तृषा बिल त्रास । रोम रोम पीड़ा करे, परमाधरमी तास ॥ श्री॰ ८ ॥ रात दिवस क्षेत्र वेदना तिल भर नहीं जहां सुक्ख । किया करम जे भोगवे, पामें जीव बहु दु:ख ॥ श्री॰ ९ ॥ इक दिन री नवकारसी, जे करे भाव विशुद्ध । सौ वरस नरक नो आउखां, दूर करे ज्ञान बुद्ध ॥ श्री॰ १० नित्य करे नवकारसी, ते नर नरक न जाय । न रहे पाप बिल पातला, निरमल होवे जी काय ॥श्री॰ ११॥

### (श्री विमलाचल सिर तिलो ए)

सुण गौतम पोरिसी कियां, महा मोटो फल होय। भावस्ं जे पोरिसी करे, दुरगति छेदे सोय ॥ सु॰ १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार । करम खपावे नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु॰ १३ ॥ एक दिवस नी पोरिसी जीव करे इकतार । करम हणें सहस एकना, निश्चयस्ं गणधार ॥ सु॰ १४ ॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण । नारक आयु खिण एकमें, साढ पोरिसी करे हाण ॥ सु॰ १५ ॥ पुरिमड्ढ़ करे जीव जे, नरके ते निव जाय । लाख वरस कर्मने दहे, पुरिमढ़ करम खपाय ॥ सु॰ १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनन्त । इतरा करम इकासणें, दूर करें मन खंत ॥सु॰ १७॥ एक कोडि वरसां लगे, करम खपाने जीव । नीविय करतां भावसूं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु॰ १८ ॥ दस कोडि जीव नरक में, जितरों करे करम दूर । तीसरो एकरू टाण ही, करे सही चकचूर ॥ सु॰ १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सी कोडि परिमान । इतना वरस दुरगति तणां, छेदे चतुर सुजान ॥ सु॰ २० ॥ आंविछ ना फल बहु कहोा, कोडी एक हजार । करम खपाय इण परे, भाव आंविल अधिकार ॥ सु॰ २१ ॥ कोडि सहस दस वरस ही, सहे दु:ख नरक मझार । उपवास करे इक भावसूं, तो पामें मुगति मझार ॥ सु॰ २२ ॥

#### ॥ ढाल ॥

छाख कोडि वरसां छगे, नरकें कटता रीव रे। गौतम गणधारी अहम तप करतांथकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो॰ २३ ॥ नरके बरस कोडी लाख ही, जीव लहे तिहां दुक्ख रे। ते दु:ख अहम तप हुंती, दूर करे पामी सुक्ख रे ॥ गो॰ २४ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोड़ाकोडी वरसोई रे । कुगति कुमति ने परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥गो०२५॥ नित फासू जल पीवतां, कोडा कोडि वरसनो पाप रे। दूर करे खिण एक में, निश्चय होय निःपापरे॥ गो॰ २६ ॥ विलय विशेषे फल कह्यो, पांचम करें उपवास रे। पामें ज्ञान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे॥ गो०२७॥ चवदह तप विधि करे चवदह पूरव धार रे । इम अनेक फल तणां कहतां बिल नावें पार रे॥२८॥मन वचने काया करी. तप करे जे नरनारि रे।इग्यारे वरस एकादशी. करतां छहे भव पार रे ॥गो॰ २९॥ आठम तप आराधतां. जीव न फिरे संसार रे। अनंत भावना पाप थी, छूटे जीव निरधार रे॥ गो॰ ३०॥ तप हुंती पापी तरचा, निस्तरियो अरजुन माल रे। तप हुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गज सुकुमाल रे ॥ गो॰ २१ ॥ तपने फल सूच्चे कह्या, पच्चक्लाण तणा दस भेद रे । अवर भेद पिण छे घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे॥ गो॰ ३२॥

#### कलश

पचनस्वाण दस विध फल, प्ररूप्या महावीर जिण देव ए। जे करें भवियण तप अखंडित, तासु सुर प्य सेव ए।। संवत निधि गुण अञ्च राशि, बिल पोष सुदि दशमी दिने। पदम रङ्ग वाचक शीश गणिवर, रामचन्द्र तप विधि भणे।।३३॥

### दश पच्चक्खाण स्तुति

दश पच्चक्लाण करंतां कबहूं नरक नहिं जाय, सुध मन से करिये आतम संयम थाय। जो कोई धारे शील सहित सुखकार, सूरज जप तप से पामें मोक्ष दुवार ॥१॥

## विंशस्थानक चैत्यवन्दन

अरिहन्तोंको सदा नमो, प्रवचनए सुखकार।आचारज स्थवरे पदे,पाठक प्रमु पद सार ॥१॥ ज्ञान दरसन विनय सदा, चारित्र जगहितकार । ब्रह्म क्रियातप गौतम, जिन संयम सुखकार ॥२॥ ज्ञान श्रुत तीर्थ नमो, आणी हर्ष अपार । एबीस पद सेवतां माणक जय जयकार ॥३॥

### वीस स्थानक तप का स्तवन

वीस थानक तप सेविये, धरकरि शुभ परिणाम लाल रे। तीजे भव सेच्यो थको, बांघे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी॰ १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाता अंग मझार लाल रे। सुण जो भवि तुम भावसूं, चित्तसे करिये उछाह लाल रे ॥ वी॰ २ ॥ सुविहित गुरु पासे प्रहे, बीस थानक तप एह लाल रे। निरदृषण शुभ मुह्रतें, उचरी जे ससनेह लाल रे॥ बी॰ २ ॥ अरिहंत सिन्ध प्रवचन नर्मू, सूरि थिवर उवझाय लाल रे । साधु ज्ञान दंसण अरु, विनय नमूं उँछसाय छाल रे ॥ वी॰ ४ ॥ चारित्र बंभ क्रिया पदे, तप गोयम जिण ईश छाछ रे। चारित्र ज्ञान ने श्रुत भणी, नम्ं तीर्थ पद वीश लाल रे ॥ वी॰ ५ ॥ वीस दिवस में ए कही, पद् गुणनों कर मेव लाल रे। अथवा दिन वीसा लगे, वीसे पद् गुण मेव लाल रे ॥ वी॰ ६ ॥ एक ओली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे । फेर नवी करणी पड़े, पिछली निष्फल जोय लाल रे॥ बी॰ ७॥ छठ अहम उपवास सूं, अथवा देखी शक्ति लाल रें। पोसह कर आराधिये, देव बांदे निज मेक्ति लाल रे ।। बी॰ ८ ।। संपूरण पद सेवतां, पोसह रो नहिं जोग लाल रें। तो ही सात पदें सही, पोसह करिये संजोग लाल रे ॥ वी॰ ९ ॥ सूरि थिविर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजान लाल रे । गौतम तीर्थ पदे सही, सात थानक मन मान छाछ रे॥ बी॰ १०॥ पद पद दीठ करे सदा, दोय दोय जाप हजार लाल रे । पडिकमणो दोय टंक ही, करिये पूजा सार लाल रें ॥ वी॰ ११ ॥ शक्ति मूजब तप कीजिये, एक ओली करो बीस लाल रे। बोसां बीसी च्यार से, तप संख्या कहि

एम लाल रें ॥ बी॰ १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करें, तिसके गुण चित्त धार लाल रें । काउसग्गने प्रदक्षिणा, मुख भिणये णवकार लाल रें ॥ बी॰ १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुने, कीजे जिन पद भक्ति लाल रें ॥ बी॰ १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुने, कीजे जिन पद भक्ति लाल रें ॥ वी॰ १४ ॥ वी॰ १४ ॥ सावज्ज त्याग मृतक जनम ऋतु काल में, कोई धारचो उपवास लाल रें ॥ सावज्ज त्याग पणो करें, शोक न धारे चित्त लाल रें ॥ बी॰ १५ ॥ सावज्ज त्याग पणो करें, शोक न धारे चित्त लाल रें ॥ बी॰ १५ ॥ सावज्ज त्याग पणो करें, शोक न धारे चित्त लाल रें ॥ बी॰ १५ ॥ काल में, मगिसर फागुन मांहे लाल रें ॥ बी॰ १६ ॥ जेठ आषाढ़ वैशाख में, मगिसर फागुन मांहे लाल रें ॥ पूरण हुवां थकां, उजमणो निरधार लाल रें ॥ बी॰ १० ॥ तप पूरण हुवां थकां, उजमणो निरधार लाल रें ॥ बीस बीस गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रें । ज्ञान तणी पूजा करें, मूंकीजे हठबाद लाल रें ॥ बी॰ १९ ॥ फलवधी नगर नी श्राविका, कीधी विधि चित लाय लाल रें । जनम सफल करवा भणी, ओहिज मोक्ष उपाय लाल रें ॥ बी॰ २० ॥

#### कलश

इम वीर जिनवर तणी आज्ञा, घार चित्त मझार ए। सहु देख आगम तणी रचना, रची तप विघ सार ए॥ वसु नंद सिद्धि चन्द्र वरसे, चैत्र मास सुहंकरूं। मुनि केशरी शशि गच्छ, खरतर भणी स्तवना मनहरूं ॥२१॥

## वीसस्थानक की स्तुति

शिव सुख दाता जगत विख्याता, पूरण अभिनव कामी जी। ज्ञाना-दिक गुण चेतन रूपी, चिदानन्द धन धामी जी॥ थानक वीसे आगम भणिया, वीतराग गुण भोक्ता जी। जे नर अंतर आतम ध्यावे, शिव रमणी वर युक्ता जी॥१॥ अरिहंत सिन्ध प्रवचन सूरि, थिवर पाठक मुनि सारो जी। ज्ञान दरसन विनय चारित्र, ब्रह्मचरज किया धारो जी॥ तपसि

गणधर जिण चारित्री, नाण श्रुत तिथि भूपो जी। ए पद निज भिव भावे, सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥२॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें, चार सया उपवासो जी। इच्य भावसे विधि परकासे, तीर्थंकर पद खासो जी॥ तीजे भव वर वीस थानक नी, सेव करें भच्य प्राणी जी। समिकत बीजे जे निज आतम, आरोपे चित्त आणी जी॥ श्रा सुरत्य सम तप फल है मोटो, श्री सूर देवि सहाई जी। खरतर गच्छ जिन आज्ञा धारी, पटोधर वरदाई जी॥ जिन सौभाग्य सूरिन्द पसाये, हंस सूरिंद गुण गावे जी। संध सकल कूं सांनिधकारी, मन वंछित फल पावे जी॥॥॥

### रोहिणि चैत्यवन्दन

रोहिणि नक्षत्र रुचे, चन्द्र को प्यारो । सत्ताइसवें दिन आय, इस तप को घारो ॥१॥ चित्रसेन की स्त्री, रोहिणि व्रत को मानें, सुख पायो कुमिर, दु:ख को निहं जानें ॥२॥ इण विधि तप को सेवतें, घारें प्रभु तुम ज्ञान । श्री सुनि सुव्रत बखानतें, पावें पद निर्वान ॥३॥ इस तप को आराधतां, तूटे जग का पास । श्री रत्नसूरि के शिष्य, मोती चरणन का दास ॥॥॥

### रोहिणी तप का स्तवन

शासन देवता सामणी ए मुझ सानिध कीजे, भूलो अक्षर भगति भणी समझाई दीजे। मोटो तप रोहिणी तणो ए जिनरा गुण गाऊं, जिम सुख सोहग सम्पदा ए, बंछित फल पाऊं ॥१॥ दक्षिण भरतें अंगदेश छे चम्पानगरी, मघवा राजा राज्य करें तिण जीता वयरी। पाट तणी राणी रूबड़ी ए लखमी इण नामें, आठ पुत्र जाया जिणे ए मनमें सुख पामें ॥२॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सब कूं सुखकारी, आठों पुत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी। वाधी चन्द्रतणी कला ए जिम पख उजवाले, तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥३॥ कुमरी रूपे रूबड़ी ए घर अंगण बैठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिन्ता पैठी। तीन भुवन बीच एहवी ए नहीं दुजी नारी, रम्मा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥४॥ पुरुष न दीसे कोई इसी

जिणने परनाऊं, आंख्या आगल साल वधे तिण चयन न पाऊं। देश देश ना राजवी ए ततिखण तेडाया. सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥५॥वीत शोक राजा तणो ए छः कुमर सोमागी, कन्या केरी आंखड़ी ए तिण सेती लागी। ऊमा देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेन रें कण्ठ ठवी कुमरी वर माला ॥६॥ देव अने देवांगना ए जपे जयजयकार. रिलयायत थयो देखने ए सारो संसार । करजोड़ी कहे लोक वखत कन्यारो जाडो । वीत शोक नो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥७॥ इम विवाह थयो भलो ए दिया दान अपार, घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार । वीत शोक निज पुत्र भणी आपणो पाट दीघो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥८॥

### प्रभु प्रणम् रे पास जिणेसर यंभणो

तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुखमांहे रे केतलो काल वही गयो । इण अवसर रे आठ पुत्र हुवा भला, चढ़ते पख रे चन्द्र जिसी चढ़ती कला॥ चढ़ती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहिणी, सातमी भूमी कन्त सेती करे क्रीडा अति घणी । आउमो बालक गोद ऊपर रंगसू राणी लियो, पुत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥९॥ इक कामण रे गोख चड़ी दृष्टे पड़ी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खड़ी । बूढ़ा पण रे मन गमतो बालक मूओ, हूं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ दुःख हुओ देखी रोहिणी हिव कहे प्रीतम इम भणी, ए नार नाचे अने कूढ़े कहो किम मोटा घणी । एहवो नाटक आज तांइ मैं कदे देख्यो नहीं, मुझने तमासो अने हांसो देखतां आवे सही ॥१०॥ इण वचने रे रीसाणो राजा कहे तू पापण रे परनी पीडा निव छहे, ए दुखनी रे पुत्र मुए तडपड करे। जब वीते रे वेदना जाणीजे तरे ॥११॥

#### ॥ उल्लालो ॥

जाणे तरे तूं वात दुख नी गरव गह ली कामिनी, इस कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालक भणी। सातमां भूय थी तले नाख्यो, तिसे हाहारव ययो, रोहिणी हंसती कहे प्रीतम, पुत्र नीचे किम गयो ॥१२॥

#### ॥ चाल ॥

हिव राजा रे पुत्रतणें शोके करी, थयो मूरछित रे रोवे अति आंख्या भरी। पडतो मुत रे सासण देवता झालियो, कंचनमय रे सिंहासन बेसारियो। बेसारियो कर जोड आगे करे नाटक देवता, गोदी खिलावे केइ हँसावे पाय पंकज सेवता। ऊपनो भूपितने अचंभो देखिए कारण किसो, जो कोई ज्ञानी गुरु पधारे पूछिये सांसो इसो ॥१३॥ चिन्तवतां रे चारित्रया आया जिसे, राजा पिण रे पहुतो वन्दन ने तिसे। मुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरबभव बालक तणो ॥ बालक तणो भव भूप पूछे कहे इण पर केवली, रोहिणी राणी नो भवान्तर अने राजा नो वली। श्री गुरू पासे पाछले भव रोहिणी तप आदरचो, तप तणें सगते साधु भगते तुम्ह भवसागर तरचो॥१४॥ कहे राजा रे रोहिणी तप किम कीजिये, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजिये। तब मुनिवर रे विधि रोहिणी रातप तणी, इम जम्पे रे चित्रसेन राजा भणी॥ राजा भणी विधि एह जम्पे चन्द्र रोहिणि तप आविये, उपवास कीजे लाम लीजे मली भावना भाविये। बारमा जिणवर तणी प्रतिमा पूजिये मन रंग सूं, इम सात बरसां लगे कीजे तजी आलस अंगसूं॥१५॥

## वीर सुनो मोरी वीनती

तप करिये रोहिणी तणो, विल करिये हो ऊजमणो एम । तप करतां पातक टले तिण कीजे हो तप सेती प्रेम ॥१६॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक । गुण नो बारम जिण तणो, भला नैवेच हो घरिये सहु थोक ॥ तप॰ १७ ॥ केशर चन्द्रन चरचीये, कीजे आगे हो आठे मंगलीक । विधिसूं पुस्तक पूजीये, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ तप॰ १८ ॥ सेवा कीजे साधु नी, बिल दीजे हो मुंह मांग्या दान । संतो सीजे साहसी, मनरंगे होकर कर पकवान ॥ तप॰ १९ ॥ पाटी पोथी पूंजनी, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस । नवकरवाली वीरणा, गुरु आगे हो घरो सत्ताईस ॥ तप॰ २० ॥ चौथो व्रत पिण तिण दिने, इम

पाले हो मन आण विवेक । इण विधि रोहिनी आदरे, ते पामे हो आनन्द अनेक ॥ तप॰ २१ ॥

### (धर्म करो जिणवर तणो)

इम महिमा रोहिनि तणी, श्री ज्ञानी गुरु परकासे रे। चित्रसेन ने रोहिनी, वासपुज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ त॰ २२ ॥ इण परि रोहिनी आदरी, ऊपर उजमणो कीधो रे। चित्रसेन ने रोहिनी, मन सूधे संजम लीधो रे॥ त॰ २३॥ आठें पुत्रें आदरी, दीक्षा बारम जिन आगे रे। विल नानाविध तप तपे, धरमतणी मति जागे रे ॥ त॰ २४ ॥ करि अनसन आराधना, लहि केवल शिव पद पाया रे। जिनवाणी आणी हिये, प्रभु चित लाया रे ॥ त॰ २५ ॥ मनमोहन महिमा निलो, भैं तिवयो शिवपुर गामी रे। मन मान्या साहिब तणी, हिव पुण्यें सेवा पामी रे॥ त० २६॥

### कलग

इम गगन दुग मुनि चन्द्र वरसे\* चौथ श्रावण सुदि भली। मैं कही रोहिनी तणी महिमा, सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ बासुपूज्य अमने थया सुप्रसन्न, चित्त नी चिन्ता टली। श्री सार जिन गुण गावतां, हिव सकल मन आशा फली ॥२७॥

# श्री रोहिणी तप की स्तुति

जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिनि तपनो फल भारूयो श्री भगवंत ॥ नरनारी भावे आराघो तप एह । सुख संपति छीछा छक्ष्मी पावें तेह ॥१॥ ऋषभादिक जिनवर रोहिनि तप सुविचार । जिन मुख परकासे बैठी परखदा बार ॥ रोहिनि दिन कीजे रोहिनीनो उपवास । मन वंछित छीछा सुन्दर भोग विछास ॥२॥ आगम में एहनो, बोल्यो छाभ अनंत। विधिसूं परमारथ साधे सूधो संत ॥ दुख दोहग तेहनो, नासि जाय सब दूर । विले दिन दिन अंगे, बाघे अधिको नूर ॥३॥ महिमा जग मोटो रोहिनि तप फल जान, सौभाग्य सदा जे पावें चतुर सुजान ॥

<sup>\*</sup> यह स्तवन १७२० श्रावण सुदी ४ को वना है।

नित घर घर महोच्छव नित नवला सिणगार, जिन शासन देवी लिध रुचि जयकार ॥४॥

# छम्मासी तप चैत्यवन्दन

नव चौमासी बीर जिन, एक कियो छम्मास । पांच कम फिर छ: करचा, और भी करचा है मास ॥१॥ बहत्तर मास खमण जिन किया, दो छम्मासी जाण । तीन अढाइ दो दो किया, दो डेढ मासी वखाण ॥२॥ छम्मासी तप करचो ए, बीर प्रभू मन आन । सूरज आराधो एमने, पाबे पद निर्वान ॥३॥

### छम्मासी तप का स्तवन

गौतम स्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय। महाबीर स्वामी जे जे तप किया, उनका कहिसूं विचार । विल विल वांद वीर जी सहामणा ॥१॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करे. गातां नवनिधि आय । बारे बरसां बीर जी तप कियो, दूर करें सह पाप ॥२॥ बे करजोड़ी ए हूं वीनवूं, श्री जिन शासन राय । नाम लिया थी नवनिधि संपजे, दरसन दुरित पुलाय ॥३॥ नव चौमासा जिनजी जाणिये. एक कियो छम्मास । पांच उणा छ वली जाणिये, बारके कोजी मास ॥४॥ बहुत्तर मास खमण जग जीपता, छ दो मासी रे जान । तीन अढाई दो दो किया, दो दोय मासी वखान ॥ व॰ ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणिये, उत्तम एहना प्रकार । वीच में स्वामी नहिं कियो, नहीं किया चौथो आहार ॥ व॰ ६॥ तिहूँ उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधी बारे जी मास । दोय सौ बेला जिण-जीरा, जाणिये इण गुण तीस विलास ॥व॰ ७॥ तीन सौ पारण जिनजीरा, जाणिये तीन गुणतीस पचास । एह में स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व॰ ८ ॥

### कलश

इम बीर जिनवर सयल सुखकर, अतिह दुक्कर तप

पाली कर्म टाली, स्वामि शिव रमणी वरी ॥ सेवक पभनें वीर जिनवर, चरण वंदित तुम तना । संसार कूप पडंत राखो,आपो स्वामी सुख घना ॥९॥

# ब्रम्मासी तप स्तुति

बीर जिनेश्वर कियो, छम्मासी जान । कइ बार तपस्या कर, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ प्रभु वर हैं दुःख हर, सुखकर जग कल्यान । श्री रत्नसूरिके शिष्य, सूरज करें गुणगान ॥१॥

## बारहमासी तप का स्तवन

त्रिभुवन नायक तं घणी, आदि जिनेसर देव रे । चौसठ इन्द्र करे तुझ, पद पंकज सेव रे ॥ त्रि॰ १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभू तुं थयो, इण अवसरपणि काल रे । तुझ सम अवर न को प्रभू, तूं प्रभु दीनद्याल रे ॥ त्रि॰ २॥ प्रथम तीर्थंकर तूं सही, केवल ज्ञान दिणंद रे। धर्म प्रभावक प्रथम तूं, तूही है प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि॰ ३॥ अंतर अरि जे आतम तणा, काल अनादि थिति जेह रे। ते तप शक्तियें ते हण्या, आतम वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि॰ ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सके, जेहनो अंत न पार रे । द्वादश मास ने तप करबो, तेह अचानक सार रे ॥ त्रि॰ ५॥ एह उत्कृष्ट वरणच्यो, आगममें जिनराज रे। तेकर वूं अति आदरूं, तप बिन किम सरे काज रे ॥ त्रि॰ ६ ॥ तीन सै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे । अवसर आदरे कम बिना, ते पिण भवि सुविशाल रे ॥ त्रि॰ ७॥ ए तप गुरु मुख आदरे, शास्त्र तने अनुसार रे । पडिक्कमणादिक भाव थी. शुद्ध किया मन धार रे ॥ त्रि॰ ८ ॥ चित्त समाधि शुभ भाव थी, घरे ताहरो ध्यान रे। ते नर उत्तम फल लहे, कवि लहे उत्तम ज्ञान रे॥ त्रि॰ ९॥ काल अनादि संसार में, जन्म मरण तणा दुःख रे। ते लहे धर्म पाया विना, तप बिना किम हुए सुक्ख रे ॥ त्रि॰ १०॥ हिब लह्यो नर भव पुण्य थी, विल लिखो श्री जिन धरम रें। तत्त्वनी रुची थई हिव, मिट्यो मन तणों भरम रे ॥ त्रि॰ ११ ॥ भव भव एक जिनराजनो, सरण होज्यो सुखकार रे । कुगुरु कुद्व, कुधर्म ने, मैं

रे ॥ त्रि॰ १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्ष मारग सुविशाल रे । भव फल जे मुझ संपजे, तो फले मंगल माल रे ॥ त्रि॰ १३ ॥ श्री जिन शासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे । धन धन जे नर आदरे, कटे ते करमनो फंद रे ॥ त्रि॰ १४ ॥

### कलश

इम नामि नंदन जगत वंदन, सकल जन आनंदनो । मैं थुण्यो धन दिन आज नो, मुझ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत् # सुनेत्राकास निधि, शशि नयर वालूचरे । श्रीजिन सौभाग्य सुरिन्दके, सुपसाय विजय विमल वरे ॥१५॥

# अट्टाइस लिब्ध तप स्तवन

प्रणमूं प्रथम जिनेसरूं, शुद्ध मने सुखकार । लबधि अद्वावीस जिन कही, आगम ने अधिकार ॥१॥ प्रश्न व्याकरणें प्रगट, भगवती सूत्र मझार। पण्णवणा आवश्यके, वारू लबधि विचार ॥२॥ आंबिल तप कर ऊपजे, लबध्यां अद्वावीस । ए हिव परगट अरथ सूं, सांभलज्यो सुजगीस ॥३॥ ( सकल संसारनी )

अनुक्रमे एह अधिकार गाथा तणे, लबिंध ना नाम परिणाम सरिखा भणे। रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लबिंध छे नाम आमोसही ॥४॥ जासु मलमूत्र औषध समा जाणिये, वीर बप्पोसही लबिंध बखाणिये। क्लेप्म औषध सारिखो जेहनो, तीजी खेछ्लोसही नाम छे तेहनो॥५॥ देहना मैल थी कोढ़ दूरें हुवे, चौथि जछ्लोसही नाम तेहनो ठवे। केश नख रोम सहु अंग फरस्या सही, रहे नहीं रोग सञ्चोसही ते कही॥६॥ एक इन्द्रिय करी पांच इन्द्रिय तणा, भेद जाणे तिका नाम संभिण्णना। वस्तु रूप सहू जाणिये जिन करी, सातमी लब्धी ते अविंध ज्ञाने करी॥७॥

<sup>\*</sup> यह स्तवन १६२० में श्री जिन सौभाग्य सूरिजी महाराज के शासन कालमें श्री विजय विमलजी ने बनाया है।

### ( आब्यो तिहां नरहर )

हिव अंगुल अढ़िये ऊणो मानुष क्षेत्र, संज्ञा पंचेन्द्री तिहां जे वसय विचित्र। तसु मन नो चितित जाणो थूल प्रकार, ते ऋजूमित नामे अहम लबि विचार ॥८॥ संपूरण मानुष क्षेत्र संज्ञावंत, पंचेन्द्रिय जे छे वातां तंत। सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहिये विपुलमिती शुभ नाम ॥९॥ जिण लबि प्रभावें उड़ी जाय आकाश, ते जंघा विद्या चारण लबि प्रकाश। जसु वचन सरापे खिण में खेरूं थाय, ए लबि इंग्यारमी आशीवीश कहवाय॥१०॥ सहु सूखम बादर देखे लोकालोक, ते केवल लिब बारिमये सहू थोक। गणधर पद लहिये तेरम लिब प्रमाण, चवदम लबि करी चवदे पूरव जाण॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरम लबि, सोलम सुखदाई चक्रवर्ति पद रिद्धि। बलदेव तणो पद लहिये सतरमी सार, अहारमी आखा वासुदेव विस्तार॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरे मेल्या जेह संवाद, एहवी अहे वाणी उगणीशम परसाद। भिणयो निव मूले सूत्र अरथ सुविचार, ते कुष्ट कुनुद्धि वीसम लिब विचार॥१३॥ एके पद भिणया आवे पद लख कोड, इक्वीसमी लबि पचाणु सारणी जोड। एक अरथे करी उपजे अरथ अनेक, वावीसम कहिये बीज बुद्धि सुविवेक॥१४॥

### कपूर हुवे अति ऊजलो

सीलह देश तणी सही रे, दाहक शक्ति बखाण । तेह लबधि तेबी-समी रे, तेजो लेखा जान ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुबिचार, आगम ने अधिकार वारू लबधि विचार ॥ च॰ ॥ १५ ॥ चबद प्रवधर सुनि वरू रे, उपजतां सन्देह । रूप नबो रिच मोकले रे, लबधि आहारक एह ॥ च॰ १६ ॥ तेजो लेखा अगन नी रे, उपशमवा जलधार । मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतो लेख्या सार ॥ च॰ १७ ॥ जेन मुक्ति मूं विक्रांचे रे, विविध प्रकारे रूप । सद्गुरु कहे लबीसमी रे, बंकिय लबधि अन्प ॥ च॰ १८ ॥ एकल पात्रे आदरी रे, जीमाड़े कह लाख । नेह अक्खीण महानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च॰ १९ ॥ चूरे

张帝氏只我你的 医路上后在他上后在他上的路路这大<u>的地位,他也是你没有</u>有大名的当然他的他的地位的。2000年的他先

सेन चक्कीसनी रे, संघादिक ने काम । तेह पुलाक लबधि कही रे, अहा-वीसमो नाम ॥ च॰ २० ॥ तेज शीत छेश्या बिहू रे, तेम पुलाक विचार । भगवती सूत्र में भाखियो रे, ए त्रिहु नो अधिकार ॥ च॰ २१ ॥ पण्णवणा आहारनी रे, कलप सूत्र गणधार । तीन तीन इक इक मिली रे, वारू आठ विचार ॥ च॰ २२ ॥ प्रश्न व्याकरणे सही रे, बाकी लब्ब्यां वीश । सांमलता सुख ऊपजे रे, दौलत हुए निश दीश ॥ च॰ २३ ॥

### कलश

संवत्\* सतरे सै छवीसें, मेरु तेरस दिन भले। श्री नगर सुखकर लूणकरणसर, आदि जिन सुपासा उले ॥ वाचना चारज सुगुरु सानिध, विजय हरख विलास ए । श्री धर्म वर्द्धन स्तवन भणतां, प्रगट ज्ञान प्रकास ए ॥२४॥

# चतुर्दश पूर्व चैत्यवन्दन

पहले पद उत्पाद दुजो आग्रायणि जाणे, तीजो वीर्यवाद चौथो अस्तिनास्ति बखाणें । नारगरयण पंचम पूर्व छठे सत्य सुहायो, सप्तम आत्म अष्टम कर्मवाद कहायो ॥१॥ प्रत्याख्यान नवम विद्याप्रवाद दशमें, ग्यारम नाम कल्याण प्राणायु बारम इसमें । क्रिया विशाल तेरमो ए विन्दु-सार चौदमो जाण, इनको नित उठ वन्दना पामें सूरज कल्याण ॥२॥

# चतुर्दश पूर्व तप स्तवन

जिनवर श्री वर्द्धमान चरम तीर्थंकर, प्रह उठी प्रणमूं मुदा ए । श्रुतघर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी नमतां नव निधि सम्पदा ए ॥१॥ चवदे पूरव नाम, सूत्रे पूजुवा वीर जिनन्दे भाखिया ए । ते हिव सुगुरु पसाय, वरण-विस्यूं इहां आगममें जिम उपदिस्या ए ॥२॥ पहिला पूर्व उत्पाद, दुजो आत्रायणी वीर्यवाद तीजो नम् ए । अस्ति नास्ति प्रवाद सत्ता जानिये, नारग रयण पंचम गिणूं ए ॥३॥ छहो सत्यप्रवाद सत्तम आतम कर्म प्रवाद

अ चह स्तवन १७२६ में श्री धर्म नर्द्धन जी महाराज ने वनाया है।

अहम गिणो ए। प्रत्याख्यान प्रवाद नामें नवम, विद्या प्रवाद दशमो कह्यो ए॥४॥ इग्यारम नाम कल्याण प्राणायु बारमो क्रिया विशाल तेरम भणो ए। विन्दुसार इण नाम चवदे ए कह्या, शास्त्र थकी मैं संप्रह्या ए॥५॥

### ॥ श्री विमलाचल शिर तलो ॥

उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण । षट् भाव प्रगट छे ते जहां त्रिपदी भाव विनाण ॥६॥ सर्व द्रव्य पर्याय तणों, जीव विशेष प्रमाण। दुजो पूर्व आग्रायणी छिन्नूं छख पद जाण ॥७॥ पद छख सत्तर जेहनी संख्या परए एह, वीर्च्य प्रबल्ता जीवनी भाखो तीजे तेह ॥८॥ चौथे पूर्व जे कह्यो अस्ति नास्ति प्रवाद, पद संख्या साठ लाखनी सप्तमंगी स्याद्वाद ॥९॥ ग्यान प्रवाद पद पांचमों, सूत्रे आण्यो जोड । मत्यादिक पण भेदसुं पद संख्या इक कोड ॥१०॥ सत्यप्रवाद छडा कहुं भाखं सत्य खरूप । संख्या पद इक कोडनी भाखी आगम अनुष ॥११॥ नित्यानित्य पणो इहां आतम द्रव्य स्वभाव । छव्वीस पद् कोड जेहना सूत्रे आण्या भाव ॥१२॥ कर्म प्रवाद तणों हिये प्रगट पणें अधिकार । लाख असी पद जेहना कोडी इग निरधार ॥१३॥ नवमों पूर्व कहूँ हिवे नामे प्रत्याख्यान । लाख चौरासी जेहना पद संख्या चित आन ॥१४॥ अतिशय गुण संयुत भणी साधन साध्य निदान । विद्या अनुपम सातसौ कोडी बरस छख जान ॥ १५ ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, छन्वीस कोड प्रमाण । ज्योतिष शास्त्र विचारणा चौविह देव कल्याण ॥१६॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन लख इग कोड । प्राण निरोधन जे किया शास्त्रें आण्यो जोड़ ॥१७॥ क्षायिकादिक जे क्रिया छन्द किया सुविशाल । पद संख्या नव कोडनी तेरमी किया विशाल ॥१८॥ छोकसार विन्दु चवदमो नामें अरथ निहाल । पद संख्या इग कोडनी लाख पचवीस सम्माल ॥१९॥ लोक प्रत्यक्ष देखन भणी संख्या गज परिमाण । सोले सहस अरु तीनसौ और तयासी जाण ॥२०॥ पूरव संख्या ए कही गुणमाला थी देख । आगे बुधजन साधज्यो वाकी देश विञोष ॥२१॥

### ॥ वीर जिनेसर उपदिसे ॥

सूत्र गूर्थे गणधरा, अरथें अरिहन्त भाखे रे। ते श्रुतज्ञान नमूं सदा पाप तिमिर जिम नासे रे ॥२२॥ वाणी रे जिणंद नी, सुणज्यो चित्ते हित आणी रे । तत्त्व रमणता अनुसरे सम्पूरणगुण खानी रे ॥२३॥ विषय कषाय तजी करी ज्ञान भगत उरघारी रे । विधि संयुत जिन मन्दिरे प्रभु मुख 也是这个人,我们是是一个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是这样,我们是这样,我们是这个人,我们是这个人,我们是这一个人,我们是这个人,我们也是这一个人,我们 पास जुहारी रे ॥२८॥ तप जप संयम आदरी श्री श्रुतज्ञान निधानो रे । सद्गुरु चरण नमी करी संवर जोग प्रधानो रे ॥२५॥ अक्षत लेई ऊजला गहुंछी सुन्दर कीजे रे। नाण दंसण चारित्र नी ढिगछी तीन घरीजे रे ॥२६॥ चवद पूर्व व्रतइणपरे सुगुरु संजोगे लेई रे। विधि सूं पुस्तक पूजिये, चित्त अति आदर देई रे ॥२७॥ इम तप संपूरण थयां ऊजमणे हिव कीजे रे । घर सारूं घन खरचने नरमव छाहो छीजे रे ॥२८॥ पूठा परत विटांगणा पूरब नाम प्रमाणो रे । नवकर वाली कोथली लेखण ठवणी जाणो रे ॥२९॥ देहरे देव जुहारने, आरतीमंगल कीजे रें। स्नात्र पूजा विल साचवी, तत्त्व सुधारस पीजे रे ॥३०॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदे रे । चवद रज्जु शिरोमणी, जीव अक्षय गति वेदे रे ॥१०॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोई रे । भवियण पिण तुम आदरो, ज्यूं भव भ्रमण न होई रे ॥३१॥

### कलश

इम सयल सुखकर गच्छ खरतर, तपे रवि जिम क्रांत ए। सौभाग्य सूरि मुणिद इण पर, कह्यो पूर्व वृतान्त ए ॥ संवत अठारे वरस छिन्नूं, नगर श्री वालू चरे । ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां, सयल मन वंछिते फले ॥३२॥

चतुर्दश पूर्व स्तुति

चौदह पूर्व जिनेश्वर, भारन्या बारम्बार। गणधर पटघारी, धारया हृदय मझार ॥ तपस्या इनकी करिये, गुणकर आतम जान । शुध मनसे सेवो, "सूरज" गुणमणि खान ॥१॥

### तिलक तपस्या का स्तवन

शासन देवी शारदा वाणी सुधारस वेल । वालक हित भनि वक्तसिये, सुबुद्धि सुरङ्गी रेल ॥१॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम । तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुण ठाम ॥२॥

### ( वीर जिणेसर उपदिसे )

कमला जिम कुंडल पुरे, भुजवल नरपित भीमो रे। पदम नी पदम सुवास ना, खेत गज स्वप्ने नीमो रे॥ प०१॥ परतच्छ फल ए पुण्य ना, प्रसवी सुता पूरे मासे रे। दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकासे रे॥ प०२॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणें किर रंभा रे। देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ़ बंमा रे॥ प०३॥ प्रतिमा पूजे शांति नी, देवें दीधी त्रिकालो रे। मात पिता प्रमोद सूं, स्वयंवर वर मालो रे॥प०॥। उवझायाधिप श्री निषध नो, नल लिखियो निलाडे रे। आनन्द सूं पथ आवतां, पूरव पुण्य उघाडें रे॥ प०५॥ मज्झम रयणी तम भरी, मधुर वकुंत इहां वन में रे। मणि भाले तेज दिन मणी, जाग्रत देखी अहो मन में रे॥ प०६॥ ज्ञानधरी गुरु कोइ मिले, पूलिये एह प्रसन्नो रे। कर्म बले मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे॥ प०७॥ पंच जीत पंच पालतां, टालता दुस्सह सबला रे। संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे॥ प०८॥

### ॥ दोहा ॥

मिण तेजें मुनि तरु ठवे, रथ थकी स्त्री भरतार । देवे तीन प्रदक्षिणा, विधिसूं चरण जुहार ॥९॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय । को तप परभव तिलक है, कहिये श्री मुनिराय ॥१०॥

# (भरत भाव सूं ए)

मधुर स्वरे मुनिवर कहे ए, ज्ञानी गुरु सुपसाय ए, दीपक सहु लीक ना ए। कर्म शुभाशुभ परभवे ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकडी ए ॥११॥ ओहि नाण भव प्रागनो ए, नृप सुने निरमल भाव

समिकत सहायो ए । धर्मवती को नृप वधु ए, जाण्यो है तत्त्व प्रस्ताव साची जिन वांचना ए ॥१२॥ चौथ प्रमुख नृप चंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह भले चित भावसूं ए। नवांग पूजा तिलक सूं ए, चाढ़े जिन चौवीस रयण कंचण चल्ल्या ए॥१३॥ तिलक तिलक सें पामियो ए, समिकत एह सतीस जनम सफलो गिणो ए। भगवन तप विधि भाखिये ए, नल कहे बोध करीस, पीहर षट् काय ना ए॥१६॥ आदिनाय अरिहंत ना ए षट् उपवास कहीस, त्री चौवीहारसूं ए। चौथ दोय जिन वीर ना ए, अजितादिक बाबीस आणा गुरु शिर वही ए॥१५॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढ़ाय तारक जगदीसने ए। उद्यापन संघ मित्रसूं ए, जन्म सफल नर राय, सूधे मन साधिये ए॥१६॥ सुन वाणी समिकत ग्रहें ए, पय प्रणमी गुरु वीर चित्त उमाहियो ए। इण पर जे भिव आदरें ए थाये चरम शरीर, मूल सुख शासतो ए॥१७॥

### कलश

श्री शांति दाता त्रिजग त्राता, भविक ध्याता सुखकरा। इम सतीय साध्यो तप आराध्यो, सुजस वाध्यो शिवधरा॥ आगमे भाखे सुरीय साखे, सुगुरु भाखे सुण थया। शुद्ध ध्याने भविक भावें, विजय विमल जिनवर कह्या॥१८॥

# सोलिये तप का स्तवन

वीर जिनेसर भाखियो रे लाल, सहु व्रत में सिरताज भवि प्राणी रे। कषाय गंजन तप आदरो रे लाल, इणधी पातिक जाय॥ मा॰ वी॰ १॥ कोड वरस तप आदरे रे लाल, कोघ गमावे फल तास। मान करे जे प्राणियां रे लाल, ते जग में न सुहाय॥ म॰ वी २॥ व्रत में माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मिल्लनाथ। रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आषाढ़ भूति गणिका साथ॥ म॰ वी॰ ३॥ चार कषाय छे मूलगारे लाल, उत्तम सोले भेद। इम भव भव भमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ भ॰ वी॰ ४॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुःख हाण।

的时期时间,他们是这个人,我们是一张的时期的第三人称:"我们的是是一个人,我们可以的这个人,我们也不是我的,我们也不是我们,我们就是这个人的,我们也不是不是,我们

नीवी व्रत दुजो कह्यों रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ भ० वी ५ ॥ आम्बिल नो फल बहु कह्यों रे लाल, उपजे लबधि अपार । उपवास करतां भावसूं रे लाल, पामें भव नो पार ॥ भ० वी० ६ ॥ इस दिन सोले तप करों रे लाल, पूरण व्रत ए थाय । देव गुरू पूजा करें रे लाल, मन वंछित फल पाय ॥ नर सुर ऋदि पिण भोगवे रे लाल, निश्चय सुगति जाय ॥ भ० वी० ७ ॥

### उपधान तप स्तवन

श्री महावीर घरम परकासे, बैठी परषद बार जी। अमृत वचन सुनी अित मीठा, पामें हरख अपार जी।।१॥ सुनो सुनो रे श्रावक उपधान वह्या विन किम सूझे नवकार जी। उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह भण्यो अधिकार जी।। सुनो॰ २॥ महानिशीथ सिद्धान्त मांहे पिण, उपधान तप विस्तारें जी। अनुक्रम शुद्ध परस्पर दीसे, सुविहित गच्छ आचारें जी॥ सुनो॰ ३॥ तप उपधान वह्यां बिन किरिया, तुच्छ अलप फल जान जी। जे उपधान वह्यां नरनारी तेह नो जनम प्रमाण जी॥ सुनो॰ १॥ तप उपधान कह्यों सिद्धान्ते, जो निव मानें जेह जी। अरिहन्त देव नी आण विराधे, भमस्ये भव भव तेह जी॥ सुनो॰ ५॥ अधड्या घाट समा नरनारी, बिन उपधानें होय जी। किरिया करतां आदेश निरदेश, काम सरें नहीं कोय जी॥ सुनो॰ ६॥ इक घेवर ने खांडे भिरयो, अतिचणो मीठो थाय जी। एक श्रावक उपधान वहें तो, धनधन ते कहिवाय जी॥ सुनो॰ ७॥

### ॥ ढाल ॥

नवकार तणो तप पहिलो वीसड जाण, इरिया वहिनो तप बीजो वीसड आण । इण विहु उपधाने निश्चय नाण मंडाण, बारे उपवास गुरु मुख़ सेवे वाण ॥ सुनो॰ ८ ॥ पैंतीसड़ त्रीजो णमुत्थुणं उपधान, त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान । अरिहंत चेई तप चौथो चौकड एह, उपवास अढ़ाई वाण एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस्स तप अहावीसड़ 分余,大大安全的时间的时候,我们是不是不是不是不是不是一个,我们的一个,我们也是不是一个,我们就是一个,我们就是一个一个,我们就是一个一个,我们就是一个一个,我们

नाम, साढ़ा पनरह उपवास वायण त्रिण ठाम । पुनलर बरदी तप छड़ो छक्कड सार, साढ़ा त्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणं खुद्धाणं सातमो उपधान माल, उपवास करे इक चौविहार तत्काल । एक वाणि करे विल गुरु सुख सरस रसाल, गछनायक पासे पहरे माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घरे सारूं वारूं खरचे धन बहु भंग । अति उच्छव कीजे राती जोगो दिल खोल, गीत गान गवावे पावे अति रंगरोल ॥१२॥

### ॥ ढाल ॥

ए साते उपधान विधि सो जे बहे ते सुधी किरिया करे ए। खिण न करे परमाद, जीव जतन करइ पूजि पूजि पगलां भरे ए॥१३॥ न करे कोध कषाय हम हम हसें नहीं मरम केह नो निव कहे ए। नाणे घर नो मोह उत्कृष्टी करे, साधुतणी रहनी रहे ए॥१४॥ पहुर सीम सिज्झाय, किर पोरिसि भणी ऊंचे स्वर बोले नहीं ए। मन मांहें मावे एम, धन धन ए दिन, नरभव मांहि सफल सही ए॥१५॥ जे साते उपधान, विधिसे तीविहे पहिरे माल सोहामणी ए। तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फलदायक करम निर्जरा अति घणी ए॥१६॥ परभव पामें शुद्धि, देवतणां सुख बत्तीस बद्ध नाटक पढे ए। पावे लील विलास अनुक्रम, शिवसुख चढ़ती पदवी जे चढ़े॥१७॥

### कलश

इम बीर जिनवर भुवन दिनयर मात त्रिसला नन्द नो । उपधान नां फल कहे उत्तम भवियजन आणंदनो । जिनचन्द युग परधान सद्गुरु सकलचन्द भुनीसरो । तसु सीस बाचक समय सुन्दर भणे वंछित सुखकरो ॥ १८॥

# पैंतालीस आगम स्तवन

चौबीसे श्री तीर्थपति, नम् देव अरिहंत । अर्थ प्रकाशे गण पुर, द्वादश अंग महंत ॥१॥ न्निपदि रुहि गणपति रचे, सूत्र अर्थ संयोग ।

अक्षर रूपे सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥२॥ टीका करतां जगत्गुरु, सूत्र करे गणधार । पंचागी युत विस्तरे, नय निक्षेप विस्तार ॥३॥ दृषम काल दुर्भिक्ष में, भूले बारम अंग । कंठ पाठ से लिखित कर, रचना रची अभंग ॥४॥ खंदिल अरु देविड्ड गणि, आचारज सय पंच । चौरासी आगम लिखे, कोटि ग्रन्थ तज खंच ॥५॥ काल दोष से अब मिले, आगम पुँतालीस । ताको मुनि विवरण करे, माने बिसवा बीस ॥६॥

### ( जगगुरु त्रिशला नंदजी )

आचारांग पहिलो कह्यो जी, मुनि आचार विचार । स्यगडांग दृजो अछे जी, षट मत दर्शन सार ॥ जगत्गुरु भाखे वीर जिनंद ॥७॥ दस ठाणा ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात । सहस छतीस भला प्रशन जी, भगवई अंग विख्यात ॥ ज॰ ८ ॥ धर्म कथा ज्ञाता भणी जी, दस श्रावक व्रत घार । दसाउपासक सातमो जी, अंग कह्यो निरधार ॥ ज॰ ९ ॥ अंतगड केवली जे यया जी, वरणन अष्टम अंग । पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरो ववाई चंग ॥ ज॰ १० ॥ अंगुष्टादिक प्रश्नो जी, प्रश्न व्याकरण नाम । सुख दुःखना फल भाखिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज॰ ११ ॥ अठारे सहस आचारांगमें जी, पद संख्या परिमाण । वर्ण संख्या ते पद हुन्ने जी, ठाण हुगुण सब जाण ॥ ज॰ १२ ॥ उववाई ऊपांगमें जी, कोणिक अंबड रूप । वर्णन नगरी आदि दे जी, सांभल भविजन चूप ॥ ज॰ १३ ॥ सूरियाभ पूजा करी जी, जिन प्रति मानव रंग । द्रव्य भाव बिहुं भेद्सूं जी, राय प्रश्नी चित चंग ॥ ज॰ १४ ॥ जीव तणो अभिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव । जीवासिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृति बहुविध साव ॥ज०१५॥ पन्नवणा में जान ज्यो जी, जीवा जीव विचार । जम्बूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी निरधार ॥ ज॰ १६ ॥ सूरचन्द्र विग्रह गती जी, पन्नति विहुं जान । कप्पिया कप्प वर्डिसया जी, पुष्फिया नाम वखान ॥ ज॰ १७ ॥ पुष्फ चूलिया जाणिये जी, बिह्न दशा इण नाम । नामथी अर्थ पिछाणि इये जी, सांमलता सुखधाम ॥ ज॰ १८ ॥

## ( ख्याली लाल अणवट रंग लागी )

छेद तणा प्रायश्चितना जी, छेद छए ए जान । वृहत्करूप विवहार में जी, भाख्यो भगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञानी लाल इणसूं नित राचो । राचो राचो रे भविक, दिलदार इण स्र् नित राचो ॥ सुज्ञा॰ १९॥ महा निषीये भाखियो जी, जिन पूजा बिहुं भेद । श्रावक द्रव्ये भाव सूं जी, मुनिवर भाव उमेद ॥ सुज्ञा॰ २० ॥ जीत कल्प विल निसीय छे जी, और दशा श्रुतस्कंघ । दश पयन्ना जाणिये जी, चौसरणसंयार प्रबंघ ॥ सुज्ञा॰ २१ ॥ तंडुल वयाली चंदाविञ्झया, गणविद्या अभिधान । देवविज्झया वीर धुवो जी, गच्छाचार निधान ॥ सुज्ञा॰ २२ ॥ ज्योतिष करण्ड महा पच्चक्खाण जी, चार सूत्र छे मूल । आवश्यक दशवै कालिक जी, उत्तरा ध्ययन अमूल ॥ सुज्ञा॰ २३॥ चारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जान। तेह न्याय निक्षेप थी जी, अनुयोग द्वार प्रधान ॥ सुज्ञा॰ २४ ॥ द्रव्यानुयोग छए द्रव्य नी जी, चर्चा विधि विस्तार । चरण करन अनुयोग में जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सुज्ञा॰ २५ ॥ गणतानुयोग गणना करी जी, पृथ्वी निरी विमाण । वर्ग मूळ धन मूळ थी जी, जानो चतुर सुजान ॥ सुज्ञा॰ २६ ॥ धर्म कथा अनुयोग में जी, धर्म कथा दृष्टान्त । ए चारों विस्तारिया जी, पैतालीस सिद्धान्त ॥ सुज्ञ॰ २७ ॥

# ( सांगानेर विराजे )

सुन सुन गौतम वाणी, इस वीर वन्दे गुणखाणी रे। मवियां आगमसूं मन छावो, मन कल्पित बात न गावो रे॥ भ० २८ ॥ नंदी सूत्र चिर नन्दो, यामें पंच ज्ञान ने वंदो रे। ज्ञानना भेद वखाण्या, मित अहावीसे आण्या रे॥ भ० २९ ॥ श्रुत चवदे वीसां भेद ए, मिथ्यातम ने छेदे रे। अविध छे असंख्य प्रकारे, मन पर्यव दुय भेद घारे रे॥ भ० ३० ॥ केवळएक प्रकासे, ए सब विधिनंदी भासे। एतो सहु आगमनी नूंद, स्याद्वाद भंगनी वृन्द रे॥ भ० ३१ ॥ अंग उपांग नी टीका, कत्तों ने नमूं निरमीका रे। प्रथम शीछां- गाचारी, श्री अभयदेव बिछहारी रे॥ भ० ३२ ॥ मळयगिरि गुरु स्वामी,

इत्यादिक ने सिर नामी रे। सामान्य विशेषे भाखी, निश्चय व्यवहार छे साखी रे॥ भ॰ ३३॥ उत्सर्ग वचन छे केंद्र, अपवाद वचन ने छेंद्र रे। इक मन सूं आराधो, मन बंछित सगला साधो रे॥ भ॰ ३४॥ (मंगल कमला कंद ए)

पंतालीस आगम तणी ए, हिव तप विधि सुणज्यो हित भणी ए। दुज पांचम एकादशी ए, ज्ञान तिथी तप थी कर्म जाय खसी ए॥३५॥ शक्ति छते उपवास ए, आंबिल नीवी थी उद्घास ए। एकासण अथवा करे ए, एम पेंतालीस दिन आचार ए॥३६॥ जाप करे दो हजार ए, देव बंदन पूजन सार ए। प्रति क्रमण करे दोनूं टंक ए, आगम सुणे अर्थ निसंक ए॥३६॥ जजमणो हित चित्त करे ए, गुरु भक्ति चित्त सूं आदरे ए। भक्ति करे साहमी तणी ए, जे पढ़े पढ़ावे ते भणी ए॥३८॥ अन्न बस्च पुस्तक करे दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए। ते पामें श्रुत ज्ञान ए, क्रम थी लहे पद निरवाण ए॥३९॥

### कलश

5.分子便便说了了一个我们的时候就是一个我们的,我们有一个的时候,就是我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们们的人,我们们们的人,我们们们们的人,这一个人,我们们的人,我们们们的人,我们们们的人,我们们们

शुम नंद सर निधि चन्द्र वरसे\*, माघ सुदि पंचिम दिने। वर नयर बीकानेर सुन्दर, बहत्खरतर गण घणे।। गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक, राम गणि ऋष्टि सार ए। इम करिय स्तवना सुय महोदय, सदा जय जयकार ए॥४०॥

# पैतालिस आगम का गुणना

( इग्यारे अंग )

१ श्री आचारांग जी सूत्राय नमः । २ श्री सुयगडांग जी सूत्राय नमः । ३ श्री ठाणांग जी सूत्राय नमः । ६ श्री समवायांग जी सूत्राय नमः । ५ श्री भगवती जी सूत्राय नमः । ६ श्री जाता धर्म जी सूत्राय नमः । ७ श्री उपासगदशा जी सूत्राय नमः । ८ श्री अंत गडदशा जी सूत्राय नमः । ९ श्री अणुत्तरो ववाइ जी सूत्राय नमः । १० श्री प्रश्न व्याकरण जी सूत्राय नमः । ११ श्री विपाक जी सूत्राय नमः ।

अ यह रतवन १६५६ में उपाध्याय रामलाल जी गणी ने बनाया है।

# ( वारह उपांगों के नाम )

१ श्री उववाई जी स्त्राय नमः । २ श्री रायपसेणी जी स्त्राय नमः । ३ श्री जिवाभिगम जी स्त्राय नमः । ४ श्री पण्णवणा जी स्त्राय नमः । ५ श्री चन्द्र पण्णिच जी स्त्राय नमः । ६ श्री चन्द्र पण्णिच जी स्त्राय नमः । ६ श्री चन्द्र पण्णिच जी स्त्राय नमः । ८ श्रीकप्पियाजी स्त्राय नमः । ९ श्री क्प्पविं स्त्राय नमः । १० श्री पुष्फिया जी स्त्राय नमः । १० श्री पुष्फिया जी स्त्राय नमः । ११ श्री विद्ध दसा जी स्त्राय नमः । १२ श्री विद्ध दसा जी स्त्राय नमः ।

### ॥ ग्यारह अंग ॥

१—आचारांग जी सूत्र में विशेष करके सामुओं के आचारों का वर्णन ह । २—सुय गढांग जी सूत्र में पट् दर्शनों का खण्डन और जैन धर्म का मण्डन है । ३—ठाणांग जी सूत्र में दराठाणे हैं हर एक ठाणे में एक एक चीज का वर्णन है । ४—समवायांग जी सूत्र में पांच सम वार्यों का वर्णन है । ४—भगवती जी सूत्र में गौतम स्वामी के प्रश्न और भगवान महावीर स्वामी का उत्तर । ६—ज्ञाता जी सूत्र में कथायें और द्रौपदी की पूजा का वर्णन है । ७—उपा- शक दशा जी सूत्र में दश आवकों का वर्णन है । ८—अन्तगड दशा जी सूत्र में अन्त समय में केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जाने वाले जीवों का वर्णन है । ६—अनुत्तरीव वाई जी सूत्रमें काकन्दी के धन्ना जी की तपस्या का वर्णन है । १०—प्रश्न व्याकरण जी सूत्र में आश्रव द्वार और संवर द्वार का वर्णन है । ११—कर्म विपाक जी सूत्र में दश दुःख पाकर और दश सुख पाकर मोक्ष जाने वाले जीवों का वर्णन है ।

### ॥ बारह उपांग ॥

१—डववाइ जी सूत्र में कोणिक, नगरी का वर्णन है। १—जीवासिगम जी सूत्र में जीव पदार्थ की जानकारी का वर्णन है। ३—पण्णवणा जी सूत्र में जीव अजब का विचार है। ४—जम्बु द्वीप पण्णित्तमें जम्बु द्वीप का वर्णन है। ५—जन्द पण्णित में चन्द्र आदि ज्योतिप देवों का वर्णन है। ६—सूर पण्णित में भी ज्योतिप का वर्णन है। ७—निरियाविष्ठभाजी में चेडाराजा और कीणिक राजा की छड़ाई का वर्णन है। ६—पुण्किया जी में पदाकुमार आदि दश भाइयों के देवछोक जाने का वर्णन है। ६—पुण्किया जी में चन्द्र, सूर्व देवों का वर्णन है। १०—पुण्क चूछिया में श्री देवी आदि दश देवियों का वर्णन है। ११—विष्हदशा में निसह आदि वारह भाइयों का वर्णन है। १२—रायपसेणी में केशी स्वामी और प्रदेशी राजा का वर्णन है।

१ श्री व्यवहार छेदजी सूत्राय नमः। २ श्रीवृहत्कल्पजी सूत्राय नमः। ३ श्री दशाश्रुत स्कंघ जी सूत्राय नमः । ४ श्री निषीय जी सूत्राय नमः । ५ श्री महानिषीय जी सूत्राय नमः । ६ श्री जीत कल्प जी सूत्राय नमः ।

(छः छेद का नाम गुणना)
१ श्री व्यवहार छेदजी सूत्राय नमः। २ श्रीवृहत्करपजी सूत्राय नमः
३ श्री दशाश्रुत स्कंघ जी सूत्राय नमः। १ श्री निषीय जी सूत्राय नमः
५ श्री महानिषीय जी सूत्राय नमः। १ श्री जीत कल्प जी सूत्राय नमः
॥ दस पयन्ना नाम गुणना ॥
१ चउसरण पहण्णा जी सूत्राय नमः। १ श्री चंदा विव्हिया ।
सूत्राय नमः। १ श्री गण विव्हिया जी सूत्राय नमः। १ श्री देव विव्हिय जी सूत्राय नमः। १ श्री गण विव्हिया जी सूत्राय नमः। १ श्री देव विव्हिय जी सूत्राय नमः। १ श्री अयोतिष्करण्ड जी सूत्राय नमः। १ श्री अयोवस्य नमः। १ श्री अयोवस्य नमः। १ श्री अव्यव्यन जी सूत्राय नमः। १ श्री आवश्यक जी सूत्राय नमः। १ श्री उत्तराध्ययन जी सूत्राय नमः। १ श्री आवश्यक जी सूत्राय नमः। १ श्री अवस्य नमः।
१ श्रीअतुयोग द्वारजी सृत्राय नमः। १ श्री नन्दी सूत्रजी सूत्रायनम
गणधर तपस्या गुणना
१ श्री इन्द्रभृति जी गणधराय नमः। १ श्री व्यक्तभृति जी गणधराय नमः। १ श्री सुधर्मी खामी जी गणधराय नमः। ६ श्री मण्डित स्वाव जी गणधराय नमः। १ श्री सुधर्मी खामी जी गणधराय नमः। ६ श्री मण्डित स्वाव जी गणधराय नमः। १ श्री अचल जी गणधराय नमः। १ श्री अक्तिम् जी गणधराय नमः। १ श्री अचल जी गणधराय नमः। १ श्री मेताय जी गणधराय नमः। १ श्री अचल जी गणधराय नमः। । १० श्री मेताय जी गणधराय नमः। १ श्री स्वर्ण समः। न्वकार माहात्म्य
(छंद)
सुख कारण भवियण, समरो नित नवकार। जिन शासन आगम १ चउसरण पद्मणा जी सूत्राय नमः । २ संथार पद्मणा जी सूत्राय नमः । ३ श्री तंंडुल पइण्णा जी सूत्राय नमः । ४ श्री चंदा विज्झिया जी सूत्राय नमः । ५ श्री गण विज्झिया जी सूत्राय नमः । ६ श्री देव विज्झिया जी सूत्राय नमः। ७ श्री वीर थुवो जी सूत्राय नमः। ८ श्री गच्छाचार जी सुत्राय नमः। ९ श्री ज्योतिष्करण्ड जी सुत्राय नमः। १० श्री महा

१ श्री आवश्यक जी सूत्राय नमः। २ श्री उत्तराध्ययन जी सूत्राय नमः। ३ श्री ओघनिर्युक्ति जी सूत्राय नमः। ४ श्री दशवैकालिक जी

१ श्रीअनुयोग द्वारजी सूत्राय नमः । २ श्रीनन्दी सूत्रजी सूत्रायनमः।

१ श्री इन्द्रभूति जी गणधराय नमः। २ श्री अग्निभूति जी गणधराय नमः। ३श्री वायुभूति जी गणधराय नमः। ४ श्री व्यक्तभूति जी गणधराय नमः । ५ श्री सुधर्मा स्वामी जी गणधराय नमः । ६ श्री मण्डित स्वामी जी गणधराय नमः । ७ श्री मौर्य्य पुत्र जी गणधराय नमः । ८ श्री अकम्पित जी गणधराय नमः । ९ श्री अचल जी गणधराय नमः । १० श्री मेतार्य्य

TO SECTION OF A SECTION OF THE CONTRACT CONTRACT OF THE CONTRA

चवदे पूरव सार ॥ इन मंत्र नि महिमा, कहनां छहुं न पार । मुरतरु जिम र्चितित, बंछित फल दातार ॥१॥ सुर दानव मानव, सेव करें कर जोड । भू मंडल विचरे, तारे भवियण कोड ॥ सुर छंदे विलसे, अतिशय जासु अनन्त । पहिले पद निमये, अरिगंजन अरिहंत ॥२॥ जे पनरे भेदें सिद्ध थया भगवंत । पंचिम गित पहुंता, अप्ट करम करि अंत ॥ कल अकल सरूपी, पंचानंतक जेह । सिद्धना पय प्रणमूं, बीजे पद बिल एह ॥३॥ गन्छभार धुरंघर, मुन्दर शशिहर सोम । कर शारण बारण, गुण छत्तीसे तोम ॥ श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जैम गंभीर । तीज पद निमये, आचारज गुण थीर ॥थ॥ श्रुतघर गुण आगम, सूत्र मणात्रे सार । तप वित्र संयोगे, भाखे अरय दिचार ॥ मुनिवर गुण युक्ता, ते कहिये उवझाय। चौयं पद निमयं, अहनिशि तेह ना पाय ॥५॥ पंचाश्रव टाले, पाले पंचा चार । तपसी गुणवारी, वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोक मांहि ते साथ । त्रिविधे ते प्रणमृं, परमारथ इन छाष ॥६॥ अरि हरि करि साइण, डाइण भृत देताल । सब पाप पणासे, विलसे नंगल माल ॥ इम समरचां संकट, दूर दले तत्काल । जंपे जिंग गुण इम, सुरवर सीस रसाल ॥ श।

# नंदीश्वर द्वीप स्तवन

नंदीसर वावन जिनास्य, शास्त्रता चौमुल सोहे रे। ऋषमानन चंद्रानन वारिषण, वर्डमान मन मोहे रे॥ नं॰ १॥ आठमो दीप नंदीसर अद्भुत, बस्याकार विराजे रे। तेहने मध्ये चहुं दिशि शोमित, अंजन गिरिवर द्याजे रे॥ नं॰ २॥ जोयण सहस चौराती ऊंचा, ऊंच पने अनिरामा रे। मूले प्रयुस्त सहस इस जोयण, उवरी सहस इक स्थामा रे॥ नं॰ २॥ ते उपर प्रासाद प्रमुना, अति उत्तंग उदारा रे। साधू विद्या जंघा चारण, वांदे विविध प्रकारा रे॥ नं॰ १॥ चैस चैस इक सौ चौत्रीस, विंव संख्या सब दाखी रे। ध्याबो सेवो मविजन मगतें, सुध आगम कर साखी रे॥ नं॰ ५॥ ऊंच पणे सहु जोयण

,这种人们们们,我们们们们们的人,我们们们们们们的人们的人们们们的人们们的人们们的一个,我们们们们的一个,我们们们们们的一个,我们们们们的一个,我们们们们们的一个

बहत्तर, सौ जोयण आयामा रे। पिहुल पणे पचास जोयण ना, प्रासाद सुठामा रे ॥ नं॰ ६ ॥ धनुष पांच से आयत प्रमु नी, विविध रतनमई काया रे। जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं॰ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उबरे, चौमुख चार विशाला रे । वाव वाव विच इक इक पर्वत, राजत रंग रसाला रें॥ नं॰ ८॥ चौसठ सहस जोयण उत्तंगे, दस सहस सत पिहुला रे । चिह्नं दिसि सील सहस दिधमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं॰ ९ ॥ वावनें अंतर विदिशें, रतिकर पर्वत रूडा रे । दोय दोय संख्या जगदीशें, कह्या नहीं ए कूडा रे ॥ नं॰ १० ॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस दस सहस विस्तारा रे । झहुरि सम संठाण जगत्गुरु, निश्चय ए निरघारचा रे ॥ नं॰ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजन गिरि परमाणे रे । जिन पंडिमा नी संख्या तेहिज, श्री जिनराज वखाणे रे ॥ नं॰ १२ ॥ इम प्रासाद प्रभू ना बावन, नंदीसर वर दीपे रें । द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भट जीते रे ॥ नं १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें, जीवाभीगम जाणो रे । इम अधिकार छे ग्रन्थ अनेकें, इहां संका मत आणो रे ॥ नं॰ १४ ॥ जिम सुरपति विरचे तिहां पूजा, ते अनुभव इहां ख्यावो रे । ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचन्द्र गुण गावो रे ॥ नं० १५ ॥

# शासन\* देवी स्तवन

( सरसति शासन बीनवूं रे, सद्गुरु छागूं पाय रे )

शासन देवी आवो नो हमारे घर पाहुनी हो लाल । गढ पर्वतसे ऊतरी रे, हाथ कमल सीस फूल रे। शासन देवी भलिभलि भगत करीपरें रे, शासन देवी आओ खरतर गच्छ पाहुनी हो लाल ॥१॥ सिर पर सोहे फूल डोरे, राखड़ी को अधिक बनाव रे शासन देवी । नाकें बेसून बन

अबह स्तवन उद्यापन तपस्यादि महोत्सव में रात्रि को घर में जागरण करते समय सम्प्रण भजनों से पहले शासन देवी का स्तवन पढ़ा जाता है तथा उसकी पूजन की जाती है। इसके बाद दूसरे स्तवन पढ़े जाते हैं।

रही रे, चुन्नी को अधिक जड़ाव रे ॥ शासन॰ २ ॥ काने कुंडल जगमगे रे, झम्मक रत्न सजाव रे ॥ शासन० ॥ गले में सोहे दुगदुगी रे माला को अधिक प्रभाव रे ॥ शासन॰ ३ ॥ काजल रेख सुहावनी रे. निलवट टीकी ळाळ रे ॥ शासन॰ ॥ स्तनपर पहने कांचळी रे, गळ मोतियन की माळ रे ॥ शासन॰ ४ ॥ बांहें बाजुबन्द बोरखा रे, झिमयां को अधिक सजाब रे शासन॰ ॥ हाथे सोहे चूडली रे, गजरा को अधिक जमाव रे ॥ शासन॰ ५ ॥ अंगूठे सोवत आरसी रे, अंगूठी को अधिक प्रयास रे ॥ शासन॰ ॥ पाए सोहे घूघरी रे, अनवट को अधिक दिखाव रे ॥ शासन॰ ६ ॥ करियां पटोला घस मसें रे, ओढन दक्षनी चीर रे॥ शासन॰ ॥ श्री संघ देवे बेसने रे, श्रावकण्यां लागे पाय रे ॥ शासन॰ ७ ॥ शासन देवी आवे घर आंगने रे, हुआ मंगल उछाह रे॥ शासन॰॥ चोवा चन्दन उबटना रे थारा पखार्लू पाए रे ॥ शासन॰ ८ ॥ मोतियां थाल भरी करी रे, शासन देवी को बंघोवें रे ॥ शासन॰ ॥ चावल, राधा ऊजला रे । हरिया मूंगा की दाल रे ॥ शासन॰ ९ ॥ पूरी पोर्ज सतपुड़ी रे, त्रेपन तीसे थाल रे ॥ शासन॰ ॥ घी भरी उठाऊं टोकनी रे, पापड़ और पकवान रे ॥ शासन॰ १० ॥ खाजा, लाडू लापसी रे, घेवर सुन्दर तैयार रे ॥ शासन० ॥ बासठ, त्रेसठ सालना रे, चौसठ बीड़िया बघार रे ॥ शासन॰ ११ ॥ पुरसन वाली पद्मिनी रे, नेवर नो झंकार रे ॥ शासन॰ ॥ आरण पुरानी ओढनी रे, देवें भर भर थाल रे ॥ शासन॰ १२ ॥ गंगा जल भर लाऊं गागरी रे, लेवे चूल्लू चूल्लू पसार रे ॥ शासन॰ ॥ लॉग, डोडा इलायची रे, बिडला पान पचास रें ॥ शासन॰ १३॥ श्री संघ वीनवे बांह सूरे, श्रावक मिल मिल आये रे ॥ शासन० ॥ जिन प्रतिमा जिन देहरें रे, मंगेल महोच्छव थाये रे ॥ शासन॰ १४॥ पूजा रचें बहु भाव सूं रे, नित नित जोगरन उच्छाह रे ॥ शासन॰ ॥ पूजा प्रतिष्ठा महोत्सवे रे, सानिध करज्यो मात रे ॥शासन॰ १५॥

# आलोयण वृद्ध स्तवन

这个时间,我们的时候,我们的时候,我们就是这种的时候,我们就是这种的时候,我们就是这种的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的时候,我们的 बे करजोड़ी वीनवूं जी, सुनि स्वामी सुविदीत । कूड़ कपट मूंकी करी

जी, बात कहूं आपबीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ वीनति अवधार, तुं समस्य त्रिभुवन घणी जी, मुझने दुस्तर तार ॥ कृ॰ २ ॥ भवसागर ् भमतां थकां जी, दीठां दुःख अनंत । भाव संयोगे भेटियो जी, भय भंजन भगवंत ॥ कृ॰ ३ ॥ जे दुख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुःख। पर दुःख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवग ने दो सुक्ख ॥ ऋ॰ ४ ॥ आलोयण लीघां पखे जी, जीव रुछे संसार । रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुणो अधिकार ॥ कु॰ ५ ॥ दूषम काले दोहिलो जी, सूघी गुरु संयोग । परमा-रय पीछे नहीं जी, गडर प्रवाही लोक ॥ कु॰ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोऊं आज । माय बाप आगल वोलतां जी, वालक केही लाज ॥ कृ॰ ७॥ जिनधर्म जिनधर्म सहु कहें जी, थापे अपणी जो वात । समाचारी जुइ जुई जी, संशय पड्यां मिश्यात ॥ कृ॰ ८ ॥ जाण अजाण पणें करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल । रतने काग उड़ावतां जी, हारचो जनम निठोल ॥ कृ॰ ९ ॥ भगवंत भाख्यो ते कह्या जी, किहां मुझ करणी एह । गज पाखर खर किम सहें जी, सवल विमासण तेह ॥ कृ॰ १०॥ आप परूं पूं आकरो जी, जाणे लोक महंत । पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टान्त ॥ कृ॰ ११ ॥ काल अनन्ते में लह्या जी. तीन रतन श्रीकार । पिण परमादे पाड़िया जी, किहां जइ करूं पुकार ॥ कृ॰ १२॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूंक्ष विहार। धीरज जीव घरे नहीं जी, पाते वहु संसार ॥ कृ॰ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी, न गर्में भूंड़ी वात । पर निन्दा करतां यकां जी, जाये दिन में रात ॥ कृ॰ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणे जीव । धरम पखे धंदे पड्यो जी, नरकें करसी रीव ॥ ऋ॰ १५॥ अणहुँता गुण को कहें जी, तो हरखूं निसदीस । को हित सीख भली दिये जी, तो मन आणूं रीस ॥ ऋ॰ १६ ॥ वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेश । मन संवेग धरचा नहीं जी, किम संसार तरस ॥ छु॰ १७ ॥ नूत्र सिद्धान्त वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक । खिण इक मन मांहे ऊपजे जी, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ॰ १८ ॥ त्रिविध त्रिविध कर ऊचर जी, भगवंत तुम्ह

हज़्र । वार वार भाज़्रं वली जी, छूटक वारो दुर ॥ कृ॰ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधां आरंभ कोड़। जयणा न करी जीवनी जी, देव दया पर छोड़ ॥ कृ० २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्यां अनरथ दंड । कूड़ कपट बहु केलवी जी, व्रत कीघां सत खंड ॥ कृ॰ २१॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्ता दान । ते दृषण लागा घणा जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ छ॰ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप । काम बिडंबन सी कहूं जी, ते तूं जाणे सरूप ॥ ऋ॰ २३ ॥ माया ममता में पड़्यो जी, कीघो अधिको छोम । परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढ़ी संजम सोभ ॥ ऋ॰ २४ ॥ लाग्या मुझ नें लालचें जी, रात्री भोजन दोष । मैं मन मूक्यो माहरो जी, न घरचो घरम संतोष ॥छ॰२५॥ इण भव पर भव दहन्या जी, जीव चौरासी लाख । ते मुझ मिन्छामि दुक्कडं जी, भगवंत तोरी साख ॥ कृ॰ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अठारे पाप । जो मैं कीधा ते सहू जी, वकस वकस माइ बाप ॥ कृ॰ २७ ॥ मुझ आधार छे एटलो जी, सरदहणा छे शुद्ध । जिनधर्म मीठो जगत में जी, जिम साकर ने दुग्ध ॥ कृ० २८ ॥ ऋषभदेव तूं राजियो जी, सेत्रुंजागिरि सिणगार । पाप आलोयां आपणा जी, कर प्रसु मोरी सार ॥ ऋ॰ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्म नो जी, पाप आलोयां जाय । मनसूं मिन्छामि दुक्कडं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ॰ २० ॥ तूं गति तूं मति तूं घणी जी, तूं साहिब तूं देव । आण धरूं सिर ताहिरी जी, भव भव ताहरी सेव ॥ कु॰ ३१ ॥

### कलश

इम चढ़िय सेनुंजा चरण भेट्या, नाभिनन्दन जिनतणा । कर जोड़ि आदि जिनन्द आगे पाप आलोया आपणां । श्री पूज्य जिनचन्द्र सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें । गणि सकल चन्द सुशिष्य वाचक समय सुन्दर गणि भणें ॥३२॥

### आलोयणा स्तवन

### ॥ सफल संसार नी ॥

ए धन शासन बीर जिनवरतणो, जासु परसाद उपगार थाये घणो। सूत्र सिद्धान्त गुरु मुख थकी सांभठी, छहिय समिकत अने विरित छिहिये वछी।।१॥ धर्म नो ध्यान धर तप जप खप करे, जिण थकी जीव संसार सागर तरे। दोष छागा जिके गुरु मुख आछोइये, जीव निर्मछ हुए वस्त्र जिम धोइये।।२॥ दोष छागे तिके चार ना, धुर थकी नाम ने अरथ ते धारणा। किम ही कारण बसे पाप जे कीजिये, प्रथम ते नाम संकल्प कहीजिये।।३॥ कीजिये कंदर्ण प्रमुखें करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी। कूदतां गर्वता होय हिंसा जिहां, दर्ण इण नाम करि दोष तीजो तिहां।।।।। विणसतां जीव जीवने गिनर करे जिको, चोथो आकुहिया दोष उपजे तिको। अनुक्रमे चार ए, अधिक एक एक थी, दोष धर प्रायच्छित्त छेवे विवेक थी।।।।।

### ॥ ढाल ॥

## अन्य दिवस कोई मगध आयो पुरन्दर पास ।

पाटी पोथी कवली नवकर वाली जोय, ज्ञान ना उपगरण तणी आसातना कीधी होय। जघन्य थी पुरिमड्ड एकासणो आयम्बिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयणा सुगुरु बताई तास ॥६॥ एमो खण्डित थाये अथवा किहांई गमाय, तो बिल नवा कराया दोष सहू मिट जाय। थापना अण पिडलेह्यां पुरिमढ़ नो तप धार, गिरतां एकासण नें गणतां चौथ विचार ॥७॥ दर्शन ना अतिचार तिहां पुरमड्ड जघन्य, एकासण आम्बिल अहम चिहुं भेद मन्न । आशातन गुरुदेवनी साहमी सूं अप्रीति, जघन्य एकासण नी आलोयण चढ़ती रीति ॥८॥ अनन्त काय आरम्भ विणास्यां चौथ प्रसिद्ध बीति चउरेन्द्रिय त्रसायां एकासण थी वृद्ध। बहुवीति चौरेन्द्रिय हण्या बीति चउ उपवास संकल्पादि चिहुं विधि दुगुणा दुगुण प्रकास ॥९॥ उद्देही कुलिया बड़ा कीडी नगरा मंग, बहुत जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग।

,说:"上来,这一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

वमन विरेचन ऋमि पातन आम्बिल इक एक जीवाणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥१०॥ संकल्पादिक एक पंचेन्द्री उपद्रव होइ, दोइ त्रिण आठ दसे उपवासे आलोयण जोइ। बहु पंचेन्द्री उपद्रव छठ अठमे दस बीस, चिहुं प्रकारे चढ़ती आलोयण सुन ले सीस ॥११॥ पंचेन्द्री ने लकड़ी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आम्बिल उपवास ने छह विचार। साधु समक्षे लोक समक्षे राज समक्ष, कुड़ा आल दिया दुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥१२॥ उपवास दस दण्डायां तेम बीस इक लख असी सहस नवकार गुणो तिज रीस। पख चौमासा बरस लग, इक त्रिण दस उपवास। अधिको कोध करे तो आलोयण निहं तास ॥१३॥ सुआवड नां दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असति ने पोस। करिय दुवालस बार हजार गुणो नव-कार, मिच्छामि दुक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥१४॥

### ॥ ढाल ॥

# बेकर जोड़ी तांम ।

बिन कीधा पच्चक्खाण, बिन दीधां वन्दना, पडिकमणा विध पांत रे ए । अणोझा ने असिझाय, तिहां अविधे भण्या, इक इक आम्बिल आचरे ए ॥१५॥ गंठसी ने एकत्र, निव आम्बिल, भांगे आलोयणा इमें ए । एक पांच षट् आठ नवकरवालीय, गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥१६॥ उपवास भंग उपवास आम्बिल ऊपरां अधिको दण्ड बखाणिये ए । पांचम आठम आदि, भंग कियां बली, फिर ग्रही पातिक हाणीये ए ॥१०॥ ऊखल, मूसल, आगचूल्हे, घरिट्टेये, दीधे आठम तप करे ए । मांगी सुई दीध, कतरनी छुरी, आम्बिल चढ़तां आदरे ए ॥१८॥ जीव करावे युद्ध, रात्री भोजन जल, तिरणो खंलण जुओ ए । पापतणां उपदेश परद्रोह चिन्तच्या, उपवास इक चूजुवा ए ॥१९॥ पनरे करमादान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भण्या ए । आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदें चढ़तां लिख्या ए ॥२०॥ बोल्या मिरषावाद, अदत्तादान त्यूं, जघन्य एकासण जाणिये ए ॥२०॥ बोल्या मिरषावाद, अदत्तादान त्यूं, जघन्य एकासण जाणिये ए ॥२०॥ अति उत्कृष्टि एण, जांण आलोयण, उपवास दस दस आणिये ए ॥२१॥ अति उत्कृष्टि एण, जांण आलोयण, उपवास दस दस आणिये ए ॥२१॥

### ( सुगुण सनेही मेरे छाछ )

चौथे व्रत भांगे अतिचार, जघन्य छह आलोयण धार । मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥२२॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रत मांहे मंग । चार शिक्षाव्रत ने अतिचार, आम्बल त्रिण प्रत्येके धार ॥२३॥ शील तणी नव वाड़ कहाय, तिहां जो लागे दोष जणाय । तिनके फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधु अने श्रावक पोषध, एकेन्द्री सचित्त संघट्टे कीध । बीसर भोले सचित्त जल पीध, दण्ड एकासण आम्बल दीध ॥२५॥ विण घोयां विण लूह्यां पात्रे, एकासण तिम पुरिमड्ड मात्रे । गइ मुंहपत्ति आंबिल सारो, तिम औघे आठम अवधारो ॥२६॥ चार आगार छांड़ी राखे व्रत पचत्रखाण करे षट् साखे । ढोखे मिच्छामि दुक्कड़ भाखे आलोयण लेतां अमिलाखे ॥२०॥ आलोयण ने अति विस्तार पूरो कहितां नावे पार । तो पिण संक्षेपे तत्वसार, निरमल मन करतां विस्तार ॥२८॥ इम श्री वीर जिनेसर स्वामी, जसु आगम वचने विधि पामी । जीत कल्प टाणांगे आद, बली परम्पर गुरु सुप्रसाद ॥२९॥

### कलश

इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सब आलोयनें। एकान्त पूछे गुरु बतावे, शक्ति वय तसु जोयनें। विधि एह करसी तेह तिरसी धरमवन्त तने धुरे। ए तवन श्री धरम\*सिंह कीधो चौपने फल विधि पुरे।।३०॥

### पद्मावति आलोयण

हिने रानी पद्मावती, जीव राशि खमाने। जाप भनूं जग ते भलो, इण वेला आवे ॥१॥ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख। जे मैं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते॰ २॥ सात लाख पृथवीं तणां, साते अपकाय। सात लाख तेऊ काय ना, साते विल वाय॥ ते॰ २॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण। वीति चउरिन्द्रिय जीव ना, वे वे

是这一个时间,我们就是这种,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们的,我们的,我们的,我们的时候,我们

<sup>៖</sup> यह आछोरण श्रावक धरम सिंह का बनाया हुआ है।

लाख विचार ॥ ते॰ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकासी । चौदह लाख मनुष्य ना ए, लाख चउरासी ॥ ते॰ ५ ॥ इण भव परभव सेवियां, जे पाप अढार । त्रिविध त्रिविध करि, परिहरूं दुरगति दातार ॥ ते॰ ६॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्यां मुषाबाद । दोष अदत्ता दान ना, मैथून उन्माद् ॥ ते॰ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीघो कोघ विशेष । मान माया लोभ में किया, वली राग ने द्वेष ॥ ते॰ ८ ॥ कलह करी जीव दृहच्या, दीना कूडा कलंक । निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते॰ ९ ॥ चोरी कीधी चोंतरे, कीधो थापण मो सो । कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, मलो आण्यो भरोसो ॥ ते॰ १० ॥ खाटकी ने भवें मैं किया, जीवना वर्घ घात । चिडीमार भवे चिडकळां, मारचा दिन रात ॥ ते॰ ११ ॥ माछीगर भवें माछलां. झाल्या जलवास । धीवर झीवर भील कोली भवे. मृग मारचा पास ॥ ते॰ १२ ॥ काजी मुद्धा ने भवे, पढ़ी मंत्र कठोर । जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते॰ १३ ॥ कोतवाल ने भने मैं किया. आकरा कर दंड । बंदीबान मराविया, कोरडा छड़ी दंड ॥ते॰ १४॥ परमाघामी ने भवे, दीघां नारकी दुःख । छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ॥ ते॰ १५ ॥ कुँभार ने भवे मैं किया, निस्माह पचाच्या । तेली भव तिल पीलिया, पापी पेट भराच्या ॥ ते॰ १६ ॥ हाली ने भव हाल खेडिया, फाड्या पृथिबी ना पेट । सूड निदान घणां कियां, दीघां बलघ चपेट ॥ ते॰ १७ ॥ माली ने भन्ने मैं रोपियां, नानाविध वृक्ष । मूल फल फूल नां, लाग्यां पाप ते लक्ष ॥ ते॰ १८ ॥ अधोवाइया ने मवे, भरचा अधिकां भार । पूठी ऊंट कीडा पड्यां, दया न आवी लगार ॥ ते॰ १९॥ छीपा ने भवे छेतरचो, कीघां रागणि पास । अगनि आरंभ किया घणा, धातुर्वोद अभ्यास ॥ ते॰ २० ॥ सूर पणे रण झूंझता, मारचा माणस वृन्द । मदिरा मांस भक्ष्या घणां, खाधा मूल ने कंद् ॥ ते॰ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी ऊंलच्या । आरंभ कीधां अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते॰ २२ ॥ अंगार कर्म किया वली, धर में दव दीघां । सुंस लेइ वीतरा-बिल्ली भव ऊंदर लिया. गना, कूडा कोशज पीघां ॥ ते॰ २३ ॥

下午,下午,只是你是不是什么,我们是有是不是不是不是不是,我们是我们是不是我们,我们是我们,我们是是不是一个,不是一个,也,也有不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是不是

也是一个人,我们是我们的人,我们是我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的人,我们也是我们的人,我们是我们的人,我们的人,我们的人,我们的人,我们是我们的人,我们们的人,我们们们的人,我们们们们的一个人,我们们们们的一个人,我们们们们的一个人,我们们们们们的一个人,我们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们们可以可以可以可以 हत्यारी । मूढ़ गमार तणे भवे, भैं जूं छिख मारी ॥ ते॰ २४ ॥ भड़ मूंजा तने भवे, एकेन्द्रिय जीव । ज्वारी चणा गेहूं सेकिया, पाडंता रीव ॥ते०२५॥ खांडण पीसण गारना, आरम्भ अनेक । रांधण इंघण आगिना, किया पाप उदेग ॥ ते॰ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पंच प्रमाद । इष्ट वियोग पाड्या किया. रोदन विषवाद् ॥ ते॰ २७ ॥ साध् अने श्रावक तनां, व्रत लेइ भांग्या । मूल अने उत्तर तणां, दूषण मुझ लाग्या ॥ ते॰२८॥ सांप विच्छू सिंह चीतरा, शिकराने शभली। हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते॰ २९ ॥ सूआवडी दृष्ण घणा, वली गरभ गलान्यां । जीवाणी डोल्या घणां, शील वत भंजाच्यां ॥ ते॰ ३० ॥ भव अनन्त भमतां थकां, किया कुदुम्ब सम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करि, वोसरूं तिणसं प्रति-बंध ॥ ते॰ ३१ ॥ भव अनन्त भमतां थकां. कीघां परिग्रह सम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करि वोसर्छ, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते॰ ३२ ॥ इणभव परभव इण परे. कीधां पाप अखत्र । त्रिविंघ त्रिविध करि वोसर्छं. कर्छ जन्म पवित्र ॥ ते॰ २३ ॥ राग वैरागी जे सुणें, ए तीजी ढाल । समय\* सुन्दर कहे पाप थी. छूटे तत्काल ॥ ते॰ ३४ ॥

# पुण्य प्रकाश आलोयण<sup>†</sup> वृद्ध स्तवन

सकल सिन्द दायक सदा, चौवीसे जिनराय । सद्गुरु सामिनि सर-सती, प्रेमे प्रणम्ं पाय ॥१॥ त्रिभुवनपति त्रिसला तणो, नंदन गुण गंभीर । शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥२॥ इक दिन वीर जिनंद ने, चरणें करि परिणाम । भविक जीवना हित भणी, पूछे गोयम स्वाम ॥३॥

<sup>- 🕆</sup> यह आलोयण स्तवन समय सुन्दर जी का वनाया हुआ है।

<sup>ा</sup> आलोचण वृद्ध स्तवन दोनों पद्मावती आलोचण पुण्य प्रकाश आलोचण ये चारों ही आलोवण स्तवन अन्त समय मे अर्थान् जय तक होशोहवास ठीक रहे और अच्छी तरह सुन सके तव ही श्रावक श्राविका को सुनाना चाहिये यदि होशोहवास ठीक न रहे और सुनने की शक्ति नष्ट हो जाय तव इन स्तवनों के युनाने का क्या लाग केवल रूडी मानना अन्त्य समय में धर्म अवश्य सुनाना चाहिये! इतना ही नियम पूरा करने का लाभ हो सकता है सुनने वाले

मुगति मारग आराधिये, कहो किण परि अरिहंत । सुधा सरस तब वचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥ श। अतिचार आलोइये, व्रत घरिये गुरु साख । जीव खमावो सयल जे, योनि चौरासी लाख ॥५॥ विधिसं वलि वोसराविये. पाप स्थानक अठार । च्यार शरण नित अनुसरे, निंदो दुरित आचार ॥६॥ शुभ करणी अनुमोदिये. भाव भलो मन आण । अनशन अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥ शुमगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार । चित्त आणी ने आदरो. जिम पामो भव पार ॥८॥

# ( ए छिंडी किहां राखी )

सुगति मारग आराधिये, कहो किण परस, भाखे श्री भगवंत ॥॥॥ अतिचा जीव खमावो सयल जे, योनि चौरार्स पाप स्थानक अठार । च्यार शरण नित शुम करणी अनुमोदिये, भाव मलो मनवपद जापो सुजाण ॥७॥ शुमगति आचित्त आणी ने आदरो, जिम पामो भा (ए छिंडी वि ज्ञान दरशण चारित्र तप वीरज, परभव ना, आलोइये आचार रे । प्राणी वाणी रे ॥ प्रा॰ ९ ॥ गुरु ओलविये नह सूत्र अर्थ तदुभय करी, सूधा भणिये वह पगरण पाटी पोथी, ठवणी नौकर वाली ज्ञान मक्ति न संमाली रे ॥ प्रा॰ ११ ॥ विराध्यूं जेह । आभव परभव विलय भवोभ जिन वचने शंका निव कीजे, निव परम परिहर जो, फल संदेह न राखी रे ॥ प्रा॰ १४ ॥ मुद्ध पणुं छंडो परसंसा, गुणवंत ने आद भगति प्रभावना करिये रे ॥ प्रा॰ १४ ॥ साख्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा॰ १४ ॥ साख्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा॰ १४ समिकत खंड्यू जेह । आभव परभव विल प्राणी चारित्र ल्यो चित्त आणी रे ॥१६। आठ प्रवचन माय । साधु तणे घर मे प्र रे ॥ प्रा॰ १७ ॥ श्रावक ने धमें सामायि जयणा पूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न प्रविपरीत पणा थी, चारित्र उहोल्यूं जेह ज्ञान दरशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार । एहतणा इह भव परभव ना, आलोइये आचार रे । प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी, वीर वर्दे इम वाणी रे ॥ प्रा॰ ९ ॥ गुरु ओलविये नहीं गुरु विनयें, कालेधरी बहु मान । सूत्र अर्थ तदुभय करी, सूघा भणिये वही उपघान रे ॥ प्रा॰ १० ॥ ज्ञानो पगरण पाटी पोथी, ठवणी नौकर वाली । एह तणी कीघी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ प्रा॰ ११ ॥ इत्यादिक विपरीत पणा थी, ज्ञान विराध्यूं जेह । आभव परभव विखय भवोभव, मिन्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥प्र॰१२॥ जिन वचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाष । साधु तणी निन्दा परिहर जो, फल संदेह न राखी रे ॥ प्राणी समिकत ल्योशुद्ध जाणी ॥१३॥ मूढ़ पणूं छंडो परसंसा, गुणवंत ने आदरिये। साहम्मी ने धर्म करी थिरता, भगति प्रभावना करिये रे ॥ प्रा॰ १४ ॥ संघ चैत्य प्राशाद तणो जो विण साड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा॰ १५ ॥ इत्यादिक विपरीत पणा थी, समिकत खंड्यू जेह । आमव परभव विल भवोभव, मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥ प्राणी चारित्र ल्यो चित्त आणी रे ॥१६॥ पांच सुमति त्रिण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय । साधु तणे घर मे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा॰ १७ ॥ श्रावक ने घमें सामायिक, पोसह मां मन वाली । जयणा पूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे॥ प्रा॰ १८॥ इत्यादिक विपरीत पणा थी, चारित्र उहोल्यूं जेह । आभव परभव विल भवोभव

मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥ प्रा॰ १९ ॥ बारें भेदें तप निव कीघो, छते योगे निज शकते । धमें मन वच काया बीरज, निव फोरविडं भरते रे ॥प्र॰२०॥ तप बीरज आचारे इण पर, विविध विराध्यां जेह । आमव परमव विषय भवोभव, मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥ प्रा॰ २१ ॥ बिलय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये । बीर जिनेसर वचन सुनी नें, पाप मैल सिव घोइये रे ॥ प्रा॰ २२ ॥

### ॥ ढाल ॥ ं

पृथ्वी पानी तेउ, वाउ, वनस्पति, ए पांचे थावर कह्या ए । करी करसन आरम्म, खेत्र जे खेडीया, क्रुआ तालाव खणाविया ए ॥२३॥ घर आरम्भ अनेक टांका भोपरां, मेढ़ी माल चिणाविया ए । लींपण गुंपण काज इण पर, परपरे पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥२४॥ घोअण नाहण पानी, झीलण अप्पकाय, धोती घोई कर दहन्या ए। माठीगर कुम्भार, लोह सोवनगार, भडमंजा लिहालागरा ए॥२५॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण राधण रसवती ए । इणि परे कर्मादान, परिपरे केवली, तेंडवाड विराधिया ए ॥२६॥ वाडी वन आराम, वाबी वनस्पति, पान फूळ फल चूंटीया ए । पौहक पापिंड शाक, सेक्या सुखाया, छेचा छूंचा आथिया ए ॥२७॥ अलशी ने एरण्ड, घाणी घाली ने, घणा तिलादिक पीलीया ए । घाली कोलू मांहि पीली सेलडी, कन्द मूल फल वेचिया ए ॥२८॥ इम एकेन्द्री जीव हण्या हणाविया, हणतां जे अनुमोदिया ए । आभव परभव जेह, विख्य भवोभव, ते मुझ मिन्छामि दुक्कड़ ए ॥२९॥ क्रमी सरिमया कीडा, गाडर गण्डोला, इअल पूरा अलसीया ए । वाला जलां चुडेल, दिचलित रस तणा, वल्लि अयाणा प्रमुखना ए ॥३०॥ इम वेइन्ट्री जीव, जे में दहन्या, ते मुझ मिन्छामि दुकड़ ए। उद्देही जूं लीख, माकड़ मंकोडा, चांचड कीडी वांथुआ ए ॥३१॥ गहहिया धीवेल, कानखज्रहा, गींडोला धनेरीया ए । इम तेइन्द्री जीव जे में दृह्ट्या, ते मुझ मिच्छामि ए ॥३२॥ माखी मच्छर डांस मसा पर्तिगया, कंसारी कोल्टिया वडा ए ।

ढींकण बिच्छू तिड्डी भमरा भमरिया, कौंता बग खड मांकणी ए ॥३३॥ इम चौरेन्द्री जीव जे मैं दृहच्या, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए। जल मां नाखी जाल, जलचर दृहव्यां वन मां मृग संतापिया ए ॥२४॥ पीडया पंखी जीव, पाडी पास मां पोपट घाल्यां पांजरा ए । इम पंचेन्द्री जीव जे मैं दृह्व्यां, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए ॥३५॥

## ( प्राणी वाणी हित करी जी )

कोध लोम भय हास थी जी, बोला वचन असत्य । कूड करी धन पारकां जी, लीधा जेह अदत्त रे॥ जिन जी मिन्छामि दुक्कड़ आज, तुम्ह साखे महाराज रे। जिनजी मिच्छामि दुक्कड़, आज देइ सारूं काज रे॥ जि॰ ३६ ॥ देव मनुष्य तिर्यंच ना जी, मैथुन सेन्या जेह । विषया रस लंपट पणे जी, धण्ं विंटंन्यो देह रे ॥ जि॰ ३७ ॥ परिग्रह नी ममता करी जी, भव भव मेली आथ । जेह जिहां तेह तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे ॥ जि॰ ३८ ॥ रयणी मोजन जे करचा जी, कीघा भक्ष अभक्ष । रसना रसनी लालचें जी, पाप करचां परतक्ष रे ॥ जि॰ ३९ ॥ व्रत लेइ विसारिया जी, विल भांग्या पच्चक्खाण । कपट हेतु किरिया करी जी, कीघा आप बखाण रे ॥ जि॰ ४० ॥ त्रिण ढाले आठे दहे जी, आलोया अतिचार । शिवगति आराधन तनो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥जि॰४१॥

# ( सहेंलडी जी )

在这个时间,这个时间,这个时间,这时间,我们是这个时间,这个时间,这个时间,这个时间,这个时间,我们是这种时间,这个时间,我们是这种的时间,我们是这种的时间,这个 पंच महाव्रत आदरो सहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार रे। यथाशक्ति व्रत आदरी सहेलडी, पाली निरती चार तो ॥४२॥ व्रत लिया संमारिये सहेलडी, हियडे धरीय विचार तो । शिवगति आराधन तणो सहेलडी, ए बीजो अधिकार तो ॥४३॥ जीव सभी खमाविये सहेलडी, योनि चौरासी लाख तो । मन शुद्धे करो खामणा सहेलडी, कोई सूं रोषन राख तो ॥४४॥ सर्व मित्र करि चिंतवो सहेलडी, कोइय न जाणो रात्रु तो। राग द्वेष इम परिहरो सहेलडी, कीजे जन्म पवित्र तो ॥४५॥ साहमी संघ खमाविये सहेलडी, जे उवनी अप्रीत तो। सज्जन कुटुम्ब करी खामणा सहेलडी,

ए जिन शासन रीत तो ॥४६॥ खिमये अने खमाविये सहेलडी, एहिज धर्म नो सार तो । शिवगित आराधन तणो सहेलडी, ए त्रीजो अधिकार तो ॥४७॥ मृषावाद अहिंसा चोरी सहेलडी, धन मूर्छो मैथुन्न तो । कोध मान माया तृष्णा सहेलडी, प्रेम द्वेष पैशुन्न तो ॥४८॥ निन्दा कलह न कीजिये सहेलडी, कूडा न दीजे आल तो । रित अरित मिथ्या तजो सहेलडी, माया मोस जंजाल तो ॥४९॥ त्रिविध त्रिविध वोसराविये सहे-लडी, पापस्थान अठार तो । शिवगित आराधन तणो सहेलडी, ए चौथो अधिकार तो ॥५०॥

### ( हवे निसुणो इहां आविया ए )

जनम जरा मरणे करी ए, ए संसार असार तो । कर या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥५१॥ शरण एक अरिहंत नूं ए, शरण सिन्ध भगवंत तो । शरण धर्म श्री जैन नो ए, साधु शरण कुळवंत तो ॥५२॥ अवर मोहि सिव परिहरि ए, चार शरण चित्त धार तो । शिव गित आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥५३॥ आभव परभव जे कर या ए, पाप कर्म केइ लाख तो । आत्म साखे निंदिये ए, पिक्छिमियें गुरु साख तो ॥५४॥ मिथ्यामत वर्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो । कुमित कदाग्रह ने बसे ए, बिल उत्थाप्या सूत्र तो ॥५५॥ धड्या घडाव्यां जे धणा ए, घरटी हल हथियार तो । भव भव मेली मूंकिया ए, करतां जीव संहार तो ॥५६॥ पाप करी ने पोखिया ए, जनम जनम परिवार तो । जन्मांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥५७॥ आभव परभव जे कर या, इम अधिकरण अनेक तो । त्रिविध त्रिविध वोसराविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥५८॥ दुष्कृत निंदा इम करी ए, पाप कर चा परिहार तो । शिवगित आराधन तणो ए, ए छट्ठो अधिकार तो ॥५९॥

# ( आदि तूं जोइने आपणी )

धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म। दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म॥ ध॰ ६०॥ सेत्रुंजादिक तीर्थ नी, जे कीधी यात्र। 也是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们就是我们的,我们的

युगते जिनवर पूजियां, विल पोख्या पात्र॥ घ॰ ६१॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर जिन चैत्य। संघ चतुर्विध साचन्या ए, ए साते क्षेत्र॥ घ॰ ६२॥ पिडक्कमणा सुपरे करचा, अनुकम्पा दान। साधू सूरि उवझाय ने, दीधा बहु मान॥ घ॰ ६३॥ धर्म कारज अनुमोदिये, इम वारो वार। शिवगति आराधन तणो, सातमो अधिकार॥ घ॰ ६४॥ भाव मलो मन आनिये, चित्त आणी ठाम। समता भावे भाविये, ए आतम राम॥ घ॰ ६५॥ सुख दुख कारण जीव ने, कोइ अवर न होय। कर्म आप जे आचरचां, भोगविये सोय॥ घ॰ ६६॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्य काम। छारि ऊपर ते लीपणूं, आखर चित्राम॥ घ॰ ६७॥ भाव मली परभविये, ए धर्म नो सार। शिवगित आराधन तणो, आठमो अधिकार॥ घ॰ ६८॥

### ॥ रैवत गिरि ऊपरे ॥

हवे अवसर जानि करिय संलेखण सार, अणसण आदिरयें पच्चक्खी चार आहार । छुछता सिव मूंकी छांडी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥६९॥ गित चारें कीधा आहार अनन्त निःशंक, पण तृप्ति न पाम्यो जीव छाछिचयो रंक । दुसहो ए बछी बछी अनशन नो परिणाम, एह थी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥७०॥ धन धन्ना शालिमद्र खन्धो मेच कुमार, अनशन आराधी पाम्या भव नो पार । शिव मन्दिर जारये करी एक अवतार, आराधन केरो ए नवमो अधिकार ॥७१॥ दशमें अधिकारे महामन्त्र नवकार, मन थी निव मूं को शिव सुख फल सहकार । ए जपतां जाये दुर्गित दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरब नो सार ॥७२॥ जन्मान्तरे जातां जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामें सुर अवतार । ए नवपद सरिखो मन्त्र न कोइ सार, इह भव ने परभव सुख सम्पति दातार ॥७३॥ जुओ भील भीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमा थी राजिसह महाराय । राणी रतनवती बेहूं पाम्या छे सुरभोग, इक भवथी राजिसिह महाराय । राणी रतनवती बेहूं पाम्या छे सुरभोग, इक भवथी लेखे सिद्ध वधू संजोग ॥७३॥ श्रीमती ने ए विल मन्त्र फल्यो ततकाल,

फणधर हटी ने प्रगट थई फूल माल। शिव कुमरे योगी सोवन पुरसो कीध, इस एणे मन्त्रे काज घणा ना सिन्द ॥७५॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर भाख्यो, आराघन केरी विधि जिणे चित्त मां राख्यो । तिणे पाप पखाली भवभय दूरे नांख्यो, जिन विनय करन्ता सुमति अमृतरस चाख्यो॥७६॥ नमो भवि भावसूं।

सिद्धारय राय कुछ तिलो ए, त्रिशला मात मव्हार तो । अवनी तले तुम अवतरचा ए, करवा अम्ह उपगार तो ॥जयो जिनवीरजी ए ७७॥ मैं अपराध करचा घणा ए, कहता न लहुं पारतो। तुम्ह चरणे आन्या भणी ए, जो तारे तारतो ॥जयो॰ ७८॥ आश करी ने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो । आच्या ने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्ये लाज तो ॥जयो॰ ७९॥ करम अलृ-झन आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो।हूं छूं एह थी ऊभग्यो ए, छोड़ावो देव दयाल तो ॥ जयो॰ ८० ॥ आज मनोरथ मुझ फल्या ए, नाठां दुख जंजाल तो।तूठो जिन चौवीसमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोलतो॥जयो०८१॥ भव भव विनय तुम्हारडो ए, भाव भगत तुम पाय तो । देव दया करि दीजिये ए. बोधबीज सुपसाय तो ॥ जयो० ८२ ॥

### कलठा

इम तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो । श्री वीर जिनवर चरण धुणता, अधिक मन उछट थयो ॥८३॥ श्री विजयदेव सुरिंद पटघर, तीरथ जंगम इण जगें। तप गच्छपति श्री विजय प्रम, स्री जगमगें ॥८४॥ श्री हीर विजय सूरि शिप्य वाचक, कीर्ति विजय सुर गुरु समो । तस शिष्य वाचक विनय विजयें, थुण्यो जिन चौवीशमो ॥८५॥ सय सत्तर संवत् उगणतीसे. रह्या रानेर चीमास ए । विजय दशमी विजय कारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥८६॥ नरभव आराधन सिन्धि साधन, सुऋत लील विलास ए । निर्जरा हेते स्तवन रिच्यूं, नाम पुण्य प्रकाश ए ॥८७॥

यह आलोधग स्नवन विनय विषय जी ने १९७० विजय दशमी को बनाया है। নি কাঁত্ৰস্থান উপত্ৰ ক্ষেত্ৰৰ অক্টান্তৰ ক্ষাত্ৰত ক্ষাত্ৰ ক্ষেত্ৰৰ ক্ষাত্ৰত ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষ

### सहस्र कूट स्तवन

सहियां ए सहस कूट महाराज, वंदो सब भाव सूं हे माय ॥ वंदो०॥ तीस चौवीसी पूजिये हे माय, विहर मांन भगवान सेवो चित चाह सूं हे माय ॥ से० १ ॥ एक सौ साठ जिनेसर हे माय, उत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसूं हे माय ॥ नि० २ ॥ एक सौ बीस जिनंदना हे माय, कख्याणक सब होय सेवो भवि भाव सूं हे माय ॥ से० ३ ॥ चार जिनेसर शाशता हे माय, जयवंता जगदीश अधिक गुण गावसां हे माय ॥ अ० ४ ॥ बहुत दिनांरो उमाहड़ो हे माय, ते फळ ळियो मुझ आज जिणंद पद सेवतां हे माय ॥ जि० ५ ॥ उच्छव अधिक मुहामणा हे माय, खूब थया अधिक मन रंग सूं हे माय ॥ अ० ६ ॥ उगणीसे चाळीशमें हे माय, पोष मास मुखक्त भगत कर भाव सूं हे माय ॥ भ० ७ ॥ संघ सह हरिष करी हे माय, पूज रची चित चाह वंछित सब पामियां हे माय ॥ वं० ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय, मुमति कहे मन रङ्ग सकल गुण दीजिये हे माय ॥ स० ९ ॥

# श्री जिनदत्त सरि उत्पत्ति स्तवन

वर लिच्छ विलाश सुवाश मिले, गुरु नामें मनरी आश फले। दोषी दुश्मन सब दूर टले, सहसा बहु संपित आय मिले ॥१॥ जय जय जिनदत्त सुरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती। जसु नाम रहे नहीं पाप रती, जेह नी मिहिमा जगमांहे अती ॥२॥ श्रुम मंगल लील विलास सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा। आराध्यां आवे सुगुरु सुदा, सुप्रसन्न हाजर होय तदा ॥३॥ जिण जीती चौसठ योगिनियां, वश बावन खेतल वीर कियां। जसु नाम न पड़े बीजलियां, भूत प्रेत न कर सके छल विलयां।॥॥ जिण सिंघ सवा लख दिस साधी, पंच पीर नदी जिन पुल बांधी। उपगार कियां कीरत लाधी, बरसात लियां गुरु सिन्द बांधी ॥५॥ सुत सुगल कियो सरजीत बहू, पाये लागा नर नार सहू। जिण साधी विद्या वेश लहू, प्रतिबोधी श्रावक कींध कहू ॥६॥ वह नगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय

लई जिन चैत्य घरी । गुरु मन्त्र बलें जीबित उघरी, विप्र वेष सह गुरु पाय परी ॥ वज्ञमय यंभो दोय खंमड िकयो, पोथी परगट परभाव थियो । विद्या सोवन वरणे सिझयो, वर नगर उज्जैनी सुयश िलयो ॥ ८॥ गुरु हूं वड वंसे जीव दया, मन्त्री वालग परिसिद्ध थया । बाहड़दे कुले जनम भणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥ ९॥ इग्यार बचीसें जनम भणूं, इग्यार इगताले दीक्षा थुणूं । युगवर इग्यारे गुणहत्तरे, स्वगें वारे से इग्यारे करे ॥ १०॥ जिन बल्लभ सूरि पटो घरणं, परभाव उदेसर भय हरणं । नविनिध लल्लभी संपित करणं, विल विकट संकट आरित हरणं ॥ ११॥ युंभ सकल श्री अजमेरे, गढमंडो वर बीकानेरे । सुखदायक श्री जेसलमेरे, दीपे गुरु गाजी खान देरे ॥ १२॥ मुलतान नगर महिमा सागे, भावत दारिद्र दुरे भागे । देरे इस्माइलखान सोमागे, गुरु वर पुर में कीरित जागे ॥ १३॥ धन धन जे सद्गुरु ध्यान घरे, तेर न्हवन पूजा जेह करे । गच्ल खरतर नी महिमा पसरे, किव सूरि उदय जिन कीरित करे ॥ १९॥

# जिनदत्त सूरि स्तवन

श्री जिनदत्त सुरिंदा, परम गुरु श्री जिनदत्त सुरिंदा। परम द्याल दया कर दीजे, दरशण परमानंदा॥ प०१॥ जंगम सुरत् वंछित दायक, सेवक जन सुखकंदा॥ प०२॥ सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुख दंदा॥ प०२॥ निज पद सेवक सानिधकारी, रिखये गुरु राजिदा॥ प०१॥ कर जोडी विनय युत विनये, श्री जिन हरप सुरिंदा॥ प०५॥

### ॥ कवित्त ॥

वावन बीर किये अपने वश, चांसठ योगिनी पाय लगाई। डाइन साइन व्यन्तर खेचर, भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तडक कड़क भड़क अटक, रहे जो खटक न कांई। कहे धरमसिंह लंबे कुण लीह, दिये जिनदत्त की एक दुहाई ॥१॥

### ॥ कवित्त ॥

गज थुंभ ठार ठार, ऐसी देव नाहीं और, दादी दादी नाम से जसत

यश गायो है। आपने ही भाव आय, पूजे लक्ख लोक पाय, प्यासनको रनमांहि, पानी आन पायो है॥१॥ बाट घाट शत्रु थाट, हाट पुर पाटणमें। देह गेह नेह से, कुशल वरतायो है। धर्म सिंह ध्यान धरे, सेवतां कुशल करे, साचो श्री जिन कुशल सूरि, नाम यूं कहायो है॥२॥

### ॥ श्लोक ॥

दासानुदासा इव सर्वदेवाः, यदीय पादान्ज तले लुठिन्त । मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनद्त्तसूरिः ॥१॥ चिन्तामणिः कल्पतरु-वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः किमुकाम गव्याः ॥ प्रसीदतः श्री जिनद्त्तसूरे, सर्वं पदं हस्ति पदे प्रविष्टम् ॥२॥ नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नो वेताल पिशाच राक्षस गणा, ना रोग शोकौ भयम् ॥ ३॥ नो मारी न च विग्रह प्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युचकैः । योवः श्री जिनद्त्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥॥

# जिन कुशलसूरि स्तवन

विलसें ऋिंद्र समृद्धि मिली, शुभयोगें पुण्य दशा सफली। जिन कुशल स्रिन्द गुरु अतुल बली, मन वंछित आपे दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समे विपुला, नव नवय महोच्छव राज कला। सुपसायें गुरु चढ़ित कला, सुकुलीनी पुत्रवती महिला॥२॥ सब ही दिन थायें सबला, सदवास कपूर तना कुरला। हय गय रथ पायक बहुला, कल्लोल करें मन्दिर कमला॥३॥ बीजे चमर निशान घुरे, नरवे दरबार खड़ा पहरे। जय जय कर जोड़ी उचरे, सानिध्य गुरु सब काज सरे ॥४॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा। अविचल उल्लट अंग मुदा, गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा॥५॥ घम घम मादल नाद धुमे, बत्तीसे नाटक रंग रमें। प्रगटो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें॥६॥ तन सुख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय रणे। ध्याबो कुशल गुरु एक मने, जूम्मक सुर मन्दिर भरे घने॥७॥ ततिखण धन खंच्यो आवे, करि इयाम घटा मेह वर्षावे। तिसिया तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस

गावे ॥८॥ छहिरखां जल कल्लोल करे, प्रवहण भवसागर मज्झ डरे । बूढंता वाहन जे समरे, ते आपद निश्चय सूं उवरे ॥९॥ खड़ खड़ खड़ग प्रहार वहे, सौदामिनि जिम सम शेर सहे । कुशल कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रण मज्झ लहे ॥१०॥ थुंभ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरे संकट चूरे । मंगल और अधिके नूरे देराउर भय टाले दुरे ॥११॥ वीरमपुर वाने सुधरे, खम्मायत पुर विक्रम नयरे । जिनचन्द्र सूरि पाटे पवरे, जसु कीरति मही मण्डल पसरे ॥१२॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सोभा जागे । दह दिशि जन सेवा मांगे, श्री खरतरगच्ल नी महिमा जागे ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद ठामे, गाई जे कुशल नयर गामे । पूजे जे नर हित कामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे ॥१॥। श्री जिन कुशल सूरि साखें सेवक जन ने सुखिया राखें। समरचां गुरु दरशण दाखें, श्री साधु कीरति पाठक भाखें ॥१५॥

#### श्री जिन कुशल सूरिजी उत्पत्ति स्तवन

中心,也是什么是一个人,我们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们们的一个人,他们们们是一个人,他们们是一个人,他们们是一个人,他们们们是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以是一个人,他们也可以

रिसह जिनेसर सो जये, मंगल केलि निवास । वा सब वंदिय पय कमल, जग सहु पूरे आस ॥१॥ चंद कुलम्बर पूनम चंद, वंदो श्री जिन कुशल मुनिंद । नाम मन्त्र जसु महिम निवास, जो समरेतसु पूरें आस ॥२॥ मरु मंडल समियाणो गाम, घण कण कंचन अति अभिराम । जिहां बसे जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥३॥ जसु तेरे से तीसे जम्म, सैंताले सिरि संजम रम्म । पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल । प्रमु प्रताप निव माने सोय, मैं निव नयणें दीठो जोय ॥५॥ निरधन लहे घन घन्न सुवन्न, पुन्नहीन बहु पामें पुन्न । असुखी पामें सुख संतान, एक मना करतां गुरु ध्यान ॥६॥ गुरु समरन आपद सिव टले, सयल शांति सुख संपति मिले । आधि व्याधि चिंता संताप, ते छंडी निव मंडी व्याप ॥७॥ पाप दोष निव लागे तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां । सेंवंतां सुरतरु नी छांह, निश्रय दारिद्र मेटे वांह ॥८॥ विषहर विषनर विष

नरनाह, भूतप्रेत ग्रह व्यन्तर राह। प्रभु नामें ते न करे पीड, भाजे भावठ भव भय भीड ॥९॥ रोग सोग सभी नासे दूर, अंधकार जिम ऊगे सूर। मूरख पीठी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुःख दुरित पुलाय ॥१०॥ दिन दिन जिन शासन उद्योत, जिहां अछे भवसायर पोत। सो सद्गुरु में भेट्यो आज, रलिय रंग सब सीधा काज ॥११॥

#### ॥ हाल ॥

आज घर अंगन सुरतरु फिलयो, चिंतामणि कर कमले मिलियो, उदयो परमानंद करे ॥१२॥ आज दिवस मैं धन्ने गिनियो, जुगपवरागम जो मैं थुणियो, चन्द्र गच्छ मिहमा निलो ए ॥१३॥ कांइ करो एथ्वीपित सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिन्ता आणो कांइ मने ॥१८॥ बार बार इक चित्त भणी जे, श्री जिन कुशल सूरि समरीजे, सरे काज आयास घनें ॥१५॥ संवत् चवद इक्यासी वरसे, मुलक बाहण पुर में मन हरसे, अजिय जिणेसर पुर भुवणें ॥१६॥ कियो किवत्त ए मंगल कारण, विधन हरण सहु पाप निवारण, कोइ मत संशय धरो मने ॥१७॥ जिम जिम सेवे सुरनर राया, श्री जिन कुशल मुनीसर पाया, जय सागर उवझाय थुणे ॥१८॥ इम जो सद्गुरु गुणअभिनंदे, ऋष्टि समृष्टि, सो चिरनंदे, मन बंछित फल मुझ होवो ए ॥१९॥

而是,是一个人,是是一个人,是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个

जिन कुशल स्रिस्तवन

छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव। ज्योति थारि जग जागती जी, दुनियां में परितख देव ॥१॥ हूं तो मोहि रह्यो जी, म्हारा राज दादे रे दरबार। केसर अंबर केवड़ो जी, कस्तूरी कपूर। चोवा चन्दन राय चमेळी, मिक्त करूं भरपूर॥ हुं तो॰ २॥ पांगुल्यां ने पांव समावे, आंधिलयां ने आंख। रूपहीणा ने रूप देवे दादा, पंखहीणा ने पांख॥ हुं तो॰ ३॥ चंद पटोधर साहिबा रे, श्री जिन कुशल सुरिंद। आठ पहर थांने ओ लगे जी, रंग\* धणे राजिंद॥ हुं तो॰ ४॥

#### ॥ श्री दादा साहब की फेरी ॥

पुण्य योग से आई दशा जो भली, जिन कुशल सुरीश्वर सेवा मिली। मनवंछित आशा सुफल फली, आनन्द भयो मन रंग रली ॥१॥ तुम महिमा अगम अपार भला, लिया नाम तिरे पाषाण शिला । पूजे जे चरण कमल चित ला, ते पामें ऋदि सिद्धि कमला ॥२॥ गुरु ढुंढ फिरचो मैं जग सगला, तुम सम दाता नहीं और मिला। तुम नाम की देखी अधिक कला, समरत गुरु संकट विकट टला ॥३॥ गुरुदेव को नाम चित से समरे, मनवंज्ञित कारज सकल सरे। चित धारत आरत तरत टरे, प्रण निधिसे मंडार भरे ॥४॥ तुम महिमा गुरु गुणवान सदा, जे ध्यावे नहिं पावें कष्ट कदा । करके दरशन भई अंग मुदा, चित चाहत सेव करूं मैं सदा ॥५॥ जाके मनमें गुरुदेव रमे, वह नर भव वन में नाहिं भमे। गुरु जानके दीनद्याल तुम्हे, राजा राणा नरनार नमें ॥६॥ कर्मों के फंद पड़े हैं घने. गुरुदेव न सेव तुम्हारि बने । मेरी करनी अवधारो न मने. दाता मंदिर भर देवो घने ॥७॥ करुणानिधि आपको जो ध्यावें, वह नर वंछित फल पावें। कोई कष्ट रोग दु:ख नहिं आवें, जो चित सेवित गुरु गुण ॥८॥ सब भूत और प्रेत पिशाच डरे, डाकिन शाकिन नहिं पीड़ करें। जे आपद काल तुम्हें सुमरें, निरचय सब संकट विकट टरे ॥९॥ कमों के प्रहार कहां लो सहे.गुरुदेव बिना अब किसे कहें। यही चाहत चित चरनमें रहे, सुख संपति दौलत सुमति लहे ॥१०॥ राजत गुरु थुम्म अधिक नोरे निजदास कि सब आशा पूरे । दुःख दारिद सकल रहें दूरे, वंछित फल दे चिन्ता चूरे ॥११॥ देशे देशे श्रामे नगरे, गुरु कीरति फैल रही सघरे। जिनचन्द स्रीख्वर पाट वरे, सेवक की आरत सकल हरे ॥१२॥ श्री खरतरगच्छ सदा आगे, नहीं ठहरे भूतादिक भागे । जे सतगुरु के पाये लागे, शुभ भाव दशा उनकी जागे ॥१३॥ सहु देश नगर अरु पट्टन ग्रामें, देवल सोहे ठामें ठामें। गुरु नाम जपे जे हित कामें, मन वंछित फल वह नर पामें ॥१२॥ जे सतगुरु ध्यान हृद्य राखे, वह सेवक शिव सुख फल चाखे । दादा जिन कुशल सुरिन्द साखे. माणक नवाकर इस पद भाखे ॥१५॥

<sup>ी</sup> यह स्तवन सेठ माणकचन्द्र जी महम वालका बनाया हुआ है।

のである。 「おいましています。 「おいましています。」 「おいましています。 「おいましています。」 「おいましていましています。」 「おいましています。」 「おいましていましています。」 「おいましていましています。」 「おいましていましていましています。」 「おいましていましていましていましていましていましていましていましていま

# श्री जिन कुशल सूरि स्तवन

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, सेवक जन मन वंछित पूरण, समरचां होत हजूर ॥ कु॰ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ करम भये दूर । संघ उदय कर सद्गुरु मेरा, विनवे श्री जिनचन्द सूर ॥ कु॰ २ ॥

#### श्री जिन कुशल सूरि स्तवन

आयो आयो जी समरंता दादा जी आयो। संकट देख सेवक कूं सद्गुरु देग उरतें ध्यायो जी॥ स॰ १॥ दादा वरसे मेंहनी रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो। पंच नदी हम बैठे वेडी, दरीये चित्त डरायो जी॥ स॰ २॥ दादा उच्च भणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो। समय सुन्दर कहे कुशल कुशल गुरु, परमानन्द सुख पायो जी॥ स॰ ३॥

#### कुशल गुरु स्तवन

( सद्गुरु करुणा निधान, राखो लाज मेरी )

जय जय जिन कुशल सूरि, समरत हाजर हजूर । महकत जिम यश कपूर, मिहमा जग तेरी ॥१॥ जहां पर तुम हो दयाल, छिन में करदो निहाल । संकट को चूर देवो, दौलत की ढेरी ॥२॥ तुम हो सुरतरु समान, बंखित फल देवो दान । सेवक को दीन जान, मेटो भव फेरी ॥३॥ शरण आय की राखो लाज, बंखित सब पूरो काज । हरख चन्द शरण आयो, महिमा सुन तेरी ॥४॥

#### कुशल गुरु स्तवन

कैसे कैसे अवसर में गुरु, राखी लाज हमारी। मोकूं सफल भरोसा तेरा, चन्द सूरि पट धारी ॥१॥ तुम बिन और न कोई मेरे, इस युग में हितकारी। मेरा जीवन हाथ तुम्हारे, देखो आप विचारी ॥२॥ आगे तो कई वेर हमारी, चिन्ता दूर निवारी। अबके बिरियां भूल मित जावो, सद्गुरु पर उपकारी॥३॥ अबके आज लाज गूजर की, रिखये गुरु जस धारी। मेरे श्री जिन कुशल सुरिन्द का, बड़ा भरोसा भारी॥॥॥

स्ववन-विभाग १६६

कुञाल सुरिजी स्तवन
कुशल गुरुदेव के दरसन, मेरा दिल होत है परसन । जगत में आप
सम कोई, न देखा नयन मर जोई ॥१॥ विरुद भूमंडले गाजे, परसतां
पाप सहु भाजे । पूजतां सुखसम्पदा पावें, अचिती लिच्छ घर आवें ॥२॥ इके
मुख गुण कहूं केतां, मेरे हिये ज्ञान निहं एता । लालचन्द की अरज
सुन लीजे, चरण की भक्ति मोहि दीजे ॥३॥

मणिशारी श्री जिनचन्द्र स्रि स्तवन

( तुम तो मले विराजो जी, मणिधारी महाराज दिल्लीमें मले विराजो जी )
नर नारी मिल मंदिर आवें, पूजा आन रचावें । अष्ट द्रव्य पूजा में
लावें, मन वंजित फल पावें ॥१॥ आशा पूरो संकट चूरो, ये है विरुद्द
तुम्हारो । आधि व्याधि सब दूरे नाशो, सुख सम्पति दे तारो ॥२॥ वाद
विवादें जन जय पावें, तारें जलधि जहाज । बाट घाट मय पीड़ा मांजे,
समरण श्री गुरुराज ॥३॥ पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार ।
ऋदि सिद्धि सुख सम्पति दीजे, भला भरजो मंडार ॥७॥ सेवक ऊपर
करणा कर जो, महिर नजर तुम धरजो । लक्ष्मी लीला घरमें मरजो, एतो
काम तुम करजो ॥५॥

गुर्वाष्टकम्

महा ज्ञानी ध्यानी तुम विदित दानी प्रवर थे, धरा धारा के थे तुम
तरुण तैराक मित मन् । तुम्हें ध्याता हूं में विमल मन से प्राणपण से,
द्याल्थे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥१॥ पता क्या था १
पीताम्बर युगलधारी न गुरु हैं, बढ़े मायी वे हैं कपट रचना पूर्ण पढ़ हैं ।
वतायी थी सची शरण तुमने नाथ सुझको, दयाल्थे ! दुःखों का दमन
अव आचार्य ! करदो ॥२॥ रहेंगे संसारी अमण करते नित्यतम में, मला !
होगा कैसे गुरु प्रवर ! उद्धार उनका । कृपा मीक्षा देके करण वरणागार
अपनी, दयाल्थे ! दुःखों का दमन अब आचार्य !करदो ॥३॥ सुनेंगे स्वादेंगे

पे वह गुरुवाब्दक वथा स्तवन जे बुठ पठ कु भहारक श्री पूच्यती श्री जिनस्ल सुरिजी
के वित्य जेनसुर पठ पठ वित्यनक का वनावा हुला है।

गुरु वचन सानन्द मन से, उन्हें गारण्टी है निखिल सुख निर्वाण पदकी। गुरो ! खामी मेरे मन सदन में शान्ति भरदो, दयान्ये ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥॥ चिदात्मन् जा जा के नगर वसती ग्राम जन में, दिखाया छोगों को परम पद का मार्ग तुमने । मुझे भी आशा है चरम गति की नाथ ! तुमसे, दयान्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्थ ! करदो ॥५॥ बिछाया माया ने सजन करके जाल जग का, हगों के होते भी मनुज वन अंधे फंस रहे । तुम्हारी सेवायें मन नयन का मञ्जु सुरमा, दयाक्ये ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥६॥ सुनाता मैं स्वामित ! तव गुण कथा जैन कुल में, तुम्हें ध्याता जाता प्रणत शिर है रत्न जिन ! में । तुम्हारा चेला है सफल करना सूर्यमल को, दयान्धे ! दुःखों का दमन अव आचार्य ! करदो ॥७॥ प्रतीक्षा भीक्षा है मम, तव परीक्षा समयकी, तुम्हारा ही सारा प्रभुवर ! सहारा भुवन में । कहो, बोलो, होगी परमपद की प्राप्ति मुझको, दयाच्ये ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥८॥

# जिनरत्नसूरि स्तवन

रत्न सूरी गुरू, शिष्य जिनचन्द के। अधिकारी गुरूजी, शिष्य जिनचन्द के ॥१॥ खरतर गच्छ में गणधर साहब, रत सूरि गुरु ध्यानी ॥ शिष्य॰ २ ॥ सम्वत् उन्नीसौ इकतालीसे, बैठे गद्दी शुभकारी ॥शिष्य॰३॥ पॅतालीस आगमों के ज्ञाता, सूत्र अस्य विस्तारी ॥ शिष्य॰ १ ॥ पत्रास्ति-काय षट् द्रव्य के बेत्ता, शुद्ध धरम हितकारी ॥ शिष्य॰ ५ ॥ टीका निर्युक्ति भाष्य चूरणी, पञ्चाङ्गी अधिकारी ॥ शिष्य॰ ६ ॥ सम्वत् उन्नीसौ ब्यानवे में, बैशाख बदी अति भारी ॥ शिष्य॰ ७॥ अमावस के दिन स्वर्ग सिधारे, संघ में हुवा दुख भारी ॥ शिष्य॰ ८॥ सूरजमछ गुरू के गुण गावें, धन धन जाऊं बलिहारी ॥ शिष्य॰ ९ ॥

॥ इति स्तवन विभाग ॥



# स्तुति-विभाग

#### सिदाचल की थुई

पुंडरगिरि महिमा, आगम मा परसिन्छ । विमलाचल भेटी, लहिए अविचल ऋद्य ॥ पंचम गति पोहता, मुनिवर कोडा कोड । एणें तीरथ आवी, कर्म विपाक विछोड ॥१॥

#### शत्रुञ्जय स्तुति

सेत्रुंजा गिरि निमये, ऋषभदेव पुंडरीक । शुभ तपनी महिमा, सुने गुरु मुख निरमीक ॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिसूं चैत्य वंदनीक । करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥ शक्रस्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अक्षत गिनती से चढ़ता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा भाखइ इम जगदीस । तेहि जनित प्रणमूं, स्वामी जिन चौबीस ॥२॥ सुदि पक्षनी पूनम, चैत्र मास शुभ वार । विधि सेती लहिये, आगम साख विचार ॥ इम सोले वरस लग, धरिये ध्यान उदार । करतां नरनारी पामें भव नो पार ॥३॥ सोवन तन चरणें, नयने तिम अरविंद । चक्केसिर देवी सेविय नर सुर वृन्द ॥ कामित सुखदायक, पूर्य मन आनन्द । जंपे गणनायक, श्री जिन लाम सुरिन्द ॥॥॥

The second of th

#### सोमन्धर स्तुति

मन सुद्ध बंदो भावे भवियण, श्री सीमंघर राया जी। पांच सौ धनुष प्रमाण विराजित, कंचन वरणी काया जी॥ श्रेयांस नरपित सत्यकी नंदन, वृषम लंछन सुखदाया जी। विजय भली पुक्खलावइ विचरे, सेवे सुरनर पाया जी॥१॥ काल अतीत जे जिनवर हुआ, होस्ये विलय अनंता जी। संप्रतिकाले पंच विदेहे, बरते वीस विचरंता जी॥ अतिशय वंत अनंत जिनेसर, जग वंधन जग त्राता जी। ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे, पावे शिव सुख साता जी॥२॥ मोह मिध्यात तिमिर भव नासन, अभिनव

सूर समाणी जी । भवोद्धि तरणी मोक्ष नसरणी, नयनिक्षेप पहाणी जी ॥ ए जिनवाणी अमिय समाणी, आराधो भिव प्राणी जी ॥३॥ शासन देवी सुरनर सेवी, श्री पंचांगुलि माई जी । विघन विदारण संपित कारण, सेवक जन सुखदाई जी ॥ त्रिसुवन मोहिन अंतरजामिन, जग जस ज्योति सवाई जी । सानिधकारी संघने होयज्यो, श्री जिनहर्ष सहाई जी ॥१॥

#### द्वितीया की स्तुति

मही मंडणं पुण्ण सोवण्ण देहं, जणाणं दणं केवलणाण गेहं। महाणंद लच्छी वहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंघरं तित्य रायं ॥१॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भविस्संति ते सव्य भव्वाण ताया। तहा संपयं जे जिणा बहुमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥२॥ दुरुत्तार संसार कुव्यार पीयं, कलंका वली पंक पक्खाल तोयं। मणो बंक्षियच्छे सुमंदार कप्पं, जिणंदागमं बंदिमोसु महप्पं ॥३॥ विकासे जिणंदाण णंभोजलीणा, कलारूव लावण्ण सोहग्ग पीणा। वहं तस्स चित्तंपि णिच्चंपि झाणं, सिरी भारई देहि मे सुद्ध णाणं॥॥॥

#### पंचमी को स्तुति

पंच अनंत महंत गुणाकर, पंचम गित दातार । उत्तम पंचम तप विधि वायक, ज्ञायक भाव अपार ॥ श्री पंचानन छंछन छंछित, वंछित दान सुदक्ष । श्री वर्डमान जिनन्दें वंदो, ध्यावो भविजन पक्ष ॥१॥ पूरण चन्द्र महाश्रव रोधक, बोधक भव्य उदार । पंच अणुव्रत पंच महाव्रत, विधि-विस्तारक सार ॥ जे पंचिन्द्रिय दम शिव पहुंता, ते सगछा जिनराय । पांचम तप धर भवियण ऊपर, सुधिर करी सुपसाय ॥१॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर, पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित, भाजत मद पंच वाण ॥ पंचम काछ तिमिर भव मांहे, दीपक सम सोमंत । पंचम तप फछ मूछ प्रकाशक, ध्यावो जिन सिन्दंत ॥३॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवा, कारक जे नर नार । निरमछ पांचम तप ना धारक, तेह भणी सुविचार ॥ श्री

सिद्धायिका देवी अह निशि, आपो सुक्ल अमंद । श्री जिन लाभ सुरिन्द पसाये, कहे जिणचन्द्र मुणिन्द्र ॥४॥

#### पंचमी की स्तुति

पंचानंतक सुप्रपंच परमा नन्द प्रदा नक्षमं, पंचानुत्तर सीम दिन्य पदवी वश्याय मन्त्रोत्तमम् । येन प्रोज्वल पंचमी वर तपो व्याहारि तत्का-रिणाम् । श्री पंचानन लांछनः सतनुतां श्री वर्द्धमानः श्रियम् ॥१॥ ये पंचा-श्रवरोधसाधन पराः पंचप्रमादी हराः, पंचाणुव्रत पंच सुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः । कृत्वा पंच ऋषीक निर्जय मथो प्राप्ता गतिं पंचमीं. तेऽमी सन्त सुपंचमीव्रत भृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीरोन संस्त्रितं, पंच ज्ञान विचार सार किलतं पंचेषु पंचत्वदम् । दीपाभं गुरु पंच मारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफल प्रकाशन पटं ध्यायामि जैना-गमम् ॥३॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्री पंचमेर श्रियां. भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंच दिव्यं व्यधात् । प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत पञ्चालिका, पञ्चम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥श।

## अष्टमी स्तुति

चउवीसे जिनवर प्रणम्ं हूं नित मेव, आठम दिन करिये चन्दा प्रभु नी सेव । मूरित मन मोहे जानें पूनमचन्द, दीठां दुःख जाये पामें परमा-नन्द ॥१॥ मिल चौंसठ इन्द्रें पूजे प्रमुजिन पाय, इन्द्राणी अप्सरा जोड़ी गुण गाय । नन्दीश्वर द्वीपें मिल सुर वर नी कोड़, अहाई महोत्सव करतां होड़ा होड़ ॥२॥ सेत्रुंजा शिखरे जानी लाभ अपार. चामासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियण ने तारे देई धरम उपदेश, दृध सा करची पिण वाणी अधिक विशेष ॥३॥ पोसो पडिक्कमणूं करिये व्रत पचखाण, आठम तप करतां आठ करम नी हाण । आठ मंगल यायें दिन दिन कोडि कल्याण । जिनसुख सूरी कहे इम जीवित जनम प्रमाण ॥१॥

#### एकाद्शी स्तुति

अरनाथ जिनेसर दीक्षा निम जिन ज्ञान, श्री मिष्ट जनम व्रत केवल

之,是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们 第二个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们就是 ज्ञान प्रधान । इग्यारस मगिसर सुदि उत्तम उरधार, ए पञ्चकल्याणक समरीजे जयकार ॥१॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुणधार. इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार । इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय, मन सूधे सेच्यां सब संकट मिट जाय ॥२॥ जिहां बरस इग्यारे कीजे वत उपवास, बिछ गुणनो गुणिये विधि सेती सुविलास। निज आगम वाणी जाणी जगत प्रधान, इक चित्त आराधो साधो सिन्द विधान ॥३॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग्दर्शन वन्त, जिनचन्द्र सुसेवक वेयावच करन्त । श्री संव सकल में आराधक बहु जाण, जिन शासन देवी देव करो कल्याण ॥॥॥

# मौन एकादशी स्तुति

अरस्य प्रवज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलम् , तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलम् । वलक्षैकादश्यां सहिस लसदुद्दाममहिस, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥१॥ सुपर्वेन्द्र श्रेण्यागमनगमनै भूमि वल्यं, सदा स्वर्गत्येवा हमहमिकया यत्र सलयं । जिनानामप्यायुः क्षणमति सुखं नारक सदः, क्षितौ॰ ॥२॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्त णा-मिति च विदितं शुद्ध समये । अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुमवेयुर्वहुमुदः, क्षितौ॰ ॥३॥ सुरा सेन्द्राः सर्वे सकल जिनचन्द्र प्रमुदिता, स्तथा च ज्योति-ष्काखिल भवननाथा समुदिताः । तपो यत्कर्तृणां विद्ववति सूखम् विस्मित हृद्:, क्षितौ० ॥॥

चतुर्दशी स्तुति

अत्रिरल कमल गवल मुक्ताफल कुवलय कनक भारतूर । परिमल बहुल कमलद्ल कोमल पद्तलल्लुलित नरेश्वरम् ॥ त्रिभुवन भवन सुदीप्त प्रदीपक मणि कलिका विमल केवलम् । नव नव युगल जलिंघ परिमित जिनवर निकरं नमाम्यहम् ॥१॥ व्यन्तर नगर रूचिक वैमानिक कुलगिरि कुण्ड सकुण्डले । तारक मेरु जलघि नन्दीसर गिरि गजदन्त सुमण्डले ॥ वक्षस्कार भवन वन जोतिष कुरू वैताट्य कुल्लिगा । त्रिजगित जयित विदित शाश्वत जिन निततितिरिह मोह पारगा ॥२॥ श्रुत रत्नैक जलिघ मधु

मधुरिक रसभर गुरू सरोवरम् । परमत तिमिर करण हरणोद्धर दिनकर किरण सहोदरम् ॥ नैगम नय हेतु भंग गम्भीरिम गणधर देव गीप्पदम् । जिनवर वचन मविन मवतात सुचि दिशतु नतेषु सम्पदम् ॥३॥ श्री मद्वीर चरम तीर्थाधिप मुख कमलाधि वासिनी । पार्वण चन्द्र विशद वदनोज्वल राजमराल गामिनी ॥ प्रदिशतु सकल देव देवीगण परिकलिता सतामियं । विचकल धवल कुवलयकल मूर्तिः श्रुतदेवी श्रुतोच्चयम् ॥॥॥

चतुर्दशी स्तुति

## अमावस्या स्तुति

सिद्धारथ ताता जगत विख्याता, त्रिसला देवी माय । तिहां जग गुरु जनम्या सब दुख विरम्या, महावीर जिन राय ॥ प्रमु लेई दीक्षा कर हित शिक्षा, देई संवत्सरी दान । वहु करम खपेवा शिव मुख लेवा, कीधो तप

र इस स्तुति को खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री दादाजी श्री जिन कुशल सूरिजी महाराज ने सुदंग के वोलों पर बनायी है।

是好过数 医原质 用水板在汽车或的车场的地位的地位的地位的地位的地位的地位的地位的地位的地位,他们是他的一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一个一

शुभ ध्यान ॥१॥ वर केवल पामी अंतरजामी, विद काती शुभ दीस । अमावस जातें पिछली रातें, मुगति गया जगदीस ॥ विल गौतम गणधर मोटा मुनिवर, पाम्या पंचम ज्ञान । थया तत्व प्रकासी शील विलासी, पहुंता मुगति निदान ॥२॥ सुरपित संचिरया रतन उधिरया, रात थई तिहां काली । जन दीवा कीधा कारज सीधा, निसा थई उजवाली ॥ सहु लोके हरखी निजरें परखी, परब कियो दीवालि । विल मोजन भगतें निज निज सगतें जीमें सेव सुहाली ॥३॥ सिद्धायिका देवी विधन हरेवी, वंछित दे निरधारी । करे संघ ने साता जिम जग माता, एहवी शक्ति अपारी ॥ जिण गुण इम गावे शिव सुख पावे, सुणज्यो भविजन प्राणी । जिनचन्द यतीसर महा मुनीसर, जंपे एहवी वाणी ॥॥।

#### निर्वाण स्तुति

पापायां पुरि चार षष्ठ तपसा पर्यङ्क पर्यासनः। क्षमा पाल प्रमु हस्त पाल विपुल श्री शुक्ल शालामनु ॥ गोसे कार्त्तिक दर्श नाग करणे तूर्यार कान्ते शुमे । स्वातौयः शिवमाप पाप रहितं संस्तौमि वीर प्रमुम् ॥१॥ यद्गमी गमनोद्भव व्रत वर ज्ञानाक्षराप्ति क्षणे । संभ्याशु सुपर्व संतित रहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्री मन्नामिभवादि वीर चरमास्ते श्री जिनाधीक्षराः। संवाया नव चेतसे विद्धतां श्रेयांस्यने नांसि च ॥२॥ अर्थात्पर्विमदं जगाद जिनपः श्री वर्द्धमानामिध, स्तत्पश्चाद् गणनायका विरचयां चकुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थ समस्त नेक समये सम्यग्दशां म् रगृशां । भ्याद्भावक कारक प्रवचनं चेतश्चमत्कारियत् ॥३॥ श्री तीर्थाधिप तीर्थ भावन परा सिद्धायका देवता । चं च चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायाद सौ ॥ अर्हन् श्री जिनचन्द्र गीस्सुमित नो भन्यात्मनः प्राणिनो । या चक्रेऽवम कष्ट हस्ति निधने शार्द् ल विक्रीडितम् ॥४॥

#### पर्युषण स्तुति

बिल बिल हूं ध्याबूं गाऊं जिनवर वीर, जिन पर्व पज्रसण दाख्या धरम नी सीर । आषाढ़ चौमासे हूंती दिन पंचास, पडिकमणुं संवन्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भलें भावें मिरिये पुण्य मंडार । विल चैत्य प्रवाडें फिरतां लाम अनन्त, इम परव पज्र्सण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजावी शुभ बांचनायें वंचाय, श्री कल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रति दिन परभावना धूप अगर उनसेव, इम भवियण प्राणी परव पज्रसण सेव ॥३॥ विल साहम्मीवच्छल करिये बारम्बार, केइ भावना भावे केइ तपसी शिलधार । अडदीह पज्रसण इम सेवत आनंद, सुय देवी सांनिध कहे श्री जिन लाम सुरिंद ॥॥॥

#### नवपद् स्तुति

जग नायक दायक सिद्ध चक्र सुखकंद, जेहना जपथी भाजे भव भय फंद । श्री पाल ने मैना विधि से ये तप कीध, नव पद थी थासे अष्ट सिद्धि नव नीध ॥१॥ जिन सिद्ध आचारज पाठक श्री मुनिराय, दर्शन ज्ञान चारित्र नवमो तप कहवाय । एक एक पद ध्याता जीव तरचा संसार, चौबीसी प्रणमूं कीधो भवि उपगार ॥२॥ आसू विल चैत्रे सुदि सातम थ्री जान, आलोकी जे शुभ भावे आंबिल कर पचखान । पद पद नो गुणनो, कीजे मन सुजगीस आगम मांहे बोल्यो ध्यावो तुम निस दीस ॥३॥ विमलादिक देवा देवि चक्केसरि मान, सिद्ध चक्र ना सेवक आपे वंखित दान । खरतर गछ दिनकर श्री जिन अखय\* सुरिन्द, तासु चरण पसायें भाखे श्री जिनचन्द ॥॥॥

#### नवपद स्तुति

निरुपम सुखदायक जग नायक, लायक शिवगति गामी जी। करुणा सागर निज गुण आगर, शुभ समता रस धामी जी॥ श्री सिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर, ध्यावे जे मन रंगे जी। ते मानव श्री पाल तणी परें, पामे सुख सुर संगे जी॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु महा गुणवंता जी। दरसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी॥

,这里是这种,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们是一个,我们就是一个,我们是一个,我们

<sup>#</sup> यह स्तुति श्री रंगविजय खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यज्ञी श्री जिन अखय सूरिजी महाराज की बनायी हुई है।

एहनूं ध्यान घरंता लहिये, अविचल पद अविनाशी जी । ते सघला जिन नायकं निमये, जिन ए नित्य प्रकाशी जी ॥२॥ आसू मास मनोहर तिम विल चैत्रक मास जगीशें जी । उजवाली सातम थी करिये, नव आग्विल नव दिवसं जी ॥ तेर सहस विल गुणिये गुणणूं , नवपद केरो सारो जी । इणपरि निर्मल तप आदरिये आगम साख उदारों जी ॥३॥ विमल कमल दल लोयण सुन्दर, श्री चक्केसरि देवी जी । नवपद सेवक भविजन केरो, विद्य हरो सुर सेवी जी ॥ श्री खरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्री जिन भक्ति मुणिदा जी । तासु पसायें इणपरि पभणे, श्री जिनलाम सुरिंदा जी ॥शा

#### श्री आदि जिन स्तुति

प्रणामूं परम पुरुष परमेसर, परमातम पद धारी जी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपकारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगत गुरु, सहजानन्द स्वरूपो जी। रिपभ जिनेसर लोक दिनेसर, आतम संपद भूपो जी ॥१॥ पांच भरत विल पांच ऐरवत, पंच विदेह मझारा जी। काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या शिवपद सारो जी ॥ विलय अनागत काल अनंता, यास्ये इणही प्रकारो जी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंदुं वहु सुखकारो जी ॥२॥ अरये श्री जिनराज वखाण्या, गृंध्या श्री गणघारो जी । अंग दुवालस अतिसय उत्तम, अरथ विविध विस्तारो जी ॥ गुण परजय नय संग प्रमाणे, जिहां पट् द्रव्य विचारों जी । ते आगम मन शुद्र आराध्यां, तृटे कर्म विकारो जी ॥३॥ सुन्दर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्के-सरि देवी जी । श्री जिन शासन सानिध करणी, दो वंछित नित मेवी जी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुखकंदा जी । श्रीजिनचंद मुणिद पसाये, कहे जिन हर्ष सुरिंदा जी ॥॥

#### श्री अजित जिन स्तुनि

विक्व नायक लायक जित रात्रु विजयानंद । पय जुग निन प्रणमे देव अने देवेंद् ॥ भव लहरी गहरी सब मन घरी अमंद । श्री गुरन नहरे वंदो अजित जिणंद ॥१॥ आठ प्रातिहारज अतिराय बलि चीनीम । दिल

रंजन देशन तेहना गुण पैंतीस ॥ अगणित ऋष्टिधारी आचारी मां ईश । एह गुणनां धारक वंदूं जिन चौवीस ॥२॥ सुज्ञ अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धान्त । स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्ति निव भ्रांत ॥ पाप करदम पाणी सद्गतिनी सहनाणी । सुणिये नित भविका आगम केरी वाणी ॥३॥ शासननी साची देवी सानिधकारी । दुःख कष्ट निवारण सेवी जे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी । जिन लाभ पर्यपे होज्यो जय जयकारी ॥४॥

#### श्री सम्भव जिन स्तुति

( निरुपम सुखदायक )

。1912年,由于1912年,19

संभव जिनवर तुंही हितकर, सावत्थी नगरीनो वासी जी। जितारि पिता अरु मात सेना के, चौद सुदी मग जनम्यां जी। चार शत धनुष शरीर प्रमाणे, कंचन वरणी काया जी। छहम तपसे जिन संयम छीनो, छंछन अश्व प्रमु पाया जी।।१॥ चौदस मारग सुदि जनम छियो, पूर्ण मारग में दीक्षा जी। चौद वरस प्रमु छद्म विराजे, उपसरगे सहन करिया जी।। कार्त्तिक विद पंचम केवल पायो, प्रमु वाणी ने पसरायी जी। साठ प्रच आयु प्रमाणें, चैत्र सुदी पंचम गित गामी जी।।२॥ शत दो गणधर प्रमुजी के साथे, दोय छाख श्रमणना धारी जी। तीन छाख सहस छचीस प्रमाणें, श्रमणी गुण गण भारी जी।। दोय छाख सहस त्रयाणवे श्रावक, इम परिवार सूं वाध्यो जी। सहस छचीस छाख श्रावकण्या, भव्य जीवा ने पार उतारो जी।।३॥ शासन यक्ष त्रमुख कहलाये, दुरितारी शासन देवी जी। इनकी भगती नित नित करिये, दूर हरे दुख दुरितो जी।। संघ नायक श्री रत्न सुरीश्वर, खरतरगच्छ आचारो जी। तास शिष्य सुवाचक सूरजमल, पावे नित सुख भंडारो जी।।॥।

#### श्री अभिनन्दन जिन स्तुति

( चडवीसे जिनवर )

अभिनन्दन जिनवर वन्दुं नित उठ भार, दृजे माथे दिन जनमें

तुझ विन हैं नहीं और । स्रत अति प्यारी पावे हृदय अनन्द, दर्शन से भय भागे दूर होय दुख दन्द ॥१॥ इन्द्र अहमिन्द्र सभी नत मस्तक हो जाय, इन्द्राणी भी मिलकर जोडे हाथ मिलाय । प्रमुवर की पुण्याई गावे हिलमिल जोर, करे अप्टाह्नि महोत्सव देव करे शोरा शोर ॥२॥ पुण्डिर गिरवर में पावे घरम अपार, चार मास तक रहिया श्रमण मुनी परिवार । शुध श्रावक ने तारे सुना प्रभू उपदेश, पय अमृत से बढ़कर वाणी अधिक विशेष ॥३॥ सामायिक पडिक्कमणो करिये मन शुद्ध माब, अभिनन्दन जिन ध्यावत मिटे करम का ताव । शुद्ध समिकत पावे होवे निज कल्यान, श्री रह्तसूरि के शिष्य सूरज मल गुण गान ॥१॥

## श्री सुमति जिन स्तुति

( चउवीसे जिनवर )

सुमती जिन वंदुं, उठे नित परभात । रिलये सदा मनमें, दूर दुःख होय जात ॥ जनम सुदी वैशाखें, अष्टिम दिन में आय । पिता मेघरथजी, मात सुमंगल थाय ॥१॥ जनमे नगिर विनीता, उत्तम इक्ष्मकु वंश । सुदि नविम वैशाखें, संयम लियो निःसंश ॥ लञ्जन कोंचे सोहें, दूर किये दुःख दन्द । कञ्चन वरणी काया, शतत्रय धनुष सोहन्त ॥२॥ चैत्र सुदी पूर्णिमा, प्रगट्यो ज्ञान अपार । गणधर शत किहये, त्रिलक्ष सहस्र वीस अनगार ॥ लक्ष पंच सहस्र त्रीसे, श्रमणी हुवो परिवार । श्रावक श्रावकण्यां मिल अप्ट, लक्ष सरदार ॥३॥ महाकाली शासन देवी, और तुम्बरू यक्ष । इनके समरण से, कष्ट जाय परतक्ष ॥ मारग विद एकादशी, लियो परम पद स्थान । श्री रलसूरि शिष्य मोती का, तव चरणन में ध्यान ॥४॥

#### श्री पद्म प्रभु स्तुति

( बलि बलिहुं ध्यावूं )

जुग जुग यहि चाहूँ पाऊं पद्म प्रमु धीर । कार्तिक बदि बारस जनम्यां प्रमु वड़ वीर ॥ कौशाम्बी नगरी श्री सुसीमा मात । राजा पिता श्रीधर जी इक्ष्वाकु वंशना जात ॥१॥ छट्ठे जिनवर को पूजो विविध प्रकार ।

इनके बचनों पे चिलये, पाबो सुक्ख अपार ॥ दुःख दारिद्र नाशे पावें लील विलास । इनकी भक्ति से हो संसार भ्रमण का नास ॥२॥ वर्ण सुवर्णे सोहे दो रात धनुष प्रमाण । पदम लञ्कन युत जेठ तेरस सुदी आण ॥ भगवन दीक्षा घारी छद्मकाल षट् मास । चैत्र सुदी पूनम ने केवल ज्ञान प्रकास ॥३॥ विल यक्षने समरो कुसुम यक्ष सुखकार । प्रति दिन भक्ती से ध्यावे दिल मांहि धार ॥ सुख सानिध कीजे देवी ख्यामा मात । सूरज के हित बञ्कु जिन रक्षसूरि विख्यात ॥४॥

# श्री सुपार्क्व जिन स्तुति

( प्रणमूं परम पुरुष परमेसर )

श्री सुपार्श्व जिनेश्वर जगके हितकर, बनारिस नगरी में आया जी। राणी पृथ्वी नृपित प्रतिष्ठ से, जेठ सुदी चौथ में जाया जी।। कञ्चन वरणें काया सोहत, वंश इक्ष्वाकु बताया जी। शत दो धनुष देह प्रमाणे, स्वित्तिक छञ्छन पाया जी।।१॥ जेठ सुदी तेरस संयम छीनो, जगत भव भय नाशें जी। छग्नस्थकाल नव मास विराजे, प्रगट्यो ज्ञान अपारें जी॥ पञ्च नव गणधर आपके साथे, तीन लक्ष श्रमण परिवारें जी। तीन सहस लख चतुर प्रमाणें, साधिवयां ससुदायें जी॥२॥ दोय लख सहस सतावन श्रावक, भगवत बचन कूं मानें जी। तीन सहस लख उनचासे श्रावकण्यां, प्रभुजी को आय बधावें जी॥ सर्वायू पूरव वीसे लक्षे, असृत वाणी सुनाया जी। मागुन विद सप्तमि दिन में, सिखर सम्मेत सिधाया जी॥३॥ मातंग यक्ष करे प्रभुजी की सेवा, संघ का कष्ट निवारें जी। शान्ता देवी शासन के हित, दूर करे सब दुरितें जी॥ खरतरगच्छ में आचार्य यतीश्वर, श्री रत्वसूरि सुहाया जी। तास शिष्य हितचिन्तक कहिये, मोतीचन्द गुण गाया जी।।॥॥

## श्री चन्द्र प्रभु जिन स्तुति

( सुर असुर वंदिय )

चन्द्रपुरि में चरण चरचित, राय महसेन व्यवस्थितम् । वर शुभ्र

कि रि ए जिल्हें में ए जिल्हें में ए एहें में ए एहें में आप ति म प्र आप ति स्थाप का स्याप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्था का स्थाप का स शरीर रूप मनोहर, चन्द्र लञ्छन सुस्थितम् ॥ लक्ष्मणा देवि नन्दन त्रिलोक वन्दन भव्य हृद्य स्थितेक्वरम् । गिरिवर शिखर सम्मेत वन्दुं, चन्द्र प्रभु जिनेश्वरम् ॥१॥ इक्ष्वाकु वंश वदि पोष तेरस, आप प्रमु संयम प्रहें । काल छद्यें त्रय मास बीतत, फाग सप्तमी केवल लहें ॥ त्रयाणु गणधर आदि वरदत्त, साधु साध्वी परिवरें । छख छ सहस तीस मुनि संघ, बंदुं नित उठ भय हरें ॥२॥ पैतालीस आगम मूल सूत्रें, इन्हीं में ज्ञान समझ मणें । छेद ग्रंथ को छोड़ दीने, श्रावक जन सुने निहं भणें ॥ कर्म ग्रन्थ स्याद्वाद न्यायें, शास्त्र हिलमिल ध्याइये । चौद पूरव मूल रचना, जिन धर्म इसी में बताइये ॥३॥ विजय यक्ष और भृकुटी यक्षणि, सदाही यह मंगल करें। दुख दारिद्र सब दूर करके, इष्ट संयोग संपति भरें ॥ सम्मेत शिखरे मुक्ति पहुंचे, चन्द्र प्रभु जी सुख करें । खरतरगच्छ में रत्नसूरी, सूरज चरणन शिर

# श्री सुविधि जिन स्तुति

( समर्रुः सुखदायक )

काकंदी के श्टङ्गार जिनवर सुविधि जिनंद । निष्काम निःस्नेही आतम ज्ञान दिनंद ॥ थे सुग्रीव पिता माता रामा के नंद । मृगशिर वदि बारस जन्म हुओ सुखकंद ॥१॥ स्वेत वरण से सोहे वंश इक्ष्वाकु सुजान । कातिक सुदि ततीया गयो मिध्यात्व अज्ञान ॥ अष्ट करम खपाये पायो पंचम ज्ञान । इन पंचमकाले रखज्यो आगम ध्यान ॥२॥ श्री सुविधिना गुणधर नाम बराहक जान । द्वादश अंग रचना, कीनी सूगुण गुणवन्त ॥ प्रभु आगम मांहे भाखें इम अरिहंत । समिकत ने राखाँ छोड़ो धरम एकंत ॥३॥ देवी सुतारका अजित नाम है यक्ष । इनकी पूजन से सुख सम्पति परतक्ष ॥ सब मिल कर सेवो जैन घरम परघान । श्री रत्नसूरि शिष्य सूरजमल गुणगान ॥४॥

# श्री शीतल जिन स्तुति

सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दृढ़ रथ नृप राणी नंदा

केरा नंद ॥ भिहलपुर स्वामी काटे भवना फंद । चित चोले निमये श्री शीतल जिन चंद ॥१॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये और अनंत । संप्रतिकाले जे, क्षेत्र विदेह विचरन्त ॥त्रिहुंभव नेठवणा सासय असासय हुंत, ते सगला त्रिकरण प्रणम्ं श्री अरिहन्त ॥२॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग समृद्ध । नयभंग निक्षेपा स्याद्वाद नित सिद्ध ॥ भिवजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोडि कलेश ॥३॥ ब्रह्म यक्ष अशोका शासन सूरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समिकत धार ॥ चिन्ता दुःख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन लाभ सुरीस ॥॥॥

#### श्री श्रेयांस जिन स्तुति

( शान्ति जिनेसर अति अलवेसर )

श्री श्रेयांस तीर्थें वर त्रीलोके स्वर, जगपति जय शुभकारी जी। विष्णु नृपित के अङ्गज किहये, मात विष्णु अवतारी जी।। सुवर्ण वर्णे जिन जी छाजे, गेण्डा लञ्छन भारी जी। वारस में फागण विद जनम्यां, अयश अशुभ निवारी जी।।१॥ सिंहपुरी में स्वामी जनम पायो, इन्द्र इन्द्राणि विचारी जी। जाकर जिनजी का उत्सव कीजे, भरतक्षेत्र उजियारी जी॥ विद फागुन की तेरस दीक्षा, छद्म मास दोय धारी जी। विद अमावस माघ के दिन, केवल ज्ञान विस्तारी जी॥शा। गौशुभ गणधर अपने कीने, श्रमण संघ अति भारी जी। चौरासी हजार साधु की गणना, साधवियां सुखकारी जी॥ सहस तीन एक लख श्रमणी, बोध वीज वहु पाई जी। सहस उनहत्तर दोय लख श्रावक, इम परिवार वखाणी जी॥शा। सहस अइतालीस लख चार श्रावकण्या, वारह वत गुण खाणी जी। यक्षराज शासन के रक्षक, मानसी देवी आणी जी॥ इनकी भक्ति भिव भावें कीजे, मंघ सकल सुखकारी जी। जिन रलमृरि के शिष्य, न्रूजमल गुण गाणी जी॥शा।

# श्री वासुपूज्य जिन स्तुति

( विमलाचल मंडन )

जग नायक तारक, जयाराणी के नंद । चरण युग नित प्रति, प्रणमे इन्द्र अहमिन्द्र ॥ वासुपूज्य जिनवर पुर, चम्पा जन हुओ आनंद । रक्त वरण प्रभुजी सोहे, वंश इक्ष्वाकु सुखकंद ॥१॥ बरस लाख बहत्तर, आयू जिनवर जान । पिता वासुपूज्य जी, पुर चम्पा में ठान ॥ फागुन विद वारस जन्म हुओ सुविहान । तीर्थंकर वारमें, हो गयो कोिं कल्याण ॥२॥ चौदश शुक्त फागुन की, संयम तप को कीन । दृज सुदी माघ की, केवल ज्ञान लयलीन ॥ सुभूम गणधर प्रभुजी के, साधु परषदा दीन । साध्वी सम्प्रदायादि, धर्म ध्यान पर बीन ॥३॥ आषाढ़ सुदी चौदस दिन, पायो मोक्ष दुवार । शासन के हित चाहत, कुमार यक्ष शुभकार ॥ देवी चण्डा सबही ध्यावत, जैन धर्म जयकार । श्री रहस्त्रिके शिष्य, मोती चन्द सुखकार ॥॥॥

#### श्री विमल जिन स्तुति

( मन सुध वंदो )

शुद्ध दिल करि बंदो मिवजन, श्री विमल जिन पाया जी। है साठ धनुष शरीर मुसजित, रंग पीत है काया जी।। नगरी कंपिलपुर में जनमें, देव देवेन्द्रें आया जी। कृत वरम नृपति श्यामा के नंदन, लंकन शुकर मुहाया जी।। शा माघ व्यतीत चतुरथी की दीक्षा, सहस एक मुनि संघाते जी। छझकाल दोय मास बितायों, छट्ट पोष मुदी शुभकाले जी।। केवल ज्ञान शुभ पाय जिनेश्वर, जिनवाणी उजवाले जी। नयनिक्षेप सरूप जो जाने, पावे मोक्ष विहारे जी।। शा कोध अज्ञान तिमिर अघ नाशक, प्रमुवर शूर समानी जी। भवनिधि सरनी पार उतरनी, शुभ समिकत सहनानी जी।। है प्रमु वाणी अमृत समानी, धारो गुण मणि खाणी जी। जिनवर गणधर इम परिमाखें, आत्मधर्म जिन वाणी जी।।शा शासन देवी समिकत सहनी मेंवी, देवी विदिता माई जी। विघन निवारण समिकत कारण, सेवत सब सेवी, देवी विदिता माई जी। विघन निवारण समिकत कारण, सेवत सब

जग सहाई जी ॥ सन्मुख यक्षदेव प्रमुजी के, इनकी महिमा सवाई जी । आनन्दकारी संघने होय जो, यति सूरज के सहाई जी ॥४॥

#### श्री अनन्तनाथ जिन स्तुति

( अश्वसेन नरेसर )

श्री अनन्त जिनेश्वर वन्दुं हुं बारम्बार, नगरी विनीता सोहे अति
गुण सार । शुक्क वैशाख त्रयोदशी, हुओ जन्म सुस्रकार । नरपित सिंहसेन
के, सुख सम्पित दातार ॥१॥ सुयशा रानीसे जायो, यह चउदमो अवतार ।
कञ्चन वरणे प्रमु जी सोहे, बंश इक्ष्वाकु उदार ॥ पञ्चाशत धनुष प्रमाणे,
भ्रमत करत उपगार । लञ्छन बाज संयुक्ते, आगम मांहि उदार ॥२॥
वैशाख सुदी चौदस को, संयम लीनो भार । दुष्कर करम खपाया, जप तप
शुद्ध विचार ॥ वर्ष तीन छश्चस्ये पाल्यो, आनन्द हर्ष अपार । चौदस विद वैशाखें, ज्ञान पंचम शुभ धार ॥३॥ प्रमु धरम प्रकाशे, गणधर यशोधर
सार । चैत्र शुक्क पञ्चमी, लियो परम पद धार ॥ यक्ष पातालें सोहत,
अंकुशा देवी हितकार । श्री रत्नसूरि शिष्य, मोतीचन्द हियधार ॥४॥

#### श्री धर्मनाथ जिन स्तुति

( पंच विदेह विषे विहरंता )

भरतें घरमनाथ विचरन्ता, भानु राजेश्वर वीर कहन्ता। मानु सुव्रता के नाऊं शीश, निसि दिन ध्याऊं तूं जगदीश ॥१॥ इक्ष्वाकु वंश में आप सोहन्ता, वर्ण सुवरणें झल हल कन्ता। लांछन वज्र चरण दम कन्त, रतन पुरी थी महिमावन्त ॥२॥ गणधर मुख्य अरिष्ट कहन्त, तेयालीस संख्या है मितमन्त। सूत्र अरथ विस्तारक अंग, कहे वीतराग उछरंग ॥३॥ शासन यक्ष किन्नर कहावे, ध्यावत देवी कंदरपा आवे। सरब संघ का विघन निवारे, यित सूरज का वंछित सारे ॥४॥

#### श्री शान्ति जिन स्तुति

शान्ति जिनेसर जग अलवेसर, अचिरा उदर अवतरिया जी। विश्वसेन नृप नंदन जग गुरु, हथणापुर सुखकरिया जी॥ ईत उपद्रव

मारी निवारी, शान्ति करी संचरिया जी। जे भवि मंगल कारण ध्यावे. ते हुए गुण गण भरिया जी ॥१॥ वर्त्तमान जिन सब मुख कारण, अतीत अनागत वन्दो जी । बारे चक्री नव नारायण, नव प्रति चक्री आनन्दो जी ॥ रामादिक जे पूरव सलाका, वंदत पाप निकन्दो जी । द्रव्य निक्षेपे जिन सम जाणो, काटे भव भय फन्दो जी ॥२॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा, श्री जिन सरखी भाखी जी। द्रव्य भाव बहु भेदें पूजा, महा निशीयें साखी जी ॥ विषय निवृत्ति सत आरम्भे, विनय तपीते जाणो जी । शुभ योगे नहिं आरम्भ कारी, भगवई अंग प्रमाणो जी ॥३॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी, श्री संघने सुखकारी जी। कारण थी सब कारज सिन्धे, जिनवर आज्ञा धारी जी ॥ श्री जिन कीर्ति सुरीखर गच्छपति, पाठक श्री ऋदि सारो जी । समिकत धारी देव सहाई, सुख संपति दातारो जी ॥४॥

# श्री कुन्थु जिन स्तुति

( पंच अनंत महंत गुणकर )

श्री कुंयु जिनेश्वर, वन्दुं हूं बारम्बार । श्री शूर नरेश्वर, दया मूर्ति अवतार ॥ हस्तिनापुर नगरी, जन्म हुओ सुखकार । श्री देवी माता, सतियन में सरदार ॥१॥ वर इक्ष्वाकु सुहंकर, वंछित फल दातार । लञ्छन अज सोहे, शास्त्र तणो आधार ॥ सुर गुरु अति उत्तम, कहि न सके गुण पार । पय पंकज सेवत सब जीवन सुखकार ॥२॥ वदि पंचम वैशाखे, छी दीक्षा प्रभु धार । केवल ज्ञाने पायो, सुदी चैत्र की सार ॥ गणधर स्वयम्भू सोहे, किया पैतालीस गणधार । वदि एकम वैशाखे, पहोंचे मोक्ष दुवार॥शा यक्ष शासन के नायक, नाम गन्धर्व मनुहार । श्री बला देवी को ध्यावो, संसार सुक्ख दातार ॥ श्री रत्न सूरीश्वर, खरतरगच्छ आचार । तास सीस सुवाचक, सूरजमल उरघार ॥४॥

# श्री अरनाथ जिन स्तुति

( मूरति मन मोहन )

सूरत दिल सोहत, कंचन वरणी काय । नृपति सुदर्शन नन्दन, माता

देवी जाय ॥ नन्द्या वरते लंछन, तीस धनुष परमान । प्रति दिन सुखदायी, स्वामी श्री अर जान ॥१॥ इन्द्र अहमिन्द्र सुरवर, सेवत जन पद पद्म । इन्छित वर पूरण, अगणित गुण मणि अद्य ॥ भिव प्राणि ने तारे, पोत बहे सम दीस । श्री अर जिनेश्वर, ध्याऊं प्रभुवर ईश ॥२॥ सुदि मारग इग्यारसे, दीक्षा ली शुभ कर्म । छद्मकाल बितायो, बरस तीन दृढ धर्म ॥ सुदि चैत्र तृतीया, काटे दुष्कृत कर्म । तब पायो केवल, प्रगटे वचन जिन धर्म ॥३॥ श्री धारिणी देवी, धारो हृदय विशेष । यक्षराज को ध्यावो, काटे दुःख कलेश ॥ प्रभु सेवित करजोड़ी, रत्नसूरि जिनचन्द । कहते गुरु ज्ञानी, इम सूर्जमळ सुनिन्द ॥४॥

#### श्री मिह जिन स्तुति

( शार्दु ल विक्रीडित तथा मालिनि )

मागें शुक्क दले तिथौ शिव मिते, देशे विदेहारपदे । यः श्री कुम्म प्रभावती तनयतोमासाद्य यश्चे भुवि ॥ व्योमाकाश वसुन्धरा मित करान्, यदेह मुन्नैर्ययौ । कुम्भाङ्कां नवनीरदोपममहं, तं मिक्किनायं भजे ॥१॥ दीक्षा यस्य वभूव मासि सहिस, ज्ञानं सिते कार्तिके । देवाध्वाम्बर विह्न संख्यक गणा, यस्यात्र कुम्भाधिपाः ॥ नाका काश खशून्यमेश्वर मितां, यं जैन सन्यासिनः । सेवन्तेस्म सुखं सुराति सुखदं, तं मिक्किनाथं भजे ॥२॥ युग वसु युत लक्ष, श्रावकः श्राविकाभिः । युगल नग समेते, विह्न लक्षेश्व लब्धः ॥ जिन वचन विवेको येन यो लोक नेता । स जयित नरदत्ता यिक्षणी क्लेश हारी ॥३॥ सुर वरुण कुबेरा, वास सम्मेत श्रृङ्गे । श्रह तिथि नव शुक्ले, ज्येष्ठ मास्यास मुक्तिम् ॥ अति लघु मित मोती, चन्द्र उत्तन्द्र मितः । प्रणमित विनतस्तं सूरि रहस्य शिष्यः ॥४॥

#### श्री मुनि सुत्रत जिन स्तुति

मुणि सुव्वयं पुण्णं किण्ह पउमं, रायिगाहे पउमावइ कुच्छि जम्मं। हरिचंश सच्छंदे पिया सुमित्ते जिहा सुधे दिणमइ अह मुत्ते ॥१॥ कच्छप्प चिण्हं सुएसु उक्कं, बारस फग्गुणे सुइ संसार मुक्कं। चइकंत मासेअ इक्कारस छद्म झाणे, फग्गुण वइ वारस णाणो ववण्णे ॥२॥ सिरि इंद गणहार समुद्दपोअं, अणाणावइ णाण विकास जोअं। सया सुक्ख तत्ये, कप्प रुक्ख अप्पं, णिगंथा गमं सुण इह महप्पं॥शा कुनेर दत्ते घरणी पिया जिस्खणी, सया धम्म आरुग सहाव बोहिणी। गुरु रत्न सूरिस्स चित्तेहि धारं, जइ दिवायरेअ\* सुहप्प सारं ॥१॥

# श्री निम जिन स्तुति

जिनवर जयकारी निम नाथ भगवन्त । मथुरा नगरी में जन्म छियो गुणवन्त ॥ श्रावण वदि आठम इन्द्र इन्द्राणी आय । करे अहाइ महोत्सव नन्दीः वर पर जाय ॥१॥ पिता विजय जी रानी विशा थाय । वंश इक्ष्वाकु वरण सुवरण सुहाय ॥ लञ्छन नील कमल से प्रसु, पद्मासन सोहन्त । वदि आषाढ़े नवमी लियो संयम अरिहन्त ॥२॥ एक सहस परिवारे छद्मस्य मास नव गाय । विचरत विचरत जिन जी मथुरा नगरी में आय ॥ मगसिर सुदी ग्यारस पंचम ज्ञाने पाय । वैशाख वदि दशमी शिव संपति सुख थाय ॥३॥ भृकुटी यक्ष शासन में समिकत देव कहन्त । गान्धारी देवी तुम गुण धरे मन मोहन्त ॥ इनके पूजन से दिन दिन, पुत्र कलत्र धन होय । गुरु रत्नसूरि चरण से मोतीचन्द्र सम होय ॥॥॥

# श्री नेमि जिन स्तुति

गिरनार सिखर पर नेमिनाथ सुविहाण। दीक्षा वर केवल ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कल्याणक, सुखकर सुरतरु कन्द् । तसु भवियण

म् पहले की छपी हुई पुस्तकों मे तपस्थाओं के स्तवन हैं, परन्तु चैत्यवन्दन तथा स्तुतियां नहीं हैं । इस पुस्तक में उनकी पूर्ति करने का प्रयत्न किया गया है, कुछ समयाभाव के कारण रह भी रावे हैं। पण्डितवर्ग उसे पूर्ण करने की चेष्टा करें।

इनमें से दश पचक्लाण, छम्मासी, वारहमासी, चतुर्दश पूर्व तप के चैसवन्दन तथा स्तुतियां और ३-४-६-८-११-१३-१६-१७-१८-२० वें भगवान् की स्तुतियां और पखवासा, रोहिणी तप के चैत्यवन्दन, स्तुति और ५-७-१२-१४-१६-२१ वें भगवान की स्तुतियां रंग-विजय खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्रीपूज्यजी श्री जिनरत्न सूरिजी महाराज के शिष्य जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमह तथा मोतीचन्द्र ने वनाई है।

प्रणमो, पाय युगल अरविन्द ॥१॥ अष्टापद चम्पा पावापुर शुभ ठाण । आदिम बारम जिण चउवीसम जिण भाण ॥ अजितादिक वीसे पुहता शिवपुर वास । सम्मेत सिखर पर प्रणमूं अधिक उल्हास ॥२॥ जिनवर मुख हुंती सुंणि त्रिपदी ततकाल । गणधरना गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नय भंग पदारथ सत सत्त नव तत्य । भवियणने तारे सायर जिम बोहित्य ॥३॥ चक्केसिर अम्बा पउमा देवी परतक्ष । श्री संघ मनोरथ पूरे वा सुर वृक्ष ॥ ध्यावे सुख पावे श्री जिन लाभ सूरीश । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीश ॥॥॥

#### श्री पार्श्व जिन स्तुति

सम दमोत्तम वस्तु महापणं, सकल केवल निर्मल सद्गुणं। नगर जेसलमेर विभूषणं, भजति पार्श्व जिनंगित दृषणं ॥१॥ सुर नरेश्वर नम्र पदाम्थुजः, स्मर महीरुह भंग मतंगजा। सकल तीर्थकराः सुखकारका, इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥२॥ श्रयति यः सुकृति जिन शासनं, विपुल मंगल केलि विभासनम्। प्रबल पुण्य रमोद्य धारिका, फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥३॥ विकट संकट कोटि विनाशिनी, जिन मताश्रित सौख्य विकाशिनी। नर नरेश्वर किन्नर सेविता, जयतु सा जिन शासन देवता ॥॥॥

#### श्री पार्ख जिन स्तुति

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नन्द । नव कर तन्त निरुपम, नील वरण सुखकन्द ॥ अहि लञ्छन सेवित, पउमावइ धरणिंद । प्रह उठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥१॥ कुलगिरि वेयहुइ, कणयाचल अभिराम । मानुषोत्तर नंदी रुचक, कुंडल सुख ठाम ॥ भुवणेसर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम । वर्चेते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥२॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपांग छ छेद । दश पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चडमेद ॥ जिन आगम षट् द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त । सांमली सरद्दहतां, छूटे कर्म तुरत्त ॥३॥ पडमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष । सहु संघना संकट, दूर करे

वा दक्ष ॥ समरो जिन भक्ति, सूरि कहे इक चित्त । सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥

## महावीर जिन स्तुति

,也是有人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是 मूरित मन मोहन, कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नन्दन, त्रिशला देवि सुमाय॥ मृग नायक लंछन, साथ हाय तनु मान। दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्री वर्द्धमान ॥१॥ सुरनर वर किन्नर, वंदित पद अरविन्द् । कामित भर पूरण, अभिनव सुरत्रु कंद ॥ भवियणने तारे, प्रवहण सम निशिदीश । चउवीसे जिणवर, प्रणमूं विसवा वीस ॥२॥ अरथे करि आगम, भाख्या श्री भगवंत । गणधर ने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुर गुरु पण महिमा, कहि न सके एकन्त । समरूं सुख दायक, मन शुद्ध सूत्र सिद्धान्त ॥३॥ सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष । सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहनिश करजोड़ी, सेवे सुरनर इन्द । जंपे गुण गण इम, श्री जिन लाम सूरिन्द ॥शा

वीस बिरहमान की स्तुति

पंच विदेह विषे विहरंता, वीस जिनेसर जग जयवंता । चरण कमल तसु नामूं सीस, अहनिस समर्खं ते जगदीस ॥१॥ पंच मेरु पासे झलकंता, सोहे वीस महा गज दंता । तिण ऊपर छे जिनहर वीस, ते जिनवर प्रणम् निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग, थानक वीस भाख्या तिहाँ चंग । तिण ऊपर जे आणे रंग, ते नर पामे सुक्ख अमंग ॥३॥ जिन शासन देवी चउवीस, पूरे मुझ मन तणी जगीस । संघ तणा जे विघन निवारे, तिहु अण जन मन वंछित सारे ॥॥

॥ इति स्तुति विभाग ॥



# रास तथा सज्माय-विभाग

#### श्री गौतम स्वामी जी का रास

वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो । पणमवि पभणिसुं सामिसाल, गोयम गुरु रासी ॥ मण तणु वयण एकन्त करिवि, निसुणहु भो भविया । जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥१॥ जम्बू-दीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मण्डण। मगह देस सेणिय नरेश. रिउ दल बल खण्डण । धणवर गुन्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा । विष्प बसे बसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥२॥ ताण पुत्त सिरि इन्द भृइ, भूवलय पिसद्धो । चउदह विज्ञा विविह रूव, नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर । सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रम्भावर ॥३॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज्जल पाडिय । तेजिहं तारा चन्द सूरि आकाश भमाडिय ॥ रूबिह मयण अनंग करिव, मेल्यो निरघाडिय । धीरम मेरु गम्भीर सिन्धु, चंगम चय चाडिय ॥४॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय। एकाकी किल भित्त इत्य गुण मेल्या सिंचिय ॥ अहवा निच्चय पुट्य जम्म जिणवर इण अंचिय, रम्भा पउमा गउरि गङ्ग तिहां विधि वंचिय ॥५॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो । पंच सयां गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो ॥ करय निरन्तर यज्ञ करम मिध्यामित मोहिय, अणचल होसे चरम नाण दंसणह विसोहिय॥६ वस्तु॥ जम्बूदीव जम्बूदीव भरह वासिम्म, खोणीतल मण्डण । मगह देस सेणिय नरेस वर गुट्वर गाम तिहां॥ विष्प वसे वसु भूड् सुन्दर, तसु पुह्नि भन्जा। सयल गुण गण रूच निहान, ताण पुत्त विन्जा-निलो गोयम अतिहि सुजान॥ ७ भास॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चीविह संघ पइंडा जाणी । पावापुर सामी सम्पत्तो, चडविह देव निकायहिं जुचो ॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिण्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन वैठा, ततिखण मोह दिगन्त पइट्टा ॥९॥ क्रोध,

的人,我们是这种人,我们是这个人,我们是这个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是这一个人,我们是这一个人,这一个人,我们就是一个人,我们就会会会会会会会会会会会会会 मान, माया, मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुन्दुमि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥१०॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोविर सोहे, रूबिह जिनवर जग सहु मोहे ॥११॥ उपसम रस भर वर वर सन्ता, जो जन वाणि वखाण करन्ता । जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवड् राया ॥१२॥ कन्त समोहिय जल हल कन्ता, गयण विमाणहि रणरण कन्ता । पेखवि इन्द्र भूइ मन चिन्ते, सुर आवे अम यज्ञ हुवन्ते ॥१३॥ तीर तरण्डक जिम ते बहिता समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमाने गोयमं जंपे, इण अवसर कोपें तणु कम्पे ॥१४॥ मूढा लोक अजाण्यू बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोई जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमादीजे ॥१५ वस्तु॥ बीर जिनवर बीर जिनवर नाण सम्पन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसार तारण, तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण । जिणवर जग उज्जोय कर्रे, तेजिह कर दिनकार । सिंहासण सामी ठन्यो हुओ ते जय जयकार ॥ १६ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्द्रभूइ भूयदेव तो । हुंकारो कर संचरिय, कवणस् जिनवरदेव तो ॥ जोजन भूमि समवसरण, पेखवि प्रथमारंम तो । दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुररंम तो ॥१७॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज, कोशीशे नवघाट तो । वहर विवर्जित जंतुगण, प्राती हारज आठ तो ॥ सुरनर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो । चित्त चमिक्कय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥१८॥ सहस किरण सामी बीर जिण, पेखिअ रूव विसाल तो । एह असंभव संभव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु इन्द्रभूइ नामेण तो । श्री मुख संसय सामी सबे फेडे बेद पएण तो ॥१९॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहिं नाम्यो सीस तो । पंच सयांसूं व्रत लियो ए गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो । नाम लेई आभास करे ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥ इण अनुक्रम गणहर स्यण, थाप्या वीर इग्यार तो । तो उपदेशे सुवन गुरू संयमसं व्रत बार तो ॥ बिहं उपवासे पारणो ए. आपणपे विहरंत तो । गोयम संयम जग सयल. जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥वस्तु ॥ इंद्रभुइ इंद्रभुइ चढियो बहु मान, हुंकारो करि कंपतो । समवसरण पहलो तुरंततो जे संसा सामि सवे ॥ चरमनाह फेडे फरंत तो. बोधि बीज संजाय मनें। गोयम भवहि विरत्त. दिक्खा लेई सिक्खा सही गणहर पय संपत्त ॥२२ ॥भास॥ आज हुओ सविहाण आज पचेलिमा पुण्य भरो । दीठा गोयम सामि, जो निय नयणे अमिय झरो ॥ समवसरण मझार. जे जे संसय ऊपज ए। ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जिहां जिहां दीजें दीख, तिहां तिहां केवल ऊपज ए। आप कनें अणहंत. गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु भक्ति. सामी गोयम ऊपनिय । अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥२॥। जो अष्टापद सैल, वंदे चढ चडवीस जिन । आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इम देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय । तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तप सोसिय निय अंग, अम्हां सगति न उपज ए । किम चढ़से दृढ़ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए॥ गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतव ए। तो सुनि चढियो वेग, अलंबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कंचण मणि निष्फन्न. दंड कलस ध्वज वड सहिय । पेखवि परमानन्द, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहं दिसि संठिय जिणह बिंब। पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जंभक देव तिहां प्रतिबोध्या पुंडरीक। कंडरीक अध्ययन भणी, बलता गोयम सामि ॥ सवि तापस प्रतिबोध करे. लेई आपण साथ । चाले जिम ज्या-धिपति ॥२८॥ खीर खांडु घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे। गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सबे ॥ पंच सयां शुम भाव. उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु संयोग कवल ते केवल रूप हुए ॥२९॥ पश्च सयां जिननाह समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि केवल नाण. उप्पन्नो उज्जाय करे ॥

,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是

जिनवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम । जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंच सया ॥३०॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण संपन्न । पन्नरेसे परिवरिय, हरि दुरिय जिणनाह बंदइ ॥ जाणेवि जग गुरु वयण, तिहि नाण अप्पण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम मकरिस खेब, छेह जाय आपण सही होस्यां तुल्लावेव॥३१॥भास॥ सामियो ए वीर जिनन्द पुनमचंद जिम उछ्लसिय। विहरियो ए भरहवासिम वरस बहुत्तर संवसिय॥ ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय । आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥३२॥ पेसियो ए गोयम सामि, देव समा प्रतिबोध करे । आपणो ए तिसला देवि, नंदन पहुतो परमपए ॥ बदतो ए देव आकारा, पेखिव जाण्यो जिण समो ए। तो मुनि ए मन विषवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥३३॥ इण समे ए सामिय देखि आप कनासूं टालियो ए। जाणतो ए तिहुअण नाह, छोक विवहार न पालियो ए ॥ अति भलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मांगसे ए। चिंतच्यो ए बालक जेंम, अहवा केंडे लागसे ए ॥३४॥ हूं किम ए वीर जिनंद, भगतिहि भोले भोलव्यो ए। आपणो ए ऊचलो नेह, नाह न संपे सांचव्यो ए॥ साचो ए वीतराग, नेह न हेर्जेलालियो ए। तिणसम ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥३५॥ आवतो ए जो उछ्छट, रहितो रागे साहियो ए । केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए। गणधरु ए करय बखाण भविया भव जिम निस्तर ए ॥ ३६॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर बरस पचास गिहवासें संविसय । तीस बरस संयम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण ॥ बार बरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठच्यो । बाणवाइ बरसाओ सामी गोयम गुण नीलो होसे शिवपुर ठाओ ॥३७॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके जिम कुसुमावन परिमल महके | जिम चन्दन सोगंघ निघि, जिम गंगाजल लहिरचा लहके ॥ जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोमाग निधि ॥३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु

दर्तमा । जिम महयर राजीव वर्ने, जिम रयणायर रयमें दिखते ॥ जिम अंचर नारागण विकते निम गोयम गुरु केवल वने ॥३५॥ प्रनम निसि जिम मींसवर मोहे. सुरतर महिमा जिम जग मोहे. पूर्व दिन जिम नहरा करो ॥ पदानन जिम गिरिवर राजे, नर बई घर जिम मयगळ गाले । निम जिन शासन सुनि पत्ररे ॥४०॥ जिम गुरु तरुवर सीहे साम्बा, जिम उत्तम मुख मध्या भाषा । जिम बन केनकि महमहे ए जिम स्योपित भववल चमके ॥ जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम न्दर्ध गटगरी। ए ॥४६॥ चिन्तामणि कर चहियो आज, सुरतर सारे बंछिय काज । कास वुम्न सह बीब हुआ पु. कामगर्वा पूरे मन कामी ॥ अप्ट महानिदि आहे धार्मा, सामी गोयम अणुसरि ए ॥४२॥ पणबक्कर पहिन्हो पसणीजे. साया वीजो श्रवण सुणी जे । श्रीमित सीभा संभवी ए देवां घर अर्राटन नगी के ॥ विनय परः उवलाय थुणी जे. इण मन्त्रे गीयम नमी ए ॥४३॥ पर पर वनतां काय करीजे. देश देशांतर काय भनी जे । कवण काज आयाम वरो, प्रह उटी मीयम समर्ग जे ॥ काज समग्रह दर्नावण मीजे, नव निवि बिटमें निहां घर ए ॥४४॥ चवद्य सय बाहांन्य वरमें, गोयन गण्डर रें अब दिवसे । किया कवित उपगार करो, आदिहिं संगठ ए परर्गा से ॥ परव महोत्रहाव पहिलो दीते. ऋडि कडि कल्याम करें। ॥१५॥ धन महर

राग प्रभाती जे करे, प्रह जगमते सूर । भूखां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥१॥ अंगूठे अमृत बसे, लिब्ध तणा मंहार । जे गुरु गौतम समरिये, मन वंछित दातार ॥२॥ प्राम तणे पैशाल हे, गुरु गौतम समरंत । इच्छा भोजन घर कुशल, लच्छी लील करंत ॥३॥ पुण्डरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण सम्पन्न । प्रह ऊठीनें प्रणमतां, चवदेसे बावन्न ॥४॥ खन्ति-खमंगुणकल्यिं, सुविणियं सव्वलिद्ध सम्पण्णं । वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामी ॥५॥ सर्वीरिप्ट प्रणाशाय, सर्वीभिष्टार्थदायिने । सर्वलिध निधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥६॥

#### गणधर तपस्या स्तवन

वीर जिनेसर केरो शीश, गौतम नाम जपो निशदीश। जो कीजे गौतम नो ध्यान, ते घर विलसे नवे निधान ॥१॥ गौतम नामे गिरिवर चढ़े, मन वंछित छीला संपजे । गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संयोग ॥२॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावें ढूकडा । भूत प्रेत निव मंडे प्राण, ते गौतम ना करूं वखाण ॥३॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे वाघे आय । गौतम जिन शासन सिणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥४॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मन वंछित कप्पड तंबोल। घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनित्त ॥५॥ गौतम उदयो अविचल भांण, गौतम नाम जपो जग जाण । मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥६॥ घर मयगल घोड़ा नी जोड़, बारू विल-सत वंछित कोड़ । महियल मां ने मोटा राय, जो पूजे गौतमना पाय॥७॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नारनी संगत मिले । गौतम नामे निर-मल ज्ञान, गौतम नामे वाघे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतम ना गुण छे बहू । कहे लावण्य समय करजोड़ि, गौतम पूजा संपत को कोडि ॥९॥

#### श्री शत्रुञ्जय रास

#### ॥ दोहा ॥

श्री रिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद। रास भणूं रिलया मणी, शत्रुखय सुखकंद ॥१॥ संवत चार सतोतरे, हुए धनेश्वर स्र्रि<sup>न</sup>। तिण शत्रुखय महातम कियो, शिला दित्य हजूर ॥२॥ वीर जिनंद समवसरचा, शत्रुखय ऊपर जेम। इन्द्रादिक आगल कह्यो, शत्रुखय महातम एम ॥३॥ शत्रुखय तिरथ सारिखो, नहीं छे तीरथ कोय। स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सगला जोय ॥४॥ नामे नव निधि संपजे, दीठा दुरित पुलाय। मेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥५॥ जम्बू नामे दीपए, दक्षिण भरत मझार। सोरठ देश सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥६॥

#### ॥ राग रामगिरी ॥

रात्रुखय ने श्री पुण्डरीक, सिन्दक्षेत्र कहूँ तहतीक । विमलाचलने करं परणाम, ए रात्रुखयना इकवीस नाम ॥१॥ सुरिगरने महागिरि पुण्य राश, श्री पद पर्व्वत इन्द्र प्रकाश । महा तीरथ पूरवे सुख काम ए० ॥२॥ सासतो पर्वतने दृढ़ शक्ति, मुक्ति निलो तिण कीजे भक्ति । पुण्पदन्त महापद्म सुठाम ए० ॥३॥ पृथ्वी पीठ सुभद्र कैलाश, पाताल मूल अकर्मक ताश । सर्व काम कीजे गुण श्राम ॥४॥ श्री शत्रुखयना इकवीस नाम, जपेजे वैठा अपने ठाम । शत्रुखय यात्रानो फल लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥५॥

#### ॥ दोहा ॥

शत्रुज्जय पहले अरे, अस्ती जोयण परिमान । पिहुलां मूल ऊंचांपणे छव्वीस जोयण जांण ॥१॥ सत्तर जोयण जांणवा, वीज अरे विसाल । वीस जोयण ऊंचो कह्यां, सुझ वंदना विकाल ॥२॥ साठ जोयण तीज अरे, पिहलो तीरथ राय । सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरुं चित लाय ॥३॥ पचास जोयण पिहुलपण, चीथे अरे मझार । ऊंचो दम जोयण अचल, नित प्रणमें नरनार ॥१॥ वार जोयण पंचम अरे, मूल तणे विस्तार । दो

<sup>्।</sup> यह राम सं० ४७० में श्री पृज्यजी श्री जिन धनेश्वर मृत्जि ने दनाया है।

LEST THE SECTION OF T

जोयण ऊंचो अछे, रात्रुझय तीरथ सार ॥५॥ सात हाथ छडे आरे, पिहुलो परवत एह । ऊंचो होसी सौ धनुष, सासतो तीरथ एह ॥६॥

#### ॥ ढाल ॥

केवल ज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे । अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिन करूं नित परनाम रे॥ १ ॥ शत्रुञ्जय साधु अनंता सीधा, सीझसी बल्टिय अनंत रे । जिन रात्रुखय तीरथ नहिं भेट्यो, ते गरमावास कहन्त रे॥ शः २॥ फागुन सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुस्कार रे । रायणरूंखं समवसरचा स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥३॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुखय गिरि आय रे। पांच कोडी सूं पुण्डरीक सीघा, तिन पुण्डरीक कहाय रे ॥४॥ निम विनमी राजा विद्याधर, बे बे कोडी संघात रे। फागुन सुदि दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमूं परभात रे॥५॥ चैत्र मास वदि चौदसने दिन, निम पुत्री चउसिंह रे। अणसण कर शत्रु-झय गिरि ऊपर, ए सहु सीधा एकहि रे ॥६॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावडने वारिखिछ रे। काती सुदि पूनम दिन सीघा, दश कोडी सं सुनि सह्य रे ॥७॥ पांचे पांडव इण गिर सीधा, नव नारद ऋषिराय रे । संब प्रज्जून गया इहां मुगते, आठूं कर्म खपाय रे ॥८॥ नेमि बिना तेवीस तीर्थंकर, समवसरचा गिरि शृङ्ग रे। अजित शान्ति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चौमासे सुरङ्ग रे ॥९॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावचा सुत साथ रे । पांच से साधु सो सेलग मुनिवर, रात्रुखय शिवसुख लाघ रे ॥१०॥ असं-ख्याता मुनि शत्रुञ्जय सीधा, भरतेसरने पाट रे। राम अने भरतादिक सीधा, मुक्ति तणी ए बाट रे ॥११॥ जालि मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडि रे। साधु अनंता शत्रुखय सीधा, प्रणमूं बे करजोड़ि रे ॥१२॥

#### ॥ ढाल ॥

शत्रुखयना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार । सुनतां आनंद अंग न माय, जनम जनमना पातक जाय ॥१॥ ऋपमदेव अयोध्यापुरी, समवसरचा स्वामी हित करी । भरत गयो वन्दनने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥२॥ जग मांहे मोटा अरिहन्त देव. चौसठ इन्द्र करे जप्त सेव । तेहथी मोटो संघ कहाय. जेहने प्रणमें जिनवर राय ॥३॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, भरत सुनीने मन गह गह्यो। भरत कहे ते किम पांमिये, प्रभु कहे रात्रुखय यात्रा किये ॥४॥ भरत कहे संघवीपद मुझ, थे आपो हूं अंगज तुझ । इन्द्रे आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥५॥ इन्द्रे तिण बेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल। पहिरावी घर संपेडिया, सकल सोनाना रथ आपिया ॥६॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा बली, रत्न तणी दीधी मन रली । भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥७॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेंडायो संघ असेस । आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथयात्रा करी ॥८॥ संघ भक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रु अय भणी। गणधर बाहुवलि केवली, मुनिवर कोड साथे लिया वली ॥९॥ चक्रवर्त्तिनी सघली ऋदि, भरते साथे लीधी सिद्ध । हियगय स्थ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥१०॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय । संघ आयो शत्रुक्षय पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥११॥ नयने निरख्यो शत्रुक्षय राय, मिण माणिक मोत्यांसंबधाय। तिण ठांमें रहि महोच्छव कियो, भरते आनंद पुरवासियो ॥१२॥ संघ शत्रुंजय ऊपर चढ्यो, फरसन्ता पातक झड़ पड़्यो । केवल ज्ञानी पगला तिहां. प्रणम्यां रायण रूंख छे जिहां ॥१३॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्र आणी सुपवित्त । नदी शत्रुज्जय सोहामनी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥१४॥ गणधर देव तने उपदेश. इन्द्रे विल दीघो आदेश । श्री आदिनाथ तनो देहरो, भरत करायो गिरि-सेंहरो ॥१५॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मनरंग । भरते श्री आदीसरतणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली । वाम्ही सुन्दरि प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥१७॥ इम अनेक प्रतिमा प्रसाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद । भरत तणो पहिलो उद्धार. सगलोही जाने संसार ॥१८॥

,是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

## ॥ राग सिन्धूंडो आशावरी ॥

为"我们的一种,我们是不是一个,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,我们是一个人,我们就是一个人 भरत तने पाट आठमें, दंडवीरज थयो रायोजी । भरत तनी पर संघ कियो, शत्रुखय संघवि कहायोजी ॥१॥ शत्रुंजय उद्धार सांमलो, सोल मोटा श्री कारोजी । असंख्यात बीजा वली, तेन कहूं अधिकारोजी ॥२॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिम्ब सारोजी। मूल गो बिम्ब भण्डारियो, पिच्छमदिसि तिण बारोजी ॥३॥ शत्रुंजयनी यात्रा करी, सफल कियो अव-तारोजी । दण्डवीरज राजातणा, ए बीजो उद्धारोजी ॥४॥ सो सागरोपम व्यति क्रम्या, दण्डवीरज थी जीवाडोजी । ईशानेन्द्र करावियो, ए तीजो उद्धारोजी ॥५॥ चौथा देवलोकनो धणी माहेन्द्र नाम उदारोजी । तिण शत्रुझयनो करावियो, ए चौथो उन्हारोजी ॥६॥ पांचमा देवलोकनो घणी ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी । तिण शत्रुखय करावियो, ए पांचमो उद्धारोजी ॥७॥ भुवनपति इन्द्रनो कियो, ए छहो उद्धारोजी । चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥८॥ अभिनन्दन पासे सुन्यो, शत्रुंजय नो अधिकारोजी । व्यन्तर इन्द्र करावियो, ए आठमो उद्धारोजी ॥९॥ चन्द्र प्रमु स्वामिनो पोतरो, चन्द शेखर नाम मल्हारोजी । चन्द्रयशाय करावियो ए नवमो उद्धारोजी ॥१०॥ शान्तिनाथनी सुणि देशना, शान्तिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय करावियो, ए दशमी उद्धारोजी॥११॥ दशस्यसुत जगदीपतो, मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी । श्रीरामचन्द्र करावियो, ए ग्यारमो उद्धारोजी ॥१२॥ पाण्डव कहे हमे पापिया, किम छूटे मेरी मायोजी, कहे कुन्ती शत्रुंजय तणी, यात्रा कियां पाप जायोजी ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी शत्रुंजय, भेट्यो अपारोजी । काष्ठ चैत्य बिम्ब लेपना ए बारमो उद्धारोजी ॥१४॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी । श्री शत्रुंजयनो संघ करी, थापी सकल सरूपोजी ॥१५॥ अट्ठोत्तर सौ वरसां गयां, विकम नृपति जिवारोजी। पोरवाड जावड करावियो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥१६॥ सम्बत् बार तिडोतरे श्रीमाठी, सुविचारोजी । बाहडदेह मुहतें करावियो, ए चवदमो उद्धारोजी ॥१७॥ सम्बत् तेरे इकोत्तरे देसलहर

अधिकारोजी । समरे साह करावियो, ए पनरमो उद्धारोजी ॥१८॥ सम्वत् पनर सत्यासिये, बैशाख बदि शुभ वारोजी । करमे डोसि करावियो, ए सोलमो उद्धारोजी ॥१९॥ सम्प्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी । नित नित कीजे वन्दना, पांमीजे भव पाराजी ॥२०॥

### ॥ दोहा ॥

विल शत्रुंजय महातम कहूं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥१॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजय पूजनीक । भगवन्तनो वेष मानतां, लाम हुए तहतीक ॥२॥ श्री शत्रुंजय ऊपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमांन समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥३॥ शत्रुखय ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय । जीणोंद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥४॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार । चकवर्च नी स्त्री थई, शिव सुख पामे सार ॥५॥ काती पूनम शत्रुखय, चिंहने करे उपवास । नारकी सौ सागर समो करे करमनो नास ॥६॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीघा दश कोड़ । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड़ ॥७॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेष । शत्रुंजय साधु पड़िला भतां अधिको तेहथी वेष ॥८॥

#### ॥ ढाल ॥

शतुंजय गयां पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी। तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥१॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासोजी। चैत्रे दिन शतुंजय चढी, एक करे उपवासोजी ॥२॥ वस्तुतनी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध यायोजी। काती सात दिन तप कियां रतन हरन पाप जायोजी ॥३॥ कांसी, पीतल, तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणो जी। सात दिवस पुरिमहु करे, तो छूटे गिरी एणोजी ॥१॥ मोती, प्रवाला, मूंगिया, जिण चोरचा नर नाराजी। आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टङ्क शुद्ध आचाराजी ॥५॥ धान, पानी रस चोरिया, ते भेटे सिद्ध क्षेत्रांजी। शतुंजय तलहटी साधु ने, पिडलामे सुध चित्तोजी ॥६॥ वस्त्रामरण जिने

हरचा, ते छूटे इण मेलोजी।आदिनाय नी पूजा करे, प्रहऊठी बहु बेलोजी ॥७॥ देव गुरु नो धन जेहरे, ते शुद्ध थाये एमोजी । अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमोजी ॥८॥ गाय भेंस घोड़ा मही, गज ग्रह चोरन हारोजी । देते वस्तु तीरथे, अरिहन्त ध्यान प्रकारोजी ॥९॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे आपनी नामोजी । छूटे छम्मासी तप कियां सामायिक तिन ठामोजी ॥१०॥ क्रुंबारी परिवाजका, सधव, विधव गुरु नारोजी । व्रत भांजे तेहने कह्यों, छम्मासी तप सारोजी ॥११॥ गो, विप्र, स्त्री, बालक, ऋषि, एहनो घातक जे होजी । प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥१२॥

#### ॥ ढाल ॥

सम्प्रति काले सोलमो, ए बरते छे उद्धार । शत्रुंजय यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ॥१॥ छहरी पालतां चालिये ए, शत्रुंजय केरी वाट। पालीताणे पंहुचिये ए, संघ मिल्या बहु थाट ॥२॥ ललित सरोवर पेखिये ए, विल सत्तानी वावि । तिहां विसरामो लीजिये ए, वड़ने चौतरे आवि ॥३॥ पालीताणे पाजड़ी ए, चढ़िये उठ परभात । शत्रुझय नदिय सोहामणि ए, दूर थकी देखंत ॥४॥ चढ़िये हिङ्गलाजने हडे ए, कलि कुंड़ निमये पास । बारी मांहे पेसिये ए, आनी अंग उछास ॥५॥ मरुदेव टुँक मनोहरु ए, गज चढ़ि मरुदेवी माय। शान्तिनाथ जिन सोलमो ए, प्रणमी जे तसु पाय ॥६॥ वंदा पोरवाडे परगड़ो ए, सोमजी साहमलार । रूपजी संघवी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥७॥ चौमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमती मांहे भला बिम्ब । पांचे पाण्डव पूजिये ए, अद्मुत आदि प्रलम्ब ॥८॥ खरतर वसही खंतसूं ए, बिम्ब जुहारूं अनेक। नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥९॥ घरम दुवार मांहिं नीसरूं ए, कुगति करूं अति दूर । आऊं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥१०॥ मूल नायक प्रणमूं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत । देव जुहारूं देहरे ए, भमती मांहे भमंत ॥११॥ शत्रुखय ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र। कलश अठोत्तर

मूंकिरिये ए, निरमल नीरसूं गात्र ॥१२॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुण्डरीक गणधार । रायण तल पगला नमूं ए, शान्तिनाथ सुलकार ॥१३॥ रायण तल पगला नमुं ए, चौमुल प्रतिमा चार । वीजी भूमि विम्बावली ए, पुण्डरीक गणधार ॥१४॥ सूरज कुण्ड निहालिये ए, अति वली उलका होल । चेलण तलाई सिन्ध शिला ए, अंग फरसूं उल्लोल ॥१५॥ आदि पुर पाजें उत्तरूं ए, सिन्ध व डलूं विसराम। चैल प्रवाडी इण पर करी ए, सीधा वंलित काम ॥१६॥ यात्रा करी शत्रुक्षय तणी ए, सफल कियो अवतार । कुशल क्षेम मूं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥१७॥ शत्रुक्षय रास सोहामणो ए, सांमलज्यो सहु कोय । घर बैठां भणे भाव मूं ए, तसु यात्रा फल होय ॥१८॥ संवत् सोल बयासिये ए, श्रावण विद सुलकार । रास रच्यो शत्रुक्षय तणो ए, नगर नागोर मझार ॥१९॥ गिरुबो गच्छ खरतर तणो ए, श्री जिनचन्द सूरीस । प्रथम शिष्य श्री पूजना ए, सकलचन्द सुजगीस ॥२०॥ तास सीस जग जांणिये ए, समय सुन्दर उवझाय । रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आनन्द थाय ॥२१॥

### सम्मेत शिखरजी का रास

॥ दोहा ॥

वांदी वीस जिनेसरू, रचस्यूं रास रसाल । तीर्थ शिखर सम्मेतनी, मिहमा बड़ी विशाल ॥१॥ मोटो तीरथ मिहयले, प्रगट्यो शिखर समेत । कोड़ा कोड़ी मुनिवरूं, सिद्ध गए इह खेत ॥२॥ तीरथ शिखर समेत ए, फरस्या पाप पुलाय । भविजन भेटो भाव सूं, ज्यूं मुख संपद याय ॥३॥ मिहमा शिखर समेतनी, किह न सके किव कोय । गुण अनन्य भगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥॥

#### ॥ ढाल ॥

गिरिवर शिखर समो निहं कोय, एहनी मिहमा सब जग होय। बीस जिनेसर मुगतें गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥१॥ प्रथम अयोध्या नगरी भली, तिहां जित शत्रु नरेसर बली। विजयारानीने सुत जांण,

अजित कुमार सहु गुणनी खाण ॥२॥ जसु इन्द्रादिक सेवा करे, इन्द्राणी उच्छव धरे । तीर्थंकरनी पदवी लही, अन्तर अरि जिन साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुण्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग । अवसर दे संवत्सरी दान, संजम लीनो आप सुजांन ॥४॥ कर्म खपावी पाम्यो ज्ञान, केवल दर्शन लह्यो प्रधान । विचरे पुहवी मंडल मांहि, भन्य जीव प्रति-बोधन तांहि ॥५॥ सिंह सेनादिक गणधर भया, पंचाणवे संख्या सह थया । एक लाख मुनिवर परिवरचा, श्रावक श्रावकणी सहु करचा ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवियां जाणी सुविचार । श्रावक सहस अहाण् सही. दोय लाख संख्या गह गही ॥७॥ पांच लाख पैतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख पूरबनो आय, कंचनवरण शरीर सुहाय ॥८॥ साढ़े चार से धनुष शरीर, मान छह्यो प्रभु गुण गंभीर । गज लांछन प्रमुजी ने जांन, अमृत सम जसु मीठी बांन ॥९॥ अनुऋम प्रसु जी शिखर समेत, गिरिवर पर आव्या निज हेत । सहस मुनिवरने परिवार, मास खमण अणसण कर सार ॥१०॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गया प्रभु तीरथ इणे । भूचर खेचर किन्नर सुरी, इन्द्रादिक सहु उच्छव करी ॥११॥ थाप्यो तिण मोटो मही, अठाइ महोच्छव कियो सही। ए तीरथनी यात्रा करे, ते भवियण अक्षय सुख वरे ॥१२॥

॥ दोहा ॥

श्री संभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण। शिखर समेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जांण ॥१॥

॥ ढाल ॥

सावत्थी नगरी भरी, धन संपद बहु थोक । जितारि नृप राज करे, सुखिया सब लोक॥ सेना राणी मीठी वाणी, गुणनी खान । जेहने सुत श्री संभव, जनम्या सकल सुजान ॥१॥ कंचन वरण शरीर, मनोहर प्रभुनो जांन । लंछन अञ्च तणो सोहे, प्रभुनो परधान ॥ साठ लाख पूरबनो, प्रभुनो आयु प्रमाण । धनुष चार सै उर्च पणे, प्रभु देह बखाण ॥२॥ एकसौ दोय संख्या ए, प्रमुने गणधर होय । दोय लाख मुनि जेहने, गुण

वरता जग जोय ॥ तीन लाख श्रमणी वली, ऊपर सहस छत्तीस । भूमंडल विचरे प्रभू, श्री संभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख विल सहस, त्रयाणूं श्रावक लोक । षट् लख सहस छत्तीस, श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुख यक्ष अरु दुरिता, देवी सांनिध कार । विचरंता प्रभु सकल, संघ में जय जयकार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारे, प्रभुजी शिखर समेत । एक मास संलेखना, कीनी निज पद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो, प्रभुजी पद निरवाण । तीरथ महिमा महियल, मोटी थइय सुजाण ॥५॥

॥ दोहा ॥ अभिनन्दन जिन वंदिये, पायो पद निरवाण । शिखर समेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली. संबर राजा सोहे मन रली। सिद्धार्थी राणी प्रभु तसु नन्द ए, अभिनन्द जिन प्रगट्या चन्द ए ॥उल्लालो॥ चन्द ए सोवन वरण सोहे, घनुष साढ़े तीन से । सुन्दर शरीर प्रमाण चुति कर, कपि लंछन ते नित बसे ॥ पूर्व लाख पंचास आयु, गणधर एकसौ सोल ए। तीन लाख मुनि छ लाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ॥ १॥ सहस अठ्यासी दो लख, श्राद्धनी चंड लख सत्तावीसनी श्रावक ण्यारी संख्या जाण ए। यक्ष कलिका ठाण ए ॥ उल्लालो ॥ ठाण ए शिखर समेत, ऊपर मास एक संलेखणा । इक सहस साधु परवरचा त्रमु, मुक्ति पहुंचे पेखणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर, देवी मात सुमंगला । श्री सुमित जिनवर भए नन्दन, सदा होत स्मंगला ॥२॥ सोवन वरण धनुष तसु तीन से, लंछन काँच सोहे सुमगेह से। पूरव लाख पच्यासी आउ ए, इक सौ गणधर गुण गण भाउँ ए ॥ उछालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे, सहस वीस प्रमाण ए । पण लक्ष तीस हजार साध्वी, श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर, श्राविका इण आनिये । पण लक्ष सोले सहस

,也是是是一个人,这个人,这个人,这一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

तुम्बरु, महाकाली मानिये ॥ श्री शिखर ऊपर सात संख्या, सहस साष्ठु सुरंग ए। कर मास की संलेखणा प्रभु, मुक्ति पुहता चंग ए॥ ३ चाल ॥ इम कोसंबी नगरी तात ए, घर नृप तात सुसीमा मात ए। पद्म प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमल तणो सुभ हाथ ए॥ उछालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण, पूरा अढाई से तनु कहो। तीन लाख पूर्व थित कहावे, एक सौ गणघर लहो॥ लक्ष तीन तीस हजार साधु, बीस सहस लक्ष च्यार ए। साधवी दोय लख सहस छिहत्तर, श्रावक संख्या सार ए॥ ४ चाल ॥ पांच लाख विल पांच हजार ए, श्रावकन्यांरी संख्या सार ए॥ ४ चाल ॥ पांच लाख विल पांच हजार ए, श्रावकन्यांरी संख्या सार ए। कुसुम देव क्यामा देवी कही, लाल वरण तन प्रभु सोहे सही ॥ उछालो ॥ सोह ए शिखर समेत ऊपर, आठ से त्रिण मुनिवरा। कर मास संलेखन प्रभुनी, सेवा करे हैं सुरवरा॥ श्री पद्म प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिरि शिखर महिमा भई। तसु चरण पंकज बालवंदे, हदय आनन्द गह गही॥५॥

दोहा

श्री सुपास जिनन्दना, पद पंकज आराम । भविजन भ्रमर सूं सेवतां, पावें वंछित काम ॥१॥ ॥ ढाल ॥

नगर वणारसी सोमता, राजा तात प्रतिष्ट लाल रे। देवी पृथवी माता जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लाल रे॥१॥ श्री सुपार्थ जिनन्द जी, वीस पूरब लख आयु लाल रे। धनुष दोय से देहनी, कंचन वरण सुहाय लाल रे॥२॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लाल रे। चार लाख तीस ऊपरे, सहस साधिवयां जोय लाल रे॥३॥ सहस सतावन लक्षनी, श्रावक संख्या पाय लाल रे। चार लाख वली त्रयाणवे, सहस श्रावकणी भाय लाल रे॥४॥ मातंग यक्ष शान्ता सुरी, पांच से मुनि परिवार लाल रे। करि अनसन मुगते गया, नाम लियां निस्तार लाल रे॥५॥ नगर चन्द्रपुर इण परे, राजा तात महेस लाल रे। देवी माता लक्ष्मणा, सुत चन्द्रा प्रभु वेस लाल रे॥६॥ श्रीचन्द्रा प्रभु वन्दिये, चन्द्र वरण तन्तु जह सुत चन्द्रा प्रभु वेस लाल रे॥६॥ श्रीचन्द्रा प्रभु वन्दिये, चन्द्र वरण तन्तु जह लाल रे। लाल रे। लंछन चन्द्र तणो भलो, धनुष डेढ से देह लाल रे॥७॥ लाल रे। लंछन चन्द्र तणो भलो, धनुष डेढ से देह लाल रे॥७॥

भविक कमल प्रतिबोधतां, सेवे सुरनर यक्ष लाल रे। दस लाल पूरव आउखो, तेणवे गणधर यक्ष लाल रे॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, सुनि श्रमणी तीन लक्ष लाल रे। असी सहस संख्या कही, श्रावक बिल दोय लक्ष लाल रे॥९॥ लाख पचास ऊपर बली, श्राविका चड लक्ष धार लाल रे। सहस इकाणवे ऊपरे प्रमु जीवा परिवार लाल रे॥१०॥ विजयदेव मृकुटी सुरी, सहस साधु परिवार लाल रे। संलेखन एम मासनी, पुहता मुक्ति मझार लाल रे॥११॥

#### ॥ दोहा ॥

जय श्री सुविधि जिनेसरू, जगपति दीन दयाल । समेत शिखर मुगते गया, भविजन के प्रतिपाल ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

नयर काकन्दी नरपित, एम पिता सुप्रीव। देवी रामा माता सुत, भय सुविध सुम जीव॥१॥ रजत वरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण। दोय लाख पूरव कह्यो, प्रमुनो आयु सुजांण॥२॥ अठ्यासी संख्या भए, गणधर परम प्रधान। लख दो मुनि विश्तित सहस, इक लख श्रमणी जांन॥३॥दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार। एकहत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार॥४॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्री संघ सांनिधकार। सहस साधु परिवार सूं, आए शिखर सुचार॥५॥ मास संलेखण कर प्रमु, मुक्ति गए इह ठोर। तीरथ महिमा महियले, प्रगटी चारूं ओर॥६॥ इम हिज शीतलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार। महिलपुर दृद्रथ पिता, माता नन्दा सुखकार॥७॥ लंखन सुभ श्री बत्सनो, श्री शीतल जिनचन्द। कंचन वरण नेउ धनुष, मान शरीर अमंद ॥८॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रमुनो आयु प्रमांण। इस्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण॥९॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर। सहस तयांसी दोय लख, श्रावक संख्या जोर॥१०॥ सहस अठावन लक्ष चउ, श्रावकणी सुविचार। देवी अशोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सांनिधकार॥१॥। शिखर समेत सहस्व

एक, साधूने परिवार । मुक्ति गए प्रमु मास की, संलेखन कर सार ॥१२॥ ॥ ढाल ॥

,我们是是一个人,我们是这个人,我们是是一个人,我们是一个人,我们是这个人,我们是这个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人 सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी। कंचन वरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥१॥ नमो रे नमो श्री त्रिभुवन राजा, खडग छंछन प्रभु पाय जी । धतुष असी देह मांन चौरासी, ठांख वरसना आयु जी ॥२॥ गणधर बहुत्तर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी । तीन सहस विल सहस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ख जी ।।३।। अड़तालीस सहस बलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी । जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्री संघ सांनिधकार जी ॥४॥ सहस मुनीसरने परिवारे, प्रभुजी शिखर समेत जी। मास संलेखण कर प्रभु पहुंता, मुक्ति महल सुख हेत जी ॥५॥ हिव कंपिलपुर तात भूपति, श्री कृतवर्म सुमात जी। स्थामा देवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जग तात जी ॥६॥ सूकर लंछन सोवन काया, साठ धनुष देह मांन जी । साठ लाख वच्छरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥७॥ साठ सहस मुनि अडसय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी। आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥८॥ सन्मुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखर समेत जी । षट् हजार साधु परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥९॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी । सुयसा मात तिणे सुत जाया, प्रभुजी अनन्त कुमार जी॥१० छंछन रयेन सोवन सम काया, धनुष पञ्चास प्रमाण जी । तीस लाख वच्छरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ।।११।। छासठ सहस मुनिवर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी । छ हुज्जार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम घार जी ॥१२॥ चार लाख बलि चवद हजार, ए अंकुशा देवी होय जी। पाताल यक्ष श्री संघ के सांनिघ, कारी नित प्रति जोय जी ॥१३॥ आठ से मुनिवर ने परिवारे, शिखर समेत प्रधान जी । मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांन जी ॥१४॥

### ॥ दोहा ॥

ऐसे धर्म जिनेसरू, पहुंता पद निर्वाण । शिखर समेत गिरिन्द पर, नमो नमो जग भाण ॥ ॥ ढाल ॥

रत्नपुरी नगरी भणी जी, भानुराय सुजान । रानी सुन्नत मातने जी, धर्मनाथ गुण खान ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार, धनुष पंतालीस तन कह्यो जी. वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ चौतीस गणधर सुनि कह्या जी. चौसठ सहस प्रमान । श्रमणी बासठ सहस स्यं जी, श्रावक दोय लक्ष मान ॥३॥ चार सहस बिल ऊपरां जी, चौ लख एक हजार । श्रावकणी संख्या कही जी, दश लक्ष आयु विचार ॥४॥ किन्नर सुर कन्दर्ग सुरीजी. एक सहस परिवार । सम्मेत शिखर सुगतें गया जी, बंदू बार हजार ॥५॥ हिस्तिनापुर विश्वसेननाजी, अचिरा मात उदार । शान्ति जिनेसर जनिमया जी, त्रिभवन जय जयकार ॥ ज॰ ६ ॥ मृग लांछन सोवन समो जी, देह धनुष चालीस । आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥७॥ बासठ सहस मुनि छ सें जी, इगसठ श्रमणी हजार । दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥८॥ सहस त्रयाणं श्राविका जी, तीन लाख परिवार। गरुड़ यक्ष निरबाणी सुरीजी, श्रीसंघ सांनिधकार ॥९॥ नव से सुनि परिवार स्यूं जी, आया शिखर समेत । मास खमण कर मुगति में जी. पहुंता निज पद हेत ॥१०॥ ऐसे हस्तिनापुर भलो जी, राजा सूर सुतात। कुन्थुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्री मात ॥ जगतपित कुन्यु जिनेसर सार ॥११॥ छाग छंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मान । सहस पच्याणवे वरसनो जी, आयु प्रभुनो जान ॥१२॥ पंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जान । छ सै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥१३॥ सहस गुणियासी लक्षनी जी, श्रावक संख्या होय। सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका संख्या जोय ॥१४॥ सात सै साधु परवरचा जी, देवी बला गन्धर्व। कुन्थुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखना सर्व ॥१५॥

#### ॥ दोहा ॥

श्री अरनाथ जिनन्दनो, कहिस्यूं अब अधिकार । श्रोता सुणज्यो प्रेम धर. थारये लाभ अपार ॥१॥

#### ॥ ढाल ॥

上班,我们就在这个人的,他的人,他的人,他的人,他们就是我的人的人,他们就是我们的人,我们的人,他们的人,他们的人,他们的人,他们的人,他们的人,他们的人,他们的人 हारे लाला श्री अरनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चन्द रे लाला । तात सुदर्शन मात जी, नन्दा देवी नन्द रे लाला ॥१॥ लंछन नन्द्या वर्त्तनो, तीस धनुष देहनो मान रे लाला। कंचन वरण सुहामणो. आयु सहस चौरासी प्रमान रे लाला ॥२॥ इक लाख श्रावक जपरे वलि, संख्या अधकी ध्यान रे लाला। सहस बहुत्तर तीन लक्ष, श्राविका संख्या जांन रे लाला ॥३॥ देव देवी सांनिध करे, इक सहस मुनि परिवार रे लाला । मुक्ति गए इण गिरि प्रमु, कर मास संलेखण सार रे लाला ॥४॥ मिथिला नगर प्रभावती मात, पिता श्री कुम्भ राय रे लाला। लंछन कलश पचीसनी वपु, धनुष सोवन समकाय रेलाला ॥ श्री मह्हिनाय जिनेसरू॥५॥ सहस पचावन वर्षनी, थिति गणधर अहाबीस रे लाला। भविक कमल प्रतिबोधता, जगनायक श्री जगदीस रे लाला ॥६॥ चालीस सहस मुनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला। सहस त्रयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥७॥ श्राविका सत्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला । सहस मुनि परवार स्यूं, गये मुक्ति संलेखन घार रे लाला ॥८॥ राजगृही राजा पिता सुग्रीव, पद्मावती मात रे लाला। स्याम वरण तनु शोभतां, जे कच्छप लंछन विख्यात रे लाला, श्रीमुनि सुव्रत खामिजी॥९॥ घनुष वीस देही तणो,आयु वच्छर तीस हजार रे लाला। अप्टादश गणघर थया, तीस सहस मुनीसर सार रे लाला॥१०॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या बहुत्तर हजार रे लाला। इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष पचास हजार रे लाला ॥१॥ वरुण यक्ष देवी भली, नरदत्ता सांनिधकार रे लाला। सहस मुनि परिवार से गए, मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥१२॥ विजय पिता विप्रा मात जी, सोवन सम श्री निमनाथ रे छाछा। नीछ कमछ

कह्यो वपु, धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्री निमनाथ जिनेसरू ॥१३॥ दस हजार वरस तणो, गणधर सत्तर परिमाण रे लाला । वीस इकतालीस सहस कम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥१४॥ इक लख सत्तर सहसनी, तीन लक्ष सहस विल होय रे लाला । श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम किर संख्या जोय रे लाला ॥१५॥ विचरंता भूमंडले, आया शिखर समेत मझार रे लाला । भूकुटी यक्ष गान्धारी सुरी, इक सहस सुनि परिवार रे लाला ॥१६॥

### ॥ दोहा ॥ परमेसर श्री पासनी, महिमा जगत विख्यात । शिखर शिरोमणि सहस फण, जग जीवन जग तात ॥

॥ ढाल ॥

जय जय परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारस नाथ जी। सांबरिया साहिब जग नायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥१॥ जय जय शिखर समेत शिरोमणि, श्री सांबरिया पास जी। ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥२॥ काशी देश बनारिस नगरी, श्री अखसेन निरन्द जी। बामा माता जग विख्याता, तेहना सुत सुखकन्द जी॥३॥ पन्नग छंछन नील वरण छवि, देही शुभ नव हाथ जी। आयु एकसौ बरस प्रमाणे, गणधर दस प्रमु साथ जी॥॥॥ सोल सहस मुनिवर अरु, श्रमणी किह अड्तीस हजार जी। भूमंडल विचरे भविजन कूं, बोध वीज दातार जी॥५॥ चौसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी। तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्व यक्ष सुर सार जी॥६॥ वीस जिनेसर मुगते पहुंता, महिमा थइय अपार जी। तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगत में, मुक्ति तणो दातार जी॥७॥ छहरी पाले जे नर भावे, भेटे शिखर गिरिन्द जी। ते नर मन वंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कन्द जी॥८॥ बहुविध संघ तणी करे भिक्त, संघ पित नाम धराय जी। सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुयश सवाय जी॥९॥ परभव सुरनर संपद पामे, यात्रा करे गहन

गार जी । साधमीं वच्छल मुनि भक्ति, पूजा उच्छव थाट जी ॥१०॥ ट्रंक ट्रंक पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भावजी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, ्र आनन्द अधिक उच्छाव जी ॥११॥ रास रच्यो श्री शिखर गिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी । तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर छाय जी ॥१२॥ खरतरगच्छपति महिमा धारी, कीरत जग विख्यात जी । जय श्री जिन सौभाग्य सुरीखर, अमृत वचन सुगात जी ॥१३॥ तासु पसार्ये रास रच्यो ए, अमृत समुद्रने सीस जी। बालचन्द्र निज मित अनुसारे, सोघो विबुध जगीस जी ॥१४॥ संवत् उगणी सै सितहोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी । रास\* अजीमगंज मांहे कीना, भणतां मंगल माल जी ॥१५॥

।। इति रास विभाग ॥

### सज्माय

### इग्यारे अंग की सज्भाय

अंग इग्यारे में गुण्या सहेळी ए, आज थया रङ्गरोल की। नन्दीसूत्र मांहि एहनो सहेली, भाख्यो सर्व निचोल की ॥१॥ सहेली ए आज वधामणा, पसरी अङ्ग इग्यारनी । मुझ मन मंडप वेल की, सींचू ते हरखे करि अनुभव रसनी रेल की ॥ स॰ २ ॥ हेज घरी जे सांमले सहेली, कुण बूढ़ा कुण बाल की। तो ते फल लहे फूटरा सहेली, स्वादें अतिहि रसाल की ॥ सा॰ ३ ॥ हरख अपार घरी हिये सहेली, अहमदाबाद मझार की । भास करी ए अङ्गनी सहेली, वरत्या जय जयकार की ॥ स॰ ४॥ संवत सतर पचानवें सहेली, वरषाऋतु नम मास की । दसमी दिन सुदि पक्ष मां सहेली, पूरण थई मन आस की ॥ स॰ ५ ॥ श्री जिनधर्म सूरि पाटवी सहेली, श्री जिनचन्द्र सूरीश की। खरतरगच्छना राजिया सहेली, तसु राजे सुजगीस की ॥ स॰ ६ ॥ पाठक हरख निधानजी सहेली, ज्ञान तिलक

想到这种,我们是我们的,我们是我们的,我们是这种,我们是这种,我们的,我们的,我们的的,我们的的,我们的是我们的,我们是我们的,我们是这个人的,我们的一个人的, 一个人,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们的是我们的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们就是这一个人的,我们就是我们的,我们就是我们的,我们 स० ४७० में श्री धनेश्वर सूरिजी रचित शत्रु अय माहात्म्य से १६८२ में समय सुन्दरजीने 

 स्टे० १६७७ में अमृतसागरजी के शिष्य वालचन्दजी ने यह रास बनाया है।
 शत्रुञ्जय रास बनाया है।

सुपसाय की । विनयचन्द्र\* क हे मैं करी सहेली, अंग इग्यार सञ्ज्ञाय की ॥ स॰ ७ ॥

#### आचारांग सज्भाय

पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे ॥ सुगुण नर ॥ वीर जिनन्दे भाखियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु० १ ॥ विल्हारी ए अङ्गनी रे, हूं जाऊं बारम्बार रे । विनवे गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधु तणो आचार रे ॥ सु० २ ॥ सुय खंघ दोय छै जेहनारे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे । उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिचासी सुजगीस रे ॥ सु० ३ ॥ हेंतु जुगत कर सोभता रे, पद अढार हजार । अक्षर पदने छेहडे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० १ ॥ आगम अनन्ता जेहमां रे, विल अनन्त पर्याय रे । त्रस परित्तो छे इहां रे लाल, थावर अनन्त कहाय रे ॥ सु० ५॥ निवद निकाचित सासता रे, जिन प्रणित ए भाव रे । सुणतां आतम उछसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० ६ ॥ सुगुण श्रावकवारू श्राविका रे, अंगे घरिय उछास रे । विधिपूर्वक तुमें सांमलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ७ ॥ ए सिद्धान्त महिमा निलो रे, ऊतारे भव पार रे । विनयचन्द्र कहे माहरे रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ८ ॥

### सुयगडांग सूत्र सन्भाय

वीजो अङ्ग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुयगडांग। मोरा साजन त्रिण से त्रेसठ पांखडी तणो, मत खंड्यो धर रंग ॥मोरा साजन १॥ मीठी रे लागी वाणी जिन तणी, जागी जेहथी रे सुज्ञान। ए वाणी मन भाणी माह रे, मानूं सुधा रे समान ॥ मो॰ २॥ राय पसेणी उपांग छे, जेहनो ए सूत्र गम्भीर। वहु श्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर॥ मो॰ ३॥ एहना रे सुयखंद दोय छे, विल अध्ययन तेवीस। उद्देसा समुदेसा जिहां मला संख्याये रे तेत्रीस॥ मो॰ १॥ नय निक्षेप प्रमाण भरचा, पद छत्तीस

<sup>े</sup> ये ग्यारह अंगोंकी सङकाय सं० १७६४ मे श्री विनयचन्द्रजी ने बनाई है।

हजार । संख्याता अक्षर पद मांहे, कुन छहे तेहनो रे पार ॥ मो॰ ५ ॥ अगम अनंता परियाय वली, भेद अनंत जिन मांही । गुण अनन्त त्रस परित्त कहाा, यावर अनंत ले याही ॥ मो॰ ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कडा, जिन पनत्ता रे भाव । भासी रे सुन्दर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो॰ ७ ॥ करिये भक्त जगत ए स्त्रनी, निश्चय लहिये रे मुक्ति। विनयचन्द्र कहे प्रगट, ए थी आत्म गुणनी रे शक्ति ॥ मो॰ ८ ॥

### ठाणांग सूत्र सज्भाय

त्रीजो अङ्ग भलो कह्यो रे जिनजी, नामें श्री ठाणांग। मेरो मन मगन थयो हांरे देखि देखि भाव, हांरे जीवाजीव स्वभाव॥ मेरो मन मगन थयो, सबल जगत करि छाजता रे। जिनजी जीवाभिगम उपांग, मेरो मन मगन थयो ॥१॥ एह अङ्ग मुझ मन बस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब। गृहिर भाव कर जागतो रे जिनजी, आज तो एह आलंब॥ मो॰ २॥ कूट शैल शिखरे शिला रे जिनजी, कानन में बलि कुंड। गह्वर आगर दह नदी रे जिनजी, जेह में अछे रे उदंड॥ मो॰ ३॥ दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण पर्याय प्रयोग। परित्त जेहनी बांचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग॥ मो॰ ४॥ बेष्ट शिलोक निजृत्त मूं रे जिनजी, संगहणी पिड मित्त। ए सहु संख्याता जिहां रे जिनजी, सुणतां उलसे चित्त॥ मो॰ ५॥ सुयखंध इक राजतो रे जिनजी, दश अध्ययन उदार। उदेशादिक बीस छे रे जिनजी, पद बहुत्तर हजार॥ मो॰ ६॥ रागी जिन शासन तणो रे जिनजी, सुणें सिद्धान्त बखान। विनयचन्द्र कहे ते हुवे रे जिनजी, परमारथरा जान॥ मो॰ ७॥

### समवायांग सूत्र सज्भाय

चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो ठाठ, पन्नवणा उपांग करी सोभावणी हो ठाठ । अरघ मागधी भाषा साखा सुरतणी हो ठाठ, सम-कित भाव कुसुम परिमठव्यापी घणी हो ठाठ ॥ परि॰ १॥ जीव अजीव ने जीवाजीव समासथी हो ठाठ, ठहिये एहथी भाव विरोध कांइनथी हो

人名英格兰人姓氏克里特的变体 人名英格兰人姓氏克里特的变体 医多种性 人名英格兰人姓氏克里特的变体

Control of the Control of the Control of the Control of Control हाह । भांगा तीन से समयादिकना जाणिये हो हाह, होक अहोकने लोकालोक वखाणिये हो लाल ॥ लोका॰ २ ॥ एक थकी छ सत समवाय प्ररूपणा हो लाल. कोडाकोडि प्रमाणक जीव निरूपण हो लाल। विहगणी पिटकतणी संख्या कही हो लाल, सासता अरथ अनन्त की छे एहना सही हो लाल ॥ ए० ३ ॥ सुयखंघ अध्ययन उद्देसादिके भला हो लाल, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला हो लाल। पद चौमाल. सहस तेउत्तरा हो लाल ॥ स॰ ४ ॥ भाष्य चुणि निर्यक्ती. कर सोहें सदा हो लाल, सुणतां भेद गम्भीर विपत न होय कदा हो लाल। जेह नमावे अंगकी अन्तरगत हसी हो लाल, जल वरसते जोर, कुण न हुवे खुसी हो लाल ॥ कुण॰ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिनंदर्म माहरो हो लाल, तजिया शास्त्र मिथ्यात सूत्र जाण्यो खोटो हो लाल । जिम मालती ल्हे भृङ्ग करीनेन विरहे हो लाल, ईश्वर शिर सुरगंग तभी परि नवि वहे हो लाल ॥ तभी॰ ६ ॥ ए प्रवचन निग्रन्थ तणी जुगते बडी हो लाल. साकर सेलडी द्राख, थकी पिण मीठडी हो लाल। स्यूं कहिये बहु बात विनय चन्द्र इस कहे हो लाल, एहना सुणने भाव श्रोता अति गहगहे हो लाल ॥ श्रोता॰ ॥

### भगवती सूत्र सज्भाय

पंचम अंग भगवती जानिये रे, जिहां जिन वरना वचन अथाह रे। हिमवन्त परवत सेती निकल्या रे, मानूं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥१॥ सूरपन्नत्ती नामे परगरी रे, जेहनी छै उद्दाम उवांग रे । सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥२॥ इहां तो सुयखंध एक अति मले। रे, एकसो ए अध्ययन उदार रे। दश हजार उद्देसा जहना रे, जिहां कीन प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥३॥ पद तो दोय लाख अरये भरचा रे, ऊपर सहस अठुयासी जान रे । लेकालेक स्वरूपनी वर्णना रे. विवाह पन्नत्ती अधिक प्रमान रे ॥४॥ करिये पूजा अने पर भावना रे, धरिये सद्गुरु ऊपर राग रे, सुनिये भगवती सूत्र रागमृं रे, तो होय भवसागर नो

त्याग रे ॥५॥ गौतम नामे द्रव्य चढ़ाइये रे, सम्यज्ञान उदय होय जेम रे । कीजे साधु तथा साहमी तणी रे, भगति युगति मन आणो प्रेम रे ॥६॥ इण विधम्ं ए सूत्र आराधतां रे, इण भव सीझे वंछित काज रे। परभव विनय चन्दं कहे ते लहे रे, मोहन मुगति पूरीनो राज रे ॥७॥

#### ज्ञाता सूत्र सज्भाय

भूक्षण्या पर । उत्ता कि प्राप्त के स्ता के स्ता के स्ता के सात मा उत्ता के सात मा अपने के सात मा उत्ता के सात मा अपने के सात म छठो अंग ते ज्ञाता सूत्र बखाणियेजी, जेहना छे अरथ अनेक उद्दण्ड हो । म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धान्तनी वातडीजी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजेजी, मधुरता तर्जित जिम मधुखण्ड हो ॥१॥ जंबूहीव पन्नत्ती उपांग छे जेहनोजी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोर हो ॥ म्हा॰ ॥ अर्चित सुण परम शान्ति रस अनुभवेजौ चर्चित सुणि करे सम सोर हो ॥२॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणोजी, समवसर राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा॰ ॥ धरमाचारज धर्म कथा तिहां दाखतीजी, इहलोक परलोक शुद्धि विशेष सुहात हो ॥३॥ भोग परित्याग प्रवज्या पर्यवाजी, सूत्र परि-ग्रहवारू तप उपधान हो ॥ म्हा॰ ॥ संस्रेहण पच्चक्खाण पादोप गमनता जी, स्वर्ग गमन शुभ कुल उतपत्ती हो ॥४॥ बोघिलाम बलि तंत ते अनन्तिक्रया कहीजी, धर्म कथाना दोय छे खंघ हो ॥ म्हा॰ ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छे जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबन्ध हो ॥५॥ ऊंठकोड़ि तिहां सबल कथानक भाषियाजी, भाष्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा॰ ॥ संख्याता हजार भला पद एहनाजी, एह थकी जाये कुमति कलेश हो ॥६॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परेजी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥ म्हा॰ ॥ ते रिसया मन बिसया विनयचन्द्नेजी, सो मांहे मिले जोया एकके दोय हो ॥७॥

# उपासकद्शा सूत्र सन्भाय

हिवे सातमो अङ्ग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे। श्रमणो पासकनी वर्णना, जसु चन्दपन्नत्ती उपांग रे ॥१॥ मन लागो मोरो स्त्रथी, ए तो भव वैराग तरंग रे । रस राता ज्ञाता गुण छहे, परमारथ

संग रे ॥२॥ इण अंगे सुयखंध एक छे, अध्ययन उद्देस विचार रे । दस दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥३॥ आनन्दादिक श्रावक तणो, गुणतां अधिक रसाल रे । रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥४॥ श्रोता आगल तो वांचतां गीतारथ पामे रीझ रे । जे अर्द्धदग्ध समझे नहीं, तेसूं तो करबी धीज रे ॥५॥ दस श्रावक तो इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यो निहं कोय रे । ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥६॥ साचो हो ते प्ररूपिये, निस्तंक पणें सुजगीस रे । किंव विनयचन्द्र कहस्यूं थयो, जो कुमती करस्ये रीस रे ॥७॥

### अंतगढ़दशा सन्भाय

आठमो अङ्ग अंतगढ़दशा जी, सुनि करो क्वान पवित्र । अंतगढ़ के विशेष जो, तेहना इहां चिरत्र ॥१॥ कर्म किठन दल चूरतां जी, पूरता जग तणी आस । जिनवर देव इहां भासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥२॥ सकल निक्षेप नय मंगथी जी, अंगना भाव अमंग । सिहज सुख रंगनी किल्पका जी, किल्पका जास उवंग ॥३॥ एक सुयखंघ इण अंगनो जी, वर्ग छे आठ अभिराम । आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥४॥ आठमा अंगना पाठमें जी, एहवो अछेरे मिठास । सरस अनुभव रस अपजे जी, संपजे पुण्यनी रास ॥५॥ विषय लंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय । जिम महाविष विषधर तणो जी, नाग मंत्रे सुण्या जाय ॥६॥ अमृत वचन सुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय । जिम विनयचंद इण सूत्रना जी, तुरत लहे अभिप्राय ॥७॥

## अणुत्तरोववाई सन्भाय

नवमो अङ्ग अणुत्तरोववाई, एहनी रुच मुझने आई हो । श्रावक सूत्र सुणो सूत्र सुणो हित आणी, ए तो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा॰ १॥ जसु कल्पावर्तसिका नामे, सोहे उपांग प्रकामे हो । एतो आगमने अनुकूळा,

,是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们就是一个人,

मांन् में शिखरनी चूळा हो ॥श्रा॰२॥ ए तो सूत्रणो नाम सुणीजे, तिम तिम अन्तरगित भीजे हो । प्रगटे नवळ सनेहा एहथी, उळसे मोरी देहा हो ॥श्रा॰३॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेना गुण इणमें गाया हो । नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छट्टे अङ्गे आण्या हो ॥श्रा॰॥ इहां एक सुयखंघ वारू, त्रिण वर्ग वळी मनोहारू हो । उद्देसा त्रिण सन्त्रा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ श्रा॰ ५॥ सूत्र सुणावां अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो । श्रोताथी प्रीत बढ़ाऊं, निन्दकने मुंह न लगाऊं हो ॥श्रा॰६॥ जे सुणतां करे बकोरे, ते तो माणस निहं पिण ढोरे हो । किव विनयचन्द्र कहे साचो, श्रुत रंगे. सहु को राचो हो ॥ श्रा॰ ७॥

#### प्रश्नव्याकरण सन्भाय

दशमो अंग सुरंग 'सुहावे, प्रश्नव्याकरण नामे। सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानन्द फल पामे ॥ आवो आवो गुणना जाण, तुमने सूत्र सुणाऊं ॥१॥ पुष्फ कली ज्यूं परिमल महके, गुरु परागने रागे । तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति किर जागे ॥ आवो॰ २ ॥ अंगुष्टादिक जिहां प्रकारया, प्रश्नादिक अति रूडा । ते छे अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणि चूडा ॥ आवो॰ ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संबर द्वारा । महामंत्र वाणीमां लहिये, लबधि भेद सुखकारा ॥ आवो॰ ४ ॥ सुयखंघ एक छे दसमें अंगे, पणयालीस अज्झयणा । पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आवो॰ ५ ॥ जे नर सूत्र सुणे निहं काने, केवल पोखे काया । माया मांहि रहे लपटाणा, ते नर इम हिज आया ॥ आवो॰ ६ ॥ सूत्र मांहि तो मार्ग दोय छे, निश्चय नय व्यवहारा । विनय चन्द्र कहे ते आदिरये, जन मन मदन विकारा ॥ आवो॰ ७ ॥

# विपाक सूत्र सज्भाय

सुणो रे विपाक सूत्र अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी। छिलत उपांग जसु प्रवर पुष्फ चूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी॥१॥ अशुभ विपाक सम दुष्कृत फल भोगवी, नरक में गरक थया जेह प्राणी।

सुकृत फल भोगवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥२॥ दोय श्रुतखंघने वीस अध्ययन विल, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे। सहस संख्यात पद कुन्द मचकुन्द जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे ॥३॥ सरस चम्पकलता सुरिम सहुने रुचे, अन्य उपगारनी बुद्धि मोटे। स्त्र उपगार तेहथी सबल जाणिये, जेहथी पुरुष सुख अचल खोटे ॥४॥ बंघने मोक्षना बेउ कारण अले, दुकृतने सुकृत जीवो विचारी। दुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिन बचन धारिये गुण संभारी ॥५॥ मकर रे मकर निंद्या निगुण पारकी, नारकी तणे गित कांइ बांघे। नारकी प्रकृत तज सहज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली घरम धंघे ॥६॥ सुखने दुःख विपाक फल दाखन्या, अंग इग्यारमें वीतरागे। चिरजयो बीर शासन जिहां सूत्रथी, किव विनयचन्द्र गुण ज्योति जागे ॥७॥

#### प्रतिक्रमण सन्भाय

कर पडिक्कमणो भावसूं, दोय घड़ी शुभ ध्यान लाल रे। परभव जातां जीवनें, संबंक सांचूं जांन लाल रे॥ कर॰ १॥ श्रीमुख वीर समुचरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध लाल रे। लाख खण्डी सोना तणी, दिये दिनप्रति दान लाल रे॥ कर॰ २॥ लाख वरस लग ते वली, एम दीये द्रव्य अपार लाल रे। इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार लाल रे॥ कर॰ ३॥ सामायिक चउविसत्थो, भलूं वन्दन दोय दोय बार लाल रे। वत संभारो रे आपणा, ते भव कर्म निवार लाल रे॥ कर॰ ४॥ कर काउसग्ग शुभ ध्यान थी, पच्चक्खाण सूधूं विचार लाल रे। दोय सञ्झायें ते वली टाली, टालो सर्व अतीचार लाल रे॥कर० ५॥ सामायिक परसाद्थी, लहियें अमर विमान लाल रे। धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणूं ए निदान लाल रे॥ कर॰ ६॥

### कर्म सज्भाय

देव दानव तीर्थंकर गणधर, हिर हर नरवर सघला । करम तणे वस सुख दुख पाया, सवल हुआ जब निवला॥रेप्राणीकर्म समो निह कोई॥१॥

आदीसरजी ने करम अटारचा, वरस दिवस रह्या भूला। वीर ने बारे बरस दुख दीघा, ऊपना ब्राह्मणी कूखा ॥ रे॰ २ ॥ साठ सहस सुत मारवा एकण दिन, जोध जवान नर जैसा। सगर हुओ महा पुत्रनो दुखियो, कर्मतणा फल ऐसा ॥ रे॰ ३॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनत कुमार। सोले रोग शरीर में ऊपना, कमें कियो तनु छार॥ रे०४॥ कर्म्म हवाल किया हरिश्चन्दके, बेची सुतारा रांणी। बारे वरस लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणी ॥ रे॰ ५ ॥ दिघ बाहन राजारी बेटी, चावी चन्द्रन बाला । चौपद ब्यूं चहुटा में बेची, करम तणाए चाला ॥ रे॰ ६॥ सुभूम नांमे आठमो चकी, कम्में सायर नाख्यो। सोले सहस यक्ष ऊभा देखे, पिण किणही नहिं राख्यो ॥ रे॰ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कम्में कीधो आधो। इम जाणीने अहो भवि प्राणी, कर्म्म कोइ मत बांघो ॥ रे॰ ८ ॥ छपन्न कोड जाद्वरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी । अटवी मांहि मूंओ एक लो, बिल बिल करतो पाणी ॥ रे॰९॥ पांडव पांच महा झूझारा, हारी द्रौपदी नारी। बारे बरस लग वन रडविडया, भिमया जेम भिखारी ॥ रे॰ १०॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता, लखमण रावण मारचो । एक छड़े जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्म सूंहारचो ॥ रे॰ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता । कर्मी प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता ॥ रे॰ १२ ॥ समिकतधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसके । धरमी नर ने कर्म धकाया, करमस्रं जोरन किसके ॥ रे॰ १३ ॥ सतिय शिरोमणि द्रौपदि कहिये, जिन समे अवर न कोई। पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूरव कर्म्म विगोई॥ रे॰ १४॥ आभा नगरीनो जे स्वामी, साची राजा चन्द । मांयें कीघो पंखी कूकडो, कर्म्में नाख्यो फन्द ॥ रे॰ १५ ॥ ईसर देव पारवित नारी, करता पुरुष कहावे । अहनिस महिल मसांण में वासो, भिक्षा भोजन खावे ॥ रे॰ १६॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहें अटतो । सोल कला संसिधर जग चावो, दिन दिन जाये घटतो ॥ रे॰ १७ ॥ इम

करमें, मांज्या ते पिण साजा । ऋषी हरष करजोड़ि ने विनवे, नमो नमो कर्म्म महाराजा ॥ रे॰ १८ ॥

### इला पुत्र की सज्भाय

नाम इला पुत्र जानिये, धनदत्त सेठनो पूत । नटवी देखी रे मोहियो जे राखे घर सूत ॥१॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार । निज कुल छंडी रे नर थयो, नाणी सरम लिगार ॥२॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक । तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥३॥ दोय पग पहरी रे पावड़ी, वंस चळ्यो गजगेल । निरधारा ऊपर नाचतो खेले नवनवा खेल ॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद । पायतल घूवर घन घने, गाजे अम्बर नाद ॥५॥ तिहां राय चितेरे राजियो, लुबधो नटवी रे साथ । जो पड़े नटवो रे नाचतो, तो नटवी सुझ हाथ ॥६॥ दान न आपे रे भूपती, नट जाणे नृप बात । हूं घन वंछू रे रायनो, राय वंछे सुझ घात ॥७॥ तिहांथी सुनिवर पेखियो, धन घन साधु निराग । धिग् धिग् विषया रे जीवड़ा, मन आण्यो वैराग ॥८॥ संबर भावे रे केवली, ततिखण कर्म खपाय । केवलि महिमा रे सुर करे समय सुन्दर गुण गाय ॥९॥

### मेघकुमार मुनि सन्भाय

वीर जिनन्द समोसरचोजी, वन्दे मेघकुमार सुण देशन वैरागियोजी। ए संसार असार रे मायड़ी, अनुमित द्यो मुझ आज। संयम विषम अपार रे मांशाशा वछ तू केणे भोळव्यो रे, श्रेणिक तात नरेश कांड ऊणो किण दृहच्यो रे। हूं निव द्यूं आदेश रे जाया, संयम विष किम निरवाहसी भार रे जाया हूं ।।२॥ आदि निगोदेहूं रुख्योजी, सिहया दुक्ख अनंत। सासोश्वासे भव पूरियाजी, तेह न जाणू अन्त हे मांशाशा हिवगा तू वाळक अछे जी, जोवन भरचो रे कुमार। आठ रमणि परणाविया रे मांगिव सुक्ख अपार रे जाया॥ ।।।।। जनम मरण निरयातणांजी, दुक्ख न सह्यो जाय। वीर जिणंद वखाणियोजी, ते में सुनियो कान हे मायड़ी।।।।।

वछ कांछलीयेजी जीमणोजी, अरस विरस आहार। मुंइ पाला नित हींडणोजी, जाणिस तुझ कुमार रे जाया ॥६॥ भमतां जीव अनंत भम्योजी, घरम दुहेलो होय । जरा व्यापे जीवन खिसेजी, तब किम करणो होय रे मायड़ी ॥७॥ मृगनयणी आठे रमेजी, ताड़े नवसर हार । जीवन भर छोडं नहींजी, कांइ मूको निरधार कुमारजी ॥८॥ हंस तूलिका सेजड़ीजी, रूप रमणि रस भोग अतिहि सुंहाली देहड़ीजी। किम हुए संयम जोग रे जाया ॥९॥ स्वारथनो सह ए सगोजी, अरथ पखे सहु कोय । विषय विषम सहुरा कह्याजी, किम भोगविये सोय रे मायड़ी ॥१०॥ खिम खिम माउ पसाय करीजी, मैं दीधूं तुझ दुक्ख । दियो आदेस जिमहूं मुखीजी, वीर चरणें ल्यूं दिक्ल है ॥११॥ तन फाटे लोयण झरेजी, दुक्ल न सहया जाइ । बच्छ सुखी हुवो तिम करोजी, मैं दीघो आदेश रे जाया ॥१२॥ मणि मांणक मोती तज्याजी, तोड्यो नव सर हार । मृगनयणी आठे रड़ेजी, हिव अम्ह कवण आधार नरेसर ॥१३॥ कुमर भणे सुकुली थियाजी, बहु दुख ए संसार । नेह तुमारो जानियोजी, जोल्यो संयम भार रे नारी ॥१४॥ इम सिविका तब सझी करीजी, कूंवर घारणी माइ। श्रेणिकराय उच्छव करेजी, चारित्रल्यो रिषिराय रे जाया ॥१५॥ इम जाणी वैरागियोजी, वरजे जे नर नारि । करजोड़ी पूनो भणेजी, ते तरस्ये संसार हे माय ॥१६॥

# प्रसन्नचन्द राजा की सज्भाय

राज छंड़ी रलियामणो रे, जानी अथिर संसार । वैरागे मन वालियो कांड् लीघो संजम भार । प्रसन्नचन्द प्रणमूं तुम्हारा पाय ,तुम्हे मोटा मुनि-राय ।।१।। वन माहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊपर पग ठाय । बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टी लगाय ॥२॥ श्रेणिक वन्दन नीसरचो रे, वीरजीने वन्दन जाय । देई तीन प्रदक्षिणा, त्रिविध त्रिविध खमाय ॥३॥ दुरमुख दृत वचन सुनी रे, कोप चढ्यो ततकाल । मनसूं संग्राम मांडियो जीव पड़्यो जंजाल ॥४॥ श्रेणिक प्रश्न पूछियो रे, एहिक सी गति पाय। भगवन्त कहे हिवणां मरे तो, सातमी नरके जाय।।५॥ खिणइकअन्ते पूछियो रे, सरवारथ सिन्ध विमान । वाजी देवनी दुंदुभी मुनि पांम्या केवल ज्ञान ॥६॥ प्रसन्नचन्द मुनि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य । रिन्धि हरष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥७॥

#### ढंढण ऋषि सज्भाय

ढंढण ऋषिजी ने वन्दना हूं वारी लाल उत्कृष्टो अणगार रें हूं लाल । अभिग्रह लीधो एहवो, लेखूं शुद्ध आहार रें ॥हूं॰ १॥ नितप्रति ऊठें गोचरी, न मिले शुद्ध आहार रें । मूल न ले अणसूझतो, पक्षर कीधो गात रें ॥ हूं॰ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमसे, मुनिवर सहस अढार रें । उत्कृष्टो कुण एहमें, ढंढण अधिको दाखियो ॥ हूं॰ ३ ॥ श्री मुख नेम जिनंद रे, कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा । धन यादव कुल चन्द रें ॥ हूं॰ ४ ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या, बांधा कृष्ण नरेस रें । किणही मिथ्यात्वी देखने, आण्यो भाव विसेस रें ॥ हूं॰ ५ ॥ मुझ घर आवो साध जी, ल्यो मोदक छे शुद्ध रें । मुनिवर विहरीने पांगुरचा, आया प्रभुजीने पास रें ॥ हूं॰ ६ ॥ मुझ लबधे मोदक मिल्या, कहोने तुम्हें किरपाल रें । लबध नहीं बच्छ ताहरी, श्रीपित लबधि निधान रें ॥ हूं॰ ७ ॥ ए लेवा जुगतो नहीं, चाल्या परठन काज रें । ईट निवाहे जायने, चूरे कर्म कुं आज रें ॥ हूं॰ ८ ॥ आंणी चढ़ती भावना, पांम्यो केवल नांण रें । ढंढण ऋषि मुगते गया, कहे जिन हर्ष सुजांण रें ॥ हूं॰ ९ ॥

त्र किन्नुका के का प्रकृत के के किन्नुका के के किन्नुका के के किन्नुका के किन्नुका किन्

#### श्रावक करणी सज्भाय

श्रावक उठ तूं बड़ी परमात, चार घड़ी रहे पिछली रात। मन में समरो श्री नवकार, जिससे होय भवसागर पार ॥१॥ कौन देव कौन गुरु धर्म, कौन हमारा है कुल कर्म। कौन हमारो हैं व्यवसाय, ऐसा चिंतन कर मन मांय ॥२॥ सामायिक को लेना है शुद्ध, धर्म तणी मन राखो युद्ध। प्रतिक्रमण राई कीजिये, निज प्रायश्चित्त आलोइये ॥३॥ काया शक्ति करो पचलाण, सूधी पालो जिनवर आण। पढ़िये गुनिये स्तवन

सज्झाय, जिससे भव निस्तारा पाय ॥१॥ चौदह नियम चितवन करो, दया पाली जीवन सुख भरो । मन्दिर जा जुहारो देव, द्रव्य भाव से करना सेव ॥५॥ पूजा करते लाभ अपार, प्रमु बड़े मोक्ष दातार । जो उत्थापे जिनवर देव, ताहि न शब्द कान में छेव ॥६॥ उपाश्रये गुरु वन्दो जाय, सुनो वसान सदा चित लाय । निर्दृषण कर शुद्ध अहार, साधुन को दीजे सुविचार ॥७॥ स्वामीवत्सल कीजे घना, हेत बड़ा है स्वामी नता । दुखिया हीन दीन को देख, करिये उनपर द्या विशेष ॥८॥ शक्ति देख निज देना दान, बड़न सो नहीं कीजे मान। छेहु प्रतिज्ञा गुरु के पास, धर्म अवज्ञा करहु न वास ॥९॥ और करो तुम शुद्ध व्यापार, कमती ज्यादे का परिहार-। मत भरना तुम झूठी साख, झूठे जन से बात न भाख ॥१०॥ अन्त्तकाय कहे बत्तीस, अभक्ष बाईस विख्वा वीस । ये भक्षण मत करना तीम, कच्चे खट्टे फल मत जीम ॥११॥ रात्रि भोजन का बहु दोष, समझ गख दिल में संतोष। सज्जी साधुन लोह और गुली, मधु गूंद मत बेचो बळी ॥१२॥ और रंगाई कर्म न करो, दृषण उनमें अति सांभरो । पानी छानो दो दो बार, अनछाने में दोष अपार ॥१३॥ यह करो जीवाणी तणा, यत्ने पुण्य बंघे अति घना । छाणा इन्धन मही जोय, वावरिये जिम पाप न होय ॥१४॥ घृत सम वापरना तुम नीर, अनञाने में मत घो चीर । बारह वत तुमे सुध पालो, अतिचार उनके सभी टालो ॥१५॥ कहे पंद्रह कमी दान, पाप तणी परिहरिये आन । माथे मत ले अनरथ दंड, मिथ्या मेल मत भरजो पिंड ॥१६॥ समिकत दिल में राखो शुद्ध, बोल विचारी भाखिये बुद्ध । पंच तिथि मत कर आरंभ, पालो शील तजो मन दंभ ॥१७॥ तेल तक वृत पय अरु दही, उघाड़ा मत राखो सही। श्रेष्ठ कार्य में खरचो वित्त, पर उपकार करो शुभ चित्त ॥१८॥ दिन प्रतिदिन चौविहार, चारों आहार तणा परिहार । दिवस के आलोओ पाप, जिससे भागे सब संताप ॥१९॥ संध्यांयें आवश्यक सांचवे जिनवर चरण सरण भवभवें । चारों सरना कर दृढ़ हो, सागारी अणसण हे सो ॥२०॥

सद्विचार को मन में धार, जाऊं सिद्धाचल गिरनार । सम्मेत शिखर आवू तारंग, धन्य घड़ी कब भेटूं उमंग ॥२१॥ श्रावक तणी किया है एह, इसमें होता है भव छेह । अष्ट कर्म दल पातला, पाप तणा छूटे आमला ॥२२॥ बहुरि लीजिये अमर विमान, अनुक्रमे पावे शिवपुर ठाम । कहे जिन हर्प घणो ससनेह, करणी दु:ख हरणी है येह ॥२३॥

### मन भमरा वैराग्य सन्भाय

भूलो मन भमरा तूं क्यों भम्यो, भिमयो दिवस ने रात । मायारो बांध्यो प्राणियो, भमे परिमल जात ॥ भूलो॰ १ ॥ कुम्भ काचो रे काया कारमी, तेहनां करो रे जतन्न । विणसतां वार लागे नहीं, निर्मल राखो रे मन्न ॥ भूलो॰ २ ॥ केना छोरू केना वाछरू, केना माय ने बाप । अन्ते जाऊं छे एकलुं, साथे पुण्य ने पाप ॥ भूलो॰ ३ ॥ आशा तो इंगर जेवडी, मख़ं पगलां रे हेठ । धन संची संची कांइ करो, करो दैवनी वेठ ॥ भूलो॰ ॥ धा धन्धो करि धन मेळव्यं, लाखां ऊपर कोड । मरणनी वेला मानवी, लियो कन्दोरो तोड ॥ भूलो॰ ५ ॥ मूरख कहे धन माहरूं, धोखे धान न खाय । वस्त्र बिना जइ पोढवूं, छखपति छाकडा मांय ॥ भूछो॰ ६॥ भवसागर रे दु:ख जल भर-चो, तरवो छे रे तेह । विचमां भय सबलो थयो, कर्म वायरनो मेह ॥ भूलो॰ ७ ॥ लखपति छत्रपति सभि गया, गया लाखों के लाख। गर्व करी गोखे बेसता, सर्व थया वली राख॥ भूलो॰ ॥८॥ धमण धखन्ती रे रहि गई, बुझ गई लाल अंगार । एरण को ठवको परचो, ऊठ चल्यो रे लोहार ॥ भूलो॰ ९ ॥ ऊवट मारग चालतां, जावृं पेले रे पार। आगल हाट न वाणियो, संवल ले जो रे सार॥ भूलां॰ १०॥ परदेशी परदेश में, कुण सूं करो रे सनेह । आया कागल ऊठ चल्या, न गणे आंधी न मेह ॥ भूलों॰ ११ ॥ केई चाल्यो रे केई चालशे, केई चालणहार । कई चाल्या रे वूढा वापढा, जाये नरक मझार ॥ भृलो॰ १२ ॥ जे घर नौयत बाजती, गाता छत्तीको राग । खंडर थइ खाळी पड्यां. बेटण लाया हे कारा ॥ भूलो॰ १३ ॥ भमरो आंच्यो रे कमलमां, लेवा कमलनृं

फूल । कमलनी बांछाये मांहे रह्यो, जिम आथमते सूर ॥ भूलो॰ १४ ॥ रातनो भूल्यो रे मानवी, दिवसे मारग आय । दिवसनो भूल्यो रे मानवी, फिर फिर गोतां खाय ॥ भूलो॰ १५ ॥ सद्गुरु कहे वस्तु वोरिये, जे कांड् आवे रे साथ । आपणो लाभ उगारिये, लेखं साहिब हाथ ॥ भूलो॰ ॥ १६॥

# गुरु स्तुति

खोवत क्या जग में नांदान, सभी के मन में हैं गुरु ध्यान। मैल तू मन का घोले, हृदय प्रेम से अमृत घोले। श्वांस श्वांस और रोम रोम में, बसते दया निधान ॥ सभीके॰ १ ॥ ये जीवन मृत्यू का सपना, आंख खुली कोई नहीं अपना। भगवन का तू नाम सुमरले जिससे हो कल्यान ॥ सभीके॰ २ ॥ ज्ञानचन्द्र\* दर्शन का प्यासा, पूरी कर मन की अभिलासा। पागल मन तू छोड़ मोह को, घरले गुरुका ध्यान ॥स॰३॥

।। इति रास तथा सज्भाय विभाग ।।



यह स्तवन मिरजापुर निवासी ज्ञान

# स्तोत्र-विभाग

## श्री नन्दीषेण सूरि विरचितं अजितशान्ति नामकं प्रथमं स्मरणम्

अजिअं जिअ सब्ब भयं. संति च पसंत सब्ब गय पावं। जयगुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ ( गाहा ) बवगय मंगुल भावे, तेहं विउल तव णिम्मल सहावे । णिरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिह सब्भावे ॥२॥ ( गाहा ) सच्व दुक्खं प्यसंतीणं, सच्च पाव प्पसंतीणं। सया अजिअ संतीणं णमो अजिअ संतीणं ॥३॥ (सिलोगो ) अजिअ जिण ! सुह पवत्तणं तव पुरिसुत्तम ! णाम कित्तणं । तह य घिइ मइ प्यवत्तर्णं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तर्णं ॥४॥ ( मागहिआ ) किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं णिचिअं च गुणेहिं महा-मुणि सिद्धि गर्य। अजिअस्स य संति महा मुणिणो वि अ संति करं, सययं मम णिव्वृङ्क कारणयं च णमं सणयं ॥५॥ ( आलिंगणयं ) पुरिसा जङ् दुक्ख वारणं, जइअ विमग्गह सुक्ख कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभय करे सरणं पवज्जहा ॥६॥ ( मागहिआ ) अरइ रइ तिमिर विरहिअ सुबरय जर मरणं, सुर असुर गरुल भुयग वइ पयय पणिवइयं । अजिअ मह मिव अ सुणय णय णिउणमभयकरं, सरणसुवसरिअ सुवि दिविज महिअं सययमुवणमे ॥७॥ ( संगययं ) तं च जिणुत्तम मुत्तम णित्तम सत्तवरं, अज्ञव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि णिहिं। संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहि वरं दिसउ ॥८॥ ( सोवा-णयं ) सावत्थि पुरव परिथवं च वर हत्थि मत्थय पसत्य वित्थिण्ण संथियं, थिर सरित्य वत्यं मयगळ ळीळाय माण वरगंध हत्यि पत्याण पत्यियं संयवारिहं। हत्थि हत्थ बाहु धंत कणग रुअग णिरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो विचय सोम्म चारु रूवं, सुद्द सुह मणामिराम परम रमणिञ्ज वर देवदुं दुहि णिणाय महरयर सुह गिरं ॥९॥ ( वेड्टुओ ) अजियं जिआरि

它是我的情况是这些的情况,我就是我就是我就是我的人的,我也是我的人的人,我们也是我们的人,我们也是我们的人,我们也是我们的人,我们也是我们的人,我们们的人,我们 "我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们就是我们的人,我们 गणं, जिअ सन्व मयं भवोह रिउं। पणमामि अहं पयओ पावंपसमेउ में भयवं ।।१०।। (रासालुंडओं ) कुरु जणवय हत्थिणाउर णरीसरो पढमं तओ महा चक्कबट्टि भोए महप्पभाओ जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर णगर णिगम जणवय वई बत्तीसा रायं वर सहस्साणुआय मग्गो । चउदस वर रयण णव महा णिहि चउसिंह सहस्स पवर जुवईण सुंदर वई चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छण्णवह गाम कोडि सामी आसीजो भारहम्मि भयवं ॥११॥ ( वेड्वंओ ) तं संतिं संति करं संतिण्णं सव्व भया । संति थुणामि जिणंसंति विहेउ मे ॥१२॥ ( रासाणंदियं ) इक्लाग विदेह णरीसर णर वसहा मुणि वसहा णव सारय सिस सकलाणण विगय तमा विहुय रया । अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महा मुणि अमिय बला विउलकुला पणमामि ते भव भय मूरण जग सरणा मम सरणं ॥१३॥ ( चित्तलेहा ) देव दाणविंद चंद सूर वंद हह तुह जिह परम लह रूव, घंत रुप्प पृष्ट सेय सुद्ध णिद्ध धवल दंति पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ वंद घेअ सव्वलोअ भाविअ प्पभाव णेअ पइस मे समाहि ॥१४॥ ( णारायओ ) विमल ससि कलाइरेअ सोम्मं वितिमिर सूर कलाइरेअ तेअं । तिअस वइ गणाइरेअ रूवं, धरणिघर प्यवराइरेअ सारं ॥१५॥ ( कुसुमलया ) सत्तेअ सया अजियं, सारीरेअ बले अजिअं। तव संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥१६॥ ( भूअगपरिरंगिअं ) सोम्म गुणेहिं पावइ ण तं णव सरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ ण तं णव सरय रवी । रूब गुणेहिं पावइ ण तं तिअसगणवई, सार गुणेहिं पावइ ण तं घरणिघर वई ॥१७॥ ( खिज्जिअयं ) तित्य वर पवत्तयं तम रय रहिअं, धीर जण युअचिअं चुअकिल कलुसं । संति सुह प्पवत्तयं ति गरण पयओ, संतिमहं महामुणि सरण मुवणमे ॥१८॥ ( ललिअं ) विणओ णय सिरि रइअंजलि रिसिगण संयुअं थिमिअं, विमुहाहिव धणवइ णरवइ युअ महिअचियं बहुसो। अइ रुगाय सरय दिवायर समहिअ सप्पमं तबसा, गयणं गण विअरण ससुइय चारण वंदिअं सिरसा ॥१९॥ ( किसलय माला ) असुर गरुल परिवंदिअं,

किण्णरोरग णमंसिअं । देव कोडि सय संयुअं, समण संघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं अभयं अणहं, अरयं अरुअं। अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥२१॥ (विज्जुविलिसअं) आगया वर विमाण दिव्य कणग रह तुरय पहकर सएहिं हलिअं । ससंभमो अरण खुमिअ ललिअ चल कुण्डलं गय किरीड सोहंत मडिल माला ॥२२॥ (वेड्डओ ) जं सुर संघा सासुर संघा वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभम पिंडिअ सुद्दू सुविम्हिअ सब्व बलोघा । उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरि अंगा, गाय समोणय भत्ति वसागय पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥२३॥ ( रयणमाला ) वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुद्दया स भवणाइं तो गया ॥२४॥ ( खित्तयं ) तं महा-सुणि महंपि पंजली. राग दोष भय मोह विज्जलं। देव दाणव णरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं णमे ॥२५॥ ( खित्तयं ) अंबरंतर वियारणिआहिं, लिख हंस वह गामिणिआहिं। पीण सोणि त्यण सालिणिआहिं. सकल कमल दल लोअणिआहिं॥२६॥ ( दीवयं ) पीण णिरंतर थण भर विणमिअ गायलयाहि, मणि कंचण पिस ढिल मेहल सोहिअ सोणि तडाहिं। वर खिंखिण णेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसिणयाहि ॥२७॥ ( चित्तक्खरा ) देव सुन्दरीहि पाय विन्दिआहि, वंदिआ जस्स ते सुविक्कमा कमा अप्पणो णिडालएहिं मंडणोदुण पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंग तिलय पत्त लेह णामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति सिण्णिबिह बंदणा गयाहिं हुंति ते बंदिआ पुणी पुणी ॥२८॥ ( णारायओ ) तमहं जिणचंद, अजिअं जिअ मोहं। धुअ सव्य किलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ ( णंदिअयं ) शुअवंदिअस्सा रिसि गण देव गणेहिं, तो देव वहूहिं पयओ पणिमअस्सा जस्स जगुत्तम सासणअस्सा, भत्तिवसागय पिंडिअआहिं। देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइ गुण पंडिआहिं ॥३०॥ ( भासुरयं ) वंस सद तंति ताल मेलिए, तिउक्खराभिराम सद मीसए कइ अ, सुइ समाणणे असुद्ध सञ्ज गीअ पाय जाल घंटिआहिं, बलय मेहलाकलावणे

उराभि राम सद मीसए कए अ देवणट्टि आहिं। हाव भाव विवसम प्पगारएहिं, णच्चिकण अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमा, तयं तिलोय सव्व सत्त संतिकारयं, पसंत सव्व पाव दोस मेस हं णमामि संति मुत्तमं जिणं ॥३१॥ (णारायओ ) छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिआ, ज्झय वर मगर तुरग सिरिवच्छ सुलंछणा। दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिआ, सत्थिअ वसह सीह रह चक्क वरंकिया ॥३२॥ (ललिअयं) सहावल्हा समप्पइहा अदोसदुहा गुणेहिं जिहा । पसाय सिंहा तवेण पुडा सिरीहिं इडा रिसीहिं जुडा॥३॥ ( वाणवासिआ ) ते तवेण घुअ सव्व पावया, सन्व लोअ हिय मूल पावया । संथुआ अजिअ संति पायया, हुंत्ं मे सिव सुहाण दायया ॥३४॥ ( अपरांतिका ) एवं तव बल विउलं, युअं भए अजिअ संतिजिण जुयलं। वबगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ ( गाहा ) तं बहु गुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं नासेउमे विसायं, कुणउ अ परिसाविअ पसायं ॥३६॥ ( गाहा ) तं मोएउ अ णंदिं, पावेउ अणंदिसेणमभिणंदिं । परिसाविअ सुहणंदिं मम य दिसउ संजमे णंदिं ॥३७॥ ( गाहा ) पक्लिय चाउम्मासे, संवन्छरिए अ अवस्स भणिअन्वो । सोअन्वो सन्वेहिं उवसमा णिवारणो एसो ॥३८॥ जो पढ़इ जो अ णिसुणइ, उभओ कालं पि अजिय संति थयं। णहु हुंति तस्स रोगा, पुट्युप्पण्णा विणासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परम पर्य, अहवा कित्ति सुवित्यडां मुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥४०॥

# जिन वल्लभ स्रि कृतं द्वितीयं छघु अजितशान्ति स्मरणम्

उल्लासि कम णक्खण णिग्गय पहा दंडच्छ लेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्य पयडं णिब्बाण मग्गावलिं। कुंदिदुङ्जल दंत कंति मिसओ णीहंत णाणं कुरुकेरे दोबि दुइ्ज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे॥१॥ चरम जलहि णीरं जोम णिञ्जंजलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए। सयल णहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजिअ महव संतिं सो

समत्यो थुणेऊ ॥२॥ तहवि हु बहु माणुङ्घास भत्तिन्भरेण, गुण कणमवि कित्तेहामि चिंतामणि व्य । अलमहव अचिंताणंत सामत्य ओसिं, फलि हुइ लहु सब्बं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥ सयल जय हिआणं णाम मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुडाणिड दोघड घट्टं। णिमर सुर किरीडूग्घिड पायार-विंदे, सययमजिअ संती ते जिणंदे भिवंदे ॥॥ पसरइ वर कित्ती बहुए देहदिची, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परम तित्ती होइ संसार छित्ती, जिण जुअ पय भत्ती हीय चिंतोरु सत्ती ॥५॥ लिलय पय पयारं भूरि दिव्वंग हारं, फुड गण रस भावोदार सिंगार सारं । अणि मिस रमणिज्जं दंसणच्छेय भीया, इव पुण मणिबंधा कास णट्टोवयारं ॥६॥ युणह अजिअ संती ते क्यासेस संती. कणय रथ पसंगा छज्जए जाणि मुत्ती। सरमस परिरंभा रंभि णिव्वाण लच्छी, घण थण घुसिणिक्कुप्पंक पिंगीकयव्व ॥७॥ बहु विह णय भंगं वत्यु णिच्चं अणिच्चं सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं । इय कुणय विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संमरामि ॥८॥ पसरइ तिय छोए ताव मोहंघयारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त छण्णं । फुरइ फुड फलंताणंत णाणंसुपूरो, पयडमजिअ संतिज्झाण सूरो ण जाव ॥९॥ अरि करि हरि तिण्हुण्हं बु चोराहि वाहि, समर डमर मारी रुद खुद्दोवसग्गा। पळयमजिअ संती कित्तणे झत्ति जंती, णिविडतर तमोहा भक्तरालुंखि अव्य ॥१०॥ णिचिअ दुरिअ दारू दित्त झाणिग जाला परिगयमिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं । कणय णिहस रेहा कंति चोरं करिज्जा, चिर थिर मिहलच्छि गाढ संशंभि अव्व ॥११॥ अडवि णिवडि-याणं पत्थिबुत्तासिआणं, जलहि लहिर हीरंताण गुत्ति द्वियाणं । जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं जणयइ लह संति संतिणाहाजिआणं ॥१२॥ हरि करि परिकिणां पक्क पाइक पुणां, सयल पुरुवि रञ्जं छड्डिअं आणसञ्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति मग्गं, चरण मणुपवण्णा हुंतु ते में पसण्णा ॥१३॥ छण ससि वयणाहिं फुछ णित्तृप्पलाहिं, थण भर णमिरीहिं मुहि गिज्जोदरीहिं । लिल्अ भुअलयाहिं पीण सोणित्यणीहिं,

5. 死者的证据,在我们是有事的是我们是我们的,我们也是我们的,我们的,我们的,我们的,我们们的,我们们们的,我们们们的,我们们们的,我们们们的一个,不是我们的一个,这

सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥१४॥ अरिसिकिडिभ कुहगांठिकासाइ सार, खय जर वण छुआसास सोसोदराणि । णह मुह दसणिच्छ कुच्छि कण्णाइ रोगे, मह जिण जुअ पाया सुप्पसाया हरन्तु ॥१५॥ इअ गुरु दुह तासे पिक्खए चाउमासे, जिणवर दुग थुत्तं वच्छरे वा पिवत्तं । पढ़ह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्धं जेण घाएह सिग्धं ॥१६॥ इय विजयाजिअ सत्तु पुत्त ! सिरि अजिअ जिणेसर ! तह अइरा विस सेण तणय ! पंचम चक्कीसर ! तित्यंकर सोछसम ! संति ! जिणवछह संयुअ ! कुरु मंगछ मवहरसु दुरिय मिखलंपि थुणंतह ॥१७॥

# श्रीमानतुङ्गाचार्य कृतं णमिऊण नामकं तृतीयं स्मरणम्

णमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो। चलण जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥ सडिय कर चरण णह मुह णिसुड्ड णासा विवण्णलावण्णा । कुह महा रोगाणल, फुर्लिंग णिद्दड्ड सर्व्वंगा ।।२।। ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेअ वुड्डिय च्छाया । वण दव दङ्घा गिरि पाय यव्य पत्ता पुणोलिन्छ ॥३॥ दुव्याय खुभिय जलणिहि, उन्भड कल्लोल भीसणारावे । संभंत भय विसंदुल, णिज्जामय मुक्कवावारे ॥४॥ अविद्लिय जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं। पास जिण चलणजुअलं, णिच्चं चिअ जे णमंति णरा ॥५॥ खर पवणु दुय वणदव, जालाविल मिलिय सयल दुम गहणे । डज्झंत मुद्दमिय वहु, भीसण ख भीसणिम वणे ॥६॥ जग गुरुणो कम जुअलं, णिव्वविय सयल तिहुअणा-भोअं। जे संभरंति मणुआ, ण कुणइ जलणो भयं तेसि ॥७॥ विलसंत भोग भीसण, फ्रिआरुण णयण तरल जीहालं। उग्गभुअंगं णव जलय, सच्छहं भीसणायारं ॥८॥ मण्णंति कीडसरिसं, दूर परिच्छूढ़ विसम विस-वेगा । तुह णामक्खर फुड सिन्द, मंत गुरुआ णरा लोए ॥९॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, फुलिंद सदूल सद भीमासु।भय विहुर वुण्ण कायर, उल्लूरिअ पहिञ्ज सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्त विहवसारा, तुह णाम ! पणाम मत्त वावारा। ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इन्छियं ठाणं ॥११॥ पञ्जिल आणल

णयणं, दूर विआरिय मुहं महाकायं। णह कुलिस घाय विअलिअ, गइंद कुंभत्य लाभोअं॥१२॥ पणय ससंभम पत्थिव, णह मणि माणिक्क पडिय पडि-मस्त । तुह वयण पहरणधरा, सिंहं कुद्धंपि ण गणंति॥१३॥ सिधवलदंत मुसलं, दीह करुष्ठाल बिंह उच्छाहं। महु पिंग णयण जुअलं, ससलिल णव जलहरारावं॥१४॥ भीमं महा गइंदं, अच्चासण्णंपि ते णिव गणंति। जे तुम्ह चलणजुअलं मुणिवइ! तुंगं समक्षीणा॥१५॥ समरिम तिक्ख-लग्गा, भिग्धाय पविद्ध उद्ध्य कबंघे। कुंत विणिभिण्ण करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरिम्म ॥१६॥ णिज्जिय दप्पुद्धरिउ, णरिंद् णिवहा भडा जसं घवलं। पावंति पाव पसिमण! पास जिण! तुह प्यभावेण॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइं। पास जिणणाम संकित्तणेण, पसमंति सच्वाइं॥१८॥ एवं महाभयहरं, पास जिण्णाम संकित्तणेण, पसमंति सच्वाइं॥१८॥ एवं महाभयहरं, पास जिण्णिद्स संघव-मुआरं। भविय जणाणंद्यरं, कल्लाण परंपर णिहाणं॥१९॥ राय भय जक्ख रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्ख पीडासु। संज्झासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु॥२०॥ जो पढ़इ जो अ णिसुणइ, ताणं कहणो य माण-तुंगस्स। पासो पावं पसमेउ, सयल मुवणिच्चअ चलणो ॥२१॥

## श्री जिनदेत सूरिकृतं तंजयउ चतुर्थं स्मरणम्

तं जयउ जए तित्यं, जिमत्य तित्यहिवेण वीरेण । सम्मं पविचयं मन्य, सत्त संताण सुह जणयं ॥१॥ णासिय सयल किलेसा, णिहय कुलेसा पसत्य सुह लेसा । सिरि वद्धमाण तित्यरस, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥२॥ णिइडु कम्म बीआ, बीआ परमेहिणो गुण सिमदा । सिद्धा तिजय पिसदा, हणंतु दुत्याणि तित्यरस ॥३॥ आयारमायरंता, पंच पयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्यं, णिहय कुतित्यं पयासंतु ॥४॥ सम्म सुअ वायगा वायगाय, सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडणीय कए, वण्णंतु सन्वस्त संघरस ॥५॥ णिव्वाण साहणुङ्जय, साहूणं जिण्य सन्य साह्ज्जा । तित्यप्पमावगा ते, हवंतु परमेहिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं, णिव्वाण फलं च चरणमिव हवई । तित्यस्स दंसणं तं, मंगुल्यवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ णिच्छम्मो

सुअधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग कय सम्मो । गुणसुडिअस्स संघस्स, मंगरुं सम्ममिह दिसंउ ॥८॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ भव्व सत्त सिव सम्मो। णिसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥९॥ गुण गण गुरुणो गुरुणो, सिव सुह मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि वद्धमाण पहु पय,डिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय पडिवक्ला जक्ला, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्ला। सिरि बंभ संति सहिआ, कय णय रक्ला सिवं दिंतु ॥११॥ अंबा पडिहय डिंबा, सिन्दा सिन्दाइआ पवयणसा । चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसंउ सुक्खाणि ॥१२॥ सोलंस विज्जा देवीउ, दिंतु संघरस मंगलं विउलं । अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ सुयदेवयाइ समं ॥१३॥ जिणसासण कय रक्खा, जक्खा चडवीस सासण सुरावि । सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासंतु ॥१४॥ जिण पवयणिम णिरया, विरया कुपहाउ सन्वहा सन्त्रे । वेआवच्चकराचि अ, तित्थरस हवंतु संतिकरा ॥१५॥ जिण समय सिद्ध सुमग्ग, बहिय भव्वाण जणिय साहज्जो । गीयरई गीअजसो सपरिवारो सहं दिसंउ ॥१६॥ गिहि गुत्त खित्त जल थल, वण पव्चयवासी देव देवीउ । जिण सासणहिआणं, दुहाणि सन्वाणि णिहणंतु ॥१७॥ दस दिसिपाला सक्खित्तपालया, णवग्गहा स णक्खता। जोइणि राहुग्गह, काल पास कुलिअद पहरेहिं ॥१८॥ सहकाल कंटएहिं, सन्विद्धि कालवेलाहिं । सन्वे सन्वत्य सुहं, दिसंतु सन्वस्स संघस्स ॥१९॥ वाणमंतर, जोइस वेमा णिआ य जे देवा । घरणिंद सक सहिआ, दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणा सिय तमोहं । तंतित्थस्स भगवओ, णमो णमो वद्यमाणस्स ॥२१॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सन्ज वि सासणं जए जयइ । सिन्धि पह सासणं, कुपह णासणं सन्व भय महणं ॥२२॥ सिरि उसभसेण पसुहा, हय भय णिवहा दिसंतु तित्थरस । सन्व जिणाणं गणहा,रिणोऽणहं वंछियं सन्वं ॥२३॥ सिरि बद्धमाण तित्था, हिवेण तित्थं समप्पियं जस्स । सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघरस ॥२४॥ पयईए भदिया जे, भद्दाणि दिसंतु सयल संघरस ।

इयर सुरा वि हु सम्मं, जिणगणहर किह्य कारिस्स ॥२५॥ इय जो पढ़इ तिसंज्झं, दुस्सज्झं तस्स णत्यि किंपिजए । जिणदत्ता णाय हिओ, सुणिहि अहो सुही होई ॥२६॥

## श्री जिनदत्त सूरि कृतं गुरु पारतन्त्र्य नामकं पंचमं स्मरणम्

मय रहियं गुण गण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरु पारतंतं, उवहिन्व थुणामि तं चेव ॥१॥ णिम्म हिय मोह जोहा, णिहय विरोहा पण्ड संदेहा। पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सगुण गेहा ॥२॥ पत्त सुजइत्त सोहा, समत्त परतित्य जिणय संखोहा । पडिमग्ग मोह जोहा, दंसिय सुमहत्थ सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ सत्त बाहा, हय दुह दाहा सिवंब तरु साहा । संपाविअ सुह लाहा, स्त्रीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥४॥ जण जिंपय पुरजा, सरजो णिरवरज गहिय पवरजा । सिव सुह साहण सञ्जा, भव गिरि गुरु चूरणे वञ्जा ॥५॥ अञ्ज सुहम्म प्पमुहा, गुण गण णिवहा सुंरिंद विहिअ महा । ताण तिसंझं णामं, णामं ण पणासइ जियाणं ॥६॥ पडिविञ्जिअ जिणदेवो, देवायरिओ दुरंत भवहारी । सिरिणेमि चंद स्री, उन्जोअण स्रिणो सुगुरु ॥७॥ सिरि वद्धमाण स्र्री, पयडीकय स्रि मंत माहप्पो । पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुह जणओ ॥८॥ सुह सील चोर चप्परण, पञ्चलो णिञ्चलो जिण मयम्मि । जुगपवर सुद्ध सिस्त, जाणओ पणय सुगुणजणो ॥९॥ पुरओ दुछ्कह अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्कावि आरि ऊणं, सीहेणव दःविलिंगि गया ॥१०॥ दसमच्छरेय णिसि विष्फुरंत, सच्छंद सूरि मय तिमिरं । सूरेणव सूरिजिणे, सरेण हय महिय दोसेण ॥११॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत सुह मुत्ती । पह्य परबाइ दित्ती, जिणचंद जईसरो मंती ॥१२॥ पयडिअ णवंग सुत्तत्थ, रयणकोसो पणासिअ पओसो । भव भीय भविअ जण मण, कय संतोषो विगय दोसो ॥१३॥ जुगपवरागम सार, प्परूवणा करण वंधुरो घणिञं । सिरी अभयदेवसूरी, मुणि पवरो परम पसम घरो ॥१४॥

,是是是一个人,是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们是一个人,他们 सावय सत्तासो, हरिव्य सारंग भग्ग संदेहो । गय समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्व रसो ॥१५॥ भीम भवकाणणम्मि अ, दंसिअ गुरु वयण रयण संदोहो । णीसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणबह्नहो जयइ ॥१६॥ उर्वारहिअ सच्चरणो, चउरण् ओगप्पहाण संचरणो । असम मयराय महणो, उड्ड मुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दंसिअ णिम्मल णिचल, दंत गणो गणि अ सावउत्थमओ। गुरु गिरि गुरुओ, सरहुव्व सूरी जिणवह्नहो होत्या ॥१८॥ जुग पवरागम पीउस, पाण पीणिय मणा कया भव्वा । जेण जिणबह्रहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥१९॥ विक्फुरिय पवर पवयण, सिरोमणी वृढ़ दुव्वह खमोय । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइं सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरुणं पारतंतमुब्बहइ। जयइ जिणदत्त सूरी, सिरि णिलुओ पणय मणि तिल्ओ ॥२१॥

# श्री जिनदत्तसूरिकृतं सिग्घमवहरउ नामकं षष्ठं स्मरणम्

सिग्घमबहरउ विग्घं, जिण वीराणाणुगामि संघस्स । सिरि पास जिणो थंमण, पुरहिओ णिहिआणिहो ॥१॥ गोयम सुहम्म पसुहा, गणवङ्णो विहिअ भव्व सत्त सुहा । सिरि वद्धमाण जिण तित्थ, सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥२॥ सकाइणो सुरा जे, जिण वेयावच कारिणो संति । अव हरिय विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥३॥ सिरि थंभणयहिय पास सामि, पय पउमे पणय पाणीणं । णिद्दलिय दुरिय विंदो, घरणिदो हरउ दुरियाई ॥४॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिपक्ख पक्खलक्खा ते । कय सगुण संघरक्खा, हवंतु संपत्त सिव सुक्खा ॥५॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सासण देवया य जण पणया । सिद्धाइया समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥६॥ सक्का-एसा सच्चउर, पुरद्विओ वद्धमाण जिणभत्तो । सिरि बंभ संति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥७॥ खित्त गिह गुत्त संताण, देस देवाहिदेवया ताओ । णिव्युइ पुर पहिआणं, भव्याण कुणंतु सुक्खाणि ॥८॥ चक्केसरि चक्कधरा विहिपह रिउ च्छिण्ण कंघरा घणियं। सिव सरण लग्ग संघस्स, सन्बहा हरड विग्घाणि ॥९॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगक्षो सुसंघेण । जिणचंदो

भय देवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥१०॥ सो जयउ वद्यमाणो. जिणेसरो दिणेसरोव्य हय तिमिरो । जिणचंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवछहा जे अ ॥११॥ गुरु जिणबह्रह पाए, अभयदेव पहुत्त दायगे वंदे । जिणचंद जिणे-सर, वद्रमाण तित्थरस बुड्विकए ॥१२॥ जिणदत्ताणंसम्मं, मण्णंति कुणंति जे य कारिति । मणसावयसावउसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥१२॥ जिणदत्त-गुणे णाणाइणो, सया जे घरंति घारिति । दंसिअ सिअ वाय पए, णमामि साहम्मिआ ते वि ॥१४॥

# भद्रबाहु स्वामी विरचितं उवसग्गहर नामकं सप्तमं स्मरणम्

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं। विसहर विस णिण्णासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्सग्गह रोग मारी, दुइ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिइउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ। णर तिरिएसुवि जीवा, पावंति ण दुक्खदोगन्नं ॥३॥ तुह सम्मते लन्दे, चिंतामणि कप्पपाय वन्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संयुओ महायस ! भत्तिन्मर णिब्मरेण हिअएण । ता देव दिजा बोहिं, भवें भवे पास जिणचंद ॥५॥

# तिजय पहुत्त स्तोत्र

तिजय पहुत्त पयासयं,अहमहापाडिहेर जुत्ताणं । समय क्खित्त हियाणं, सरेमि चक्कं जिणिदाणं ॥१॥ पणवीसा य असीआ, पणरस पण्णास जिणवर

নি । । তিন লব্দ । প্ৰিদ্ধাৰ দ্ধাৰ প্ৰদ্ধ কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুম্কু কুজ্ৱ গুৰুদাস্থ্ৰ কুজ্ৱ গুৰুষ কুষ্ম কুষ্ম কুৰ্ম কুম্ন কৰাৰ কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুৰ্ম কুম্ন কৰাৰ কুম্বৰ্ম কুৰ্ম কুম্

ववगय किल कलुसाणं, ववगयणिद्धंत राग दोसाणं। ववगय पुणव्भवाणं, णमोत्थू देवाहि देवाणं ॥ सन्त्रं पसमञ्चानं, पुण्णं बहुइ णमस माणस्स । संपुण्णचंद् वयणस्सकित्तणं अन्निय-संतिस्स ॥

ख्वसम्मंतेकमठा, सुरिम्म भाणाड जोण संचिलको। सुरणर किण्णर जुनइहि, संधुओ जयव पास जिणो ॥ ए अस्समज्भवारे, अट्टारस अक्खरेहिं जोमंतो । जो जाणइ सो भायइ, परम पयत्यं फुडं पासं। पासह समरण जो कुणइ संतुद्दे हिययेण। अहूत्तर सयवाहि भयणासइ तस्स दुरेण ॥

कपर की दो गाथायं अजित शान्ति स्मरण में और नीचे की तीन गाथायं णिमउण स्मरण में। ये गाथायें कइएक पुस्तकों मे पायी जाती है पाठकों के विचारार्थ यहां दे दी गयी है।

समूहो। णासेउ सयङदुरिअं, भविआणं भत्ति जुत्ताणं ॥२॥ वीसा पणयाला विय, तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा।गह भूअ रक्ख साइणि, घोरुवसरगं पणासंतु ॥३॥ सत्तरि पणतीसावि य, सडी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलण-हरिकरि, चौरारिमहाभयं हरउ ॥॥ पणपण्णा य दसेव य, पण्णिह तह य चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर पणिमआ सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुं हः सरसुं सः हरहुं हः तह य चेव सरसुं सः । आलिहिय णाम गन्मं, चक्कं किर सव्यओ भद्दं ॥६॥ ॐ रोहिणि पण्णत्ती, वञ्जसिंखला तह य वञ्ज अंकु-सिया। चक्केसरि णरदःचा, काली महाकालि तह गोरी ॥७॥ गंधारी महज्जाला, माणवि बइरुट्ट तह य अच्छुत्ता । माणिस महामाणिसञ्जा, विञ्जा देवीओ स्वखंतु ॥८॥ पंचदसकम्मभूमीसु, उप्पण्णं सत्तरी\* जिणाण सयं । विविहरयणाइवण्णो, वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥ चउतीस अइसय-जुआ, अह महापाडि हेर कय सोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाए अन्यापयत्तेणं ।।१०।। ॐ वरकणयसंखिवदुम, मरगयघणसिण्णहं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सञ्वामरपूर्झं वंदे स्वाहा ॥११॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइस-वासी विमाणवासी अ । जे केवि दुह देवा, ते सच्वे उवसमंतु ममं स्वाहा ॥१२॥ चंदणकपूरेणं, फलए लिहिउण खालिअं पीअं । एगंतराइगहभूअ साइणिभूअं पणासेई ॥१३॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं । दुरिआरि विजयवंतं, णिन्मंतं णिचमन्चेह ॥१४॥

# दोसावहार स्तोत्र

दोसावहारदक्खो, णाळीयायर विया सिगोपसरो । रयणत्त्रयस्सजणओ, पासजिणो जयउ जयचक्लू ॥१॥ कयकुवलय पडिवाहो, हरणं कियविग्गहो कलाणिलओ । विहियार विंद महणा, दियराओ जयर पास जिणा ॥२॥

एक सौ सत्तर तीर्थंकरों का प्रमाण पांच महाविदेह में १६० विजय है उनमें एक एक इस तरह १६० पांच भरतमे और पांच ऐरवतक्षेत्र में इस तरह १७० तीर्थंकर एक समय में विचरण करते हैं। देवचन्द्रजी महाराज ने भी स्तोत्र पृजा में छिखा है। मुंदर सब इगसत्तरि तित्थंकर इक समय विहरंत।

कंतीइणिज्जिणंतो, सिंद्रं पुहविणंदणो क्र्रो । जयजंतुअ मयवको, सुमंगलो जयज पहुपासो ॥३॥ उप्पलदलणीलरुइ, हिरमंडल संथुओ इलाणंदो । रयणीयरदारओ मह, वूहोपसीइज्ज पासजिणो ॥१॥ णाहियवाय वियद्ये, णायत्योणायरायकयपूओ । सिरिपासणाहदेवो, देवाय रिओ सहंदिसज ॥५॥ रायावट समुज्जलं, तणुप्पहा मंडलोमहाभूई। असुरेहिं णिमञ्जंतो, पासजिणंदो कवीजयउ ॥६॥ तिमिरासि समारूढो, संतो दुक्खावहोजयंमिथिरो । वहुल तमासिरसिसिरी, जयचक्खुसुओ जयउपासो ॥७॥ कवलीकयदोसायर, मायंडरहं अहो तणुविमुक्कं । लोआभरणीभूयं, पासजिणं सत्तमंसरह ॥८॥ दुरिआइं पासणाहो, सिहावमाली णहो भवणकेऊ । दूरंतमरासीओ, सत्तम-ठाणिहओ हरउ ॥९॥ इय णवगह पुइग्नमं, जिणपहसूरीहिं गुंफिअं थवणं । दुहपास पढइ जोतं, असुहावि गहा णपीडंति ॥१०॥

# वृद्ध णमोक्कार स्तोत्र

किं कप्पत्तर रे अयाण, चिंतउ मणभिंतरि । किं चिंतामणि कामधेनु, आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे, देसांतर लंघउ। स्यणरासि कारण किसे, सायर उल्लंघउ ॥१॥ चवदे पूरव सार, युग लब्ड ए णवकार । सयल काज महियल सरे, दुत्तर तरे संसार ॥ केवलिभासिय रीत जिके, नवकार आराहे । भोगवि सुक्ख अणंत, अंत परम प्पय साहे ॥२॥ इण झाणे सुर ऋडि पुत्त, सुह विलसे बहु परि । इण झाणे सुरलोक इंद, पद पामे सुंद्रि॥ एह मंत्र सासतो जपे, अचित चिंतामणि एह। समरण पाप सबे टले, ऋदि सिद्धि णियगेह ॥३॥ णिय सिर ऊपर झाण, मञ्झ चिंतत्रे कमल नर । कंचणमय अठद्रु सहित, तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वैठा अरिहंत देव, पउमासण फिटकमणि । सेय वत्य पहरेवि पडम पय चिंते णियमणि ॥श॥ णिव्वारय गमण, पामिय सुक्ख। अरिहंत चउ सासय गइ झाणे तुम लहो, जिम अजरामर मुक्ख। पनर भेय तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे । राते विद्रुमतणे वर्णाणय सोहग साहे ॥५॥ राती भ्रोवत पहर जपें, सिन्हिं पुन्ने दिसि । सयल लोग तिह नर ही होइ तनिखण

सेंवसि ॥ मूलमंत्र वसीकरण, अवर सहू जगधंघ । मणमूली ओषध करे बुद्धिहीण जाचंघ ॥६॥ दक्षिण दिसि पंखड़ी जपे नमो आयरिआणं। सोवणवण्हं सीस सहित उवए सहिणाणं ॥ ऋद सिद कारणे लाम, ऊपर जे ध्यावे । पहरे पीलावत्थ तेह, मण-वंछिय पावे ॥७॥ इण झाणे णवणिधि हुवे, ए रोग कदे पवि होय । गय रह हय वर पालखी, चामर छत्त सिर जोय ॥ णीलवण्ण उवझाय, सीस पाढंता पन्छिम । आराहिञ्जे अंग पुव्य धारंत मणोरम ॥८॥ पिन्छम दिस पंखडीय कमल ऊपर सहझाण । जोवौ परमाणंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघू जे रक्खे विदुर, तिहां नर बहु फल होइ । मन सूघे विण जे जपे, तिहाँ फल सिद्ध ण जोइ ॥९॥ सन्व साधु उत्तर विभाग सामला बइठा । जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण जिहा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणे । पंचवण्ण तिहां णाण झाण गुण एह पमाणे ॥१०॥ अनंत चौवीसी जग हुए होसी अवर अणंत । आदि कोइ जाणी नहीं, इण णवकारह मंत ॥ एसो पंच णमुकारों, पद दिसिअ गणेहिं। सन्व पावप्पणासणो, पदं जपणेरेहिं ॥११॥ वायव दिसि झाएह,मंगलाणं च सन्त्रेसि । पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसि ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय, अठ दल कमल ठवेइ। जो गुरु लघु जाणी जपे, सो घण पाव खवेइ ॥१२॥ इण प्रभाव घरणिंद हुओ, पायालह सामी । समली कुमर उपण्ण भिछु, सुर लोयह गामी ॥ संबल कंबल वे बलद पहुता देवा कप्पे। सूली दीघो चोर देव थयो णवकारहि जप्पे ॥१३॥ शिवकुमार मण वंछिय करे, जोगी लियो मसाण। सोणापुरसो सीघलो, इण णवकार पमाण॥ छींके बैठो चोर एक आकासेगामी । अहि फिट्टि हुइ फूल माल णवकारह णामी ॥१४॥ बाछरुआ चारंत बाल, जल नदी प्रवाहे । बीध्यों कंटहि उयर मंत्र, जिपयो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे, ईरत परत विमास । पालित सूरितणी परे, विद्या सिन्द आकास ॥१५॥ चोर घाड संकट टले, राजा वसि होवे। तित्यंकर सो होइ,लाख गुण विधिसूं जोवे॥ साइण डाइण भूत प्रेत, वेताल न पोहवे । आघि व्याधि ग्रहतणी पीडते, किमहि न होवे ॥१६॥ कुट जलोदर रोग सबे नासे एणही मंत । मयणासुंदरितणी परे, णव पय झाण करंत ॥ एक जीह इण मंत्रतणा, गुण किता वखाणूं । णाणहीण छउमत्य एह, गुण पर न जाणूं ॥१७॥ जिम सत्तुंजय तित्यराय, मिहमा उद्वंतो । सयल मंत्र धुरि एह मंत्र, राजा जयवंतो ॥ तित्यंकर गणहर पणिय, चवदह पूरव सार । इण गुण अंतन को कहे, गुण गिरुवो णमोक्कार ॥१८॥ अडसंपय नव पय सिहत, इगसठ लहु अक्खर । गुरु अक्खर सत्तेव, इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण बह्हह सूरि भणे, सिव सुक्खह कारण । णस्य तिरय गय रोग सोग, वहु दुक्ख णिवारण ॥१९॥ जल यल महियल वणगहण, समरण हुवे इक चित्त । पंच परमेष्टि मंत्रह तणी, सेवा दीजो नित्त ॥२०॥

## श्री भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभाणा, सुद्योतकं दलित पापतमा वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपाद्युगं युगादा, वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्गमय तत्त्वबोधा. दुद्भृत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः । स्तोत्रैर्जगत् त्रितयचित्त हरै रदारैः, रतोप्ये किलाहमपि नं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित पाद पीठ, रतोतुं समुचत मतिर्विगत त्रपोऽहम् । बालं विहाय जल संस्थितमिन्दु विम्व, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥ वक्तुं गुणान् गुण समुद्र शशाङ्क कान्तान, कस्ते क्षमः मुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या । कल्पान्त काल पवनोद्धन नक चर्क, को वा तरीतु मलमस्त्रु निधि भुजाम्याम् ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्याऽऽत्म वीर्य मिवनार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाम्येति किं निज शिशोः परिपालनार्यम ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते वलन्माम्। यत कोकिलः किलमधो मधुरं विरोति, तचारु चाम्र कलिका निकरेक हेतुः ॥६॥ त्वत् मंस्तवेन भव सन्तिति सन्निवद्धं पापं क्षणात क्षयमुपेति दारीर भाजाम । आकान्त लाक मलि नील मशेपमार्श, न्या शु भिन्नमिव शावरमन्यकारम ॥ आ मत्वेतिनाथ ! तव संस्तवनं मयेट. मारम्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात ।

चेतो हरिष्यति सतां निलनी दलेषु, मुक्ताफल युतिमुपैति ननूद बिन्दुः॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोषं, त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशमाञ्जि॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन भूषण ! भूतनाथ ! भूतैर्गुणभूवि भवन्तमभिष्दुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म समं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनीयं, नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि कर चुति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत ॥११॥ यैः शान्तराग रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक ललाम भूत । तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिच्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप मस्ति ॥१२॥ वक्त्रं क ते सुर नरोरग नेत्र हारि, निःशोष निर्ज्जित जगत्त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्कः मलिनं क निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डुपलाश कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्ण मंडल शशाङ्क कलाकलाप, शुम्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनामि, नींतं मनागपि मनो न विकार मार्गम्। कल्पान्त काल मरुता चलिता चलेन, कि मन्दराद्रि शिखरं चलितं कदाचित ॥१५॥ निर्धूमवर्ति रपवर्जित तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी करोषि । गम्यो न जातु मस्तां चलिता चलानां,दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु गम्यः, स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोद्र निरुद्ध महाप्रवाहः, सूर्योऽतिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥ नित्योद्यं दलित मोह महान्धकारं, गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानम्। विभाजतेतव मुखाञ्जमनल्प कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्क बिम्बम्॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽहि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु दिलतेषु तमस्मुनाथ । निष्पन्न शास्त्रि वन शास्त्रिनि जीव स्रोके, कार्यं कियज्जस्परैर्जस भार नम्रै: ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्विय विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच शकले

किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरि हरादय एव दृष्टा, दृष्टेपु येषु हृद्यं त्विय तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मना हरति नाय ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो द्रघति भानि सहस्र रहिंस, प्राच्येव दिग्जनयति रफुरदंशु जालम् ॥२२॥ त्वामा मनन्ति मुनयः परमं पुनांस, मादिख वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्य-मसङ्खमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्ग केतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेक-मेकं, ज्ञान स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विद्युधार्चित बुद्धि बोधात्, त्वं र्शङ्करोऽसि भुवनत्रय शंकरत्वात्। धाताऽसि धीर शिवमार्ग विधेर्विधानात् , व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनात्तिहराय नाथ ! तुभ्यं नमः क्षितितला मल भूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोद्धि शोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरहोषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! दोषै रुपात्त विषुघाश्रय जात गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद पीक्षितोऽसि ॥२७॥ उच्चैर शोक तरु संश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममछं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसिकरणमस्त तमो वितानं, विम्बं रवेरिव पयो-धर पार्श्व वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु लता वितानं, तुङ्गो दयाद्रि शिरसीव सहस्ररओ: ॥२९॥ कुन्दावदात चलचामर चारु शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलघौत कान्तम् । उद्यच्छशाङ्क शुचि निर्झर वारिधार, मुःचैस्तटं सुरगिरेरिव शान्त कौम्मम् ॥३०॥ छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त, मुच्चैः स्थितं स्थगित भानु कर प्रतापम् । मुक्ताफल प्रकर जाल विशृद्धशोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥ उन्निद्रः हेम नव पङ्कज पुज्ज-कान्ति, पर्युद्धसन्नख मयूख शिखाभिरामा । पादा पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विश्वघाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥ इत्यं यया तव विभृतिरभृज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशन विधा न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिन-

कृतः प्रहतान्धकारा, ताद्दक् कुतो ग्रह गणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥ रच्योतन्मदाविल विलोल कपोल मूल, मत्त अमद् अमरनाद विवृद्ध कोपम्। ऐरावतामिममुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा श्रितानाम् ॥३४॥ भिन्नेभ कुम्भ गलदुज्ज्वल शोणिताक्त, मुक्ताफल प्रकर भूषित भूमिभागः। बद्धक्रमः क्रम गतं हरिणाधिपोऽपि, नाकामति क्रम युगाचल संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त काल पवनोन्दत विह्न कल्पं, दावानलं व्वलितमुञ्च्वलमुत्त्रपु-लिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं, त्वन्नाम कीर्त्तन जलं शमयल शेषम् ॥३६॥ रक्तेक्षणं समद कोकिल कण्ठ नीलं, क्रोघोद्धतं फणिनमुत्फण मापतन्तम् । आकामित कम युगेन निरस्त शङ्क, स्वन्नाम नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वलगत्तुरङ्ग गज गर्जित मीम नाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उचिद्दिवाकर मयूख शिखा पविद्धं त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशुभिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताप्र भिन्न गज शोणित वेगावतार तरणातुरयोध भीमे । युद्धे जयं विजित दुर्ज्जय जेय पक्षा, स्त्वत्पाद पंकज वनाश्रयिणो लभन्ते ॥३९॥ अम्मोनिधौ क्षुभितभीषण नक चक्र, पाठीन पीठ भयदोल्वण वाडवामौ । रङ्गत्तरङ्ग शिखर स्थित यान पात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४०॥ उद्भृत भीषण जलोदर भार भुसाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत जीविताशाः। त्वत्पादपङ्कज रजोऽमृत दिग्ध देहा, मत्त्र्या भवन्ति मकरध्वज तुल्य रूपाः ॥४१॥ आपाद कण्ठमुरु श्रृङ्खस्य वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड कोटि निघृष्ट जङ्घाः। त्वन्नाममन्त्र मनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत बन्धभया भवन्ति ॥१२॥ मत्त द्विपेन्द्र मृगराज दवानलाहि, संग्राम वारिधि महोदर बन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तविममं मितमानधीते ॥४३॥ स्तात्र स्त्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैनिबद्धां, भक्त्या मया रुचिर वर्ण विचित्र पुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मान तुङ्गमवशा समुपैति रुक्ष्मीः॥४४॥

नोट—भक्तामर स्तोत्र की उत्पत्ति—उज्जयिनी नगरी में भोज नाम के राजा राज्य करते थे। उनकी सभा में मयूर तथा वाण नामके दो विद्वान् पंडित थें उनमें से मयूर ने सूर्यदेव को प्रसन्न करके स्वकुप्ट रोग को मिटाया, तथा वाण ने चंडी देवी को प्रसन्न करके

## श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र

कल्याणमन्दिर मुदार मवद्यभेदि, भीताभय प्रदमनिन्दित मङिघपद्मम् । संसार सागर निमञ्जद्शेष जन्तु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत मतिर्न वि भुविधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठ रमय धूमकेतो, स्तरयाहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२युग्मम्॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिक शिशुर्योद् वा दिवाऽन्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्म रक्षे ॥३॥ मोहक्षयादनुभवक्रपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्त बान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मा. न्मीयेत केन जलघेर्न्स रत्नराशिः ॥४॥ अभ्युचतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्त्तं स्तवं रुसद सङ्ख्य गुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निज बाहु युगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ॥५॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तृं क्यं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षित कारितेयं. जलपन्ति वा निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिन्त्य महिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहत पान्थ जनान्निदाघे. प्रीणातिपद्म सरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥ हृद्वर्तिनि त्विय विभो ! शिथिली भवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म बन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग मन्यागते वन शिखण्डिनि चन्दनस्य॥८॥ मुच्यन्त

अपने कटे हुए हाथों को जुड़वाया। ये देखकर राजा ने आश्चर्यान्वित होकर वैदिक धर्म की प्रशंसा करने छगे। मत्री ने श्री मानतुंगाचार्य को मिछने की प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकार करके राजा ने आचार्य को बुछा कर अपना मन्तव्य प्रगट किया। राजा का मन्तव्य मुन के आचार्य महाराज ने धेर्यपूर्वक उत्तर दिया कि "हमारा प्रत्येक कार्य आत्म-धर्म के छिये हैं, वमस्कार के छिये नहीं।" ये सुनकर राजा ने क्रोधावेश में आचार्य को गछे से पैर तक ४८ सांकर्छों से जकड कर अंधेरी कोठरी में वन्द कर दिया।

कोठरी के अन्दर बैठे हुए आचार्य महाराज ने "भक्तामर स्तोत्र" रूप भगवान मृपभदेव की स्तुति की रचना की और चक्रेश्वरी देवी ने स्वयं प्रगट होकर वंधन तोड़ दिये।

इस स्तोत्र की ४ गाथायें भण्डार कर दी गई है। जो कि उपलब्ध नहीं होती और जो उपलब्ध होती है वे नूसन है।

एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र ! रौद्रै रुपद्रव शतैस्त्विय वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फूरित तेजसि दृष्ट मात्रे, चौरैरिवाशु परावः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यहु-त्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरित यञ्जलमेष नून मन्तर्गतस्य मस्तः स किलाऽनु-भावः ॥१०॥ यस्मिन् हर प्रभृतयोऽपि हत प्रभावाः, सोऽपि त्वया रति पितः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽय येन, पीतं न किं तद्िप दुर्घर वाडवेन ॥११॥ स्वामिन्ननरूप गरिमाणमपि प्रपन्ना, रत्वां जन्तवः कथमहो हृद्ये द्धानाः। जन्मोद्धिं लघु तरन्सति लाघवेन, चिन्सो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा वत कथं किल कर्म चौराः । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नील द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी १॥१३॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्म रूप, मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोश देशे । पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१६॥ ध्याना-जिजनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्म दशां ब्रजन्ति । तीवा-नलादुपल भावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव घातु भेदाः ॥१५॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तद्पि नाशयसे शरीरम्। एतत् स्वरूपमथ मध्य विवर्त्तिनो हि, यद् विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदं भेद्बुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्रं भवतीह भवत् प्रभावः। पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष विकार मपाकरोति ॥१७॥ त्वामेव बीत तमसं पर वादिनोऽपि, नूनं विभो हरिहरादि घिया प्रपन्नाः । किं काचकामिलिमिरीश सितोऽपि शङ्को, नो गृह्यते विविध वर्ण विपर्ययेण ॥१८॥ धर्मीपदेश समये सविधानुभावा, दास्तां जना भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतो स महीरुहोऽपि, किं वा विवोध-मुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुख वृन्तमेव, विष्वक् पतत्य विरला सुर पुष्प वृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा सुनीश, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

संभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परम सम्मद सङ्भाजो. भव्या ब्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥२१॥ स्वामिन् सुदूरमवनस्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुर चामरौघाः । थेऽरमैः नतिं विद्धते मुनि पुङ्गवाय ते नून मूर्ध्व गतयः खलु शुद्ध भावाः ॥२२॥ श्यामं गभीर गिरमुज्ज्वल हेम रत्न. सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्वाम्। आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चे, श्रामीकराद्रि शिरसीव नवास्श्रवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितियुति मंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोक तरुर्वभूव। सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां ब्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥ मो मोः प्रमाद मवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृति पुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुर दुन्दुभिस्ते ॥२५॥ उद्योषितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता कलाप कलितो च्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृत तनुर्धुवमभ्युपेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरित जगत् त्रय पिण्डितेन, कान्ति प्रताप यशसामिव सञ्चयेन । माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन, साल त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन नमन्त्रिदशाधिपाना. मुत्रः य रत्न रचितानिप मौलि बन्धान् । पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ जन्म जरुधेर्वि-पराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्य सुमतो निज पृष्ठ लग्नान् । युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदिस कर्म विपाक शून्यः ॥२९॥ विखेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षर प्रकृतिरप्य लिपिरत्वमीश । अज्ञान वत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व विकाश हेतुः ॥३०॥ प्राग्भार सम्भृत नभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन सठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न नाथ हता हताशो, प्रस्तरत्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥ यद्गर्जेदुर्जित घनौघमदभ्रभीमं, भ्रदयत्तिहन्मुसलमां-सलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारि दुधे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारि कृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोध्वंकेश विकृताकृति मर्त्यमुण्ड, प्रालम्य-भुद्भयद्वक विनिर्यद्भिः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभव-

,是是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们也是一个人,我们是一个人,我们是一个人,我们

त्प्रतिभवंभवदुःख हेतुः ॥३३॥ धन्यास्त एव मुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य, माराधयन्ति विधिवद्विधृतान्य कृत्याः। भक्तोह्रसत्पुलक पक्ष्मल देहदेशाः, पादृद्वयं तव विमो भुवि जन्ममाजः ॥३८॥ अस्मिन्नपारमव वारिनिघौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे, किं वा विपद्धिषधरी सविधं समेति ॥३५॥ जन्मान्तरेऽपि तव पाद युगं न देव, मन्ये मया महितमीहित दानदक्षम्। तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥ नूनं न मोह तिमिरावृत लोचनेन, पूर्व विभो!सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्मीविधो विधरयन्ति हि मामनर्थाः. प्रोचत्प्रबन्धगतयः कथमन्ययैते १ ॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतिस मथा विघृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्त न भावशून्याः ॥३८॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल हे शरण्य ! कारुण्यपुण्य-वसते विशानां वरेण्य । भक्त्या नते मिय महेश द्यां विधाय, दुःखाङ्कुरोहलन तत्परतां विघेहि ॥३९॥ निःसङ्ख-चसार शरणं शरणं शरण्य मासाय सादित-रिपुप्रियतावदातम् । त्वत्पादपङ्काज मपि प्रणिधान वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्र वन्द्य विदिताखिल संसारतारक ! विभो ! मुबनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदन्यसनाम्बुरादोः ॥४१॥ यद्यस्ति नाथ भवदंघि सरोरुहाणां. भक्तेः फलं किमपि सन्तति सञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,

नोट—इस स्तोत्र के रचियता श्री सिद्धसेन दिवाकर उपनाम क्रुसुदचन्द्राचार्य थे। एकदा बृद्धवादीजी से, गोवालियों के सन्मुख शास्त्रार्थ मे पराजित होने पर इन्होंने बृद्धवादीजी से दीक्षा ली। अपनी कवित्व शक्ति की योग्यता से ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के यहां राजगुरु पद से विभूषित किये गये।

राजा विक्रमादित्य को जैनधर्म में प्रविष्ट कराने के लिए राजा के साथ मंदिर में जाकर राजा विक्रमादित्य को जैनधर्म में प्रविष्ट कराने के लिए राजा के साथ मंदिर में जाकर "कल्याणमंदिर स्तोत्र" की ४८ गाथायें रचना करके शिविषिष्ट में से भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा प्रगट करी। इस महिमा को देखकर राजा पूर्णक्षेण जैनधर्म का अनुयायी हो गया। इसको ४ गाथायें भण्डार कर दी गयी है जोकि उपलब्ध नहीं होती और जो उपलब्ध

इसको ४ गाधाय भण्डार कर दा गया ६ जाएक उन्हरून गर्व हैं।

स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥ इत्थं समाहितिघयो विधि विज्ञिनेन्द्र, सान्द्रोछसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद् विम्ब निर्मल मुखान्युज बद्धलक्षाः, ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयन 'कुमुद चन्द्र'\* प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्तवा । ते विगलितमल निचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥ युग्मम् ।

## जिनपञ्जर स्तोत्र

ॐ हीं श्रीं अर्ह अर्हद्स्यो नमो नमः । ॐ हीं श्रीं अर्ह सिद्धेस्यो नमो नमः ॥ ॐ हीं श्रीं अर्हआचार्येभ्यो नमोनमः। ॐ हीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्वीं श्रीं अर्ह श्री गौतम स्वामी प्रमुख सर्वसाधभ्यो नमो नमः ॥१॥ एष पञ्चनमस्कारः, सर्व पाप क्षयंकरः । मङ्गलाणां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥२॥ ॐ ह्वीं श्रीं जये विजये, अहैं परमात्मने नमः। कमल प्रभ सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥३॥ एक भक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् । मनोऽभिल्रषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥॥॥ भूशस्या वसचर्येण, क्रोध छोभ विवर्जितः । देवताप्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्छभते फलम् ॥५॥ अर्हन्तं स्थापयेद् मूर्मि, सिन्दं चक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोतयो-र्मध्ये, उपाध्यायं तु घाणके ॥६॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च । सूर्य चन्द्र निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ सिख्ये ॥७॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वाम पार्खें स्थितो जिनः । अङ्ग संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥८॥ पूर्वाशां श्री जिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः। दक्षिणाशां परव्रह्म, नैऋ तीं च त्रिकालवित् ॥९॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो. वायवीं परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत सर्वामीशाने च निरञ्जनः ॥१०॥ पातालं भगवानहँन्नाकाशं पुरु-षोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥११॥ ऋषमो मस्तकं रक्षे, दिजतोऽपि विलोचने । संभवः कर्णयुगलं, नासिका चाभि-नन्दनः ॥१२॥ ओष्ठौ श्री सुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मश्रमो विभुः । जिह्वा

भक्तामर स्तोत्र के बनाने बाले आचार्यों का विक्रमीय सम्वत् ६३१ के करीव है।

<sup>\*</sup> कल्याणमन्दिर स्तोत्र के बनाने वाले आचार्य का समय इतिहासकारों ने विक्रम सम्बत् ५०० के करीब माना है।

是我我不是我的人,我们是我们是我们的人,我们是我们的人,我们是我们的,我们是我们的,我们是我们,我们们的一个,我们是我们的人,我们的一个,我们是我们的一个,我们的

सुपार्क्व देवोऽयं तालु चन्द्र प्रमामिधः ॥१३॥ कंठं श्री सुविधि रक्षेद्, हृद्यं च श्री शीतलः । श्रेयांसो बाहु युगलं, वासुपूज्य कर द्वयम् ॥१४॥ अंगुली-विमलो रक्षेद्; अनन्तोऽसौ स्तनाविप।सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्री शांतिनीमि-मण्डलम् ॥१५॥ श्री कुन्थुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमं कटी तटम् । मिल्ल रू र पृष्ठ वंशं, जङ्घे च मुनि सुवतः॥१६॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्री नेमिश्ररण द्वयम् । श्री पार्श्वनाथ सर्वोङ्ग, वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथ्वी जल तेजस्क, वाय्वाकाश मयं जगत्। रक्षेदशेष पापेन्यो, बीतरागो निरञ्जनः ॥१८॥ राजद्वारे इमशाने वा, संप्रामे शत्रु संकटे । व्याघ चौराघि सर्पादि, भूत प्रेत भयाश्रिते ॥१९॥ अकाल मरणे प्राप्ते, दारिद्वापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग पीडिते ॥२०॥ डाकिनी शाकिनी प्रस्ते, महाप्रह गणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्व वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत ॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः रमरेजिनपंजरम् । तस्य किंचिद् भयं नास्ति, रुभते सुख सम्पदम् ॥२२॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरम् । कमल प्रभ राजेन्द्र, श्रियं स लभते नरः ॥२३॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्र मेतिञ्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेच्छ्री कमल प्रभाख्यं, लक्ष्मी मनोवाञ्छित पूरणाय ॥२४॥ श्री रुद्रपञ्छीय वरेण्य गच्छे, देवप्रभाचार्य पदाब्ज हंसः। बादीन्द्र चूड़ामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरु श्री कमल प्रमाख्यः ॥२५॥

# श्री क्षमाकल्याणोपाध्याय विरचितं ऋषिमण्डलं स्तोत्रम्

आद्यन्ताक्षर संख्य, मक्षरं व्याप्य यत स्थितम्। अभिज्वाला समं नादं, विन्दु रेखा समन्वितम् ॥१॥ अग्निज्वाला समाकान्तं, मनो मल विशोधकम्। देदीप्यमानं हत्पद्ये, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥२॥ अर्हमिलक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्टिनः। सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिद्धमहे ॥३॥ ॐ नमोऽर्हद्ग्य ईशेम्य, ॐ सिद्धेग्यो नमो नमः। ॐ नमः सर्व स्र्रिग्य, उपाध्यायेग्य ॐ नमः ॥॥॥ ॐ नमो सर्व साधुन्य, ॐ ज्ञानेग्यो नमो नमः। ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिग्य, श्चारित्रेग्यस्तु ॐ नमः॥५॥ श्रेयसेऽस्तु श्चियेऽस्त्वेत, दर्ह-दाद्यष्टकं शुमम्। स्थानेष्वष्टमु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥६॥ आयं

पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षतु मस्तकम् । तृतीयं रक्षनेत्रे हे. तूर्यं रक्षेच नासिकाम् ॥७॥ पश्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेतु घण्टिकाम् । नाम्यन्तं सप्तमं रक्षेद्, रक्षेत पादान्तमप्टमम् ॥८॥ पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्वःचिष्यञ्चषान् । सप्ताष्टदशस्योङ्कान्, श्रितो बिन्दु स्वरान् एथक् ॥९॥ पूज्य नामाक्षरा चास्तु, पञ्चातो ज्ञानदर्शन । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्वीं सान्तसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ हां, हीं, ह्यूं, हं हें हैं हों हः, आसिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नमः। जम्बूब्क्ष घरो द्वीपः, क्षारोदघिससावृतः॥ अर्हदाचष्टकैरष्ट,काष्ठाधिष्ठै रलंकृतः॥११॥ तन्मध्येसंगतो मेरुः, कूटलक्षेरलंकृतः। उन्चैरुन्चैस्तरस्तार, तारामण्डलमंडितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीज मध्यस्य सर्वगम् । नमामि विम्ब माईत्यम् ललाटस्यं निरज्जनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्य तोज्ञितम् । निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं रफीतं, सात्विकं राजसं मतम् । तामसं चिरसम्बुद्धं, तेजसं शर्वरी समम् ॥१५॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं, परम्परपरापरम् ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकम् । पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥१७॥ सकलं निष्कलं उष्टं, निर्मृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारं, निर्हेपं वीत संश्रयम् ॥१८॥ ईश्वरं ब्रह्म सम्बुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योति रूपं महादेवं, लोकालोक प्रकाशकम् ॥१९॥ अर्हदाख्यस्त वर्णान्तः, सरेको बिन्दुमण्डितः । र्पे स्वर समायुक्तो, बहुघा नाद मालितः ॥२०॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णे निजैनिजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥२१॥ नादश्रन्द्र समाकारो, विन्दुर्नील समप्रमः । कलारुण समासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२२॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः समृतः। वणीनुसार संलीनं, तीर्थकुन्मण्डलंस्तुमः ॥२३॥ चन्द्रश्रम पुष्पदन्तौ, नाद-रियति समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुब्रतौ जिनसत्तमा ॥२१॥ पदा पम वासुपूज्यो, कलापद्मधिश्रितौ । शिरसि स्थिति संलीनौ, पार्श्वमल्ली जिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियाजिताः । मायावीजा-क्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विशतिरर्हताम् ॥२६॥ गत राग द्वेष मोहाः,

S. A. S.

विवर्जिताः । सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यचकं, तस्य चकस्य या विभा। तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदेवस्य यचकां॰ मा मां निन्नन्तु राकिनी॥२९॥ देवदेवस्य यचकं मा मां निमन्तु लाकिनी ॥३०॥ देवदेवस्य यचकं मा मां हिंसन्तु काकिनी ॥३१॥ देवदेवस्य यच्चकं॰ मा मां हिंसन्तु शाकिनी ॥३२॥ देव देवस्य यच्चक्रं॰ मा मां निघन्तु हाकिनी ॥३३॥ देवदेवस्य यच्चकं॰ मा मां निमन्त याकिनी ॥३४॥ देवदेवस्य यच्चकं मा मां हिंसन्त पन्नगाः ॥३५॥ देव दे॰ य॰ मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देव दे॰ य॰ मा मां निमन्तु राक्षसाः ॥३७॥ देव दे॰ य॰ मा मां निम्नन्तु वह्नयः॥३८॥ देवदे॰ य॰ मा मां हिंसंतु सिंहकाः ॥३९॥ देव दे॰ य॰ मा मां निम्नन्तु दुर्ज्जनाः ॥४०॥ देव दे॰ यच्चकं॰ मा मां निञ्चन्तु भूमिपाः ॥४१॥ श्री गौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यत ज्योति, रहं सर्व निधीक्वराः ॥४२॥ पाताल-वासिनो देवाः, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्त मामितः ॥४३॥-येऽविधलब्धयो ये तु, परमाविधलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत बेतालाः, पिशाचा मुद्गला-स्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देव देव प्रभावतः ॥४५॥ ॐ हीं श्रीश्र धृतिर्रुक्ष्मीः, गौरी चण्डी सरखतो । जयाम्बा विजया नित्या, क्किन्नाजिता मद् द्रवा ॥४६॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया माया-विनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महा देव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्ति कीर्ति घृति मितम् ॥४८॥ माषितस्तीर्थनाथेन, गोप्यः सदुष्प्राप्यः, ऋषिमण्डलसंस्तवः। जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुले वहौ, जले दुगें गजे हरौ । अमशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्य अर्घा निजं राज्यं, पद-भ्रष्टा निर्जं पदम् । लक्ष्मी भ्रष्टा निर्जा लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी रुभते भार्यां, पुत्रार्थी रुभते सुतम् । वित्तार्थी रुभते वित्तं, नरः स्मरण मात्रतः ॥५२॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कारये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत । तस्यैवेष्टमहासिद्धि, र्गृ हे वसति शास्त्रती ॥५३॥ मूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्धि वा मुजे । धारितं सर्वदा दिन्यं, सर्व भीति विनाशकम् ॥५१॥ भूतै प्रेतिप्रहिर्यक्षे:, पिशाचैर्मुद्गार्टमेंहैं:। बात पित्त कफोद्रेकै र्मुच्यते नात्र संशयः ॥५५॥ मूर्भुवः खस्त्रयीपीठ, वर्तिनः शाख्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितेदृष्टे, र्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्य-चित् । मिथ्यात्ववासिनो दत्ते, बालहत्या पदेपदे ॥५७॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तित्सिंडिहेतवे ॥५८॥ शतमप्टोत्तरं प्रात, यें पठिनत दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥५९॥ अष्टमासावधि यावत् , नित्यं प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिस्व स पश्यित ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, मवे सप्तमके घ्रुवम् । पदं प्राप्तोति शुद्धात्मा, परमानन्द नन्दितः ॥६१॥ विज्ञवनचो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽन्तुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥६२॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तवानामुत्तमं परम् । पठनात्स्मरणाज्ञापाछ्रभ्यते पद्मुत्तमम् ॥६३॥

# श्री मिलनाथ जिन स्तोत्र

जन समुद्य हंसे क्ष्वाकु वंशा वतंसो, बुध जन मत कुम्म श्री प्रभा-बत्यपरम् । शशि सित दल मार्गैकादशी लब्ध जन्मा, स जयित जन वन्द्यो महिनाथो जिनेन्दुः॥१॥ महयति मिथिला यज्जन्म सम्प्राप्त कीर्त्तिः, शत कर वर मानं स्थामलं यस्य देहम् । कलश कलित जानु भानुमाँह्लोक नेता, स जयित जनवन्द्यो मिह्हनाथो जिनेन्दुः ॥२॥ सहिस चरम शिक्षा येन दीक्षा गृहीता, सित् दल हिर तिथ्यां कार्त्तिके ज्ञान माप्तम् । अनल शत गणाना नायको यस्य कुम्मः, स जयित जन बन्द्यो महिनायो जिनेन्दुः ॥३॥ अधिक दश सहस्रे णेह लक्षेण सम्यक्, कृत पद युगलाची जैन सन्यासिभियें । सकल सुर सुरस्त्री ज्ञान सन्दोह दाता, स जयित जन वन्यो महिनायो जिनेन्दुः ॥शा युग वसु युत लक्ष श्रावकैः श्राविकाभिः, युगल नग समेतैर्विह लक्षेश्रलच्यः । जिन बचन विवेको येनयः पूजितस्तैः, स जयित जन बन्दो महिनायो जिनेन्दुः ॥५॥ सुर वरूण कुवेराक्रान्त सम्मेत श्रङ्गे, शितिदल नव शुक्ले येन निर्वाण माप्तम् । वर मित नरदत्ता यक्षिणी दुःखहारी, स जयित जनवन्द्यो मिल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥६॥ पूज्यपाद गुरुश्रेष्ठो रत्नसूरि स्व संघकम्। अपायात्सर्वदापायान्मोतीचन्द्रोऽह्मर्थये ॥७॥

वृहत् शान्ति

भो भो भन्याः ! शृणुतं वचनं, प्रस्तुतं सर्व मेतद् । ये यात्रायां त्रिभुवनगुरो, राईतां भक्ति भाजः॥ तेषां शान्तिर्भवतु भवता मईदादि प्रभावा । दारोग्य श्री भृतिमति करी क्लेश विष्वंस हेतुः ॥१॥

भो भो भन्यलोका ! इहि भरतैरावतिवदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकम्पानन्तरमविधना विज्ञाय सौधर्मीधिपतिः सुघोषाघण्टा चालनानन्तरं सकल सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सिवनयमर्हद् भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादिश्यक्षे विहित जन्माभिषेकः शान्तिसुद्घोषयित यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा "महाजनो येन गतः स पन्थाः" इति भव्य जनैः सह समागत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं विधाय शान्ति सुद्घोषयामि, तत्पूजायात्रा-स्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्ण दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं भीयन्तां भीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वद्शिन स्निलोकनाथा स्निलोकमहिता स्निलोकपूज्या स्निलोकश्वरा स्निलोकोद्योतकराः ।

ॐ श्री केवलज्ञानि, निर्वाणि, सागर, महायश विमलं सर्वानुभूति श्रीधर दत्त दामोदर सुतेज स्वामि मुनिसुन्नत सुमित शिवगित अस्ताग नमीश्वर अनिल यशोधर कृतार्थ जिनेश्वर शुद्धमित शिवकर स्यन्दन सम्प्रति एते अतीत चतुर्विशति तर्यङ्कराः।

ॐ श्री ऋषभ अजित सम्मव अभिनन्दन सुमित पद्मश्म सुपार्श्व चन्द्रश्म सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मिह्ह सुनिसुत्रत निम नेमि पार्श्व वर्द्धमान एते वर्तमान जिनाः।

ॐ श्री पद्मनाम शूरदेव सुपार्च स्वयंप्रम सर्वानुमूति देवश्रुत उदय पेढ़ाल पोटिल शतकीित्ते सुव्रत अमम निष्कषाय निष्पुलाक निर्मम चित्रगुत समाधि सम्बर यशोधर विजय मिक्ष देव अनन्तवीर्थ्य भद्रङ्कर एते भावि तीर्थंकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा । ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्मिक्षकान्तारेषु दुर्गमागेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा । ॐ श्री नामि जितशत्रु जितारि सम्बर मेघ घर प्रतिष्ठ महसेन सुग्रीव दृद्र्य विष्णु वासुपूज्य कृतवर्म सिंहसेन भानु विश्वसेन सूर सुदर्शन कुम्म सुमित्र विजय समुद्र विजय अश्वसेन सिद्धार्थ इति वर्तमान चतुर्विशति जिन जनकाः ।

ॐ श्री मरुदेवी विजया सेना सिद्धार्थी सुमङ्गला सुसीमा पृथिवी माता लक्ष्मणा रामा नन्दा विष्णु जया श्यामा सुयशा सुव्रता अचिरा श्री देवी प्रभावति पद्मा वप्ना शिवा वामा त्रिशला इति वर्त्तमान जिन जनन्यः।

ॐ श्री गोमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षनायक तुम्बर कुसुम मातङ्ग विजय अजित ब्रह्मा यक्षराज कुमार षण्मुख पाताल किन्नर गरुड गन्धर्व यक्षराज कुबेर वरुण भूकृटि गोमेघ पार्क्व ब्रह्मशान्ति इति वर्त्तमान जिन यक्षाः।

ॐ चकेश्वरी अजितबला दुरितारी काली महाकाली श्यामा शान्ता भुकृटि सुतारका अशोका मानवी चण्डा विदिता अंकुशा कन्दर्भा निर्वाणी बला घारिणी घरणित्रया नरदन्ता गान्धारी अम्बिका पद्मावती सिन्दायिका इति वर्तमान चतुर्विशति तीर्थंकर शासन देव्याः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु खाहा।

ॐ हीं श्रीं धृति मित कीत्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेघा विद्या साधन प्रवेश निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः।

ॐ रोहिणी प्रज्ञित वज्रश्युङ्खला वज्रांकुशा अप्रतिचका पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वोस्नमहाज्वाला मानवी वैरोट्या अच्छुमा मानसी महामानसी एता घोडश विद्या देव्यो रक्षन्तु में स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ प्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारक बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोक पालाः सोम यम बरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायका ये चान्येऽपि प्राम नगर क्षेत्र देवताद्यस्ते सर्वे श्रीयन्तां, श्रीयन्तां अक्षीण कोप कोष्ठागारा नरपत्यश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्र मित्र आतृ कलत्र सुहृत स्वजन सम्बन्धि वन्धुवर्ग सहिता नित्यं

चामोद प्रमोदकारिणः।अस्मिश्च भूमंडलेआयतन निवासिनां साधुसाध्वीश्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु। ॐ तुष्टि पुष्टि ऋष्टि बृष्टि माङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि

शाम्यन्तु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्ति विधायिने । त्रैलोकस्यामराधीश मुकुटाव्यिचिताङ्घये ॥१॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान, शान्ति दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥ ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट प्रह गति, दुःस्वप्त दुर्निमित्तादि । सम्पादित हित सम्पन्नाम प्रहणं जयित शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघ जगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिक पुर मुख्याणां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥

श्री श्रमण्संघस्य शान्तिर्भवतु । श्री पौरलोकस्य शान्तिर्भवतु । श्री जनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्री राजसिन्नवेशानां शान्तिर्भवतु । श्री गोष्टिकानां शान्तिर्भवतु । श्री पौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु । श्रीव्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्ति प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शान्ति कलशं गृहीत्वा कुङ्कुम चन्दन कर्पूरागुरुधूपवास कुसुमाञ्जलि समेतः स्नात्र (पीठे) चतुष्किकायां श्री संघसमेतः शुचि शुचिवपुः पुष्पवस्त्र चन्दनामरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्धोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातन्यमिति।

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिपेके ॥१॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह णयर निवासिणी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिस्ता भवन्तु भूत्गुणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विष्न बह्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१॥

बृहत् शान्ति के बनाने वाले आचार्य वृद्धवादीजी का विक्रमीय सं० ११०० के करीब है। ऋक्युक्क क्रुक्क क्रुक क्रुक्क क्रुक क्रुक क्रुक्क क्रुक क्रुक्क क्रुक क्रुक

EPPER ENDER DE MANAGEMENT DE LEGALE DE L

स्तोत्र-विभाग हिरा मिल्लिस मि

जब कोई महोत्सव आवे, नर नारी खुस हो जावे। वे तो करते धर्म और ध्यान, कटेगा कर्म का पाप महान् ॥ तेरे॰ ३ ॥ मण्डल महावीर ये गावे, मौका बार बार नहिं आवे। कर लो घरम ध्यान और ज्ञान, कटेगा कर्म का पाप महान ॥ तेरे॰ ४॥

### भजन

मन्दिर के बीच बैठ के गावें, प्रभू का ध्यान लगावें। सोने की झारी गङ्गाजल पानी, प्रभू को उससे नहलावें ॥ मन्दिर॰ १ ॥ घिस घिस केशर भर भर प्याले, प्रभू की अंगिया रचावें । चुन चुन कलियां फूल सजाकर, प्रभू के खूब चढ़ावें ॥ मन्दिर॰ २ ॥ दीया भर भर घी का लेकर, प्रभु की आरती उतारें। सब सज्जन हिल मिलकर गावें, दिल से शीश नवावें ॥ मन्दिर० ३ ॥

॥ इति स्तोत्र विभाग ॥



नोट-- यह भजन मिरजापुर निवासी ज्ञानचन्द्र सीपाणी का वनाया हुआ है -यह भजन हीरालाल वर्**लिया वी० ए० की तरफ से मेट स्वरूप आया** है ।

# परिशिष्ट

## स्याद्वादश्च सप्तमंगी

संसार में जितने भी मत-दर्शन और जातियां हैं सभी सत्य की खोज करती हैं। उसके सम्मान्य विद्वानोंने अथाक प्रयन्न कर तत्त्वरूपेण सत्य को प्राप्त कर, अनुभव से अपने अपने अनुभव दुनियांके सामने रक्खे है। उसके बादके अनुयायिओं ने, उनकी मान्यता को समम्म कर उसका अनुसरण कर येन केन प्रकारेण उसे सिद्ध करने की कोशिश को है। सत्य तो स्वयं जैसा है बैसा शुद्ध है, पर उसे प्राप्त करने के साधनों में विभिन्नता है, सत्य को स्वयं समम्मने में अधिकाधिक मतभेद है। जितने मतभेद है और जिन्होंने इस विषयका गहरा विचार अपने अपने निराले तरीकों से किया है, उतने ही दर्शन आज मौजूद है। तक्त ज्ञान के विषय में जितने जितने प्रमाण हो सकते हैं, सभी ने देकर अपनी अपनी मान्यता को सिद्ध करने की कोशिश की है। यो बुद्धि की कसौटी ज्यों ज्यों अधिक होने छगी त्यों त्यों यह विषय फैलने छगा, अब अल्प विषय बाला शास्त्र न्याय शास्त्र कहलाता है। प्रत्येक दर्शन मत की जो मान्यताय है उनको प्रमाणादि से जिस शास्त्र में सिद्ध किया जाय वह न्याय शास्त्र कहलाता है। परमत का निरूपण और उसका खंडन भी इस में रहता है।

संसार के दर्शनों में जैन दर्शन का विशेष स्थान है। प्रत्येक पदार्थ पर स्वतंत्रता से गहरा विचार इस दर्शन में किया हुआ है। उसमे भी इसकी खास खासियत स्याद्वाद है। सभी तत्त्व विचारक जाय एक दूसरा या एक हो तरफ मुक जाते हैं, एक ही वस्तु के प्रतिपादन में दूसरी को भूळ जाते हैं, भूळ ही नहीं जाते वरन् खंडन कर देते हैं अपने माने हुए, कल्पे हुए विषय ही को एकान्त सत्य कहकर दूसरा सारा मूठा बताते हैं तव जैन दर्शन प्रत्येक विषय का सम्यक्टिंट से विचार करता है और वह स्याद्वाद के जरिये स्याद्वाद ही इस दर्शन का मूळ स्तंभ है।

स्याद्वाद का दूसरा नाम है—अनेकान्तवाद या इसे अपेक्षावाद भी कह सकते हैं। एक ही वस्तु को एक ही दस्तु को एक हो वात पर उतर पड़ते हैं तो आप यही कहेंगे वस यह सिपाही ही है। यह हुआ एकान्त पर नहीं, सिपाही नहीं, वह और भी बहुत कुछ है, सिपाही के अलाग वह आदमी भी है, वह किसी का चाचा है, किसी का भाई, किसी का मामा और किसी का कुछ। इस तरह से इसका अनेक अवस्थाओं का जो प्रमाण भूत कथन है वह है अनेकान्त। चूं कि यह भिन्न भिन्न विपर्थों की अपेक्षा से प्रतिपादित होता है, इसीछिये इसे अपेक्षावाद कह देते है।

इसिल्पि अगर एक ही बात को एक ही अवस्था से देखकर उस पर निर्णय दिया जायगा तो वह गलत होगा। दर्शनों का मतभेद गहरे विपयों में पड़ता है। आत्मा के गुण धर्म उसका स्वभाव आदि

श्र इसी स्याद्वाद सप्त भगीको श्री शङ्कराचार्य जी खण्डन करने स्मे घे किन्तु खण्डन कर नहीं सके कारण सत्यता का खण्डन हो नहीं सकता।

मुख्य हैं। अगर इनको एकान्त निस्य या एकान्त अनित्य ही मान लिया जाय तो कोई भी बात साबित नहीं होती। एकान्त नित्य माना जायगा तो वह सदा एक स्वभाव में स्थित रहेगा, उसकी अवस्था में भेद न होगा। अवस्था भेद हए बिना संसार और मोक्ष भी न होंगे। यों सारी गडवडी मचेगी, अगर संसार और मोक्ष को कल्पित कहा जाय तो उसकी उपलब्धिका भी अभाव हो जायगा। अतः एकान्तरूप से आत्मा नित्य नहीं हो सकती। और एकान्त अनित्यत्व तो कोई तरह से घटना नहीं। क्योंकि इसमें तो असद् की उत्पत्ति और सद् का अभाव का प्रसंग आता है जो सर्वथा असंभव है। लेकिन जब उसे अनेक धर्मों की अपेक्षा से नित्य और अमुक की अपेक्षा से असत्य मानते हैं तो कोई मगडा खडा नही होगा।

सद् असद् का विचार भी इस में हो जाता है। सद् वही है जो उत्पन्न होता हो, नष्ट होता हो, स्थिर भी रहता हो। आपने सुनार को सोने का कडा दिया और कहा अंगठी बना दो। अब देखिये, सोने की दृष्टि से सोना तो कायम ही रहता है और कड़ा नष्ट हो जाता है और अंग्रुटी की उत्पत्ति हो जाती है। संसार में जितने पदार्थ आप देखते है सभी में आप ये लक्षण पायेंगे। जिन में ये लक्षण न हों उसका प्रादुर्भाव ही नहीं हो सकता। इसिंख्ये ये हुआ सत्का लक्ष्ण। और इसकी सिद्धि अपेक्षा से होती है। जिस मूळ रूप में वस्तु सदा स्थित रहती है वह द्रव्य कहलाता है और जिस रूप में इसका एक तरह से नाश और दूसरी तरह से उत्पत्ति होती है वह पर्याय कहलाता है। द्रव्य की दृष्टि से देखा जाय तो सभी घटपटादि पदार्थ नित्य हैं, अर्थात् वे किसी न किसी मूळ रूप में अवश्य स्थित है। और पर्याय रूप से देखा जाय तो सभी अनित्य हैं। वेदान्त औपनिषद-शांकरमत सत् को केवल निस्य मानते हैं। बौद्ध छोग सभी वस्तुओं को अनित्य क्षणस्थ भी मानते हैं। साख्य दर्शनवाले चेतन तस्वरूप सत् को केवल ध्रुव नित्य और प्रकृति तत्त्व रूप सत नित्यानिस मानते हैं। जब जैन दर्शन की मान्यतानुसार जो सार वस्तु है वह पूर्ण रूप से फकत निख या उसका अमुक भाग अनित्य या अमुक परिणाम नित्य और अमुक अनित्य नहीं हो सकता। चाहे जीव हो या अजीव, रूपी हो या अरूपी, सूक्ष्म हो या स्थूछ सभी सत कहलानेवाली वस्तुएं इन तीन धर्मों में युक्त होंगी।

इन सब धर्मी की विवक्षा अच्छी तरह से समक्ष में आ सके इसिंखें इस के सात रास्ते वताये है जो जैन तत्त्वज्ञान में सप्तभंगी ( सत् भंग मेद् ) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

१ स्यादस्ति,

२ स्यान्नास्ति।

३ स्यादस्तिनास्ति।

प्र स्याद्वसम्यम्।

स्याद्स्ति अवक्तव्यम्।

६ स्याद्नास्ति अवक्तन्यम्।

७ स्यादस्ति नास्ति अवक्तन्यम् ।

कुछ (अमुक दृष्टि से) है।

कुछ नहीं है।

कुछ दे कुछ नहीं। एक साथ में —

एक तरह से अवाच्य है।

कुछ है कुछ अवाच्य है।

कुछ नहीं है और कुछ अवाच्य है।

कुछ है कुछ नहीं है और कुछ अवास्य है।

प्रश्न वशात् एकस्मिन् वस्तुनि अविरोधेन विधि प्रतिषेध कल्पना-सप्तर्भगी। अर्थात् एक वस्तु के सिन्त-भिन्न धर्मो का निरूपण विधि निषेष की कटपना से करना सप्त भंगी है। सत् के तीन छक्षण बताये हैं। उत्पात, ज्यय, और धुव। दूसरे उदाहरण के तौर पर आप तीन संक १-२-३ को लीजिये। इनको प्रकारान्तर में लिखे जांय। १२३, २३१, ३२१, २१३, ३१२, १३२ ये छ रूप हुए सातवां नहीं का। इससे ज्यादा रूप नही हो सकते। इसे आप कोई भी वस्तु में घटा सकते हैं।

वस्त है। यह पहला भंग है। इसमें अन्य धर्मों की गौणता है। वस्त नहीं है—अर्थात् जब कुछ भी दूसरी वस्तु पर ध्यान दिया जाय तो उस समय वस्तु का अभाव मालूम होगा तव कहा जायगा— स्यान्नास्ति। पर दर असल में वह वस्तु है पर ध्यान से चूके हैं इसलिये एक ही समय में अस्ति नास्ति का भेद लागू होगा। जब वस्तु अस्तित्व और नास्तित्व इन दोनों धर्मों से वस्तु युक्त है। यह वात तो विवक्षित हो, परन्तु दोनों का क्रमसे वर्णन करना विवक्षित न हो उस वक्त उस वस्तु को न सत् कह सकते हैं और न असत् तब उसे स्याद्वक्तव्य कहते हैं। शेष भंग विकल्पों के संयोग रूप में है।

सप्तसंगी के दो भेद है। एक सकछादेश दूसरा विकछादेश । सकछादेश — जैसा नामसे स्पष्ट है यह वस्तु के अन्य धर्मों का भी वोध कराता है। और समूची वस्तु का विचार करने के कारण ये द्रव्यका विचार करता है। जब विकछादेश में वस्तु के असक अंश का विचार होता है।

१-२-४ ये भंग सकला देश के हैं शेष विकला देश के।

संक्षेप में कहा जाय तो वस्तु के गुण धर्मों को अच्छी तरह समफ्त के लिये स्याद्वाद ही ऐसा सिद्धान्त है जिसमें पूर्णता पाई जाती है। कई मानते हैं—कहते है—अजी यों भी हां, और त्यों भी हां। ये भी कोई मान्यता है। ऐसा कहनेवाले ही एक तरफ मुक जाते हैं। जब प्रत्यक्ष है कि बाप बेटे की दृष्टि से बाप है और ख़ुद के बाप की दृष्टि से तो वेटा ही है फिर क्यों कर मूठ माना जाय। तो अपेक्षा दृष्टि से वस्तु का सम्पूर्ण विचार करना ही उसका पूरा विचार है। और इसल्यि जैन दर्शन का स्याद्वाद अनेकान्त सिद्धान्त सर्वथा ठीक है।

### सप्त नय

प्रत्येक चीज की सिद्धि के लिये प्रमाण चाहिये। और वे भिन्न भिन्न प्रत्यक्ष और परोक्ष दो तरह के माने गये हैं। उनके भी भेद प्रमेद चलते है। पर सभी का मतल्रय वस्तु परीक्षण से ही है। प्रमाण वस्तु को सारी वाजुओं से देखता है यह बात भी सच है कि अनेक चीजों के विपयक एक या अनेक व्यक्तियों के अनेक तरह के विचार होते है। अगर एक ही वस्तु के विपयक भिन्न भिन्न विचारों की गणना की जाय तो वे अपिरिमित मालूम होंगे। और इससे वस्तु का बोध करना ही अशक्य हो जायगा। प्रमाण जब सर्व प्राही होने से वस्तु का समप्र विचार करता है जब अति विस्तृत मार्ग को छोड़कर वस्तु का निरूपण नयों द्वारा होता है। या नयों का अर्थ हम यों कर सकते है—नय अर्थात् भिन्न भिन्न पदार्थ एक दूसरे में मिश्रित न हो जांग्रे इस तरह के सिद्धि के वचनों को सिद्ध करने का साधन। यस्तु के मुल में पहुंच कर उनके एक अंश को लेकर उस पर पूरा विचारने का साधन। या स्पष्टार्थ यह होगा कि नय याने विचारों का वर्गी करण। विचारों की मीमांसा।

कई दफा एक ही वस्तु के विषयक अमुक अमुक विषयों के भिन्न भिन्न अभिप्राय होते हैं —देखने में वे भिन्न मालूम होते हैं - पर एक या दूसरी तरह से उस पर गौर किया जाय तो उसमें विशेष अंतर मालूम नहीं होता। नय ये ही काम करते हैं, जो विचार भिन्न दिखाई दंते हें पर वास्तव में भिन्न नहीं है, उनका एकी करण करते हैं। नय सात है। नै गम, संप्रह, ज्यवहार, ऋजु सूत्र, शब्द, समिमरूढ़, और एवं भूत। इनके दी विभाग है, पहले तीन द्रव्यार्थिक नय कहलाते है—बाद के चार पर्यायार्थिक १

दुनिया के सभी पदार्थ उनकी जातीयता की हिन्द से प्रायः सामान्य होते है—और उनके ज्यक्तित्व की हिन्द से वे अपनी अपनी विशेषता रखते हैं। अर्थात वस्तु मात्र सामान्य विशेषात्मक है। इन्सान के विचार भी कभी मात्र सामान्य ही की तरफ मुकते हैं —कभी मात्र विशेष की तरफ। जब पदार्थों का सामान्य हिन्द से विचार किया जाता है तो वह द्रव्यार्थिक नय कहलाता है और जब विशेष पर विचार किया जाता है तो वह पर्यायार्थिक नय कहलाता है।

इन सामान्य और विशेष दृष्टियों में एक समानता नहीं रहती कुछ फरक रहता है। इसी का मार्ग दर्शन करने को फिर इनके भिन्न भिन्न विभाग किये हैं। जो हम ऊपर लिख चुके हैं। साथ में द्रव्य का विचार करते वक्त विशेष अर्थात् पर्याय और विशेष-पर्याय का विचार करते वक्त दृब्य-सामान्य का विचार मी गौण रूप में रहता है। कपड़े की मीलमें हजारों तरह का कपड़ा निकलता है जब आप उसे कपड़े की दृष्टि से देखते हैं तो वह दृब्यार्थिक नय होगा पर जब आप उनकी भिन्न जातियों-रंग-आदि। पतला आदि का विचार करेंगे तो वह वस्तु की विशेषता का विचार होने से पर्यायार्थिक नय कहलायेगा। दृश्य अदृश्य सृक्ष्म स्थूल कोई भी पदार्थ पर चाहे भूत भविष्य और वर्तमान सम्बन्धी क्यों न हो यह घटाया जा सकता है।

पहला नय नैगम है। शब्द और बाच्य पदार्थों के एक विशेष और अनेक सामान्य अंशों को प्रकाशित करने की अपेक्षा रखकर सामान्य विशेषात्मक अध्यवसाय को जिसका कि व्यवहार परस्पर विशुख अमान्य विशेष द्वारा हुआ करता हैं नैगम नय है। या दूसरा अर्थ होगा नैगम अर्थात् देश- लोक, और लोक में रूढ़ि अनुसार या संस्कार अनुसार जो उत्पन्न है वह होगा नैगम। देश काल और लोक सम्बन्धों मेदों की विविधता से नैगम नय के भी अनेक मेद प्रमेद हो सकते हैं।

कभी सुना जाता है इस दफा की मंदीमें हिन्दुस्तान खळास हो गया या कुट के व्यापार में हिन्द माळामाळ हो गया। इन शब्दों से मतळब हिन्दुस्तान के छोगों के आदमियों का ही रहता है।

सहावीर जन्मीत्सव चैत्र सुदि १३ को मनाया जाता है उस वक्त हम यही कहते है—महाबीर स्वामी का आज जन्म है हालाँ कि उन्हें हुए २५०० वर्ष हो चूके पर उस दिन वे ही वार्ते याद करी जाती हैं छोग भी उसकी वास्तविकता सममे होते हैं।

इत्यादि जो वातें छोक रूढ़ि में जैसे कही जाती है या मानी जाती हैं उनका वास्तविक शब्दार्थ पर ध्यान नहीं देकर प्रसिद्ध अर्थ ही प्रहण होता है और यह सब नैगम नयान्तरगत है।

(२) जो सामान्य होय को विषय करता है साथ में गोत्वादिक सामान्य और खड मुंहादि विशेष में प्रवृत्त होता है वह संप्रह नय है। सत्ता रूपी सामान्य तत्त्व संसार के सभी जड़ चेतन पदार्थों में मौजूह है और दूसरे पदार्थों पर विशेष छक्ष्य न देकर केवछ सामान्य पर दृष्टि रखना संप्रह नय का विषय है। के सामाज के माछ मे हजारों का गाजों की ओर ध्यान न देकर उन्हें काग्रज की तौर पर ही सामान्य रूप में काग्रजों की ओर ध्यान न देकर उन्हें काग्रज की तौर पर ही सामान्य रूप में देखने से यह नय है। वैसे तो सामान्य को छोड़ विशेष और विशेष को छोड़ सामान्य नहीं रह सकता। इसछिय सामान्य रूप में दोनों का प्रहण करता है।

संप्रह नय में भी तरतम भारा से अनेक उदाहरण हो सकते हैं। जितना छोटा सामान्य होगा संप्रह नय में भी तरतम भारा से अनेक उदाहरण हो सकते हैं। जितना छोटा सामान्य होगा। संप्रह नय भी उतना ही छोटा और जितना बड़ा सामान्य होगा संप्रह नय भी उतना ही वडा होगा। गोया मतळन यह कि सामान्य तस्व का आश्रय छेकर विविध वस्तुओं के एकीकरण के जो विचार हैं वे सभी संग्रह नय में अंतरगत होते हैं।

- (३) संग्रह नय में जो सद्रूप सामान्य कहा है उसे महा सामान्य समक्षना चाहिये। तव महा सामान्य का विशेष रूप से बोध करना पड़ता है या व्यवहार में उपयोग करना पड़ता है तव उनका विशेष पृथक् करण करना पड़ता है। जल कहने मात्र से भिन्न भिन्न जलों का बोध नहीं होता। जिसे खारा पानी चाहिये वह खारे मीठे का बोध हुए विना उसे नहीं पा सकता। इसी लिये खारा पानी मीठा पानी इत्यादि भेद भी करने पड़ते हैं। मतलब यह कि सामान्य के जो भेद करने पड़ते हैं। वे व्यवहार में आते हैं।
- (४) व्यवहार नय के विषय किये हुए पदार्थ का केवल वर्तमान विषयक विचार भूजु सूत्र नय करता है। इस भूत भविष्य की उपेक्षा अलवता नहीं कर सकते फिर हमारी बुद्धि वर्तमान काल की तरफ पहले और अधिक भूक जाती है। क्योंकि उसी का उपयोग है भूत भावि कायं साधक तो है नहीं इसी-लिये उनका होना न होना बराबर है निकम्मा है। कोई मनुष्य वैभव शाली था या वैभव शाली होगा इससे कोई मनलव नहीं, वर्तमान में वैभव शाली होना ही वैभव का उपयोग रखता है। ऐसे जो केवल वर्तमान विषयक विचार रखता है वह भूजु सुत्र नय कहलाता है।
- (१) व्यवहार नय में से ऋजु सूत्र में आकर हम केवल वतमान विषयक विचार करते हैं पर कई दफा बुद्धि और भी सृक्ष्म हो जाती है और शब्हों के उपयोग की तरफ पूरा ध्यान देती है। अर्थात् जब वर्तमान काल, भूत और भविष्य से भिन्न है तो काल लिंग आदि को लेकर शब्हों का अर्थ भी अलग अलग क्यों न माना जाय ? जब कि तीनों कालों में कोई सूत्र रूप एक वस्तु नहीं है तो लिंग संख्या कारक उपसम्में काल आदि से युक्त शब्हों द्वारा कही जाने वाली वस्तुएं भी भिन्न भिन्न है।

किसी ने कहा हिन्दुस्तान की राजधानी देहली में थी तब उसमें भूत काल का क्यों प्रयोग हुआ क्योंकि दिल्ली तो अब भी है पर कहने वाले का मतलय पुरानी दिल्ली से है न कि नयी से। और पुरानी दिल्ली नयी दिल्ली से मिन्न भी है। यह हुआ काल से अर्थ मेद्।

गढ़ और गढ़ैया। ये भी लिंग भेद से अपने अपने अर्थ में फरक रखते हैं। उपसर्ग लगने से अर्थ भेद हो जाता है जैसे आगमन, वहिर्गमन, निर्गमन। प्रस्थान, उपस्थान, अतराम, विराम, प्रताप, परिताप आदि में घातु एक होने पर भी उपसर्ग लगने से अर्थ भेद हो जाता है। यही शब्द नय भी ग्रुहआत करता है।

इस तरह केवल शब्दों पर आधार रखने वाला शब्द नय है।

(६) समिम रुढ़, शब्द नय से एक कदम आगे और बहुना है अर्थात् जब छिंग संख्या काल आदि से शब्दार्थ में भेद होता है तो ज्युत्पित्त से क्यों नहीं अर्थात् एकार्थक जितने भी शब्द लोक मे प्रचलित है उन की ज्युत्पित्त ज्याख्या के अनुसार उनके अर्थ में भी मेद हैं। साधु वाचक कई शब्द साधु, मुनि, यित मिक्षु ऋषि आदि लोक में प्रचलित है और साधारण व्यवहार में उनसे साधु का मतलव है लिया जाता है फिर वे सब अलग अलग अर्थ के अनेक होने से भिन्न भिन्न हैं यह करे वही यित। भिक्षा मांगे तो वही मिक्षुक मान करे वही मुनि इत्यादि। इस तरह व्युत्पित्त से अर्थ मेद बताने वाला समिनित्द नय है। पर्याय मेद से अर्थ भेद की सभी कल्पनाचें इसी अ्रेणी की है।

(७) जब एक आदमी एक ही वाजू मुकता है तो वह गहरा उत्तरता ही जाता है और अद्भित्त से अर्थ भेद से भी वह संतुष्ट नहीं होता और कहता है जब अप्रपत्ति से अर्थ भेद मानें तब तो ऐसा क्यों न मानना चाहिये जब अप्रपत्ति सिद्ध अर्थ घटित होता है। तभी वह शब्द सार्थक है अन्यथा नहीं ऐसा अर्थ लेने पर हम साधु को मुनि नहीं कह सकते अर्थात् जिस समय वह मौन किया में प्रवृत्त होगा तभी वह मुनि कहलायेगा। जब भिक्षा ले रहा होगा तभी भिक्षुक कहायेगा। जिस समय नौकरी करता हो उसी वक्त नौकर कहायेगा। सार यह है कि तात्कालिक सम्बन्ध रखने वाले विशेष्य और विशेष्य नाम का व्यवहार करने वाली मान्यतायें एवं भूत नयान्तरगत आती हैं।

इस तरह सातों नयों का स्वरूप है। यह बात सहज ही समक्त मे आ जाती है कि ये एक दूसरे से सुद्धमाति सुद्धम होते जाते हैं फिर भी एक दूसरे से अवश्य संबंधित हैं। अतः एक दूसरे से सामान्य और एक दूसरे से विशेष हैं। ऐसी परंपरा से नैगम से संग्रह और संग्रह से व्यवहार विशेष को ग्रहण करता है तो उसे पर्यायार्थिक कहना होगा पर ऐसा नहीं क्योंकि किसी न किसी रूप में यह जाति को ग्रहण करते हैं काल को भी ग्रहण करते हैं इस लिये यह तो अवश्य है कि एक दूसरे की अपेक्षा से विशेष अवश्य है पर वैसे ये द्रव्यार्थिक ही हैं और शेष चार वर्तमान विपयक ही विचार करते हैं इससे पर्यायार्थिक हैं।

इस तरह प्रमाण सिद्ध वस्तु के अंशों का सूक्ष्म विवेचन नयों द्वारा ही होता है।

# निक्षेप

संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसमें चार निश्चेष न हों। निश्चेष शब्द का अर्थ तो व्याकरणा-नुसार दूसरा होता है, जिसके फलस्वरूप निश्चेष वस्तु का स्वधर्म सिद्ध नहीं होता, क्योंकि 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'श्चिष' प्रेरणे धातु से 'निश्चिप्यते अन्यत्र' इस व्युत्पत्ति से निश्चय रूप से श्चेषण किया जाय अन्य वस्तु में, उसका नाम निश्चेष है। यद्यपि व्युत्पत्ति को लेकर यह अर्थ ठीक है, पर यह कृत्रिम अर्थ में ही ऐसा माना जायगा स्त्राभाविक अर्थ में तो संकेत के अनुसार निश्चेष वस्तु का स्वधर्म ही सिद्ध होता है।

निश्चेय शब्द के अर्थ पर प्राचीन व्याख्याताओं का यही शंका समाधान है, पर विचार करने पर व्युत्पित्त भेद से भी समाधान होता है, जैसे—'निश्चिण्यते ज्ञातुरप्रे दीयते पदार्थोऽनेनेति निश्चेपः' अर्थात् 'बोद्धा के सामने पदार्थ जिस (धर्म) के द्वारा ठाया जाता है, वही निश्चेप हैं। ऐसी व्युत्पित्त और 'नि' उपसंगे पूर्वक 'श्चिप' प्रेरणे धाद्ध से 'हलक्ष्च' इस सूत्र से करणार्थक वज् प्रस्थय करके अगर निश्चेप शब्द वना लेते हैं तो निश्चेप का अर्थ सीधा धर्म ही होता है। फिर दूसरा समाधान खोजने की आवश्यकता ही नहीं।

निश्चेप चार होते हैं। नाम निश्चेप, स्थापना निश्चेप, द्रव्य निश्चेप, और भाव निश्चेप। यिव वस्तुओं के ये चार स्वधर्म रूप निश्चेप न माने जाय तो व्यावहारिक कार्यक्षेत्र में वडी ही संकट पूर्ण परिस्थिति उपस्थित हो जायगी। प्रत्येक पदार्थ का अपना अलग नाम होता है और उसके जरिये उस पदार्थ की पिहचान होती है। अगर नाम न हो तो किसी पदार्थ की पिहचान ही असम्भव है। किसी ने सच कहा है—

देखिय रूप नाम आधीना । रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ॥ रूप विशेष नाम विनु जाने। करतल गत न परहिं पहिचाने॥

इसिंछिये नाम वस्तुओं का स्वधर्म है। दूसरा स्थापना निक्षेप है। स्थापना आकार का पर्ध्याय

है। किसी वस्तु की जानकारी में आकार भी सहायता प्रदान करता है। क्योंकि कोई किसी पदार्थ को उसके आकार के द्वारा ही निश्चित करता है अत्यव स्थापना भी वस्तु का स्वधमें है। तीसरा दृज्य निश्चेप है। दृज्य शब्द आकार गत गुण का बोधक है। पदार्थ के निश्चय करने में आकार गत गुण भी निश्चयात्मक होते हैं। अगर कोई काछी गो छाने के छिये कहता है तो छानेवाछा 'गो' इस साम और छोम, छाङ्कुछ, शृङ्क प्रभृति अंगों से समन्त्रित आकार के साथ-साथ उसके आकारगत काछापन को देख कर ही छा सकता है। इसिछिये दृज्य भी वस्तु का स्वधमें है। चीथा भाव निश्चेप है। भाव का अर्थ है उपयोग। दूध के छिये गो छाने को कहा जायगा तो छानेवाछा दुग्धदायिनी प्रकृति की भी जानकारी कर छेगा तव कही गो छा सकेगा। इसिछिये मानना पड़ेगा कि भाव भी वस्तु का स्वधमें है।

एक और उदाहरण लीजिये कि किसी मनुष्य ने किसी से कहा कि तुम भण्डार से घड़ा ले आओ। लानेवाला 'घड़ा' यह नाम सुन कर चला गया और भण्डार में अनेक वस्तुओं के होते हुए भी आकार-प्रकार से घड़े को पहिचान लिया। वाद में द्रव्य भी पहिचाना कि घड़ा कचा है या पक्का, लाल है या काला। फिर उसने इस वात की भी जानकारी प्राप्त की कि इस के हारा पानी भरा जा सकेगा। इस भाति चारों स्वधमों के हारा निश्चय करके ठीक-ठीक घड़े को उठा लाया।

इसी तरह जिन भगवान की हमलोग मूर्ति वनवाते है और उस मूर्ति का नाम कहा करते हैं 'जिन भगवान'। यद्यपिवह मूर्तिपाषाण काष्ठधात्वादिकाग और रंगोंके सिवायओर कुळ नहीं है, फिर भी हमलोग उस मूर्तिका नाम करण करते हैं जिन भगवान'। यह आकार जिन भगवान का है, ऐसा समम कर स्थापना करते हैं। तदनन्तर उस मूर्ति में जिन भगवान की आत्मा का अनुभव करते हुए हम उनके द्या, दान, क्षमा, तपस्या आदि गुणों को अपने स्मृति-पथ के पान्थ बनाया करते हैं, उनकी शान्त मुद्रा पद्मासन योग प्रभृति स्वरूपों का हमारे मानस पर शनैः शनैः सफल असर पड़ता है और हम सोचते हैं कि हममें भी किसी दिन भगवान के ये गुण आ जायगें और हम मुक्त हो जायगें। अन्त में फल भी वही होता है जो कि होना चाहिये। किसी ने सच कहा है—-

जाको जा पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिले न कहु सन्देहू ॥ यही कारण है कि हमलोग वड़ी मक्ति और श्रद्धा से मूर्तियों को वन्दन नमन किया करते हैं।

## नाम निक्षेप।

नाम निक्षेप के दो सेंद् हैं। एक अनादि एवं स्वाभाविक दूसरा सादि तथा कृत्रिम। अनादि स्वाभाविक के भी दो सेंद् हैं, अनादि स्वाभाविक दूसरा अनादि संयोग सम्बन्ध जन्य। अनादि स्वाभाविक का उदाहरण छीजिये, जीव और अजीव। चैतनात्मक (चेतनास्वरूप) ज्ञान से वंचित होने के ही कारण 'संसारी जीव' ऐसा नाम पड़ा है। इस जीव को ही कोई 'आत्मा' कोई 'त्रश्च' कोई परमात्मा कह कर पुकारा करता है। पर यह नाम कव पड़ा ? किसने रखा ? यह कोई नहीं वता सकता। इसिछये यह अनादि स्वाभाविक नाम निक्षेप है।

इसी तरह आकाश, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और पुत्रल परमाणु ये सब अजीव है। और इन सबों के ये नाम अनादिकालिक तथा स्वाभाविक हैं; क्योंकि इनके सादित्व और कृत्रिमता के निश्चायक कोई आधार नहीं है। दूसरा है अनादि संयोग सम्बन्ध जन्य। जीवों का कमें से अनादि काल से लेकर सुदृढ़ सम्बन्ध है। जिसके फल स्वरूप जीव चौरासी लाल योनियों में चहर काटा

करते हैं और उस उस योनि में भिन्न भिन्न जातिवाचक नाम से सम्बन्धित हुआ करते हैं। यहां यह कोई नहीं बता सकता है कि इन चौरासी लाख योनियों के नाम किसने रखें ? और वे नाम कब से व्यवहृत हुए। इसीलिये अनादित्व (अर्थात् जिसकी आदि नहीं है) और कर्मों के सस्वन्ध से संयोग सम्बन्ध जन्यत्व अच्छी तरह सिद्ध हो जाता है। कृत्रिम नाम के भी दो भेद हैं। एक तो सांकेतिक दसरा आरोपक। सांकेतिक नाम वह है जो माता, पिता या गुरु कृत होता है। अथवा किसी ध्यक्ति निशेष के द्वारा रखा गया होता है। उस नाम का उद्देश्य व्यवहार सम्पादन मात्र होता है। किसी गुण या योग्यता की हैसियत से वह नाम निर्वाचित नहीं होता है। कोई जन्म सिद्ध दुख्डि अपने लड़के का नाम प्रेम से 'राजकुमार' रखता है। वाद में वह लड़का बदनसीवी से विथडों में लिपटे हुए भी-काफी सरत से भूत की तरह होते हुए भी आम जनता में 'राज कुमार' नाम से ही प्रकारा जाता है। कार्य क्षेत्र में कोई अड़चन नहीं आती है। प्रत्युत उस नाम से सम्बन्धित सभी काम ख़शी से सम्पादित हुआ करते हैं। इसी तरह हम छोग पाषाण, काव्ड, मिट्टी वगैरह की मूर्ति छाते हैं और असका नाम रख छेते हैं—'जिन भगवान' फल स्वरूप उसी मूर्त्ति के सांकेतिक नाम से अपनी इच्ट सिद्धि भी कर होते हैं। सांकेतिक नाम से किसी गुण या योग्यता का सम्बन्ध नहीं है। सांकेतिक नाम अपेक्षाकृत स्थायी होता है। आरोपक नाम वह है जो सीमित एवं अलप कलके लिये स्थायी हो। जैसे कोई अपनी गाय भैंस वर्गरह का नाम प्यार से गंगा, सरयू आदि कहा करता है। पर वह नाम उसी के परिवार तक सीमित होता है, दूसरी जगह जाने पर उस गाय या भेंस का वह नाम नहीं कहा जाता । वह तो तभी तक था, जब तक कि नामी वहां था। छड़के छोग सड़क पर छकड़ी के कुन्दे को दोनों पैरों के बीच में रखकर और जमीन में हाथ से दवाकर दौड़ते हैं और कहते हैं -हटो ! हटो ॥ घोड़ा आता है । यहां यह कुन्दा रूपी घोड़ा क्षण भर के लिये है और उसी लड़के तक वह नाम व्यवहृत हुआ है। उपर्युक्त उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि आरोपक नाम सीमित एवं अपेक्षाफ़ृत अस्थायी होता है।

यही कारण है कि शिल्पी लोग मिट्टी आदि ज्यादानों से रामकृष्ण, लक्ष्मी, गणेश, साधुसन्त, महात्मा, दयानन्द प्रभृति देवी देव महापुरुषों की मूर्तियां बनाकर बाजार मे लाते हैं और लोग पैसा खर्च करके ले जाते हैं और अपनी अपनी रुचि के अनुसार पूजते तथा इच्ट प्राप्ति किया करते हैं। इसमें वस्तुतः सचाई है. जो कि दुरामह रहित बुद्धि से देखी जा सकती है।

## स्थापना निक्षेप ।

किसी वस्तु में, या निराधार, जो किसी के आकार का आरोप होता है, वह स्थापना निश्लेप है। यह दो तरह से होता है एक तो साहरय से दूसरा व्यक्तिगत विचारानुकूछ। जो आधार गत आकार का आरोप होगा, वह कहीं साहरय से होगा और कहीं व्यक्तिगत विचारानुकूछ होगा। एवं जो निराधार स्थापना होगी, वह कहीं साहरय से होगा और कहीं व्यक्तिगत विचारानुकूछ होगा। एवं जो निराधार स्थापना होगी, वह केवल वैयक्तिक विचारानुकूछ ही होगी। आप देखेंग कि किसी चित्र में, चाहे वह हाथी का हो या घोड़े का, देवता या मनुख्य का, स्त्री या पुरुष का, किसी का क्यों न हो, कुछ साहरय को हाथी का हो या घोड़े का, देवता या मनुख्य का, स्त्री या पुरुष का, किसी का क्यों न हो, कुछ साहरय को लेकर असली वस्तु के आकार की स्थापना को जाती है। "यह घोड़ा है" ऐसा व्यवहार होता है; क्यों १ हेस लिये कि उस चित्र में घोड़े के समान कान, नाक, मुंह वगैरह सभी अङ्ग टिखे गये हैं। इसी तरह इस लिये कि उस चित्र में घोड़े के समान कान, नाक, मुंह वगैरह सभी अङ्ग टिखे गये हैं। इसी तरह मूर्तियों के उपासक अपने अपने उपास्य देव की मूर्तियों में शास्त्रवर्णित गुण और महत्ता के समारक लक्षणों मूर्तियों के उपासक अपने अपने उपास्य देव की मूर्तियों में शास्त्रवर्णित गुण और महत्ता के समारक लक्षणों मूर्तियों के उपासक अपने अपने उपास्य देव की मूर्तियों में शास्त्रवर्णित गुण और महत्ता के समारक लक्षणों के बहौलत ही 'ये राम हैं' ये भगवान किस है' इस तरह की भावना रखते है एवं उनकी हार्दिक उपासना के सहतीलत ही 'ये राम हैं' ये भगवान किस है' इस तरह की भावना रखते है एवं उनकी हार्दिक उपासन

किया करते हैं। अगर कोई यह शंका करता है कि मूर्त्ति तो पापाण, काप्ठ या और किसी जड़ पदार्थ की होती है, उसकी उपासना से इच्ट सिद्धि कैसी ? तो में कहूंगा कि अगर तुम पश्यान गून्य हद्य से विचार करोगे तो मालूम पड़ जायगा कि जब किसी सुन्दरी नव युवती औरत को कोई सिनेमा की तस्वीर में या कागज वगैरह के चित्र में देखता है तो प्रत्यक्ष उसकी सुप्त आसक्ति जाग पड़नी है एवं स्त्री विषयक नया प्रेम मानस मैदान में चक्कर काटने लग जाता है। अगर संघर्ष बहता गया तो वह धीर धीरे मन को कार्य रूप में परिणत करने की ओर खींच है जाता है। नतीजा यह होता है कि अन्त में पथ भ्रष्ट होकर रहता है। यही कारण है कि 'चित्त भित्तं ण णिजाए' अर्थात चित्र में बनाई गई स्त्री को भी मत देखो इस भांति साधुओं को मनाई की गई है। कहने का मतछव यह है कि जब इस तरह सौन्दर्यवान चित्र से पतन होता है तो जिन भगवान की मूर्ति के अवलोकन पूजन नमन के अभ्यास से वनके मोक्ष साधक गणों की ओर खोंचकर हम लोग एक रोज निवाण पट प्राप्त करेंगे-अपने लक्ष्य स्थल पर पहंचेंगे, यह कोई भी सहदय स्त्रीकार करेगा। अस्तु, कोई अगर अपने पिता का तैल चित्र वना रखा है तो उसे देखकर वह कह उठता है कि ये पिताजी है। यह सब स्थापना साहस्य गुण से आधार गत हुई। यह कोई नियम नहीं कि यह स्थापना निर्जीय मात्र में ही हुआ करती है। किसी प्राह्मण को श्राद्ध में प्रेत बनाकर सनातनी लोग श्राद्ध कर्म किया करते हैं, वहा तो जीव में ही आकार का आरोप होता है। कहीं यह स्थापना आधार गत वेयक्तिक विचार के अनुसार हुआ करती है। जैसे वेष्णव मत में, विवाह में मिट्टी की डली को पूजक अपने विचार मात्र से गणेश मान कर पूजा करते है। वहां मिट्टी की डलो ही गणेश होता है। वैष्णव लोग शालियाम पतथर को ही विष्णु समक्त कर पुजा करते हैं। कहीं स्थापना निरावार होगी-व्यक्तिगत विचारानुकुछ (अर्थान पुजक के अपने विचार के मुताबिक ) होगी। जैसे जैन मत में यति साधु लोग शंख, चन्द्रन, गोमनी चक्र प्रशतियों का विना किसी आधार के आकार का आरोप करते हैं। इसी तरह सनावनी छोग कटोरे में विना किसी शक्त को आधार बनाये, लक्ष्मी, सरस्वती, राम, कृष्ण आदि देवताओं का आकार मान कर पूजा किया करते हैं। यह सब निराधार वैयक्तिक विचारानुकूछ स्थापना है।

उपर्युक्त स्थापना प्राचीन दृष्टिकोण से दो प्रकार की होती है। एक सड़्त दृसर्ग असड़्त मिट्टी की ढळी को गणेश मान छेना असड़्त स्थापना है। विना आकार के शंख, चन्द्रन, गोमती चक्र प्रश्तिको स्थापना भी असड़्त स्थापना है। क्योंकि यहां उन पदार्थों को बुळ समानना नहीं है। सड़्त स्थापना भी फ़त्रिम और अकृत्रिम भेद से दो तरह की होती है। कृत्रिम बह है जो मनुष्यों के द्वारा चनायी गई जिन भगवान् की प्रतिमार्थे इस छोक मे प्जी जाती है। अकृत्रिम वे है जो नन्द्रीश्वर मेहप्वेत हीप, या देवछोक आदि में जिन भगवान् की प्रतिमार्थे हैं।

उपर्युक्त विचारों से यह सिद्ध होता है कि पापाण, काष्ठ मिट्टी आदियों से वर्ता हुई मूर्तियों से वेवस्य युद्धि से पूजा उपासना करना वस्तुतः युक्ति संगत है। और उपासकों को अपने लक्ष्य स्थल तक है जाने का यह एक सुन्दर तरीका है।

## द्रव्य निक्षंप

जिसका नाम. आकार गुण और लक्षण मिन्दे हैं। पर आत्म उपयोग न मिन्ने नो वही द्रव्य निक्षेत्र है। जीव अपने असन्दी स्वरूप को जब नक नहीं पहिचानना है, नव नक द्रव्य निव्हें। क्योंकि उपयोग रहिन को पदार्थ होगा, यह द्रव्य है। 'अनुयोग द्वार सूत्र' से क्टा है - अनुवक्षेगो द्वार' अर्थान उपयोग के बिना जो चीज होगी, वही द्रव्य है। किसी ने सच कहा है— "ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः" अर्थात् ज्ञान के दिना मनुष्य पशु के समान हैं।"

इस द्रव्य निक्षेप के दो भेद हैं। आगम विषयक (अर्थात् आगम से) दूसरा आगम भिन्न विषयक (अर्थात् नो आगम से) आगम से वह होता है कि शास्त्र तो पढ़ा, पर शास्त्र का मतलव नहीं समम्मा। अतएव उपयोग के बिना वह आगम विषयक द्रव्य निक्षेप है। इसी तरह "परोपदेशे पाण्डि-त्यम्" अर्थात् दूसरों को उपदेश देने में तो बड़ी योग्यता है, ब्याख्यान कला के द्वारा आम जनता में तो खूब वाहवाही है, पर स्वयं अपने में उपदेश का क्रियात्मक उपयोग नहीं है। ऐसी स्थिति में भी आगम

दूसरे नो आगम से होने वाले द्रन्य निक्षेप के तीन मेद हैं, एक द्रन्य शरीर, दूसरा भन्य शरीर और तीसरा तद्न्यतिरिक्ताझ शरीर वह है कि तीर्थंकर निर्वाण पदवी प्राप्त कर चुके है, उनका मृत शरीर पड़ा है। अग्नि संस्कार होने वाला है तो जब तक अग्नि संस्कार नहीं हुआ है, तब तक वह इ शरीर कहाता है। थेली में रुपये थे, खर्च हो गये। थेली खाली पड़ी है जरूरत पड़ने पर आप कहते हैं रुपये की थेली ले आओ। यहां पर यह थेली झ शरीर। दूसरा मेद भन्य शरीर है। तीर्थंकर भगवान अपनी माता के पेट से जन्म लेने के बाद बचपन अवस्था में जबतक रहे, उनके उस शरीर को भन्य शरीर कहा जायगा। आप किसी बिद्धिये को देखकर कहेंगे, यह बड़ी दुरधवती गौ होगी तो वह तात्कालिक बिद्धिय के अनेक उदाहरण हैं, जो कि तीसरे भेदमें आ जाते हैं। जसे—"झान हीन मनुष्य है" ऐसा कहा गया है, क्योंकि मनुष्य तो है पर मनुष्यत्व जो झान है उसका उपयोग नहीं है। इसल्यि वह आगम भिन्न तृतीय भेद वाले द्रन्य निक्षेप के उदाहरण में आ जाता है। इसी तरह और भी टप्टान्त अन्वेष्टव्य है।

उपर्युक्त विचार विमर्शोंका सारांश यह है कि लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश, काली, भवानी, तीर्यंकर भगवान् आदियों की मूर्तियां उपयोग रहित हैं, इसलिये द्रव्य निक्षेप में आ जाती हैं। एवं अपने अपने उपासकों से किसी नय की अपेक्षा से बन्दनीय हैं।

### भाव निक्षेप

जिसका नाम, आकार और छक्षण गुण के साथ-साथ मिलते हों, वही भाव निक्षेप के उदाहरण है। क्योंकि अनुयोग द्वार में कहा है— "उवओगो भाव" अर्थात् जिसमें उपयोग हो, वही भाव निक्षेप का आवास स्थल है। इसीलिये दान, शील, तपस्या, किया, ज्ञान ये सभी भाव निक्षेप से समन्यित होने पर हो लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। अगर कोई निर्विकेशी मनुष्य चुद्धि की विचक्षणता से यह सावित करने की चेष्टा करें कि मन के परिणाम को सुरद्ध करके जो इल्ल काम किया जायगा, वह भाव युक्त होगा तो वह उसकी गलती है। क्योंकि ढोंग रचने वाले भी अपने स्वार्थ साधन के लिये मन को स्थिर बना कर तपध्यान आदि किया करते हैं, ताकि लोग उसकी माया में फंसा करें और वह अपना उत्लू सीधा किया करे। कमठने पश्चाग्नि तपस्या दम्भ-पूर्ण, तो क्या वह काम भावयुक्त माना जा सकता है ? नहीं । कभी नहीं ॥

यहां सूत्रानुसार विधि और वीतराग की आज्ञा में हेय और चपादेय का वर्णन हुआ है। उसकी असिलियत को समक्त कर अजीव, आश्रव, और वन्य के उपर हेय अर्थात त्यागमाव और जीवका स्वगुण, सम्बर, निर्जरा, मोक्ष चपादेय अर्थात प्राह्म हैं। रूपी गुण है, इसिलिये उसे द्रव्य समक्त कर छोड़

है। जैसे मन, वचन, काय, लेश्यादिक सभी पुष्पालीक रूपी गुण समस्न कर छोड़ दे और ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, घ्यान प्रशृति जीव के गुणों को अरूपी समस्त कर संगृहीत करे। यही भाव निक्षेप है। सूत्रों में ययालीस मेद निक्षेप के कहे गये हैं। हमने संक्षेपमें वर्णन किया है। बुद्धिमान मनुष्य उपर्युक्त हरीके से हरेक वस्तु में चारों निक्षेपों को उतार सकते हैं।

इसी तरह जिन भगवान की प्रतिमाओं में हमछोग ''ये जिन भगवान हैं" ऐसी आस्था रखते हैं और यह सोचते हैं कि जैसे मूर्तियों में पद्मासन योग शान्त मुद्रा आदि भाव हैं और इन्हीं भावों के द्वारा इनकी भव्य आत्मायें मोक्ष पदवी प्राप्त कर चुकी हैं; वैसे ही हमछोग भी इन्हीं भावों की प्राप्ति से निर्वाण पद गन्ता वनेंगे, ऐसी भावना निज मनमें हमछोग किया करते हैं। अतएव भावयुक्त प्रतिमाये माननीय है— वन्दनीय हैं, इसमें कोई शक सन्देह नहीं।

मूर्तिवाद

दिवाल पर टंगे हुए या लिखे हुए स्त्रियों के चित्र भी साधुओं को नहीं देखने चाहिये, क्योंकि मानसिक वृत्तियां विकृत होकर--विकृारयुक्त होकर महाचर्य से च्युत कर देती है। -- दशवैकालिक सुत्र

[सूत्र में जो कुछ कहा गया है, वह हूबहू सच है, इसमें अत्युक्ति की वू तक नहीं है। क्यों कि कोई भी सहदय सिनेमा वगैरह के चित्रों को देखकर अथवा यों ही सुन्दरी स्त्रियों के चित्रों को देख कर इसकी प्रत्यक्ष सचाई को महसूस कर सकता है। ऐसी हालत में यह प्रश्न टठना स्वाभाविक है कि जब चित्रों के अवलोकन से ब्रह्मचर्य से अष्ट होने की गुआइश है, तब सन्मार्ग के प्रवर्त्तक मगवान तीर्यद्वर देव की मूर्त्ति को बन्दन, नमन, और दर्शन करके हमलोग सन्मार्गके सुदृढ़ पन्था क्यों नहीं बन सकते १ अगर बन सकते तब मूर्त्ति पूजा की अबहेलना क्यों १]

मही राजकुमारी के साथ हु राजकुमार, जो कि राजकुमारी के पूर्वजन्म में मित्र थे और स्वयं राजकुमारी भी उस जन्म में पुरुप ही थी, शादी करना चाहते थे। राजकुमारी ने सोचा कि जवतक प्रभाव पूर्ण तरीके से काम नहीं छिया जायगा, तब तक ये राजकुमार छोग मुर्जी शादी से विरक्त नहीं हो सकते। यही सोच कर उसने एक सोने की मुर्चि बनवाई और उस मुर्चि के उदर गर्भ में एक-एक प्रास भोजन नित्य प्रति डालने लगी। नतीजा यह हुआ कि मुर्चि का मुख ढक्कन खोल देने पर भोजन के सड़ जाने के कारण वड़ी बद्यू आने छगी थी। वाद में जब राजकुमारी से शादी करने के लिये छहीं राजकुमार आये तो राजकुमारी ने छहीं राजकुमारों को विवाह मण्डप में छुलाया और स्वयं उस मूर्चि के मुर्ख ढक्कन को खोल कर खड़ी हो गई। जब राजकुमार छोग आये तो बद्यू के मारे वे सब बेहद घवड़ाने लगे, राजकुमारी ने कहा, महाराज! इस सोने की मूर्चि में में छुछ ही दिनों से एक-एक प्रास मोजन डालती रही हूं जिसका फल यह हुआ है कि अभी आपछोग इस मूर्चि के पास ठहरने में भी असमर्थ हो रहे हूं, फिर आपछोग जिस मुक्तो, जो कि में केवल हाड़ मांस की मूर्चि के सिवाय और छुछ नहीं हूं, पाने के लिये पागल हो रहे हैं उसमे तो कितने प्रास भोजन रोज डाले जाते हैं, तब उससे आखिर जो गन्य आयेगी, उससे आपछोगों की क्या दशा होगी क्या यह भी सोचते हैं ? इस प्रकार मूर्चि के हप्तान्त से राजकुमार छोग विरक्त हो गये, फलत: सच्चे ज्ञान का उद्य हो गया।

[ यदि नकली सोने की मूर्त्त से असली विराग प्राप्त हो सकता है तो भगवान वीतराग को मूर्तिये से हमें वह सबा विराग क्यों प्राप्त नहीं होगा ? इस सवाल का कोई मुनासिय जवाय नहीं, फिर मूर्ति पूजा की सार्थकता से इनकार क्यों ? ]

आई कुमार को उपदेश देने के लिये अभयकुमार ने कोई मूर्तिमान् पदार्थ मेजा! जिसे देखकर अर्ट कुमारके मानस पट पर पूर्व अन्म के सारे ज्ञान चित्रित हो आये।

जिव आहे क्रुमार के पूर्व जन्म का ज्ञान, जिस पर काल के अन्तराय से अज्ञान का परदा पड गया था, किसी मुर्तिमान पदार्थ को देखने से उसके मानस विचार तरङ्कों पर छहराने छगा, जो कि आखिर मोक्ष का कारण बना तो हमें भी उम्मीद करनी चाहिये कि हमारी आत्मा का छिपा हथा हान. जिस पर अनेक जन्मों का परदा पड़ गया है, अगवान वीतराग की मूर्ति के वन्दन नमन और मूर्तिमान पदार्थके दर्शन से निरन्तर अनेक गुणों के संस्मरण से एक न एक दिन मेघ निर्म क चन्द्रमा की तरह चमक **उठेगा और हम संसार बन्धन से छूट सकेंगे, इसमें कोई भी आश्चर्य जनक वात नहीं है।** ]

एक समय श्रेणिक राजा ने नरक के कथ्टों से भयभीत होकर भगवान महावीर से पूछा, महात्मन्। ऐसा कोई उपाय वतलाइये कि मुसे नरक न जाना पहे। भगवान् ने कहा, अगर तम अपने नगर के काल कसाई को एक दिन के लिये भी दैनिक पांच सो भैंसों की हला से रोक सकी तो तुम्हें नरक न जाना पड़े। श्रेणिक ने काल कसाई को बुलाया और समभाया कि तुम एक दिन के लिये भी हिंसा छोड़ दो। पर वह दुष्ट क्यों मानने वाला था, जसने तो पांच सौ भैंसों को नित्य प्रति मारने का संकल्प है रखा था। आखिर राजा ने उसे दोनों पैर वांधकर कूऐं में छटका दिया, जिससे कि उसे हिंसा करने का मौका ही न मिले। राजा को अब पक्षी घारणा थी कि उस कसाई ने आज हिंसान की होगी। अत-एव भगवान महावीर से राजा ने जाकर सुनाया कि भगवन् ! मुक्ते अब तो नरक जाना न पहेगा, क्योंकि काल कसाई ने हिंसा नहीं की। भगवान ने कहा, नहीं, उसने हिंसा की है। अगर विश्वास न हो तो दरयापत कर छो। राजा के पता छगाने पर मालूम हुआ कि उसने तो पांच सौ भैसी की चित्र के द्वारा मूर्तियां वनाकर काटी हैं। राजा सन्त रह गये। आशा पूरी न हो सकी। क्योंकि उन काल्पनिक मूर्त्तियों से हिंसा पूरी हो गई थी।

[ यहां पर प्रश्न उठता है कि जब चित्रित भेंसों के मारने से हिंसा हो गई, क्योंकि कसाई के मन का भाव वैसा ही था जैसा कि असली भैंसों के मारने के वक्त रहा करता था, तव भगवान वीतराग की मूर्त्ति को भावावेश से साक्षात् भगवान् समभ कर अगर कोई पूजा या दर्शन करता है तो कटान्न पात क्यों ? यह निश्चित वात है कि यदि अद्धा और भक्ती से भगवान की दर्शन व पूजा की जायगी तो अपना अमीष्ट सिद्ध होकर रहेगा।

एकलन्य नामक भिष्ठ द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या सीखने गया। पर द्रोणाचार्य ने भिष्ठ को पढ़ाने से इनकार कर दिया। आखिर उस भिछ नें द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर वह प्रेम से उस मूर्ति में प्राण --महाभारत प्रतिष्ठा की। और अच्छी तरह इसी मूर्त्ति के द्वारा शख विद्या सीली।

[ इस उदाहरण से मूर्त्ति पूजा की असिंछियत पर विश्वास करना चाहिये । ]

अर्मूर्त्त पूजक जैन खेताम्बर साधु लोग नरक में होने वाली हुईशाओं को चित्र हारा दिगामर छोगों को पापों से विरक्त करने की चेप्टा करते हैं। वस्तुतः उन चित्रों का प्रभाव भी पड़ता है, यह कोई भी सहदय मान सकता है।

िलव नारकीय चित्रों का प्रभाव मनुष्यों के हृदय पर पड़ता है, तय भगवान् तीर्थक्षर हेय की मूर्ति का प्रभाव क्यों नहीं पड़ सकता है, उनकी शान्त मुद्रा, योग पद्मासन आदि लक्षण और उनरे सद्गुण द्योगों के हृहय पर पर्यो प्रभाव नहीं डाल सकते, यह वात समक्ष में नहीं आती । अगर हर्य पर हाथ रखकर सोचा जाय तो कोई भी हर्यवान मूर्चि पूजा की महत्ता को स्त्रीकार करेगा।

अंग्रेजी सरकार ने अश्लील चित्रों को इसलिये वन्द कर दिया है कि उनके देखने से जनता का मानसिक पतन होगा। यही कारण है कि कोक शास्त्र के चौरासी आसन आज कल नहीं निकाले जासकते।

[ जब अभद्र चित्रों के द्वारा मानसिक पतन अवश्यम्भावी है तब भद्र पूज्य जनक तीर्थङ्करों की मूर्तियों से मानसिक ब्रह्मान क्यों नहीं होगा ? फिर मूर्ति पूजा से दिमाग मे खुजली क्यों ? ]

कुछ दिन पहिले की बात है, इलाह्याबाद के मासिक 'चाँद' ने फांसी अङ्क निकाला था। अंग्रेजी सरकार ने उसे जब्त कर लिया। क्यों ? इसलिये कि उसमें अंग्रेजी हुकूमत में जितने देश भक्त फांसी पर लटकाये गये हैं, उन सभी के चित्र और चिरत्र निकाले गये थे। और उन चित्रों एवं चिरत्रों के हारा अंग्रेजी सरकार के प्रति जनता की सामृहिक पृणा उठ खड़ी होती और अशान्ति फैल जाती।

[ इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि लोगों के सामने जैसे चित्र आते हैं, वैसा ही प्रभाव द्रष्टाओं के दीमाग पर पड़ता है, तब क्या कारण है कि धर्म-प्राण तीर्थङ्करों की प्रभावोत्पादक मूर्तियों द्वारा मूर्त्ति पूजकों के दीमाग पर तद्तुकुळ प्रभाव न पड़े। ]

अनुत्तरोप पातिक सूत्र में स्थानकवासी अमूर्त्ति पूजक उपाध्याय श्री आत्मारामजी ने अपना फोटो दिया है और उस फोटो के नीचे छिख दिया गया है कि यह फोटो परिचय के छिये है।

[ जब चित्र से परिचय प्राप्त किया जाता है, तब मूर्त्तिपूत्रक सम्प्रदाय भी तो तीर्थङ्कर भगवान् की मृत्तिं से परिचय ही प्राप्त करना चाहती है, उनके सहक्षणों, शुभ गुणों से अपने हृदय को परिचित ही कराना चाहता है, फिर इसमें आपन्ति क्यों ? क्या इसी का नाम असुया नहीं है ? ]

जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय, स्थानकवासी, तेरापन्थी भी सामायिक करने के समय श्री सीमन्धर स्वामी का वन्दन नमन किया करते हैं सीमन्धर स्वामी महा विदेह क्षेत्र में विराजमान है, ऐसा माना जाता है।

[ जब जिस वक्त सीमन्धर स्वामी का बन्दन नमन होता है, उस वक्त अगर सीमन्धर स्वामी का निर्वाण हो जाय, तब बन्दन नमन किसको होगा ? क्योंकि सीमन्धर स्वामी की सत्ता तो रहेगी नहीं तव तो मानना पड़ेगा कि बन्दन नमन काल्पनिक सीमन्थर स्वामी की लक्ष्य करके किया जाता है। फिर काल्पनिक तीर्थं हुरों की मृर्त्ति यों से एतराज क्यों ? ]

डपर्युक्त प्रमाणों और युक्तियों से यह सिद्ध हो जाता है कि मूर्त्ति पूजा युक्ति युक्त है। कोई भी धर्म कोई भी सम्प्रदाय ऐसा नहीं है, जो प्रकारान्तर से मूर्त्ति पूजा न करता हो, चाहे वह अपने को अमूर्त्ति पूजक वतावे चाहे मूर्त्ति पूजक ! वैदिक धर्मावलिन्यों के मन्दिरों में मृर्त्ति या है ही। मूर्त्ति पूजा के विरोधी आर्य समाजियों में भी दयानन्द की मृर्त्ति आद्र सज़ाव की दृष्टि से रक्षती ही जाती है उस मूर्त्ति के प्रति अगर कोई दूसरा आदमी अपमान जनक तरीके से पेश आये तो आर्य समाजी भी मर मिटेंगे। क्या यह मूर्त्ति पूजाका द्योतक नहीं है ? किसी समय सनातिनयों ने द्यानन्द की मूर्त्ति के लिये भरी सभा मे अपमान जनक तरीका अख्तियार किया था, जिसके लिये आर्य समाजियों की तरफ से खूय सुकदमा वाजी हुई थी।

मुसलमान लोग अपने को मूितं पूजक नहीं मानते, पर विचार करने पर मालूम होगा कि वे लोग भी काल्पनिक मूित्तं को मानते ही है। मुसलमान लोग पश्चिम दिशा की ओर मुद्द करके नमाज पढ़ते हैं। मुसलमानी रियासतों मे पिल्लम तरफ पेर रखकर सोना या टट्टी पेशाब करना कान्तन मना है। क्यों १ इसलिये कि मका मदीना पिल्लम में ही है। मका मदीना में कभी मोहम्मद साहेब थे, अभी तो नहीं हैं, तब फिर यह अनर्थक आवेश क्यों ? मानना पड़ेगा कि मानसिक कल्पना के द्वारा मोहम्मद साहेब की सत्ता (मौजूदगी) वहां मान कर ही बैसा आदर प्रदर्शित किया जाता है, फिर मूर्त्ति पूजा हुई कि नहीं ? कबर की पूजा, ताजिया रखना क्या मूर्त्तिका द्योतक नहीं है ?

ईसाई छोग भी गिरजे में शूळी का चिन्ह बनाते हैं, ताकि उनके उपासकों में उनके कर्त्तव्य की यादगारी का भाव बना रहे यह भी प्रकारान्तर से मूर्त्ति पूजा ही है। अगर इन छोगों में पूजा भाव की मौजूदगो नहीं है तो बड़े आदभी (जो कि कोई महत्त्वपूर्ण काम कर चुके हैं) का तैछ चित्र (प्रस्तर मूर्त्ति) क्यों बनाया जाता है १ सैकड़ों प्रस्तरे मूर्त्तिया (Images) तो कछकत्ते में ही दीख पड़ती है। इसी तरह देखा जाय तो प्रत्येक धर्म या सम्प्रदाय में मूर्त्ति की पूजा किसी न किसी रूप में हुआ करती है।

कट्टर अमूर्ति पूजक कहते है कि अगर प्रस्तर मूर्ति पूजनेसे मुक्ति मिलती है तो सिलकी ही पूजा क्यों न की जाय १ पर उन्हें सोचना चाहिये कि मूर्ति और सिल दोनों पत्थर जरूर है, पर दोनों में मान भिन्न भिन्न हैं, इसीलिये उसके फल भी भिन्न २ हुआ करते हैं। लड़की और पत्नी दोनों की जाति ही है, पर दोनों पर भिन्न दिव्दकोण पढ़ते हैं, सिल जिस काम के लिये हैं, इस काम के लिये उसका आदर है ही कहने का तात्पर्य यह है कि पूजा के सुदृद्ध सिद्धान्त पर कोई कीचड़ उद्घालकर अपने मिलन हृदय का ही परिचय देता है; इसमें कोई शक सन्देह की गुन्जाइश नहीं।

मूर्ति पूजा

जैन धर्म विनय मूलक धम है, जैन धर्म का सार विनय ही है। इसीलिये कहा गया है कि ' विणय मूछे धम्मे पण्णते''। इसिछिये तीर्थेङ्कर भगवान् की मूर्ति का जितना भी विनय किया जाय जीव को उतना ही उच कोटिका आत्म कल्याण प्राप्त होगा। फल्रुतः विनय करना या कराना महाधर्म है। इस विनय धर्म की तह में ऐसा विलक्षण रहस्य छिपा है, जिसकी बदौलत जीव एक दिन तीर्थं दूरकी उपाधि धारण कर सकता है, यही कारण है कि मूर्त्ति की पूजा द्रव्य और भाव के जरिये अनादि काल से होती चली आ रही है। अगर कोई शंका करता है कि द्रव्य पूजा अच्छी नहीं है, द्रव्य के द्वारा पूजा नहीं करनी चाहिये तो उसे सममाना चाहिये कि द्रव्य के विना भाव का प्राहुर्भाव नहीं हो सकता है, यह युहद्र सिद्धान्त है। किसी भी व्यवहारिक या घार्मिक कार्य मे पहिले द्रव्य क्रिया करनी पड़ती है, उसके बाद भाव का उदय होता है। उदाहरण छीजिये कि अगर कोई दूकानदारी करना चाहता है तो पहिले उसे दूकान खरीदनी पहेंगी या भाड़े पर छेनी होगी अथवा अपने पैसों से बनानी पहेंगी। बाद में दूकान को प्रभावी-त्पादक बनाने के लिये खूब सजाना पड़ता है। फिर खाता बही रखता है और दूकान का एक नाम रख कर विशुद्ध भाव से काम शुरु कर दिया जाता है अर्थात् छोगों में छेने देने का व्यवहार जारी हो जाता है। क चाळ दूकान के आधार पर तमाम काम होने छगते हैं। अगर दुकान ही नहीं हो, वही खाते ही नहीं ंतो देन छेन ही किसके नाम हो ? इसी तरह पहिले जीव को व्यवहार शुद्धि के लिये द्रव्य क्रिया करनी पड़ती है, बाद में भाव का उदय होता है। सामायिक करने बाठे को पहिले द्रव्य सामायिकके छिये आसन, पूंजनी, मुंहपत्ति, क्षेत्र से स्थान, उपाश्रय वा शुद्ध स्थान, काल से जितना लगाने की इच्छा हो, उतना समय ग्रहण करना पडता है। इसी को द्रव्य सामायिक कहा जाता है। अगर कोई चाहे कि भाव सामायिक ही आये, द्रव्य सामायिक न करना चाहिये तो वह उसकी गलती है। अनादि अनन्तकाल गुजर गया, अवतक भाव सामायिक का प्राहुर्भाव न हुआ और कब होगा, यह भी निर्णीत नहीं है। इसलिये ट्रव्य सामायिक करना ही चाहिये ताकि आधार पर एक दिन आधेय आ ही जायगा। (दीवार) रहेगी तो चित्र भी लिखा जायगा। पर भित्ति के विना चित्र कैसा ? इसी भांति साधु चारित्र हेने के समय गृहस्थ का वेष छोड कर साधु का द्रव्य वेष अर्थात् द्रव्य चारित्र, चोलपट्टा, चहर पांगरनी, ओघा मुंहपत्ति आदि साधु लोग धारण किया करते हैं। इसी का नाम द्रव्य चारित्र अथवा सामायिक चारित्र है। इसी द्रव्य चारित्र के द्वारा साथ वन्दे पुजे जाते हैं भाव चारित्र तो यथाख्यात चारित्र के आने के वाद आता है और वह यथाख्यात चारित्र जम्बू स्वामी के वाद विन्छिन हो गया अब यदि द्रव्य चारित्र भी लोग न लें तो साधु धर्म या साध्वी धर्म का विच्छेद हो जायगा। और यदि तीर्थक्कर भगवान का संघ ही नहीं रह सकेगा तब जैन धर्म का अस्तित्व कहां से रहेगा ? इसलिये द्रव्य चारित्र लेना परमावश्यक है। भाव चारित्र आयेगा भी तो द्रव्य चारित्र के आधार पर ही आयेगा। क्योंकि द्रव्य करणी से ही भाव करणी का उदय होता है। इसी तरह मृन्ति पुजक छोग मृन्ति की द्रव्य पूजा करते है। भाव पूजा का आविर्माव मनुष्पाधीन नहीं है। वह तो कर्मी की निर्जरा के ज्यर निर्भर है। परन्तु जब कभी भाव पूजा मानस पट पर आंकी जायगी द्रव्य पूजा की महत्ता से ही, द्रव्य पूजा के चिराध्यास से ही, अतएव द्रव्य पूजा करना परम आवश्यक है। पर द्रव्य पूजा विवेक, विचार एवं शाक्षानुसार ही करनी चाहिये। कोई शंका कर सकता है कि द्रव्य पूजा से तो पहिले पाप ही होता है, तब वह क्यों की जाय ? पर उसको सोचना चाहिये कि प्रत्येक द्रव्य किया में पहिले थोडा पाप ही हुआ करता है, वाद में धर्म होता है। कोई एक धर्मशाला बनाता है तो उसमें कीट पतझों के नाश जन्य पहिले क्रळ पाप ही होता है पर वाद में साधु महात्मा, दीन, दुःखी, पथिक वगैरह की सेवा ही से अपार धर्म संचित होता है। ठीक इसी तरह सामायिक, पोसह, प्रति क्रमण, व्याख्यान सुनना या देना, आहार पानी देना या हेना, इन सभी कार्मों में पहिले कुछ पाप होता है, बाद में असीम धर्म होता है। मूर्त्ति पूजा में भी यही वात छ। गृहै। फिर अगर थोड़े पाप के डर से अनन्त धर्म का लाभ नहीं किया जाता है तो इसे अज्ञानता छोड़कर क्या कहा जा सकता है। अगर किसी के सौ रुपये खर्च करने पर हजारका लाभ मिलता है तो वह क्या सौ का व्यय नहीं करेगा? यही कारण है कि मूर्त्ति पूजक छोग द्रव्य पूजा को छाभ का हेतु मानते हुवे और भावी लाम की बलवती आशा से मूर्त्ति की जल चन्द्रनादि उपकरणों से अब्द प्रकारी पूजा किया करते हैं। यही कारण है कि ज्ञाता सूत्र में "द्रौपदी ने सम्यक्त पाने के वाद पूजा की थी ' ऐसा उल्लेख मिलता है। प्रश्न व्याकरण में संवर द्वार और आश्रव द्वार का वर्णन चला है, जिसमें मूर्त्ति पूजा को संबर हार में माना है। राय पसेणी सूत्र में लिखा है कि प्रदेशी राजा के जीवने अन्नती होते हुए भी सम्यक्तु सहित मृत्ति पूजा की। आवश्यक सुत्र में कहा गया है कि 'कित्तिअ वंदिअ महिआ'' अर्थात् तीर्धक्कर भगवान् वन्दन करने योग्य है, कीर्त्तन करने होग्य है। और द्रव्य व भावसे पूजन करने के योग्य है इसी तरह और धर्मों में भी मूर्त्ति पूजा के प्रचुर प्रमाण मौजूद है। अतएव मूर्त्ति पूजा करना प्रत्येक गृहस्य श्रावक का परम कर्त्त ज्य है। विज्ञेष किमधिकम्।

ईश्वर कर्तृ त्व और जैन धर्म

ईश्वर ही की कुपा है कि हमारी आज दुनियां में हस्ती कायम है। वही सारे संसार का कर्णधार है, वही सुख दुख देता है, और उसीके आधार से सारा घटना चक्र चळता है। ईश्वर ही सब जानता है। वही हमें उसकी इच्छानुसार हमारे कर्मानुसार हमें भिन्न भिन्न परिस्थिति मे रख सकता है। कितना ही पापी पाप कर उसकी आराधना उसका जप कर उसे प्रसन्न कर मकता है। उससे वरदान छ उसी के सामने अपने स्वेच्छित कर्म कर सकता है। सारी दुनिया का खयाल उसे हर वक्त रहता है।

इतने बढ़े ब्रह्मांड का वह अपने अकेले हाथों संचालन करता है। यह उसकी परम शक्ति है। वह खुद मन माना रूप ले सकता है और मन मानी जगह पर जा सकता है। संक्षेप में वह सर्वगामी है, सर्व-व्यापी है, सर्व शक्तिमान् है और है सर्वज्ञ। धर्म से उसे प्रेम है दुनिया में अधर्म का फैलना उसे नापसंद है और इसीलिये जब अधर्म फैलता है तो स्त्रयं उस्पन्तक होकर पुनः धर्म की स्थापना करता है!

क्या ये वातें सच नहीं है ? क्या दुनियां को कोई बनाने वाला नहीं है ? यह नहीं हो सकता। क्यों कि बगैर बनाए कोई चीज नहीं बनती। दुनियां भी एक कार्य है और कोई भी कार्य जब तक उसका कोई कर्ता न हो वहां तक नहीं बन सकता आखिर कुंभार घड़ा बनाएगा तभी तो बनेगा। वरता तो कहां से बनेगा जब दुनियां में नाना चीजें है पैदा होती हैं तो अवश्य उनका बनाने बाला कोई न कोई है। और वह सर्व शक्तिमान केवल ईश्वर ही है। दूसरा नहीं।

दुनियां के कई दर्शन मत धर्म इस बात में सहमत है। कई उसे ज्ञानमय वताकर अमुक अंश में उसे सर्जक स्वीकार करते हैं। पर दर असल में यह रचना शक्ति क्या है इसका कुछ पता नहीं लगता। मनुष्य जब अपनी कल्पना की दौड़ को नहीं दौड़ा सकता वहां पर वह जाकर ईश्वराधीन होकर एक जाता है पर हमें देखना है कि इस मान्यता में कितना सल है।

पहले प्रश्न उठता है ईश्वर एक हैं या अनेक। ईश्वर कर्ज़ हव की मान्यता वाले एक ही ईश्वर मानते है। क्यों कि नाना ईश्वर मानें तो वैमनस्य उत्पन्न होने की सम्मानना है और फिर कौन सा काम कौन करे, किस पर किसकी सत्ता चले इलादि सब गड़ बड़ मच जाती है। अतः उनका मानना ठीक है कि ईश्वर एक है। जब हम यह स्त्रीकार कर लेते हैं कि ईश्वर एक है तो प्रश्न उठता है वह क्या उत्पन्न करता है और एक है। जब हम यह स्त्रीकार कर लेते हैं कि ईश्वर एक है तो प्रश्न उठता है वह क्या उत्पन्न करता है और क्या नहीं? सभी वह उत्पन्न करता है, ऐसा तो मानना पड़ेगा। अच्छा भी और दुरा भी। केवल अच्छे का उत्पादक मानते हैं तो अधर्म का उत्पादक वूसरे को मानना पड़ता है अधर्म का नाशक और धर्म का प्रवारक मानते हैं तो अधर्म का उत्पादक और धर्म का नाशक वूसरे को मानना पड़ता है। दूसरे को का प्रवारक मानते हैं तो अधर्म का उत्पादक और धर्म का नाशक वूसरे को मानना पड़ता है। दूसरे को स्वीकार करलें तो बड़ी गड़वड़ी मच जाती है अतः दोनों का उत्पादक मले भिन्न भिन्न परिस्थिति में हो पर केवल वही एक है।

ईश्वर का स्वभाव दयाछ है, महान् करुणा का यह महासागर है तो फिर दुनियां में दुःख क्यों दीख पड़ता है। यह दुःख की करूपना किस छिये सूसी। अपने करुणा सागर में यह दुनियां का खारापन कहां से आया। स्वर्ग से यह दुःख का चरसात क्यों बरसा ? और फिर से यह बात कि दुनियां में जब कहां से आया। स्वर्ग से यह दुःख का चरसात क्यों बरसा ? और फिर से यह बात कि दुनियां में जब अधर्म फैलता है तो में उत्पन्न होकर धर्मकी स्थापना करता हूं, कहां तक ठीक है। दुनियां के नाना आधर्म फैलता है तो में उत्पन्न होकर धर्मकी स्थापना करता हूं, कहां तक ठीक है। दुनियां के नाना आध्य प्राणियों को पहले जमाकर उत्पर से शान्ति के लिये तेल लगाने वाली बात ईश्वर करे यह कैसे माना जाय वह किस लिये प्रपंच करेगा ?

तव कई यह कहते हैं कि मतुष्य का स्वभाव कुछ ऐसा ही है वह ऐसे ही कर्म करता है इससे उसे दुःख उठाना पड़ता है, तब तो हम वही बात पूछते हैं, कि उसका ऐसा स्वभाव किसने वनाया ? तो एक मान्यता और आती है कि माया है जो उसे सत्य के रास्ते से घेर कर छे जाती है। जैसे रस्सी को एक मान्यता और आती है कि माया है जो उसे सत्य के रास्ते से घेर कर छे जाती है। जैसे रस्सी को ऐख कर सांप का अम हो जाना है। तो यह भ्रम माया हारा ही होता है, यह माया उसमें हुन्द स्वभाव उत्पन्न करती है और सत्याचरण से उसे विमुख करती है। पर माया को ईश्वर से भिन्न माना जाय

अयदा यदाहि धर्मस्य, स्कानिर्मवित भारत । अभ्युत्थानस्थर्मस्य, तदात्मानं स्वजास्यहम् ॥

या अभिनन। अगर अलग मानें तो दो चीजें साबित होती हैं और दूसरी चीज सावित होने पर वही दोप आ जायगा। ईश्वर की एक मात्र सत्ता नही रहेगी। और अभिनन मानें तो ईश्वर माया मय सावित होता है। तब फिर माया को मानने का मतलब ही क्या १ अतः ईश्वर का माया द्वारा पाप फैलाना, और पुनः आकर उसका उद्धार करना यह तो केवल प्रपंच ही है। और जब हम माधारण संसारी भी ठोक पीटकर थणा करने के कार्य को ही कारण की नजरों से देखते हैं तो इतने बड़े ईश्वर का यह कार्य कैसे ठीक माना जाय।

दूसरी बात जब दुनियां एक कार्य है तो उसका बनानेवाला कोई न को कोई अवश्य है। अर्थात् कारण वगैर कोई कार्य होता नहीं। पर हम पूछते हैं कि ईश्वर कैसा कारण है। घढ़े को बनानेमें कुँभार कारण अवश्य है पर वह उपादान कारण नहीं, केवल निमित्त कारण है। ईश्वर को कैसा कारण माना जाय ? दोनों कारण तो स्वयं हो नहीं सकते। शंकराचार्यके मत से ईश्वर दोनों कारण है, पर हम माया द्वारा फेंसाये गये है इससे स्पष्ट देख नहीं सकते, माया विपयक हम ऊपर विवेचन कर चुके हैं। माया को मानने से ईश्वर का एकत्य और उसका सर्व सत्ता सिद्ध नहीं होती। एक कारण मानते हैं तो दूसरे की उत्पत्ति कहां से हुई। अतः यह बात भी सिद्ध नहीं हो सकती।

फिर एक प्रश्न उठता है कि जितनी भी चीजें जिसकी रचना अग्रुक व्यक्ति या शिक्त द्वारा हुई है, उन सबका आदिकाल अवश्य है। जब वे नहीं बनी थी, और अग्रुक आदमी ने उसे वनाई उसके पहले क्या या आखिर विश्व की ईश्वर ने रचना की, उसके पहले की क्या कल्पना है ? विश्वका पूर्व रूप क्या था?

"प्रयोजनमनुहिश्य न मूढोऽधि प्रवर्तते" वगैर किसी खास हेतु के मूर्ख भी कोई कार्य नहीं करता है। ईश्वर का इतनी बड़ी सृष्टि रचने का क्या प्रयोजन था १ उसे क्या जरूरत पड़ी १ क्या उसे किसी ने प्रेरणा की ? क्या किसी ने आज्ञा की १ नहीं ऐसा तो हो नहीं सकता। क्योंकि वह खुद स्वतन्त्र है, उसपर किसी की सत्ता नहीं। अगर कहा जाय कि यह उसका स्वभाव है तो स्वभाव जन्य दोप उसमें आ गया वह स्वभाव से वाधित हुआ, और उसकी स्वतन्त्रता नष्ट हुई। उस पर प्रकृति की सत्ता कायम हुई।

सृष्टि रचना के पहले ईश्वर का क्या कार्य था, वह कहां रहता था। किन साधनों से उसने दुनियां वनार्ड। उसके परम कारुणिक होते हुए भी यह दुनियां दुःखमयी क्यों। उसकी एक मात्र सत्ता होते हुए भी यह नाना विधि गति विधि और प्रपंच क्यों ? इत्यादि प्रश्नों का कहां कुछ जवाव है।

एक और भी वात कि ईश्वर स्वयं कहां से आया ? अगर ईश्वर की उत्पत्ति नहीं मानते हैं तो वह भी कुछ नहीं रह जाता है, आखिर तुमही तो कह रहे हो जो चीज है. कार्य है उसका कोई न कोई कर्चा अवश्य है, तो ईगर क्या कोई चीज नहीं, कैसा भी उसका स्वरूप क्यों न हो पर कुछ न कुछ है तो अवश्य तो वह कहां से आया ? यह कहा जाय कि वह अनादि है तो फिर इस दुनिया को भी अनादि क्यों न मान छिया जाय ईश्वर के जिस्से यह सारा प्रांच रचकर उसे दुनियाबी क्यों बनाया जाय ?

ईश्वर का स्वरूप और आकार कैसा माने ? अगर यह कहा जाय कि वह सिचदानद मय है तो प्रत्यक्ष नहीं दिखता। जो सिचदानंद मय होगा वह प्रपंच में क्यों पड़ेगा, तो दोनों चीज भी परस्पर भिन्न है। जो दुनियादारी को समभेगा वह अपने उस चक्त के स्वभाव से दृष्टि से सिचदानन्द मय नहीं हो समता। उससे भिन्नत्व मानने से स्वरूप दोप जाहिर है। ईश्वर का आनार भी तो मानना

होगा। क्योंकि आकार नहीं मानें तो अरूपी सावित होगा और स्वयं अरूपी रूपी पदार्थों का निर्माण कर ही नहीं सकता। निश्चित आकार मानते हैं तो उसका स्थान क्या। क्योंकि रूपी पदार्थ कहीं न कहीं अवस्य स्थित है। अगर उसका भी स्थान है और निश्चित है तो वह कहां १ ऐसा मानने से उसके सर्व व्यापकत्व में दोष आ ही जाता है।

अब जो यह कहा जाता है कि ईश्वरको मनमाने रूप धारणकर छेना है तो जब वह अपनी पूर्वावस्था को छोड़ दूसरे रूप में आता है तो एक अंश से आता है या सर्वांश से। एक अंश से आता है तो वह शक्ति नहीं। सर्वांश से आता है तो दूसरी बाजू कौन ध्यान देता है।

इस तरह जो ईश्वर कर्मृत्व में जो हेतु इस मान्यता वाले बनाते हैं वे कैसे भी सिद्ध नहीं होते हैं।
इस दुनिया का वास्तव में कोई बनाने वाला नहीं है। यह अनादि है अनन्त समय तक इसकी यही
रफ्तार रहेगी! उनकी मान्यता मूजब ईश्वर करता है तो वह केवल विचार मात्र, जैसे सोने के नाना
रूप देकर वह मिन्न भिन्न जेवर बना देता है, दर असल में वह सुवर्ण को उत्पन्न नहीं कर सकता। एक बात
और है कि दुनिया में जितने भी पदार्थ मूल भूत विद्यमाग है उनका नाश नहीं हो सकता और जो पदार्थ
नहीं है उनकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। "नासतो जायते भावः, न भावोऽसद जायते।" सत् पदार्थो
में नाना विकार होकर उनका कितनी ही तरह से रूपान्तर हो जायगा, पर परमाणु रूप में भी वह चीज
कायम रहकर अपने असली पन में स्थित रहेगी। और रूपान्तर पर रूपान्तर लेके वाद भी वह कभी
न कभी अपने रूप को शहण कर लेगी। अर्थात् उसका विनाश नहीं होगा। और तो चीज है ही नहीं,
उसे कोई पैदा नहीं कर सकता इसलिये जैन दर्शन की यह मान्यता कि इस जगत् का कोई बनाने वाला
संचालन करने वाला नहीं है विलक्षक ठीक है। ईश्वर तो ज्ञान दर्शन और चारित्र की पूर्णता को पाकर
कर्म रहित हो आत्मतत्त्व का चिन्तन करता हुआ सिद्धनान्द मय है। उसे दुनिया के साथ कोई मतलब
नहीं। ईश्वर को भी यह सब प्रपंच रहे तो फिर क्यों ईश्वर माना जाय वह तो मुक्त है।

# आत्म निन्दा

हे जीव! तेरा जिन धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन करके निर्वाण प्राप्ति करने के लिये आना हुआ है, क्या उन क्रियाओं में तू अपना सारा समय लगा रहा है ? तुमे इसका ध्यान कहां ? तू तो उन खोटी अद्धाओं के सिकब्जो में फंसता जा रहा है जो तुमे पक दिन सर्वनाश की भीषण परिस्थित में खड़ा होने के लिये वाध्य कर देंगी। तू उन कार्यों को कर लेने की हिम्मत बटोरा करता है एवं प्रवृत्ति बड़ा रहा है जो करने लायक या होने लायक नहीं हो सकते। तुमे षट्रसों की नित्य नयी चाह पैदा होती रहा है जो करने लायक या होने लायक नहीं हो सकते। तुमे षट्रसों की नित्य नयी चाह पैदा होती रहती है। तेरी काम वासनाओं की अविद्धिन्न धारा उत्ताल तरङ्कों की माला से सुसजित होती हुई रहती है। तेरी काम वासनाओं की अविद्धिन्न धारा उत्ताल तरङ्कों की माला से सुसजित होती हुई रहनों दिन बढ़ती ही जा रही है उसका कहीं अवसान नहीं दीखता। है आत्मन्! क्या तू इन हिनों दिन बढ़ती ही जा रही है उसका कहीं अवसान नहीं दीखता। है आत्मन्! क्या तू इन कामों से अपनी भलाई सोचता है? तू सच समभः अगर तेरी यही रफ्तार रही तो इसमें शक करने की कोई गुआइस नहीं कि इस दुर्लभ मनुज्य चोले में आकर भी तू आत्म कल्याण प्राप्त करने से विच्ता ही रहेगा। जो बड़ा ही खेद जनक विषय है।

ह न कर्नुं त्वं नकर्माणि, लोकस्य स्वाति प्रसुः। नकर्म फल सयोग, स्वाभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥ परमात्मा किसी मनुष्य का न करनेवाला है न कर्म और न वह कर्ता को फल देनेवाला है यह सब स्वभाव से ही है। गीता अ०५।

बढ़े दु:ख की बात है कि तू सामायिक पोसह और देसाव गासिक में भी दुनियाबी चिन्तनाओं को भली भांति छोड़कर मन नहीं लगा सकता है। सम्यकु मोहिनी, मिश्र मोहिनी एवं मिथ्यात्व मोहिनी के चमकीले सौन्दर्य पर त अपने को न्योछाबर करने के लिये तल रहा है। काम राग, स्नेह राग और दृष्टिराग से त ने वडी दोस्ती जोड रक्खी है। तुसे कुदेवों में भक्ति, कुगुरुओं में श्रद्धा, कुधर्म में आस्था करने की बात जरूरी जंचने लग जाती है। किसी समय तू ज्ञान विराधना दर्शन विराधना, और चारित्र विराधना में तलीन हो जाता है। जब तेरे शिर कठिनाइयों का जबर्दस्त बोम्ता आ जाता है तव तू मन दण्ड, वचन दण्ड, काय दण्ड, हास्य, रति, अरति, भय, शोक और दुगंछा का आश्रय वन /जाता है। फलतः कृष्ण, नील, कापोत लेश्यायें भी दःखों के घक्के देने लग जाती हैं। ऋदिगारव. रस गारव. शाता गारव तेरे सामने अकड कर खंडे हो जाते है। माया शल्य, नियाणा शल्य और मिथ्यात्व दर्शन शल्य भी तेरह काठियों की सेना बटोर कर मैदान में उत्तर आते हैं। अठारह पाप स्थानकों ने तुमे अपनी अमेद्य किलेबन्दी में कैद कर रखा है। अनन्तानुबन्धी क्रोध, अनन्तानुबन्धी मान, अन-न्तानवन्धी माया. और अनन्तानवन्धी लोभ: अप्रत्याख्यानी क्रोध, अप्रत्याख्यानी मान. अप्रत्याख्यानी माया और अप्रत्याख्यानी छोभः प्रत्याख्यानी क्रोध, प्रत्याख्यानी मान, प्रत्याख्यानी माया और प्रत्या-ख्यानी लोभ; संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया और संज्वलन लोभ; इन चार चौकडियों के आवर्त्त में त हमेशा चकर काटता रहता है। जब तेरे सामने इतने विघ्न वाधायें हैं और तू स्वयं निच्चेष्ठ निज्योधात होकर पाप एवं दुराचार के गहरे गर्त्त में उत्तरोत्तर फंसता जा रहा है, तब भव बन्धन से मुक्त होकर तम्मसे अपने रुक्ष्य पथ का पान्थ वनने की आशा कैसे की जा सकती है ? सच तो यह है कि तू अपने को-अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता ही नहीं। पहचाने भी कैसे ? इन्द्रियों का विश्वस्त गुरुाम होने के कारण तुमे मालिक के हक्स बजाने से फर्सत कहां ? निरन्तर दूराचारों की हल्ड बाजी में शक्त चोट खाकर तेरे हृदय की आंखों में सर्वाङ्गीण फोले पड गये है, फिर उसमें पहचान करने की शक्ति कहां से ?

यही कारण है कि तेरे गुणस्थान आज तक फल दे नहीं सके हैं, धेर्यगुण आ नहीं सका है, तृष्णा की बढ़ती ज्वाला शान्त नहीं हो सकी हैं; तू अस्त ज्यस्त हो रहा है। जैसे सागर में लहर पर लहर आया करती है, उसी प्रकार तेरे मन में कामनाओं की हिलोरें अनवरत जारी रहती है। तू बड़े से बड़े ओहदे के लिये लालायित रहता है। ऐसी दशा में असली उद्देश्य की सिद्धि की चेध्टा तू क्यों करने लगा ? एक तो तू धार्मिक क्रियायें करता ही नहीं, अगर करता भी है तो शून्य मन से। और शून्य मन से की गई धार्मिक क्रियायें आकाश में चित्र लींचने की भांति ज्यर्थ हो जाती हैं। जिनसे कोई लाभ नहीं, फेवल ज्यवहार साधन मात्र है। ज्यवहार भी जीव के लिये कल्याणकारी जरूर है किन्तु निश्चय शून्य वह भी अभिष्ट फल का प्रदायक नहीं हो सकता है। हे चेतन, ज्यवहार मार्ग में जत उपवासादिक तपस्यायें नितान्त आवश्यक है, अन्यथा महान् पापों का संचय होता है। इसलिये स्थिर चित्त से व्रत अपवासादि कार्यों का सम्पादन किया कर। पर याद रख, अगर मन की स्थिरता न होगी तो वह (चित्त) इष्ट सिद्धि के विरुद्ध कृत्सित चिन्तनाओं में फॅसाकर तुभे पथन्नष्ट वना देगा। क्योंकि शास्त्रकार ने खुला चैलेक दे रखा है—

अर्थात् मनुष्यों का मन ही वन्धन और मोक्ष का कारण होता है। अगर मनुष्यं मन को स्थिरता का सचा पाठ पढ़ाकर मुक्ति पथ का अन्वेषक पन्थ बनाता है तो निश्चय है कि वह उसे मुक्ति के द्वार तक पहुँचा देगा। और अगर विपयों के असमतल मैदान में तुरङ्कोपम मन की बागडोर छोड़ देता है तो कभी न कभी अपने मंजिल के विरुद्ध पतन के गम्भीर गर्त्त में फेंक देगा, जहां से उद्धार पाना दुश्वार हो जायगा। इसल्पि सबसे पहले चित्त को स्थिर एवं विषय बिमुख बनाना तेरा एकान्त कर्त्तन्य है। इसी सिल्लिखे में तुमे एक बात और समम लेनी चाहिये कि तप, संयम, आदि कार्यों का नहीं करने बाला तो पापी है ही, पर करके तोड़ देने बाला तो महा पापी है।

है जीव ! तू भी महा पापी है, क्योंकि तू अपने संकल्प के प्रतिकूछ अनन्तकायों एवं अभक्ष्यों से भोछा वना हुआ है । जर्दा, भांग, अभीम, तमाखू आदि मादक पदार्थों का सेवन करके "पचक्खाण" नियम तू ने तोड़ डाछा है । वता कैसा भयद्भर पाप कर रहा है १ शीछ और सन्तोप को तू अपने हृदय में स्थान ही नहीं देता। फिर तुमें वह सचा सुख आनन्द कैसे मिछेगा! जिसके छिये कि तुमें कितने जन्म जन्मान्तर गुजारने पड़े हैं। पर आज तुमें उन सब वार्तों की सुघ कहां १ तू तो पुद्र उपदार्थ के पीछे अस्त ज्यस्त हो रहा है।

तू सममता है कि मेरे पास बड़े बड़े रह है, वड़े बड़े निधान हैं, रसायनों से परिपूर्ण कोयल (यैली) है। मेरे पास चित्रावेली और अमृत गुटिका है। मेरे पास ऐसे पेसे मन्त्र है कि बड़े बड़े विवाओं को भी काबू में कर सकता हूं एवं राजा, महाराजा, शाहंशाह जो चाहूं वन सकता हूं। या धनोपार्जन करके संसार में सबसे ऊंचे दर्जे का धनी मानी वन सकता हूं। ऐसी ऐसी विवार धारायें न जानें, कितनी तेरे हृदय में हिमांचल से हमेशा ही तरिक्वत होती रहती हैं एवं उसके अनुसार तू प्रयक्षवान भी बनता रहता है। पर क्या तेरे ये सब विचार कभी भी पूरे हो सकते हैं? या पूर्ण होने पर ही लोभ श्रृंखलायें टूट सकती हैं? कभी नहीं; जब दशवें गुण स्थान पर पहुंचे हुवे जीव के भी लोभ की इति श्री नहीं होती, तब तेरी लोभ श्रृंखलता के टूटने की क्या आशा ? तुसे वह मालूम होना चाहिये कि—

न जातु कामः कामना मुपभोगेन शम्यति।। तिवसा ऋणा बर्ल्सेव मूर्यएवामि वर्ष्ट्रते।।१।।

इच्छाओं की पूर्त्ति से वे शान्त नहीं होती, घृत डालने से आग की शान्ति नहीं होती, प्रत्युत वढती ही जाती हैं।

हे आत्मन् ! छोभ की शान्ति तो तब होगी, जब तू सन्तोप का अनुपूरण करेगा। किसी ने सच कहा है—

"जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान"।

है चेतन! तू खूब सोचा करता है कि इस संसार में मेरे इतने कुटुम्ब है, कि मेरा इतना वडा परिवार हैं, मेरा ऐसा घर, मेरे ये पिता, माता, पुत्र, कलत्र प्रभृति है, यह मेरी धनदोलत है। पर इन्हीं विचारों के कारण तू ने अपनी संसार यात्रा में चौरासी लाख घर बना डाले, जिनमें कि तू अनवरत चिक्कर काटता रहता है। फिर भी तेरी मृत तृष्णा आज तक शान्त न हुई। क्या तू अपने अतीत के कार्यों को कभी सोचता है ? तू संसार नाटक के रंगमंच पर मा, बाप, स्त्री पुत्र इत्यादि सम्बन्धां में कार्यों को कभी सोचता है ? तू संसार नाटक के रंगमंच पर मा, बाप, स्त्री पुत्र इत्यादि सम्बन्धां में

असंख्य भूमिकाओं को लेकर आ जा चुका है, पर तेरे वे आज कुटुम्ब कहां है ? जरा हृद्य पर हाथ रखकर विचार करके तो देख !

एक ठग की छड़की ने, जो वश्वक वृत्ति के वह पर पैसा पैदा करती थी और अपने पितृ परिवार का भरण पोपण करती थी, अपनी मा से पूछा, मा में जो पाप करती हूं उनके भोक्ता कौन कौन होंगे? मा ने कहा, वेटी, जो करेगा वह भोगेगा। ठग की वेटी विस्मित रह गई उसने छुड़थ होकर कहा मा, यदि ऐसी ही वात है, तब सांसारिक स्वार्थ को घिकार है! मूठी माया ममता को धिकार है! और धिकार है उस मृग नृष्णा की, जिसके वश में आकर मनुष्य वास्तविकता को भूछ जाता है। मा, मैं अब इस निश्चित सिद्धान्त पर जा चुकी यह भूठा संसार न किसी का है, तथा, न होगा।

हे जीव ! तुम्में भी उसी तरह सोचकर ठोस सिद्धान्त पर आना चाहिये। तू ने मनुष्य का दुर्लभ शरीर, आर्य देश, उत्तम कुछ, पूर्ण आयु, आवकपन और जिनेश्वर देव का धर्म, बड़े भाग्य से अत्यन्त पुण्य से प्राप्त किया है; पर तू इसका दुरुपयोग कर रहा है, सांसारिक क्षण विनश्वर सुखों में छीन होकर इनका असली उद्देश्य ही नष्ट कर रहा है। एक मूर्ख ब्राह्मण ने जिस तरह कौवे को उड़ाने की गरज से दुर्लभ चिन्तामणि रत्न को फेक मारा और इच्छा की पूर्त्ति करने वाली वस्तु की परवाह न की, ठीक यही हालत अब तेरी है, पर मूर्ख ब्राह्मण तो अपनी मूर्खना पर खूब शरमाया, पर क्या तुम्में आज अपनी करनी पर तिनक भी शर्म आती है ? हे आत्मन ! लोक परलोक दोनों जगह सुख शांति देने वाले जैन धर्म के पवित्र प्राङ्मण में आकर भी तूने मन्द बुद्धि वाले कुगुहओं के बाह्याडम्बर में फंसकर उस (जैन धर्म) का स्वरूप ही बिगाड़ डाला, फलतः अपने लोक, परलोक, दोनों को बिगाड़ डाला; वता, तेरे निस्तारे का अब क्या रास्ता होगा ?

है नित्यानन्द स्वरूप! मान रूपी पागल हाथी के उत्तर चढ़कर बाहुबल जी मुनि गौरवान्वित हो रहे थे, उन्हें संस्वालन मान को उदय था। निश्चय था कि उन्हें वह प्रमत्त इस्ती—अपनी अमिट मस्ती में कहीं न कहीं खतरे में गेर देता, उनका सर्वनाश हो जाता। पर संयोग वश ब्राह्मी मुन्दरी जी साध्वी जैसी उपदेष्ट्री मिल गई, फलतः वे बाल बाल बच गये। पर तुम्में तो वैसा होने की भी आशा नहीं है, कारण एक तो सफल उपदेशक का मिलना ही आजकल के जमाने में असम्मव प्रतीत होता है। दूसरा प्रस्थं अत्यन्त गहरे कीचड़ में फंसा हुआ है गिरी अवस्था में है, जहां से उद्धार होना बड़ा कठिन है। प्रमहाकोधी, महामानी, महामायी महालोभी बना वैठा है। त् जानता है, शास्तकार ने क्या कहां है १

"कोहो पियं पणासेई माणो विणय णासणो ॥ माया मित्ताणु णासेई होहो सच्य विणासओ ॥१॥"

अर्थात् क्रोध चिर कालिक एवं स्थिर प्रीति को भी नष्ट कर देता है। अभिमान विनय धर्म का नाश कर देता है। कपट मित्रता का अन्त कर देता है और लोभ तो सारी कल्याण परस्परा को खतम कर डालने वाला है।

इसिलिये घीरे घीरे इन चारों का परित्याग करने में ही तेरा कल्याण होगा। महाराजा भरत पक्रवर्त्ती छः खण्ड के भोक्ता, चौदह रक्ष के धारक चौसठ हजार राणियों के रमता, देवी देवताओं से प्राप्त साहाय्य थे। पर वह दुनिया की सस्पदाओं को तमाम अनर्थो की जड़ एवं अनित्य समफ कर उससे दूर होने के लिये समय समय पर बड़ी चेष्टा करते ये निरन्तर मानसतल पर विराग का अक्कुर जमाकर उसे बढ़ाने की तरकीव सोचा करते थे। इसी ग्रुभ भावना के सहारे उन्होंने केवल झान और केवल दर्शन प्राप्त करके अपनी आत्मा का कल्याण सम्पादन कर लिया। हे स्वप्रकाश! बचा तृ उनकी वरावरी करने की हिम्मत रखता है। १ अगर रखता है तो तेरी गलती है तेरी हिम्मत पस्त हो जायेगी। जानता है १ वह त्रेसल शलाका के पुरुप चौथे आरे के जीव थे, उनकी वरावरी करना पंचम काल के जीव के लिये सामर्थ्य से परे की चीज नहीं तो किलन जरूर है। फिर भी उद्देश्य सिद्धि के लिये सफल चेष्टा तो होनी चाहिये; पर तुक्ते क्या फिक्टर है १

हे झान स्वरूप ! तू पूर्ण चैतन्यवान है और कर्म है चैतन्य शून्य । ऐसे वैषम्य के होते हुये भी तू किस के साथ संचय परिचय करता रहता है। क्या यह ठीक है ? संसार का निश्चित नियम है कि छोग बराबरी बांछे के साथ ही संचय परिचय, बैठना उठना इत्यादि सांसरिक क्रियाऐं किया करते हैं; पर तेरी तो ''सुरारे स्तृतीयः पन्थाः" इस छोकोक्ति को चरितार्थ करने वाळी नीति ही निराछी है।

पर इस तेरी अज्ञानता का फल तेरे लिये ही बुरा हुआ है और होगा। तेरी अवस्था तेरे स्वरूप की ठीक विपरीत दिशा की ओर प्रवाहित हो रही है। तू चेतन से जड़, ज्ञानी से अज्ञानी, बलवान से कमजोर हो गया, हो रहा है और अगर यही रफ्तार रही तो तेरा भविष्य नितान्त दुःख मय होगा। इन कमों ने चौब्ह पूर्वधारी सुनियों को गिराया। ग्यारहवें गुण स्थान पर चढ़े हुए भुवन भानु केवली जी महाराज श्री कमल प्रभाचार्य आदि कतिपय जीव भी इसी कमें की संगति से गिर चुके हैं। यहां तक कि महा विदेह क्षेत्र के मनुष्य भी इस कमें के सुरे प्रभाव से अपनी दृढ़ता के अभाव के कारण वरी न रह सक, तब तेरी क्या ताकत है कि इस कमें की संगति करते हुए भी तू कल्याण पथ का पाथ बना रह सकेगा। सच तो यह है कि तू आठ कमें और अद्वाबन प्रकृतियों के जाल में इस प्रकार जकड़ गया है कि तेरा छूटना अत्यन्त किन हो गया है।

इसी तरह ऐसा जबदस्त मोह कर्म तेरे पीछे हाथ घोकर पड़ा है, जिसका जीतना बहुत मुश्किल है कारण, इस मोह कर्म की सत्तर कोड़ा कोड़ियां सागरोपम की स्थिति दुस्तर नित्यों को तरह अथाह एवं मयद्धर है, जिनका पार कर लेना आसान काम नहीं। तुमे तो न जानें कितने जन्म लग जायंगे। पर स्थित है जिनका पार कर लेना आसान काम नहीं। तुमे तो न जानें कितने जन्म लग जायंगे। पर तुमे तो इसका विचार करना परमावश्यक है कि इस मोह पिशाच के हाथ से छुटकारा कैसे होगा ? है चेतन! तेरी रिहाई का तरीका जरूर है, पर करेगा तो वही! अगर तू चारित्र धन का धनी होकर चेतन! तेरी रिहाई का तरीका जरूर है, पर करेगा तो वही! अगर तू चारित्र धन का धनी होकर शास्त्रों की प्राप्ति, सद्बुद्धि का अर्जन, सन्तोव का धारन और तृष्णा का सुतरा त्याग करे अप्रसर होता हो तो निस्तंदेह तेरे उद्धार का मार्ग सुप्रशस्त हो जायगा और तू अपने लक्ष्य तक वेशक पहुंच जायगा। यह महा पुरुषों के मस्तिष्क से सुप्रस्त अटल सिद्धान्त है।

धन्य थे वे साधु मुनिराज, जो पश्च मुमित, तीन गुप्ति से समिन्यत छः कार्यो के पालक, सात महा-भयों से निर्भय, अष्टमदों के विजेता, नी बाड़ से ब्रह्मचर्य के पालक, दश प्रकार के यित धर्मों के धारक, द्वादशाग चाणी के ज्ञाता, मिताहारी, मले मलीन गात्री, लुश्चन और मुण्डन पर समभावी, वयालीस वृषण को टाल कर आहार के प्राही, चरण सप्तित करण सप्तित चारित्र के पालक थे। धन्य होगा वह दिन, जिस दिन ऐसे महा पुरुषों का त्रिकाल कल्याणकारी दर्शन होगा।

है आत्मन् ! इस प्रकार के तेरे चारित्र कव उदित होंगे ? होंगे भी कैसे ? इनके लिये तू चितवान् ही कहां है ? तुमें तो संसार में अभी चक्कर काटना अभीष्ट है। हे जीव, अगर तुमसे ये सब काम न वन पड़े तो देश विरित संयम पालन करके अपने कल्याण का सेाधन कर । प्रातःकाल उठकर सामायिक, प्रित क्रमण, देव दर्शन, द्वादशाङ्गी वाणी का अवण, देव वन्दन, गुरु वन्दन, दानशील भावना इत्यादि नित्य क्रियायें अच्छी तरह किया कर । सायङ्काल में देव सी प्रतिक्रमण एवं पर्व तिथि में पौषध प्रेम पूर्वक किया कर । इन सब कामों का नतीजा यह होगा कि कभी तेरे परम कल्याण साधक सज्ज्ञान का उद्य होगा। पर तू यह सब क्यों करने लगा! तुमें तो बुरे कामों की ओर ही वह जाने की वान पड़ गई है। और बुरे कामों के परिणाम बुरे ही होते हैं। तब तेरी सुन्यवस्था कैसी ? इसल्ये हे चेतनानन्द, तू जरा अपने स्वरूप को पहचान एवं सच्चे आनन्द की तलाश कर। इस दुनियाबी प्रतिपन्न नाशमान आनन्द की ओर से अपना मुंह मोड़।

पढ़ने गुणने में प्रवृत्त होकर चित्त निरोध करने की आवश्यकता है। इसी ठोस नौका के सहारे भव-सागर पार करना होगा। तू ने श्रुत ज्ञान की भक्ति नहीं की। तब तुमे आत्म ज्ञान कैसे पैदा हो। जो जीव आत्म ज्ञान की भक्ति करते हैं और इस भक्ति की बदौछत केवळ ज्ञान केवळ दर्शन पाकर अष्ट कर्म बन्धनों से छुटकारा पाकर मोक्ष प्राप्त कर होते हैं। यदि अब भी तेरा विचार मोक्ष प्राप्ति का है तो सच्चे हृदय से धार्मिक क्रिया कर।

सभी प्राणियों में समता का वर्त्ताव कर, जिससे तेरे सामायिक की सफलता में सहायता मिलेगी। क्योंकि कहा है—

"समता सन्व भूष्सु तस्तसू थावरे सूज॥ तस्स सामाइयं होई इमं केवळी भासियं॥"

अर्थात् जो स्थावर जङ्गम सव में अपनी आत्मा के समान मुख दुःख का घ्यान रखता है. उसकी सामायिक सिद्ध होती है। यह केवळोयों ने कहा है। और ज्ञानी पुरुषों ने आत्म कल्याण के ळिये केवळ एक सामायिक का सम्यक् सम्पादन करना पर्याप्त कहा है। हे स्वप्रकाश, त् ने अपने जीवन में सैकड़ों सामायिक कीं, फिर भी कुछ लाभ की मल्लक अब तक नहीं मिलो। वास्तविक सामायिक आनन्द, कामदेव, शंख, पुस्कळी आदि उत्तम पुरुषों ने की थी। जिससे कि उनका उद्धार हो गया। उसका कारण क्या था १ वे लोग अपनी आत्मा को समता में रखकर शान्त वृत्ति के साथ व्यावहारिक कार्य में रहते हुए भी अन्तरात्मा काही ध्यान किया करते थे। तू ने समस्त जीवन में विह्रात्मा का ध्यान करके अपने वल और पौरुष की अज्ञानता के अतुल कीचड़ में फंसा दिया; फिर क्यों तेरी सामायिक सफल हो सकेगी है। कहा है—

काम काज घर का चितवे, निन्दा विकथा कर खिज रहे।। आरत रौद्र ध्यान मन धरे, क्यों सामायिक निष्फल करे॥१॥

वस्तुतः ऐसी सामायिक कभी नहीं करना चाहिये, क्योंकि इससे कुळ होने जाने का नहीं। असल सामायिक तो यह है—

> अपना पराचा सरखा गिर्ने, कञ्चन पत्थर समबड़ घरें ॥ सांची थोड़ो आतम भणे, ते सामायिक शुद्धे करें ॥१॥

शुद्ध भाव से सम्पादित सामायिक वस्तुतः संसार के उलमे वन्धन को काटने के लिये तीक्ष्ण तलवार है। पूनिमया सेठ को ऐसे ही सामायक की बदौलत आत्म कल्याण प्राप्त हुंआ था।

है आत्मन ! तू किसी की बुराई चाहनाछोड़ दे, क्यों कि वह तेरे लिये ही दुःखदायी सिद्ध होगी।

एवं उससे तेरी वह शक्ति नष्ट हो जायगी जो सहाय्य पाकर कभी न कभी तुभे छक्ष्य की ओर अप्रसर करेगी। इसी तरह मिथ्या भाषण भी भयङ्कर पाप है—आत्म विनाश का प्रधान कारण हैं। इसि छिये जो कुछ बोलना हो सचाई के साथ बोल। कहा है — 'सस्यपूर्त वदे इंक्यम्' अर्थात् सस्य से पितृत वाक्य बोले। सस्य भाषण आत्मोद्धार का सफल सहायक और आत्मस्य दोषों को प्रकट कर उनसे मुंह मोड़ लेने के लिये विवश कर देता है। हे आत्मन्। यद्यपि तू निरीह, निस्नाप, नित्यपुद्ध, दुद्ध, अधिनाशी अयोगी इत्यादि उपाधियों से विभूषित है, इसि छिये कोई तेरा कुछ बना विगाड़ नहीं सकता है, किर भी अप्ट कर्म स्त्यी स्वाभाविक शत्रुओं के फल्दे में फैस कर अपने स्वस्य को छोड़कर पर स्वस्य में रमण कर रहा है, जिसका नतीजा यह हुआ कि निकट भवी से दूर भवी और अभवी तक पहुंच गया है यही कारण है कि संसार का प्राङ्मण बहुत लम्बा चौड़ा मालूम होता है। परन्तु अपने सच्चे स्वस्य को पाने के लिये तुभे सुद्ध अद्धा की आवश्यकता है। जब तक तुभे सची श्रद्धा नहीं आतो है तब तक निर्वाण पद बहुत दूर है। कहा है— ''सद्धा परम दुइहा' श्रद्धा बड़ी दुर्ल में है। श्रद्धा के विना सम्यक्ष्व नहीं आ सकती और सम्यक्ष्व के विना आत्म ज्ञान सम्भव नहीं। सम्यक्ष्व के स्वरूप का वर्णन शास्त्र निर्वा है

सर्घाईं जिणेसर भासियाइं वयणाइं णण्हा हुंति ॥ इय बुद्धि जस्स भणें सम्मत्तं निश्चलं वस्स ॥

अर्थात् जिनेश्वर देव ने जो वचन अपने मुखार विन्द्र से कहे हैं, उन वचनों को विल्कुल सूठ न समक्षने वाली बृद्धि जिस जीव के मन में हो, उसका सम्यक्त निश्चल है।

इसिलये अच्छी तरह शोच विचार कर श्रद्धा को हृदय में स्थान है, श्रद्धा से सम्यक्तृ का सम्पादन कर। सम्यक्तृ से आत्म ज्ञान हो जायगा पर यह हमेशा याद रख कि दूसरे की निन्दा विकथा करना महा पाप है, इसिलये दूसरे की निन्दा करना छोड़कर अपनी निन्दा किया कर, जिससे तू दुई त और दूराचारों से सुड कर अपनी भलाई की राह पकड कर अग्रसर हो सकेगा।

आतम निन्दा आपनी ज्ञानसार मुनि कीन ॥ जो आतम निन्दा करेसो नर सुगुण प्रनीण ॥१॥

# बारह मास पर्वाधिकार

## वैत्र मास पर्व

चेत्र मास में चेत्र सुदि ७ से चेत्र सुदि १५ पर्यंत ये १ दिन जैन शास्त्रानुसार अति उत्तम माने गये हैं। क्यों कि बारह मास में छः अद्वाई महोत्सव आते हैं जिसमें चेत्र और आसोज के दोनों अद्वाई महोत्सव शाश्वत हैं। चेत्र सुदि अप्टमी से चेत्र सुदि पूनम तक और आसोज सुदि अप्टमी से असोज सुदि पूर्णमाशी तक चारों निकायों के देवता समिमिलत होकर आठवें नंदीश्वर द्वीप में जाते हैं। वहां जिन भग-चान् की अप्ट द्रव्य से पूजा रचाते हैं, मांगलिक, गान, वाद्य एवं नाटक आदि करते हैं, इस प्रकार अनेक प्रकार की भक्ति करते हुए नवमें दिन अपने अपने स्थानों को चले जाते हैं। तीसरा अद्वाई महोत्सव आषाढ़ चौमासे की चलदस (१४) से ४२ दिन वीतने पर भादों विद १२ से भादों सुदि ४ तक आती है। चूंकि इस पर्व में कई दफा चार निकायों के देवता नहीं भी जाते हैं अथवा आगे पीले जाते हैं इसलिये ये अद्वाई महोत्सव शाश्वत नहीं है। ये नवपद ओली शाश्वत अट्टाई में कही जाती है। अतएव बड़ों की ओर सूत्रों की आज्ञा मानते हुए इस अट्टाई में नवपद जी की ओली विधि सहित अवश्य करनी चाहिये (विधि प्रकरण में उक्त विधि दे दी गयी हैं। पाठक गण देख लेवें।)

इसकी प्रथा को श्री श्रुत केवळी भद्रवाहु स्वामी जी ने विधि वाद सूत्र से उद्धृत कर भव्य जीवों को अनंत सुख की प्राप्ति के ळिये प्रसिद्ध की है। अतएव ये तप अवश्य आदरणीय है। ऐसा न कर जो पुरुष कुयुक्ति एवं अपनी कुबुद्धि से इसका खण्डन करते हैं उनको चौरासी छाख जीव योनियों में अनंत काळ तक श्रमण करना पड़ता है।

भगवान् महावीर ने स्वयं कहा है कि हे गौतम! सर्वहा के वचन सूत्रों में हैं और जो भी उन सूत्रों के अर्थों को तोड़ कर नये अर्थों की प्ररूपणा करते है वह अनंत संसारी होंगे। सूत्र किसको कहते हैं:--

सुत्तं गण हर रइयं, तहेन पत्तेय दुद्धि रइयं च। सुयं केनळी णा रइयं, अभिण्ण दस पुन्निणा रइयं॥

अर्थात् गणधरों के रचे हुए, प्रत्येक बुद्ध के रचे हुए, श्रुत केवळी चौदह पूर्व धारियों के रचे हुए और सम्पूर्ण दश पूर्वधारी के रचे हुए को सूत्र की संज्ञा दी है।

## श्री बीर जन्म कल्याणक पर्व

चैत्र सुदि त्रयोदशी के दिन शासनाधिपति भगवान् महावीर स्वामी का जन्म हुआ, अतएव इस दिन जलयात्रादि विधि के अनुसार भगवान् के सम्पूर्ण जन्म कल्याणक के महोत्सव करने चाहिये। अगर इतना न बन सके तो भगवान् के च्यवन कल्याणक से लेकर निर्वाण कल्याणक पर्यंत वर्ष में जिस दिन जो कल्याणक हो, उसी का महोत्सव करना चाहिये। इससे धर्म का उद्योत होता है। सकल संघ में शांति एवं आनंद रहता है।

#### वीर चरित्र

आज से लगभग हाई हजार वर्ष पहले जब भगवान् महाबीर का जन्म नहीं हुआ था, भारत की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति ऐसी थी जो एक विशिष्ट आदर्श की अपेक्षा रखती थी। देश मे श्रूरों के साथ बड़ी निर्देशता का व्यवहार किया जाता था। उन्हें ज्ञान, ध्यान, शास्त्र-अध्ययन और मोक्ष प्राप्ति के अधिकारों से वंचित समभा जाता था। उनके पास खड़ा होना भी पाप समभा जाता था। हां, जिन श्रूहों से अपना निजि काम लेते थे उन्हें तो हर कोई छूता था, लेकिन जो श्रूह और चंडाल निविचिकित्स भाव से शृणोत्पादक जीवन दशाओं में भी लोक की सेवा करते थे उन्हें अछूत कह कर अवनित के गड़े में डाल दिया गया था। यज्ञादिकों में अनंत पशुओं का होम किया जाता था। लोग धर्म के असली अर्थ को मूल कर आडम्बर को ही धर्म मान वैठे थे। प्राह्मण तरह तरह की तामसिक तपस्थाएं करते थे और सर्वेसर्वा माने जाते थे। मास का सर्वत्र प्रचार था। ऐसी विकट परिस्थिति मे भगवान् महाबीर का जन्म हुआ।

ईसवी की ७ वीं शताब्दी के पूर्व विहार प्रान्त में उच्छवाड़ा क्षत्रियों का राज संघ प्रसिद्ध था। इस संघ में आस पास के क्षत्रियों के प्रतिनिधि सिम्मिहित थे और वे मिल कर राज व्यवस्था करते थे। उन क्षित्रियों में कुण्ड प्राम के क्षत्रिय भी शामिल थे। उनके प्रमुख राजा सिद्धार्थ थ। उनकी पट्टरानी त्रिशला की पावन कोख से चैत्र सुदि त्रयोदशी को भगवान का जन्म हुआ। भगवान के एक घड़ा भाई और एक बड़ी बहिन थी। बड़े भाई का नाम नंदीवधन एवं बहिन का नाम सुनंदा था।

माता पिता के बहुत आमहकरने पर और उनके चित्त को संतोष देने के छिए भगवान् ने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया। उनकी पत्नी का नाम यशोदा था। उनके एक कन्या भी हुई जिसका नाम प्रिय दर्शना था।

माता पिताके स्वर्गवास होने पर वर्धमान स्वामी ने दीक्षा छेनेकी पूरी तैयारी कर छी थी, इससे ज्येष्ठ बन्धु को कष्ट होते देख उन्होंने गृहस्थ जीवन की अविध दो वर्ष और बढ़ा दी। इन दोनों वार्तों से भग-वान् के स्वभाव के दो दृष्य स्पष्ट रूप से विदित होते हैं। एक तो बढ़े बूढों के प्रति आदर तथा बहुमान और दूसरे मौके को देख कर मुछ सिद्धान्त में वाधा न पड़ने देते हुए समभौता करने की उदारता।

इस प्रकार ३० वर्ष की तरुण अवस्था में वर्धमान स्वामी ने गृह को सर्वथा त्याग कर दीक्षा ग्रहण की । १२ वर्षों तक अनेक उपसर्ग सहे उनके पांचों पर ग्वाले ने खीर पकाई, उनके कानों में कीले गाड़े गये । इतने भीषण एवं हृदय विदारक उपसर्गों को सहते हुए जब पूर्ण सत्य सामने आ गया और अज्ञान का नाश होकर केवल ज्ञान रूपी सूर्योदय का प्रकाश हुआ तब उन्होंने कहा:—

न रवेताम्बरत्वे न दिगाम्बरत्वे, न तत्त्ववादे न च तर्क वादे । न पक्षसेवा श्रयणेन मुक्ति, कषाय मुक्ति किल मुक्ति रेव।।

अर्थात् न श्वेताम्बर हो जाने से ही, न दिगम्बर हो जाने से ही और न तर्कवाद के आश्रय से ही मुक्ति होनी है प्रत्युत् सची मुक्ति तो क्रोध, मान, माया और छोम रूप कवायों से छुटकारा पाने से ही मुक्ती होती है। मगवान्की भावनाएं उदार थीं। उनका अन्तः करण विशाल था। उन्होंने किसी एक क्षेत्रमें नहीं, एक उपाश्रय एवं मंदिर में नहीं, वरन् जगह जगह पर जाकर उपदेश दिये उनके समवसरण में प्रत्येक जाति के छोग सम्मिलित होते थे। भगवान् के उपदेश तत्व पूर्ण थे। उनमें किसी तरह का आउम्बर अथवा मान पाने की इच्छा न थी यही बह धर्मोपदेश किसी वस्त्रधारी साधु या देश के लिये था प्रत्युत् सारे संसार के लिए था।

उन्होंने साम्यवाद (अर्थात् धर्म ऊंच नीच, स्त्री पुरुष, ब्राह्मण व चंडाल सब बरावर हैं) के सिद्धांत को प्राणी मात्र के लिए व्यापक बना दिया।

भगवान् बीर ने छोगों को स्वावछम्बी बना कर उन्हें धर्मवीर, कर्मवीर, धुद्धवीर और दानवीर बनाया। उन्होंने बताया कि संयम और तप के एक साथ मेछ का नाम अहिंसा है। तप के अन्दर निष्काम प्रेम और द्या तथा संयम में सेवा का समावेश किया। उन्होंने समभाव से ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को जैन बनाया और बताया कि प्राणी मात्र से प्रेम करना और कपायों का निरोध करना ही ईश्वर पद पाना है। सक्षेप से भगवान् का उपदेश आचार में पूर्ण अहिंसा एवं तस्व ब्रान में अनेकांत वाद, इन दो ही बातों में समम्मा जा सकता है।

श्रमण भगवान् ने साधु साध्वी एवं श्रावक श्राविका संघ की प्ररूपणा की। उनके १४००० साधु और ३६००० साध्वयों का परिवार था, इसके सिवाय छाखों की संख्या में श्रावक श्राविकाएं थीं। गौतम गणधर आदि ब्राह्मण, उदायी एवं मेचकुमार आदि क्षत्रिय, शालिभद्र आदि वैश्य तथा हरिकेशी जैसे श्रूहों ने भी दीक्षा ग्रहण कर उच्च पद को प्राप्त किया था।

इस प्रकार आज से २४६६ वर्ष पूर्व राजगृही के पास पावापुरी नामक पवित्र स्थान में कार्त्तिक कृष्णा अमावस्या की रात्रि को इस शांति पूर्ण तपस्वी का ऐहिक जीवन पूर्ण हुआ अर्थात् उन्होंने निर्वाण पद प्राप्त किया और देवताओं के आगमन से संसार जगमगा उठा। उन्हों की पुण्य स्मृति की लेकर हम दीपावळी मनाते हैं।

+ + + +

चूं कि चैत्र सुिंद पूर्णिमा के दिन श्री आदिनाथ भगवान् के प्रथम गणधर श्री पुण्डरीक जी ५०० सामुओं सिंदत मोक्ष गये हैं इसीलिए श्री भरत चक्रवर्ती ने इस पर्व को आराधन करके चैत्री पूनम पर्व को सर्वत्र प्रसिद्ध किया।

इस पर्व के आराधना से इस भव में तथा पर भव में अनेक सुक्षों की प्राप्ति होती है। कियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। और आधि, ज्याधि, शोक, भय, दिरद्वता आदि दूर होकर परभव में देवादिक मृद्धि की प्राप्ति होती है। इसिएए इस पर्व को यथाशक्ति अवश्य करना चाहिये।

## वैशाख मास पर्वाधिकार

वैशाख सुिंद दूज का दिन अक्षय तृतीया पर्व के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध है। भगवान् भृषभदेव स्वामीने दीक्षा छेकर मौन धारण कर एक वरस तक निराहार रह आर्थ और अनार्थ देशों में विहार किया। पारने के दिन प्रमु को कहीं से भी आहार न मिछा। अंत में हस्तिनागपुर नगर में सोमयश राजा के पुत्र श्री श्रेयांस कुमार ने जाति स्मरण ज्ञान से शुद्ध आहार की विधि जान कर प्रमु को इक्षुरस से पारना कराया। उत्तम दान के प्रभाव से देवताओं ने हिष्त होकर १२॥ करोड़ सोनह्यों की वर्षा की और देव दुन्दुभी वजाते हुए पांचों दृज्य प्रगट किये। वैशाख सुद्धि ३ के दिन श्रेयांस कुमार का दिया हुआ ये दान अक्षय हुआ, इससे ये दिन पर्व होकर अक्षय तृतीया कहळाने छगा। संसार में अन्य ज्यवहार भगवान् श्री भृषभदेव जी ने चळाये परन्तु दान देने का ज्यवहार श्रेयांस कुमार ने चळाया और तभी से यित्यों को आहार देने की विधि प्रचळित हुई।

इस दान के प्रभाव से श्रेयांस क्रुमार को अक्षय सुख की प्राप्ति हुई अतः ये पर्व श्री संघ में मंगलकारी है। इस दिन अच्छे वस्त्र पहन कर मंदिर जी में आना चाहिये। अच्छ द्रव्य से प्रभु का पूजन कर अच्छ प्रकारी, सत्तरहमेदी आदि पूजाये करानी चाहिये। गुरु के मुख से यथाशक्ति एकासन आदि का पचक्खाण प्रहण कर इस पर्व की महिमा सुननी चाहिये।

साधु मुनिराजों को, बहरा कर, कुटुम्ब के सभी व्यक्ति सम्मिछित होकर भोजन करें। शुभ कर्मों के शुरू करने के छिये ये दिन अत्यन्त कत्तम है। और इस दिन शुरू किया हुआ कार्य क्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

# भगवान् आदिनाथ चरित्र

तीसरे आरे की समाप्ति में जब चौरासी छाख पूर्व और नवासी पक्ष यांकी रहे तब आपाढ़ कृष्णा चतुर्देशी के दिन, नाभि कुछकर की पत्नी मरुदेवी की गर्भ में देवछोक से च्यव कर वज नाम का जीव साथा और चैत्र वदी अध्यमी के दिन मरुदेवी ने युगळ पुत्र को जन्म दिया। भगवान् की जंघा में प्रृपम का चिह्न था और मरुदेवी माता ने स्वप्न में भी सर्व प्रथम अष्टम (वैट) को ही देखा था इसिटिये भगवान् का नाम प्रृपम रखा गया और कन्या का नाम सुमंगछा रखा गया।

वंश-स्थापना के लिए इन्द्र जब प्रभु के पास आये और साथ में भगवान् को ट्रेने के लिये इक्षु (गन्ना) लाये। प्रभु ने सर्व प्रथम इक्षु हाथ में प्रहण किया, इसलिये उनके वंश का नाम 'इक्ष्याकु' हुआ।

एस समय युगिलिया\* धर्म ट्ट चुका था क्योंकि पहले ही पिहले एक दिन ताड के ब्रक्ष के नीचे बैठे हए बहन भाई युगलियेके जोडेमें, ताड वृक्षके फल दूटनेसे भाईकी मृत्यू होगई इसलिये वह कन्या इधर उघर भट-कने लगी। कई बगलिये उसको लेकर नामि कलकर राजा के पास गये। नामि राजा ने पूर्ण बृतान्त सुत कर कहा कि ये अनुषभ की धर्मपत्नी होवे। फिर उन्होंने उसको अपने पास रख छिया। उस स्त्री का नास सनंदा था।

युवावस्था में प्रवेश करने पर, अपने भोगोपभीग कर्मों को अवधिज्ञान के द्वारा जान कर, सौधर्मेन्द्र की प्रेरणा से बड़ी धूम धास से सुमगला और सुनंदा के साथ भगवान् ने पाणी प्रहण किया और तभी से लोक में विवाह की रीति प्रचलित हुई।

उस समय में कालदोष से कल्प बृक्षों का प्रभाव कम हो चला था, युगलियों में काषायिक भाव धीर भगड़े बढ़ने छगे थे तब इन्द्र ने आकर राज्याभिषेक कर प्रमु को दिन्य अलंकारों से अलंकत किया क्यों कि युगाछिये राज्याभिषेक की विधि नहीं जानते थे। तब इन्द्र ने क्वियेर को विनीता नगरी निर्माण करने का आदेश दिया। सर्व प्रथम श्रृषभदेव ही राजा हुए इसीलिये उन्हें आदिनाथ कहा जाता है। भगवान् ने लोगों को असि, मसि, कृषि, वाणिज्य और शिल्प के काम सिखलाये।

चिवाह के पश्चात् भगवान् ने कुछ वर्ष कम ६ छाख वर्ष तक सुमंगला और सुनंदा से सुखोपभोग किया। सुमंगला ने भरत ब्राह्मी को एक साथ जन्म दिया और ४६ युग्म पुत्रों को जन्मा। सुनन्दा ने बाहुबली और सुन्दरी के जोड़े को उत्पन्न किया।

अन्त में छोकांतिक देवों की प्रेरणा से, और पूर्व भव के सुखों को विचार कर, संसार को अनिस जान कर, भरत को राज्य दिया। एक वर्ष तक वर्षी दान देकर प्रमु ने चार हज़ार राजाओं के साथ चैत्र विद अष्टमी को दीक्षा ग्रहण की। पारने के दिन प्रभु को कहीं भी निर्मल आहार नहीं मिला इस लिये वे निराहार ही विहार करने लगे।

इस्तिनागपुर में सोमप्रम राजा के पुत्र श्रेयांस कुमार के हाथों से प्रमु का पारना हुआ और वह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ, सो हम पहले लिख ही आये हैं।

प्रमु को अयोध्या नगरी में फागुन विद एकादशी के दिन कैवल्यहान की प्राप्ति हुई। देवों ने सम-वसरण की रचना की और भगवान् ने जीवों को भवसागर तार देने वाली धर्म देशना दी। उनके देशना को सुन कर भरत के ऋषभसेन मरीचि आदि १०० पुत्रों ने, और ब्राह्मी आदि ने दीक्षा ब्रहण की। उसी समय से भृपभसेन आदि साधुओं, ब्राह्मी आदि साध्वयों, भरत आदि श्रावकों और सुन्दरी आदि श्रावि-काओं से चतुर्विध संघ की स्थापना हुई। गोमुख नामक यक्ष प्रमु का अधिष्ठायक और चक्रेश्वरी देवी शासन देवी हुई।

र । इर । एक छाख पूर्व दीक्षा के पश्चात् बीतने पर, प्रभु अपना निर्वाण समीप जान कर अष्टापद पर्वत

<sup>\*</sup> प्राचीन समय में युगिलिये जोड़े से उत्पन्न हुआ करते थे ! जब तक वे युवावस्था को प्राप्त नहीं होते थे तब तक उनमें वह न भाई का सम्बन्ध रहता था जब युवानस्या होती तब उनमें स्त्री पुरुप का सम्बन्ध हो जाता था उसी समय ऋषभदेव स्वामी तथा भ्रमगला युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे अचानक एक युगलिये की मृत्यु हो गई तब उसकी बहुत का ऋपमटेव स्वामी के साथ विवाह हुआ। जो युगलिया मरा या वह उस स्त्री का पतित्व रूप होकर नहीं मरा था इसिन्ये भगवान् का विधवा विवाह नहीं हुआ था जो लोग ऋपभिवेच स्वामी पर विधवा विवाह का भूठा लंहन लगा कर अपनी पाप मनोवृत्ति को लोगों में प्रचलित करते हुए भगवान् को विधवा विवाह के प्रमाण स्वरूप जनता में प्रगट करते हैं वह उनकी यही भारी भूल है। इसरों के यहां से लड़की लाना उसी वक्त से चला है।

पर आये और अनशन महण किया और माघ विद त्रयोदशी को प्रातः काल चौरासी लाख पूर्व की आयुं को पूर्ण कर भगवान मोक्ष को गये। भगवान २० लाख पूर्व कुमारावस्था में, ६३ लाख पूर्व राज्य के पालन और सुखभोग में में, १००० वर्ष लद्मावस्था में और १००० वर्ष कम एक लाख पूर्व केवली अवस्था में रहे।

### ज्येष्ठ मास पर्वाधिकार

ज्येष्ठ विद त्रयोदशी के दिन सोछहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथजी मोक्ष गये हैं इसीलिए ये दिन अति जत्तम माना जाता है। इस दिन समस्त श्री संघ सिमिलित होकर मंदिर जी में जावे। त्रिधि सहित शांति पूजा करावे और उस शान्ति जल को अपने २ घर ले जाकर छीटे। इससे श्री संघ के सामृहिक श्रीमारी, हैजा आदि हरएक रोगों का कभी प्रकोप नहीं होगा।

कराचित् किसी आवक के घर में कोई रोग हो अथवा अति चिन्ता फैंळी हुई हो तो ग्रुभ दिन मे सान्ति पूजा का महोत्सव कराना चाहिये। इससे आधि, ब्याधि, दुःख, दरिद्रता आदि का अवश्य नाश होगा और आनन्द, मंगळ की प्राप्ती होगी।

### शांति नाथ चरित्र

इस जम्बुद्धीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनागपुर नाम का नगर था। उस नगरी के राजा विश्वसंन थे। उनकी रानी अचिरा की कूख से ज्येष्ठ चिद् द्वादशी के दिन भगवान् ने जन्म छिया। प्रभु का रंग सुवर्ण जैसा था और शरीर पर मृग का चिह्न था।

प्रभु के गर्भ में आने से ही कुरुदेश में महामारी आदि उपद्रव शांत हो गये थे इसिलये माता पिता ने आपका नाम शांति नाथ रखा। युवावस्था को प्राप्त होने पर विश्वसेन राजा ने इनका अनेक राजकुमा-रियों से पाणि प्रहण कर दिया। और २५००० वर्ष की अवस्था में इनको राज्य भार सोंग।

एक दिन आयुषशाला में चक्ररत के उत्पन्न होने पर, प्रमु ने पृथ्वी के छहीं खण्डों की जीता और चक्रवर्ती कहाये। भगवान् चौदह रतों, (जिनमे एक २ रत्नके १००० हजार वक्ष अधिष्ठायक थे) चौंनठ हनार खियों, ८४-८४ लाख हाथियों, घोडों, रथों, नव महानिधियों, ६६ करोड प्रामों के स्वामी थे।

लोकातिक देवों की प्रेरणा से प्रमु ने वर्षा दान देकर १००० राजाओं के साथ ज्येष्ठ विट चीटस को अपने पुत्र चक्रायुध को राज्य सोंप कर, दीक्षा प्रहण की और दूसरे दिन मदिर पुर के राजा मुनित्र के घर पारना किया। एक वर्ष तक विहार कर प्रमु को पोप सुद्दि नवसी के दिन केवल जान हुआ।

डसी समय चारों निकाशों के देवों ने समयसरण की रचना की और भगवान् ने गधु श्रीरा मुख रुव्धिवाली तथा ३६ अतिशय वाणी में धर्म देशना कही। इस मोक्ष दायक देशना की सुन कर उनके पुत्र चकायुष ने भी ३६ राजाओं सिह्त, अपने पुत्र को राज्य सोंप कर दीक्षा है ली और ने प्रथम गणधर हुए।

्स्त्रकार पृथ्वीपर विहार करते हुए प्रभुते वासठ हजार मुनियों और उन्मठ हजार ६०० माध्यियोंको होता हो। गरह नामक यक्ष प्रभु का अधिष्ठायक हुआ और निर्वाणी नाम की शामन देवी हुई प्रभु ७४ हजार वर्ष गृहस्थावास में, एक वर्ष झदान्य अवस्था में और एक वर्ष कम पत्तीम उनार वर्ष केन्नी अधिक प्रस्था में रहे। सब मिला कर प्रभु का आयु एक लाग्य वर्ष की थी। जिम २ देश में प्रभु जिलार करने वे वहां २ होगों के सब उपप्रव शांत हो जाने थे। अंत में अपना निर्वाण काल मरीप जान कर ममीन शिरार

्पर पथारे। वहां नौ सौ केवलियों के साथ प्रभु ने एक मास तक अनुशन किया। ज्येष्ठ मास की क्रण त्रयोदशी के दिन, जब चन्द्रमा भरणी नक्षत्र में था, तब प्रभ ने मोक्ष पद को प्राप्त किया।

"यस्योपसर्गाः स्मर्णेन यांति, विश्वे यदीयाश्च गुणा न भांति। 'भगांक रक्ष्म्या कनकस्य कांतिः, संघस्य शांति स करोत् शांतिः॥

अर्थात जिनके स्मरण से सब उपसर्ग दूर होते हैं, जिनके गुण सारे विश्व में भी नहीं समाते, जिनके सग का लांछन है, और जिनके शरीर की कांति सवर्ण के समान है, दे श्री शांतिनाथ भगवान श्री संघ की शांति करें।"

# आषाढ मास पर्वाधिकार

आषाढ सुदि ८ से पूर्णिमा तक चातुर्मासिक अट्टाई के दिन अति उत्तम हैं। इसमें आपाढ़ सुदि १४, चौमासी चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध है। जैसा कहा भी है कि -

सामायिकावश्यक पौपधानि, देवार्चनं स्नात्र विले पनानि। ब्रह्म क्रिया दान तपो मुखानि, भन्याश्चतुर्मासिक मंडनानि ॥१॥

अर्थ सामायिक करना, पौषध लेना, देव पूजन करना, यथाशक्ति दान करना, तप करना आदि कूस चतुर्मास के अलंकार भूत हैं अर्थात् करने योग्य हैं।

अत्तर्व इस अठाई में यथाशक्ति सामायिक, प्रतिक्रमण, पोसह आदि करना चाहिये। मंदिर जी में नाना प्रकार की पूजायें करवानी चाहियें। शीलब्रत का पालन करना चाहिये। आहां तक बन सके सुपात्रदान देना चाहिये और तपस्या करनी चाहिये। मतलव ये है कि जहां तक भी हो सके धर्म का उद्योत एवं वृद्धि करनी चाहिये।

चहुर्दशी के दिन मंदिर जी में जाकर शकस्तव से देव बंदना करनी चाहिये। गुरु महाराज से चौमासिक पर्व का व्याख्यान सुनना चाहिये। सव चीजों का प्रमाण करना चाहिये अर्थात् श्रावक के चौदह नियम धारने चाहिये जितनी चीजों का त्याग हो सके उनकी सौगंध हैनी चाहिये । इसी प्रकार कार्त्तिक चौमासे और फागुन चौमासे का भी विद्यान समकता।

# जिनदत्त सरिजी चारित्र

आषाढ़ सुदि एकादशी, को दादा जी का स्वर्गवास हुआ। इसलिये इस दिन जिनदत्त सूरि जी जर्यति मनाई जाती है क्यों कि इससे संघ में किसी तरह का उपद्रव नहीं फैलता और संघ में आनन्द मंगल का प्राद्भीव रहता है।

श्री महावीर स्वासी के शिष्य पांचवें गणधर श्री सुधर्मा स्वामी की पट्ट परांपरा में शासन प्रभावक, चरित्र नायक श्री जिनदत्त सूरि जी हुए। इन सूरि जी का गुजरात के धुंधुका नगर में संवत् ११३० में जन्म हुआ माता श्री का नाम 'वाहरदे' और पिता श्री का नाम (हुम्बड जातीय) वांछिंग मंत्री था। आपका जन्म नाम सोमचन्द्र था। 'होनहार विख्वान के होत चीकने पात' की कहावत आप में घचपन से ही दृष्टि गोचर होने छगी। ५ वर्ष की उम्र में पढ़ने को मेजे गये और शीध ही अपनी तीक्ष्ण वृद्धि से सव को आश्चर्यान्चित कर दिया। संबत् ११४१ में जिनेश्वर सूरि जी के शिष्य उपाध्याय धर्म देव से इन्होंने ११ वर्ष की वाल अवस्था में दीक्षा ली।

२० वर्ष की अरुप अवस्था में ही सम्पूण शाख-अभ्यास कर लिया और गीतार्थ जैन साधु यन

गये। इसी अवसर पर सारंग पुर में इन्होंने कुमार पाळ उपाध्याय को अन्त समय का अनशन करवा धर्मध्यान कराया जिससे मर कर वह देव हुआ। देवता ने अवधिक्षान से इनको अपना उपकारी जान इनके पास आया और नमस्कार करके कहने लगा "हे मुनि। आप शीव्र ही आचार्य होंगे परन्तु कुळ उपयोग रिक्षियेगा आपके सृिर पद के तीन मुहुर्त्त निकलेंगे प्रथम में मरणांत कष्ट होगा। दूसरे में गच्छ भेद बहुत होंगे। इन कारणों से आप तीसरे मुहुर्त्त में सूिर पद ब्रहण करें इससे शासन में उन्तित होगी। परन्तु होनहार बलवान् है। संवत् ११६८ वैशाख विद ६ शनिवार को दूसरेमुहुर्त्त में ही श्री देव महाचार्य द्वारा सूिर पद दिया गया। आप का नाम जिनदत्त सूिर रखा गया। और उन्होंने शामानुशाम विहार करके भव्यात्माओं को प्रतिबोध देना शुरू कर दिया।

एकदा गुरु महाराज ने तीन करोड़ माया बीज मंत्र के जाप का अनुष्ठान किया। परन्तु देव ने स्वित कर दिया कि ६४ योगनियां विन्न उपस्थित करेंगी।स्वना पानेके पश्चात् गुरु महाराजने श्रावकोंसे कहा कि आज व्याख्यान में ६४ खियां आवेंगी उनके सम्मानार्थ ६४ पट्टे रखो। और फिर उन पट्टों को गुरु महाराज ने मंत्रित कर दिया। जब ६४ योगनियां ६४ खियों के वेश में आई तब श्रावकों ने उन्हें बड़े सम्मान से बैठाया। व्याख्यान समाप्त होने पर जब उन्होंने उठना चाहा तो वे उठ नहीं सकीं, अर्थात् वहीं की वहीं स्तंभित्त हो गईं। ये चमत्कार देख सब आश्चर्य करने छगे। और योगनियों ने नम्न शीस होकर कहा 'महात्मन्, हम तो आपको चलायमान् करने आई थीं मगर आपने ही हमको निश्चल कर दिया। अब हम आपके आधीन हैं। भविष्य में हम आपकी आज्ञानुसार काम करेंगी। हमको गुक्त कीजिएगा" छोड़ने के पहले गुरु महाराज ने कहा कि 'अब से हमारे परस्परा के आचार्य तथा साधु को कभी दुःख न देना और घोखे में न लेना" योगनियों ने तथास्तु कहा और प्रसन्न होकर सात वर विये:—

१ आपका श्रावक तेजस्वी होगा। २ प्रायः निर्धन न होगा। ३ अकाल मृत्यु न होगी। ४ अखंड ब्रह्मचारिणी साध्वी को शृतु नहीं आवेगा। ५ आपके नाम से विजली उपसर्ग दूर होंगे। ६ सिंध देश में गया श्रावक धनवंत होगा। ७ चतुर्विध संघ के आपको स्मरण से सब कष्ट दूर होंगे परन्तु इनके साथ २ इतना और विशेष करना होगा तभी सात वरदान सफलीभूत होंगे।

१ आपका पट्टधर २००० सूरि मंत्र का जाप करे। २ साधु दो हज़ार नवकार गुने। ३ आवक प्रभात और संध्या को ७ स्मरण पढ़े या सुने। ४ एक नवकार व एक उवसग्गहर ऐसी १०८ वार ३ सीचड़ी की माला गुणे। ५ आवक एक भास में २ आयंबिल करे। ६ साधु निरन्तर यथाशक्ति एकासना करे। ७ आचार्य पंचनदी के अधिष्ठायकों का साधन करे।

एकदा अजमेर में आवक पाक्षिक प्रतिक्रमण करने लगे। उस समय विजली वहे वेग से चमकने लगी और सभी श्रावकों का डर से ध्यान भंग होने लगा। उस समय गुरु महाराज ने मंत्र वल से उसको आकर्षित कर अपने पात्र के नीचे दवा दिया। प्रतिक्रमण के वाद उसे छोड़ दिया। छोड़ने पर आवाज आई कि मैं आपके नाम स्मरण करने वाले पर कभी नहीं गिरूंगी!

परम छुपाछ गुरु महाराज विहार करते वह नगर में आये। उस समय उनकी अतुल वेंभव और मिहमा देख द्वेपियों ने एक मरी हुई गाय को जैन मिन्दिर के द्वार पर डाल दिया।और गोहत्या का देप लगा कर घत्राये हुए आवकों की विनती पर उन्होंने एक व्यंतर देव को गी के अन्दर प्रवेश कराकर उसको जीवित कर द्वेपियों के मंदिर भेज दिया वहां वह गी मृत होकर शिव लिंग पर गिर पडी। किर वे देप

भाव को छोड़कर इनके चरणोंमें गिर पड़े और जैन धर्म को धारण कर लिया तब गौ उठ कर निकल गई। एक दफा गिरनार पर्वत पर अंबड नाम के श्रावक ने अड्स तप करके अस्विका देवी का आराधन किया । देवी के प्रत्यक्ष दर्शन देने पर नागदेव श्रावक ने शासन प्रभावक युग प्रधान का पता पूछा देवी ने सुवर्णाक्षरों से उसके हाथ में एक रठोक जिख दिया और कहा कि इसके पढ़ने वाला ही शासन प्रभावक यग प्रधान होगा। नागदेव ने अनेक आचार्यों को हाथ दिखाया मगर कोई पढ न सका। अनुक्रमसे वो पाटण पहुंचा। सरि जी को हाथ दिखाया। चंकि ख़ोक उन्हीं से सम्बन्ध रखता था इसलिए गुरु महा-राज ने उसके हाथ पर वासक्षेप कर अपने एक शिष्य को पहने की आज्ञा दी उसमें लिखा था:-

> दासातुदासा इव सव देवाः, यदीय पादान्ज तले लुठंति। मरुस्थली कल्पतरः स जीयाद्, युग प्रधानो जिनदत्त सरिः ॥१॥

अर्थात् जिनकी सेवा में सब देव दासों की तरह सेवा करते हैं जो मरूस्थल की भूमि के लिए कल्प वृक्ष के समान हैं ऐसे युग प्रधानाचार्य श्री जिनजत्त सूरिः जयवंता हों। इसी समय से इनको युग प्रधाना-चार्य की पदवी दी गई। इसी तरह आमानुप्राम विहार करते हुए आप मुख्तान पघारे। यहाँ के छोगों ने बड़ी भक्ति भाव से उनका स्वागत किया। दैवयोग से आपकी इस कीर्त्ति और महिमा को देख कर अंबड ईर्ज्या करने छगा। एक दिन घमंड से उसने कहा कि यदि आप मेरे पाटन में इस तरह महोत्सव से आर्वे तो में आपको चमत्कारी जानूँ। गुरु महाराज ने अत्यन्त नर्मी से उत्तर दिया कि 'है श्रावक जिसका पुण्य प्रचल होता है उसी को मान मिलता है।" कालान्तर में आप पाटन गये और भापका नगर प्रवेश -बड़ी घूमधाम से किया गया। द्वेषी अंबड़ भी मौजूद था मगर काल चक्र ने उसको निर्धन बना दिया था। किन्तु फिर भी उसने द्वेष भाव को नहीं छोड़ा। कपट से शुरु महाराज से क्षमा मांगी और अपने आपको परम भक्त जितलाने लगा। सरल परिणामी गुरू महाराज इस की चाल में फंस गये, इस ने समय पाकर विष मिश्रित शकार का पानी उपवास के पारणे में बहरा दिया। थोड़ी ही देर में विष ने अपना असर दिखाया। परन्तु जाको राखे साइयां मार न सक्के कोए, वाळी कहावत के अनुसार जव, श्री संघ को विप पान का पता चला तब नगर सेठ आबुशाह ने विष अपहरण जड़ी मंगवा कर गुरु महा-राज को सेवन कराई। श्री संघ ने अंवड़ को खूब लिजत किया। और वह मर न्यंतर देव हुना।

एक समय विक्रमपुर में महामारी का उपद्रव हुआ। दादाजी ने जैन संघ में महामारी का उपद्रव दूर किया तब माहेश्वरी जाति के छोगों ने गुरु महाराज से प्रार्थना की हमें भी वचाइये। गुरुजी के उपदेश से वे माहेश्वरी जैनी हुए और वहुतों ने तो दीक्षा ही ग्रहण कर ली और इस तरह महामारी के उपद्रव से वच गये।

इस प्रकार जीवों का उपकार करते हुए श्री जिनदत्त सूरिजी महाराज ७६ वर्ष की आयु पूर्ण करके विक्रम संवत् १२११ आषाढ़ सुदी ११, गुरुवार को अजमेर में अनशन करके स्वर्ग सिधारे। ये सीधर्म देवलोक में टक्कर नाम के विमान में चार पल्योपम की आयुज्य वाले देव हुए । वहां से ज्यव कर महाविदेह में मोक्ष जावेंगे।

जिनदत्त सूरिजी के रचित ग्रन्थ

१ संदेह दोहावळी, २ उत्सूत्र पदोद्घाटन कुळक, ३ उपदेश कुळक, ४ अवस्था कुळक, ४ चेत्यवंदन कुलक, ६ गणधर साथ शतक, ७ चरचरी प्रकरण, ८ पदस्थान विधि, ६ प्रवत्थोदय प्रत्थ, १० कालस्वरूप द्वात्रिशिका, १९ अध्यात्म दीपिका, १२ पट्टावली, १३ तंजय स्तोत्र। १४ गुरु पारतस्त्रय स्तोत्र. सिन्य-मवहरड स्तोत्र।

## भाद्रपद मास पर्वाधिकार

भादव बदी ११-१२ या तेरस से पयु पण पर्व आरंभ होकर भादव सुदी ४ अथवा कभी पंचमी को समाप्त होता है। इस पर्व की महिसा शास्त्रों ने बहुत वर्णन की है और छिखा है कि जिस तरह आसमान में उगने वाछे तारों को कोई नहीं गिन सकता, गंगा नदी के रेन के कणों का हिसाव नहीं कर सकता, माता के स्नेह की सीमा नहीं देख सकता, वैसे ही इस पर्युपण पर्व की महिमा का पार पाना भी किसी के छिए संभव नहीं है। इसछए यह सब पर्वों से उत्तम पर्व है।

पर्युपण पर्व में अवश्य करने योग्य ग्यारह द्वार वतलाये गये हैं। इनको अवश्य करना चाहिये— १ चतुर्विध श्री संघ मिल कर वीतराग प्रमु की पूजा करना। २ वित महाराजों की भक्ति करना। ३ कल्प सूत्र श्रवण करना। ४ वीतराग प्रमु की अर्चना और अंग रचना नित्य करना। १ चतुर्विध संघ में प्रभावना करना। ६ सहधर्मियों से प्रेम प्रगट करना। ७ जीवों को अभय दान देने की घोषणा करना और करवाना। ८ अट्टम तप करना। ६ ज्ञान की पूजा करना। १० श्री सब से श्रमा-याचना करना। ११ और संवत्सरी प्रतिक्रमण करना।

इसी प्रकार नित्य सामायिक, प्रतिक्रमण, पोसह आदि करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना यथा-राक्ति दान देना, दया का भाव रखना, घर गृह्सची के समस्त भंभट छोड़ देना भूमि पर शयन करना सचित्त और सावद्य व्यापार से दूर रहना, रथयात्रा आदि महोत्सव कराना, इस प्रकार ज्ञान की बृद्धि करना, मांगलिक गीत गाना आदि छुद्ध श्रावकों को करने चाहियें। और धर्म कार्यों गे लग जाना चाहिये। जो मनुष्य ऐसा नहीं करते वे अपना जन्म वृथा ही गंवाते हैं। जो भव्य प्राणी इसकी आराधना करते हैं वे इस लोक में झृद्धि, बुद्धि, सुख सम्पदा को प्राप्त करते हैं, परलोक मे इन्द्र की पदवी पाते हैं और क्रम से तीर्थकर पद प्राप्त कर मोक्ष पदवी प्राप्त करते हैं।

कल्पलता शास्त्र में पर्यु पण की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जैसे जगन मे नवकार के समान मंत्र नहीं है, तीथों में शत्रुं जय के समान कोई तीर्य नहीं है, पांच दानों में अभयदान और सुपान्न दान के समान कोई दान नहीं हैं, गुणों में विनय गुण, न्नों में ब्रह्मचर्य त्रत, नियमों में संतोप नियम, तथों में उपशम तथ, दर्शनों मे जैन दर्शन, जल में गंगा जल, तेजवंतों में सूर्य, नृत्यकला में मोर, गर्जों में एगवन, देत्यों में रावण, वनों में नन्द्रन वन, काष्ठ में चन्द्रन, सित्यों में सीता सुगन्य में कम्नूरी, जियों में गंभा, धातुओं में स्वर्ण, दानियों में कर्ण, गी में कामघेतु, बृशों में कल्पबृत्र के समान उत्तम कोई और नहीं है उसी तरह सव पर्वों में यह उत्कृष्ट पर्व है और इससे उत्तम कोई पर्व नहीं।

पर्युपण पर्व मे यतियों को संबत्सरी प्रतिक्रमण करना, बीच बीच मे क्षमा प्रार्थना फरना. क्ल्पसूत्र बांचना, सिर के बालों का लोच करना, तेले का तप करना. मर्ब मंत्रिरों मे भाव पृजा करना एत्यादि धार्मिक कृत्य करने चाहियें।

श्रावकों को अन्य धार्मिक कृत्यों के साथ ही साथ श्रुत ज्ञान की भी भक्ति करनी चाटिये। जल्य सूत्र जी को विधि सहित अपने घर में छे जाये। रात्रि ज्ञानरण करें। दूसरे दिन प्रभाव समय समय के सर्व श्री संघ को निमन्त्रित कर उनका यथायोग्य सन्मान करें। फिर कल्यमूब को हे जारे बाला श्रावक चत्तम वस्त्र एवं आभूषण पहन कर हाथी उपर अथवा पाल की के उपर वेंटे। अष्ट मांगलिक रचित थाल में कल्प सूत्र घर कर अपने दोनों हाथों में थाल रखे। पालकी अथवा रथ अथवा अस्वारी के दोनों ओर दो पुरुष चमर ढालें। इस प्रकार अनेक तरह के बाजे गाजे, दुन्दिम, बाजों के साथ दान देते हुए मांगलिक गीत गाते हुए नगर की प्रदक्षिणा करके गुरु महाराज के पास आवे। गुरु महाराज मी खड़े होकर विनय सहित पुस्तक को नमस्कार करके, श्री संघ की आज्ञा से बाचे। इस प्रकार जो श्रावक एक चित्त से इसको सुनते हैं और आराधन करते हैं वे आठवें भव में मोक्ष को प्राप्त होते हैं। और जो भव्य जीव अद्म आदि तप करके कल्प सूत्र को बांचते हैं, सुनने वाले प्रमाद को छोड़कर, अद्रमादि तप करके, श्रुद्ध भाव से इक्षीस बार सुनते हैं वह देवगित को प्राप्त करके तीसरे भव में मुक्ति प्रक्ष करते हैं।

# कल्प सूत्र की महत्ता

यह करूप सूत्र नवम पूर्व से उद्धृत किये हुए दशाश्रुत स्कंध का आठवां अध्ययन है। चौवह पूर्व-धारी श्री भद्रवाहु जी ने श्री संघ के कल्याण के लिए प्रसिद्ध एवं प्रचलित किया। जैसे अरिहंत से वढ़ कर कोई देव नहीं है, मुक्ति से वढ़ कर कोई उत्तम पदची नहीं है, स्निष्धों में घृत से बढ़ कर कोई उत्तम पदार्थ नहीं है वेसे ही कल्प सूत्र से बढ़ कर कोई सूत्र भहीं है। यह कल्प सूत्र पाप का बंधन काटने के लिए एक अनोखी वस्तु है। यह ठीक कल्पवृक्ष की भांति मुनने वालोंके सारे मनोर्थ पूर्ण करता है अतएव जो मन्य प्राणी ग्रुद्ध मन से विधि सहित इसको अवण करेंगे वे कृद्धि और मुख सम्पदा को प्राप्त करेंगे।

# भाद्र पद कृष्ण १४ को श्री मणिधारी जिनचन्द्र सूरिजी का स्वर्गवास हुआ है अतः उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखा जाता है।

आज से सात सौ वर्ष पहिले की बात है, जैन शासन में अत्यन्त सुप्रसिद्ध, खरतरगन्छ नायक जङ्गम युग प्रधान, बृहद् भट्टारक, मणिधारी जिनचन्द सुरि जी महाराज हो गये हैं। इनका जन्म ११६७ भाद्र सुदि ८ को ज्येष्टा नक्षत्र में जेसलपेर के निकट विक्रम पुर के सेठ साहरासल के यहां देलहण देवी के गर्भ से हुआ था। आप जन्म सिद्ध सुशील थे। माता पिता ने आपका नाम रासलनन्दन रखा था। आप बचपन में ही शुभ लक्षणों के बदौलत होनहार मालूम होते थे। एक समय की वात है कि आचार्य महाराज श्री जिनदत्त सूरि जी विचरते हुए आपके यहां आये। और उन्होंने ज्ञान बळ से जाना कि यह बालक मेरे उत्तराधिकारित्व को अच्छी तरह निभाने वाला होगा। आचार्य महाराज इनको अपने साथ छे अजमेर पधारे। वहां भगवान् पाखंनाथ स्वामी के मन्दिर में सं० १२०३ फाल्गुन सुदि १ के दिन शुभ सुहूर्त्त में आपको सविधि दीक्षा दी गई। आप बड़े बुद्धिमान् और मेधावी थे। केवल २ वर्ष की पढ़ाई से आपकी योग्यता प्रातः कालीन सूर्य की तरह प्रस्कृटित हो उठी। आपकी कुशाय बुद्धि की वाह-वाही जनता में हवा की तरह दौड़ गई। किसीने सच कहा है- "होनहार विरवान के, होत चीकने पात"। सं० १२०६ वैशाख विद् ६ को विक्रम पुर नगरी में भगवान् महाबीर स्वामी के मन्दिर मे गुरु प्रवर श्री जिनदत्त सूरि जी ने आपको बड़े आनन्द से आचार्य पद प्रदान किया ! आचार्य पद देने के बाद आपका नाम 'श्री जिनचन्द सूरि' रखा गया। आचार्य पद का महोत्सव आपके पिता ने वड़े समारोह और धूमधाम से सम्पादन किया ! इनकी चोग्यता और नम्रता से इन पर गुरुदेव की असीम कृपा थी। फलतः इन्हें गुरुदेव ने स्वयं जैनागम, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, ज्योतिष आदि विद्याओं का उपदेश दिया, जिसके द्वारा आप योग्यतापूर्ण चतुरस्र विद्वान् और छोगों के दृष्टिकोण में बहुत ऊंचे उठ गये ! ये गुरुदेव की सेवा में सच्चे दिल से सदैव तत्पर रहा करते थे। आपको गुरुदेव गच्छ सञ्चालन की शिक्षा तथा आत्मोन्नति का भी पाठ पढ़ाया करते थे। पर गुरुदेव इन्हें दिही जाने की मनाई हमेशा किया करते थे। सं० १२१४ में हमारे चरित्र नायक श्रीमान जिनचन्द्र सरि जी महाराज त्रिभवन गिरि पथारे। वहां दादा श्रीमान् जिनदत्त सूरि जी के हाथ से प्रतिष्ठापित, श्री शान्तिनाथ भगवान् के मन्दिर के ऊपर स्वणं दण्डा, कछश्, और पताका इन्होंने वड़े महोत्सव के साथ चढवाई। इसके वाद साध्वी हेम गणवती देवी को प्रवर्त्तिनी पद दिया। वहां से विहार कर मथरा आये। वहा सं० १२१७ मे फाल्गुन विद १० को पूर्णदेव गणि, जिनरथ, वीरमद्र, वीरनय, जगहित, जथशीलभद्र और नरपति आदियों को श्री महावीर स्वामी के मन्दिर में दीक्षा दी। उसके बाद मरोठ आये। मरोठ में चन्द्र प्रभु स्वामी के मन्दिर पर स्वणंदण्ड कळशा, और ध्वजा चढवाई। मरोठ से आचार्य महाराज सं० १२१८ में सिन्ध प्रात की ओर चल पड़े। सिन्ध प्रान्त में विनय शील, गुण वर्द्धन, भातुचन्द्र आदि साधुओं और जग श्री, सरस्वती, गुण श्रो. नाम की तीन साध्वियों को दीक्षा दो। इसी तरह और भी साध्विया और साधु समय समय पर दीक्षित होते रहे। सं० १२२१ में आप सागर पाड़ा गये। वहां से अजमेर जाकर आपने स्वर्गीय श्री जिनदत्त सूरि जी महाराज के स्तूप की प्रतिष्ठा की। उसके बाद वट्नेरक गये जहां आपसे गुणभद्र गणि, अभयचन्द्र, यशचन्द्र, यशोभद्र, देवभद्र और देवभद्रकी स्त्री को दीक्षा दी गई। हांसी में नागदत्तको उपाध्याय पद दिया गया महावन नामक स्थान मे श्री अजित नाथ स्वामी के मन्दिर की आपने विधि पूर्वक प्रतिष्ठा की। इन्द्र पुर में शान्तिनाथ भगवान् के मन्दिर पर स्वर्णदण्ड कठरा और ध्वजा की प्रतिष्ठा की। छगता प्राप्त में वाचक गुण भद्र गणि के पिता महलाल श्रावक के वनवाये हुए अजित नाथ स्वामी के सन्दिर की प्रतिष्ठा की। सं० १२२२ में वादछी नगर के भगवान पार्श्वनाथ स्वासी के सन्दिर पर स्वर्ण दण्ड कळशा, और पताका लगवाई, इसी तरह अम्बिका देवी के मन्दिर पर भी। उसके वाद आचार्य महोदय सदपही गये। सदपही से विहार करते हुए नरपाल पुर पधारे। वहां एक मानी ज्योतिपी आप से मिला। बहस ब्रिड गई। आचार्य ने कहा, चर, स्थिर, और दिस्वभाव तीन तरह के लग्न होते हैं, तुम इनमें से किसी एक का भी स्वभावतः प्रभाव दिखाओ, तब मैं समम् कि तुम सच्चे ज्योतिप शास्त्र के हाता हो। पर ज्योतिषी से इन्छ भी जवाब देते न बना, क्योंकि लग्न के स्वभावातकुल काम प्रत्यक्ष दिखा देना वडा ही कठिन था। अतएव उसको हार मान छेनी पडी। और आचार्य देव ने वृप (स्थिर) लप्र के १६ से ३० अंशों के अन्दर मार्गशीर्प महीने में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर के सामने एक शिला स्थापित की और कहा कि यह शिला १७६ वर्षों तक निरन्तर अविचल रहेगी। वहां से आचार्य देव रुट्रपही आये, जहां पद्मचन्द्राचार्य से राज्य के सुप्रवत्ध में शास्त्रार्थ हुआ। पद्मचन्द्राचार्य को अपने अध्य-यन का वडा ही गर्व था, पर शास्त्रार्थ मे आचार्य देव से परास्त होना पडा। आचार्य देव को इस जीत से न हर्ष था, न विपाद। हो भी कैसे १ वे तो विनय और ज्ञान की साक्षान् मृत्ति थे उसके बाद श्रीमान ने संघ के साथ विकार करते हुए बोरसीहान शाम में पड़ाव डाला, जहां म्लेच्छों की सेना आने वाली थी। आ भी गई। संघ के लोग डर गये और गुरु महाराज से कहा कि अब क्या किया जाय ? आचार्य ने कहा, आप लोग घयड़ाइये नहीं, जिनदत्त सुरि जी की दया से स्टेन्झ सेना कुछ नहीं कर सक्ती। आप लोग अपने पशुओं को इकट्टे कर एक जगह हो जाइये। वैसा ही हुआ आचार्य प्रमु ने संघ के चारों तरफ ध्यान पूर्वक दण्ड से रेखा खींच दी, जिसका नतीजा यह हुआ कि म्हेन्छ सेना की हरिट भी संय पर कामयाव न हो सकी। पडाव बाले अदश्य रहे; फिर भी ये लोग पास से शी गुजरनी मैना को

अच्छी तरह देखते थे। इसके वाद दिल्ली के निकट विद्वार करते हुए आ पहुँचे, जहां आचार्थ देव की पधा-रने की खबर पाकर ठक्कुर छोहट साह, पाल्हण साह, कुछचन्द्र साह, महीचन्द्र साह, आदि संघ के मुख्य मुख्य आवक वन्दन नमन करने के लिये आये। इन लोगों को वहे ठाट वाट से नगर के बाहर जाते हुए देख कर महल पर बैठे हुए दिली नरेश मदन पाल ने मन्त्री से पूछा कि ये लोग कहां जा रहे हैं १ मन्त्री ने कहा, इन छोगों के गुरु देव आ रहे हैं, जिनके स्वागत में ये छोग जाते दिखाई पडते हैं। राजा ने यह सुनकर स्वयं भी जाने की अभिलापा प्रकट की और अपने घोड़े को सजाने की आज्ञा दी। कम चारियों को भी साथ चलने की सूचना दी। फलतः बड़े साजवाज के साथ - वीर सैनिक और प्रसल छोगों के साथ राजा श्रावकों से भी पहिले ही आचार्य पाद की अगवानी मे दाखिल हुए। वहां गुरुवर के **उपदेशों से राजा बहुत प्रसन्न हुए, और अपने नगर में जाने के छिये बहुत अनुरोध किया। पर आचार्य** देव गुरु की नात स्मरण कर चुप रह गये। राजा ने कहा, महाराज क्या कारण है कि आप हमारे नगर में नहीं जाना चाहते ? श्रीमान आप क्यों चप रह गये ? क्या हमारा नगर जाने लायक ही नहीं है ? आचार्य देव ने कहा, नहीं, आपका नगर तो प्रधान धर्म क्षेत्र है। अन्ततोगत्वा दिल्लीपति के अतरोध पूर्ण हठ से भवितन्यतात्रश गुरुवर को दिल्ली में जाना पड़ा। महाराज के प्रवेशोत्सव आश्चर्य जनक तरीके से मनाया गया, जो देखते ही बनता था। वहां इनके उपदेशामृत के पान से कितनों ने अपने जीवन को सफल वनाया। महाराज मदन पाल ने भी इनके उपदेशों से अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त किया। एक दिन की बात है, अत्यन्त भक्त क़ुलचन्द श्रावक की दरिद्रता देखकर आचाय की वडी दया आई: फलतः इन्होंने मन्त्राक्षर सहित यन्त्र पट्ट उसको दिया और यन्त्र पट्ट की पूजा के छिये एक सुद्दी वासक्षेप बतलाया। उस यन्त्र पट्ट की पूजा के प्रभाव से वह श्रावक कुछ ही दिनों में बड़ा धनवान् हो गया। क्षापने अपने जीवन काल में एक मिथ्या दृष्टि देवता को प्रतिबोध देकर सम्यक्त दिया। इस माति धर्म प्रभावना करते हुए आचार्य मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि जी सं० १२२३ के दूसरे भाद्र पद विद १४ को इस शरीर को छोडकर स्वर्ग पघारे। स्वर्ग जाने के समय आवकों के सामने एक भविष्य वाणी की कि जितनी द्र शहर से बाहर हमारे शरीर का अग्नि संस्कार किया जायगा उतनी द्र तक शहर की आवादी बढ जायगी। छोगों ने भी उनकी आज़ा के मुताबिक ही विमान पर है जाकर नगर की बहुत दूरी पर बड़े समारोह के साथ चन्दन कपूर वगैरह सुगन्धित पदार्थ के द्वारा अग्नि संस्कार सम्पादन किया।

## आश्विन मास पर्वाधिकार

आसोज मास में आसोज सुदि ७ से आसोज सुदि पूर्णिमा नवपद ओछी तथा अष्टापद ओछी विधि युक्त करनी चाहिये। इनकी विधियां पूर्व की तरह ही है। पाठक देख लेवें।

अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी का आश्विन कृष्ण २ को स्वर्गवास हुआ है। अतः उनका संक्षिप्त जीवनचरित्र दिया गया है।

मारवाड़ के जोधपुर राज्य में खेतसर नामक एक सुप्रसिद्ध प्राप्त है। यह आज से लगभग सवा चार सौ 'वर्ष पहिले की वात है, ओसवाल जाति के रोहिड़ गोत्र में चमकते हीरे की तरह श्रीवन्त साह नामक एक सेठ थे। इन्हीं सेठ की पित परायणा श्रियादेवी के गर्भ से सम्बत् ११६५ की मिती चैत्र कृष्ण १२ के दिन शुभ लग्न में अत्यन्त सुन्दर एक पुत्र रहा का जन्म हुआ। सेठ जी ने वड़ी उदारता से जन्मो-स्सव मनाया एवं दशवें दिन गुरुजनों के द्वारा लड़के का नाम 'सुलतान कुमार' रखा गया। यह बालक "ग्रुष्ठ पक्षे यथा शशी" की तरह बढ़ने लगे एवं वाल्य काल में ही अनेक कलाओं से परिचित हा गये। इनकी प्रतिभा से सब चिकत थे। माता पिता को बढ़ा आनन्द था।

विक्रम संवत् १६०४ में खरतरगच्छ के नायक श्री जिन माणिक्य सूरि जी का अपने शिष्य समाज के साथ खेतसर में आना हुआ। वे बड़े ही विद्वान् एवं प्रभावशाली व्याख्यान दाता थे। खेतसर में उन्होंने अपने धर्म के ऊपर एवं संसार की क्षणभंगुरता के ऊपर बड़ा ही हृदयस्पर्शी उपदेश दिया। जिसका जनता के ऊपर भी बड़ा प्रभाव पड़ा, पर सुछतान कुमार के दिभाग पर तो जादूका-सा असर कर गया। फलतः सुलतान क्रमार ने अपने माता-पिता को अनेक युक्तियों के द्वारा राजी करके सं० १६०४ में श्री जिन माणिक्यसूरिजी से दीक्षा है ही। अब इनका नाम सुमित घीर पड़ा। दीक्षा हेने के समय इनको उमर ६ साल की थी, फिर भी मेघावी होने के कारण एकादश अंगादि सभी शास्त्रों का अध्ययन कर पूर्णे योग्य तथा व्याख्यान कुशल हो गये। ये अपने गुरु के सदा साथ विचरा करते थे। एक समय अपने गुरु के साथ १६१२ में देराजर के रास्ते जैसल्लमेर आ रहे थे अचानक श्री जिन माणिक्य सूरिजी की जीवनळीळा सं० १६१२ की आषाढ़ शुक्र पश्चमी को समाप्त हो गई। अग्नि संस्कारादि काम करा छेने के बाद अन्य साधुओं के साथ वे जेसलमेर पहुंचे। यद्यपि श्री माणिक्य सुरि जी के २४ शिष्य थे, फिर भी वे अपने पद पर किसी को स्थापित न कर सके थे। अतएव जेसलमर आने पर पदाधिकारी के निर्वाचन में मतमेद उठ खड़ा हुआ। पर समस्त संघ तथा वहां के रावल श्रीमालदेवजी ने (राज्यकाल सं० १६०७ से १६१८ तक) बैगड़गच्छ के श्री पूज्य गुण प्रभ सूरिजी की सम्मति से वड़े समारोह के साथ नन्दी महोत्सव कराकर संवत् १६१८ की भाद्र शुक्क नवमी गुरुवार को श्री सुमतिधीर जी को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित किया। माणिक्य सूरिजी ने ही इन्हें सूरि मन्त्र दिया एवं श्री जिन हंस सूरिजी के बिद्धान शिष्य महोपाध्याय श्री पुण्य सागरजी ने इन्हें आचार्य पदोचित योग्यता की शिक्षा दी। जिस रोज ये आचार्य पद पर आसीन हुए उसी रात में श्री जिन माणिक्य सूरिजी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन दिया और समवसर की पुस्तक में साम्नाय सूरि मन्त्र का संकेत करके अन्तर्हित हो गये। याद रहे अब सुमति धीर नाम न रहकर इनका नाम श्री जिनचन्द्र सूरीजी पडा । सम्बत् १६१८ का चातुर्मास इनका जेसलमेर में ही बीता। बाद में विहार करते हुए लोक कल्याण में दिलोजान से आप लग पड़े।

इन्हीं महापुरुष के समय में तपगच्छ में एक विद्वान् किन्तु दुराग्रही उपाध्याय धर्मसागर थे। जो कहा करता था कि नवाङ्गी वृत्ति कर्ता श्री अभयदेव सूरि सरतरगच्छमें नहीं हुए हैं, क्योंकि इस गच्छ की तो उत्पत्ति ही उनके बाद सम्बत् १२०४ में हुई है। इसके अतिरिक्त उसने गच्छवाओं को 'उत्सूत्रभापी' सिद्ध करने के छिये "औष्ट्रिक मतोत्सूत्र दीपिका" "तत्त्व तरिङ्गणी वृत्ति" तथा (कुमित कन्द्र कुद्दाल) आदि विपला साहित्य छिसकर जैन शासन में फूट पैदा करना शुरू कर दिया था। मट्टारक श्री जिनचन्द्र सूरिजी का सम्बत् १६१७ का चातुर्मास गुजरात के सुविख्यात नगर पाटण में हुआ। फलत. आपने जैन समाज में एकता कायम रखने की इच्छा से पाटण के सभी गच्छों के आचार्यों को १६१७ की कार्त्तिक शुक्ता चौथ को बुलाया और उन लोगों की देखरेल में धर्मसागर को शास्त्रार्थ के लिये आहान किया। पर वारम्वार बुलाने पर भी धर्मसागर शास्त्रार्थ करने के लिये उपस्थित नहीं हुआ। आखिर सभी गच्छवालों ने मिलकर श्री जिनचन्द्र सूरिजी की अध्यक्षता मे धर्मसागर के मत का खण्डन किया और समाज मे एकता सुक्थवस्थित रखने के लिये धर्मसागर का विहिक्तार कर दिया। इस काम से इनकी बड़ी प्रतिष्टा हुई।

आचार्यजी के सम काल में भारत का शासन मुसलमानों के हाथ में था। दिली के राज्यसिता-सन पर उन दिनोंमें अकवर वैठा था। उनकी नीति वडी अच्छी थी। इसलिय क्या हिन्द, क्या मसल्यान सव समान रूपेण अकवर से प्रसन्न रहा करते थे। और उसकी सभा से हरएक मजहब के छोग आवा जाया करते थे। पण्डित, मौलवी, करामाती, फकोर, साधु, संन्यासी सभी समान दृष्टि से देखे जाते छे और बुळाये भी जाते थे। यही कारण है कि सम्बत् १६५१ में अकदर-बादशाह का दरवार छाहौर मे लगा हुआ था, जैन धर्म के सबसे बड़े बिद्वान् श्री जिनचन्द्र सुरि को आग्रह पूर्वक बुलाया गया। जब आचार्य ने दरवार में पदार्पण किया कि इनके सम्मानार्थ सुगल साम्राज्य के सबसे वहे काजी (न्याया-भीश ) ने उठ कर खड़ा होते हुए साथ-साथ परीक्षा भी छी। उसने अपनी टोपी अद्भुत करामाउ से आकाश में उड़ाई, इसलिये कि देखे ये कुछ इस वहाने अपनी महत्ता दिखाते हैं कि नहीं। यदि प्रवर ने उसके मनकी वात ताड़ छी। फछतः अपनी चमत्कारी शक्ति से उसकी उडती टोपी को छाकर उसके सिर पर उथों की त्यों रख दिया। अकवर सहित सारा दरवार चिकत रह गया। सम्र ट ने इन्हें बैठने के छिये कहा, इन्होंने कहा कि यहां जीव हैं फलतः बैठना मेरे लिये नियम विरुद्ध होगा। अकवर ने कहा वतलाइये कि कितने जीव हैं ? आचार्य ने कहा, तीन जीव हैं। काजी ने देखा तो ठीक तीन जीव थे। एक वकरी थी और उसने दो वच्चे जने थे। काजी, अकवर तथा सारी सभा आश्चर्य चिकत रह गई। अकवर को इनपर वड़ी श्रद्धा हुई। इन्हे वहुत कुछ देना भी चाहा पर त्यागी ये महात्मा क्यों छेने छगे ? अक्रवर की तरह उसका वेटा जहांगीर भी इन्हें सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखा करता था। अकवर तथा उसका पुत्र जहांगीर ने इनकी महनीयता-योग्यता से प्रभावित होकर, विशिष्ट धार्मिक तिथियोंने, वर्ष के वारह दिनों में अपने समस्त राज्य में कर्ताई जीव हिंसा न करने का फरमान निकाला था। इन वारह दिनों में भाद्रपद के पर्य पण के आठ दिन तो मुख्य थे ही, शेष चार दिनों में भी जीवहिंसा न होती थी। इसी तरह इन महान आत्मा के जरिये अगणित छोकोपकार हुए। सच तो यह है कि ऐसे महात्मा का आविर्माव ही समाज, शास्त्र, संसार, धर्म, नीति आदि की रक्षार्थ हुआ करता है। नहीं तो सृष्टि कव नाश को प्राप्त कर गयी होती।

मेरे चिरतनायक ने सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा की थी और सर्वत्र अपने उपदेशामृत से छोगों को कृतार्थ किया था। आपने कई प्रन्थ भी छिखे, जिनमें सबसे आदर्श 'निर्मष्ट चरित्र' है। आचायेदेव का देहावसान सं० १६७० की आश्विन कृष्ण द्वितीया को वेनातट (वेछाड़ा) में हुआ।

#### कार्त्तिक मास पर्वाधिकार

कात्तिक मास में कार्तिक विद अमावस्या दीपमालिका (दीवाली) के नाम से प्रसिद्ध है। चौबीसवें तीर्थंकर श्री महाबीर स्वामी साधु साध्वियों के साथ विहार करते हुए अन्त में पावापुरी आकर रहे। अपना अन्तिम समय निकट जानकर 'हस्तिपाल राजा' की ग्रुह शाला में आये। अपने उत्तर गौतम स्वामी (प्रथम गणधर) का अत्यधिक स्नेह देखकर उन्हें समीप के प्राम में देवशर्मा नामक ब्राह्मण को प्रतिवोध देने के लिये मेजा।

उनके जाने के बाद पद्मासन धारण करके सोछह प्रहर तक अखण्ड देशना दी। इस प्रकार बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण करके इसी अमावस्या के दिन रात्रि को स्वाती नक्षत्र आनेपर निर्वाण को प्राप्त हुए। उसी समय चौसठ इन्हों के आने से अनुपम उद्योत हुआ। उस समय भगवानरूपी दीपक के अस्त हो जाने से सभी ने रहों से उद्योत किया और तभी से दीपावछी पर्व मनाया जाने जगा।

इस तीर्थ में बारह हजार तीन सौ अष्टावन (१२३५८) जिन विम्व हैं और चरणों की स्थापना की तो गिनती ही नहीं है। अनंते मुनिराज इसी दिन निर्वाण को प्राप्त हुए अतएव जो आवक इस पर्व को शुद्ध भावना से आराधना करेंगे वे उत्तरोत्तर मुख और सम्पदा को प्राप्त करेंगे।

# मार्गशीर्ष मास पर्वाधिकार

मगिसर मास में मार्गशीर्ष सुद्दि ११ मौन एकादशी पर्व नाम सग्रह इसके गुणने अनंतर दिये गये हैं। इसी से ये दिन अधिक उत्तम माना जाता है। जैन सिद्धान्तों में इस पर्व की महिमा विस्तृत रूप से छिखी हुई है।

२२ वें तर्थंकर श्री नेमिनाथ जो के समय में एक सुव्रत नाम के सेठ थे। वे वहे ही योग्य, पिवत एवं धर्मात्मा थे। एक दिन उन्होंने मार्गशीर्ष विदि ११ को आठ प्रहर का पौषध िष्ठया और चारों प्रकार के आहारों का त्याग कर एवं कहों भी स्वस्थान छोड़ आने-जाने का नियम लेकर अपने घरमें विराजमान थे। चोरों को भी किसी तरह इस व्रन का पता चल गया। उन्होंने समय पाकर सेठ के सब माल की गठरी बांची और चलनेको तैयार ही थे कि इतने में धर्मरक्षक शासनदेव प्रगट हुई और उन्हें स्तिम्मत कर दिया। प्रातःकाल राजा ने भी आकर ये वार्ता देखी। राजा ने राजनीति के विरुद्ध कार्य देख चोरों को प्राणदण्ड की आज्ञा दी परन्तु उस द्यालु ने अपनी धार्मिक दया दिखला कर उन चोरों को मुक्त करवा दिया।

इसी तरह एक समय जसी नगर में आग लग गई। सेठजी पौषध बत लेकर घर में ही बेठे थे। केवल सेठ की दूकान एवं घर के अतिरिक्त समस्त नगर जल गया। इससे सहज ही मे इस पर्व की महिमा समक्त मे आ सकती है।

इस दिन मौन युक्त उपवास करना चाहिये। अठ पहरी पोसह करके मौन एकादशी का गुणना करना चाहिये। कराचित् पोसह करने की शक्ति न हो तो देसावगासिक लेकर गुणना करे। ग्यारह वर्ष में ग्यारह उपवास करे अगर अधिक इच्छा हो तो मास में विद, सुदि की दोनों एकादशो ग्यारह वर्ष और ग्यारह मास करे। इस तपस्या के करते हुए ग्यारह अंगों को शुद्धभाव से सुनें। अगर शक्ति हो तो उनको लिखावे। पढ़नेवालों की सहायता करे। अन्त में यथाशक्ति उद्यापन करे। आगम पूजा करावे। साधर्मीवत्सल करे। इससे सर्वदा सुख की प्राप्ति होगी। एक एक कल्याणक की एक एक माला गुणनी चाहिये। इस्त १६० माला गुणनी चाहिये।

# मौन एकादशी का गुणना

जम्बुद्रीप भरतक्षेत्र के अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री महायश सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री सर्वातुमूति अर्हते नमः। ६ श्री सर्वातुमूतिनाथाय नमः। ६ श्री सर्वातुमूतिसर्वज्ञाय नमः। ७ श्री श्रीधरनाथाय नमः।

जम्बुद्धीप भरतक्षेत्रके वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम २१ श्री निम सर्वेज्ञाय नमः। १६ श्री मिह्नअहते नमः। १६ श्री मिह्नाथाय नमः। १६ श्री मिह सर्वेज्ञाय नमः। १८ श्री अरनाथाय नमः।

जम्बुद्धीप भरतक्षेत्रके अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम ४ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः। ६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः। ६ श्री देव-श्रुत सवज्ञाय नमः। ७ श्री उदयनाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पूर्व भरतमें अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री शुभंकर अर्हते नमः। ६ श्री शुभंकरनाथाय नमः। ३ श्री शुभंकर सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री सप्तनाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पूर्व भरतमें वर्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम

२१ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री गुणनाथ अर्हते नमः। १६ श्री गुणनाथ नाथाय नमः। १६ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री गांगिलनाथाय नमः।

## धातकीखण्डके पूर्वभरतमें अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री साम्प्रति सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः। ६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः। ६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री विशिष्ट नाथाय नमः।

# पुष्कराई पूर्व भरतमें अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्रीमृतु सर्वज्ञाय नमः । ६ श्री व्यक्त अर्हते नमः । ६ श्री व्यक्त नाथाय नमः । ६ श्री व्यक्त सर्वज्ञाय नमः । ७ श्रीकेळाश नाथाय नमः ।

# पुष्कराई पूर्वभरतमें वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम

२१ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री योगनाथ अर्हते नमः। १६ श्री योगनाथ नाथाय नमः। १६ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री अयोग नाथाय नमः।

# पुष्करार्द्ध पूर्व भरतमें अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री परमसर्वज्ञाय नमः । ६ श्री शुद्धात्ति अर्हते नमः । ६ श्री शुद्धार्ति नाथाय नमः । ६ श्री शुद्धार्ति सर्वज्ञाय नमः । ७ श्री निष्केश नाथाय नमः ।

# धातकीखण्डके पश्चिम भरतमें अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री सर्वार्ध सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री हरिभद्र अर्हते नमः। ६ श्री हरिभद्र नाथाय नमः। ६ श्री हरिभद्र सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री मगधाथि नाथाय नमः।

#### धातकीखरहके पश्चिम भरतमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकरयाक नाम

२१ श्री प्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री अक्षोभ अर्हते नमः। १६ श्री अक्षोभ नाथाय नमः। १६ श्री अक्षोभ सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री मिहसिंह नाथाय नमः।

## धातकीखण्डके पश्चिमभरतमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री धनद अर्हते नमः। ६ श्री धनद नायाय नमः। ६ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री पौष नाथाय नमः।

# पुष्कराद्धे पश्चिम भरतमें अतीत २४ जिन पश्चकत्याणक नाम

४ श्री प्रस्मव सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री चारित्रनिधि शहते नमः। ६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः। ६ श्री जारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री प्रशमजित नाथाय नमः।

### पुष्करार्द्ध पश्चिम भरतमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकत्याणक नाम

२१ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री विपरीत अर्हते नमः। १६ श्री विपरीत नाथाय नमः। १६ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री प्रशाद नाथाय नमः।

# पुष्कराई पश्चिम भरतमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्रो अघटित सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः। ६ श्री भ्रमणेन्द्र नाथाय नमः। ६ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री श्रृषभचन्द्र नाथाय नमः।

# जम्बुद्वीपके ऐरवतक्षेत्रमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री दयांत सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री अभिनन्दन अर्हते नमः। ६ श्री अभिनन्दन नाषाय नमः। ६ श्री अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री रत्नेश नाथाय नमः।

# जम्बुद्वीपके एरवतक्षेत्रमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

२१ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री मरुदेव अर्हते नमः। १६ श्री मरुदेव नाथाय नमः। १६ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री अतिपार्श्व नाथाय नमः।

# जम्बद्वीपके ऐरवतक्षेत्रमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री निन्दिपेण सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री व्रवधर अर्हते नमः। ६ श्री व्रवधर नाथाय नमः। ६ श्री व्रवधर सर्वेज्ञाय नमः। ७ श्री निर्वाण नाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पूर्व ऐरवतमें अतीत जिन पश्रकत्याणक नाम

४ श्री सौन्दर्य सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री त्रिविकस अर्हते नमः। ६ श्री त्रिविकस नाथाय नमः। ६ श्री त्रिविकस सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री नरसिंह नाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पूर्व ऐरचतमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

२१ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री सन्तोपित अर्हते नमः। १६ श्री सन्तोपित नाथाय नमः। १६ श्री सन्तोपित सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री काम नाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पूर्व ऐरवतमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री चन्द्रदाह अर्द्दते नमः। ६ श्री चन्द्रदाह नाथाय नमः। ६ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री शिलादिल नाथाय नमः।

# पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतमें अतीन २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री अप्टाहिक सवेज्ञाय नमः। ६ श्री वणिक अर्हते नमः। ६ श्री वणिक नाथाय नमः। ६ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री उद्यज्ञान नाथाय नमः।

# पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरचतमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

२१ श्री तमोनिकन्दन सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः। १६ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः। १६ श्रीसायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः। १६ श्रीलेमन्त नाथाय नमः।

# पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

अी निर्वाण सर्वेज्ञाय नमः। ६ श्री रविराज अर्हते नमः। ६ श्री रविराज नाथाय नमः। ६ श्री रविराज सर्वेज्ञाय नमः। ७ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पश्चिम ऐरवतमें अतीत २४ जिन पश्चकत्याणक नाम

४ श्री पुरुरव सर्वज्ञाय नमः। ३ श्री अववोध अर्हते नमः। ६ श्री अववोध नाथाय नमः। ६ श्री अववोधं सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री विक्रमेन्द्र नाथाय समः।

# धातकीखण्डके पश्चिम ऐरवतमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

२१ श्री सुशान्त सर्वज्ञाय नमः। १० श्री हर अर्हते नमः। १६ श्री हर नाथाय नमः। १६ श्री हर सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री नन्दकेश नाथाय नमः।

# धातकीखण्डके पश्चिम ऐरवतमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री महामुगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः । ६ श्री अशौचित अहेते नमः । ६ श्री अशौचित नाथाय नमः । ६ श्री अशौचित सर्वज्ञाय नमः । ७ श्री धर्मेन्द्र नाथाय नमः ।

# पुष्कराई परिचम ऐरवतमें अतीत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री अश्वनृत्द् सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री कुटिल अर्हते नमः। ६ श्री कुटिल नाथाय नमः। ६ श्री कृटिल सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः।

# पुष्कराई पश्चिम ऐरवतमें वर्त्तमान २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

२१ श्री निन्दक् सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री धर्मचन्द्र अर्हते नमः। १६ श्री धर्मचन्द्र नाथाय नमः। १६ श्री धर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री विवेक नाथाय नमः।

# पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवतमें अनागत २४ जिन पश्चकल्याणक नाम

४ श्री कळाप सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री विसोम अर्हते नमः। ६ श्री विसोम नाथाय नमः। ६ श्री विसोम सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री आरण नाथाय नमः।

# श्री जिन कल्याणक संग्रह

## कल्याणक की टीप और जाप

कात्तिक वदी		मार्गशीर्ष वदी	
तिथि	जन्मादिनगरी	तिथि	जन्मादिनगरी
५ श्री संभव सर्वज्ञाय नमः	सावत्थी	५ श्री सुविधि अर्हते नमः	काकन्दी
१२ " नेमि परमेष्ठिने नमः	सौरीपुर	६ ,, सुविधि नाथाय नमः	काकस्दी
१२ » पद्मप्रभ अर्हते नमः	कौशाम्बी	१० , महाबोर नाथाय नमः	क्षत्रीकुण्ड
१३ % पद्मप्रभ नाथाय नमः	कौशास्त्री	११ " पद्मप्रभ पारंगताय नमः	शिखरजी
३० ॥ वीर पारंगताय नमः	पावापुर	मार्गशीर्ष सुदी	
कार्त्तिक सुदी		तिथि	जन्मादिनगरी
तिथि	जन्मादिनगरी	१० श्री अरनाथ अर्हते नमः	हस्तिनापुर
३ श्री सुविधि सर्वज्ञाय नमः	काकन्दी	१० " अरनाथ पारंगताय नमः	शिखरजी
१२ । अर सर्वज्ञाय नमः	हस्तिनापुर	११ " अरनाथ नाथाय नमः	हस्तिनापुर

	[ 1	88 ]	
११ श्री मिल्ल अर्हते नमः	<b>मिथि</b> छा	४ श्री विमल नाथाय नमः	कम्पिलपुर
११ ., मिलनाथ नाथाय नमः	मिथिला	८ ,, अजित अहते नमः	नगम्बलपुर अयोध्या
११ ,, महिनाथ सर्वज्ञाय नमः	मिथिला	६ ,, अजित नाथाय नमः	अयोध्या अयोध्या
११ " निम सर्वज्ञाय नमः	मिथिला	१२ " अभिनन्दन नाथाय नमः	जवाच्या अयोध्या
१४ " संभव अर्हते नमः	सावत्थी	१३ ,, धर्मा नाथाय नमः	जवाव्या <b>र</b> ह्मपुरी
१५ 🧓 संभव नाथाय नमः	सावत्थी	फाल्गुन वदी	रन्धुरा
पौष वदी		तिथि	
तिथि	जन्माद्निगरी	६ श्री सुपार्श्व सर्वज्ञाय नमः	जन्मादिनगरी
१० श्री पार्श्वनाथ अर्हते नमः	जन्माद्नगरा वाणारसी	७ ,, सुपार्श्व पारंगताय नमः	बनारस शिखरजी
११ ,, पार्श्वनाथनाथाय नमः	वाणारसा वाणारसी	७ , चन्द्रप्रभ सर्वज्ञाय नमः	
१२ , चन्द्रप्रम अहते नमः		<ul><li>६ % सुविधि परमेष्ठिने नमः</li></ul>	चन्द्रावती करणा
१३ , चन्द्रप्रभ नाथाय नमः	चन्द्रावती	११ ,, भृषभ सर्वज्ञाय नमः	काकन्दी पुरिमताळ
१४ ,, शीतल सर्वज्ञाय नमः	चन्द्रावती भहिलपुर	१२ % श्रेयांस अर्हते तमः	पुरिमवाळ सिंहपुर
_	<b>નાદ</b> જપુર	१२ ,, सुनि सुव्रत सर्वज्ञाय नमः	ासहपुर राजगृही
पौष सुदी		१३ ,, श्रेयांस नाथाय नमः	राजगृहा सिंहपुर
तिथि	जन्मादिनगरी	१४ " वासुपूज्य अर्हते नमः	चम्पापुर
<b>६ श्री विमल सर्वज्ञाय नमः</b>	कस्पिलपुर	३० ,, वासुपूज्य नाथाय नमः	चस्पापुर
• •		7. 7. 1.00	1.113.
६ "शान्ति सर्वज्ञाय नमः	हस्तिनापुर		-
६ "शान्ति सर्वज्ञाय नमः ११ "अजित सर्वज्ञाय नमः	हस्तिनापुर अयोध्या	फाल्गुन सुदी	
• • •	- 1	तिथि	जन्मादिनगरी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः	अयोध्या	तिथि २ श्री अर परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ ,, अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ ,, धर्म सर्वज्ञाय नमः	अयोध्या अयोध्या	तिथि २ श्री अर परमेष्ठिने नमः ४ ,, मिंह परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर मिथिला
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ ,, अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ ,, धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी	तिथि २ श्री अर परमेष्ठिने नमः ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर मिथिछा सावत्थी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ ,, अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ ,, धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी	तिथि २ श्री अर परमेष्ठिने नमः ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः १२ ,, मिंड पारंगताय नमः	हस्तिनापुर मिथिला सावत्थी शिखरजी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ ,, अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी  तिथि  ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी कौशस्वी	तिथि २ श्री अर परमेष्ठिने नमः ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः १२ ,, मिं पारंगताय नमः १२ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः	हस्तिनापुर मिथिछा सावत्थी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी  तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शोतल अर्हते नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी कौशम्बी भहिलपुर	तिथि  २ श्री अर परमेष्ठिने नमः  ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  १२ ,, मिं पार्गताय नमः  १२ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न यदी	हृस्तिनापुर मिथिछा सावत्थी शिखरजी राजगृही
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी  तिथि ६ श्री पद्मप्रस परमेष्ठिने नमः १२ , शीतल अर्हते नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी कौशम्बी भहिलपुर भहिलपुर	तिथि  २ श्री अर परमेष्ठिने नमः  ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  १२ ,, मिं पारंगताय नमः  १२ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न बदी  तिथि	हस्तिनापुर मिथिछा सावस्थी शिखरजी राजगृही जन्मादिनगरी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शीतळ अर्हते नमः १३ , ज्ञृषम पारंगताय नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी औशस्वी भहिलपुर भहिलपुर अष्टापद	तिथि  २ श्री अर परमेष्ठिने नमः  ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  १२ ,, मिं पारंगताय नमः  १२ ,, मुनि सुक्रत नाथाय नमः  चैन्न चदी  तिथि  ४ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर मिथिछा सावत्थी शिखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी  तिथि ६ श्री पद्मप्रस परमेष्ठिने नमः १२ , शीतल अर्हते नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी कौशम्बी भहिलपुर भहिलपुर	तिथि  २ श्री अर परमेष्ठिने नमः  ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  १२ ,, मिं पारंगताय नमः  १२ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न चदी  तिथि  ४ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः  ४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः	हस्तिनापुर मिथिला सावत्थी शिखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शीतळ अर्हते नमः १३ , ज्ञृषम पारंगताय नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी औशस्वी भहिलपुर भहिलपुर अष्टापद	तिथि  २ श्री अर परमेष्ठिने नमः  ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  १२ ,, मिं पारंगताय नमः  १२ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न चही  तिथि  ४ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः  ४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः  ४ ,, चन्द्रप्रम परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर मिथिला सावत्थी रिाखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी चन्द्राबती
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी  तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शीतळ अर्हते नमः १२ , शीतळनाथ नाथाय नमः १३ , ऋषम पारंगताय नमः ३० , श्रेयांस सर्वज्ञाय नमः माघ सुदी	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी औशस्वी भहिलपुर भहिलपुर अष्टापद	तिथि  १ श्री अर परमेष्ठिने नमः  १ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  १ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  ११ ,, मिं पारंगताय नमः  ११ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न चदी  तिथि  ११ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः  ११ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः  ११ ,, मुप्म अर्ह्वे नमः	हस्तिनापुर मिथिका सावत्थी शिखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी चन्द्रावती अयोध्या
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी  तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शीतल अर्हते नमः १२ , शीतल नमः १३ , श्रवस पारंगताय नमः ३० , श्रेयांस सर्वज्ञाय नमः माघ सुदी	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी भौशस्वी भहिलपुर भहिलपुर अष्टापद सिंहपुर	तिथि  २ श्री अर परमेष्ठिने नमः  ४ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  ८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  १२ ,, मिं पार्गताय नमः  १२ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न चत्री  तिथि  ४ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः  ४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः  ४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः  ५ ,, चन्द्रप्रम परमेष्ठिने नमः  ८ ,, मृपम अर्ह्ते नमः  ८ ,, मृषम नाथाय नमः	हस्तिनापुर मिथिला सावत्थी रिाखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी चन्द्राबती
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शीतळ अर्हते नमः १२ , शीतळ नाथ नाथाय नमः १३ , ऋषम पारंगताय नमः ३० , श्रेयांस सर्वज्ञाय नमः माघ सुदी तिथि २ श्री अभिनन्दन अर्हते नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी भीराम्बी भहिलपुर अष्टापद सिंहपुर	तिथि  १ श्री अर परमेष्ठिने नमः  १ ,, मिं परमेष्ठिने नमः  १ ,, संभव परमेष्ठिने नमः  ११ ,, मिं पारंगताय नमः  ११ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः  चैन्न चदी  तिथि  ११ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः  ११ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः  ११ ,, मुप्म अर्ह्वे नमः	हस्तिनापुर मिथिला सावत्थी रिाखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी चन्द्रावती अयोध्या अयोध्या
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १४ , धर्म सर्वज्ञाय नमः  साघ वदी  तिथि  ६ श्री पद्मप्रभ परमेष्ठिने नमः १२ , शीतळनाथ नाधाय नमः १२ , श्रव्यास सर्वज्ञाय नमः २३ , श्र्वास सर्वज्ञाय नमः माघ सुदी  तिथि  २ श्री अभिनन्दन अर्हते नमः २ , वासुपूज्य सर्वज्ञाय नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी कौशस्वी भहिलपुर भहिलपुर अष्टापद सिंहपुर जन्मादिनगरी अयोध्या	तिथि १ श्री अर परमेष्ठिने नमः ११ ,, मिं परमेष्ठिने नमः ११ ,, मिं परमेष्ठिने नमः ११ ,, मिं पारंगताय नमः ११ ,, मिं सुन्नत नाथाय नमः चैन्न चदी तिथि ११ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः १४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः १४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः १४ ,, चन्द्रपम परमेष्ठिने नमः १४ ,, चन्द्रपम परमेष्ठिने नमः १४ ,, मृपम अर्ह्ते नमः १८ ,, मृपम अर्ह्ते नमः १८ ,, मृषम नाथाय नमः चैन्न सुदी	हस्तिनापुर मिथिका सावत्थी शिखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी चन्द्रावती अयोध्या अयोध्या
११ , अजित सर्वज्ञाय नमः १४ , अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः १५ , धर्म सर्वज्ञाय नमः माघ वदी तिथि ६ श्री पद्मप्रम परमेष्ठिने नमः १२ , शीतळ अर्हते नमः १२ , शीतळ नाथ नाथाय नमः १३ , ऋषम पारंगताय नमः ३० , श्रेयांस सर्वज्ञाय नमः माघ सुदी तिथि २ श्री अभिनन्दन अर्हते नमः	अयोध्या अयोध्या रत्नपुरी जन्मादिनगरी भीराज्यी भद्दिलपुर अष्टापद सिंहपुर जन्मादिनगरी अयोध्या चम्पापुर	तिथि १ श्री अर परमेष्ठिने नमः ११ ,, मिं परमेष्ठिने नमः ११ ,, संभव परमेष्ठिने नमः ११ ,, मिं पारंगताय नमः ११ ,, मुनि सुन्नत नाथाय नमः चैन्न चदी तिथि ११ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः १४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः १४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः १४ ,, चन्द्रप्रभ परमेष्ठिने नमः १८ ,, भ्राप्म अर्ह्वे नमः	हस्तिनापुर मिथिला सावत्थी रिाखरजी राजगृही जन्मादिनगरी बाणारसी बाणारसी चन्द्रावती अयोध्या अयोध्या

		-7 1	
५ श्री अजित पारंगताय नमः	शिखरजी	१३ श्री शान्ति अर्हते नमः	हस्तिनापुर
५ " संभव पारंगताय नमः	शिखरजी	,	शिखरजी
१ "अनन्त पारंगताय नमः	शिखरजी		हस्तिनापुर
६ ,, सुमित पारंगताय नमः	शिखरजी	क्येष्ठ सुदी	7
११ " सुमति सर्वज्ञाय नमः	अयोध्या	तिथि	
१३ ., महावीर अर्हते नमः	ধ্বসীক্তুদ্ভ	२ श्री सुपार्श्व परमेन्डिने नम	जन्मादिनगरी वाणारसी
१५ " पद्मप्रम सर्वज्ञाय नमः	कौशाम्बी	५ , धर्म पारंगताय नमः	वाणारसा शिखरजी
वैशाख वदी		<ol> <li>त्रासुपूज्य परमेष्ठिने नमः</li> </ol>	ारालरजा चम्पापुर
तिथि	जन्मादिनगरी	१२ " सुपार्स्व अर्हते नमः	वाणारसी
१ श्री कुन्यु पारंगताय नमः	भरमादुसगरा शिखरजी	१३ ,, सुपार्ख नाथाय नमः	वाणारस <u>ी</u>
२ » शीतल पारंगताय नमः	शिखरजी	1	41411
१ % कुन्यु नाथाय नमः	हस्तिनापुर	आषाढ़ वदी	
६ ,, शीवल परमेष्ठिने नमः	शस्त्रनापुर भद्दिलपुर	तिथि	जन्मादिनगरी
१० » निम पारंगताय नमः	माद् <b>छ</b> पुर शिखरजी	४ श्री भृषभ परमेष्ठिने नमः	अयोध्या
१३ " अनन्त अर्हते नमः	अयोध्या	७ " विमल पारंगताय नमः	शिखरजी
१४ » अनन्त नाथाय नमः	अयोध्या अयोध्या	६ , निम नाथाय नमः	मिथिला
१४ » अनन्त सर्वज्ञाय नमः	अयोध्या	आषाढ़ सुदी	
१४ ,, कुन्युनाथ अहते नमः	हस्तिनापुर	तिथि	जन्मादिनगरी
वैशाख सुदी	હારતનાસુર	६ श्री महाबीर परमेष्ठिने नमः	क्षत्रीकुण्ड
+	6	८ ,, नेमि पारंगताय नमः	गिरिनार
४ श्री अभिनन्दन परमेष्ठिने नमः	जन्मादिनगरी	१४ " वासुपूज्य पारंगताय नमः	चम्पापुर
७ " धर्म परमेष्ठिने नमः	अयोध्या	श्रावण वदी	
८ " अभिनन्दन पारंगताय नमः	रत्नपुरी	तिथि	जन्म।दिनगरी
८ " सुमिति अर्हते नमः	शिखरजी अयोध्या	३ श्री श्रेयांस पारंगताय नमः	शिखरजी
<sup>१</sup> ॥ सुमित नाथाय नमः	अयोध्या अयोध्या	७ " अनन्त परमेष्ठिने नमः	अयोध्या
90 0 0	जयाच्या तुवालिका नदी	८ ,, निम अईते नमः	मिथिला
११ , कुन्धु पारंगताय नमः	शिखरजी	६ , कुन्थु परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर
१२ " निसल परमेष्ठिने नमः	कम्पिलपुर	श्रावण सुदी	
<sup>१३</sup> » अजित परमेष्ठिने नमः	अयोध्या	तिथि	जनमादिनगरी
<b>ਰਹੇਵ</b> ਨ ਰਨੀ		२ श्री सुमति परमेष्ठिने नमः	अयोध्या
तिथि	जन्मादिनगरी	५ , नेमि आईते नमः	सारीपुर
६ श्री श्रेयांस परमेष्ठिने नमः	सिंहपुर	६ ,, नेमिनाथाय नमः	द्वारिका
८ ,, सुनि सुन्नत अर्हते नमः	राजगृही	८ , पार्श्व पारंगताय नमः	शिखरजी
६ ., मुनि सुत्रत पारंगताय नमः		१५ ,, मुनि सुत्रत परमेष्ठिने नमः	राजगृही
		· · · · · ·	

भाद्रपद वदी

तिथि

७ श्री चन्द्रप्रभ पारंगताथ नमः

७ , शान्ति परमेष्ठिने नमः

८ , सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः

भाद्रपद सुदी

तिथि

१ श्री सुविधि पारंगताथ नमः

श्री सुविधि पारंगताय नमः
 आश्विन वदी
 तिथि
 श्री महावीर गर्भापहाराय नमः

३० " नेमि सर्वज्ञाय नमः

जन्मादिनगरी शिखरजी हस्तिनापुर बाणारसी

जन्मादिनगरी क्षत्रीकुण्ड

जन्मादिनगरी क्षत्रीकुण्ड गिरिनार

# आश्विन सुदी

तिथि जन्मादिनगरी

१५ श्री सुविधि परमेष्टिने नमः 🍎 मिथिला

१ च्यवनः कल्याणकर्मे सोना चढ़ावे।

२ जन्म कल्याणकमें घी गुड़ चढ़ावे।

३ दीक्षा कल्याणकमें वस्त्र चढ़ावे।

४ केवल कल्याणकमें स्वेत गोला चढ़ावे।

४ मोक्ष कल्याणकमें गुड़, छोहा, छड़ू, चढ़ावे।

पौष मास पर्वाधिकार

पौष मासमें पौष विद दशमी 'पौष दशमी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन श्री पार्श्वनाथ भगवान् का जन्म कल्याणक है। इस दिन दोनों समय प्रतिक्रमण करना चाहिये। जहां श्री पार्श्वनाथ स्वामी का तीर्थ है वहां यात्रा करने को जावे। कदाचित् वहां न जा सके तो जहां श्री पार्श्वनाथजी की स्थापना अथवा देवालय हो वहां महोत्सव पूर्वक दर्शन करने जावे। जल्यात्रादिक महोत्सव करके अष्टोत्तरी स्थात्र करावे। अष्ट प्रकारी एवं सत्रहमेदी पूजा विविध आहम्बरों सहित करे। पीछे गुरु महाराज के समीप जाकर पौप दशमी का ज्याख्यान सुने। पीछे एकासन आदि का पश्चम्बाण करे। चतुर्विध आहार का नियम लेवे। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए भूमि पर शयन करे। हो सके तो रात्रि जागरण करे और गीत, गान, नाटकादि करे। जन्म कल्याणक स्तवंन, पास जिनेसर जग तिलो ए, वाणी ब्रह्मा वादिनी इत्यादि पार्श्वनाथ स्वामी के गुणगर्भित स्तवन पढ़े।

शास्त्रों में विधान है कि नवसी, दशमी और एकादशी इन तीनों दिन एक बार भोजन करना चाहिये। इस तरह मन, वचन और काया से जो भी भन्य दस वर्ष तक इस पर्व का आराधन करेंगे वे इस भव में तो धन, धान्य, पुत्र, कलत्र, आदि सुख सम्पदा को प्राप्त करेंगे तथा परभव में देनादिक ऋदियों को प्राप्त करते हुए कमशः निर्वाण प्राप्त करेंगे। इसीलिये इस पर्व की भी समुचित आराधन करना चाहिये।

# श्री पार्श्वनाथजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र

श्री पार्श्वनाथजी २३ वें तीर्थक्कर थे। आज से छगभग २८०० वर्ष पहिले काशी देश की बनारस नगरी में अश्वसेन राजा राज्य करते थे। ये बढ़े प्रतापी सरछ एवं न्यायप्रिय थे। इनकी रानी वामादेवी पतिव्रता और विद्वपी थी।

इन्हीं रानी की पवित्र कोख से, विकम सबत् से ६०० वर्ष पूर्व पौप विद दशमी के दिन इन्होंने जन्म लिया। नगर भर में अपूर्व उत्सव मनाया गया। ज्योतिषों के कथन पर, कि 'ये आपका पुत्र वड़ा यशस्वी होगा। पारस के समान जो लोहे को भी सोना बना देता है, लोगों को धर्ममार्ग बता कर सुखी करेगा" पिता ने इनका पार्श्व हुमार रख दिया।

उपरोक्त जापों में च्यवनमे, परमेष्ठीनेपद, जन्ममें, अर्हते, दीक्षामे, नाथ, केवलज्ञानमें, सर्वज्ञाय, और मोक्ष्में,
 पारंगताय नमः हैं।

यौवनावस्था को प्राप्त होने पर राजा प्रसेनजित की कन्या प्रभावती से इनका वित्राह सम्पन्न हुआ।

एक समय इन्होंने सुना कि कमठ नाम का तपस्वी इस नगर में आया है अपने चारों ओर अग्नि जला कर तप करता है। ये भी हाथी पर सवार होकर गये। अवधिज्ञान से प्रभु ने लकड़ी में सर्प देखा और उस तपस्वी से कहा देख उस लकड़ी में सर्प जल रहा है। सन्यासी ये सुनकर आगवशूला हो गया। तब कुमार ने लकड़ी फड़वाई। बास्तव में उसमें तड़पता हुआ सर्प देख कर सभी को भारी त्रिस्मय हुआ। पार्श्व कुमार ने उसे ॐ हीं असिआउ साय नमः, नमस्कार मन्त्र सुनाया जिससे वह मरकर धरणेन्द्र हुआ और कमठ मर कर मेघमाली नाम का देव हुआ।

कुछ समय पश्चात् छोकांतिक देवताओंने प्रभु से प्रेरणा की। प्रभु ने भी जीवों को सचा मार्ग दर्शाने के छिए एक वर्ष तक वर्षी दान देकर पौष विद एकादशी के दिन ३०० प्रकाें के साथ दीक्षा धारण की।

इस प्रकार दीक्षा ठेकर प्रमु कठिन सपस्या करने छगे। एक समय प्रमु जब ध्यानावस्थित छाढ़े थे, उस समय मेघमाछी ने अपना पूर्व भव स्मरण करके, अपने तिरस्कार का वदछा छेने के छिये प्रमु पर अति वृष्टि की। शीघ ही जल भगवान के गले तक पहुँच गया। तब घरणेन्द्र ने मट आकर भगवान को एक कमल के सिंहासन पर विठाया और अपना सर्प का रूप बना कर अपने फणों से उनके सिर पर छाया की! ये देखकर कमठ को छजा आई और वो प्रमु से क्षमा मांग-नमस्कार कर स्वस्थान को चला गया।

इसी प्रकार अनेक तपस्यार्य करते उपसर्गी को सहते हुए भगवान को चैत्र विट चतुर्दशी के दिन केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

प्रमु ने विचर विचर कर छोगों को उपदेश देना आरंभ किया। अनेक भटकते हुए जीवों को संसारक्पी महासागर से पार छगाया।

विक्रम संवत् से ८२० वर्ष पूर्व, श्रावण विद अष्टमी के दिन सम्मेतशिखर पर्वत पर १०० वर्ष की आयुष्य पूर्ण करके निर्वाण पद को प्राप्त किया। इसी कारण आजकळ इस पर्वत को पार्श्वनाथ हिल (पहाड़ी) भी कहते हैं।

#### माघ मास पर्वाधिकार

माघ मास में माघ वदि १३ मेरु तेरस के नाम से प्रसिद्ध है। इसी दिन श्री ऋषम देव स्वामी का निर्वाण कल्याणक है। इस पर्व की उत्पत्ति कुमर पिंगल राय ने की।

अयोध्या नगरीमें अनन्तर्नार्थ राजा राज्य करताथा। उसके एक पंगु (पैरहीन) पुत्र हुआ जिसका नाम पिंगल राय था। उसने गांगिल मुनि से इस पर्व का अधिकार मुनकर १३ मास तक तपस्या की। उसके फलस्वरूप उसका पंगुपन जाता रहा और मुन्दर रूप प्रगट हुआ। इस प्रकार पुनः तेरह १३ वर्ष तक इस पर्व की आराधना करके नगर में ऊजमना किया। तेरह मन्दिरों का निर्माण करवाया। उसमे तेरह प्रतिमा सुवर्णमयी, तेरह चांदीमयी और तेरह प्रतिमा रज्ञमयी स्थापित की। तेरह दफा श्री संघ सहित तीथों की यात्रा की। तेरह साधर्मीवत्सल किये। इस तरह चहुत ज्ञान की भक्ति की। अन्त में श्री मुत्रताचार्य मुनि से दीक्षा लेखर क्रमशः सब कर्मों को खपा कर जीवों को प्रतिवोध देते हुए मोक्ष गये।

इसीलिये ये पर्व अति उत्तम और कल्याणकारी है। जो भन्य इसकी आराधना करेंगे वे रूप, गुण, तेज और समृद्धी को प्राप्त करेंगे।

इस दिन उपवास करना चाहिये। रक्षमयी पांच मेरु भगवान के सन्भुख चढ़ावे। कदाचित ऐसी शक्ति न हो तो चांदी के अथवा घृत के मेरु चढ़ावे। स्नात्र, अष्ट प्रकारी या सत्रहमेदी पूजा करावे। दोनों समय प्रतिक्रमण करे। अष्टद्रव्य से पूजा करें देववन्दना करे। "श्री श्रृष्मदेव स्वामी पारंगताय नमः" इस पद का २००० गुणना करे। अगर जो भव्य तेरस के दिन पोसह करे और पूजादिक सब विधि पारने के दिन करे। इसी प्रकार तेरह वर्ष अथवा तेरह मास तपस्या करनी चाहिये। पीछे यथाशक्ति तप का ख्यापन करे, साधर्मीवत्सळ करे। तीथों की यात्रा करे। गुरु भक्ति अवश्य करे।

## फाल्गुन मास पर्वाधिकार

फाल्गुन मास में मिति फाल्गुन सुदि १४ तीसरी चौमासी चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन की सर्व विधि आषाढ़ चौमासी चतुर्दशी के समान करनी चाहिये।

# होली अधिकार

भगवान् महावीर स्वामी ने वर्ष में ६ उत्तम पर्व कहे हैं:—तीन चौमासा, दो ओळी तथा एक पर्युषण। जिन में से दो ओळी एक पर्युपण तथा कार्त्तिक चौमासे का महोत्सव तो प्राय: सभी जगह विधि विधान पूर्वक होता है। फाल्गुन चौमासा ठीक विधि से नहीं होता।

शास्त्रों में छिला है कि :--

होलिका फाल्गुन मासे, द्विविधा द्रव्य भावतः। तत्राद्या धर्महीनानां, द्वितीया धर्मिणां मता॥१॥

अर्थात होली दो प्रकार से मनाई जाती है १ द्रव्य से २ माव से। द्रव्य से होली मनाने में अधर्म होता है और भाव से मनाने में सुख की प्राप्ति होती है। श्रुभध्यान रूपी अग्नि से अध्य कर्म रूपी छकड़ी को जलाना चाहिये इसी से कर्मों का नाश होता है और पुण्य की प्राप्ति होती है!

पूर्व में होली के विशेष स्तवन लिखे हैं सो उन्हें बोलना चाहिये अथवा वसन्त के स्तवन बोलने चाहियें। रात्री जागरण करना चाहिये। मन्दिरजी में पूजायें करानी चाहिये। यथाशिक सुन्दर नाटक करना, साधमी वत्सल करना और अगर यथेष्ट इच्छा हो तो जल, चन्दन, केशर, गुलाल इत्यादिक से क्रीड़ा करनी चाहिये इसी प्रकार प्रतिक्रमण व्रत जिन पूजादि धर्म कार्यों में समय व्यतीत करना चाहिये।

# श्री जिन कुदाल स्रिजी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र

मारवाड़ देश के 'सिमियाना' त्राम में छाजेहड़ गोत्रीय मन्त्री देवराज के पुत्र मिहराज श्री जैसेला जेल्हागर रहते थें। उसकी परम प्रेयसी पत्नी जयश्री थी। उन्हों के गर्भ से मेरे चिरत्रनायक का जन्म हुआ। आपका नाम 'कर्मण' रखा गया था। जब आप दश साल के थे, कल्किल केवली श्री जिन चन्द्र सूरिजी इनके प्राम में आये। वे बड़े ही प्रभावशाली धर्मोपदेशक थे, फल्लः उनके उपदेश का प्रभाव आप पर बहुत अधिक पड़ा। अथवा थों किहये कि जैसे अच्छे खेत में पड़ कर बीज उन आते हैं—व्यर्थ नहीं होते, ठीक उसी तरह उनके उपदेश मेरे चरितनायक के मानस पर—तथा मिस्तिष्क पर सफल सिद्ध हुए। यद्यपि माता ने सासारिक मोह ममता के वश होकर इन्हें रोकने की चेप्टा की फिर भी इन्होंने माता को सममा दुमा कर श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज से खूब समारोह के साथ दीक्षा लेही ही । दीक्षा कालिक नाम 'कुशल कीर्ति' रखा गया। उन दिनों वयोवृद्ध उपाध्याय 'विवेक समुद्र' जी बड़े ही उक्कोटि के निद्वान् थे,अतयव उन्हीं से आपने विद्या पढ़ी।

वाद में श्री जिनचन्द्रसूरिजी नागोर आये तो वहां के प्रतिष्ठित आदिमयों ने उत्सव प्रारम्भ कराया, जगह जगह पर दानशालायें खोलीं, जिन मन्दिरों में नन्दी उत्सवादि शुरू किये गये। उस महोत्सव में सोमचन्द्र आदि साधु और शील समृद्धि आदि साध्वयों को दीक्षा दी गई। जगधन्द्रजी को वाचनाचार्य पद प्रदान किया गया। कुशलकीर्त्तिजी को भी वाचनाचार्य पद प्रदान किया गया।

वाद की वात है, श्री जिनचन्द्र सूरिजी विहार करते हुए खण्ड सराय में आकर चातुर्मास कर रहे थे कि वहां उनको 'कम्प' रोग हो गया। उन्होंने अपने ज्ञान ध्यान से अपनी आयु शेप समक्ष कर अपने हाथ से दीक्षित, तर्क साहित्य, अलङ्कार ज्योतिष और पर-दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् वाचनाचार्य कुराल कीर्त्ति गणि को अपना सूरि पद प्रदान करने के लिये राजेन्द्र चन्द्राचार्यजी के पास पत्र मेजा और कुछ स्वस्थ होकर मेडता होते हुए कोशवाणी आये एवं अनशन करके स्वर्ग सिधार गये।

इधर जयब्रह्म गणि के द्वारा उक्त सूरिजी का पत्र राजेन्द्र सुरिजी को मिला। यद्यपि उन दिनों में वहां महा मयङ्कर अकाल पड़ रहा था। फिर भी दिवंगत श्री जिनचन्द्र सूरिजी की आजा पालन करना उन्होंने अपना परम कर्त्तव्य सममा फलतः सूरि पद प्रदान मुहूर्त्त निकाल दिया। सच्चे महात्मा की अभिलाषा आप ही आप पूरी हो जाती है, आवक जाल्हण के पुत्र तेजपाल और स्द्रपाल ने सूरि पद स्थापन महोत्सव को अपनी ओर से सुसम्पन्न करने का भार स्वीकार कर लिया फलतः श्रीमान् आचार्य की आजा लेकर योगिनीपुर, उच नगर, देवगिरि, चिन्तौड़, खम्भात आवि चारों दिशाओं में आमन्त्रण पत्रिकाएं भेजी गर्यों; संघ आने लगे।

बड़े समारोह के साथ—संवत् १३०० की जेठ विद ११ को श्री राजेन्द्र चन्द्राचार्य जी ने महामहोपाध्याय विवेक समुद्रजी, प्रवर्त्तक जयवद्यभ जी आदि ३३ साधुओं जयिद्व आदि २३ साधिवओं और समस्त संघ के समक्ष स्वर्गीय आचार्य पाद की आज्ञानुसार शान्तिनाथ स्वामी के मन्दिर में सूरि पद पर कुशल कीर्त्ति जी को बैठाया और आचार्यपाद का नाम कुशल सूरि रखा।

पद प्राप्त करने के बाद सूरिजी महाराज ने भीम पछी की ओर विहार किया। वहां पहुंचने पर वीरदेव श्रावक ने प्रवेश महोत्सव मनाया। वहां से आप पाटण गये और सूरिजी का दूसरा चातुर्मास वहां ही सम्पन्न हुआ। संवत् १३७६ मार्गशीर्ष कृष्ण पश्चमी को इन्होंने शान्तिनाथ स्वामी के मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव कराया। बाद में शत्रु अय पर्वत पर अप्यमदेव स्वामी के मन्दिर की नीव डळवाई और मूर्तियों की प्रतिष्ठा कराई। इसी तरह सूरिजी अनेक शहरों में प्रतिष्ठा अप्टाहिका अादि उत्सव कराते हुए पाटण पहुंचे।

इधर दिल्ली निवासी आवक रायपित दिल्ली सम्राट गयानुहीन तुगलक के दरवार में अपना प्रस्ताव रखा कि में संघ निकालना चाहता हूं, ताकि में चारों दिशाओं में भ्रमण कर सक्तूं और जहां कहीं भी सुक्ते जिस चीज की आवश्यकता पढ़े, सहायता मिले। सम्राट से मंजूरी मिल गई। यह समाचार सूरिजी के पास पाटण भेज दिया। संघ यात्रार्थ रवाना हो गया। कई तीथों की यात्रा करता हुआ संघ पाटण पहुंचा। वहां संघ ने सूरिजी को यात्रा करने के लिये राजी कर लिया। सूरिजी १७ नायुओं और १६ साध्वयों के साथ विहार करने के लिये चल पड़े। आचार्यपाद संघ के साथ विहार करने हुए राजुष्वय जी की तलहहीं मे पहुंचे। वहां पार्वनाथ स्वामी की पूजा करके संघ पवंत पर चढ़ा। श्रुपभदंव भगवान के आगे सूरिजी ने अनेक स्तोत्रों का निर्माण किया और वहीं यशोभड़. देवभड़ नामक क्षुदकों को दीक्षा दी। वहां पर संघ ने श्री आदिनाथ स्वामी के मन्दिर में नेमिनाथजी आदि की तथा जिनपित सृहि

जिनेश्वर सूरि आदि गुरुओं की मूर्त्तियां स्थापित कराई और सूरिजी ने अपने हाथों से आषाढ़ विद ८ को प्रतिष्ठा की। वहां से विहार करते हुए गिरिनार आये। संघ द्वारा नेमिनाथ स्वामी के मण्डारमें ४०००० रुपयों की आमदनी हुई। इसी भांति विहार करते हुए सूरि जी पाटण में चातुर्मास करने के छिये ठहर गये और संघ दिल्ली पहुंचा।

इसी तरह और जगहों में भी प्रतिष्ठायें की गयों। सिन्ध देश में भी सूरिजी का आना हुआ और कई मिन्दिरों की प्रतिष्ठायें हुई। इनके द्वारा धर्म की बड़ी तरकी हुई। अन्तिम चौमासा इनका देवराज (देरावळ) पुर में हुआ। यहीं माघ शुक्क १३ संवत् १३८६ में सूरिजी को अत्यन्त तीझ ज्वर हुआ। अपना अन्तिमकाळ उपस्थित समम्म कर श्री तरुण प्रभाचार्य और ळिंब्य निधानोपाध्याय को इन्होंने अपने मुख से कहा कि ळक्ष्मीधर के पुत्र, अम्बा देवी के तनय पश्चदश वर्षीय आयु वाळे पद्म मूर्ति को मेरे वाद सूरि पद देना। और भी गच्छ सम्बन्धी शिक्षार्थे देकर फाल्गुन विद १ को स्वर्ग सिधार गये।

#### आवश्यक

कौन आवश्यक से किस आचार की शुद्धि होती है ?

सामायिक प्रतिक्रमण और काउसरग इन तीन आवश्यकों से चारित्राचार की विशुद्धि होती है। चडिवसत्था (चतुर्विशति स्तव छोगस्स) आवश्यक से दर्शनाचार की विशुद्धि होती है। वन्दन आवश्यक से दर्शनाचार, ज्ञानाचार और चारित्राचार की विशुद्धि होती है। वनस्वाण आवश्यक से तपाचार की विशुद्धि होती है और इन छहीं आवश्यकों में वीर्य का विकास करने से वीर्याचार की विशुद्धि कहाती है।

कौन आवश्यक कहां से कहां तक है ?

१ सामायिक—"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिशं (राईअं) पिंडकमणो ठाउ" इस सूत्र से प्रितिकमण की किया शुरू होती है। वहां से लेकर "करेमि भंते" सूत्र द्वारा ८ णमोकार का जो काउसग्य किया जाता है यहा तक सामायिक नाम का प्रथम आवश्यक कहा जाता है।

२ चउव्विसत्था-८ णमोक्कार के काउसन्ग के बाद जो छोगस्स वोछा जाता है वह दूसरा आवश्यक कहा जाता है।

३ वंदणा -- छोगस्स कहने के बाद तीसरी आवश्यक सूत्र वंदणा मुंहपत्ति पडिलेह कर दो वंदणा

दी जाती हैं वह तीसरा वंदना नाम का आवश्यक है।

४ पडिकमणा—वंदना देने के वाद 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन देवसिअं (राइयं) आलोउं" वहा से लेकर "आयरिय उवडकाए" पर्यन्त प्रतिक्रमण नाम का चौथा आवश्यक है। पक्ली चौमासी और सम्बत्सरी प्रतिक्रमण इस चतुर्थ आवश्यक के अन्तर्भूत है।

५ "आयरिअ उवज्मायके बाद जो दो छोगस्स, एक छोगस्स और एक छोगस्सका काउसाग किया

जाता है वह काउसगा नाम का पांचवां आवश्यक है।

ह पचक्काण—पचक्काण करना छठा आवश्यंक है।

नोट--- गुर्वा विलयों में सुरिजी की निर्वाण तिथि सवत् १३८६ फालगुन विदे १५ मिलती है. यही प्रया लोगों में अधिक वंद सुल है।

# चौदह नियम चितारने की विधि

दिश के चार पहर के नियम सबेरे मुंह धोने के पहले ग्रहण कर साम को पार छीजिये, रात्रि के चार पहर के फिर शाम को ग्रहण कर सबेरे पार छीजिये, नियम तीन णमोक्कार गुन के छीजिये और तीन णमोक्कार गुनके पारिये। पारने के बख्त जो रक्खा था उसको याद करके संभाछ छीजिये, कमती छगा उसका छाभ हुआ, भूछ से जास्ती छगा उसका "मिच्छामि दुक्कडं" दीजिये, चाहे आठ पहर के चितारिये, परन्तु चार पहरमें चितारनेसे पारने के बख्त (कितना नियम चितारते हुए रक्खा है और कितना भोग मे आया है उसकी) विधि मिछानेसें सुगमता रहती है।

कोई व्रतधारी श्रावक जन्म भर के निर्वाह के वास्ते जादे जादे वस्तु रखते हैं तो १४ नियम चितारने से उनका भी आश्रव संक्षेप हो जाता है इस वास्ते व्रतधारी और अविरती को अवश्य १४ नियम चितारने चाहिये।

# चौदह नियमों की गाथा

(१) सचित्त, (२) द्व्य, (३) विगइ, (४) वाणह, (६) तंबोल, (६) वत्थ, (७) कुसुमेसु, (८) वाहण, (६) सदण, (१०) विलेशण, (११) वंभ, (१२) हिसि, (१३) न्हाण, (१४) भत्तेसु ।

## गाथा का संक्षिप्त अर्थ

१ सचित्त-कचा पानी, हरी तरकारी, फल, पान, हरा दातून. नमक आदि।

२ द्रव्य — जितनी चीज मुंह में जावे उतने द्रव्य जल, मंजन, दातून, रोटी, दाल, चावल, कडी, साग,. मिठाई, पूरी, घी, पापड़, पान, सुपारी, चूरण आदि।

३ विगय—१०, जिनमें से मधु, मांस, मक्खन, और महिरा ये ४ महाविगय अमक्ष होने से आवकों को अवश्य हाग करना चाहियें और ६ विगय आवक के खाने योग्य है। घी, तेल दूध, दही, गुड़ अथवा मीठा पक्वान्न (जो कडाही में भरे घी में तला जाय)।

४ उपानत्—ज्ता, चट्टी, खड़ाऊं, मौजा आदि ( जो पांव में पहना जाय ) ।

५ तंबोल -पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि।

६ वत्थ ( वस्त्र )-पगड़ी, टोपी, अंगरला, चोला, कुड़ता, घोती, पायजामा, हुपट्टा, चहर, अंगोल्ला, स्माल आदि सरदाना जनाना कपड़ा ( जो ओढ़ने पहरने में आवे )।

• कुसुमेसु—फूळ, आदि की चीजें जैसे सिज्या, पंखा, सेहरा, तुर्रा, हार, गजरा, इत्र (जो चीज सूंघने में आवे)।

प् वाहन ( सवारी )—गाड़ी, फिटन, सिगरम, हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, डोली, रेल, ट्रास्वे, मोटर नाव, जहाज स्टीमर, बलून आदि यानि तैरता, फिरता, चलता और उड़ता।

६ शयन-कुरसी, चौकी, पट्टा, परूंग, तखत, मेज, शच्या आदि ( सोने वा वैठने की चीज )।

१० विलेपन—तेल, केशर, चन्दन, तिलक, सुरमा, काजल, उवटन, हजामत, बुरस, कंघा काच देखना, देवाई आदि (जो चीज शरीर में लगाई जावे।)

११ वंभ ( ब्रह्मचर्य )—स्त्री. पुरुषमें, सुई होरे के नाप तथा वाह्य विनोद की संख्या करहेनी आवक परदारा त्याग और स्वदारा से ही सन्तोष रखे, उसका भी प्रमाण करें। १२ दिसि (१० दिशा )— शरीर से इतने कोस ( लम्बा, चौड़ा, ऊंचे, नीचे ) जाना आना, चिट्ठी तार इतने कोस भेजना, माल आदमी इतने कोस भेजना तथा मंगाना।

१३ न्हाण (स्नान) सारे शरीर से स्नान करना (मोटा स्नान) कितनी वार हाथ पैर घोना (छोटा स्नान) एक बार।

१४ भत्तेसु--अशन, पान, खादिम, स्वादिम, ये चारों आहार में से, खाने में जितनी चीजें आवे सब का कुछ वजन इतना।

ये १४ नियम के ऊपर ६ काय और ३ कर्म की मरजाद चितारनी अवश्य है।

#### ६ काय

- १ पृथवीकाय-मट्टी, नमक आदि ( खाने में वा उपभोग में आवे ) उसका वजन।
- २ अप्पकाय-जो पानी पीने में वा दूसरे उपभोग में आवे उसका वजन ।
- ३ तेऊकाय-चूल्हा, अंगीठी, भट्टी, चिराग आदि का प्रमाण।
- ४ वायुकाय—हिंडोले और पंखे (अपने हाथ से वा हुकुम से) जितने चलते हों उनकी संख्या का प्रमाण, रुमाल से वा कागज से हवा लेनी यह भी पंखे में गिनी जाती है, उसकी जयणा।
- १ वनस्पतिकाय हरी तरकारी तथा फलादि इतनी जात के खाने, घर सम्बन्धी मंगाने, जिसकी गिनती तथा वजन।
  - ६ त्रसकाय- त्रसजीव अपराधी, बिनापराधी, यह ६ काय का परिमाण कर छेना ।

#### ३ कर्म

१ असी (शस्त्र औजार)—तरवार, बन्दूक, तमंचा, भाला, आदि, छूरी, केंची चक्कू, सरौता, चिमटी तथा औजार आदि।

२ मसी ( लिखना पढ़ना )—कागज कलम, दवात. पेन्सिल, बही, पुस्तक, छापा, टाइप आदि । 3 कपी ( कस्सी )—खेत. वगीचे आदि का परमाण ।

# जैन तिथि मन्तव्य

# श्री हरिभद्र सूरिजी कृत. तत्त्व तरिङ्गणी ग्रन्थ की आज्ञा है :--

तिहि पड़णे पुन्वा तिहि कायन्त्रा जुत्त धम्म कज्जेव । चडहसी विलोवे, पुण्णमियं पक्खिपडिकमणं ॥१॥

अर्थात् किसी तिथि का क्षय हो तो पूर्ण ितिथ में धर्म कार्य करना उचित है। जो कदाचित् एकम तिथि कम हो तो धर्म कार्य पिछ्छी अमावस्या तिथि को करे। अष्टमी का क्षय हो तो सप्तमो को अत आदि करे। यदि चतुदेशी का क्षय हो तो पूर्णिमा या अमावस्या में पाक्षिक प्रतिक्रमण करना चाहिये कारण कि समीपवर्ती पर्वतिथि (पूर्णिमा तथा अमावस्या) को छोड़कर अपर्वतिथि में पर्वतिथि का आराधन करना युक्त नहीं है।

<sup>्</sup>रि पानी की जात, क्वां, बावड़ी, तलाव, नदीं, नहर, समुद्र, गङ्गा,मेघ आदि का प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है।

श्र यदि तिथि क्षय होकर घड़ी आघ धड़ी से कम मिले तो सारे विन नहीं मानी जाती। क्योंकि यह नियम गच्छ

परम्परा जैन सिद्धान्तीनुसार ही माना जायगा, ज्योतिष शास्त्र के अनुकूल नहीं। तेरस का क्षय हो जाय तो बारस में मिलेगी,

वहर्दशी में नहीं।

यहां ये प्रश्न वठता है कि यदि पर्वतिथि का आराधन अपर्व तिथि में नहीं करना तो अष्टमी आदि के क्षय होने पर सप्तमी आदि में धर्मकार्व्य करना कैसे उचित हो सकता है ?

उत्तर यह है कि अष्टमी के अनन्तर पर्व तिथि का योग न होने से पूर्वमे रही हुई सप्तमी आिंदमें ही धर्मकार्य करना उचित है। इसी तरह साम्बत्सिरिक चौथका क्षय हो तो पश्चमो को साम्बत्सिरिक प्रतिक्रमण करना परन्तु तीजको नहीं करना चाहिये। यदि चौथ दो हों तो प्रथम चौथमें ही धर्म कार्य करना उचित है। इसी प्रकार की शास्त्रों की आज्ञा है।

मास प्रतिबद्ध जितने पर्व हैं वे सब मास की बृद्धि में कुष्ण पक्ष वांछे पर्व प्रथम मास में और शुक्ष पक्ष में आने वाछे पर्व द्वितीय मास में आराधन करने चाहियें। कदाचित् कार्तिक मास बढ़े तो पहछे कार्तिक में चौमासा करे। फालगुण या आषाढ़ दो होने पर द्वितीय फालगुण या आषाढ़ में चौमासा करे। आषाढ़ चौमासे की चौदस को प्रतिक्रमण करने के बाद पूर्णिमा से ४३ वें या ५० वें दिन सम्वत्सरी पर्वक करे। चौथ कम हो तो पंचमी के दिन करे। चौमासे में यदि आवण, भादों या आसोज ये तीन मास बढ़े तो पंचमास का चौमासा करना शास्त्र सम्मत एवं बृद्ध परम्परानुसार मान्य है।

### चंदोवा रखने के स्थान

प्रत्येक श्रावक को अपने घर में निम्न १० स्थानों में चंदोवे जकर बांधने चाहिये।

१ चूल्हे पर। १ पानी के परेन्डे पर। ३ भोजन के स्थानों में। ४ चक्की की जगह। ५ खाने पीने की चीज पर। ६ दूध दही आदि पर (छाछ बिछोने के स्थान पर)। ७ शयनगृह में। ८ स्नानगृह में। ६ सामायिक आदि धर्म क्रिया के स्थान में अथवा पौषधशाला और १० मन्दिरजी में।

और साथ ही साथ घर में हमेशा उपयोग करने के लिये सात छनने रखने चाहियें।

१ पानी लानने का। २ वृत लानने का। ३ तेल लानने का। ४ दूध लानने का। ५ लाल या महा आदि लानने का। ६ गरम अचित्त जल लानने का और ७ आटा लानने (लनना या चालनी) का।

# अभक्ष्य

### बाईस अभक्ष

१ मृह्यर । २ प्टक्ष । ३ बड़ के फड़ । ४ काको हुम्बरी । ५ पीपछ । ६ मांस । ७ मदिरा । ८ मक्खन । ६ मधु । १० अनजाने फछ । ११ अनजाने फुछ । १२ वर्फ । १३ विष (जहर ) । १४

कल्पद्रम कलिका पृष्ठ १६० ।

\$ दशपश्चकेषु कुर्वत्सु आवाद पूर्णमादिवसे प्रथम पश्चक अत्रे एव पश्चिमः पश्चिमिदिवसैः एकेकं पर्व साधुना पश्चाशिह्ने एकादश पर्वाणि भवन्ति ते एते एकादश पर्व दिवसेषु पर्युषणा पर्व कर्तत्र्य इति ।

आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर अगाड़ी ग्यारहवें पचकडे मे निश्चय ही सम्बत्सरी पर्व कर लेना चाहिये। हरएक पचकडा ५ दिन का होता है और पहला पचकडा आषाढ छुदी १९ से १५ तक होता है। इसी तरह सब पचकड़े होते हैं।

पत्रमी से चौथ का सम्बत्सरी पर्व कालकावार्यजी ने ही किया।

<sup>&#</sup>x27;ो' आषाढ़ धुदी चतुर्देशों को पिछला चातुर्मास पूरा होता है चैत्र, वैशाख, जेठ, आषाढ । आषाढ धुदी चतुर्देशों को ( चउण्हं मासाण अष्टुण्ड पक्खाण विसोत्तरसय राइं दियाण ) का पाठ पढकर पिछले चातुर्मास की क्षामणा की जाती है । कालका-चार्यजो सहाराज ने पक्खो, चतुर्मासी, प्रतिक्रमण, अम्मावस तथा पूर्णिमा से चतुर्दशी का किया है, वर्तमान समय में भी यित साधु पक्खों चातुर्मासी प्रतिक्रमण चतुर्दशी को ही करते हैं ।

ओछे। १६ सचित्त मिट्टी। १६ रात्री भोजन। १७ वही बड़े ! १८ बैगन। १६ पोश्ता। २० सिंघाड़ा। २१ कार्यवानी। २२ खसखस के दाने।

दहीं को गरम करके जिस चीज में डाला जाता है वो अभक्ष्य नहीं होता है।

#### ३२ अनन्तकाय

१ भूमि कन्द। २ कबी हलदी। ३ कबी अदरख। ४ सूरन। १ लहसुन। ६ कच्चू। ७ सतावरी। ८ विदारी कन्द।६ घीकुआर।१० युहरी कन्द।११ नीम गिलोय।१२ प्याज।१३ करेला।१४ लोना।११ गाजर।१६ लोही पद्म कन्द।१७ गिरिकणी।१८ किसलय(कोमल पत्ते काला सफेद)।१६ लीर सुआ कन्द(कसेरू)।२० थेग कन्द।२१ मोथा।२२ लोन बुश्च का आल।२३ खिलोड कन्द। २४ अमृत वेल।२६ मूली।२६ भूमीफोड़।२७ बथुआ।२८ बरहा।२६ पालक।३० कोमल इमली।३१ सुअरवली।३२ आल कन्द।

# ४ महाविगय

मांस, मदिराः मक्खन, मधु। ये बिलकुल अभक्ष्य हैं।

मक्खन में छा से निकालने के दो घड़ी बाद जीव उत्पन्न हो जाते है इसलिये मक्खन अभक्ष्य माना गया है। यदि छा में ही पड़ा रहे तो जीव नहीं उत्पन्न होते हैं या मक्खन को छा से निकालने के बाद तपा लेने से जीव नहीं पैदा होते हैं।

#### ५ उम्बर फल

उम्बर फल, बड़ का फल, पीपल का फल, नीम का फल ( कची निमोली ), गूलर।

"कोमल फलं च सब्वं" इस पाठ के अनुसार जितनी भी कोमल चीजें हैं भक्षण करने योग्य नहीं हैं। और जिस चीज के बीज अच्छी तरह न गिन सकें वे तब तक अनन्तकाय हैं।

इन असक्ष्यों सिंबजयोंको सुखाकर रखना जेन समाजने जो प्रथा चछ रही है वह जेन सिद्धान्सानुसार बिळकुळ विपरीत है कारण असक्ष्य पदार्थ सूख जाने पर भी भक्ष्य नहीं हो सकते।

# खाने योग्य पदार्थ

# ं ब्यञ्जन ( तरकारी, शाक )

आम्बी (करी), इसली, ओलगोभी (बङ्गाल), कमरल, काचर, करेला, केल कथा, करोंदा, कह्तू (लोकी), कुंद्रू, ककरोल, कैर. केले का फूल, कचनार, गोभी (फूल) गोभी (गांठ), गोभी (पत्ता), चना (लोला), टमाटर, तुरइ (लर्रा), तुरइ (धीला), पीपल (चूर्णकी), परवल, बह्हर, भिण्डी, मिरच बड़ी, मिरच पत्तली, मटर, लसोहा (ल्हेसुआ), वावलिया, सेंब की फली, सहाजने की फली, सोगरी (मोगरी), गेहूं की फली, कचनार की फली, जो का सिट्टा, जवार का सिट्टा, बाजरे का सिट्टा। चलाई की फली, मकई की फली, वोढ़े की फली, मूंग की फली।

#### कुन्द -

अदरख, अरबी, आलू, ओल, क्रसेरू, कमलगह की जड़ (मे), गाजर, प्याज, मूंगफली (चीना बदाम), मूली, लहसुन, संकरकन्द आदि।

जैन शास्त्रों में श्रावकों को अभक्ष्य अर्थात् (नहीं खाने योग्य पदार्थ) खाना नहीं बताया है।

कारण तामसी, राजसी, सात्विकी ये तीन प्रकार के भोजन है। इसमें से तामसी भोजन करने से तामसी वृत्ति आती है इसळिये धार्मिक पुरुषों को तामसी भोजन के खाने से बचना चाहिये। उपरोक्त जो कन्द (अभक्ष्य) वर्णन किये गये हैं ये सब तामसी है।

''राजसी भोजन" साधु तथा श्रावक दोनोंको खाना मना है कारण उसमें शुद्धाशुद्धिका विचार रहने की आशा विलक्कल नहीं होती इसलिये राजसी भोजन राजाओं के लिये ही है, साधु और श्रावकों के लिये नहीं। अतः दोनों को इस भोजन से बचना चाहिये।

"सात्विकी भोजन" सब से श्रेष्ठ है विचार से यदि बनाया जाय तो निर्दूषित और शान्तिप्रकृ होता है। इसीछिये फलाहार तथा शाकाहार करने की मनाई नहीं की गई है।

महीने की बारह तिथियों में आवकों को फलाहार तथा साकाहार करने की मना ही की गई है उसका खास कारण यह है—२-५-८ ज्ञान तिथि, ११-१४-३०-१६ चारित्र तिथि है। इन विथियों में शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना तथा चारित्र पालन करने का विधान है। श्रायक लोग इन बातों से विसुख हो गये इन बातों की चादगारी के लिये इन तिथियों में आचार्यों ने सचित्त का लाग रक्खा है।

इन्हीं तिथियों में आगे की गती का वन्ध भी पड़ता है इसिंख्ये पाप से जितना भी बचा जाय उतना बचे और संवर भाव धारण करे ताकि आगे की गती खोटी न वंधे। इसिंख्ये इन तिथियों मे सचित्त का त्याग रक्खा गया है। यह त्याग व्रती आवकों के लिये है।

#### फल

अनार,अनारस,(अनन्नास)अमरूद,अछूचा,अमडा,आम,आडू,आछ, द्वाखारा आंवळा,ऊख,अंजीर,अंगूर, ककड़ी, केळा पका, कटहळ, कमळानींवू (संतरा), कमळगटू का छत्ता. कमरख,कहरथ, (कत्था)कुष्माण्ड(पेठा), कागजी (नीषू), खरवूजा, खजूर (पिंड), खीरा, खुरमानो, खोरना, खीरणी (खिन्नी), खहा (नीवू पंजाब), गुळावजामुन, गुळहर, गोंदनी, गन्ना (पीण्डा), चिरमिट, चकोतरा (विजोरा), जमरूद (टींवरू), जामुन, जमीरी (नीवू), टिपारी (पिटारी रस भरी), डाव (कचा नारियळ), तरवूज, तळकुन (बंगाळ में होता है) दुश्यान (सिंगापुर), नारंगी, नागफळी, नींवू (पाती), नासपाती, नारियळ, पपीता काकडी (एरण्ड), पीचू, पेठा, पीळू, फाळसा, फरेन्दा, फूट, वेर, वादाम (पात वंगाळ), वेळ, वेनची, मुहा, मेंगुस्तीन (सिंगापुर), मौसमी (मीठा नींवू), माळटा महुआ, छोकाट, छीचू, सेव, सिंघाड़ा, सफेदा सहत्त्व (काळा, सफेट हरा, ळाळ), सरदा (सरघा) सरवती (नींवू वम्बई). शरीफा (सीताफळ)।

#### मेवा

काजू, वादाम, किसमिस, अखरोट, नोजे, पिस्ता, चिरौंजी, गुनका, हुआरे।

#### फूल

कमल, केवड़ा, कुमुद्ति।, कामिनी, केतकी, कुन्द, कनेर, गेंद्रा, गुलाव (पांच तरह के), गुढेल, चम्पा, चन्द विकासी (कमल), चमेली, जूदी, जाई, दामिनी, दमनक, नरिगस (नील कमल), पुण्डरीक कमल, पद्मिनी कमल, वकुल, बेला, नाग, मुन्नाग, मिलका, मक्वा ,मचकुन्द, मोगरा, मोतिया, मालती, रजनीगंध, रात की रानी, लाली, वासन्ती, सूर्य विकासी (कमल), श्वेत कमल, हसीना, हार सिंगार।

थोडा सन्ज होता है। यह तीन प्रकार का है (१) सोनाकस# (२) छोहाकस (३) चांदीकस! अन्त के . हो तो मिलते हैं। प्रथम का उपलव्य नहीं होता। ४८ कसौटी—काला रंग। इससे सोने की कस की परीक्षा होती है। ४६ दारचना—चने की दाल के समान पीला तथा लाल टिकिया के मुताविक स्याह जमीन पर होता है। ५० हकीके कुछवहार - सब्जपन के साथ जद मिछा होता है। मुसछमान जपने की माळा वनाते हैं। ये पत्थर जल में होता है। ५१ हालन—गुलावी मैला। हिलाने से हिलता है।५२ सिजरी— सफेद ऊपर श्याम दरस्त दीखता है। ५३ सुनेन जफ - सफेद में वाल के समान लकीर होती है। ४४ कहरवा-पीला रंग का । जिसका बोरखा तथा माला वनती है। ४४ करना-मिटया रंग का। जिसमें पानी देने से सब पानी कर जाता है। ५६ संगेवसरी - आंख के सुरमे में पड़ता है। रंग काला होता है। ५७ ट्रांतळा—जरदपन लिये सफोट्। पुराने शंख की माफिक होता है। ६८ मकडी—सारापन लिये हए काला। उपर सकड़ी के जाल के समान। ५६ संगीया -- शंख के समान सफ़ेद़। इसका घड़ी का लाकेट बनता हैं। ६० गुद्री—नाना प्रकार के रंगवाला होता है। इसे फ़कीर लोग पहनते हैं। हृश कासला—स्वत्रपन लिये सफोद होता है। ६२ सिफरी—स्वत्रपन लिये आस्मानी रंग का होता है। ६३ हट्रोट्-भूरापन लिये स्याह, वजन का भारी होता है। सुसलमान इसकी तसवीह बनाकर जाप करते है। ६४ हवास—सोनापन छिये सञ्ज होता है। औषिघयों में काम आता है। ६५ सींगळी-जाति माणिक (माणक) की। स्याही और सुर्खी मिला हुआ रंग होता है। ६६ ढेडी-काला रंग। इसके लरह तथा कटोरे बनते हैं। हुं हुकीक — अनेक प्रकार के रंगों वाला, जिसका घडी का सुद्रा, कधोरे एवं खिलीने वनते हैं। ६८ गोरी-अनेक प्रकार के रंगों वाला तथा सफेर सूत होता है। इसके कटोरे तथा जगहर तौछने के बाट बनते हैं। ६६ सीचा-काला रंग। इसकी नाना प्रकार की मूर्तियां बनती हैं। ७० सीमाक-लाल, जर्द एवं कुछ स्याहमाइल होता है। अपर सफेद, जर्द और गुलाबी झीटा होता है। इसके खरल तथा कटोर बनते हैं। ७१ मुसा—सफोद रंग। इसके खरल तथा कटोरे बनते हैं। ७२ पनधन-कुछ सञ्जपन लिये काले रंग का होता है। ७३ अमलीया-कुछ कालापन लिये गुलाबी रंग का होता है। ७४ डूर—कत्थे के समान रंग का होता है। इसके खरल वनते हैं। ७५ तिलीमर—काला ऊपर सफेद झींटा। इसके खरल वनते हैं। ७६ स्वारा—सब्जपन लिये काले रंग का होता है। इसके स्तरल वनते हैं। ७७ पायजहर--सफोट पारे के समान रंग का होता है। विष के घाव पर पिस कर लगाने से घाव सूख जाता है। ७८ सिरखड़ी—मिट्टी के समान रंग का होता है। खिलीने वनते हैं। <sup>घाव</sup> पर विस कर छगाने से वाव सूख जाता है। ७६ जहरमोहरा—कुळ सफेदपन छिये सब्ज रंग का होता है। किसी विष मिश्रित चीज में इसको रख देने से विष का दोप जाता रहता है। ८० रतुवा—लाई रंग का। जिसको रात्रि में ज्वर आता हो तो गर्छ में वांधने से आराम होता है। ८१ सोनामक्सी-नीले रंग का । औषधियों मे काम आता है । ८२ इज़रतेयहूद—सफेंद्र मिट्टी के समान । इससे मूत्रकी वीमारी में लाग होता है। ८३ सुरमा—काला रंग। अंजन के काम आता है। ८४ पारस—काला रंग। इसकी होहे के लगाने से लोहा सोना हो जाता है।

मोती की जातियां तथा उनके नाम

गजमुक्ता । मत्स्यमोती । सपमोती । वासभिरेके मोती । शंक्षकेमोती । खानके मोती। स्थरकेमोती ।

<sup>\*</sup> लोहे के टुकड़े पर नींबू के रस को निचोड़ कर रगड़ने से यह तीन कस होते हैं। दरद गुरहे में क्सर में नायने से आराम होता है।

#### मणियों के नाम

सूर्यकान्त मणि। चन्द्रकान्त मणि। इन्द्रनील मणि। पद्मराग मणि। मरकत मणि। सर्प मणि। करकेतक मणि। स्कटिक मणि। वेरुड्या मणि। लसिया मणि। लाजवर्दी मणि। पुष्पराग मणि। गोमेदक मणि। मासर मणि। विजना मणि।

प्रत्येक प्रह की शान्ति के लिये जो रत्न उपयुक्त बताये गये हैं, उन रत्नों को अंग्ठी में इस प्रकार जड़ा कर पहनें कि उन रत्नों का सबदा अंगुली से स्पर्श होता रहे। इसील्यिं इनके नाम तथा स्वरूप उपयोगी समम कर दे दिये गये हैं।

# नवग्रह सम्बन्धी अन्य उपयोगी वातें तथा नाम

सूर्य, चन्द्र, ब्रह्, नक्षत्र. तारे ये पांच ड्योतिष्क देवता है। जो आकाश में वर्तुंठाकार परिश्रमण करते हैं। इस जम्बूद्वीप व भरतक्षेत्र में जैन धर्मानुसार दो सूर्य तथा दो चन्द्रमा हैं। ये दोनों ही ड्योतिष्क देवताओं के इन्द्र है।

८४ ब्रह्माने गये हैं परन्तु वर्त्तमान समय में इन ६ ब्रहों से ही काम लिया जाता है। उनके नाम ये हैं :—१ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ मंगला ४ ब्रुध। ४ वृहस्पति। ६ शुक्र। ७ शनिश्चर। ८ राहु और ६ केतु। ये भी अपनी अपनी गति के अनुसार आकाश में भ्रमण करते हैं।

इसी प्रकार आकाश में अट्ठाइश नक्षत्रों की व्यवस्था है।

#### नक्षत्र

१ अश्विनी । २ भरणी । ३ कृत्तिका । ४ रोहिणी । ६ मृगशिरा । ६ आर्डी । ७ पुनर्वसु । ८ पुष्य । ६ अरुष्ठेषा । १० मघा । ११ पूर्वा फाल्गुनी । १२ उत्तरा फाल्गुनी । १३ इस्त । १४ चित्रा । १६ स्वाति । १६ विशाखा । १७ अनुराधा । १८ ज्येष्ठा । १६ मूळा । २० पूर्वा थाढ़ा । २१ उत्तराषाढ़ा । २२ अभिजित । २३ अवण । २४ धनिष्ठा । २६ शाविभषक । २६ पूर्वा भाद्रपद । २७ उत्तराभाद्रपद । २८ देवती । वारे असंख्य हैं । अश्विनी नक्षत्र से प्रारंभ कर वारह राशी मानी गई है । ज्योतिषी इन्हीं राशियोंसे मनुष्योंके शुभाशुभ का विचार करते हैं । वारह राशियोंके नाम तथा उनके अक्षर इस प्रकार :—

#### राशि तथा अक्षर

१ मेष—चूचे चो छा छी छू छे छो अ। २ वृष—इ उए ओ वा बी वृवे बो। ३ मिथुन—का की कूघ इन्छ के को ह। ४ कर्क—ही हू हे हो डा डी डू डे डो। ५ सिंह—मा मी मूमे मो टाटी टूटे। ६ कन्या—टो प पी पूषण ठा पे पो। ७ तुछा—रारि ६ रेरो ता ती तृते। ८ वृश्चिक—तो, ज़ानी नू ने नो या यि यू। ६ घन—ये यो भा भी भूघा फा ढ़ भे। १० मकर—भो ज जि जू जे जो सा खी हुं, खे सो गा गी। ११ कुंभ—गूगे गो सा सी सूसे सो दा। १२ मीन – ही दूथ मुख दे हो चाची।

मेष, सिंह, धन राशि का चन्द्रमा पूरव मे होता है अतः इन राशि वालों को पूर्व में प्रयाण करते समय सन्मुख चन्द्रमा लेना चाहिये। चृष, कन्या, मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण में होता है। कर्क, मीन, वृश्चिक राशि का चन्द्रमा उत्तर में होता है। सन्मुख चन्द्रमा अत्यन्त लाभदायक् होता है। दाहिने चन्द्रमा धन सम्पत्ति का देने वाला होता है। पीठ पीछे का चन्द्रमा प्राण के हरण करने वाला और वार्य अचन्द्रमा धन का नाश करने वाला होता है। इसल्यि दो चन्द्रमा शुभ है और दो अशुभे हैं अतः शुभ चन्द्रमा में ही गमन विचार करना वाहिये।

सोमवार और शनिवार को पूरव में दिशाशूल होता है अतः इस दिन पूर्व में गमन न करना चाहिये। इसो तरह बुध और मंगल को उत्तर दिशा में, रिववार और शुक्र को पश्चिम दिशा की तरफ और बृहस्पितवार को दिश्वण में दिशाशूल होता है अतः इन दिनों में इन दिशाओं में गमन न करना चाहिये। दिशाशूल वायां अच्छा होता है। एकम व नवमी को पूरव में योगिनी होती है। तीज व एकादशी को अग्निकोण में योगिनी होती है। अमावस व अष्टमी को ईशानकोण में योगिनी होती है। दूज व दशमी को उत्तर में योगिनी होती है। पूर्णमाशी व सप्तमी को वायव्यकोण में योगिनी होती है। हुइ और चतुर्दशी को पश्चिम में योगिनी होती है। चौथ और वारस को नैर्मुत्यकोण में योगिनी होती है। छह और चतुर्दशी को पश्चिम में योगिनी होती है। चौथ और वारस को नैर्मुत्यकोण में योगिनी होती है। एकमी और तेरस को दक्षिण में योगिनी होती है। वार्थी योगिनी सुख देने वाली होती है। पिठ पीछे की योगिनी मनोवांछित फल देने वाली होती है। वाहिनी योगिनी धन का नाश करती है। सन्सुख योगिनी मौत की निशानी है। अतः पिछली दोनों टाल देनी चाहिये। मुहूर्त्त देखने वालों को इन वातों का विशेष खयाल रखना चाहिये। सब दोषों को टाल कर शुभ मुहुर्त्त निकालना चाहिये। मुहूर्त्त निकालना चाहिये। मुहूर्त्त निकालना हो अतः संक्षिप्त विवरण है दिया गया है।

# दिन का चौघड़िया

					-	
₹	चं	मं	बु	गु	यु	श
इ	अ	रो	स्रा	Ŋ	चं	का
चं	का	ड	अ	रो	छा	शु
छा -	য়ু	वं	का	ਢ	अ	रो
अ	रो	ला	ग्रु	र्च	का	ਤ
का	ड	अ	रो	છા	য়	चं
য়	चं	का	હ	अ	रो	छा
रो	छा	ग्रु	च	का	ਲ	अ
ड	अ	रो	छा	शु	चं	का

# रात का चौघड़िया

रात का चायाङ्या						
₹	चं	मं	बु	गु	ग्रु	য়
यु	चं	का	उ	अ	रो	छा
अ	रो	ला	ग्रु	वं	का	छ
चं	का	उ	अ	रो	छा	য়ু
रो	ला	ग्र	चं	का	ड	अ
का	ड	अ	रो	छा	ग्रु	चं
छा	ग्रु	चं	का	ख	<b>अ</b>	रो
उ	अ	रो	छा	ग्रु	चं	का
য়	का	चं	ন্ত	अ	रो	छा

# आशंसा

हो सका यदि यह कहीं अज्ञानतम का दीप दारण, एक भी जन जैन यदि इससे हुआ उपकार भाजण। यदि विषथ का पान्थ कोई कर सका निज मार्ग धारण हो सकेगा श्रम सफल इस प्रन्थ का संकलन कारण॥